भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

२

भगवई

विआहपण्णत्ती

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
(जैन विश्व भारती)

स्व० श्री बिरधीचन्दजी गोठी
एवं
मदनच जी गोठी
की
पुण्य स्मृति
में
श्री यचन्दलालजी
रजमलजी गोठी
परिवार (सर रशहर)
के
आर्थिक सौजन्य
से
प्रकाशित

प्रकाशन तिथि
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक ११५०

मूल्य : ६०)

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रैस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

ANGA SUTTĀNI
II
BHAGAWAI
VIĀHAPANNATTI

(Bhagawati Sūtra with Original Text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCHĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN
(Rajasthan)

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Published by the kind munifience of the members of the family of Sri Jaichand Lal Surajmal Gouti (Sardar Shahar) in sacred memory of Birdhichandji Gouti and Madan Chandji Gouti

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 1150

Rs. 90/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूं कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

•

ग्रन्थानुक्रम

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुंचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये ? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गईं और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर काँच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बेंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से '६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य हाथ में लिया। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियां सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दशवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : १. दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और २. उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्मप्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं— "धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार है, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रंथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

कार्य की प्रारंभिक व्यवस्था में जैन विश्व भारती के उपसभापति श्री माणिकचंदजी सेठिया एवं श्री मोतीलालजी नाहटा ने मुझे बड़ा ही सहयोग दिया।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत् सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली मुद्रण की व्यवस्था बैठाई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्‌वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग
जैन विश्व भारती

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ९. अनुत्तरोपपातिकदशा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं,—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का दूसरा भाग है। इसमें व्याख्याप्रज्ञप्ति का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

प्रस्तुत आगम का पाठ-संशोधन सात प्रतियों और टीकाओं के आधार पर किया गया है। हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूल पाठ का निर्धारण करते हैं। प्रस्तुत सूत्र की मूल टीका आज उपलब्ध नहीं है। चूर्णि उपलब्ध है किन्तु वह हमें प्राप्त नहीं हुई। अभयदेव सूरि ने अपनी वृत्ति में जहां-जहां मूल टीका और चूर्णि को उद्धृत किया है, उसका भी हमने पाठ-निर्धारण में उपयोग किया है। लिपिकारों ने समय-समय पर पाठ का संक्षेप किया है। उस संक्षेपीकरण के अनेक रूप मिलते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त प्रतियों में क्रोधोपयुक्त आदि भंगों की चार वाचनाएं मिलती हैं। उनमें पाठ का संक्षेप भिन्न-भिन्न प्रकार से किया गया है, देखें—आगम पृ० ३९। लिपिभेद के कारण भी पाठ में गलतियां हुई हैं। १।३६५ सूत्र में प्रादोषिकी क्रिया के लिए 'पाओसियाए' पाठ है। कुछ प्रतियों में 'पाउसियाए' पाठ मिलता है। प्राचीन लिपि में 'ओ'

और 'उ' का भेद करना कठिन होता है। यही कारण है कि आधुनिक प्रतियों में बहुलतया 'ओ' के स्थान में 'उ' मिलता है। जो प्रतियां भाषाविद् लिपिकारों द्वारा लिखी गईं, उनमें 'ओकार' मिलता है; किन्तु जो केवल लिपिकों द्वारा लिखी गईं, उनमें 'ओकार' के स्थान में 'उकार' हो गया। 'ओवासंतरे' और 'उवासंतरे' यह पाठ-भेद भी उक्त कारण से ही हुआ है। देखें—सूत्र १।३६२ (पृ० ६६), सूत्र १।४४४ (पृ० ७७)।

८।२४२ सूत्र में 'छेत्तेहिं' पाठ है। लिपिभेद होते-होते 'वित्तेहिं', 'छत्तेहिं', 'चित्तेहिं'—इस प्रकार अनेक पाठ बन गए। ८।३०१ में 'तदा' के स्थान पर 'तहा' पाठ हो गया।

कुछ प्रतियों में संक्षिप्त वाचना है। वृत्तिकार को भी संक्षिप्त वाचना प्राप्त हुई थी इसलिए उन्होंने लिखा कि अन्ययूथिक वक्तव्यता स्वयं उच्चारणीय है। ग्रन्थ के बड़ा होने के भय से वह लिखी नहीं गई। वृत्तिकार ने वृत्ति में संक्षिप्त पाठ को पूर्ण किया। कुछ लिपिकों ने वृत्ति के पाठ को मूल में लिखा और पूर्ण पाठ की वाचना संक्षिप्त पाठ की वाचना से भिन्न हो गई[1]।

कुछ आदर्शों में संक्षिप्त और विस्तृत—दोनों वाचनाओं का मिश्रण मिलता है। सूत्र २।४७ (पृ० ८८) में 'खंदया पुच्छा' यह संक्षिप्त पाठ है। किसी लिपिकार ने प्रति के हासिये (Margin) में अपनी जानकारी के लिए इसका पूरा पाठ लिख दिया और उसकी प्रतिलिपियों में संक्षिप्त और विस्तृत—दोनों पाठ मूल में लिख दिए गए, देखें—५।१२२ सूत्र का पादटिप्पण (पृ० २०६), २।११८ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० ११२)। ११।५६ में पूरा पाठ और 'जहा ओवाइए' यह संक्षिप्त पाठ—दोनों साथ-साथ लिखे हुए हैं। असोच्चा केवली के प्रकरण में भी ऐसा ही मिलता है। कुछ प्रतियों में वृत्ति में उद्धृत पाठ का समावेश हुआ है, देखें—२।७५ सूत्र का दूसरा पादटिप्पण (पृ० ६६)। कहीं-कहीं वृत्तिकार द्वारा किया हुआ वैकल्पिक अर्थ भी उत्तरवर्ती प्रतियों में मूल पाठ के रूप में स्वीकृत हो गया, देखें—५।५१ सूत्र का प्रथम पादटिप्पण (पृ० १६४)।

पाठ-संशोधन में दूसरे आगमों के पाठों को भी आधार माना जाता है। २।९४ सूत्र में 'चियत्तंतेउरघरप्पवेसा' इस पाठ के अनन्तर सभी प्रतियों में 'बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं' यह पाठ है। वहां इसकी अर्थ-संगति नहीं होने के कारण वृत्तिकार को 'तैर्युक्ता इति गम्यं' यह लिखना पड़ा, किन्तु ओवाइय और रायपसेणइय सूत्र को देखने से पता चलता है कि उक्त पाठ प्रतियों में जहां लिखित है वहां नहीं होना चाहिए। उक्त दोनों सूत्रों के आधार पर आलोच्य पाठ का क्रम इस प्रकार बनता है—'ओसह-भेसज्जेणं पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।'

२२।१ सूत्र में सभी आदर्शों में 'सारकल्लाण जाव केवइ' पाठ लिखित है, किन्तु यहां 'जाव' का कोई प्रयोजन नहीं है। भगवती ८।२१७ तथा प्रज्ञापना के प्रथम पद के आधार पर 'जाव' के स्थान पर 'जावति' पाठ प्रमाणित होता है।

१. इह सूत्रेऽन्ययूथिकवक्तव्यं स्वयमुच्चारणीयं, ग्रन्थगौरवभयेनाऽलिखितत्वात्तस्य, तच्चैवम्। वृत्तिपत्र १०६।

पाठ में वर्ण-परिवर्तन से बहुत बार अर्थ नहीं बदलता किन्तु कहीं-कहीं अर्थ समझने में कठिनाई होती है और वह बदल भी जाता है। ६।६० सूत्र में 'हव्वि' पाठ है उसके 'हेट्ठि' और 'हिट्ठि'—ये दो पाठान्तर मिलते हैं। वृत्तिकार अभयदेवसूरि ने यहां 'हव्वि' का अर्थ 'सम' किया है, देखें—वृत्ति पत्र २७१। स्थानांग सूत्र (८।४३) में इसी प्रकरण में 'हेट्ठि' पाठ है। वहां अभयदेवसूरि ने उसका अर्थ 'ब्रह्मलोक के नीचे' किया है, देखें—स्थानांगवृत्ति पत्र ४१०।

कहीं-कहीं लेखक के समझभेद और लिपिभेद के कारण भी पाठ का परिवर्तन हुआ है। ६।१६५ सूत्र में 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी' पाठ है। कुछ प्रतियों में यह पाठ 'उवधरेमाणीओ-उवधरेमाणीओ' इस रूप में मिलता है। एक प्रति में यह पाठ 'उवरिधरेमाणीओ-उवरि-धरेमाणीओ' इस रूप में बदल गया।

पाठ-परिवर्तन के कुछेक उदाहरण इसलिए प्रस्तुत किए गए हैं कि पाठ-संशोधन में केवल प्रतियों या किसी एक प्रति को आधार नहीं माना जा सकता। विभिन्न आगमों, उनकी व्याख्याओं और अर्थसंगति के आधार पर ही पाठ का निर्धारण किया जा सकता है।

संक्षेपीकरण और पाठ-संशोधन की समस्या

देवर्धिगणि ने जब आगम सूत्र लिखे तब उन्होंने संक्षेपीकरण की जो शैली अपनाई उसका प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करना बहुत कठिन कार्य है और वह कठिन इसलिए है कि उत्तरकाल में अनेक आगमधरों ने अनेक बार आगम पाठों का संक्षेपीकरण किया है। संभव है कुछ लिपिकों ने भी लेखन की सुविधा के लिए पाठ-संक्षेप किया है।

१३।२५ सूत्र के संक्षिप्त पाठ में भवनपति देवों के प्रकार आदि जानने के लिए दूसरे शतक के देवोद्देशक की सूचना दी गई है, किन्तु वहां (२।११७, पृ० १११) विस्तृत पाठ नहीं है अपितु प्रज्ञापना के स्थानपद को देखने की सूचना मिलती है। १६।३३ सूत्र के संक्षिप्त पाठ में तृतीय शतक (सूत्र २७, पृ० १३०) देखने की सूचना दी गई है, किन्तु वहां पाठ पूरा नहीं है। वहां 'रायपसेणइय' सूत्र देखने की सूचना दी गई है।

१६।७१ सूत्र के संक्षिप्त पाठ में उद्रायण का प्रकरण (१३।११७, पृ० ६१४) देखने की सूचना है। वहां पाठ पूरा नहीं है। इसी प्रकार १६।१२१, १८।५६, १९।७७ में विस्तृत पाठ की सूचनाएं हैं, किन्तु सूचित स्थलों में पाठ विस्तृत नहीं है।

उक्त सूचनाओं के आधार पर यह अनुमान होता है कि जिस समय में पाठ संक्षिप्त किए गए उस समय सूचित स्थलों के पाठ पूर्ण थे। उसके पश्चात् किसी अनुयोगधर आचार्य ने उन पूर्ण पाठों का भी संक्षेपीकरण कर दिया। संक्षेपीकरण के लिए 'जाव', 'जहा' आदि पदों का प्रयोग किया गया है। कहीं-कहीं 'जाव' का अनावश्यक-सा प्रयोग हुआ है। वह या तो लिपिक का प्रमाद रहा है या प्रवाह के रूप में वह लिखा गया है। जहां 'जाव' का प्रयोग है वहां लिपिकारों ने पर्याप्त स्वतंत्रता बरती है। किसी ने 'पावफल जाव कज्जंति' लिखा है तो किसी ने 'पावफलविवाग जाव कज्जंति' लिखा है। कहीं-कहीं 'विंद' (७।१९६), 'पयोग' (८।१७), 'सहस्स' (१६।१०३) जैसे छोटे

पाठों के स्थान पर भी 'जाव' पद लिखा हुआ मिलता है। इस प्रकार के पाठ-संक्षेप लिपिकारों द्वारा समय-समय पर किए हुए प्रतीत होते हैं।

वर्तमान में प्रस्तुत आगम की मुख्य दो वाचनाएं मिलती हैं—संक्षिप्त और विस्तृत। संक्षिप्त वाचना का ग्रन्थ परिमाण १५७५१ अनुष्टुप् श्लोक परिमाण माना जाता है। विस्तृत वाचना का ग्रन्थ परिमाण सवा लाख अनुष्टुप् श्लोक माना जाता है। अभयदेवसूरि ने संक्षिप्त वाचना को ही आधार मानकर प्रस्तुत आगम की वृत्ति लिखी है। हमने इस पाठ संपादन में 'जाव' आदि पदों द्वारा समर्पित पाठों की यथावश्यक पूर्ति की है। उससे इसका ग्रन्थ परिमाण १६३१६ अनुष्टुप् श्लोक, १६ अक्षर अधिक हो गया है।

शब्दान्तर और आदर्श

१।४६	निगम	नियम	(ता)
१।२२४	अप्पिया	अप्पिता	(क)
१।२२४	एतेसिं	तेतेसिं	(क, ता, म)
१।२३७	वइ०	वति०	(ता)
१।२३६	वइ०	वयि०	(ता)
१।२४५	मायो	माओ०	(ता)
१।२७३	पोयंत	पोदंतं	(क, ता, ब, म, स)
१।२७६	कज्जइ	किज्जइ	(ब, स)
१।२८१	पाणाइवाय	पाणायवाय	(स)
१।२८१	नेरइयाणं	नेरतियाणं	(अ, ब, स)
१।२६८।२	उवओगे	ओवओगे	(ता)
१।३१५	अहे	अघे	(ता)
१।३५४	करेज्ज	करिज्ज करेज्जा	(क) (स)
१।३५७	दुहिए	दुक्खिए	(क, ता, म)
१।३५७	दुग्गंधे	दुगंधे	(अ, म, स)
१।३६३	आरिय	यारियं	(क, ता)
१।३६४	चउ	चतु	(ता)
१।३६५	पाओसिया	पायोसिया	(अ, ब)
१।३७०	सय	सत	(ता)
१।३७१	संघिज्जमाणे	संधेज्जमाणे	(ता)
१।३७१	निमिट्ठे	निसट्ठे	(क, ता)
१।३७१	काइयाए	कातियाए	(ता)
१।३८५	पाणाइवाय०	पाणायवाय०	(ब, स)

१।३८६	ह्रस्सी	हुस्सी, ह्रस्वी	हुस्सी (क) (ब); (स);
१।४१५	जहा	जघा	(अ, ब, स)
१।४२४	सामाइयस्स	सामातियस्स	(ता)
१।४२५	जइ	जति	(अ, क, ब, म, स)
१।४३४	किवणस्स	किविणस्स	(ता)
२।२६	मागहा	मागधा	(ता)
२।४१	वियट्टभोई	वियट्टभोती	(अ, ता, ब, म, स)
२।५७	सामाइयमाइयाइं	सामाइगमादीयाति सा[illegible]ई(स)	(क)
२।६६	घमणि०	घवणि०	(क, ता, ब, म)
२।६६	रयणीए	रतणीए	(ता)
२।६८	आरूहेइ	आरूभेइ	(क, म)
२।६८	खाइमसाइमं	खातिमसातिमं	(ब, स)
२।६८	सयमेव	सतमेव	(ता)
२।९४	अवंगुय०	अवंगुत०	(म)
२।९४	खाइमसाइमेणं	खातिमसातिमेणं	(ब, स)
३।४	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
३।२१	ईसाणे	तीसाणे	(ता)
३।२५	मोयाओ	मोतातो	(क, ता)
३।३३	खाइमसाइमेण	खाति[illegible]	(ब, स)
३।११२	सयणिज्जाओ	सतणिज्जाओ	(ता)
३।११२	तिवर्ति	तिपर्ति	(ता)
३।१४३	वेयति	वेदति	(ता)
३।१४८	समय०	समत०	(ता)
५।३	'पडीण'	'पदीण'	(ता, म)
५।६०	आउए	आउगे	(ता)
५।७९	रयहरणमायाए	रतहरणमाताए	(ता)
५।८२	वेयावडियं	वेदावडियं	(ब, म)
५।११०	समयंसि	समतंसि	(ता)
५।१३९	'लोइय'	'लोतिय'	(अ, स)
६।६३	सकसाईहिं	सकसादीहिं	(ता)
६।६३	सजोगी	सजोति	(ता)
६।७९	नागो	नाओ	(ता, म)
६।९०	कण्हरातीओ	कण्हरायीतो	(ब)

६।१६६	कालगं	कालतं	(क)
७।१७६	० जय ०	० जत ०	(व)
७।२१३	अयमेयारूवे	अतमेतारूवे	(ता)
८।२४८	अणुप्पदायव्वे	अणुप्पतातव्वे	(ता)
८।३१५	गोयं	गोदं	(ब)
८।३४७	अणादीय०	अणातीत०	(ता)
८।४२०	सातणयाए	सादणताए	(क, ब, म)
८।४३१	इस्सरिय०	दिस्सरिय०	(म)
८।४३१	इस्सरिय	तिस्सरिय०	(म)
९।४३	सकसाई	सकसादी	(अ, ता)
९।९४	अहिओ (अ);	अहितो अधितो	(क) (ता)
९।१७४	मय०	मद० मत०	(ता) (ब)
९।१६९	सवणयाए	समणयाए	(अ)
११।१३३	धूव	धूम	(ता)
११।१३४	नीव	नीम	(ता, ब)
११।१४२	पउमसर	पदुमसर	(ता)
१६।११३	नियमं	नितमं	(व)
१७।३८	एयणा	एतणा	(ता, व)
१८।१००	मायिमिच्छ०	मादिमिच्छ०	(ब)
१९।८५	जनि इंदियाणि	जदिंदियाणि	(ता)
३०।२२	सजोगी	सजोनी	(ब)

प्रति परिचय

(अ) भगवती वृत्ति (पंचपाठी) मूलपाठ सहित (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र १८९ तथा पृष्ठ ३७८ हैं। प्रत्येक पत्र १३½ इंच लम्बा तथा ४¾ इंच चौड़ा है। पत्रों में मूलपाठ की १ से २३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ८० से ८५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक ढंग से लिखी गई है। बीच में बावड़ी भी है। लिपि-संवत् नहीं लिखा गया है। अनुमानतः यह प्रति १५-१६ वीं शताब्दि की लगती है।

(क) भगवती मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति पूनमचन्द बुधमल दूधोड़िया, छापर के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३३३ व पृष्ठ ६६६ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां

तथा प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ५५ तक अक्षर हैं। प्रति सुन्दर और कलात्मक है। बीच-बीच में लाल पाइयां तथा बावड़ी है। लिपि-संवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं सदी की है।

(ख) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जेसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ४२२ तथा पृष्ठ ८४४ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ३ से ६ तक पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

॥ छ ॥ मंगलं महा श्रीः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ रा ॥

लिपि-संवत् नहीं दिया गया है। यह प्रति अनुमानतः १२ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

(ता) ताडपत्रीय मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ३४८ तथा पृष्ठ ६९६ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से ६ तक पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में १३० से १४० तक अक्षर हैं। अंतिम पत्र पर चित्र किये हुए हैं।

अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

। छ । भगवइ समत्ता ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ संवत् १२३५ विशाख वदि एकादश्यां गुरौ अपरान्हे लेखकवणचंडेन लिखितमिति ॥

(ब) भगवतो मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४७८ तथा ९५६ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पत्र १०½ इंच लम्बा तथा ४½ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १६ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३८ से ४२ अक्षर हैं। प्रति सुन्दर तथा कलात्मक है। प्रत्येक पत्र में तीन स्थानों पर बावड़ी तथा लाल लाइनें है और हरताल से काम किया हुआ है। अंतिम प्रशस्ति के अभाव में लिपि-संवत् अज्ञात है। यह अनुमानतः १६ वीं शताब्दि की प्रति लगती है।

(म) भगवती सूत्र मूलपाठ (हस्तलिखित)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ४८२ तथा पृष्ठ ९६४ हैं। प्रत्येक पत्र १०¼ इंच लम्बा तथा ४¼ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। पत्रों के बीच-बीच में लाल पाइयां तथा बावड़ी है।

इसके अन्त में लिपि-संवत् दिया हुआ नहीं हैं, पर यह प्रति लगभग १६ वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—

।। छ ।। ग्रंथाग्रं १५७७५ ।। छ ।। छ ।। छ ।। छ ।। श्री ।।

छ ।। श्री कल्याणमस्तु ।। शुभं भवतु ।। छ ।। श्री ।। श्री ।। छ ।। छ ।।

प्रति में अनेक स्थलों पर संस्कृत में टिप्पण भी दिये हुए हैं।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केशर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे संघीय पुस्तकालय की है। इसके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ हैं। पत्र के मध्य में मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है। यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है। किसी पाठक ने मुद्रित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हरताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है। जहां ऐसा किया गया है वहां प्रायः शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ में मूल पाठ की ४ से १५ तक पंक्तियां और प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रशस्ति में लिखा है—

श्री भगवती सूत्रं सम्पूर्णं ।। छ ।। श्री विवाहपन्नत्ती पंचमं अंगं सम्मत्तं ।। शुभं भवतु। ग्रंथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्रं० ३४२६१ ।। श्री ।। लिषितं यती डाहामल्लः श्री नागोरमध्ये सं० १८४८ माह शु १५।

वृ (वृपा) मुद्रित

प्रकाशक :—श्रीमती आगमोदय समिति।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन में पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी,- पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, बालचन्द्रजी, विजयराजजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (डूंगरगढ़), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमन्नालाल जी बोरड़ का योग रहा है। पाठ-सम्पादन का कार्य सं० २०२६ पौष कृष्णा ६ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) में आरम्भ किया गया और वह सं० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली में पूरा हुआ।

प्रति शोधन में मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने बहुत श्रम किया है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है।

कार्यनिष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

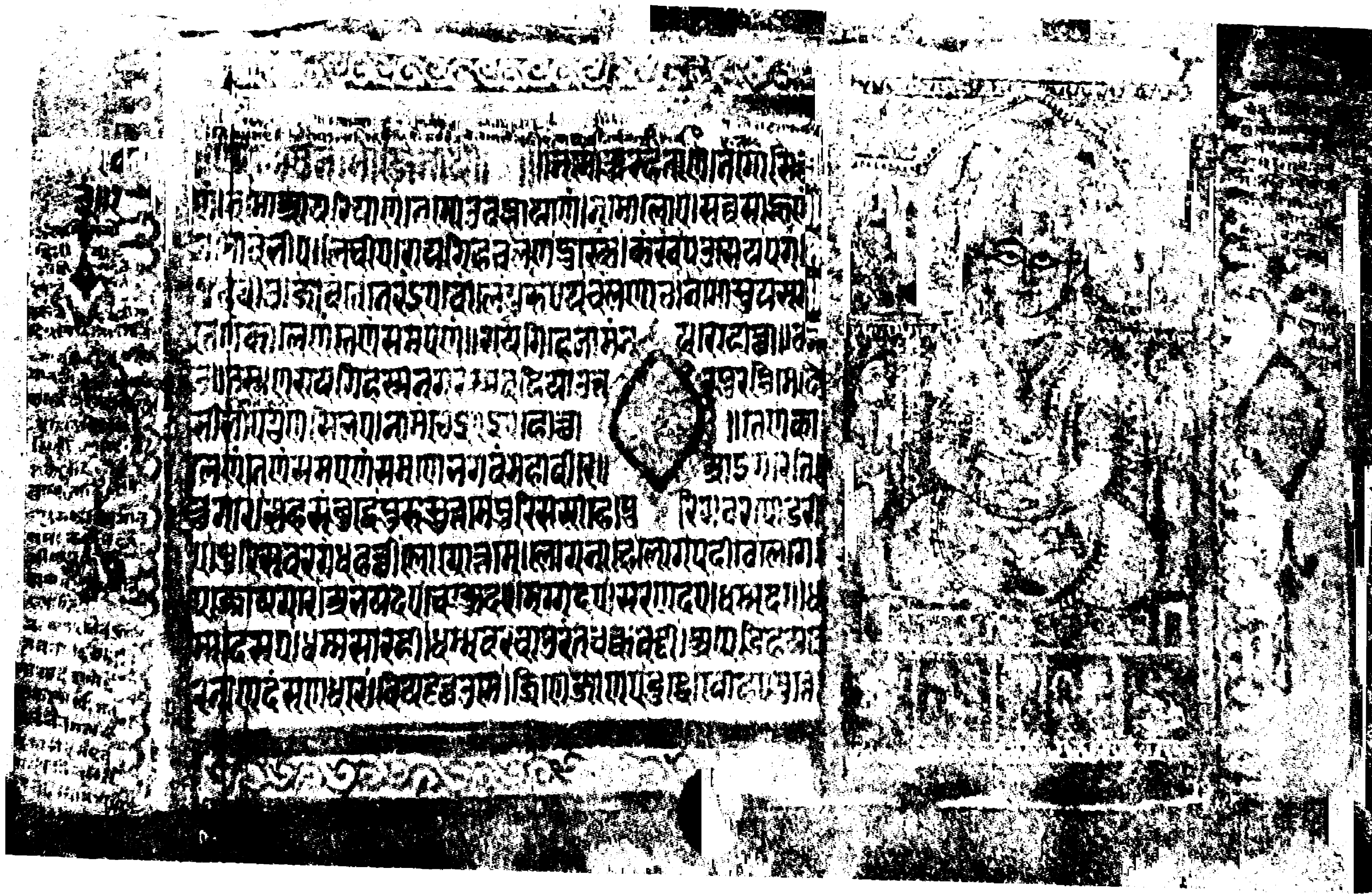
आगम के प्रबन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

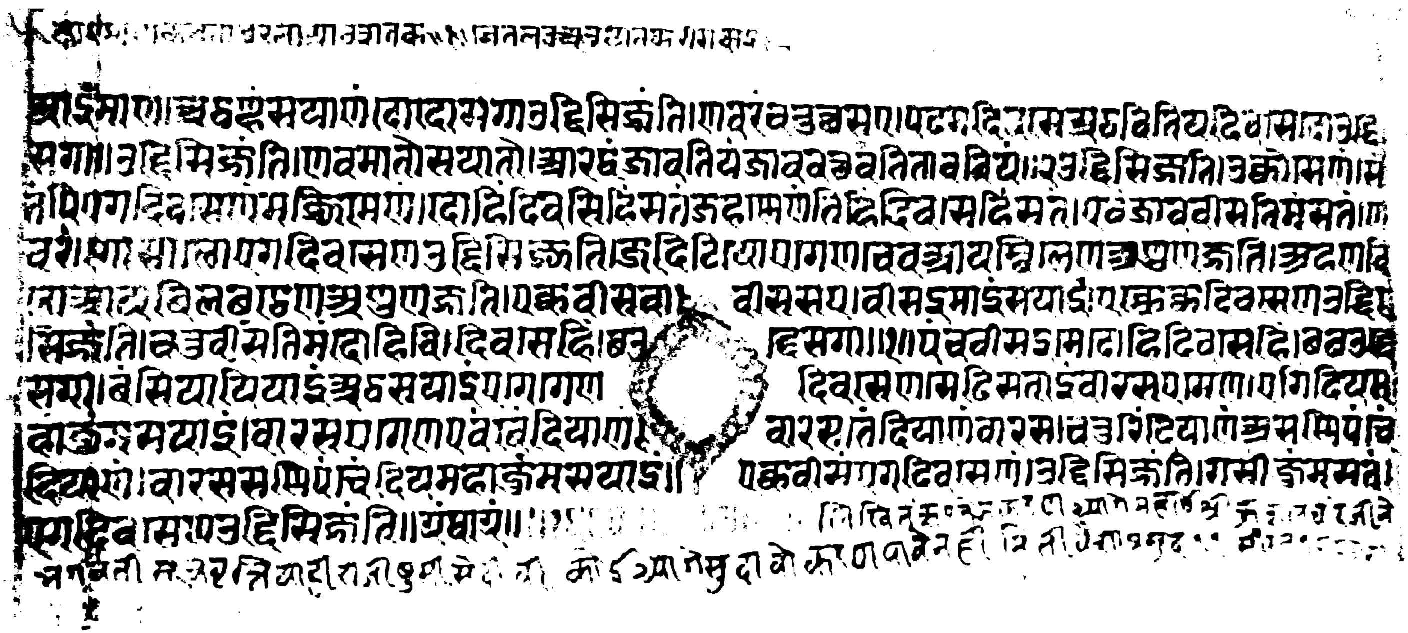
एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्तिमात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
१-१०-७४

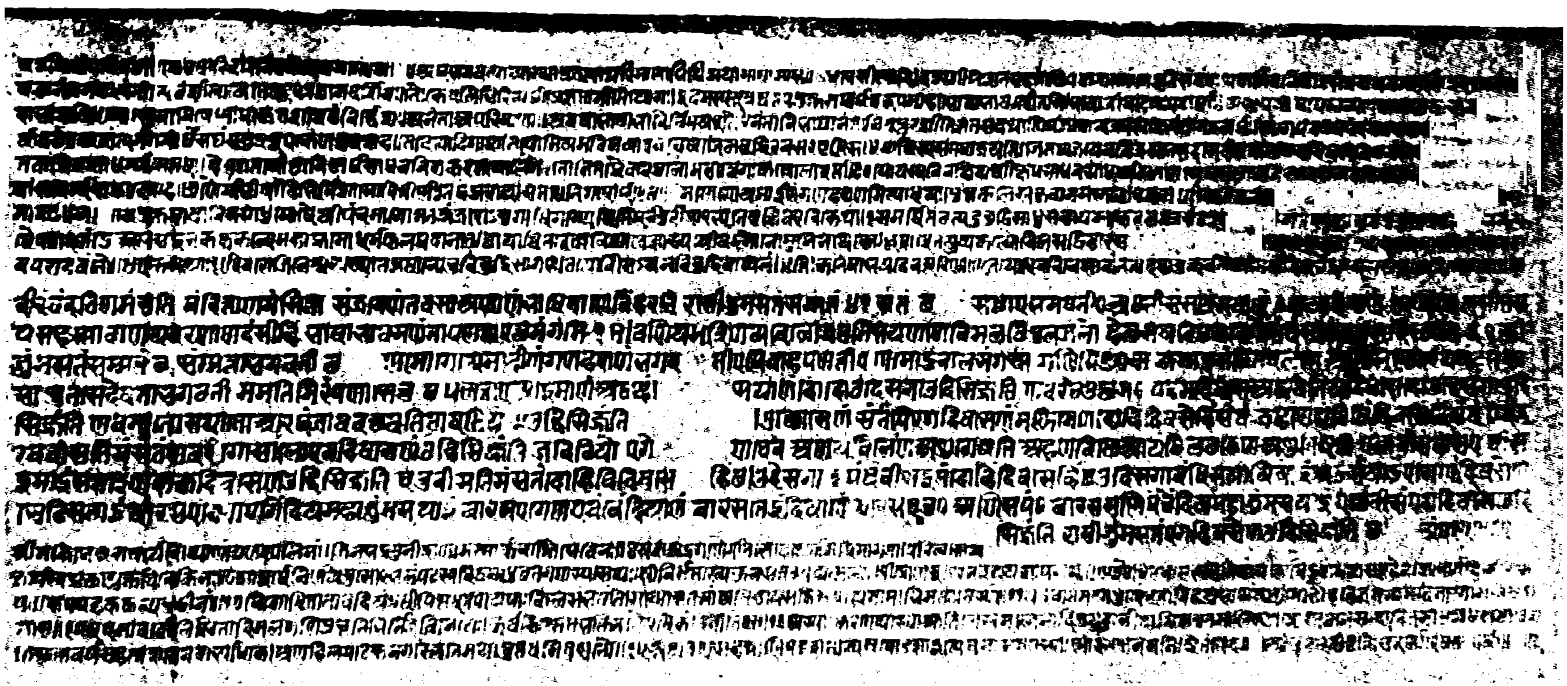
मुनि नथमल



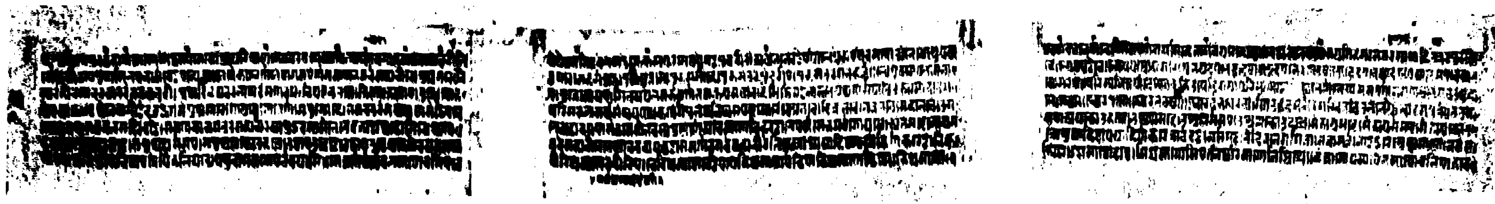
'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदार शहर) ।



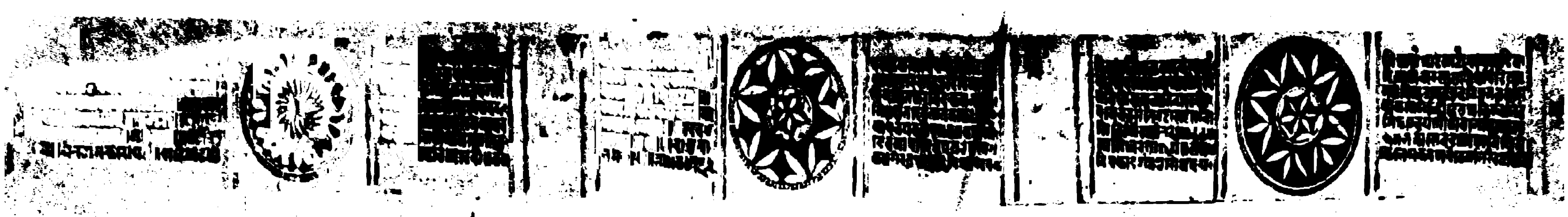
'ब' संजक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।



'अ' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (गणेशदास गधैया हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।



'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।



'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली में लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायांग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम में छत्तीस हजार प्रश्नों का व्याकरण है[1]। तत्त्वार्थवार्तिक, षट्खण्डागम और कसायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम में साठ हजार प्रश्नों का व्याकरण है[2]।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमों की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमें विषयवस्तु की विविधता है। सम्भवतः विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नहीं होगी जिसकी इसमें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में चर्चा न हो। उक्त दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलतः इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड़ गया, जैसे—भगवती व्याख्या-प्रज्ञप्ति। अनेक शताब्दियों पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान में व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्बन्ध में अनेक सूचनाएं मिलती हैं। समवायांग में बताया गया है कि अनेकों देवों, राजों और राजर्षियों ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमें स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात है[3]। आचार्य अकलंक के अनुसार प्रस्तुत आगम में जीव है या नहीं है—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित हैं[4]। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तरों के साथ-साथ छियानवे हजार छिन्नच्छेद नयों[5] से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है[6]।

---

१. समवाओ, सूत्र ६३; नंदी, सूत्र ८५।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०; षट्खण्डागम १, पृ० १०१; कसायपाहुड १, पृ० १२५।

३. समवाओ, सूत्र ६३।

४. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

५. जिस व्याख्या पद्धति में प्रत्येक श्लोक और सूत्र की स्वतन्त्र, दूसरे श्लोकों और सूत्रों से निरपेक्ष व्याख्या की जाती है उस व्याख्यापद्धति का नाम छिन्नच्छेद नय है।

६. कसायपाहुड भाग १, पृ० १२५।

उक्त सूचनाओं से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओं ने अनेक नए रहस्यों का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयों में जाते हैं तो हमें प्रतीत होता है कि इन रहस्यों का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवों के छह निकाय बतलाए। उनमें त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध हैं। वनस्पति निकाय के जीव अब विज्ञान द्वारा भी सम्मत हैं। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायों के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नहीं हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवों का केवल अस्तित्व ही नहीं बतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास संज्ञाएं आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवों का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल बाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम से नहीं लेते—कभी कम समय से और कभी अधिक समय से लेते हैं। उनमें आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते हैं। उनमें स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धारायें अस्पष्ट होती हैं[1]।

मनुष्य जैसे श्वासकाल में प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल में केवल वायु को ही ग्रहण नहीं करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलों को ग्रहण करते हैं[2]।

पृथ्वी की भांति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते हैं, आहार आदि करते हैं। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवों के विविध पक्षों का अध्ययन कर उनके रहस्यों को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवों पर पर्याप्त शोध नहीं की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमें महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते हैं कि वनस्पति में दस संज्ञाएं होती हैं। वे संज्ञाएं निम्न प्रकार हैं—आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, परिग्रह संज्ञा, क्रोध संज्ञा, मान संज्ञा, माया संज्ञा, लोभ संज्ञा, ओघ संज्ञा और लोक संज्ञा। इन संज्ञाओं का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप में वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप में मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप में की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इंगित करना है कि इस आगम में ऐसे सैंकड़ों विषय प्रतिपादित हैं जो सामान्य बुद्धि द्वारा ग्राह्य नहीं हैं। उनमें से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधों द्वारा अब ग्राह्य हो चुके हैं और अनेक विषयों को परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवों की गतिविधियों के प्रत्यक्षतः प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तों का ही विकास नहीं होता, किन्तु अहिंसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवों के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

१. भगवई १।१।३२, पृ० ६।
२. भगवई ६।३४।२५३,२५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पांच मूल द्रव्यों का प्रतिपादन किया। वे पंचास्तिकाय कहलाते हैं। उनमें धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनों अमूर्त होने के कारण अदृश्य हैं। जीवास्तिकाय अमूर्त होने के कारण दृश्य नहीं है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] मूर्त होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के संयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम में जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थों या दर्शनग्रन्थों में सुलभ नहीं है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नहीं है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमें हजारों प्रश्नोत्तर चर्चित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक संघ के आचार्य मंखलिगोशाल, जमालि, शिवराजर्षि, स्कन्दक संन्यासी आदि प्रकरण बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालासवेसियपुत्त, तुंगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय हैं। गणित की दृष्टि से पार्श्वापत्यीय गांगेय अनगार के प्रश्नोत्तर बहुत मूल्यवान् हैं।

भगवान् महावीर के युग में अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म संघ के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म संघ के मुनि और परिव्राजकों के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेय लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम में ऐसे अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों से प्रस्तुत आगम पढ़ने में रुचिकर, ज्ञानवर्धक, संयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायांग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक हैं[1]। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान में इसके एक सौ अड़तीस शत या शतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते हैं। प्रथम बत्तीस शतक स्वतन्त्र हैं। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक बारह-बारह शतकों के समवाय हैं। चालीसवां शतक इक्कीस शतकों का समवाय है। इकचालीसवां शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अड़तीस शतक होते हैं। उनमें इकचालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक हैं।

शतकों में उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८४१	४	१०	७५३
२	१०	२३८१८	५	१०	२५६६१
३	१०	३६७०२	६	१०	१८६५२

१. समवाओ, सूत्र ९३; नन्दी, सूत्र ८५।

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
७	१०	२४६३५	२५	१२	४५१०३
८	१०	४८५३४	२६	११	४४५५
९	३४	४५८५९	२७	११	१९०
१०	३४	९९०७	२८	११	६९४
११	१२	३२३३८	२९	११	१०२७
१२	१०	३२८०८	३०	११	४७६४
१३	१०	२१९१४	३१	२८	२३४४
१४	१०	१६०३३	३२	२८	३६३
१५		३९८१२	३३ (१२)	१२४	३०८९
१६	१४	१५९३९	३४ (१२)	१२४	८९६४
१७	१७	८४१२	३५ (१२)	१३२	४१८१
१८	१०	२२४४३	३६ (१२)	१३२	७३१
१९	१०	८०२७	३७ (१२)	१३२	११५
२०	१०	१९८७१	३८ (१२)	१३२	८७
२१ (आठ वर्ग)	८०	१६३०	३९ (१२)	१३२	१३९
२२ (छह वर्ग)	६०	१०६८	४० (२१)	२३१	२७३४
२३ (पांच वर्ग)	५०	७१५	४१	१९६	३५१६
२४	२४	३९९२६	कुल १३८	कुल १९२३[1]	कुल ६१८२२४

भाषा और रचना-शैली

प्रस्तुत आगम की भाषा प्राकृत है। कहीं-कहीं शौरसेनी के प्रयोग भी मिलते हैं। इसमें देशी शब्दों का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है, जैसे—खत्त, डोंगर (७।११७), टोल (७।११९), मग्गओ (७।१५२), बोंदि (३।११२), चिक्खल्ल (८।३५७)।

इसकी भाषा बहुत सरल और सरस है। अनेक प्रकरण कथा-शैली में लिखे गए हैं। जीवन-प्रसंग, घटनाएं और रूपक स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते हैं। स्थान-स्थान पर कठिन विषयों को उदाहरणों द्वारा समझाया गया है।

प्रस्तुत आगम की रचना गद्य शैली में हुई है। कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से प्रश्नोत्तरों का क्रम चलता है और कहीं-कहीं किसी घटनाक्रम के बाद उनका क्रम चलता है। प्रतिपाद्य विषय का संकलन करने के लिए संग्रहणी गाथाओं के रूप में कुछ पद्य भाग भी मिलता है।

---

१. बीसवें शतक के छठे उद्देशक में पृथ्वी, अप् और वायु—इन तीनों की उत्पत्ति का निरूपण है। एक परम्परा के अनुसार यह एक उद्देशक है, दूसरी परम्परा के मत में ये तीन उद्देशक हैं। इस परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के कुल उद्देशक १९२५ हैं।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगम के पाठ-शोधन में लगभग सवा वर्ष लगा। इसमें अनेक मुनियों का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी का सबसे बड़ा संकलन-ग्रन्थ जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार नई दिल्ली
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti'. The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati'. According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries[1]. On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Śatkhandāgama and Kaśaya-Pāhuḍa the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries[2].

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas. It is multifarious in its contents. Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly. From the aforesaid point of view, this Āgama was held in high esteem. The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i.e.'Vāyākhyā Prajñapti'. Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title. Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajnapti'.

The Content

Different sources provide copicious information regarding the contents of the present Āgama. 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail. Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeewa, Ajeewa, Loka and Aloka have been explained in detail[3]. According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jiwa exists or not, have been answered in this Āgama.[4] According to Ācharya Veersena, alongwith the queries and answers, predictive śubha (auspicious) and aśubha (in-auspicious)[5] have been described by ninetysix thousand Ćhinnaććheda Nayas[6].

---

1. Samawao, Sutra 93 ; Nandi, Sutra 85.
2. Tatwartha Vartika 1/20, Satkhanadagama I, page 101, Kasaya-Pahuda-I, page 125.
3. Samawao Sutra 93.
4. Tatwartha' vartika 1/0.
5. Kasayapahuda Pt. I, p. 125.
6. The explaination-method, in which each sloka and sutra is explained independently without considering other slokas and sutras, is called 'chinnacchedanaya'

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications. Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries. When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before.

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas). The living beings of the Trasa-kāya(mobile beings)group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanaspati nikāya) are supported by the modern Science also. The four groups of living beings—the earth. the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science. Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc., but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc. also. The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years. They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more. They aspire every moment for food and take it. The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them. The other currents of consciousness are indistinct.[1]

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora[2].

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc. Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings. Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away. These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world.

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Augha' consciousness and world consciousness. Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

1. **Bhagawai, 1-1-32, page 9.**
2. **Bhagawai, 9-34-253, 254, page 464.**

This topic has been mentioned as an example. The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common ense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkshma jīva) being perceivably proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also.

Lord Mahavira has expounded the five principal substances. They are named as Panchāstikāya. In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāśāstikāya, the three being formless are invisible. Though Jīvāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body. Pudgalāstikāya, being concrete, is visible. The multiformity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala. A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works. The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries. From the historical point of view, the chapters on Ācharya Mankkhali Gosāla, Jamāli, Śivarājarṣi, Skanda Sanyāsi etc. are of great importance. From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramaṇopāsaka, Roha Aṇagāra, Somila Brāhmaṇa, Lord Parśwa's disciple Kālās-vesiya-putta, śrāvakas of Tungīya City etc. are the topics worth reading. From the view point of Mathematics, discussions of Pārśwa-patyīya Gāngeya Aṇāgāra are of great value.

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults. Cultic bigots were almost un-heard. Munis and Parivrājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discusssions with the Munīs and Parivrājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely. There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age. In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspring of self-control and equilibrium and promoter of knowledge.

Divisions and Sections

According to Samawāyānga and Nandi Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyayanas, ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddesakas[1]. The present volume of it differs from the said account.

1. Samawao, Sutra 93, Nandi, Sutra 85,

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirytwo Śatakas are independent ones. The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each. The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas. The forty-first śataka is independent. In all, there are one hundred and thiryeight śatakas. In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones.

The Uddeśakas and syllables in the Śatakas are as follows :

Śataka	*Uddeśaka*	*Total syllables*
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

Sataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 (,, ,,)	124	8964
35 (,, ,,)	132	4181
36 (,, ,,)	132	731
37 (,, ,,)	132	115
38 (,, ,,)	132	87
39 (,, ,,)	132	139
40 (29 ,,)	231	2734
41	196	3516
138	19231[1]	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākrit. Here and there the usages of Saurseni are also found. In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like khatta (खत्त), Dongar (7/117 डोंगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मग्गओ), Bondi (3/112 बोंदि), Cikkhalla (8/357 चिक्खल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet. Many topics have been dealt with in the style of fable narration. Reminiscences, anecdots and allegories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing aporopriate examples in many places.

The present Āgama has been written down in prose style. Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident. Some verse-part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic.

1. In the twentieth Sataka of the sixth Uddesaka, the theory of the origin of the earth, the water, and the air, has been expounded. According to one tradition, this is one Uddesaka, but the others hold it as comprised of three Uddesakas. According to this tradition, the Agama under review has 1925 Uddesakas in all.

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama. In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis. I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most volumenous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar **Ācharya Tulasi**

Delhi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i.e. the Anga-Praviṣta and the Anga-Vāhya. The Anga-Praviṣta Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal diciples of Lord Mahāvira. They are twelve in number : 1. Āchārānga, 2. Sūtrakṛtānga, 3. Sthānānga, 4. Samawāyānga, 5. Vyākhyā-Prajñapti, 6. Jñata Dharma-Kathā, 7. Upāsaka-Daśā, 8. Anta-kṛita-Daśā, 9. Anuttaropapātika Daśā, 10. Praśna-Vyākaraṇa, 11. Vipāka-Śruta, 12. Dṛiṣtiwāda. The twelfth Anga is, at present, not available.

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttani. The first volume has four Angas, i.e, 1. Āchārānga, 2. Sūtrakṛitānga, 3. Sthānānga and 4. Samawāyānga. The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajñapti' and the third contains the rest six Angas.

The present work is the second volume of the Anga-Suttāni. It has the original text of the Vyākhyā-Prajñapti with its recentions. A brief preface has been added in the beginning. An elaborate preface and the word-index have not been added to it. It is planned to publish them in two independent volumes. Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof.

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm-leaf manuscripts) and vṛitties (commentaries). According to the method of text redemption in vouge, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as main, but redeem the original text with the help of Artha-mīmānsā (critical meaning), former and later contexts, preceding text (Poorwa-Pātha) and the text of other Āgama-Sūtras and the explanation in the Vṛitti (commentary). The original commentary of the Bhagwati is extinct at present. The chūrṇi (commentary) was available but we could not get it. We have made use of the original Tīka and chūrṇi portions quoted by Abhayadeva Sūri in his vṛitti. The scribes, from time to time have abridged the text, Many forms

of the abridgement are found. In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions. The abridgement of the text found in them has been done in different ways. (See, page 39). There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters. In sūtra 1/365, the reading Pāosiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya'. In the old script, it is difficult to differenciate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O'. The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only. (See, page 66, Sūtra 1/392 ; page 77, Sūtra 1/444).

In Sūtra 8/242, the reading is 'Čhettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittehin', 'Čhattehin', 'Čittehin' occured. 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301. There is an obridged 'Vaćna' (lesson) in same manucripts. The commentator, too, received the abridged 'Vaćna'. So he wrote 'Anya Yūthik waktawyata' is to be understood by one himself. It has not been written down lest the work should get bulky[1]'. The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text. And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text.

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place. In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā' Puććhā' is the abridged text. Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding. And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 ; the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112). In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Asoććā Kewali' also. In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included. (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99). In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sutra 5/51, page 194).

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis. In all the manuscripts, after the text 'Ćiyatante uragharappawesā' in Sutra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guṇa-weramaṇapaćća-

1. Iha Sutra Anya Yuthika waktawayam Swayamuecaraniyam. Grantha—gaurawa—bhayenalikhitatatwattasya taccedam, Vrittipatra 106,

khāṇa-pōs-hŏwa-wasehin'. Due to the inconsistency in its meaning there, the commentator had to write 'Tairyuktā iti gamyam', but, on seeing the Sutras 'owā-iya' and 'Rāyapaśeṇa-iya', it is found that this reading should not be there where it has been written down. On the basis of both the above-mentioned Sūtras, the order of the text in view is constructed thus—'O-saha-Bhesajjeṇam Paḍilābhemāṇā bahūhin Sīlawwaya-gūṇa weramaṇa-Paććakhāṇa Posahowa-wāsehin ahāpariggahi-e-hin tawokamméhin appāṇam bhāwemāṇā wiharanti'. In sūtra 2/1, in all the specimens, the text is sārakallāṇa Jāwa kewa-in' but 'Jāwa' serves no purpose here. On the basis of 8/217 of the Bhagwati as weil as the first stenza of the Prajnāpanā. here the text is ascertained to be 'Jāwati, instead of 'Jāwa'.

In many instances, the meaning does not change by an alteration of letter but difficulty arises in understanding the meaning and sometimes it changes too. In Sūtra 6/90. the reading is 'hawwin' ; and 'heṭṭhin' as well as 'hiṭṭhin' the two recensions are also found. The commentator Abhayadeva Sūri has given the meaning as 'Sama' there. (See the commentary-leaf 271). In the sthānānga Sūtra (143), on the same topic, the reading is as, 'hiṭṭhin'. Abhayadeva Sūri has giveṇ its meaning there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānānga-vṛitti leaf 410).

In same places the varient readings occur due to the mis-understanding of the transcriber and difference in characters in scripts. In Sūtra 9/195, the reading is as 'Odharémāṇī-odharémaṇī'. In some specimens this reading is found in the form of 'uwadharemāṇīo-uwadharemāṇīo'. In one copy, this reading is changed into 'uwari-dhare-māṇīo-uwari-dhare-maṇīo'.

A few examples of recensions have been cited here to show that manuscripts or only one particular copy cannot be taken as the basis in the redemption of the text. It can be redeemed only on the basis of various Āgamas, their commentaries and consistency of their meaning.

The problem of abridgement and redemption of the text

It is a task to lay down authentically the method of abridgement adopted by Devardhigaṇi at the time of writing the Āgama Sūtras. And, it is a task because many Āgamadharas have abridged the Āgama-text in later periods. Probably, same transcribers too, for the sake of convenience of transcribing, have abridged the text.

In the abridged text of sūtra 13/25, the dewoddeśaka of the second Śataka has been referred to indicate the kinds of Bhawanpati Dewas etc., but the full text is not there (2/117, page 111) and the sthānpada of the Prajnāpnā has been referred to. Likewise, in the abridged text of Sūtra 16/33, the third

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapaseṇa-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyaṇa (13/117, page 614) only not to find the full text there. In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to.

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also. The words 'Jāwa', 'Jahā' etc. have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment. The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa'. If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti, the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added. The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vaćnās, abridged and full. The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anuṣtupa Ślokas. The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anuṣtupa Ślokas. Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama. In editing the text, we have, as far as needed, completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc., resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anuṣtupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	**Nigama**	**Niyama**	**(Tā)**
1/224	**Appiyā**	**Appitā**	**(Ka)**
1/224	**Etesin**	**Tetesin**	**(Ka, Tā, Ma)**
1/237	**Wai.**	**Wati**	**(Tā)**
1/239	**Wai.**	**Wayi.**	**(Tā)**
1/245	**Māyo**	**Māo**	**(Tā)**
1/273	**Poyantam**	**Podantam**	**(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)**
1/276	**Kajjai**	**Kijjai**	**(Ba, Sa)**
1/281	**Pāṇā-i-Wāya**	**Pāṇāyawāya**	**(Sa)**

1/281	Nera-i-yaṇam	Neratiyāṇam	(A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Owa oge	(Tā)
1/315	Ahe	Adhe	(Tā)
1/354	Karejja	Karijja (Ka) Karejjā	(Sa)
1/357	Duhi-é	Dukkhi-e	(Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Dugandhe	(A, Ma, Sa)
1/363	Āriyam	Yariyam	(Ka, Tā)
1/364	ća-u	ćatu	(Tā)
1/365	Pa-O-siā	Pāyosiā	(A, ba)
1/370	Saya	Sata	(Tā)
1/371	Sandhijjamāṇe	Sandhejja. māṇe	(Tā)
1/371	Nisiṭṭhe	Nisaṭthe	(Ka, Tā)
1/371	Kā-i-ya-e	Kātiyā-e	(Tā)
1/385	Pāṇā-i-wāya	Pāṇāyawāyao	(Ba, Sa)
1/389	Hṛissi	Hussi	(Ba);
		Hṛiswi	(Sa);
		Hassi	(Ka)
1/415	Jahā	Jadhā	(A, Ba, Sa)
1/424	Sāmā-i-yassa	Sāmātiyassa	(Tā)
1/425	Ja-i	Jati	(A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kiwaṇassa	Kiwiṇassa	(Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā	(Tā)
2/41	Viyadda bhoī	Viyaddabhotī	(A, Tā, Bā, Ma, Sa)
2/57	Sāmā-i-yama-i-yāin	Sāmā-i-mādīy-ātim	(Ka, Ba)
		Sāmātiyamā-tiyāin	(Sa)
2/66	Dhamayio	Dhawaṇi	(Ka, Tā, Ba, Ma)
2/66	Rayaṇīye	Ratnīye	(Tā)
2/68	Ārūhe-i	Ārūbhe-i	(Ka, Ma)
2/68	Khā-ima-Sāimam	Khatimā-Sāti-mam	(Ba, Sa)
2/68	Sayamewa	Satmewa	(Tā)
2/94	Awanguya o	Awanguta o	(Ma)
2/94	Khā-ima sā-i-meṇam	Khātima-Sātimeṇam	(Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāṇe	Nīsaṇe	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ima Sā-imeṇa	Khātim-Sāti-meṇam	(Ba,Sa)
3/112	Sayaṇijjā o	Sataṇijjā o	(Tā)
3/112	Niwatim	Nipatim	(Tā)
3/143	Weyati	Wedati	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	'Paḍiṇa'	'Padiṇa'	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharaṇa māyā-e	Rataharaṇa-māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwaḍiyam	Wedāwaḍiyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansi	Samatansi	(Tā)
5/139	'Lo-i-ya'	'Lo-ti-ya'	(A, Sa)
6/63	Sakasā-ī-hin	Sakasādīhin	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajoti	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kaṇharātīo	Kaṇharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Aṇuppadāyawwe	Aṇuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Aṇādīyā o	Aṇātīta	(Tā)
8/420	Sātāṇayāe	Sādaṇatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issariyao	Dissariya o	(Ma)
8/431	Issariya	Nisṣariya	(Ma)
9/43	Sakasāi	Sakasādi	(A, Tā)
9/94	Ahi-o	Ahito (Ka),	Adhito (Tā)
9/174	Maya	Mada o (Tā)	Mata o (ba)
9/169	Sawaṇayāe	Samaṇayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Niyamam	Nitamam	(Ba)
17/38	ćyaṇa	cyaṇa	(Ta, Ba)

18/100	Mayimiććha o	Madimīććha o	(Ba)
19/85	Jati indiyāni	Jadindiyāni	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh.)

Manuscripts used :

(A) Bhagawati-vritti (Panćapaṭhī). Manuscript with original Text.

This manuscript is from the Gadhaiya Library, Sardarshahr. It contains 189 leaves and 278 pages. Each leaf is 13½" in length and 4¾" in width. There are 1 to 23 lines of the original text on each leaf and each line has 80–85 letters. The copy has been prepared in a beautiful and artistic manner. There is a 'Wāwaṛi' (hollow space) also in the centre. The year of the transcription has not been given. It is estimatedly written in the 15th-16th century.

(Ka) *Bhagwati Text* (*Manuscript*)

This copy is from the Poonamchand Budhamal Dūdhoria, Ćhapar library. It has 333 leaves and 666 pages. Each leaf is 10½" long and 4¼". wide. There are 15 lines on each leaf and each line has 52-55 letters. The copy is a beautiful and artistic one. There are intermitant Pāis (full-stops) in red ink and wāwaṛi (hollow space). It dates back probably to the 16th ceuntry.

(kha) *The text on the palm-leaf* (*Manuscript*)

This manuscript has been received from Madan Chand ji Gothi, Sardar Shahr. It belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the original written on Tāla Patra. It has 422 leaves and 844 pages. Every page contains 3 to 6 lines and there are 130-140 letters in each line. The concluding eulogy has been written as || ćha || Mangalam Mahā śrī || || ćha ćha || ćha || Rā"

The year of the transcription has not been given but estimatedly it should be of the 12th century.

(Tā) *The text of the Palm-leaf* (*Manuscript*).

This manuscript belongs to Jaisalmer Library and is a photo-print of the Script written on the Talpatra. This, too, has been received from Madan Chand ji Gothi of Sardar Shahr. It has 348 leaves and 696 pages. Each leaf has 5 to 9 lines and there are 130-140 letters in each line. The last leaf is illustrated. The concluding eulogy reads as follows :—

|| ćha || Bhagwati Samattā || ćha || || ćha || || ćha || Sambat 1235 Viśākhawad ekādasyām gurau aparāhṇe lekhaka -waṇa ćaṇḍena likhitam"

(Ba) *The text of Bhagawati* (*Manuscript*)

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages. Each leaf is 10½'' long and 4½'' wide. There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters. The copy has been attractively and artistically prepared. There are three 'Wawaḍīs' and red lines in it. 'Hartal' (orpinient) has been used. The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown. Estimatedly, it dates back to the 16th century.

(Ma) *Bhagwati Sutra Text* (*Manuscript*)

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages. Each leaf is 10¼'' long and 4½'' wide. Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line. There are intermittant 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century. The concluding eulogy reads as follows :—

ćha ‖ Granthāgram 15775 ‖ ćha ‖ ćha ‖ ‖ ćha ‖ Srī ‖ ćha ‖ Srī Kalyānamastu ‖ Śubham Bhawatu ‖ ćha ‖ Śri ‖ Śri ‖ ćha ‖ ćha ‖

The script has notes in Sanskrit in many places.

(Sa) *Bhagwati Sutra* (*Tripathi*)

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun. It has 602 leaves and 1204 pages. The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given obove and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript. Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect. Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it and each line contains 45-53 letters.

The concluding eulogy reads as follows :--

Srī Bhagwati Sūtram Sampūrṇam ‖ ćha ‖ Srī Vivāha Pannatti Pañćamam angam Sammattam ‖ Śubham Bhavatu ‖ Kalayaṇamastu. Granthāgram 15675 Ubhaya Mīlane Gran. 34291 ‖ Srī ‖ Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore Madhye Sam. 1848 Māha Śu. 15 ‖

Wṛi, (Wṛipā) Printed

Publisher : Śrīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vāćnā' has a very ancient history in the Jaina tradition. There had been four 'Vāćnās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries. There was no well planned Āgama-Vāćnā after Dewardhigaṇi. The Āgamas, written in his Vāćnā-time, have become very much disordered during the long past period. A well planned 'Vaćnā' was the need of the day again to set them in order. Āćārya Tulsī had tried for a well planned congreagational Vaćnā but it could not materialize. Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vāćnā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congraegational. With this decision in view, our work on this Āgama-Vāćnā began.

Āćārya Tulsī is the Head of this Vāćan. Vāćān means to teach. There are many aspects of teaching in our 'Vāćnā', i.e., redemption of the text, translation, critical study etc. etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Āćarya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice. Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties.

In the editing of the present Āgama Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hiralalji have given constant help to me in various ways. Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śri Kanmalji, Ćhatramalji, Amolakćandji. Dinkarji, Poonamćandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārāćandji, Balćandji, Vijairajji, Manilalji, Mahendra Kumarji (second) Sampatmalji (Doongargarh), Śantikumarji, Mohanlalji (Śārdūl) and Manna lalji Boraḍ. The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Paush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974).

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji and Dulaharajji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmeṭ).

Valueing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in editing of the Āgama, late Śrī Madan ćandji Gothi is very much missed

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished.

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning. He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate. He has highly shown his faith and dedication in this publication of the'Āgama Suttani'

Sri Khem Chand ji Seṭhiā, President of the Jain Viśwa Bhārati and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text.

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar **Muni Nathmal**

New Delhi

भगवई विसयाणुक्कम

•

नवमं सतं सू० १-२६३ पृ० ३९८-४६५

दसमं सतं सू० १-१०३ पृ० ४६६-४८४

एक्कारसं सतं सू० १-१९९ पृ० ४८५-५३७

सत्ति-पदं ११३, सक्कस्स सत्ति-पदं ११५, जंभगदेव-पदं ११७, महवि-सकम्मनाम-पदं १२३, अत्ताणत्त-पोग्गल-पदं १२६, इट्टाणिट्टादि-पोग्गल-पदं १२८ देवाणं भासासहस्स-पदं १३०, सूरिय-पदं १३२ समणाणं तेयलेस्सा-पदं १३६ केवलि-पदं १३८ । •

पन्नरसमं सतं **सू० १-१९०** **पृ०-६५४-७०६**

गोसालग-पदं १, भगवओ विहार-पदं २०, पढम-मासक्खमण-पदं २२, दोच्च-मासक्खमण-पदं ३० तच्च-मासखमण-पदं ३७, चउत्थ-मासखमण-पदं ४४, गोसालस्स सिस्सत्तेण अंगीकरण-पदं ५३, तिलथंभय-पदं ५७, वेसियायण-बालतवस्सि-पदं ६०, तिलथंभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं ७२, गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पदं ७६, गोसालस्स पुच्छकहा-उवसंहार-पदं ७७, गोसालस्स अमरिस-पदं ७९, गोसालस्स आणंदथेरस्स समक्खं अक्कोसपदरिसण-पदं ८२, आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पदं ९७, आणंदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं ९९, गोसालस्स भगवंतं पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवण-पदं १०१, भगवया गोसालग-वयणस्स पडियार-पदं १०२, गोसालस्स पुणरक्कोस-पदं १०३, गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासिकरण-पदं १०४, गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पदं १०७, गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पदं ११०, सावत्थीए जणपवाद-पदं ११५, गोसालेण समणाणं पसिणवागरण-पदं ११६, गोसालस्स संघभेद-पदं ११९, गोसालस्स पडिगमण-पदं १२०, गोसालेण नाणासिद्धंत-परूवण-पदं १२१, अयंपुल-आजीविओवासय-पदं १२८, गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं १३६, गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं १४१, गोसालस्स नीहरण-पदं १४२, भगवओ रोगायंक पाउब्भवण-पदं १४३, सीहस्स माणसियदुक्ख-पदं १४७, भगवया सीहस्स आसासण-पदं १४६, सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पदं १५३, भगवओ आरोग्ग-पदं १६२, सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं १६४, सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं १६५, गोसालस्स भवब्भमण-पदं १६६ । •

सोलसमं सतं **सू० १-१३४** **पृ० ७१०-७३७**

वाउयाय-पदं १, अगणिकाय-पदं ५, कतिकिरिय-पदं ६, अधिकरणी-अधिकरण-पदं ८, जीवाणं जरा-सोग-पदं २८, सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं ३३, सक्क-संबंधि-वागरण-पदं ३५, चेय-अचेय-कड-कम्म-पदं ४१, कम्म-पदं ४४, अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं ४७, नेरइयाणं निज्जरा-पदं ५१, सक्कस्स उ[illegible]वागरण-पदं ५४, गंगदत्तदेवस्स संदब्भे पो[illegible]-परिणय-पदं ५५, गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं ५६, गंगदत्तदेवेण नट्टउवदंसण-पदं ६१, गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पदं ६५, सुविण-पदं ७६, भगवओ महासुमिण-दंसण-पदं ९१, सुविण-फल-पदं ९२, गंध-पोग्गल-पदं १०६, लोगस्स चरिमंते जीवाजी[illegible]-पदं ११०, परमाणुपोग्गलस्स गति-पदं ११६, किरिया-पदं

संकेत निर्देशिका

● ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक हैं। पाठपूर्ति के प्रारंभ में भरा बिन्दु [●] और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ ५ सूत्र ११।

(?) कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ७४ सूत्र ४३९।

[ ] आदर्शों में प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अनावश्यक व्याख्यांश पाठ को कोष्ठक में रखा गया है। देखें—पृष्ठ १०५ सूत्र ६७।

' ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति-स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ ३ सूत्र ६ और पृष्ठ ७ सूत्र ७।

× क्रॉस (×) पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण १०।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु (०) अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण २; पृष्ठ ४ टिप्पण ७।

'जहा' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ १६ टिप्पण ५।

अ, क, ख, ता, ब, म, स—देखें—सम्पादकीय में 'प्रति परिचय' शीर्षक।

क्व० क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १०।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १५ टिप्पण ४।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ १५ टिप्पण ५।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें—पृष्ठ ४ टिप्पण १६।

पू० प० पूरक-पाठ परिशिष्ट। देखें—पृष्ठ १२ टिप्पण ४।

अं०	अंतगडदसाओ	**दसा०**	दसासुयक्खंधो
अ०	अणुओगदाराइं	**ना०**	नायाधम्मकहाओ
उत्त०	उत्तरज्झयणाणि	**प०**	पण्णवणा
उ०	उवंगा	**भ०**	भगवई
उवा०	उवासगदसाओ	**राय०**	रायपसेणइयं
ओ०	ओवाइयं	**व०**	ववहारो
जं०	जंबुद्दीवपण्णत्ती		
जी०	जीवाजीवाभिगम		
ठा०	ठाणं		

भगवई

विआहपण्णत्ती

पढमं सतं

पढमो उद्देसो

मंगल-पदं

१. नमो[1] अरहंताणं[2],
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं[3],
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं[4] ॥

२. नमो बंभीए[5] लिवीए ॥

संगहणी-गाहा

रायगिह १-चलण २-दुक्खे, ३-कंखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावंते ७-नेरइए, ८-बाले[6] ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥

३. नमो सुयस्स ॥

उक्खेव-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं[7] नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

५. तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया[9] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था ॥

६. 'सेणिए राया, चिल्लणा देवी'[10] ॥

१. णमो (क) ।
२. अरिहं० (अ, क, वृपा) ; अरुहं० (वृपा) ।
३. आरिआणं (क) ।
४. लोए सव्व० (अ, क, ता, ब, म, वृपा) ।
५. बंभीए (ता, ब) ।
६. पाले (ता) ।
७. णाम (क) ।
८. ओ० सू० १ ।
९. बहिं (ता) ।
१०. × (ता, ब) ।

७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसंबुद्धे[1] पुरिसुत्तमे[2] पुरिससीहे[3] पुरिसवरपोंडरीए[4] पुरिसवरगंधहत्थी[5] लोगुत्तमे[6] लोगनाहे[7] लोगपदीवे[8] लोगपज्जोयगरे[9] अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए[10] धम्मदेसए[11] धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते[12] मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी[13] सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाहं[14] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव[15] •पुव्वाणु-पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥

८. परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। पडिगया परिसा[16] ॥

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'[17] सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे[18] कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे[19] महातवे ओराले[20] घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी 'उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयलेस्से'[21] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[22] अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१०. तते णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

१. सयं° (अ)।
२. पुरिसोत्तमे (अ); पुरुसुत्तमे (ब)।
३. पुरुससीहे (ता) सर्वत्र।
४. पुरुसवरपुंडरीए (ता)।
५. °हत्थीए (अ)।
६. लोगोत्तमे (अ, ब)।
७. °नाहे लोगहिए (अ)।
८. °पईवे (ता, क)।
९. °करे (क)।
१०. °दए बोहिदए (अ, ता)।
११. धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे (अ); धम्मदए धम्मदेसए (क, ता, ब); धम्म-दएत्ति पाठान्तरम् (वृ०)।
१२. मुक्के (क)।
१३. सव्वदंसी (ता)।
१४. °बाहमपुणरावत्तयं (अ, ब); सिवमचल-मरुज° (क)।
१५. सं० पा०—जाव समोसरणं। ओ० सू० १६-५१।
१६. पू०—ओ० सू० ५२-८१।
१७. गोयमे गोत्तेणं (अ, ता, ब); गोयम-सगुत्ते णं (क); गोयमगोत्तेणं (म)।
१८. °रिसह° (क, म)।
१९. तत्ततवे घोरतवे (क)।
२०. उराले (अ, ता, ब, म, वृपा)।
२१. °तेयलेसे (अ); °तेअलेस्से (क); °तेउलेस्से (म); मूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरसंखित्तविउलतेयलेस'त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ)।
२२. उड्ढजाणू (क, ता); उड्ढंजाणु (म)।

समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे[1] सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी[3]—

चलमाण-पदं

११. से नूणं भंते ! चलमाणे चलिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे[4] वेदिए ? पहिज्जमाणे पहीणे[5] ? छिज्जमाणे[6] छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? 'दज्झमाणे दड्ढे'[7] ? मिज्जमाणे[8] मए[9] ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ?

हंता गोयमा ! चलमाणे चलिए[10] । •उदीरिज्जमाणे उदीरिए । वेदिज्जमाणे वेदिए । पहिज्जमाणे पहीणे । छिज्जमाणे छिण्णे । भिज्जमाणे भिण्णे । दज्झमाणे दड्ढे । मिज्जमाणे मए ।॰ निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ।।

१२. एए णं भंते ! नव पदा[11] किं एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा ?

गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे[12]—एए णं चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा उप्पण्णपक्खस्स ।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए णं पंच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावंजणा विगयपक्खस्स ।।

नेरइयाणं ठितिआदि-पदं

१३. नेरइयाणं भंते ! केवइयं[13] कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

---

१. णादिदूरे (क); णाइदूरे (ता, म) ।
२. पंजलिउडे (अ, क); पंजलिपुडे (म) ।
३. वयासि (ता); वदासी (म) ।
४. विदिज्जमाणे (अ,ब); वेतिज्जमाणे (क) ।
५. पहिए (ता) ।
६. छविज्जमाणे (अ) ।
७. डज्झमाणे डड्ढे (ता) ।
८. मेज्जं (अ, ब) ; मियं (म) ।
९. मडे (क) ; मिए (ता) ।
१०. सं० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।
११. पया (ता) ।
१२. पहिए (अ, ता, ब, म) ।
१३. केवईयं (अ, क, ता); केवइ (ब) ।

१४. नेरइया णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
जहा उस्सासपदे[1] ।।

१५. नेरइया णं भंते ! आहारट्ठी ?
हंता गोयमा ! आहारट्ठी । जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्वं—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, किं वाऽऽहारेंति सव्वओ वावि ?
कतिभागं सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमंति ? ।।१।।

१६. नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा[3] पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ?

गोयमा ! नेरइयाणं पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया, परिणमंति[4] य ।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, परिणमिस्संति ।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, णो परिणमिस्संति ।।

१७. नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ? पुच्छा —
जहा परिणया[5] तहा चियावि ।।

१८. एवं—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा ।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'[6] उदीरिया[7] वेइया[8] य निज्जिण्णा ।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,[9] चउव्विहा पोग्गला होंति[10] ।।१।।

---

१. प० ७ ।
२. प० २८।१ ।
३. आहारिज्जस्स० (क) ।
४. परिणमयंति (ता) ।
५. भ० १।१६ ।
६. चिया य उवचिया (अ); चित उवचित (म)
७. उदीरिय (ता) ।
८. वेनिया (म) ।
९. पदमी (ब) ।
१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—
नेरइयाणं भंते ! पुव्वाहारिया पोग्गला निज्जिण्णा । तहेव ।

१९. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला भिज्जंति ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२०. नेरइया णं भंते ! कइविहा पोग्गला चिज्जंति ?
गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च[1] दुविहा पोग्गला चिज्जंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२१. एवं उवचिज्जंति[2] ॥

२२. नेरइया णं भंते ! कइविहे पोग्गले उदीरेंति[3] ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेंति, तं जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२३. सेसावि एवं चेव भाणियव्वा[4]—वेदेंति, निज्जरेंति ॥

२४. एवं[5]—ओयट्टेंसु[6], ओयट्टेंति, ओयट्टिस्संति ।
संकामिंसु, संकामेंति, संकामिस्संति ।
निहत्तिंसु,[7] निहत्तेंति, निहत्तिस्संति ।
निकाएंसु, निकायंति, निकाइस्संति[8] ।

संगहणी-गाहा

भेदिया[9] चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
ओयट्टण संकामण, निहत्तण निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हंति, ते किं तीतकालसमए गेण्हंति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति ? अणागयकालसमए गेण्हंति ?
गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हंति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हंति, नो अणागयकालसमए गेण्हंति ॥

२६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए[10] उदीरेंति, ते किं तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति ? पडुप्पन्नकालसमए[11] घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति ? गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ?

---

१. °मभिकिच्च (अ, ब) ।
२. °ज्जंति वि (ता) ।
३. उदीरंति (क) ।
४. °यव्वा एवं (अ, क, ता) ।
५. × (अ, क, ब, म) ।
६. उय° (क, ता, म); अपवर्तनस्य चोप-लक्षणत्वादुद्वर्त्तनमपीह दृश्यम् (वृ) ।
७. निव° (ता) सर्वत्र ।
८. अतोग्रे अ, क, ब, म प्रतिषु एतावान-तिरिक्तः पाठो लभ्यते—
सव्वेसु वि कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च ।
९. भेतिय (क) ।
१०. × (अ, ब) ।
११. °समय (क, ता, ब, म) ।

गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेंति, नो पडुप्पन्नकालसमए घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेंति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति ॥

२७. एवं—वेदेंति, निज्जरेंति[1] ॥

२८. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं बंधंति ? अचलियं कम्मं बंधंति ?
गोयमा ! नो चलियं कम्मं बंधंति, अचलियं कम्मं बंधंति ॥

२९. नेरइयाणं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं उदीरेंति ? अचलियं कम्मं उदीरेंति ?

गोयमा ! नो चलियं कम्मं उदीरेंति, अचलियं कम्मं उदीरेंति ॥

३०. एवं—वेदेंति, ओयट्टेंति, संकामेंति, निहत्तेंति[2], निकाएंति[3] ॥

३१. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं निज्जरेंति ? अचलियं कम्मं निज्जरेंति ?

गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति ॥

संगहणी-गाहा

बंधोदयवेदोयट्टसंकमे[4] तह निहत्तणनिकाए ।
अचलिय-कम्मं तु भवे, चलियं जीवाउ निज्जरए[5] ॥१॥

३२. एवं[6] ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

---

१. निज्जरंति (ता, ब) ।
२. निवत्तेंति (ता) ।
३. अतोग्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—
सव्वेसु अचलियं नो चलियं ।
'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलियं अचलियं ।
४. °वट्ट° (अ); °व्वट्ट° (ता) ।
५. निज्जरए (अ, ता, ब); निज्जरइ (क) ।
६. अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्यां 'जहा नेरइयाणं' इत्यादि समर्पणपदानि लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववर्ति—नैरयिकपदे तानि न विद्यन्ते, तेन संक्षिप्तैव वाचना मूलपाठ-रूपेणादृता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥
असुरकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, णीससंति वा,
असुरकुमाराणं भंते ! आहारट्ठी ?
हंता आहारट्ठी ।
असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—
आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए

ठितिपदे[1] तहा भाणियव्वा सव्वजीवाणं। आहारो वि जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्वो, एत्तो आढत्तो—नेरइया णं भंते! आहारट्ठी? जाव

य। तत्थ णं जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

असुरकुमारा णं भंते! किमाहारमाहारेंति?

गोयमा! दव्वओ अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तकालभावपण्णवणागमेणं सेसं जहा नेरइयाणं जाव ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति?

गोयमा! सोइंदियत्ताए ५ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए ४ इट्ठत्ताए ५ इच्छियत्ताए भिज्जियत्ताए उड्ढत्ताए, णो अहत्ताए सुहत्ताए, णो दुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति।

असुरकुमाराणं पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया? असुरकुमाराभिलावेण जहा नेरइयाणं जाव नो अचलियं कम्मं निज्जरंति।

नागकुमाराणं भंते! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता?

गोयमा! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं।

नागकुमारा णं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा ४?

गोयमा! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स आणमंति वा ४।

नागकुमारा णं भंते! आहारट्ठी? हंताआहारट्ठी।

नागकुमाराणं भंते! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ?

गोयमा! नागकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ णं जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेणं चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेणं दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव नो अचलियं कम्मं निज्जरंति।

एवं सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणंति।

पुढविकाइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता?

गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं।

पुढविकाइया केवइकालस्स आणमंति वा ४?

गोयमा! वेमायाए आणमंति वा ४।

पुढविकाइया णं आहारट्ठी?

हंता आहारट्ठी।

पुढविकाइयाणं केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ?

गोयमा! अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

पुढविकाइया किमाहारमाहारेंति?

गोयमा! दव्वओ जहा नेरइयाणं जाव निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसिं सिय पंचदिसिं। वण्णओ काल-नील-पीत-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाणि, गंधओ सुरभिगंध २ रसओ तित्त ५ फासओ कक्खड ८ सेसं तहेव। णाणत्तं कइभागं आहारेंति? कइभागं फासाएंति?

गोयमा! असंखिज्जइभागं आहारेंति, अणंतभागं फासाएंति जाव ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति?

गोयमा! फासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति। सेसं जहा नेरइयाणं जाव नो अचलियं कम्मं निज्जरंति। एवं जाव वणस्सइ-

१. प० ४।

२. प० २८।१।

दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।।

काइयाणं, नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं आहारे पुच्छा, गोयमा ! आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव । तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से णं असंखेज्जसमए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जइ । सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसाएंति ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ?

गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति । जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसि णं पोग्गलाणं असंखिज्जइभागं आहारेंति, णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासिज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्जमाणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्जमाणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?

गोयमा ! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

बेइंदियाणं भंते ! पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया ? तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमाणाइं ३ पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्जमाणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा । तेइंदियाणं घाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

चउरिंदियाणं चक्खि(क्खु)दियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊणं ऊसासो वेमायाए । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ । आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स । सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

एवं मणुस्साणवि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स, सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति ।

वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं, परिणमंति अवसेसं जहा नागकुमाराणं । एवं जोइसियाणवि, नवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स । आहारो जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स । सेसं तहेव ।

वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया । ऊसासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं । आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं । सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति (क, ता, बृ, प० २८।१) ।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ।।
अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ।।

३४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा आयारंभा वि, [1]•परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, णो अणारंभा ? अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा° ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा य ।
तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा, ते णं सिद्धा । सिद्धा णं नो आयारंभा,[2] •नो परारंभा, नो तदुभयारंभा°, अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य, असंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, ते णं नो आयारंभा, नो परारंभा,[3] •नो तदुभयारंभा°, अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया, ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा,[4] •नो परारंभा, नो तदुभयारंभा°, अणारंभा । असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि,[5] •परारंभा वि, तदुभयारंभा वि°, नो अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते असंजया[6], ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि[7], •परारंभा वि, तदुभयारंभा वि°, नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं[8] गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा[9] •आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा । अत्थेगइया जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा,° अणारंभा ।।

३५. नेरइया णं भंते ! किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?

---

१. सं० पा०—एवं पडिउच्चारेतव्वं ।
२. सं० पा०—आयारंभा जाव अणारंभा ।
३. सं० पा०—परारंभा जाव अणारंभा ।
४. सं० पा०—आयारंभा जाव अणारंभा ।
५. सं० पा०—वि जाव नो ।
६. अस्संजया (ता, ब) ।
७. सं० पा०—वि जाव नो ।
८. एएणट्ठेणं (अ, क); एतेणट्ठेणं (ता, ब, म) ।
९. सं० पा०—जीवा जाव अणारंभा ।

गोयमा ! •नेरइया आयारंभा वि[1], परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा ॥

३६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा[3] ॥

३७. एवं जाव[4] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—सिद्धविरहिया भाणियव्वा । वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया[5] ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया[6] । कण्हलेसस्स[7], नीललेसस्स काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा, नवरं—पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा[8] । तेउलेसस्स, पम्हलेसस्स, सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवरं—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

---

१. सं० पा०—वि जाव नो ।

२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

३. अणारंभा एवं असुरकुमारा वि जाव (ता) ।

४. पू० प० २ ।

५. भ० १।३५, ३६ ।

६. भ० १।३३, ३४ । 'सिद्धा न भाणियव्वा' इति अध्याहर्तव्यम् । 'सिद्धानामलेश्यत्वात्'—इति वृत्तिकारः ।

७. किण्ह° (अ) ।

८. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा ।
अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा ।
से केणट्ठेणं जाव अणारंभा ?
गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा ।
असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।
नीलकापोतलेश्यानां एष एव गमः ।
तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा जाव अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया नो आयारंभा जाव नो अणारंभा ।
से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया ते णं नो आयारंभा जाव अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा ।
असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।
तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा । से तेणट्ठेणं जाव अणारंभा ।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३९. इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ?
गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे ।।

४०. [1]•इहभविए भंते ! दंसणे ? परभविए दंसणे ? तदुभयभविए दंसणे ?
गोयमा ! इहभविए वि दंसणे, परभविए वि दंसणे, तदुभयभविए वि दंसणे° ।।

४१. इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए चरित्ते ?
गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते ।।

४२. [2]•इहभविए भंते ! तवे ? परभविए तवे ? तदुभयभविए तवे ?
गोयमा ! इहभविए तवे, नो परभविए तवे, नो तदुभयभविए तवे ।।

४३. इहभविए भंते ! संजमे ? परभविए संजमे ? तदुभयभविए संजमे ?
गोयमा ! इहभविए संजमे, नो परभविए संजमे, नो तदुभयभविए संजमे° ।।

असंवुड-संवुड-अणगार-पदं

४४. असंवुडे[3] णं भंते ! अणगारे[4] सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ ?

पद्मशुक्ललेश्यानां एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्ण-लेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि अप्रशस्त-भावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति एतद्मतमनुसृत्य तत्रैव पाठरचना कृता—"कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?

गोयमा ! आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?

गोयमा ! अविरइं पडुच्च" एवं नील-कापोतलेश्यादंडकावपीति । किन्तु अभयदेव-सूरिणामेतद्मतं पर्यालोच्यमस्ति—

(१) सूत्रकारेण 'पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा' इति निर्देशः कृतः किन्तु 'संजतासंजता न भाणियव्वा' इति न सूचितम् ।

(२) कषायकुशीलसंयता षट्सु लेश्यासु भवन्ति । प्रस्तुतागमस्य २५ शतके षष्ठोद्देशे एतत् साक्षाल्लिखितमस्ति—कसायकुसीले पुच्छा । गोयमा ! सलेस्से होज्जा णो अलेस्से होज्जा । जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते ! कतिसु लेसासु होज्जा । गोयमा ! छल्लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद् व्याख्यातमस्ति—कषायकुशीलस्तु, षट्स्वपि सकषायमाश्रित्य (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे कृष्णलेश्यजीवस्य मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु हुज्जा (प० १७।३) । अस्यागमस्य वृत्तिकृता सहेतुकमिदं व्याख्यातम्—इह लेश्यानां प्रत्येकमसंख्येय-लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अध्यवसाय-स्थानानि, तत्र कानिचिन्मंदानुभावान्यध्यव-सायस्थानानि, प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यन्ते, अतएव कृष्ण-नील-कापोतलेश्या प्रमत्तसंय-तस्यापि गीयन्ते (प्र०वृ) ।

(४) प्रथमशतकस्य १०१ सूत्रं द्रष्टव्यम् ।

१. सं० पा०—दंसणे पि एमेव ।
२. सं० पा०—एवं तवे संजमे ।
३. अस्संवुडे (ता) ।
४. अणगारे किं (अ, ब) ।

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

४५. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—असंवुडे णं अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ°, नो सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?

गोयमा ! असंवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ[2] दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ[3] तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ[4] बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं[5] दीहमद्धं चाउरंतं[6] संसारकंतारं अणुपरियट्टइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! असंवुडे अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ॥

४६. संवुडे णं भंते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?

हंता ! सिज्झइ,[7] •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडे णं अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?

गोयमा ! संवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ[8] धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ । पकरेइ । आउयं च णं कम्मं न बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ[9] । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—संवुडे अणगारे सिज्झइ[10], •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८. जीवे णं भंते ! अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा[11] देवे सिया ?

गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ॥

---

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव नो ।
२. हस्स° (ता) ; रहस्स° (स) ।
३. ° भागाओ (ता, स) ।
४. ° सयाओ (क) ।
५. अणवयग्गं (अ) ।
६. चाउरन्त (व, म, स) ।
७. सं० पा०—सिज्झइ जाव अंत ।
८. ° पगड ° (स) ।
९. वीतीवतति (क, व, स) ।
१०. सं० पा०—सिज्झइ जाव अंतं ।
११. पिच्चा (अ, क, ब) ।

४९. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे॰ इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम[2]-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए, अकामबंभचेरवासेणं, 'अकामसीतातव-दंस-मसग[3]-अण्हाणग[4]-सेय-जल्ल-मल-पंक-परिदाहेणं 'अप्पतरं वा भुज्जतरं[5] वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।।

५०. केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इहं[6] असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे[7] इ वा, चंपयवणे इ वा, चूयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे[8] इ वा, नग्गोहवणे[9] इ वा, छत्तोहवणे[10] इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुंभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा, णिच्चं[11] कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलइय-गोच्छिय-जमलिय[12]-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्तपिंडिमंजरि-वडेंसगधरे[13] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

एवामेव[14] तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहिं, बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा[15] उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

एरिसगा णं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं अस्संजए[16] •अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपाव-कम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए॰ देवे सिया ।।

---

१. सं॰ पा॰—केणट्ठेणं जाव इओ ।
२. नियम (ता) ।
३. वृत्तौ 'अकामसीतातव-दंस-मसग' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः ।
४. अकामअण्हाणग (क, वृ) ।
५. ॰तरो वा भुज्जतरो (अ, ता, ब, म); 'अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं' ति प्राकृतत्वेन विभक्तिविपरिणामादल्पतरं वा भूयस्तरं वा बहुतरं कालं यावत् (वृ) ।
६. इहं मणुस्सलोगंसि (अ, क, ब, म, स) ।
७. सत्ति॰ (म) ।
८. लाउय॰ (अ, क, ब, म); लोअ॰ (म) ।
९. × (अ, क, ता); प्रत्यंतरे—णिग्गोहवणे इ वा (अ); णिग्गोह॰ (म) ।
१०. छत्तोअ॰ (क); छिन्नो॰ (ब); × (म); छत्तो (स) ।
११. × (अ, क, ता, ब) ।
१२. जमइय (अ) ।
१३. ॰पेंडि॰ (क); ॰वेण्टमंजरि॰ (ता) ।
१४. एवमेव (ता, म) ।
१५. वितिण्णा (क, ब, वृपा); × (वृ) ।
१६. सं॰ पा॰— अस्संजए जाव देवे ।

५१—सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।।

बीओ उद्देसो

५२. रायगिहे नगरे समोसरणं। परिसा णिग्गया जाव[1] एवं वयासी—

कम्म-वेयण-पदं

५३. जीवे णं भंते ! सयंकडं दुक्खं वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ ।।

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइयं वेदेइ ? अत्थेगइयं नो वेदेइ ?
गोयमा ! उदिण्णं वेदेइ, नो अणुदिण्णं[2] वेदेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ ।।

५५. एवं[3]—जाव वेमाणिए ।।

५६. जीवा णं भंते ! सयंकडं दुक्खं वेदेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं नो वेदेंति ।।

५७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइयं वेदेंति ? अत्थेगइयं नो वेदेंति ?
गोयमा ! उदिण्णं वेदेंति, नो अणुदिण्णं वेदेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइयं वेदेंति, अत्थेगइयं नो वेदेंति ।।

५८. एवं—जाव[4] वेमाणिया ।।

५९. जीवे णं भंते ! सयंकडं आउयं वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं नो वेदेइ। जहा दुक्खेणं दो दंडगा तहा आउएण वि दो दंडगा—एगत्त-पोहत्तिया[5] ।।

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया णं भंते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सास-नीसासा[6] ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. भ० १।८-१० ।
२. अणुदिण्णं नो (म) ।
३. एवं चउव्वीसदंडएणं (म) ।
४. पू० प० २ ।
५. भ० १।५३-५८ ।
६. पोहत्तिया । एगत्तेण जाव वेमाणिया । पुहत्तेण तहेव (ब, म, स) ।
७. °णिस्सासा (ता) ।

६१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे सम-सरीरा? नो सव्वे समुस्ससानीसासा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ णं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति[1], बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति; अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं उस्ससंति, अभिक्खणं नीससंति। तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ॥

६२. नेरइया णं भंते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे[2] समट्ठे ॥

६३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ॥

६४. नेरइया णं भंते ! सव्वे समवण्णा !
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा[3]। • तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा ॰। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ॥

६६. नेरइया णं भंते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया ॰ नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा

---

१. परिणमंति (ता)।
२. तिणट्ठे, (क म)।
३. सं० पा०— ॰तरागा तहेव।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव नो।

ते णं अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा॥

६८. नेरइया णं भंते! सव्वे समवेयणा?
गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे॥

६९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा?
गोयमा! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा। तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा॥

७०. नेरइया णं भंते! सव्वे समकिरिया?
गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे॥

७१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया?
गोयमा! नेरइया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी[1], मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी[2]।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी तेसि णं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया[3], मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया।
तत्थ णं जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि णं पंच किरियाओ कज्जंति[4], तं जहा—आरंभिया[5], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादंसणवत्तिया। एवं सम्मामिच्छदिट्ठीणं पि। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया॥

७२. नेरइया णं भंते! सव्वे समाउया? सव्वे समोववन्नगा?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

७३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया? नो सव्वे समोववन्नगा?
गोयमा! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा॥

७४. असुरकुमारा णं भंते! सव्वे समाहारा[6]? सव्वे समसरीरा?

---

१. सम्मा° (अ)।
२. सम्मामिच्छा° (ता, म)।
३. परि° (अ, म)।
४. किज्जंति (अ, क, ब)।
५. सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा°।
६. °हारगा (अ, ता, ब, म)।

जहा[1] नेरइया तहा भाणियव्वा, नवरं—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ[2] [पुव्वोववन्ना महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा। पच्छोववन्ना पसत्था। सेसं तहेव][3] ॥

७५. एवं—जाव[4] थणियकुमारा[5] ॥

७६. पुढविकाइयाणं[6] आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा[7] णेरइयाणं ॥

७७. पुढविकाइया[8] णं भंते! सव्वे समवेदणा?
हंता गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा?
गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असण्णी[9] असण्णिभूतं[10] अणिदाए वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७९. पुढविकाइया णं भंते! सव्वे समकिरिया?
हंता गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया?
गोयमा! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छद्दिट्ठी[11]। ताणं णेयतियाओ[12] पंच किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया[13], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया°, मिच्छादंसणवत्तिया। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८१. समाउया, समोववन्नगा जहा[14] नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२. जहा[15] पुढविकाइया तहा जाव[16] चउरिंदिया ॥

८३. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[17] णेरइया, नाणत्तं किरियासु।

८४. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते! सव्वे समकिरिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. भ० १।६०-७३।
२. परिवण्णेयव्वाओ (अ, क, ब, म); परित्थल्लेयव्वाओ (ता); परित्थणेतव्वाओ (म); कर्म्मादीनि नारकापेक्षया विपर्ययेण वाच्यानि (वृ)।
३. अ, क, ता, स एषु चतुर्षु आदर्शेषु असौ कोष्ठकवर्ती पाठो नास्ति। ब, म संकेतितयोरादर्शयोरसौ लभ्यते। असौ च व्याख्यांशोऽस्ति तेन कोष्ठके गृहीतः।
४. पू० प० २।
५. ° कुमारा णं (अ, क, ता, ब, म, स)।
६. ° कातिया (म)।
७. भ० १।६०-६३।
८. ° क्काइया (क, ता, स)।
९. असण्णी य (अ, ब)।
१०. असण्णीभूय (ता, स)।
११. मायामिच्छ° (अ); मायीमिच्छा° (ता); मायामिच्छा° (म)।
१२. णेएतियाओ (ता); णियइयाओ (स)।
१३. सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा°।
१४. भ० १।७२, ७३।
१५. भ० १।७६-८१।
१६. पू० प० २।
१७. भ० १।६०-६९, ७२, ७३।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—असंजया य, संजयासंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।
असंजयाणं चत्तारि । मिच्छदिट्ठीणं पंच । सम्मामिच्छदिट्ठीणं पंच ।।

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६. [1]मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य ।
तत्थ णं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति ।
तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति; अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं उस्ससंति, अभिक्खणं नीससंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ।

८८. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य ।
तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ।।

---

१. म० पा०—मणुस्सा जहा नेरइया नाणत्तं जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खणं आहारेंति सेसं जहा नेरइयाणं जाव वेयणा ।

९०. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥

९२. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धलेस्सतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धलेस्सतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥

९४. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य । तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते णं महावेयणा । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं अप्पवेयणतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा ॥

९६. मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया, अस्संजया, संजयासंजया ।
तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सरागसंजया य, वीतरागसंजया य ।
तत्थ णं जे ते वीतरागसंजया, ते णं अकिरिया ।
तत्थ णं जे ते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य ।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया, तेसि णं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ ।

तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया, तेसि णं दो किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया य, मायावत्तिया य।

तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं आइल्लाओ[1] तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया।

असंजयाणं चत्तारि किरियाओ कज्जंति—आरंभिया पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया।

मिच्छदिट्ठीणं पंच—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया।

सम्मामिच्छदिट्ठीणं पंच ॥

९८. मणुस्सा[2] णं भंते! सव्वे समाउया? सव्वेसमोववन्नगा?

गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया? नो सव्वे समोववन्नगा?

गोयमा! मणुस्सा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा। (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा। (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा।

१००. वाणमंतर[3]-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] असुरकुमारा, नवरं—वेयणाए णाणत्तं—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया ॥

---

१. आदिमाओ (क, ता, म)।

२. ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणगते समर्पणपाठे 'सेसं जहा नेरइयाणं जाव वेयणा' इति उल्लेखोस्ति, अतोनन्तरं क्रियासूत्रं नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहणं न कृतम्। समायुषः सूत्रं क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद् नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नं नास्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहणं कृतमिति संभाव्यते। तदस्माभिः साक्षाल्लिखितम्।

३. प्रज्ञापनायां (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टास्ति, यथा—वाणमंतरा णं जहा असुरकुमारा णं।

एवं जोइसिय-वेमाणियाण वि। णवरं ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ णं जे ते माइमिच्छद्दिट्ठीउववण्णगा ते णं अप्पवेदणतरागा। तत्थ णं जे ते अमाइसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा ते णं महावेदणतरागा।

४. भ० १।७४।

१०१. सलेस्सा णं भंते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?
ओहियाणं[1], सलेस्साणं, सुक्कलेस्साणं—एतेसि णं तिण्हं एक्को गमो ।
कण्हलेस्स[2]-नीललेस्साणं पि एगो[3] गमो, नवरं—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा ।
मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरागा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा ।
काउलेस्साण वि एमेव[4] गमो, नवरं—नेरइए जहा ओहिए दंडए तहा भाणियव्वा ।
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'[5] जहा ओहिओ दंडओ तहा भाणियव्वा, नवरं—मणुस्सा सराग-वीयरागा न भाणियव्वा ।

संगहणी-गाहा

दुक्खाउए उदिण्णे, आहारे कम्म-वण्ण-लेस्सा य ।
समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा[6] ॥१॥

लेस्सा-पदं

१०२. कइ णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा । लेस्साणं बीओ[7] उद्देसो भाणियव्वो जाव[8] इड्ढी ॥

जीवाणं भवपरिवट्टण-पदं

१०३. जीवस्स णं भंते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे संसारसंचिट्ठणकाले पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, देवसंसारसंचिट्ठणकाले[9] ॥

१०४. नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले[10] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ॥

१०५. तिरिक्खजोणियसंसार[11] •संचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते॰ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—असुन्नकाले य, मिस्सकाले य ॥

१. पू०—भ० १।६०-७३ ।
२. ॰लेस्सा (ता, म) ।
३. एसो (अ, ता, ब) ।
४. एसोव (अ) ।
५. जस्सत्थि (क, ता, ब) ।
६. बोद्धव्वा (क, ता, म) ।
७. बीयओ (अ, व, स); बितिओ (क) ।
८. प० १७।२ ।
९. ॰ काले प (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. नेरइयाणं॰ (अ, ब, स) ।
११. ॰जोणिमसार॰ (अ, क, ता, ब, म); सं० पा०—॰संसारपुच्छा ।

१०६. [1]•मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ।।

१०७. देवसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले° ।।

१०८. एतस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स[2] य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१०९. तिरिक्खजोणियाणं सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे ।।

११०. मणुस्स-देवाण य[3] •सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१११. एयस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स[4], •तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकालस्स, देवसंसारसंचिट्ठणकालस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ?° विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, देवसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले अणंतगुणे ।।

अंतकिरिया-पदं

११२. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अंतकिरियापयं[5] नेयव्वं ।

११३. अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं, अविराहियसंजमाणं, विराहियसंजमाणं, अविराहियसंजमासंजमाणं, विराहियसंजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरग-परिव्वायगाणं, किव्विसियाणं, तेरिच्छियाणं[6], आजीवियाणं आभिओगियाणं[7], सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं—एतेसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवज्जएसु । अविराहियसंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे । विराहियसंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ।

---

१. सं० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं ।
२. मीसा° (ता, ब, म) ।
३. सं० पा०—य जहा नेरइयाणं ।
४. सं० पा०—°कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिए ।
५. प० २० ।
६. तेरिच्छियाण (अ, ब, स) ।
७. आभियोगियाण (अ, ब, म); आभोगियाण (स) ।

अविराहियसंजमासंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। विराहियसंजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु। असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं वाणमंतरेसु।

अवसेसा सव्वे जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं[1] वोच्छामि—

तावसाणं जोतिसिएसु, कंदप्पियाणं सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाणं बंभलोए कप्पे, किब्बिसियाणं लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं अच्चुए कप्पे, आभिओगियाणं अच्चुए कप्पे, सलिंगीणं दंसणवावन्नगाणं उवरिमगेविज्जएसु॥

असण्णि-आउय-पदं

११४. कतिविहे णं भंते! असण्णिआउए पण्णत्ते?

गोयमा! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयअसण्णिआउए[2], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए॥

११५. असण्णी णं भंते! जीवे किं नेरइयाउयं पकरेइ? तिरिक्खजोणियाउयं पकरेइ? मणुस्साउयं पकरेइ? देवाउयं पकरेइ?

हंता गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेइ, मणुस्साउयं पि पकरेइ, देवाउयं पि पकरेइ।

नेरइयाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ।

तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ।

मणुस्साउयं[3] •पकरेमाणे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ।

देवाउयं पकरेमाणे जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेइ॰॥

११६. एयस्स णं भंते! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स, मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे[4] •कयरेहिंतो अप्पे वा? बहुए वा? तुल्ले वा॰? विसेसाहिए वा?

गोयमा! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे[5], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे।

११७. सेवं भंते! सेवं भंते[6]!

---

१. उक्कोसगं (क, ता, ब, म, स)।
२. नेरइयस्स ० (ता)।
३. सं० पा०—मणुस्साउए वि एवं चेव, देवा जहा नेरइया।
४. सं० पा०—कयरे जाव विसेसाहिए वा।
५. संखेज्ज० (अ, क, ब, म)।
६. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

कंखामोहणिज्ज-पदं

११८. जीवाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे ॥

११९. से भंते ! किं १. देसेणं देसे कडे ? २. देसेणं सव्वे कडे ? ३. सव्वेणं देसे कडे ? ४. सव्वेणं सव्वे कडे ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसे कडे २. नो देसेणं सव्वे कडे ३. नो सव्वेणं देसे कडे ४. सव्वेणं सव्वे कडे ॥

१२०. नेरइयाणं भंते ! कंखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हंता कडे[1] ॥

१२१. •से भंते ! किं १. देसेणं देसे कडे ? २. देसेणं सव्वे कडे ? ३. सव्वेणं देसे कडे ? ४. सव्वेणं सव्वे कडे ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसे कडे २. नो देसेणं सव्वे कडे ३. नो सव्वेणं देसे कडे° ४. सव्वेणं सव्वे कडे ॥

१२२. एवं जाव[2] वेमाणियाणं दंडओ भाणियव्वो ॥

१२३. जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं करिसु ?
हंता करिसु ॥

१२४. तं भंते ! किं १. देसेणं देसं करिसु ? २. देसेणं सव्वं करिसु ? ३. सव्वेणं देसं करिसु ? ४. सव्वेणं सव्वं करिसु ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं करिसु २. नो देसेणं सव्वं करिसु ३. नो सव्वेणं देसं करिसु । ४. सव्वेणं सव्वं करिसु ॥

१२५. एएणं अभिलावेणं दंडओ भाणियव्वो, जाव वेमाणियाणं ॥

१२६. एवं करेंति । एत्थ वि दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥

१२७. एवं करिस्संति । एत्थ वि दंडओ जाव वेमाणियाणं ॥

१२८. एवं चिए, चिणिसु, चिणंति, चिणिस्संति । उवचिए, उवचिणिसु, उवचिणंति, उवचिणिस्संति । उदीरेंसु, उदीरेंति, उदीरिस्संति । वेदेंसु, वेदेंति, वेदिस्संति । निज्जरेंसु, निज्जरेंति, निज्जरिस्संति ।

संगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ॥१॥

---

१. सं० पा०—कडे जाव सव्वेणं । ३, ४, ५. पू० प० २ ।
२. पू० प० २ ।

१२९. जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
हंता वेदेंति ।।

१३०. कहण्णं[1] भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेहिं तेहिं कारणेहिं संकिया, कंखिया, वितिगिछिया[2], भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना—एवं खलु जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ।।

सद्धा-पदं

१३१. से नूणं भंते ! तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।।

१३२. से नूणं भंते ! एवं मणं धारेमाणे, एवं पकरेमाणे, एवं चिट्ठमाणे, एवं संवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?
हंता गोयमा ! एवं मणं धारेमाणे[3] ●एवं पकरेमाणे, एवं चिट्ठमाणे, एवं संवरेमाणे आणाए आराहए● भवति ।।

अत्थि-नत्थि-पदं

१३३. से नूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ?
हंता गोयमा[4] ! ●अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्तं नत्थित्ते● परिणमइ ।

१३४. 'जं णं'[5] भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तं किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ][6] ।
वीससा वि तं [अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ][7] ।।

१३५. जहा ते भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ?
हंता गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ ।
जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते परिणमइ ।।

१३६. से नूणं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं ? [8]●नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं ?
हंता गोयमा ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं । नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं ।।

---

१. कहं णं (क); कहं णं (ब, स) ।
२. वितिगिंछिया (अ, ब, स); वितिगिच्छिता (क); वितिकिंछिगा (म) ।
३. सं० पा०—धारेमाणे जाव भवति ।
४. सं० पा०—गोयमा जाव परिणमइ ।
५. तं (अ, ब, स); × (ता) ।
६, ७. कोष्ठकवर्तिपाठः व्याख्यांशोस्ति ।
८. सं० पा०—जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा ।

१३७. जं णं भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं, तं किं पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा वि तं [अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं] ।

वीससा वि तं [अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं, नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं] ॥

१३८. जहा ते भंते ! अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं, तहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं ? जहा ते नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं, तहा ते अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं ?

हंता गोयमा ! जहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं, तहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं ।

जहा मे नत्थित्तं नत्थित्ते गमणिज्जं°, तहा मे अत्थित्तं अत्थित्ते गमणिज्जं ॥

भगवओ समता-पदं

१३९. जहा ते भंते ! एत्थं गमणिज्जं, तहा ते इहं गमणिज्जं ? जहा ते इहं गमणिज्जं, तहा ते एत्थं गमणिज्जं ?

हंता गोयमा ! जहा मे एत्थं गमणिज्जं[1], ●तहा मे इहं गमणिज्जं । जहा मे इहं गमणिज्जं°, तहा मे एत्थं गमणिज्जं ॥

कंखामोहणिज्जस्स बंधादि-पदं

१४०. जीवा णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति ?

हंता बंधंति ॥

१४१. कहण्णं[2] भंते ! जीवा कंखामोहणिज्जं कम्मं बंधंति ?

गोयमा ! पमादपच्चया, जोगनिमित्तं[3] च ॥

१४२. से णं भंते ! पमादे किंपवहे[4] ?

गोयमा ! जोगप्पवहे ॥

१४३. से णं भंते ! जोए किंपवहे ?

गोयमा ! वीरियप्पवहे ॥

१४४. से णं भंते ! वीरिए किंपवहे ?

गोयमा ! सरीरप्पवहे ॥

१४५. से णं भंते ! सरीरे किंपवहे ?

गोयमा ! जीवप्पवहे ॥

१४६. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१. सं० पा०—गमणिज्जं जाव तहा ।

२. कहं णं (अ) ।

३. °निमित्तं (क) ।

४. किंपभवे (क, वृपा) सर्वत्र ।

१४७. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव उदीरेति ? अप्पणा चेव गरहति ? अप्पणा चेव संवरेति[1] ?
हंता गोयमा ! अप्पणा चेव[2] •उदीरेति । अप्पणा चेव गरहति । अप्पणा चेव संवरेति° ।।

१४८. 'जं णं'[3] भंते ! अप्पणा चेव उदीरेति, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, तं किं – १. उदिण्णं उदीरेति ? २. अणुदिण्णं उदीरेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उदीरेति ?
गोयमा ! १. नो उदिण्णं उदीरेति । २. नो अणुदिण्णं उदीरेति । ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति । ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं[4] कम्मं उदीरेति ।।

१४९. जं णं भंते ! अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति, तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कार-परक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेणं वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उदीरेति । णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उदीरणा-भवियं कम्मं उदीरेति ।।

१५०. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।।

१५१. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ ? अप्पणा चेव गरहइ ? अप्पणा चेव संवरेइ ?
हंता गोयमा ! [5]•अप्पणा चेव उवसामेइ । अप्पणा चेव गरहइ । अप्पणा चेव संवरेइ ।।

१. संवरइ (अ, ब, म, स) ।
२. सं० पा०—तं चेव उच्चारेतव्वं ।
३. तं (अ, क, ता, ब, म, स); क्वचित्प्रयुक्त-प्रत्याधारेण स्वीकृतोऽसौ पाठः ।
४. उदयअणंतर° (अ, क, ता, ब, स) ।
५. सं० पा०—एत्थ वि तह चेव भाणियव्वं, नवरं अणुदिण्णं उवसामेइ सेसा पडिसेहे-यव्वा तिण्णि । जं तं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ तं किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा । से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवरं उदिण्णं वेदेइ नो अणुदिण्णं वेदेइ एवं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा । से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प° एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवरं उदयअणंतरपच्छा-कडं कम्मं निज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइ वा ।

१५२. जं णं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, तं किं—१. उदिण्णं उवसामेइ ? २. अणुदिण्णं उवसामेइ ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ ?

गोयमा ! १. नो उदिण्णं उवसामेइ । २. अणुदिण्णं उवसामेइ । ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ । ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ ।।

१५३. जं णं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ, तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्णं उवसामेइ । णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ।।

१५४. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।।

१५५. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हंता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति । अप्पणा चेव गरहति ।।

१५६. जं णं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति तं किं—१. उदिण्णं वेदेति ? २. अणुदिण्णं वेदेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति ?
गोयमा ! १. उदिण्णं वेदेति । २. नो अणुदिण्णं वेदेति । ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति । ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति ।।

१५७. जं णं भंते ! उदिण्णं वेदेति तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ?

गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्णं वेदेति । नो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ।।

१५८. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।।

१५९. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?
हंता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति । अप्पणा चेव गरहति ।।

१६०. जं णं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, तं किं—
१. उदिण्णं निज्जरेति ? २. अणुदिण्णं निज्जरेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं निज्जरेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! १ नो उदिण्णं निज्जरेति। २. नो अणुदिण्णं निज्जरेति। ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं निज्जरेति। ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति।।

१६१. जं णं भंते ! उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कार-परक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति ?
गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति। णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेति।।

१६२. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार°-परक्कमेइ वा।।

१६३. नेरइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेति ?
जहा[1] ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव[2] थणियकुमारा।।

१६४. पुढविक्काइया णं भंते ! कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
हंता वेदेंति।।

१६५. कहण्णं भंते ! पुढविक्काइया कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेसि णं जीवाणं णो एवं तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा, मणे इ वा, वई ति वा—अम्हे णं कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेमो, वेदेंति पुण ते।।

१६६. से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं।
सेसं तं चेव जाव[3] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा।।

१६७. एवं जाव[4] चउरिंदिया।।

१६८. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव[5] वेमाणिया जहा[6] ओहिया जीवा।।

---

१. भ० १।१२६-१६२।
२. पू० प० २।
३. भ० १।१३२-१६२।
४. पू० प० २।
५. पू० प० २।
६. भ० १।१२६-१६२।

१६९. अत्थि णं भंते ! समणा वि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ?
'हंता अत्थि'[1] ॥

१७०. कहण्णं भंते ! समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेहिं तेहिं नाणंतरेहिं, दंसणंतरेहिं[2], चरित्तंतरेहिं[3], लिंगंतरेहिं, पवयणंतरेहिं, पावयणंतरेहिं, कप्पंतरेहिं, मग्गंतरेहिं, मतंतरेहिं[4], भंगंतरेहिं, णयंतरेहिं, नियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं संकिता कंखिता वितिकिच्छिता[5] भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना—एवं खलु समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ॥

१७१. से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ॥

१७२. एवं जाव[6] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते[7] !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४. कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव[8]—अणुभागो सम्मत्तो ।

संगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह[9] बंधति ? कतिहिं व ठाणेहिं बंधती पगडी ?
कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा[10] ॥

---

१. हंतत्थि (ता) ।
२. दरिसणंतरेहिं (क) ।
३. चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं (क) ।
४. मतंतरेहिं (अ, ब); × (क) ।
५. वितिकिंछिया (ता) ।
६. भ० १।१३२-१६२ ।
७. भ० १।५१ ।
८. प० २३।१ ।
९. किह (अ, क, ता, म); कहिं (म) ।
१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६. से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१७७. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१७८. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ।।

१७९. से भंते[1] ! •किं वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ।।

१८०. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, किं—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?• बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! 'बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। सिय बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा'[2] ।।

१८१. [3]•जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा ।।

१८२. से भंते ! किं वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ।।

१८३. जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, किं—बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! 'नो बालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। पंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा। नो बालपंडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा'[4] ।।

१८४. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उवसंतेणं अवक्कमेज्जा ?
हंता अवक्कमेज्जा ।।

१८५. से भंते ! किं वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—भंते जाव बालपंडियवीरियत्ताए।

२. वाचनान्तरे त्वेवम्—'बालवीरियत्ताए नो पंडियवीरियत्ताए नो बालपंडियवीरियत्ताए' (वृ)।

३. सं० पा०—जहा उदिण्णेणं दो आलावगा तहा उवसंतेण वि दो आलावगा भाणियव्वा, नवरं उवट्ठाएज्जा पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपंडियवीरियत्ताए।

४. वृद्धैस्तु काञ्चिद्वाचनामाश्रित्येदं व्याख्यातं—मोहनीयेनोपशान्तेन सता न मिथ्यादृष्टिर्जायते, साधुः श्रावको वा भवतीति (वृ)।

१८६. जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, किं—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । बालपंडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा[१] ।।

१८७. से भंते ! किं आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्जं कम्मं वेदेमाणे ।।

१८८. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! पुव्वि से एयं एवं रोयइ । इयाणिं से एयं एवं नो रोयइ —एवं खलु एयं एवं ।।

कम्ममोक्ख-पदं

१८९. से नूणं भंते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स[१] वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता[३] मोक्खो ?
हंता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा[२] •जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता[४] मोक्खो ।।

१९०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयस्स वा •तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता[५] मोक्खो ?
एवं खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, तं जहा—पदेसकम्मे य, अणुभागकम्मे य ।
तत्थ णं जं णं[६] पदेसकम्मं तं नियमा वेदेइ । तत्थ णं जं णं अणुभागकम्मं तं[७] अत्थेगइयं वेदेइ, अत्थेगइयं णो वेदेइ ।
णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—इमं कम्मं अयं जीवे अब्भोवगमियाए[८] वेदणाए वेदेस्सइ, इमं कम्मं अयं जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेदेस्सइ ।
अहाकम्मं, अहानिकरणं जहा जहा तं भगवया दिट्ठं तहा तहा तं विप्परिणमिस्सतीति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयस्स वा, •तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि णं तस्स अवेदइत्ता[९] मोक्खो ।।

१. मणूसस्स (क, ता); मणुसस्स (ब, म, स) ।
२. × (अ, स) ।
३. अवेदयत्ता (अ, ब); अवइत्ता (म, स) ।
४. सं० पा०—वा जाव मोक्खो ।
५. सं० पा०—वा जाव मोक्खो ।
६. न (अ, क, ता, ब, म, स) ।
७. × (ता) ।
८. अब्भोवमियाए (क) ।
९. सं० पा०—वा जाव मोक्खो ।

पोग्गल-जीवाणं तेकालियत्त-पदं

१६१. एस णं भंते ! पोग्गले[1] तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६२. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! [2]एस णं पोग्गले पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६३. एस णं भंते ! पोग्गले अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! [3]एस णं पोग्गले अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६४. [4]एस णं भंते ! खंधे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६५. एस णं भंते ! खंधे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६६. एस णं भंते ! खंधे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं खंधे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६७. एस णं भंते ! जीवे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे तीतं अणंतं सासयं समयं भुवीति वत्तव्वं सिया ॥

१६८. एस णं भंते ! जीवे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे पडुप्पण्णं सासयं समयं भवतीति वत्तव्वं सिया ॥

१६९. एस णं भंते ! जीवे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! एस णं जीवे अणागयं अणंतं सासयं समयं भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ॥

मोक्ख-पदं

२००. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे[5] तीतं अणंतं सासयं समयं—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं[6] सिज्झिसु ?

---

१. पोग्गलेति परमाणुरुत्तरत्रस्कन्धग्रहणात् (वृ) ।

२. सं० पा०—तं चेव उच्चारेयव्वं ।

३. सं० पा०—तं चेव उच्चारेयव्वं ।

४. सं० पा०—एवं खंधेण वि तिण्णि आलावगा । एवं जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।

५. मणुस्से (अ, म) ।

६. °मातहिं (ता, म) ।

बुज्झिसु[1] ? •मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु° ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ •छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं —केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयण-मायाहिं नो सिज्झिसु ? नो बुज्झिसु ? नो मुच्चिसु ? नो परिनिव्वाइंसु ? नो सव्वदुक्खाणं° अंतं करिंसु ?
गोयमा ! जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा[3] केवली भवित्ता तओ पच्छा 'सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति'[4], सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा । से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ छउमत्थे णं मणुस्से तीतं अणंतं सासयं समयं—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं नो सिज्झिसु, नो बुज्झिसु, नो मुच्चिसु, नो परिनिव्वाइंसु, नो° सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०२. पडुप्पण्णे वि एवं[6] चेव, नवरं—सिज्झंति भाणियव्वं ।।

२०३. अणागए वि एवं[7] चेव, नवरं—सिज्झिस्संति भाणियव्वं ।।

२०४. जहा[8] छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ[9] वि । तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।।

२०५. केवली णं भंते ! मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं[10] •सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिनिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे तीतं अणंतं सासयं समयं सिज्झिसु, बुज्झिसु, मुच्चिंसु, परिनिव्वाइंसु, सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ।।

२०६. केवली णं भंते ! मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति ? बुज्झंति ? मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे पडुप्पण्णं सासयं समयं सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

---

१. सं० पा०—बुज्झिसु जाव सव्व° ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव अंतं ।
३. जिणे (अ, क, ता, ब, म) ।
४. 'सिज्झंती' त्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमान-निर्देशस्य गमोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिसु सिज्झंति सिज्झिस्संती' त्येवमतीतादिनिर्देशो द्रष्टव्यः (वृ) ।
५. सं० पा०—गोयमा जाव सव्व° ।
६. भ० १।२००, २०१ ।
७. भ० १।२००, २०१ ।
८. भ० १।२००-२०३ ।
९. परमोहिओ (अ, क ता, ब, म, वृपा) ।
१०. सं० पा०—समयं जाव अंतं हंता सिज्झिसु जाव अंते एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा । छउमत्थस्स जहा नवरं सिज्झिसु सिज्झंति सिज्झिस्संति ।

२०७. केवली णं भंते ! मणूसे अणागयं अणंतं सासयं समयं सिज्झिस्संति ? बुज्झिस्संति ? मुच्चिस्संति ? परिनिव्वाइस्संति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति ?
हंता गोयमा ! केवली णं मणूसे अणागयं अणंतं सासयं समयं सिज्झिस्संति, बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति° ॥

२०८. से नूणं भंते ! तीतं अणंतं सासयं समयं, पडुप्पण्णं वा सासयं समयं, अणागयं अणंतं वा सासयं समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति[1] ? °बुज्झंति ? मुच्चंति ? परिनिव्वायंति ? सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा ? करेंति वा ? करिस्संति वा ?°
हंता गोयमा ! तीतं अणंतं सासयं[2] °समयं, पडुप्पण्णं वा सासयं समयं, अणागयं अणंतं वा सासयं समयं जे केइ अंतकरा वा अंतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दंसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणं अंतं करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

२०९. से नूणं भंते ! उप्पण्णणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२१०. सेवं भंते ! सेवं भंते[3] !

पंचमो उद्देसो

पुढवि-पदं

२११. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा[4], °सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा°, तमतमा ॥

१. सं० पा०—सिज्झंति जाव अंतं करिस्संति ।
द्रष्टव्यं १।२०१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२. सं० पा०—सासयं जाव करिस्संति ।
३. भ० १।५१ ।
४. सं० पा०—रयणप्पभा जाव तमतमा ।

२१२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेगं पंचूणं, पंचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३. केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

चोयट्ठी[1] असुराणं, चउरासीई य होइ नागाणं ।
बावत्तरि सुवण्णाणं, वाउकुमाराण छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीणं, विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं ।
छण्हं पि जुयलयाणं[2], छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४. केवइया णं भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा असंखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव[3] असंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

वत्तीसट्ठावीसा, वारस-अट्ठ[4]-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइं, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए[5] सत्तुत्तरं सयं च मज्झिमए ।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणावसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

पुढवी ट्ठिति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव संठाणे ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दस ठाणा[6] ॥४॥

१. चोवट्ठी (क); चोसट्ठी (म, स) ।
२. जुवलयाणं (अ, क, ता, ब) ।
३. पू० प० २ ।
४. अट्ठ य (क, ता, म) ।
५. हेट्ठिमेसु (क, ता, म); हेट्ठिमएसु (स) ।
६. ठाणे (अ, ब) ।

२१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जहण्णिया ठिती, समयाहिया जहण्णिया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिया ठिती जाव असंखेज्ज-समयाहिया जहण्णिया ठिती । तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ।।

२१७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा १. कोहोवउत्ता । २. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य । ३. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य[1] । ४. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ५. अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[2] । ६. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । ७. अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य[3] । ८. अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य । ९. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य । १०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । ११. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[4] । १२. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । १३. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । १६. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । १७. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । १८. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । १९. कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । २०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

---

१. 'म' प्रतौ—अतोग्रे एवं माया वि लोभो वि कोहेण भइयव्वो अथवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य पच्छा माणेण लोभेण य पच्छा मायाए लोभेण य पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भणियव्वो ते कोहं अमुंचता कोहं अमुंचता एवं सत्तावीसं भंगा णेयव्वा ।

२. 'ता' प्रतौ—अतोग्रे एवं सत्तावीसं भंगा णेतव्वा ।

३. 'क', 'ब' प्रत्योः—अतोग्रे एवं सत्तावीसं भंगा णेतव्वा ।

४. 'अ' प्रतौ—अतोग्रे एवं कोहे माणेणं लोभेणं चत्तारि भंगा ८ एवं कोहेणं मायाए लोभेणं चत्तारि भंगा १२ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता २ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते य ७ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ८ एवं सत्तावीसं भंगा णेयव्वा ।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । २१. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायो-वउत्ते य, लोभोवउत्ता य । २२. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । २३. कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । २४. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभो-वउत्ताय । २५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य । २६. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य । २७. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य ॥

२१८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं—कोहो-वउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य । कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य । अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य । अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य । एवं असीतिभंगा नेयव्वा ।

---

१. १—(८)—१. कोहोवउत्ते २. माणोवउत्ते ३. मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५. कोहो-वउत्ता ६. माणोवउत्ता ७. मायोवउत्ता ८. लोभोवउत्ता ।

२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते १०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११. कोहो-वउत्ता माणोवउत्ते १२. कोहोवउत्ता माणो-वउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते १६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता १७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते २०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१. माणो-वउत्ते मायोवउत्ते २२. माणोवउत्ते मायो-वउत्ता २३. माणोवउत्ता मायोवउत्ते २४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५. माणो-वउत्ते लोभोवउत्ते २६. माणोवउत्ते लोभो-वउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते २८. माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९. मायो-वउत्ते लोभोवउत्ते ३०. मायोवउत्ते लोभो-वउत्ता ३१. मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३२. मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

३—(३२)—

३३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एवं जाव संखेज्जसमयाहियाए ठितीए, असंखेज्जसमयाहियाए ठितीए तप्पाउ-ग्गुक्कोसियाए ठितीए सत्तावीसं भंगा भाणियव्वा[1] ॥

२१९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं केवइया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता, तं जहा—जहण्णिया ओगाहणा, पदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा जाव असंखेज्जपएसाहिया जहण्णिया ओगाहणा। तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ॥

२२०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ?
असीइभंगा भाणियव्वा[2] जाव संखेज्जपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा।
असंखेज्जपदेसाहियाए जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणाणं, तप्पाउग्गुक्कोसि-

---

४८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४९. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५१. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५३. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५४. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५५. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५८. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५९. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७४. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७६. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।

१. भ० १।२१७।
२. भ० १।२१८ पादटिप्पण।

याए ओगाहणाए वट्टमाणाणं[1] सत्तावीसं भंगा[2] ॥

२२१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए[3] •तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु॰ एगमेगंसि निरयावासंसि नेरइयाणं कइ सरीरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[4] वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[5] ॥

२२३. एएणं गमेणं तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[6] नेरइयाणं सरीरया किंसंघयणा[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी नेवट्ठी, नेव छिरा[8], नेव ण्हारूणि । जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया[9] असुहा अमणुण्णा अमणामा एतेसिं[10] सरीरसंघायत्ताए परिणमंति ॥

२२५. इमीसे णं भंते ? रयणप्पभाए जाव[11] छण्हं संघयणाणं असंघयणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[12] ॥

२२६. इमीसे णं भंते ? रयणप्पभाए जाव[13] नेरइयाणं सरीरया किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा[14] ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता, तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता ॥

२२७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[15] हुंडसंठाणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[16] ॥

२२८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[17] नेरइयाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता ॥

२२९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[18] काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा ॥[19]

---

१. वट्टमाणाणं नेरइयाणं दोसु वि (अ); वट्टमाणाणं जाव नेरइयाणं दोसु वि (क, स); वट्टमाणाणं दोसु वि (म) ।
२. भ० १।२१७ ।
३. सं० पा०—पुढवीए जाव एगमेगंसि ।
४. भ० १।२१७ ।
५. भ० १।२१७ ।
६. भ० १।२१६ ।
७. किंसंघयणी (क, ता, स) ।
८. च्छिरा (ता, म, स) ।
९. अप्पिता (क) ।
१०. तेतेसिं (क, ता, म) ।
११. भ० १।२१७ ।
१२. भ० १।२१७ ।
१३. भ० १।२१६ ।
१४. 'नेरइयाणं सरीरया' इति शेषः ।
१५. भ० ।२१७ ।
१६. भ० १।२१७ ।
१७. भ० १।२१६ ।
१८. भ० १।२१७ ।
१९. भ० १।२१७

२३०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[1] नेरइया किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिण्णि वि ॥

२३१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[2] सम्मदंसणे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[3] ॥

२३२. एवं मिच्छदंसणे वि ॥

२३३. सम्मामिच्छदंसणे असीतिभंगा[4] ॥

२३४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[5] नेरइया किं नाणी, अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि[6] नाणाइं नियमा । तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

२३५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[7] आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[8] ॥

२३६. एवं तिण्णि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं भाणियव्वाइं ॥

२३७. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[9] नेरइया किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
तिण्णि वि ॥

२३८. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[10] मणजोए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[11] ॥

२३९. एवं वइजोए ॥

२४०. एवं कायजोए ॥

२४१. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[12] नेरइया किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता[13] ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[14] सागारोवओगे वट्टमाणा नेरइया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भंगा[15] ॥

---

१. भ० १।२१६ ।
२. भ० १।२२७ ।
३. भ० १।२१७ ।
४. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
५. भ० १।२१६ ।
६. तिण्णि वि (ता) ।
७. भ० १।२१७ ।
८. भ० १।२१७ ।
९. भ० १।२१६ ।
१०. भ० १।२१७ ।
११. भ० १।२१७ ।
१२. भ० १।२१६ ।
१३. अणगारोवउत्ता (अ); अणागारोवयुत्ता (ता) ।
१४ भ० १।२१७ ।
१५. भ० १।२१७ ।

२४३. एवं अणागारोवउत्ते वि सत्तावीसं भंगा[1] ।।

२४४. एवं सत्त वि पुढवीओ[2] नेयव्वाओ, नाणत्तं लेसासु ।।

संगहणी-गाहा

काऊ य दोसु, तइयाए मीसिया, नीलिया चउत्थीए ।
पंचमियाए मीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ।।१।।

असुरकुमारादीणं नाणादसासु कोहोवउत्तादि भंग-पदं

२४५. चउसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमाराणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता । जहण्णिया ठिई जहा[3] नेरइया तहा, नवरं—पडिलोमा भंगा भाणियव्वा ।
सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवउत्ता ।
अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ता य । एएणं गमेणं नेयव्वं जाव[4] थणियकुमारा, 'नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं'[5] ।।

२४६. असंखेज्जेसु णं भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविक्काइयाणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा—जहण्णिया ठिई जाव[6] तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ।।

२४७. असंखेज्जेसु णं भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा पुढविक्काइया किं कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ता वि, माणोवउत्ता वि, मायोवउत्ता वि, लोभोवउत्ता वि ।
एवं पुढविक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभंगयं, नवरं—तेउलेस्साए असीतिभंगा[7] ।।

२४८. एवं आउक्काइया वि ।।

२४९. तेउक्काइय—वाउक्काइयाणं सव्वेसु वि ठाणेसु अभंगयं ।।

२५०. वणप्फइकाइया जहा[8] पुढविक्काइया ।।

---

१. भ० १।२१३ ।
२. भ० १।२११ ।
३. भ० १।२१६-२४३ ।
४. पू० प० २ ।
५. तच्च नारकाणामसुरकुमारादीनां च संहनन-संस्थानलेश्यासूत्रेषु भवति (वृ) ।
६. भ० १।२१६ ।
७. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
८. भ० १।२४७ ।

२५१. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीइभंगा तेहिं ठाणेहिं असीइं चेव, नवरं—अब्भहिया सम्मत्ते। आभिणिबोहियनाणे, सुय-नाणे य एएहिं असीइभंगा। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं सत्तावीसं भंगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभंगयं॥

२५२. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा[1], नवरं—जेहिं सत्ता-वीसं भंगा तेहिं अभंगयं कायव्वं[2]॥

२५३. मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाणं असीतिभंगा तेहिं ठाणेहिं मणुस्साण वि असीतिभंगा भाणियव्वा। जेसु सत्तावीसा तेसु अभंगयं, नवरं—मणुस्साणं अब्भहियं जहण्णियाए ठिईए, आहारए य असीतिभंगा॥

२५४. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं जं जस्स जाव अणुत्तरा॥

२५५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पदं

२५६. जावइयाओ[4] णं भंते! ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमाग-च्छति, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति?

हंता गोयमा! जावइयाओ णं ओवासंतराओ उदयंते सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, अत्थमंते वि[5] °य णं सूरिए तावतियाओ चेव ओवासंतराओ चक्खुप्फासं° हव्वमागच्छति॥

२५७. 'जावइय णं'[6], भंते! खेत्तं उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ? उज्जोएइ? तवेइ? पभासेइ?

---

१. भ० १।२१६-२४३।
२. कायव्वं जत्थ असीति तत्थ असीति चेव (अ)।
३. भ० १।५१।
४. जावइया (अ)।
५. सं० पा०—वि जाव हव्व °।
६. जावइयाओ णं (अ); जावइयाण्णं (ता); जावइया णं (म, स); स्वीकृतपाठे 'णं' पदस्य योगे 'जावइय' पदस्य अनुस्वारलोपो जातः।

हंता गोयमा ! जावतिय णं खेत्तं[1] •उदयंते सूरिए आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ पभासेइ, अत्थमंते वि य णं सूरिए तावइयं चेव खेत्तं आयवेणं सव्वओ समंता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ° पभासेइ ॥

२५८. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासेइ ? अपुट्ठं ओभासेइ[2] ?
•गोयमा ! पुट्ठं ओभासेइ, नो अपुट्ठं ॥

२५९. तं भंते ! किं ओगाढं ओभासेइ ? अणोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! ओगाढं ओभासेइ, नो अणोगाढं ॥

२६०. तं भंते ! किं अणंतरोगाढं ओभासेइ ? परंपरोगाढं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणंतरोगाढं ओभासेइ, नो परंपरोगाढं ॥

२६१. तं भंते ! किं अणुं ओभासेइ ? बायरं ओभासेइ ?
गोयमा ! अणुं पि ओभासेइ, बायरं पि ओभासेइ ॥

२६२. तं भंते ! किं उड्ढं ओभासेइ ? तिरियं ओभासेइ ? अहे ओभासेइ ?
गोयमा ! उड्ढं पि ओभासेइ, तिरियं पि ओभासेइ, अहे पि ओभासेइ ॥

२६३. तं भंते ! किं आइं ओभासेइ ? मज्झे ओभासेइ ? अंते ओभासेइ ?
गोयमा ! आइं पि ओभासेइ, मज्झे पि ओभासेइ, अंते पि ओभासेइ ॥

२६४. तं भंते ! किं सविसए ओभासेइ ? अविसए ओभासेइ ?
गोयमा ! सविसए ओभासेइ, नो अविसए ॥

२६५. तं भंते ! किं आणुपुव्विं ओभासेइ ? अणाणुपुव्विं ओभासेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्विं ओभासेइ, नो अणाणुपुव्विं ॥

२६६. तं भंते ! कइदिसिं ओभासेइ ?
गोयमा ! नियमा° छद्दिसिं ओभासेइ ॥

२६७. एवं—उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ॥

फुसणा-पदं

२६८. से नूणं भंते ! सव्वंति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! सव्वंति[3] •सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतियं फुसमाणे पुट्ठे त्ति° वत्तव्वं सिया ॥

२६९. तं[4] भंते ! किं पुट्ठं फुसइ ? अपुट्ठं फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[5] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

---

१. सं० पा०—खेत्तं जाव पभासेइ ।
२. सं० पा०—ओभासेइ जाव छद्दिसिं ।
३. सं० पा०—सव्वंति जाव वत्तव्वं ।
४. एतत् सूत्रं वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति, प्रकरणानुसारि चापि न लभ्यते, किन्तु सर्वासु प्रतिषु उपलब्धमस्ति ।
५. भ० १।२५८-२६६ ।

२७०. लोयंते भंते ! अलोयंतं फुसइ ? अलोयंते वि लोयंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! लोयंते अलोयंतं फुसइ, अलोयंते वि लोयंतं फुसइ ॥

२७१. तं भंते ! किं पुट्ठं फुसइ ? अपुट्ठं फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठं फुसइ, नो अपुट्ठं जाव[1] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७२. दीवंते भंते ! सागरंतं फुसइ ? सागरंते वि दीवंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! दीवंते सागरंतं फुसइ, सागरंते वि दीवंतं फुसइ जाव[2] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७३. •[3]उदयंते भंते ! पोयंतं[4] फुसइ ? पोयंते वि उदयंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! उदयंते पोयंतं फुसइ, पोयंते उदयंतं फुसइ जाव[5] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७४. छिद्दंते भंते ! दूसंतं फुसइ ? दूसंते वि छिद्दंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छिद्दंते दूसंतं फुसइ, दूसंते वि छिद्दंतं फुसइ जाव[6] नियमा छद्दिसिं फुसइ ॥

२७५. छायंते भंते ! आयवंतं फुसइ ? आयवंते वि छायंतं फुसइ ?
हंता गोयमा ! छायंते आयवंतं फुसइ, आयवंते वि छायंतं फुसइ जाव[7] नियमा° छद्दिसिं फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाए णं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

२७७. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[8] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिया तिदिसिं, सिया चउदिसिं, सिया पंचदिसिं ॥

२७८. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२७९. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

२८०. सा भंते किं 'आणुपुव्वि कडा'[9] कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ । जा य

---

१. भ० १।२५८-२६६ ।
२. भ० १।२५८-२६६ ।
३. सं० पा०—एवं एएणं अभिलावेणं उदयंते पोयंतं छिद्दंते दूसंतं छायंते आयवंतं जाव नियमा ।
४. पोदंतं (क, ता, ब, म, स) ।
५, ६, ७. भ० १।२५८-२६६ ।
८. भ० १।२५६-२६६ ।
९. आणुपुव्विकडा (अ, क, ब) ।

कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्विं कडा, नो अणाणुपुव्विं 'कडा ति'[1] वत्तव्वं सिया ॥

२८१. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

२८२. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[2] नियमा छद्दिसिं कज्जइ ॥

२८३. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२८४. तं चेव जाव[3] नो अणाणुपुव्विं कडा ति वत्तव्वं सिया ॥

२८५. जहा[4] नेरइया तहा एगिंदियवज्जा भाणियव्वा जाव[5] वेमाणिया । एगिंदिया जहा[6] जीवा तहा भाणियव्वा ॥

२८६. जहा[7] पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे,[8] °माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादंसणसल्ले—एवं एए अट्ठारस । चउवीसं दंडगा भाणियव्वा ॥

२८७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति जाव[9] विहरति ॥

रोहस्स पण्ह-पदं

२८८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी रोहे णामं अणगारे पगइभद्दए[10] पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे[11] मिउमद्दव-संपन्ने[12] अल्लीणे[13] विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. कडा इति (क); कडे ति (ब, म)।
२. भ० १।२५६-२६६।
३. भ० १।२७६, २८०।
४. भ० १।२८१-२८४।
५. पू० प० २।
६. भ० १।२७६-२८०।
७. भ० १।२७६-२८५।
८. सं० पा०—कोहे जाव मिच्छादंसणसल्ले।
९. भ० १।५१।
१०. °भद्दए पगइमउए पगइविणीए (अ, क, ता, ब, म, स, वृ)।
११. °माय° (ता)।
१२. °संपण्णे (म)।
१३. आलीणे भद्दए (अ, क, ब); अल्लीणे भद्दए (ता, म, स, वृ)। आदर्शेषु वृत्तौ च 'पगइभद्दए' इतः समादाय 'विणीए' एतदन्तानि सर्वाण्यपि पदानि वर्तन्ते, किन्तु औपपातिक (६१, ११६) सूत्रस्य संदर्भे 'पगइमउए पगइविणीए भद्दए' एतानि त्रीणि पदानि द्विरुक्तानि सन्ति, तानि पाठान्तरे गृहीतानि। द्रष्टव्यं भ० २।७० सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

२८९. ततेणं से रोहे अणगारे[1] जायसड्ढे जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

२९०. पुव्वि भंते ! लोए, पच्छा अलोए ? पुव्वि अलोए, पच्छा लोए ?
रोहा ! लोए य अलोए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते[3]—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ।।

२९१. पुव्वि भंते ! जीवा, पच्छा अजीवा ? पुव्वि अजीवा, पच्छा जीवा ?
[4]• रोहा ! जीवा य अजीवा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९२. पुव्वि भंते ! भवसिद्धिया[5], पच्छा अभवसिद्धिया ? पुव्वि अभवसिद्धिया, पच्छा भवसिद्धिया ?
रोहा ! भवसिद्धिया य, अभवसिद्धिया य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९३. पुव्वि भंते ! सिद्धि, पच्छा असिद्धी ? पुव्वि असिद्धी, पच्छा सिद्धी ?
रोहा ! सिद्धी य असिद्धी य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९४. पुव्वि भंते ! सिद्धा, पच्छा असिद्धा ? पुव्वि असिद्धा, पच्छा सिद्धा ?
रोहा ! सिद्धा य असिद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! •

२९५. पुव्वि भंते ! अंडए, पच्छा कुक्कुडी ? पुव्वि कुक्कुडी, पच्छा अंडए ?
रोहा ! से णं अंडए कओ ?
भयवं ! कुक्कुडीओ ।
सा णं कुक्कुडी कओ ?
भंते ! अंडयाओ ।
एवामेव रोहा ! से य अंडए, सा य कुक्कुडी पुव्वि पेते, पच्छा पेते—'दो वेते'[6] सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९६. पुव्वि भंते ! लोयंते, पच्छा अलोयंते ? पुव्वि अलोयंते, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अलोयंते य[7] •पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा•, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

---

१. भगवं अणगारे (क, ब); अणगारे भगवं (ता) ।
२. भ० १।१० ।
३. वेते (ता) ।
४. सं० पा०—जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य । एवं भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा ।
५. भवसिद्धीया (क, ता, स) ।
६. दुवेए (स) ।
७. सं० पा०—य जाव अणाणुपुव्वी ।

२९७. पुव्विं भंते ! लोयंते, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? •पुव्विं सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा लोयंते ?°
रोहा ! लोयंते य सत्तमे ओवासंतरे य पव्विं पेते[1], •पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा°, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९८. एवं लोयंते य सत्तमे य तणुवाए। एवं घणवाए, घणोदही, सत्तमा पुढवी। एवं लोयंते एक्केक्केणं संजोएतव्वे इमेहिं ठाणेहिं, तं जहा—

संगहणी-गाहा

ओवास-वात-घणउदहि-पुढवि-दीवा य सागरा वासा।
नेरइयादि[3] अत्थिय, समया कम्माइ[4] लेस्साओ ॥१॥
दिट्ठी दंसण-नाणे, सण्ण-सरीरा य जोग-उवओगे।
दव्व-पएसा-पज्जव, अद्धा किं पुव्विं लोयंते ॥२॥

२९९. •[5]पुव्विं भंते ! लोयंते, पच्छा अतीतद्धा ? पुव्विं अतीतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अतीतद्धा य पुव्विं पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३००. पुव्विं भंते ! लोयंते, पच्छा अणागतद्धा ? पुव्विं अणागतद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य अणागतद्धा य पुव्विं पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०१. पुव्विं भंते ! लोयंते, पच्छा सव्वद्धा ? पुव्विं सव्वद्धा, पच्छा लोयंते ?
रोहा ! लोयंते य सव्वद्धा य पुव्विं पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !°

३०२. जहा[6] लोयंतेणं संजोइया सव्वे ठाणा एते, एवं अलोयंतेण वि संजोएतव्वा सव्वे॥

३०३. पुव्विं भंते ! सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा सत्तमे तणुवाए[7] ? •पुव्विं सत्तमे तणुवाए, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ?
रोहा ! सत्तमे ओवासंतरे य सत्तमे तणुवाए य पुव्विं पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !°

३०४. एवं सत्तमं ओवासंतरं सव्वेहिं समं संजोएतव्वं जाव[8] सव्वद्धाए॥

३०५. पुव्विं भंते ! सत्तमे तणुवाए ? पच्छासत्तमे घणवाए[9] ? •पुव्विं सत्तमे घणवाए, पच्छा सत्तमे तणुवाए ?

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—पेते जाव अणाणुपुव्वी।
३. चउवीसं दंडगा।
४. कम्माइं (अ, क, ब, म, स)।
५. सं० पा०—पुव्विं भंते ! लोयंते पच्छा सव्वद्धा।
६. भ० १।२९७-३०१।
७. सं० पा०—तणुवाए°।
८. भ० १।२९८-३०१।
९. सं० पा० घणवाए°।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुव्विं पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! °

३०६. एवं[1] तहेव नेयव्वं जाव[2] सव्वद्धा ॥

३०७. एवं उवरिल्लं एक्केक्कं संजोयंतेणं, जो जो हिट्ठिल्लो तं तं छड्डंतेणं नेयव्वं जाव[3] अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव[4] अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[5] विहरइ ॥

लोयट्ठिति-पदं

३०९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव[6] एवं वयासी—

३१०. कतिविहा णं भंते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिति पण्णत्ता, तं जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए। २. वायपइट्ठिए उदही। ३. उदहिपइट्ठिया पुढवी। ४. पुढविपइट्ठिआ तस-थावरा पाणा। ५. अजीवा जीवपइट्ठिया। ६. जीवा कम्मपइट्ठिया। ७. अजीवा जीवसंगहिया। ८. जीवा कम्मसंगहिया ॥

३११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव[7] जीवा कम्मसंगहिया ?
गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ[8], वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि सितं बंधइ, बंधित्ता मज्झे[9] गंठिं बंधइ, बंधित्ता उवरिल्लं गंठिं मुयइ, मुइत्ता उवरिल्लं देसं वामेइ, वामेत्ता उवरिल्लं देसं 'आउयायस्स पूरेइ[10]', पूरेत्ता उप्पि सितं बंधइ, बंधित्ता मज्झिल्लं गंठिं मुयइ। से नूणं गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?
हंता चिट्ठइ[11]।
से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा कम्मसंगहिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियंसि[12] उदगंसि ओगाहेज्जा। से नूणं गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?
हंता चिट्ठइ।
एवं वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसंगहिया ॥

---

१. एवं पि (क, ता, ब, म, स)।
२. भ० १।२९८-३०१।
३. भ० १।२९८-३०१।
४. भ० १।३०१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।१०।
७. भ० १।३१०।
८. वत्थि° (क)।
९. मज्झिल्लं (ब)।
१०. आउयाए संपूरेइ (अ)।
११. चेट्ठइ (अ); चेष्टति (ब)।
१२. अत्थाहमपार° (वृपा)।

जीव-पोग्गल पदं

३१२. अत्थि णं भंते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्ण-मोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि ।।

३१३. से केणट्ठेणं भंते[1] ! •एवं वुच्चइ—अत्थि णं जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण-बद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्ण-घडत्ताए° चिट्ठंति ?

गोयमा ! से जहाणामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ ।

अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरदंसि एगं महं[2] नावं सयासवं[3] सयछिद्दं[4] ओगा-हेज्जा । से नूणं गोयमा ! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ?

हंता चिट्ठइ ।

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थि णं जीवा य[5] •पोग्गला य अण्ण-मण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्ण-मण्णघडत्ताए° चिट्ठंति ।।

सिणेहकाय-पदं

३१४. अत्थि णं भंते ! सदा समितं सुहुमे सिणेहकाए पवडइ ?
हंता अत्थि ।।

३१५. से भंते ! किं उड्ढे पवडइ[6] ? अहे पवडइ ? तिरिए पवडइ ?
गोयमा ! उड्ढे वि पवडइ, अहे वि पवडइ, तिरिए वि पवडइ ।।

३१६. जहा से बायरे आउयाए अण्णमण्णसमाउत्ते चिरं पि दीहकालं चिट्ठइ तहा णं से वि ?
णो इणट्ठे समट्ठे । से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ।

३१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ।।

१. सं० पा०—भंते जाव चिट्ठंति ।
२. महा (ता) ।
३. सदा° (अ, क, ता, ब, म) ।
४. सदाछिद्दं (अ); सतछिद्दं (ता); सदछिद्दं (ब) ।
५. सं० पा०—य जाव चिट्ठंति ।
६. पडइ (अ, ब) ।
७. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेणं देसं उववज्जइ ? २. देसेणं सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं देसं उववज्जइ ? ४. सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उववज्जइ । २. नो देसेणं सव्वं उववज्जइ । ३. नो सव्वेणं देसं उववज्जइ । ४. सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ॥

३१९. जहा नेरइए, एवं जाव[1] वेमाणिए ॥

३२०. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

३२१. एवं जाव[2] वेमाणिए[3] ॥

३२२. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो[4] उव्वट्टमाणे, किं—१. देसेणं देसं उव्वट्टइ ? २. [5]देसेणं सव्वं उव्वट्टइ ? ३. सव्वेणं देसं उव्वट्टइ ? ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उव्वट्टइ । २. नो देसेणं सव्वं उव्वट्टइ । ३. नो सव्वेणं देसं उव्वट्टइ । ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टइ ॥

३२३. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२४. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

१. पू० प० २ ।
२. पू० प० २ ।
३. वेमाणिया (म) ।
४. नेरइएसु (ता, म) ।
५. सं० पा०—जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्टमाणे वि दंडगो भाणियव्वो । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेणं देसं आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देसं आहारेइ । सव्वेण वा सव्वं आहारेइ । एवं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेणं देसं उववण्णे एसो वि तहेव जाव सव्वेणं सव्वं उववण्णे । जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दंडगा तहा उववण्णेणं उव्वट्टेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा—सव्वेणं सव्वं उववण्णे, सव्वेण वा देसं आहारेइ, सव्वेण वा सव्वं आहारेइ । एएणं अभिलावेणं उववण्णे वि उव्वट्टे वि नेयव्वं ।

३२५. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२६. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववण्णे, किं—१. देसेणं देसं उववण्णे ? २. देसेणं सव्वं उववण्णे ? ३. सव्वेणं देसं उववण्णे ? ४. सव्वेणं सव्वं उववण्णे ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उववण्णे । २. नो देसेणं सव्वं उववण्णे । ३. नो सव्वेणं देसं उववण्णे । ४. सव्वेणं सव्वं उववण्णे ॥

३२७. एवं जाव वेमाणिए ॥

३२८. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववण्णे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

३२९. एवं जाव वेमाणिए ॥

३३०. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टे, किं—१. देसेणं देसं उव्वट्टे ? २. देसेणं सव्वं उव्वट्टे ? ३. सव्वेणं देसं उव्वट्टे ? ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टे ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं उव्वट्टे । २. नो देसेणं सव्वं उव्वट्टे । ३. नो सव्वेणं देसं उव्वट्टे । ४. सव्वेणं सव्वं उव्वट्टे ॥

३३१. एवं जाव वेमाणिए ॥

३३२. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टे, किं—१. देसेणं देसं आहारेइ ? २. देसेणं सव्वं आहारेइ ? ३. सव्वेणं देसं आहारेइ ? ४. सव्वेणं सव्वं आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेणं देसं आहारेइ । २. नो देसेणं सव्वं आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देसं आहारेइ । ४. सव्वेणं वा सव्वं आहारेइ ॥

३३३. एवं जाव वेमाणिए ॥[1]

३३४. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, किं—१. अद्धेणं अद्धं उववज्जइ ? २. अद्धेणं सव्वं उववज्जइ ? ३. सव्वेणं अद्धं उववज्जइ ? ४. सव्वेणं सव्वं उववज्जइ ?
जहा पढमिल्लेणं अट्ठ दंडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दंडगा भाणियव्वा, नवरं—जहिं देसेणं देसं उववज्जइ, तहिं अद्धेणं अद्धं उववज्जइ इति भाणियव्वं, एयं नाणत्तं । एते सव्वे वि सोलस दंडगा भाणियव्वा ॥

विग्गहगइ-पदं

३३५. जीवे णं भंते ! किं विग्गहगइसमावण्णए ? अविग्गहगइसमावण्णए ?
गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावण्णए, सिय अविग्गहगइसमावण्णए ॥

---

१. अस्मिन्नालापके वृत्तिकृता पाठान्तरस्य उल्लेखः कृतोस्ति—'पुस्तकान्तरे तूत्पादतदाहारदंडकानन्तरमुत्पादे सत्युत्पन्नतदाहारदंडको तत्सूत्रादप्रतिपन्नत्वादुद्वर्त्तनाया उद्वर्त्तनातदाहारदंडको उद्वर्त्तनायां चोद्वृत्तस्यादि[illegible]तदाहारदंडको' (वृ) ।

३३६. एवं जाव[1] वेमाणिए ।।

३३७. जीवा णं भंते ! किं विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ।।

३३८. नेरइया णं भंते ! किं विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एवं जीव—एगिंदियवज्जो तियभंगो ।

आयु-पदं

३३९. देवे णं भंते ! महिड्ढिए[2] महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे[3] महाणुभावे अविउक्कंतियं चयमाणे[4] किंचिकालं[5] हिरिवत्तियं[6] दुगंछावत्तियं परीसहवत्तियं[7] आहारं नो आहारेइ । अहे णं आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ तं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा ?
हंता गोयमा ! देवेणं महिड्ढिए[8] °महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कंतियं चयमाणे किंचिकालं हिरिवत्तियं दुगंछावत्तियं परीसहवत्तियं आहारं नो आहारेइ । अहे णं आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ तं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा—तिरिक्खजोणियाउयं वा° मणुस्साउयं वा ।

गब्भ-पदं

३४०. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं सइंदिए वक्कमइ ? अणिंदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिंदिए वक्कमइ ।।

३४१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ ? सिय अणिंदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! दव्विंदियाइं पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ । भाविंदियाइं पडुच्च सइंदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय सइंदिए वक्कमइ । सिय अणिंदिए वक्कमइ ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. महड्ढिए (क) ।
३. महासुक्खे (म) ; महासोक्खे (म, वृपा) ।
४. चयं चयमाणे (अ, ता, ब, म, स, वृपा) ।
५. कंचि° (ता) ।
६. हिरिविवत्तियं (स) ।
७. परिस्सह ° (क, ता, स) ।
८. सं० पा०—महिड्ढिए जाव मणुस्साउयं ।

३४२. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ।।

३४३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी वक्कमइ ? सिय असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारयाइं[1] पडुच्च असरीरी वक्कमइ । तेया-कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ।।

३४४. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ?
गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं—तं तदुभयसंसिट्ठं[2] तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ।।

३४५. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ?
गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगतीओ[3] आहारमाहारेइ, तदेकदेसेणं ओयमाहारेइ ।।

३४६. जीवस्स णं भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा 'वंते इ वा पित्ते इ वा'[4] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३४७. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं जहा—सोइंदियत्ताए,[5] °चक्खिंदियत्ताए, घाणिंदियत्ताए, रसिंदियत्ताए°, फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवस्स णं गब्भगयस्स समाणस्स णत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा वंते इ वा पित्ते इ वा ।।

३४८. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३४९. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ; अभिक्खणं आहारेइ, अभिक्खणं परिणामेइ, अभिक्खणं उस्ससइ, अभिक्खणं निस्ससइ; आहच्च आहारेइ, आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ[6] ।

१. आहारादी (अ, ब); आहाराइं (ता, स) ।
२. °संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं (अ, क, म, स) ।
३. रसवतीओ (अ, क, ब, म); रसविलीओ (ता) ।
४. × (अ, क, ता, ब) एते पदे वृत्तावपि न व्याख्याते ।
५. म०पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए ।
६. नीससति (अ, क, ता, म, स) ।

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा[1]—तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ।

अवरा वि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा[2]—तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ। से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं गब्भगए समाणे° नो पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ॥

माइय-पेइय-अंग-पदं

३५०. कइ णं भंते ! माइयंगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिए, मत्थुलुंगे[4] ॥

३५१. कइ णं भंते ! पेतियंगा[5] पण्णत्ता ?

गोयमा ! तओ पेतियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केस-मंसु-रोम-नहे ॥

३५२. अम्मापेइए[6] णं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतियं कालं संचिट्ठइ, अहे णं समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-कालसमयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥

गब्भस्स नरगगमण-पदं

३५३. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से णं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म[7] पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ,[8] समोहणित्ता चाउरंगिणिं सेणं[9] विउव्वइ, विउव्वित्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ।

से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए, अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं

१. पुत्तजीवं फुडा (वृ)।
२. माउजीवं फुडा (वृ)।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
४. ° लुए (अ, क, स); ° लिंगे (म)।
५. पितियंगा (अ, म, स)।
६. ° पिइए (अ, म, स)।
७. निसम्मा (ता)।
८. समोहणइ (अ, स)।
९. सेण्णं (क, ता, ब, म, स)।

करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं गोयमा[1] ! ● एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा°, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

गब्भस्स देवलोगगमण-पदं

३५५. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! से णं सण्णी पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म तओ भवइ संवेगजायसड्ढे[2] तिव्वधम्माणुरागरत्ते ।

से णं जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकंखिए पुण्णकंखिए सग्गकंखिए मोक्खकंखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्गपिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए एयंसि णं अंतरंसि कालं करेज्ज देवलोगेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५७. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे उत्ताणए[3] वा पासल्लए[4] वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा ? चिट्ठेज्ज वा ? निसीएज्ज वा ? तुयट्टेज्ज वा ? माउए सुयमाणीए[5] सुवइ ? जागरमाणीए जागरइ ? सुहियाए सुहिए भवइ ? दुहियाए दुहिए भवइ ?

हंता गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे[6] ●उत्ताणए वा पासल्लए वा अंबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा । माउए सुयमाणीए सुवइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ° दुहियाए दुहिए भवइ ।

अहे णं पसवणकालसमयंसि सीसेण वा पाएहिं वा आगच्छति सममागच्छति[7], तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति ।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं उदिण्णाइं—नो उवसंताइं भवंति,

१. सं० पा०—गोयमा जाव अत्थे° ।
२. ° जाइसड्ढे (ब, स) ।
३. उत्ताणे (ता) ।
४. पासल्लए (अ); पासिल्लए (क); पासल्लिए (ता, म) ।
५. सुवमाणीए (क, ता, म) ।
६. सं० पा०—समाणे जाव दुहियाए ।
७. समसमा° (अ, ब, म, वृपा) ।

तओ भवइ दुरूवे दुवण्णे 'दुग्गंधे दुरसे'[1] दुफासे अणिट्ठे अकंते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकंतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'[2] या वि भवइ ।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइं नो बद्धाइं[3] •नो पुट्ठाइं नो निहत्ताइं नो कडाइं नो पट्ठवियाइं नो अभिनिविट्ठाइं नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइं—उवसंताइं भवंति. तओ भवइ सुरूवे सुवण्णे सुगंधे सुरसे सुफासे इट्ठे कंते पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कंतस्सरे पियस्सरे सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे° 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'[4] या वि भवइ ॥

३५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

अट्ठमो उद्देसो

बालस्स आउय-पदं

३५९. एगंतबाले णं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेति ? तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउयं किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ?

गोयमा ! एगंतबाले णं मणुस्से नेरइयाउयं पि पकरेति, तिरियाउयं वि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेति, नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं किच्चा देवलोगेसु उववज्जति ॥

पंडियस्स आउय-पदं

३६०. एगंतपंडिए णं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेति[6] ? •तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा

१. दुगंधे (म) ।
२. ° वयणपच्चाए (अ, क, ता, ब, म, स); स्थानाङ्गे (८।१०) 'पच्चायाए' इत्येव पाठोऽस्ति ।
३. सं० पा०—एसत्थ नेयव्वं जाव आदेज्ज°
४. ° वयणपच्चाए (क, ता) ।
५. भ० १। ५१ ।
६. सं० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? °देवाउयं किच्चा देवलोएसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडिए णं मणुस्से[1] आउयं सिय पकरेति, सिय णो पकरेति, जइ पकरेति णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरियाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

३६१. से केणट्ठेणं जाव[2] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगंतपंडियस्स णं मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पण्णायंति, तं जहा—अंतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

बालपंडियस्स आउय-पदं

३६२. बालपंडिए णं भंते ! मणुस्से किं नेरइयाउयं पकरेति ? °तिरिक्खाउयं पकरेति ? मणुस्साउयं पकरेति ? देवाउयं पकरेति ? नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से णो नेरइयाउयं पकरेति, णो तिरिक्खाउयं पकरेति, णो मणुस्साउयं पकरेति, देवाउयं पकरेति, णो नेरइयाउयं किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउयं किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउयं किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति°, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

३६३. से केणट्ठेणं जाव[4] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! बालपंडिए णं मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं[5] धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म[6] देसं उवरमइ, देसं णो उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ, देसं णो पच्चक्खाइ ।
'से तेणं[7] देसोवरम-देसपच्चक्खाणेणं णो नेरइयाउयं पकरेति जाव[8] देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेणं जाव देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ।।

---

१. मणूसे (ता) ।
२. भ० १।३६० ।
३. सं० पा०—पकरेति जाव देवाउयं ।
४. भ० १।३६२ ।
५. यारियं (क, ता) ।
६. निसम्मा (म, ता, ब) ।
७. सेणं ते (क); सेणं तेणं (ता, ब) ।
८. भ० १।३६० ।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे णं भंते ! कच्छंसि वा दहंसि वा उदगंसि वा दवियंसि वा वलयंसि वा नूमंसि वा गहणंसि वा गहणविदुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयविदुग्गंसि वा वणंसि वा वणविदुग्गंसि वा मियवित्तीए[1] मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एते मिय[2] त्ति काउं अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपासं उद्दाति[3], ततो णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय[4] तिकिरिए, सिय चउकिरिए[5], सिय पंचकिरिए ।।

३६५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पंचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बंधणयाए, णो मारणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[6]—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए वि, बंधणताए वि—णो मारणताए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[7], पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ।

जे भविए उद्दवणताए[8] वि, बंधणताए वि, मारणताए वि, तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । से तेणट्ठेणं[9] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय° पंचकिरिए ।।

३६६. पुरिसे णं भंते ! कच्छंसि वा जाव[10] वणविदुग्गंसि वा तणाइं ऊसविय-ऊसविय अगणिकायं निसिरइ—तावं च णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।।

३६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पंचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए[11]—°णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—तावं

---

१. मियवत्तिए (अ); मियवत्तीए (स) ।
२. मिए (अ, ता, ब, म, स) ।
३. उड्डाइ (अ, क, ता, ब, स) ।
४. जाव च णं से पुरिसे कच्छंसि वा जाव कूडपासं उड्डाइ ताव च णं से पुरिसे सिय (क, ता, म, स) ।
५. चतु° (ता) ।
६. पाउसियाए (अ, ब, म) ।
७. पायोसियाए (ब) ।
८. उद्दणयाए (ता) ।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पच° ।
१०. भ० १।३६४ ।
११. सं० पा०—उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं ।

च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, णो दहणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, दहणयाए वि, तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए॥

३६८. पुरिसे णं भंते! कच्छंसि वा जाव[1] वणविदुग्गंसि वा मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एते 'मिय त्ति'[2] काउं अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसुं निसिरति, ततो णं भंते! से पुरिसे कतिकिरिए?

गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए।

३६९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए?

गोयमा! जे भविए निसिरणयाए—णो विद्धंसणयाए, णो मारणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए निसिरणताए वि, विद्धंसणताए वि—णो मारणयाए—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए निसिरणयाए वि, विद्धंसणयाए वि, मारणताए वि—तावं च णं से पुरिसे[3] °काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए॥

३७०. पुरिसे णं भंते! कच्छंसि वा जाव[4] वणविदुग्गंसि वा? मियवित्तीए मियसंकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गंता एते मिय त्ति काउं अण्णतरस्स मियस्स वहाए आयत-कण्णायतं उसुं आयामेत्ता चिट्ठेज्जा, अण्णयरे[5] पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा[6] असिणा सीसं छिंदेज्जा, से य उसू ताए चेव पुव्वायामणयाए तं

---

१. भ० १।३६४।
२. मिए त्ति (अ); मिया ति (ता, म); मिये ति (ब, स)।
३. सं० पा०—पुरिसे जाव पंचहिं।
४. भ० १।३६४।
५. अण्णे य से (क, ता, म)।
६. सत° (ता)।

मियं विंधेज्जा, से णं भंते ! पुरिसे किं मियवेरेणं पुट्ठे ? पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? गोयमा ! जे मियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे । जे पुरिसं मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•जे मियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे ? जे पुरिसं मारेइ, से° पुरिसवेरेणं पुट्ठे ?

से नूणं गोयमा ! कज्जमाणे कडे, संधिज्जमाणे[2] संधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे[3] त्ति वत्तव्वं सिया ?

हंता भगवं ! कज्जमाणे कडे[4], •संधिज्जमाणे संधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे° निसिट्ठे त्ति वत्तव्वं सिया ।

से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जे मियं मारेइ, से मियवेरेणं पुट्ठे । जे पुरिसं मारेइ, से पुरिसवेरेणं पुट्ठे ।

अंतो छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[5], •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । बाहिं छण्हं मासाणं मरइ—काइयाए[6] •अहिगरणियाए, पाओसियाए° पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥

३७२. पुरिसे णं भंते ! पुरिसं सत्तीए समभिधंसेज्जा, सयपाणिणा[7] वा से असिणा सीसं छिंदेज्जा, ततो णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तं पुरिसं सत्तीए समभिधंसेति[8], सयपाणिणा[9] वा से असिणा सीसं छिंदति—तावं च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए[10] •पाओसियाए, पारितावणियाए°, पाणातिवातकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ।

आसण्णवधएण य अणवकंखणवत्तीए[11] णं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भंते ! पुरिसा सरिसया[12] सरित्तया[13] सरिव्वया सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामेंति तत्थ णं एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे परायिज्जति[14] । से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस° ।
२. संधेज्जमाणे (ता) ।
३. निसट्ठे (क, ता) ।
४. सं० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।
५. सं० पा०—काइयाए जाव पंचहिं ।
६. सं० पा०—काइयाए जाव पारिया°; कातियाए (ता) ।
७. सपाणिणा (क, ता) ।
८. अभिधंसेइ (अ, ब, स) ।
९. सपाणिणा (क, ता) ।
१०. सं० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा° ।
११. अणवकंखवत्तीए (अ, स) ।
१२. सरसया (ब) ।
१३. सरिसत्तया (ता) ।
१४. पराइणिज्जइ (अ, ता, ब); पराएज्जइ (स) ।

गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

३७४. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—सवीरिए परायिणति ? अवीरिए° परायिज्जति ?

गोयमा ! जस्स णं वीरियवज्झाइं कम्माइं नो बद्धाइं नो पुट्ठाइं[2] •नो निहत्ताइं नो कडाइं नो पट्ठवियाइं नो अभिनिविट्ठाइं° नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइं—उवसंताइं भवंति से णं परायिणति ।

जस्स णं वीरियवज्झाइं कम्माइं बद्धाइं[3]• पुट्ठाइं निहत्ताइं कडाइं पट्ठवियाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं° उदिण्णाइं णो उवसंताइं भवंति से णं पुरिसे परायिज्जति, से तेणट्ठेणं । गोयमा ! एवं वुच्चति—सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

वीरिय-पदं

३७५. जीवा णं भंते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संसारसमावण्णगा य, असंसार समावण्णगा य ।

तत्थ णं[4] जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा । सिद्धा णं अवीरिया । तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा[5] ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७७. नेरइया णं भंते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया ? करण-वीरिएणं सवीरिया य ? अवीरिया य ?

गोयमा ! जेसि णं नेरइयाणं अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-

---

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव परायिज्जति ।
२. सं० पा०—पुट्ठाइं जाव नो ।
३. सं० पा०—बद्धाइं जाव उदिण्णाइं ।
४. × (क, ता, ब, म) ।
५. ° वण्णया (क, ता, म) ।

परक्कमे, ते णं नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया ।

जेसि णं नेरइयाणं णत्थि उट्ठाणे[1] •कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे, ते णं नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं अवीरिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएणं सवीरिया । करण-वीरिएणं सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७९. जहा नेरइया एवं जाव[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

३८०. [3]•मणुस्सा णं भंते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसि-पडिवण्णगा य ।

तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करण-वीरिएणं अवीरिया । तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते णं लद्धिवीरिएणं सवीरिया, करणवीरिएणं सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि, अवीरिया वि° ।।

३८२. वाणमंतर-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] नेरइया ।।

३८३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[5] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

गुरु-लघु-पदं

३८४. कहण्णं[6] भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाएणं मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न- 'परपरिवाय-अरति-रति'[7]-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्तं[8] हव्वमागच्छंति ।।

---

१. सं० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे ।

२. पू० प० २ ।

३. सं० पा०—मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवरं सिद्धवज्जा भाणियव्वा ।

४. भ० १।३७७, ३७८ ।

५. भ० १।५१ ।

६. कहं णं (अ, ब) ।

७. रतिअरतिपरपरिवाय (अ, ब, स) ।

८. गुरुयत्तं (ब) ।

३८५. कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं[1] •मुसावायवेरमणेणं अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेणं 'कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस°-मिच्छादंसणसल्ल वेरमणेणं'[2]—एवं खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

३८६. [3]•कहण्णं भंते ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ?
गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव[4] मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ॥

३८७. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव[5] मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ॥

३८८. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ?
गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव[6] मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ॥

३८९. कहण्णं भंते जीवा संसारं हस्सीकरेंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव[7] मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं हस्सीकरेंति ॥

३९०. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ?
गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव[8] मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ॥

३९१. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं वीतिवयंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव[9] मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवा संसारं वीतिवयंति ॥

३९२. सत्तमे णं भंते ! ओवासंतरे[10] किं गरुए[11] ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

---

१. पाणायवाय° (ब, म);
सं० पा०—पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छा° ।
२. स्थानाङ्गे १।१११४-१२६ क्रोधादीनामग्रे 'विवेग' इति पदं प्रयुक्तमस्ति ।
३. सं० पा०—एवं संसारं आउलीकरेंति एवं परित्तीकरेंति एवं दीहीकरेंति एवं हस्सीकरेंति एवं अणुपरियट्टंति एवं वीईवयंति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ।
४. भ० १।३८४ ।
५. भ० १।३८५ ।
६. भ० १।३८४ ।
७. भ० १।३८५ ।
८. भ० १।३८४ ।
९. भ० १।३८५ ।
१०. उवासंतरे (क, ब, म, स) ।
११. गुरुए (अ) ।

३६३. सत्तमे णं भंते ! तणुवाए किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ।।

३६४. एवं सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ।।

३६५. ओवासंतराइं सव्वाइं जहा[1] सत्तमे ओवासंतरे ।।

३६६. 'जहा तणुवाए एवं—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा'[2] ।।

३६७. नेरइया णं भंते ! किं गरुया[3] ? °लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ।।

३६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! [illegible]-तेयाइं पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया, णो अगरुयलहुया । जीवं च कम्मगं[4] च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ।।

३६९. एवं जाव[5] वेमाणिया, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं सरीरेहिं ।।

४००. धम्मत्थिकाए[6] °णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०१. अहम्मत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०२. आगासत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०३. जीवत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए° ।।

४०४. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ।।

४०५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ? अगरुयलहुए वि ?
गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो

---

१. भ० १।३६२ ।

२. 'एवं गरुयलहुए' इति पाठः एकस्मिन् क्वचित् प्रयुक्ते आदर्शे लभ्यते । एतत् संग्रहगाथायाश्चरणद्वयमस्ति तेन पूर्वोक्तस्यापि 'ओवास' पदस्य पुनरुल्लेखोत्र जातोस्ति ।

३. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।

४. कम्मकं (क); कम्मगं (वृत्तौ लिखिते पाठसंकेते) ।

५. पू० प० २ ।

६. सं० पा०—धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएणं ।

अगरुयलहुए । अगरुयलहुयदव्वाइं पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

४०६. [1]•समया णं भंते ! किं गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ? गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया ॥

४०७. कम्माणि णं भंते ! किं गरुयाइं ? लहुयाइं ? गरुयलहुयाइं ? अगरुयलहुयाइं ? गोयमा ! णो गरुयाइं, णो लहुयाइं, णो गरुयलहुयाइं, अगरुयलहुयाइं° ॥

४०८. कण्हलेस्सा णं भंते ! किं गरुया[2] ?• लहुया ? गरुयलहुया ? ° अगरुयलहुया ? गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया[3] वि, अगरुयलहुया[4] वि ॥

४०९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्सा णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! दव्वलेस्सं पडुच्च तइयपदेणं,[5] भावलेस्सं पडुच्च चउत्थपदेणं[5] ॥

४१०. एवं जाव[5] सुक्कलेसा ॥

४११. दिट्ठी-दंसण-[6]णाण-अण्णाण[6]-सण्णाओ चउत्थएणं पदेणं नेतव्वाओ ॥

४१२. हेट्ठिल्ला चत्तारि[7] सरीरा नेयव्वा[8] ततिएणं पदेणं । कम्मयं[9] चउत्थएणं पदेणं ॥

४१३. मणजोगो, वइजोगो चउत्थएणं पदेणं, कायजोगो ततिएणं पदेणं ॥

४१४. सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थएणं पदेणं ॥

४१५. सव्वदव्वा, सव्वपएसा, सव्वपज्जवा जहा[10] पोग्गलत्थिकाओ[11] ॥

४१६. तीतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा चउत्थएणं[12] पदेणं ॥

पसत्थ-पदं

४१७. से नूणं भंते ! लाघवियं अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ?
हंता गोयमा ! लाघवियं[13] •अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिबद्धया समणाणं निग्गंथाणं° पसत्थं ॥

४१८. से नूणं भंते ! अकोहत्तं अमाणत्तं अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं निग्गंथाणं पसत्थं ?

१. सं० पा०—समया कम्माणि य चउत्थपदेणं ।
२. सं० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।
३. गरुयलहुया ।
४. अगरुयलहुया ।
५. भ० १।१०२ ।
६. नाणाण्णाण (ता) ।
७. ओरालियवेउव्वियआहारगतेया ।
८. नायव्वा (अ, ब, म) ।
९. कम्मया (क, म, स); कम्मदए (ता)
१०. जधा (अ, ब, म) ।
११. भ० १।४०४ ।
१२. चउत्थेणं (क, ता, ब, म) ।
१३. सं० पा०—लाघवियं जाव पसत्थं ।

हंता गोयमा ! अकोहत्तं अमाणत्तं[1] •अमायत्तं अलोभत्तं समणाणं निग्गंथाणं° पसत्थं ।।

कंखापदोस-पदं

४१९. से नूणं भंते ! कंखापदोसे खीणे समणे निग्गंथे अंतकरे भवति, अंतिमसरीरिए वा ?

बहुमोहे वि य णं पुव्विं विहरित्ता अहं[2] पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति[3] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेति ?

हंता गोयमा ! कंखापदोसे[4] खीणे[5] •समणे निग्गंथे अंतकरे भवति, अंतिमसरीरिए वा ।

बहुमोहे वि य णं पुव्विं विहरित्ता अह पच्छा संवुडे कालं करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेति ।।

इह-पर-भवियाउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं[6] च, परभवियाउयं च ।

जं समयं इहभवियाउयं पकरेति, तं समयं परभवियाउयं पकरेति ।

जं समयं परभवियाउयं पकरेति, तं समयं इहभवियाउयं पकरेति ।

इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउयं पकरेति,
परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउयं पकरेति ।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं च, परभवियाउयं च ।।

४२१. से कहमेयं[7] भंते ! एवं ?

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[8] एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं च, परभवियाउयं च ।

जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[9], •एवं भासेमि, एवं पण्णवेमि, एवं° परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं जहा— इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ।

---

१. सं० पा०—अमाणत्तं जाव पसत्थं ।
२. अहा (अ, ता, ब, म) ।
३. सं० पा०—सिज्झति जाव अंतं ।
४. कंख° (अ, ब, स) ।
५. सं० पा०—खीणे जाव अंतं ।
६. °आउगं (क) ।
७. °मेतं (ता, म); °मेवं (स) ।
८. भ० १।४२० ।
९. सं० पा०—एवमाइक्खामि जाव परूवेमि ।

जं समयं इहभवियाउयं पकरेति, णो तं समयं परभवियाउयं पकरेति ।
जं समयं परभवियाउयं पकरेति, णो तं समयं इहभवियाउयं पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउयं पकरेति ।
परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउयं पकरेति ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पकरेति, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ।।

४२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरति ।।

कालासवेसियपुत्त-पदं

४२३. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णामं अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते[2] एवं वयासी—
थेरा सामाइयं न याणंति, थेरा सामाइयस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा पच्चक्खाणं न याणंति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा संजमं न याणंति, थेरा संजमस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा संवरं न याणंति, थेरा संवरस्स अट्ठं न याणंति ।
थेरा विवेगं न याणंति, थेरा विवेगस्स अट्ठं ण याणंति ।
थेरा विउस्सग्गं न याणंति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठं न याणंति ।।

४२४. तए णं थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वदासी—
जाणामो णं अज्जो ! सामाइयं, जाणामो णं अज्जो ! सामाइयस्स[3] अट्ठं[4] ।
•जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणं, जाणामो णं अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! संजमं, जाणामो णं अज्जो ! संजमस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! संवरं, जाणामो णं अज्जो ! संवरस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! विवेगं, जाणामो णं अज्जो ! विवेगस्स अट्ठं ।
जाणामो णं अज्जो ! विउस्सग्गं°, जाणामो णं अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठं ।।

४२५. तते णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ[5] णं अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइयं, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठं जाव[6] जइ णं अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्गं, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठं । के भे[7]

१. भ० १।५१ ।
२. भगवं (अ, ब) ।
३. सामातियस्स (ता) ।
४. सं० पा०—अट्ठं जाव जाणामो ।
५. जति (अ, क, ब, म)
६. भ० १।४२३ ।
७. ते (ब, म) ।

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६. तए णं थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1] ।
●आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संजमे, आया णे अज्जो ! संजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! संवरे, आया णे अज्जो ! संवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ॥
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ° विउस्सग्गस्स अट्ठे ॥

४२७. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते एवं वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे— अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठं अज्जो ! गरहह[3] ?
कालासा[4] ! संजमट्ठयाए ॥

४२८. से भंते ! किं गरहा संजमे ? अगरहा संजमे ?
कालासा ! गरहा संजमे, णो अगरहा संजमे । गरहा वि य णं सव्वं दोसं पविणेति, सव्वं बालियं परिण्णाए । एवं खु णे आया संजमे उवहिते भवति । एवं खु णे आया संजमे उवचिए भवति । एवं खु णे आया संजमे उवट्ठिते भवति ॥

४२९. एत्थ णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे संबुद्धे थेरे भगवंते वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एएसि णं भंते ! पयाणं पुव्विं अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[5] अणभिगमेणं अदिट्ठाणं अस्सुयाणं अमुयाणं[6] अविण्णायाणं अव्वोकडाणं[7] अव्वोच्छिण्णाणं अणिज्जूढाणं अणुवधारियाणं एयमट्ठं नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।

इदाणिं भंते ! एतेसिं पयाणं जाणयाए सवणयाए बोहीए अभिगमेणं दिट्ठाणं सुयाणं मुयाणं[8] विण्णायाणं वोगडाणं वोच्छिण्णाणं णिज्जूढाणं उवधारियाणं[9] एयमट्ठं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि । एवमेयं से जहेयं[10] तुब्भे वदह ॥

४३०. तए णं ते थेरा भगवंतो कालासवेसियपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सद्दहाहि

---

१. सं० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
२. भ० १।४२३ ।
३. गरहट्ठ (ब) ।
४. कालास (स) ।
५. अबोहियाए (अ, स) ।
६. अमुयाणं (म); वृत्तौ 'अस्मृतानां' इति व्याख्यानमस्ति ।
७. अव्वोगडाणं (अ,ब,स); अवोकडाणं (क,म) ।
८. मुयाणं (ब); × (म) ।
९. अवधारियाणं (म) ।
१०. जहेदं (ता) ।

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेयं अम्हे वदामो ॥

४३१. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—इच्छामि ण भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंच-महव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं[1] ॥

४३२. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ॥

४३३. तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं[2] अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे[3] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भंते त्ति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—से नूणं भंते ! सेट्ठियस्स[4] य तणुयस्स य किवणस्स[5] य खत्तियस्स य 'समा चेव'[6] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हंता गोयमा ! सेट्ठियस्स[7] •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव° अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ॥

४३५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स[8] •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

आहाकम्म-पदं

४३६. 'आहाकम्मं णं'[9] भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

१. कुरुष्व इति गम्यम् (वृ)।
२. अदंतवण्णयं (क); अदंतधुवणयं (ता, ब, म)।
३. परिणिव्वुए (अ, ता, ब); परिणिव्वुते (क, म)।
४. सेट्ठिस्स (ता, ब); सिट्ठिस्स (म)।
५. किविणस्स (ता)।
६. समच्चेव (ब, म)।
७. सं० पा०—सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण°।
८. सं० पा०—तणुयस्स जाव कज्जइ।
९. आहाकम्मे णं (क); आहाकम्म णं (ता); आहाकम्मं णं (ब); आहाकम्मण्णं (म)।

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ[1], •हस्सकालठिइयाओ दीहकाल-ठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्साया-वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ।।

४३७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[2] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्मं णं भुंजमाणे आयाए धम्मं अइक्कमइ, आयाए धम्मं अइक्कममाणे पुढविकायं णावकंखइ[3], •आउकायं णावकंखइ, तेउकायं णावकंखइ, वाउकायं णावकंखइ, वणस्सइकायं णावकंखइ°, तसकायं णाव-कंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकंखइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ ।।

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्जं णं भंते ! भुंजमाणे समणे निग्गंथे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, •[4]दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवयइ ।।

४३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[5] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे समणे निग्गंथे आयाए धम्मं

१. सं० पा०—पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ ।
२. भ० १।४३६ ।
३. सं० पा०—णावकंखइ जाव तसकायं ।
४. सं० पा०—जहा संवुडे, नवरं आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ सिय णो बंधइ सेसं तहेव जाव वीईवयइ ।
५. भ० १।४३८ ।

नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाण पुढविकायं[1] अवकंखइ जाव[2] तसकायं अवकंखइ, जेसिं पि य णं जीवाणं सरीराइं (आहारं ?[3]) आहारेइ ते वि जीवे अवकंखइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ।।

४४०. से नूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ ? सासए बालए, बालियत्तं असासयं ? सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं ?

हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ[5], •नो थिरे पलोट्टइ । अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ । सासए बालए, बालियत्तं असासयं । सासए पंडिए°, पंडियत्तं असासयं ।।

४४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ।।

दसमो उद्देसो

परसमयवत्तव्वया-पदं

४४२. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति[7], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—

एवं खलु चलमाणे अचलिए[8] । •उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए । वेदिज्जमाणे अवेदिए । पहिज्जमाणे अपहीणे । छिज्जमाणे अच्छिण्णे । भिज्जमाणे अभिण्णे । दज्भमाणे अदड्ढे । मिज्जमाणे अमए° । निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे ।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ[9] न[10] साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति ?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं नत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति ।

---

१. पुढविक्कायं (ता, म, स) ।
२. भ० १।४३७ ।
३. द्रष्टव्यं—भ० १।४३७ सूत्रम् ।
४. भ० १।४३८ ।
५. सं० पा०—पलोट्टइ जाव पंडियत्तं ।
६. भ० १।५१ ।
७. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति ।
८. सं० पा०—अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे ।
९. एगततो (क, म); एगतओ (ता) ।
१०. णो (ता) ।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,
कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?
तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि'[1], तिहा[2] वि कज्जंति ।

दुहा कज्जमाणा[3] एगयओ दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ—एगयओ वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति । एवं[4] चत्तारि ।
पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता[5] दुक्खत्ताए कज्जंति । दुक्खे वि य णं से सासए सया समितं[6] उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य ।

पुव्विं[7] भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा ।

जा सा पुव्विं भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा अभासा । भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा । सा किं भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

अभासओ णं सा भासा । नो खलु सा भासओ भासा ।

पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा ।

जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया अदुक्खा । किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा । सा किं करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?

अकरणओ णं सा दुक्खा । नो खलु सा करणओ दुक्खा—सेवं वत्तव्वं सिया ।
अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्टु-अकट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया ।।

ससमयवत्तव्वया-पदं

४४३—से कहमेयं भंते ! एवं ?

१. दुविहा (ब) ।
२. तिविहा (ब, स) ।
३. किज्जमाणा (ब) ।
४. एवं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); अत्र 'जाव' पदं प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति ।
५. साहण्णित्ता (ता, ब) ।
६. समियं (अ, स) ।
७. पुव्वं (क, म, स) ।

गोयमा ! जण्णं[1] ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[2] वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया।

जे ते एवमाहंसु, मिच्छा[3] ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एवं भासेमि, एवं पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु चलमाणे चलिए[4]। •उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए°। निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति। दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले—एगयओ परमाणुपोग्गले भवति।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि कज्जंति। दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति। एवं चत्तारि[6]।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति। एगयओ साहणित्ता खंधत्ताए कज्जंति। खंधे वि य णं से असासए सया समितं उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य।

पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भाससमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा अभासा।

---

१. जं णं (ता)।

२. भ० १।४८२।

३. मिच्छं (ता)।

४. सं० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।

५. एवं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); अत्र 'जाव' पदं प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते। किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति।

६. अस्य पाठस्य रचना एवं संभाव्यते—

चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, कम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

चउण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए; तम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि

जा सा पुव्विं भासा अभासा। भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमय-वितिक्कंतं च णं भासिया भासा अभासा। सा किं भासओ भासा? अभासओ भासा?
भासओ णं भासा, नो खलु सा अभासओ भासा।
पुव्विं किरिया अदुक्खा।' •कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरियासमय-वितिक्कंतं च णं कज्जमाणी किरिया अदुक्खा।
जा सा पुव्विं किरिया अदुक्खा। कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरिया-समयवितिक्कंतं च णं कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। सा किं करणओ दुक्खा? अकरणओ दुक्खा?°

करणओ णं सा दुक्खा। नो खलु सा अकरणओ दुक्खा—सेवं वत्तव्वं सिया। किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं, कट्टु-कट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया॥

इरियावहिया-संपराइया-पदं

४४४. अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति[2], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति°—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—इरियावहियं[3] च, संपराइयं च।
जं समयं इरियावहियं पकरेइ, तं समयं संपराइयं पकरेइ।
•[4]जं समयं संपराइयं पकरेइ, तं समयं इरियावहियं पकरेइ।
इरियावहियाए पकरणयाए संपराइयं पकरेइ।
संपराइयाए पकरणयाए इरियावहियं पकरेइ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—इरिया-वहियं च, संपराइयं च॥

४४५. से कहमेयं भंते! एवं?
गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति,

कज्जंति। दुहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खंधे—एगयओ वि दुपएसिए खंधे। अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे—एगयओ परमाणु-पोग्गले भवइ।
तिहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खंधे—एगयओ एगे-एगे परमाणुपोग्गले भवइ।
चउहा कज्जमाणा चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति।

१. सं० पा०—जहा भासा तहा भाणियव्वा किरिया वि जाव करणओ।
२. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव एवं।
३. रिया० (अ, ता, ब, म)।
४. सं० पा०—परउत्थियवत्तव्वं णेयव्वं ससमय-वत्तव्वयाए णेयव्वं जाव इरियावहियं; 'क', 'ता' संकेतितयोरादर्शयोर्वृत्तौ च संक्षिप्तपाठो लभ्यते। शेषादर्शेषु वृत्तिकृता विस्तारं नीत;

एवं परूवेंति—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो किरियाओ पकरेति, जाव' इरियावहियं च, संपराइयं च।
जे ते एवमाहंसु। मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एवं भासेमि, एवं पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एक्कं किरियं पकरेइ, तं जहा—इरियावहियं वा, संपराइयं वा।
जं समयं इरियावहियं पकरेइ, नो तं समयं संपराइयं पकरेइ।
जं समयं संपराइयं पकरेइ नो तं समयं इरियावहियं पकरेइ।
इरियावहियाए पकरणयाए नो संपराइयं पकरेइ।
संपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहियं पकरेइ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ, तं जहा°—इरियावहियं वा, संपराइयं वा॥

उपपात-पदं

४४६. निरयगई णं भंते! केवतियं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता॥

४४७. एवं वक्कंतीपयं' भाणियव्वं निरवसेसं॥

४४८. सेवं भंते! सेवं भंते त्ति जाव' विहरइ॥

पाठो दृश्यते। अत्र च १।४२०, ४२१ सूत्रानुसारेण स पूर्ति नीतोस्ति।
१. भ० १।४४४।
२. प० ६।
३. भ० १।५१।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ 'ऊसास खंदए वि य, २ समुग्घाय ३,४ पुढविंदिय ५ अण्णउत्थि ६ भासा य ।
७ देवा य ८ चमरचंचा, ९,१० समयक्खित्तत्थिकाय बीयसए'' ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था—वण्णओ । सामी समोसढे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिगया परिसा ॥

सासुस्सास-पदं

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव' पज्जुवासमाणे एवं वदासी—
जे इमे भंते ! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा जाणामो पासामो ।
जे इमे पुढविकाइया जाव' वणप्फइकाइया—एगिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा न याणामो न पासामो ।
एए णं भंते ! जीवा आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

हंता गोयमा ! एए वि णं जीवा आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

१. × (अ, ता, ब, म, स) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. भ० १।९, १० ।
४. भ० १।४३७ ।

३. किण्णं[1] भंते ! एते जीवा आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! दव्वओ[2] अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठितियाइं[3], भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।।

४. जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा ऊससंति वा, नीससंति वा ताइं किं एगवण्णाइं[4] •जाव॰ किं पंचवण्णाइं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि जाव[5] पंचवण्णाइं पि आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि जाव सुक्किलाइं पि आणमंति वा, पणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा । आहारगमो नेयव्वो[6] जाव—

५. पुढविकाइया णं भंते ! कइदिसं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं॰ ।।

६. किण्णं भंते ! नेरइया आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

तं चेव जाव[7] नियमा छद्दिसिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ।।

७. जीव-एगिंदिया वाघाय-निव्वाघाया य भाणियव्वा[8] । सेसा नियमा छद्दिसिं ।।

८. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

हंता गोयमा ! वाउयाए णं[9] •वाउयाए चेव आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा॰, नीससंति वा ।।

वाउकायस्स कायट्ठिइ-पदं

९. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?

---

१. किं णं (ता) ।

२. दव्वओ णं (अ, म, स) ।

३. ॰ठितीयाइं (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. सं॰ पा॰—एगवण्णाइं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पंचदिसं ।

५. ६, ७. प॰ २८।१ ।

८. प॰ २८।१ ।

९. प॰ २८।१ ।

१०. सं॰ पा॰—वाउयाए णं जाव नीससंति ।

हंता गोयमा[1] ! •वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाति ॥

१०. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

११. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

मडाइ-नियंठ-पदं

१३. मडाई[2] णं भंते ! नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे[3], नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं[4] हव्वमागच्छइ ?
हंता गोयमा ! मडाई णं नियंठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवंचे, नो पहीणसंसारे, नो पहीणसंसारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णसंसारे, नो वोच्छिण्ण-संसारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ॥

१४. से णं भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्वं सिया । भूए त्ति वत्तव्वं सिया । जीवे त्ति वत्तव्वं सिया । सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । विण्णु[5] त्ति वत्तव्वं सिया । 'वेदे त्ति'[6] वत्तव्वं सिया । पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१५. से केणट्ठेणं पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! जम्हा आणमइ वा, पाणमइ वा, उस्ससइ वा, नीससइ वा तम्हा पाणे त्ति वत्तव्वं सिया ।
जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्वं सिया ।

---

१. सं० पा०—गोयमा जाव पच्चायाति ।
२. मडादी (ता) ।
३. ° पवंचे (ब) ।
४. इत्थत्त (अ, ता, ब, स, वृपा); इत्तत्थं (क); वृत्तौ 'इत्थत्थं—एनमर्थम्' इति व्याख्यातमस्ति, तेन तत्रापि इत्तत्थमिति पाठः संभाव्यते ।
५. विन्नुय (ब) ।
६. वेदाति (क, ता, ब, म) ।

जम्हा जीवे जीवति[1], जीवत्तं आउयं च कम्मं उवजीवति[2] तम्हा जीवे त्ति वत्तव्वं सिया ।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहिं कम्मेहिं तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्वं सिया ।

जम्हा 'तित्तकडुकसायंबिलमहुरे रसे'[3] जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्वं सिया ।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्खं तम्हा वेदे त्ति वत्तव्वं सिया । से तेणट्ठेणं[4] पाणे त्ति वत्तव्वं सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ।।

१६. मडाई णं भंते ! नियंठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवंचे[5], •पहीणसंसारे, पहीणसंसारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णसंसारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे°, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ?

हंता गोयमा ! मडाई णं नियंठे[6] •निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवंचे, पहीणसंसारे, पहीणसंसारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णसंसारे, वोच्छिण्णसंसारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे° नो पुणरवि इत्थत्थं हव्वमागच्छइ ।।

१७. से णं भंते ! किं ति वत्तव्वं सिया ?

गोयमा ! सिद्धे त्ति वत्तव्वं सिया । बुद्धे त्ति वत्तव्वं सिया । मुत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । पारगए त्ति वत्तव्वं सिया । परंपरगए त्ति वत्तव्वं सिया । सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अंतकडे[7] सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्वं सिया ।।

१८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।।

१९. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

खंदयकहा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कयंगला नामं नगरी होत्था—वण्णओ[8] ।।

२१. तीसे णं कयंगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[9] ।।

२२. तए णं समणे भगवं महावीरे उप्पन्ननाणदंसणधरे[10] •अरहा जिणे केवली जेणेव कयंगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. जीवेंति (क) ।

२. उवजीवेइ (ब) ।

३. °कडु° (ब); °महुररसे (ता, म) ।

४. तेणट्ठेणं जाव (अ, क, ता, ब, म) ।

५. सं० पा०—निरुद्धभवपवंचे जाव निट्ठिय° ।

६. सं० पा०—नियंठे जाव नो ।

७. अंतगडे (क) ।

८. ओ० सू० १ ।

९. ओ० सू० २-१३ ।

१०. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव समोसरणं ।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ जाव[1] समोसरणं । परिसा निग्गच्छइ ।।

२३. तीसे णं कयंगलाए नयरीए अदूरसामंते सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ[2] ।।

२४. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स[3] अंतेवासी खंदए[4] नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायगे परिवसइ[5]-रिव्वेद[6]-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद[7]-इतिहास-पंचमाणं निघंटुछट्ठाणं – चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए[8] पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोति-सामयणे[9], अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु[10] परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए या वि होत्था ।।

२५. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए[11] परिवसइ ।।

२६. तए णं से पिंगलए नामं नियंठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ[12] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदगं कच्चायणसगोत्तं इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा[13] !

१. किं सअंते[14] लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—ए[illegible][15] आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ।।

२७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालि[illegible] इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए [illegible] कलुससमावन्ने णो संचाएइ [illegible] नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

२८. तए णं से पिंगलए नियंठे वेसालियसावए खंदयं कच्चायणसगोत्तं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छे—मागहा !

---

१. ओ० सू० १६-५१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. गद्दभालिस्स (ब) ।
४. खंडए (ब) ।
५. वसइ (अ) ।
६. रिउव्वेद (अ, ब, स); रिजुव्वेद (क) ।
७. अथव्वण० (अ); अत्थव्वेय (क); अथव्ववेद (ता, म); अहव्वेद (ब) ।
८. वारए धारए (अ, क, म, स); वारए (ब, वृ); धारए (वृपा) ।
९. जोतिसांअयणे (ता) ।
१०. बम्हण्णए (क) ।
११. वेसालीसावए (क, ता); वेसालियस्सावए (म) ।
१२. कयाए (स) ।
१३. मागधा (ता) ।
१४. संते (ता) ।
१५. एतावता (अ, क, ब); एत्तावताव (ता, म) ।

१. किं सअंते लोए[1] ? °अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ?° ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावतताव आइक्खाइ वुच्चमाणे एवं ॥

२९. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए[2] भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

३०. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[3]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया जणसंमद्दे[4] इ वा जणवूहे इ वा[5] °जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—
एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव[6] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।
तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो । एयं णे पेच्चभवे इयभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुप्पडोयारेणं—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ जाव[7] महया उक्किट्ठसीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छंति ॥

३१. तए णं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

---

१. सं० पा०—लोए जाव केण ।
२. ° गिच्छिए (अ) ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. ° सद्दे (अ, म, वृपा) ।
५. सं० पा०—जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ ।
६. भ० १।७ ।
७. ओ० सू० ५२ ।

'एवं खलु समणे भगवं महावीरे कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि'[१]। सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता, नमंसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासित्ता इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं[२] वागरणाइं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदंडं च कुंडियं च कंचणियं च करोडियं च भिसियं च केसरियं च छण्णालयं[३] च अंकुसयं च पवित्तयं[४] च गणेत्तियं च छत्तयं च वाहणाओ[५] य पाउयाओ[६] य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदंड-कुंडिय-कंचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अंकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसंजुत्ते[७], धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कयंगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

३२. गोयमाइ[८]! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—
दच्छिसि णं गोयमा! पुव्वसंगइयं।
कं[९] भंते!?
खंदयं नाम।
से काहे वा? किह वा? केवच्चिरेण वा?

३३. एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[१०]। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अंतेवासी खंदए नामं कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। तं चेव जाव[११] जेणेव ममं अंतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते[१२] बहुसंपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अंतरा पहे वट्टइ। अज्जेव णं दच्छिसि[१३] गोयमा!

३४. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—पहू णं भंते! खंदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे

---

१. × (क, ता, ब)।
२. × (अ, ब, म)।
३. छण्हालयं (ता)।
४. पवित्तियं (क)।
५. पाहणाओ (ता)।
६. ओवाइय (सू० ११७) सूत्रे 'पाउयाओ' इति पदं नास्ति, प्रस्तुतप्रकरणे पि किंचिदग्रे 'छत्तोवाहणसंजुत्ते' इत्यत्रापि तन्नास्ति।
७. ° वाणह° (क)।
८. ° दि (क, ता, म)।
९. कं त (अ, क, ता)।
१०. ओ० सू० १।
११. भ० २।२४-३१।
१२. अदूराइते (क); अदूरियाते (ब)।
१३. दिच्छसि (अ, स); दच्छसि (म)।

भवित्ता[1] अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइत्तए ?
हंता पभू ॥

३५. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरागतं[3] जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,[4] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—हे खंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं[5] खंदया ! सागयमणुरागयं खंदया ! से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिय-सावएणं [illegible] पुच्छिए—मागहा ! किं सअंते लोगे ? अणंते लोगे ? एवं तं चेव जाव[6] जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए । से नूणं खंदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?[7]
हंता अत्थि ॥

३७. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—'से केस णं गोयमा'[8] ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव[9] रहस्स-कडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि ?

३८. तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—एवं खलु खंदया ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया !

३९. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामो णं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो[10] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

४०. तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महा-वीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोई[11] यावि होत्था ॥

१. भवित्ता णं (क, ता, ब, स) ।
२. आगाराओ (अ, क, ब, स) ।
३. अदूरआगयं (अ, ब, स); अदूरमागतं (ता) ।
४. पच्चुगच्छइ (अ, क, ता, म); पत्थुगच्छइ (ब) ।
५. रेफस्य [illegible]त् (वृ) ।
६. भ० २।२६-३५ ।
७. अत्थे समत्थे (क, वृ); अट्ठे समट्ठे (वृपा) ।
८. से केणं गोयमा (अ, ब); केस णं गोयमा मे (ता) ।
९. आय (ता) ।
१०. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो ।
११. वियट्टभोति (अ, ता, ब, म, स) ।

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स[1] सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं[2] अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणं चिट्ठइ ॥

४३. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं[3] °सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए° अतीव-अतीव उवसोभेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए[4] पीइमणे[5] परमसोमणस्सिए[6] हरिसवसविसप्प-माणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[7], °करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ॥

४४. खंदयाति ! समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणम-क्खेवं पुच्छिए—मागहा !

१. किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? २. सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३. सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५. केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एवं तं चेव जाव[8] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए । से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ॥

४५. जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किं सअंते लोए ? अणंते लोए ?—तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।

दव्वओ णं एगे लोए सअंते ।

खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखे-ज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए[9] सासए अक्खए अव्वए अव-ट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अंते ।

---

१. वियट्टाभोगिस्स (ता, ब, म) ।
२. मंगल्लं सस्सिरीयं (क) ।
३. सं० पा०—ओरालं जाव अतीव ।
४. × (अ, क, ब, म, स) ।
५. पीतमणे (अ, स) ।
६. परमसोमणसिए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
७. सं० पा०—करेइ जाव पज्जुवासइ ।
८. भ० २।२६-३५ ।
९. णितिए (अ, क, ता); णितए (ब) ।

भावओ णं लोए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा[1] ! दव्वओ लोए सअंते, खेत्तओ लोए सअंते, कालओ लोए अणंते, भावओ लोए अणंते ॥

४६. जे वि य ते खंदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंते जीवे ?° अणंते जीवे ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु[3] •मए खंदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ°।

दव्वओ णं एगे जीवे सअंते ।

खेत्तओ णं जीवे असंखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण अंते ।

कालओ णं जीवे न कयाइ न आसी[4], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, नत्थि पुण[5] से अंते ।

भावओ णं जीवे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता चारित्तपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अंते ।

सेत्तं खंदगा ! दव्वओ जीवे सअंते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणंते ॥

४७. जे वि य ते खंदया[6] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे । एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ° ।

दव्वओ णं एगा सिद्धी सअंता ।

खेत्तओ णं सिद्धी पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता, अत्थि पुण से अंते ।

१. × (क, ब) ।
२. सं० पा०—खंदया जाव अणंता ।
३. सं० पा०—खलु जाव दव्वओ ।
४. सं० पा०—आसी जाव निच्चे ।
५. पुणाइ (ता, ब, म) ।
६. सं० पा०—खंदया पुच्छा ।

कालओ णं सिद्धी न कयाइ न आसी[1], °न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण सा अंता ।

भावओ णं सिद्धीए अणंता वण्णपज्जवा, अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा, अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अंता ।

सेत्तं खंदया ! °दव्वओ सिद्धी सअंता, खेत्तओ सिद्धी सअंता, कालओ सिद्धी अणंता, भावओ सिद्धी अणंता ।।

४८. जे वि य ते खंदया[2] ! °अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, तं जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।°

दव्वओ णं एगे सिद्धे सअंते ।

खेत्तओ णं सिद्धे असखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अंते ।

कालओ णं सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अंते ।

भावओ णं सिद्धे अणंता नाणपज्जवा, अणंता दंसणपज्जवा, अणंता[3] अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थिपुण से अंते ।

सेत्तं खंदया ! दव्वओ सिद्धे सअंते, खेत्तओ सिद्धे सअंते, कालओ सिद्धे अणंते, भावओ सिद्धे अणंते ।।

४९. जे वि य ते खंदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[4] °पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—

केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?

तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु खंदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—बालमरणे य, पंडियमरणे य ।

से किं तं बालमरणे ?

बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

१. बलयमरणे २. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. [illegible] ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे

१. सं० पा०—कालओ य भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा, तत्थ ।

२. सं० पा० खंदया जाव किं अणंते सिद्धे तं चेव जाव दव्वओ ।

३. जाव पज्जवा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. सं० पा०—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था ।

११. वेहाणसे १२. गद्धपट्ठे—इच्चेतेणं खंदया ! दुवालसविहेणं बालमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणंसंजोएइ, अणंतेहिं तिरियभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणंतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाणं संजोएइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं[1] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टइ । सेत्तं मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्तं बालमरणे ।

से किं तं पंडियमरणे ?

पंडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे[2] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से किं तं पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अप्पडिकम्मे ।

सेत्तं पाओवगमणे ।

से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेणं खंदया ! दुविहेणं पंडियमरणेणं मरमाणे जीवे अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ[3], °अणंतेहिं तिरियभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाणं विसंजोएइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवयइ ।

सेत्तं मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्तं पंडियमरणे ।

इच्चेएणं खंदया ! दुविहेणं मरणेणंमरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ॥

५०. एत्थ णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

५१. तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा[4] ॥

१. अणवयग्गं (अ, ब); अणवइग्गं (म) ।

२. पाओय° (ता, म) ।

३. सं° पा—विसंजोएइ जाव वीईवयइ ।

४. ओ° सू° ७१-७७ ।

५२. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं,
अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !— से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमं-सित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[2] धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[3] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता °नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य।
से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे[4] मोल्लगरुए[5], तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्था-रिए समाणे पच्छा 'पुरा य'[6] हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामिय-त्ताए भविस्सइ।
एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[7] वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'[8] भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय[9] विविहा रोगायंका परी-स-

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठे जाव हियए; ° हिदये (क)।
२. भ० २।३१।
३. सं० पा०—करेत्ता जाव नमंसित्ता।
४. अप्पसारे (अ, क, ता, ब, स, वृ); एतत् परिवर्तनं लिपिहेतुकं संभाव्यते। वृत्तिकारेण परिवर्तितः पाठो लब्धः, तथैव व्याख्यातः। अथवा वृत्तावपि भारस्य साररूपेण परिवर्तनं जातं स्यात्। अर्थमीमांसया भारपदस्यैवात्र संगतिर्वर्तते।
५. ° गुरुए (क, स)।
६. पुराए (अ, ता, ब); पुरा (क, म)।
७. धेज्जे (अ); पेज्जे (म)।
८. अणुमए बहुमए (ता)।
९. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यः (वृ)।

होवसग्गा[1] फुसंतु त्ति कट्टु एस मे[2] नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं[3] धम्ममाइक्खियं ॥

५३. तए णं समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं सयमेव पव्वावेइ,[4] °सयमेव मुंडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं° धम्ममाइक्खइ[5]—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो किंचि वि[6] पमाइयव्वं ॥

५४. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमेइ, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमायइ ॥

५५. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते[7] कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू[8] धन्ने खंतिखमे जिइंदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ काउं विहरइ ॥

५६. तए णं समणे भगवं महावीरे कयंगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

५७. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[9] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

१. परिस्सहो° (ता, म) ।
२. × (अ, क, ता, ब, म) ।
३. °वत्तियं धुवं (क); °वित्तियं (ता,म,स) ।
४. सं० पा०—पव्वावेइ जाव धम्म° ।
५. °माइक्खाइ (अ, ता, ब, म) ।
६. × (अ, ब, स) ।
७. वय° (अ) ।
८. लज्ज (अ, ब) ।
९. सामाइगमादियाति (क, ब); सामातियमातियाइं (स) ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

५८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव[1] नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

५९. तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं[2] काएण फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएण फासेत्ता[3] •पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्टेत्ता अणुपालेत्ता आणाए° आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं[4] •महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तं चेव[5] ॥

६०. एवं[6] तेमासियं, चउम्मासियं, पंचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तरातिंदियं, दोच्चसत्तरातिंदियं, तच्चसत्तरातिंदियं, रातिंदियं[7], एगरातियं[8] ॥

६१. तए णं से खंदए अणगारे एगरातियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव[9] आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं[10] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं[11] तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६२. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[12] नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं जहा—

पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ।

दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ।

---

१. भ० २।५२ ।

२. × (ता, म, वृ); समं (म, स); स्थानाङ्गे (७१३) 'अहासम्मं' इति पदं नास्ति, केवलं 'सम्मं' वर्तते ।

३. सं० पा०—फासेत्ता जाव आराहेत्ता ।

४. सं० पा०—भगवं जाव नमंसित्ता ।

५. भ० २।५८, ५९ । चेव एवं दोमासियं (अ, क, ता, ब, म, स) ।

६. भ० २।५८-५९ ।

७. अहोरातिंदियं (अ, ता, म, स) ।

८. एगरातिंदियं (अ, क, म, स) ।

९. भ० २।५९ ।

१०. सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

११. गुणरयणं (क, ता, म, स) ।

१२. भ० २।५२ ।

एवं तच्चं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं । चउत्थं मासं दसमंदसमेणं । पंचमं मासं बारसमंबारसमेणं । छट्ठं मासं चउद्दसमंचउद्दसमेणं । सत्तमं मासं सोलसमंसोलसमेणं । अट्ठमं मासं अट्ठारसमंअट्ठारसमेणं । नवमं मासं वीसइमंवीसइमेणं । दसमं मासं बावीसइमंबावीसइमेणं । एक्कारसमं मासं चउवीसइमंचउवीसइमेणं । बारसमं मासं छव्वीसइमंछव्वीसइमेणं । तेरसमं मासं अट्ठावीसइमंअट्ठावीसइमेणं । चउद्दसमं मासं तिसइमंतिसइमेणं । पण्णरसमं मासं बत्तीसइमंबत्तीसइमेणं । सोलसं मासं चोत्तीसइमंचोत्तीसइमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ॥

६३. तए णं से खंदए अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं अहाकप्पं जाव[1] आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

६४. तए णं से खंदए अणगारे तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे[2] निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए[3] किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था । जीवंजीवेण गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामीति गिलाइ । से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडग-सगडिया[4] इ वा, एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया[5] इ वा उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव खंदए[6] अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं अवचिए मंस-सोणिएणं, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेणं, तेएणं, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

६५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे समोसरणं जाव[7] परिसा पडिगया ॥

६६. तए णं तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[8] °पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—

१. भ० २।५६ ।
२. भुक्खे (अ, म) ।
३. ° किडिय° (अ, ब) ।
४. तिलसंठगसगडिया (वृपा) ।
५. इंगालकट्ठसगडिया (अ, ब) ।
६. खंदए वि (ता, म) ।
७. ओ० सू० १६-८० ।
८. सं० पा—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था ।

एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं ओरालेणं[1] •विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए॰ किसे धमणिसंतए[2] जाए। जीवंजीवेणं गच्छामि, जीवंजीवेणं चिट्ठामि[3], •भासं भासित्ता वि गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि, भासं भासिस्सामीति गिलामि।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भंडगसगडिया इ वा, एरंडकट्ठसगडिया इ वा, इंगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ॰, एवामेव अहं पि ससद्दं गच्छामि, ससद्दं चिट्ठामि।

तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए,[4] फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे[5] पभाए, रत्तासोयप्पकासे[6], किंसुय-सुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता[7] •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं 'सणियं-सणियं'[8] दुरुहित्ता[9] मेहघणसंनिगासं[10] देवसन्निवातं पुढवीसिलापट्टयं पडिलेहित्ता, दब्भसंथारगं संथरित्ता दब्भसंथारोवगयस्स संलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे[11] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासइ।।

१. उरालेणं (क, ता, म, स); सं॰ पा॰—ओरालेणं जाव किसे।
२. धवणि॰ (क, ता, ब, म)।
३. सं॰ पा॰—चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव।
४. रतणीए (ता)।
५. अहपंडरे (अ, ता, ब); अहापंडुरे (स)।
६. ॰प्पगासे (क); ॰संकासे (ता)।
७. सं॰ पा॰—नमंसित्ता जाव पज्जुवासित्ता।
८. सणितं सणितं (क)।
९. दुहित्ता (क, म); दूहित्ता (ता); रुहित्ता (ब); दुरूहित्ता (स)।
१०. मेघ॰ (अ)।
११. सं॰ पा॰—महावीरे जाव पज्जुवासइ।

६७. खंदयाइ ! समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव खंदया ! पुव्वरत्तावरत्त[1] •कालसमयंसि धम्मजागरियं° जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं विउलेणं तं चेव जाव[3] कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६८. तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ[5] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[7], आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं[8] सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहघणसन्निगासं देव-सन्निवातं पुढविसिलापट्टयं[9] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[10] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स।

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे[12] भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[13] मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए। इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

---

१. पुव्वरत्तावररत्त° (क); सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. भ० २।६६।
४. भ० २।६६।
५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
६. सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता।
७. आरुभेइ (क, म)।
८. कडादीहिं (अ, ब, स); कडायीहिं (ता, म)।
९. ° वट्टयं (अ, क, म, स)।
१०. ओ० सू० २१।
११. ओ० सू० २१।
१२. मे से (क, ब, म, स)।
१३. भ० १।३८४।

सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव[1] मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सण्णिवाइय[2] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयं पि णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ॥

६९. तए णं से खंदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए॥

७०. तए णं ते थेरा भगवंतो खंदयं अणगारं कालगयं जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउसग्गं करेंति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हंति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं पच्चोरुहंति[3], पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे 'पगइभद्दए पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे[4] विणीए'[5]। से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाणि आरुहेत्ता[6], समणा[7] य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं[8] सणियं-सणियं दुरुहित्ता जाव[9] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभंडए॥

७१. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी खंदए नामं अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववण्णे?

गोयमाइ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वदासी—एवं खलु

---

१. भ० २।५२।
२. द्रष्टव्यं २।५२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
३. पच्चोसक्कंति (स)।
४. अलीणे (क, ब)।
५. औपपातिके (६१, ११६) एतावान् एव पाठोस्ति। अत्र केषुचिदादर्शेषु 'पगइभउए पगइविणीए' इति पाठोप्यस्ति तथा 'मिउ-मद्दवसंपन्ने भद्दए विणीए' इत्यपि वर्तते। इति द्विरुक्तमस्ति तेन औपपातिकपाठ एव समीचीनोस्ति।
६. आरोवेत्ता (अ, क, ता, ब, स); आरोहेत्ता (म)।
७. समणे (अ, ता, ब, म)।
८. सं० पा०—पव्वयं तं चेव निरवसेसं जाव आणुपुव्वीए।
९. भ० २।६८, ६९।

गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए नामं अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे विणीए०, से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता[2] •जाव[3] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता० आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।।

७२. तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

७३. से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ।।

बीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४. कइ णं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—१. वेदणासमुग्घाए २. कसायसमुग्घाए ३. मारणंतियसमुग्घाए ४. वेउव्वियसमुग्घाए ५. तेजससमुग्घाए ६. आहारगसमुग्घाए ७. केवलियसमुग्घाए । छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं समुग्घायपदं नेयव्वं[5] ।।

१. सं० पा०—पगइभद्दए जाव सेणं ।
२. सं० पा०—आरुहेत्ता तं चेव सव्वं अविसेसितं णेयव्वं जाव आलोइय० ।
३. भ० २।६८, ६९ ।
४. गमिहिति (अ, ब, म); गच्छिही (ना) ।
५. एवं समुग्घायपदं छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वं जाव—वेमाणियाणं । कसायसमुग्घाया, अप्पाबहुयं । अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाए जाव—सासतं, अणागयद्धं चिट्ठंति ? समुग्घायपदं नेयव्वं (अ, ब) ।
६. सूत्रकृता प्रज्ञापनायाः 'मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—मरणसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा' इत्येव पाठोत्र विवक्षितः, अतः परवर्ती छाद्मस्थिकसमुद्घातवर्जपाठो नात्र अधिकृतोस्ति । द्रष्टव्यम्—प्रज्ञापना, पद ३६ ।

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५. कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. रयणप्पभा २. सक्करप्पभा ३. वालुयप्पभा ४. पंकप्पभा ५. धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७. तमतमा । जीवाभिगमे[1] नेरइयाणं जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो[2] जाव—

७६. 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'[3]
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७. कइ णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—१. सोइंदिए २. चक्खिंदिए ३. घाणिंदिए ४ रसिंदिए ५. फासिंदिए । पढमिल्लो इंदियउद्देसओ[4] नेयव्वो[5] जाव[6]—

७८. अलोगे णं भंते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं फुडे ?

१. जी० ३।२ ।

२. अतोग्रे 'क, ता, म' संकेतितादर्शेषु 'पुढवी ओगाहित्ता, निरया संठाणमेव बाहल्लं । जाव किं' एवं पाठो वर्तते । शेषादर्शेषु 'बाहल्लं' इति पदस्याग्रे 'विक्खंभ-परिक्खेवो, वण्णो गंधो य फासो य जाव किं' एवं पाठोस्ति । वृत्तिकृता एका टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रपुस्तकेषु च पूर्वार्द्धमेव लिखितं, शेषाणां विवक्षितार्थानां यावच्छब्देन सूचितत्वात् । असौ गाथा जीवाभिगमस्य नारकाधिकारोद्देशकार्थसंग्रहपरा वर्तते

३. अत्र संक्षिप्तपाठः । जीवाभिगमे (३।२) पूर्णपाठः एवमस्ति—
इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कंसि निरयावासंसि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नेरइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४. प० १५।१ ।

५. अतोग्रे सर्वादर्शेषु 'संठाणं बाहल्लं पोहत्तं जाव अलोगे' इति पाठोस्ति, इह च सूत्रपुस्तकेषु द्वारत्रयमेव लिखितं, शेषास्तु तदर्था यावच्छब्देन सूचिता : (वृ) ।

६. प० १५।१ ।

गोयमा ! नो धमत्थिकाएणं फुडे जाव[1] नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकायस्स देसेणं फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे जाव[2] नो अद्धासमएणं फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणंतेहिं अगुरुलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वगासे अणंतभागूणे ।।

— ——

पंचमो उद्देसो

परिचारणा-वेद-पदं

७९. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवंति परूवेंति—

१. एवं खलु नियंठे कालगए समाणे देवब्भूएणं[3] अप्पाणेणं से णं तत्थ नो अण्णे देवे, नो अण्णेसिं देवाणं देवीओ 'आभिजुंजिय-अभिजुंजिय'[4] परियारेइ, नो अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेइ ।

२. एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।

[6]●जं समयं इत्थिवेयं वेएइ तं समयं पुरिसवेयं वेएइ ।

जं समयं पुरिसवेयं वेएइ तं समयं इत्थिवेयं वेएइ ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेयं वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेयं वेएइ ।

एवं खलु एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो वेदे वेदेइ, तं जहा°—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।।

८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च । जे ते एवमाहंसु, मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

१. प० १५।१ ।
२. प० १५।१ ।
३. प्राकृतत्वात् भकारस्य द्वित्वम् ।
४. अहियंजिय (ब) ।
५. अप्पणो ° (अ, क, ता, ब); अप्पिणिच्चियाओ (वृ); अप्पणिज्जियाओ (ठा० ३।६) ।
६. सं० पा०—एवं परउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेदं ।
७. भ० २।७६ ।

१. एवं खलु णियंठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति[1]—महिड्ढिएसु[2] •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोक्खेसु° महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु। से णं तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव[3] दस दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे[4] •पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय [illegible], नो अप्पणामेव अप्पाणं विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२. एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थिवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

जं समयं इत्थिवेदं वेदेइ नो तं समयं पुरिसवेदं वेदेइ।

जं समयं पुरिसवेदं वेदेइ, नो तं समयं इत्थिवेदं वेदेइ।

इत्थिवेदस्स उदएणं नो पुरिसवेदं वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएणं नो इत्थिवेदं वेदेइ।

एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं वेदं वेदेइ, तं जहा—इत्थीवेदं वा, पुरिसवेदं वा।

इत्थी इत्थिवेदेणं उदिण्णेणं पुरिसं पत्थेइ। पुरिसो पुरिसवेदेणं उदिण्णेणं इत्थिं पत्थेइ। दो वि ते अण्णमण्णं पत्थेंति, तं जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थिं॥

गब्भ-पदं

८१. उदगब्भे[6] णं भंते! उदगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा॥

८२. तिरिक्खजोणियगब्भे णं भंते! तिरिक्खजोणियगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठ संवच्छराइं॥

८३. मणुस्सीगब्भे णं भंते! मणुस्सीगब्भे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं॥

८४. कायभवत्थे णं भंते! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं चउवीसं संवच्छराइं॥

---

१. प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति लभ्यम् (वृ)।
२. सं० पा०—म[illegible]एसु जाव महाणुभागेसु।
३. ठा० ८।१०।
४. सं० पा०—पभासेमाणे जाव पडिरूवे।
५. अप्पणच्चियाओ (अ, क, ता, ब)।
६. उदगगब्भे (अ, ब, स); दगगब्भे (वृपा)।

८५. मणुस्स-पंचेंदियतिरिक्खजोणियबीए णं भंते ! जोणिब्भूए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ॥
८६. एगजीवे णं भंते ! एगभवग्गहणेणं केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वामागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह'[1] वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तस्स[2]
जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥
८७. एगजीवस्स णं भंते ! एगभवग्गहणेणं[3] केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं
जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति ॥
८८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—•जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! इत्थीए[5] पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नामं संजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेहं 'चिणंति, चिणित्ता'[6] तत्थ णं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए हव्वमागच्छंति। से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयसहस्सपुहत्तं जीवा णं पुत्तत्ताए° हव्वामागच्छंति ॥
८९. मेहुणण्णं[8] भंते ! सेवमाणस्स केरिसए[9] असंजमे कज्जई ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं[10] वा बूरनालियं[10] वा तत्तेणं कणएणं समभिद्धंसेज्जा, एरिसएणं गोयमा ! मेहुणं सेवमाणस्स असंजमे कज्जइ ॥
९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[11] विहरइ ॥
९१. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

तुंगियानयरी-समणोवासय-पदं

९२. तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[12] ॥
९३. तीसे णं तुंगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[13] पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[14] ॥

---

१. दोण्हं वा तिण्हं (अ, म)।
२. पुहुत्तस्स (क, स)।
३. एगजीव० (स)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव हव्व०।
५. इत्थीए य (क, ता, ब, म)।
६. संचिणंति, संचिणित्ता (म)।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव हव्व०।
८. मेहुणं (ब); मेहुणेणं (स)।
९. केरिसे (अ, ता, ब, स)।
१०. रूवनालियं (क); रूयण्णालियं (ता); रूवणालियं (म)।
११. पूर० (ता, ब)।
११. भ० १।५१।
१२. ओ० सू० १।
१३. दिसाभागे (क)।
१४. ओ० सू० २-१३।

९४. तत्थ णं तुंगियाए नयरीए बहवे समणोवासया परिवसंति—अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा बहुधण-बहुजायरूव-रयया आयोग-पयोगसंपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलयप्पभूया बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-'पावा आसव'[1]-संवर-निज्जर[2]-किरियाहिकरणबंध[3]-पमोक्खकुसला[4] असहेज्जा[5] देवासुर-नागसुवण्ण जक्खरक्खस्सकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगादिएहिं[6] देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ[7] अणतिक्कमणिज्जा, निग्गंथे पावयणे निस्संकिया निक्कंखिया निव्वितिगिच्छा[8] लद्धट्ठा[9] गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता[10] अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवंगुयदुवारा[11] 'चियत्तंतेउर-घरप्पवेसा'[12] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[13] पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणा, समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण—'खाइम-साइमेणं'[14] वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेणं'[15] पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं[16] तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

---

१. पावासव (ता) ।
२. निज्जरा (अ) ।
३. °हिगरणकुसला (अ) ।
४. प्पमोक्ख° (क, ता, म, स), मोक्ख° (ब) ।
५. असहेज्ज (अ, क, ता, ब, म, स); असाहाय्यास्ते च ते देवादयश्चेति कर्मधारयः अथवा व्यस्तमेवेदम् (वृ) ।
६. °महोरगादी° (अ, म, स) ।
७. पवयणाओ (ब) ।
८. निव्वितिगिछिया (ता) ।
९. लद्धट्ठा (ब) ।
१०. °प्पेमाणुराव° (ता) ।
११. अपंगुय° (क); अवंगुत ° (म) ।
१२. चियत्तंतेउरघर °(ता) । अतोग्रे सर्वेषु आदर्शेषु 'बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण—पोसहोववासेहिं' इति पाठो दृश्यते । वृत्तिकृतापि असौ अत्रैव व्याख्यातः, वाक्यरचनायाः सम्बन्धयोजनार्थं च 'त्रैर्युक्ता इति गम्यम्' इति उल्लिखितम् । किन्तु ओवाइय — रायपसेणइयसूत्रयोरवलोकनेन प्रतीयते असौ पाठः 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तरं युज्यते । ओवाइयसूत्रे (१२०) 'पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे' । रायपसेणइयसूत्रे (६९८) 'पडिलाभेमाणे बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे ।' अनयोः पाठयोराधारेण अत्रापि असौ पाठः 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तरं गृहीतः ।
१३. चाउद्दसि° (ता) ।
१४. खातिम-सातिमेणं (ब, स) ।
१५. × (क) ।
१६. अहापडि° (स, वृ) ।

९५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना बलसंपन्ना रूवसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दंसणसंपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा[1] जिइंदिया[2] जियपरीसहा जीवियास[3]—मरण-भयविप्पमुक्का[4] •तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खंतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बंभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अबहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा °कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा[5] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा अहाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव तुंगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छंति'[6], उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

९६. तए णं तुंगियाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[7]-महापह-पहेसु जाव[8] एगदिसाभिमुहा निज्जायंति ॥

९७. तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[9] •चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अण्णमण्णं° सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना जाव[10] अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

तं महाफलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं थेराणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए[11]? °एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! थेरे भगवंते वंदामो नमंसामो[12] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवा-सामो। एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

---

१. × (क)।
२. जितेंदिया (अ, क, ब); जितिंदिया (म)।
३. जीवियासा (अ, ता, ब, स)।
४. सं० पा०—मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया°।
५. × (अ, ब)।
६. तेणेवाग° (अ, क, ब)।
७. × (अ, क, ब, म, स)।
८. राय० सू० ६८७-६८९।
९. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव सद्दावेंति।
१०. राय० सू० ६८६।
११. सं० पा०—पज्जुवासणयाए जाव गहणयाए।
१२. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति।

यत्ताए° भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं 'वत्थाइं पवर परिहिया'[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो[2] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ[3] 'मेलायंति, मेलायित्ता'[4] पायविहार-चारेणं तुंगियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फवतिए[5] चेइए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छंति, [तं जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाणं अविओसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४. चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं][6] जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता[7] °वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ।।

९८. तए णं ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं तीसे 'महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति, तं जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं[8] ।।

९९. तए णं ते समणोवासया थेराणं भगवंताणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, 'करेत्ता एवं'[10] वयासी—संजमेणं भंते ! किंफले ? तवे[11] किंफले ?

१००. तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वयासी[12]—संजमे णं अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले ।।

१०१. तए णं ते समणोवासया थेरे भगवंते एवं वयासी—जइ णं भंते ! संजमे अणण्हयफले, तवे वोदाणफले । किंपत्तियं णं भंते ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ?

---

१. पवराइं परिहिया (क); वत्थाइं पवराइं-परिहिय त्ति क्वचिद्दश्यते, क्वचिच्च वत्थाइं पवर परिहिय त्ति (वृ) ।
२. गेहेहिंतो (म, स) ।
३. एगओ (ता) ।
४. मिलायंति २ (अ, म) ।
५. पुप्फवतीए (अ, क, ब, स) ।
६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश : प्रतीयते ।
७. सं० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।
८. महइमहालियाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेंति । जहा केसि सामिस्स, जाव समणोवासियत्ताए आणाए आराहए भवंति जाव धम्मो कहिओ (अ, म, स); महइमहालियाए जाव धम्मो कहिओ (क, ता, ब) ।
९. भ० २।४३ ।
१०. करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति २ एवं (ता, म, स); करेत्ता जाव एवं (क) ।
११. तवे णं भंते ! (म) ।
१२. वदिंसु (क) ।

१०२. तत्थ णं कालियपुत्ते नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।

तत्थ णं मेहिले नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—पुव्वसंजमेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।

तत्थ णं आणंदरक्खिए नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।

तत्थ णं कासवे नामं थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।

पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस[1] अट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।।

१०३. तए णं ते समणोवासया 'थेरेहिं भगवंतेहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा'[2] थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, पसिणाइं पुच्छंति, अट्ठाइं उवादियंति, उवादिएत्ता[3] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

१०४. 'तए णं ते थेरा अण्णया कयाइं तुंगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति[4], बहिया जणवयविहारं विहरंति'[5] ।।

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ।।

१०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जाव[7] संखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१०७. तए णं[8] भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि[9] पढमाए पोरिसीए[10] सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं[11] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे

---

१. एसे (क, ब, म) ।

२. × (क, ता, ब) ।

३. उवादिएत्ता उट्ठाए उट्ठेन्ति उट्ठेत्ता थेरे भगवंते तिक्खुत्तो वंदंति नमंसति २ थेराणं भगवंताणं अंतियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति (अ, म, स) ।

४. पडिनिक्खमंति (अ) ।

५. × (ता, ब) ।

६. भ० १।७, ८ ।

७. भ० १।६ ।

८. णं से (अ, क, ता, म, स); णं समणे (ब) ।

९. ° गंमि (ता) ।

१०. पोरुसीए (क, ता, म) ।

११. भायणाइं वत्थाइं (अ, ब, स) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगंसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

१०८. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं 'सोहेमाणे-सोहेमाणे'[1] जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ।

१०९. तए णं[2] भगवं गोयमे रायगिहे नगरे[3] °उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमु-दाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ?

तए णं ते थेरा भगवंतो ते समणोवासए एवं वयासी—संजमे णं अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले तं चेव जाव[4] पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस मट्ठे[5], नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

से कहमेयं मन्ने[6] एवं ॥

११०. तए णं[7] भगवं गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव[8] समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय[9]°मचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे°-सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं[10] °वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वदासी—एवं खलु भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे राय-

---

१. सोहेमाणे (क, ता, ब) ।
२. णं से (अ, क, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—नयरे जाव अडमाणे ।
४. भ० २।१०१, १०२ ।
५. मट्ठे समट्ठे (क); अट्ठे (ता) ।
६. भंते ! (अ, ब) ।
७. णं से (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. सं० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।
१०. सं० पा०—महावीरं जाव एवं ।

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? तं चेव जाव[1] सच्चे णं एस मट्ठे,[2] नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

तं[3] पभू णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अप्पभू ? समिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु असमिया[4] ? आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलिउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

पभू णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, नो 'चेव णं'[5] अप्पभू । °[6]समिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । आउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए । पलिउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।° सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।

अहं पि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति । कम्मियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति । संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति । पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति । सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए ।।

१. भ० २।९९-१०२ ।
२. अट्ठे (ता) ।
३. एयं (ब) ।
४. अस्समिया (क, ता, म) ।
५. × (अ, क, ब) ।
६. सं० पा०—तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समियं आउज्जियपलिउज्जिय जाव सच्चे ।

१११. तहारूवं णं भंते ! समणं वा माहणं वा पज्जुवासमाणस्स किंफला पज्जुवासणा ?
गोयमा ! सवणफला ।
से णं भंते ! सवणे किंफले ?
नाणफले ।
से णं भंते ! नाणे किंफले ?
विण्णाणफले ।
से णं भंते ! विण्णाणे किंफले ?
पच्चक्खाणफले ।
से णं भंते ! पच्चक्खाणे किंफले ?
संजमफले ।
से णं भंते ! संजमे किंफले ?
अणण्हयफले ।
से णं भंते ! अणण्हए किंफले ।
तवफले ।
से णं भंते ! तवे किंफले ?
वोदाणफले ।
से णं भंते ! वोदाणे किंफले ?
अकिरियाफले ।
सा णं भंते ! अकिरिया किंफला ?
सिद्धिपज्जवसाणफला—पण्णत्ता गोयमा !

संगहणी-गाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुंड-पदं

११२. अन्नउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति, भासंति, पण्णवेंति, परूवेंति—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ णं महं एगे हरए[1] अघे[2] पण्णत्ते—अणेगाइं जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे, सस्सिरीए[3] °पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । तत्थ णं बहवे ओराला

---

१. ° हरगे (ता) ।

२. अप्पे (अ, क, ब, म, स); क्वचित्तु हरए त्ति न दृश्यते 'अघ' इत्यस्य च स्थाने 'अप्पे' त्ति दृश्यते (वृ) ।

३. सं० पा०—सस्सिरीए जाव पडिरूवे ।

बलाहया संसेयंति संमुच्छंति वासंति । तव्वइरित्ते य णं सया समियं उसिणे-उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ ।

११३. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाइक्खंति, मिच्छं ते एवमाइक्खंति[1]। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महातवोवतीरप्पभवे नामं पासवणे पण्णत्ते—पंच धणु-सयाइं आयाम-विक्खंभेणं, नाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरि-सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ णं बहवे उसिणजोणिया[2] जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए[3] वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति[4] । तव्वइरित्ते वि य णं सया समियं उसिणे-उसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ । एस णं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे[5] पासवणे । एस णं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

११४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ ।।

छट्ठो उद्देसो

भासा-पदं

११५. से नूणं भंते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एवं भासापदं[6] भाणियव्वं ।।

सत्तमो उद्देसो

ठाण-पदं

११६. कति[7] णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया ।।

१. एवमाइक्खंति जाव सव्वं नेयव्वं (अ, स); एवमाइक्खंति जाव सव्वं नेयव्वं जाव (क, ता, म) ।

२. उसिणजोणीया (अ, ता, म, स); उसुण-जोणीया (ब) ।

३. उदत्ताए (ता) ।

४. उवचयंति (अ, ब) ।

५. महातवोतीर° (क, ता, ब, म) ।

६. प० ११ ।

७. कतिविहा (अ, ता, म) ।

११७. कहि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे[1] देवाणं वत्तव्वया सा भाणियव्वा[2]। उववाएणं[3] लोयस्स असंखेज्जइभागे एवं सव्वं भाणियव्वं, जाव[4] सिद्धगंडिया समत्ता।[5]
कप्पाण पइट्ठाणं, बाहुल्लुच्चत्त मेव संठाणं।
जीवाभिगमे जो[6] वेमाणिउद्देसो[7] सो[8] भाणियव्वो सव्वो ॥

अट्ठमो उद्देसो

चमरसभा-पदं

११८. कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[9] सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे[10] दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तिरियमसंखेज्जे[11] दीव-समुद्दे वीईवइत्ता[12] अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं[13] समुद्दं बायालीसं जोयणसयसहस्साइं[14] ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिंछिकूडे[15] नामं उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारितीसे जोयणसए कोसं च उव्वेहेणं मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्खं-भेणं, [उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खंभेणं,] मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं, दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, मज्झे एगं जोयण-सहस्सं तिण्णि य इगयाले[16] जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, उवरिं दोण्णि

---

१. प० २।
२. भाणियव्वा नवरं भवणा पण्णत्ता (अ, क, ता, ब, म, स); नवरं भवणा पण्णत्त त्ति क्वचिद् दृश्यते तस्य च फलं न सम्यगवगम्यते (वृ)।
३. उववादेणं (अ, क, ब, म)।
४. प० २।
५. सम्मत्ता (क, ब, म, स)।
६. जाव (अ)।
७. वेमाणियुद्देसो (ता, ब)।
८. × (अ, म, स)।
९. असुररण्णो (क, ता, ब)।
१०. जंबूदीवे (म)।
११. °मसंखेज्ज (ता, ब, स)।
१२. वीति ° (अ, क, ब, म)।
१३. अरुणोदं (क, म)।
१४. जोयणसहस्साइं (अ, क, ता, म, स)।
१५. तिगिच्छि° (क); तिगिच्छ° (म)।
१६. इयाले (अ)।

य जोयणसहस्साइं, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं,"[1] मूले वित्थडे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए[2] महामउंदसंठाण-संठिए सव्वरयणामए अच्छे[3] °सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समिरिईए सउज्जोए पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से णं एगाए पउमवरवेइयाए, वणसंडेण य सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसंडस्स य वण्णओ[4] ॥

११९. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं बहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—वण्णओ[5] ॥

१२०. तस्स णं बहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए पण्णत्ते—अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणुवीसं[6] जोयणसयं विक्खंभेणं। पासायवण्णओ[7]। उल्लोयभूमिवण्णओ[8]। अट्ठजोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासणं सपरिवारं[9] भाणियव्वं ॥

१२१. तस्स णं तिगिंछिकूडस्स दाहिणे णं छक्कोडिसए पणवन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पण्णासं च सहस्साइं अरुणोदए समुद्दे तिरियं वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं चमरस्स [illegible] असुरकुमाररण्णो चमरचंचा नामं रायहाणी पण्णत्ता एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबूदीवप्पमाणा।

१. उव्वेहेणं गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पमाणेणं नेयव्वं, नवरं उवरिल्लं पमाणं मज्झे भाणियव्वं जाव (क, ता, ब, वृ)। अ, म, स संकेतितादर्शेषु द्वयोवर्णयोर्मिश्रणं दृश्यते।
२. ° विग्गहे (अ, ब, स)।
३. सं० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे।
४. राय० सू० १८६-२०१।
५. राय० सू० २४-३१।
६. पण० (अ, स)।
७. राय० सू० २०४।
८. राय० सू० २४-३४; भ० वृत्ति।
९. तच्चैवम्—तस्स णं सिंहासणस्स अवरुत्तरे णं, उत्तरे णं, उत्तरपुरत्थिमे णं, एत्थ णं चमरस्स चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीणं, चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, एवं पुरत्थिमे णं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं पंच भद्दासणाइं सपरिवाराइं, दाहिणपुरत्थिमे णं अब्भितरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीणं चउव्वीसं भद्दासणसाहस्सीओ, एवं दाहिणे णं पच्चत्थिमे णं सत्तण्हं अणियाहिवईणं मज्झिमाए अट्ठावीसं भद्दासणसाहस्सीओ, दाहिणपच्चत्थिमे णं बाहिराए बत्तीसं भद्दासणसाहस्सीओ, सत्त भद्दासणाइं, चउद्दिसं आयरक्खदेवाणं चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओ (वृ)।

ओवारियलेणं सोलसजोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं, सव्वप्पमाणं वेमाणियप्पमाणस्स अद्धं नेयव्वं[1] ॥

नवमो उद्देसो

समयखेत्त-पदं

१२२. किमिदं भंते ! समयखेत्ते त्ति पवुच्चति ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा, दो य समुद्दा, एस णं एवइए समयखेत्तेति पवुच्चति ॥

१२३. तत्थ णं अयं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतरे। एवं जीवाभिगमवत्तव्वया नेयव्वा जाव[2] अब्भिंतर-पुक्खरद्धं जोइसविहूणं[3] ॥

१. एतदेव वाचनान्तरे उक्तम्—'चत्तारि परिवाडीओ पासायवडेंसगाणं अद्धद्धहीणाओ (वृ), राय० सू० २०४-२०८।

२. जी० ३।

३. वाचनान्तरे तु 'जोइसअट्ठविहूणं' ति इत्यादि बहु दृश्यते, तत्र 'जंबुद्दीवे णं भंते ! कइ चंदा पभासिसु वा ३ ? कति सूरीया तविसु वा ३ ? कइ नक्खत्ता जोइं जोइंसु वा ३ ? इत्यादिकानि प्रत्येकं ज्योतिष्कसूत्राणि, तथा—से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जंबुद्दीवे दीवे ?, गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं लवणस्स दाहिणे णं जाव तत्थ २ बहवे जंबूरुक्खा जंबूवण्णा जाव उवसोहेमाणा चिट्ठंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जंबुद्दीवे दीवे इत्यादीनि प्रत्येकमर्थसूत्राणि च सन्ति, ततश्चैतद्विहीनं यथा भवत्येवं जीवाभिगमवक्तव्यतया नेयं अस्योद्देशकस्य सूत्रं 'जाव इमा गाह' त्ति संग्रहगाथा, सा च—"अरहंत समय बायर, विज्जू थणिया बलाहगा अगणी। आगर निहि नइ उवराग निग्गमे वुड्ढिवयणं च (वृ)।

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४. कति णं भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ।।

१२५. धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ[1] °नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ।।

१२६. अधम्मत्थिकाए[2] °णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ।।

१. सं० पा०—कयाइ जाव णिच्चे ।

२. सं० पा०—अधम्मत्थिकाए एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ।

१२७. आगासत्थिकाए[1] •णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे;
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणंते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।°
गुणओ अवगाहणागुणे ।।

१२८. जीवत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे[2], •अगंधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते,—तं जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ ।
दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं जीवदव्वाइं ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे ।।

१२९. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे[5] ? •कतिगंधे ? कतिरसे° ? कतिफासे ?
गोयमा ! पंचवण्णे, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे;
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे ।

---

१. सं० पा०—आगासत्थिकाए वि एवं चेव नवरं खेत्तओ णं आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणंते चेव जाव गुणओ ।
२. सं० पा०—अवण्णे जाव अरूवी ।
३. सं० पा०—दव्वओ जाव गुणओ ।
४. सं० पा०—आसि जाव णिच्चे ।
५. सं० पा०—कतिवण्णे जाव कतिफासे ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा--दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ ।
दव्वओ णं गोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं ।
खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[1], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते ।
गुणओ गहणगुणे ।।

१३०. एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१३१. एवं दोण्णि,[2] 'तिण्णि, चत्तारि'[3] पंच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा । भंते ! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१३२. एगपदेसूणे वि य णं भंते ! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
से नूणं गोयमा ! खंडे चक्के ? सगले चक्के ?
भगवं ! नो खंडे चक्के, सगले चक्के ।
[4]•खंडे छत्ते ? सगले छत्ते ?
भगवं ! नो खंडे छत्ते, सगले छत्ते ।
खंडे चम्मे ? सगले चम्मे ?
भगवं ! नो खंडे चम्मे, सगले चम्मे ।
खंडे दंडे ? सगले दंडे ?
भगवं ! नो खंडे दंडे, सगले दंडे ।
खंडे दूसे ? सगले दूसे ?

१. सं० पा०—आसि जाव णिच्चे ।
२. दोण्णि वि (अ, स); दो (क) ।
३. तिण्णि वि चत्तारि वि (अ, स) ।
४. सं० पा०—एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोदए ।

भगवं ! नो खंडे दूसे, सगले दूसे ।
खंडे प्रायुहे ? सगले प्रायुहे[1] ?
भगवं ! नो खंडे प्रायुहे, सगले प्रायुहे ।
खंडे मोदए ? सगले मोदए[2] ?

भगवं ! नो खंडे मोदए, सगले मोदए ।° से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ।।

१३४. से किंखाइ[3] णं भंते ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! असंखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा, ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एकग्गहणगहिया—एस णं गोयमा ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया ।।

१३५. एवं अधम्मत्थिकाए वि । आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाया वि एवं चेव, नवरं—तिण्हं पि पदेसा अणंता भाणियव्वा । सेसं तं चेव ।।

जीवस्स-उवदंसण-पदं

१३६. जीवे णं भंते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे[4] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेणं जीवभावं° उवदंसेतीति वत्तव्वं सिया ।।

१३७. से केणट्ठेणं[5] °भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेतीति° वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! जीवे णं अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाण-पज्जवाणं, अणंताणं ओहिनाणपज्जवाणं, अणंताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणंताणं केवलनाणपज्जवाणं, अणंताणं मइअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं विभंगनाणपज्जवाणं, अणंताणं चक्खुदंसण-पज्जवाणं, अणंताणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाणं, अणंताणं केवलदंसणपज्जवाणं उवओगं गच्छइ । उवओगलक्खणे णं जीवे । से एएणट्ठेणं एवं वुच्चइ—गोयमा ! जीवे णं सउट्ठाणे[6] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेणं जीवभावं उवदंसेतीति° वत्तव्वं सिया ।।

१. आउहे (क, ब) ।
२. मोयए (अ, क, ब, स) ।
३. किंखाइए (ता) ।
४. सं० पा०—सउट्ठाणे जाव उवदंसेतीति ।
५. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव वत्तव्वं ।
६. सं० पा०—सउट्ठाणे जाव वत्तव्वं ।

आगास-पदं

१३८. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे[1] य अलोयागासे य ॥

१३९. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि; अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा[2], °बेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिंदियदेसा, पंचिंदियदेसा°, अणिंदियदेसा ।
जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा[3], °बेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिंदियपदेसा, पंचिंदियपदेसा°, अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।
जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा[4] ? °जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?°
गोयमा ! नो जीवा[5], °नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेस°, नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

अत्थिकाय-पदं

१४१. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१. ° कासे (क, ता, म) ।
२. सं० पा०—एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
३. सं० पा०—एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
४. सं० पा०—जीवा पुच्छा तह चेव ।
५. सं० पा०—जीवा जाव नो ।

१४२. [1]•अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ।।
१४३. लोयाकासे णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ।।
१४४. जीवत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ।।
१४५. पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ° ।।

फुसणा-पदं

१४६. अहोलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति ।।
१४७. तिरियलोए णं भंते[2] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ।।
१४८. उड्ढलोए णं भंते[3] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसति ।।
१४९. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ।।
१५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
जहा रयणप्पभा तहा घणोदहि-घणवाय-तणुवाया वि ।।
१५१. इमी से णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।
ओवासंतराइं सव्वाइं ।।

१. सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंच वि एक्काभिलावा ।
२. सं० पा०—भंते पुच्छा ।
३. सं० पा०—भंते पुच्छा ।

१५२. जहा रयणप्पभाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया[1] एवं जाव[2] अहेसत्तमाए[3] ॥ एवं सोहम्मे कप्पे जाव[4] ईसीपब्भारा पुढवी—एते सव्वे वि असंखेज्जइभागं फुसंति । सेसा पडिसेहियव्वा ।

१५३. एवं अधम्मत्थिकाए, एवं लोयाकासे वि ।

संगहणी-गाहा

पुढवोदही घण-तणू, कप्पा गेवेज्जणुत्तरा सिद्धी ।
संखेज्जइभागं अंतरेसु सेसा असंखेज्जा ॥१॥

१. भाणिया (अ, ता, ब, स) ।
२. भ० २।१४६-१५१; २।७५ ।
३. अहेसत्तमाए जंबुद्दीवाइया दीवसमुद्दा (अ, ता, म) ।
४. अ० सू० २८७ ।

तइयं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. केरिसविउव्वणा २. चमर ३. किरिय ४,५. जाणित्थि ६. नगर ७. पाला य।
८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए[1] दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे णं मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नंदणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ॥

३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'[4] सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

वेउव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूई नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव[5] पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए[6] ? केमहज्जुतीए ? केमहाबले ? केमहायसे ? केमहासोक्खे ? केमहाणुभागे ? केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए,[7] महज्जुतीए, महाबले, महायसे, महासोक्खे°, महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं,[8] चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए[9] तावत्तीसगाणं[10],

१. सदे (ता)।
२. ओ॰ सू॰ १।
३. ओ॰ सू॰ २-१३।
४. × (ता)।
५. भ॰ १।९, १०।
६. केमहड्ढीए (क, म)।
७. सं॰ पा॰—महिड्ढीए जाव महाणुभागे।
८. भवण॰ (अ, क, ता, म)।
९. तावत्तीसाए (अ, ता, ब, म, स)।
१०. सं॰ पा॰—तावत्तीसगाणं जाव विहरइ।

•चउण्हं लोगपालाणं, पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, चउसट्ठीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं चमरचंचा रायहाणिवत्थव्वाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणे° विहरइ। एमहिड्ढीए,[१] •एमहज्जुतीए, एमहाबले, एमहायसे, एमहासोक्खे,° एमहाणुभागे। एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्विय समुग्घाएणं समोहण्णइ,[२] समोहणित्ता 'संखेज्जाइं जोयणाइं'[३] दंडं[४] निसिरइ, तं जहा—रयणाणं[५] •वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं° रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायइ[६], परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति।

पभू णं गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं[७] करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा! पभू चमरे असुरिंदे असुरराया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे[८] करेत्तए।

एस णं गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे[९] विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

५. जइ णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[१०] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? जाव[११] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए?

---

१. सं० पा०—एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे।
२. समोहणइ (अ, ता, स)।
३. संखेज्जाणि जोयणाणि (अ, ब)।
४. उड्ढं दंडं (ता, म)।
५. सं० पा०—रयणाणं जाव रिट्ठाणं। अस्य-पूर्तिः—'रायपसेणइय' (१०) सूत्रेण कृता। भगवतीवृत्तौ तु एतत् पूर्त्तिरित्थमस्ति—वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोतीरसाणं अंकाणं अंजणाणं रयणाणं जायरूवाणं अंजणपुलयाणं फलिहाणं।
६. परियाति (क)।
७. अरगाढावगाढं (अ, ता, ब)।
८. अरगाढावगाढे (अ, क, ता, ब)।
९. अतमेता° (ता)।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्ढीया[1] °महज्जुतीया महाबला महायसा महासोक्खा° महाणुभागा। ते णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणियाणं, साणं-साणं अग्गमहिसीणं जाव[2] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। एमहिड्ढीया जाव[3] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[4] दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ।

पभू णं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए।

अदुत्तरं च णं गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे संथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए।

एस णं गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वंति वा विकुव्विस्संति वा।

६. जइ णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा एमहिड्ढीया जाव[5] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया[6] देवा केमहिड्ढीया[7] ?

तावत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा। लोयपाला तहेव, नवरं—संखेज्जा दीव-समुद्दा भाणियव्वा[8]।

७. जइ णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवा एमहिड्ढीया जाव[9] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्ढियाओ जाव[10] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढियाओ

१. सं० पा०—महिड्ढीया जाव महाणुभागा।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।४।
६. तायत्ती° (क)।
७. महड्ढिया (स)।
८. भाणियव्वा बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवेहि य आइन्ने जाव विकुव्विस्संति वा (अ, ब)।
९. भ० ३।४।
१०. भ० ३।४।

जाव[1] महाणुभागाओ[2]। ताओ णं तत्थ साणं-साणं भवणाणं, साणं-साणं सामाणिय-साहस्सीणं, साणं-साणं महत्तरियाणं[3], साणं-साणं परिसाणं जाव[4] एमहिड्ढीयाओ। अण्णं जहा लोगपालाणं अपरिसेसं।

८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं दोच्चे[5] गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तच्चं गोयमं वायुभूतिं अणगारं एवं वदासि—एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए तं चेव एवं सव्वं अपुट्ठवागरणं नेयव्वं अपरिसेसियं[6] जाव[7] अग्गमहिसीणं वत्तव्वया समत्ता।

९. तेणं से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[8] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु भंते! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे ममं एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[9] जाव[10] महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं तं चेव सव्वं अपरिसेसं भाणियव्वं जाव[11] अग्गमहिसीणं[12] वत्तव्वया समत्ता।

१०. से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमादि! समणे भगवं महावीरे तच्चं गोयमं वायुभूतिं अणगारं एवं वयासी—जं णं गोयमा! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए तं चेव सव्वं जाव[13] अग्गमहिसीओ। सच्चे णं एसमट्ठे। अहं पि णं गोयमा! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एवं खलु गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[14] तं चेव जाव[15] अग्गमहिसीओ। 'सच्चे णं एसमट्ठे'[16]।

१. भ० ३।४।
२. महाणुभावाओ (ता)।
३. मयहरिया° (अ, ब)।
४. भ० ३।४।
५. × (क, ता, म)।
६. अपरिसेसं (अ, क, स)।
७. भ० ३।४-७।
८. भ० १।१०।
९. एमहिड्ढीए (अ, क, ता, ब)।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४-७।
१२. अग्गमहिसीओ (अ, क, ता, ब)।
१३. भ० ३।४-७।
१४. महिड्ढीए सो चेव बितिओ गमो भाणियव्वो (अ, ब, म, स)।
१५. भ० ३।४-७।
१६. सच्चमेसे अट्ठे (अ, क, ता, ब)।

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्चं गोयमं अग्गिभूइं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ ।।

१२. 'तए णं से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चे णं गोयमेणं अग्गिभूतिणा अणगारेणं सद्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासमाणे एवं वयासी'[2]—जइ णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, बली णं भंते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

'गोयमा ! बली णं वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे । जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं भाणियव्वं, सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहि सामाणिएहि य'[6] ।।

---

१. भ० १।१० ।

२. ततेणं से दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे तच्चेणं गोतमेणं वायुभूइणा अणगारेणं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेणं गोतमेणं वायुभूतिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी (क, ता); अत्र प्रश्नकर्ता तृतीयो गोतमो वर्तते तेन प्रस्तुतवाचना समीचीना न दृश्यते ।

३. भ० ३।४ ।

४. भ० ३।४ ।

५. भ० ३।४ ।

६. गोयमा ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया महिड्ढीए, से णं तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं जाव भुंजमाणे विहरति । से जहानामए एवं जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्वं, नवरं—सातिरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं भाणियव्वं सेसं तं चेव निरवसेसं नेयव्वं, नवरं—नाणत्तं जाणियव्वं भवणेहिं सामाणिएहिं (अ); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से णं तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्हं सट्ठीणं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एवं जहा चमरस्स, नवरं—साइरेगं जंबुद्दीवं जाव एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए इमे वुइए विसए जाव विउव्विस्संति वा (क); गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से णं तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा चमरस्स, नवरं—चउण्हं सट्ठीणं आतरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च जाव भुंजमाणे विहरइ । से जहानामए एवं जहा चमरस्स, नवरं साइरेगं केवलकप्पं जंबुद्दीवं

१३. सेवं भंते ? सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे 'वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे[1] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ'[2] ॥

१४. तते णं से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जइ णं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, धरणे णं भंते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। से णं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं, छण्हं सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं, छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं, च जाव[6] विहरइ। एवतियं च णं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे जाव[7] पभू केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं जाव तिरियं संखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहिं नागकुमारीहिं जाव विकुव्विस्सति वा।

सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिसीओ य तहेव जहा[8] चमरस्स, नवरं— संखेज्जे दीव-समुद्दे भाणियव्वे ॥

१५. एवं जाव[9] थणियकुमारा, वाणमंतरा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥

१६. भंतेत्ति ! भगवं दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जइ णं भंते ! जोइसिंदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव[11] केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए ?

दीवं भाणितव्वं सेसं तहेव जाव विउव्वि-स्संति वा।
जइणं भंते ! बली वइरोयणिंदे वइरोयण-राया एवमहिड्ढीए जाव एवतियं च णं पभू विउव्वित्तए, बलिस्सणं भंते। वइरोयणस्स वइ° सामाणिया देवा केमहिड्ढीया एव सामाणिया तावत्तीसा तावत्तीसा लोगपाल-ग्गमहिसीओ य जहा चमरस्स, नवरं— सातिरेगं जंबुद्दीवं जाव एगमेगाए अग्गमहि-सीदेवीए इमे वतिए विसए जाव विउव्वि-स्संति वा (ता)।

१. सं० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ।
२. वायुभूई जाव विहरइ (अ, ब, म, स)।
३. भ० ३।१२।
४. भ० ३।१२।
५. भ० ३।४।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।४।
८. भ० ३।५-७।
९. पू० प० २।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे। से णं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं, चउरासीए[2] सामाणियसाहस्सीणं,[3] ●तायत्तीसाए तावत्तीसगाणं, चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं°, चउण्हं चउरासीणं आयरक्खसाहस्सीणं, अण्णेसिं च जाव[4] विहरइ। एमहिड्ढए जाव[5] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव[6] चमरस्स तहेव भाणियव्वं, नवरं—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव।

एस णं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते[7] बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१७. जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[8] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासि तीसए नामं अणगारे पगइभद्दए[9] ●पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं अट्ठ संवच्छराइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए[10] संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए[11] ओगाहणाए सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे।

तए णं तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं[12] गच्छइ [तं जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणुपज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए[13]]

तए णं तं तीसयं देवं पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं[14] गयं समाणं सामाणियपरिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिएहिं

१. भ० ३।४।
२. चउरासीतीए (क, ता, म)।
३. सं० पा०—सामाणियसाहस्सीणं जाव चउण्हं।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।४।
६. भ० ३।४-७।
७. विसयमेत्ते णं (म, स)।
८. भ० ३।४।
९. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
१०. मासिय (क, ब)।
११. असंखेज्जभाग° (अ, ब); असंखेज्जभागमेत्ताए (स)।
१२. पज्जत्तभावं (ता)।
१३. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांश: प्रतीयते ?
१४. पज्जत्तभावं (म, स)।

दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। जारिसिया[1] णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केण वि देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

से णं भंते। तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव[2] महाणुभागे। से णं तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं, चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं, सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईणं, सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं, अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं, देवीण य जाव[3] विहरइ। एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव[5] एस णं गोयमा! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१८. जइ णं भंते! तीसए देवे महिड्ढीए जाव[6] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? तहेव सव्वं जाव[7] एस णं गोयमा! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स[8] देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

तावत्तीसय—लोगपाल-अग्गमहिसी णं जहेव[9] चमरस्स, नवरं—दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव॥

१९. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति दोच्चे गोयमे जाव[10] विहरइ॥

२०. भंतेति! भगवं तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं[11] °महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वदासी—जइ णं भंते! सक्के देविंदे देवराया

---

१. जारिसाणं (अ, ब)।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।१६।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।१७।
८. सामाणिय (अ)।
९. भ० ३।६, ७।
१०. भ० १।५१।
११. सं० पा०—भगवं जाव एवं।

महिड्ढीए जाव[1] एवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए, ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? एवं तहेव[2], नवरं—साहिए दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तहेव।।

२१. जइ णं भंते ! ईसाणे[3] देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[4] एवतियं च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नामं अणगारे पगतिभद्दए जाव[5] विणीए अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं, पारणए आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता,[6] तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे सयंसि विमाणंसि उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे। जा तीसए वत्तव्वया[7] सच्चेव[8] अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि नवरं—सातिरेगे दो केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अवसेसं तं चेव।

एवं सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं जाव[9] एस णं गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव णं संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

२२. एवं सणंकुमारे वि,[10] नवरं—चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अदुत्तरं च णं तिरियमसंखेज्जे।

एवं[11] सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीणं[12]। असंखेज्जे दीव-समुद्दे सव्वे विकुव्वंति, सणंकुमाराओ आरद्धा[13] उवरिल्ला लोगपाला[14] सव्वे वि असंखेज्जे दीव-समुद्दे विकुव्वंति।।

---

१. भ० ३।१६।
२. भ० ३।१६।
३. तीसाणे (ता)।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।१७।
६. झोसइत्ता (अ, ब, स); झोसेत्ता (ता, म)।
७. भ० ३।१७।
८. सा० (ता)।
९. भ० ३।५-७।
१०. भ० ३।१६।
११. भ० ३।५-७।
१२. यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणामुत्पत्तिर्नास्ति तथापि याः सौधर्मोत्पन्नाः समयाधिकपल्योपमादिदशपल्योपमान्तस्थितयस्ताः सनत्कुमारदेवानां भोगाय संपद्यन्ते इति कृत्वाग्रमहिष्य इत्युक्तम् (वृ); इत्यपि संभाव्यते 'अग्गमहिसीणं' इति पाठः आदर्शेषु प्रवाहरूपेण आगतः, वृत्तिकृता संगत्यर्थं उक्तव्याख्या कृता।
१३. आरद्ध (अ)।
१४. लोगवाला (म)।

२३. एवं माहिंदे वि, नवरं—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे।
एवं बंभलोए वि, नवरं—अट्ठ केवलकप्पे।
एवं लंतए वि, नवरं—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे।
महासुक्के सोलस केवलकप्पे। सहस्सारे सातिरेगे सोलस।
एवं पाणए वि, नवरं—बत्तीसं केवलकप्पे।
एवं अच्चुए वि, नवरं—सातिरेगे बत्तीसं केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे, अण्णं तं चेव ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ जाव[1] विहरइ ॥

तामलिस्स ईसाणिंद-पदं

२५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ[2] नयरीओ नंदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3] जाव[4] परिसा पज्जुवासइ ॥

२७. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया[5] ईसाणे कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव[6] दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्ता जाव जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए।

२८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता। एवं वदासी—अहो णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[7] महाणुभागे। ईसाणस्स णं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते ? कहिं अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे ॥

२९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरीरं गते ! सरीरं अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा। तीसे णं[8] कूडागारसालाए अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं

---

१. भ० १।५१।
२. मोतातो (क, ता)।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० १९-५२।
५. देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबर वत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे (अ, म, स)।
६. राय० सू० ७-१२०।
७. भ० ३।४।
८. सं० पा०—कूडागारसालदिट्ठंतो भाणियव्वो।

पासति, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति—सरीरं गते, सरीरं अणुपविट्ठे° ।।

३०. ईसाणेणं भंते ! देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? के वा एस आसि पुव्वभवे ? किंनामए वा ? किंगोत्ते वा ? कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा जाव[1] सण्णिवेसंसि वा[2] ? किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म ? जं णं ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

३१. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती[3] नामं नयरी होत्था—वण्णओ[4] ।।

३२. तत्थ णं तामलित्तीए नयरीए तामली नामं मोरियपुत्ते गाहावई होत्था—अड्ढे दित्ते जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ।।

३३. तए णं तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं[7] सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं[8] •सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं° कडाणं कम्माणं 'एगंतसो खयं'[9] उवेहमाणे विहरामि ?

तं जावताव[10] अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-संबंधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[11] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

---

१. भ० १।४६।
२. वा किं वा सोच्चा (क)।
३. तामलत्ती (म)।
४. ओ० सू० १।
५. भ० २।६४।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. सुपरि° (अ, म); सुप्पर° (क, ता, स); सुप्परि° (ब)।
८. सं० पा०—सुचिण्णाण जाव कडाणं।
९. °सोक्खयं (अ, क, ब, म, स)।
१०. जाव (ब)।
११. भ० २।६६।

जलंते सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं[1] करेत्ता विउलं 'असण-पाण-खाइम-साइमं'[2] उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण[3],-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[4] वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे[5] ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुंडे भवित्ता पाणामाए[6] पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ 'पगिज्भिय-पगिज्भिय'[7] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि[8] आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्भिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदणं पडिग्गाहेत्ता तं तिसत्तक्खुत्तो उदएणं[9] पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेय दारुमयं पडिग्गहगं करेइ, करेत्ता विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे[11] भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं[12] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं सद्धिं तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए तं मित्त[13]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-°परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ[14]-•नियग-सयण-संबंधि° परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेइ, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

१. पडिग्गहयं (अ, म, स)।
२. असणं पाणं खाइमं साइमं (अ, स)।
३. × (क, ता, ब, म, स)।
४. खातिमसातिमेणं (ब, म)।
५. कुडुंबे (ता)।
६. पाणायामाए (व)।
७. पगज्भिय २ (म)।
८. पारणंसि (म)।
९. दएणं (ता, म)।
१०. भ० २।६६।
११. अप्पमहग्घालंकारभूसितसरीरे (ता)।
१२. तए णं (अ, ता, ब, म, स)।
१३. सं० पा०—मित्त जाव परियणं।
१४. सं० पा०—नाइ जाव परियणस्स।
१५. सं० पा०—नाइ जाव परियणं।

संबंधि-°परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मुंडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं[1] अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य णं पारणयंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ[2], पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमयं पडिग्गहगं गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडित्ता सुद्धोयणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहारं आहारेइ॥

३४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—पाणामा पव्वज्जा?
गोयमा! पाणामाए णं पव्वज्जाए पव्वइए समाणे जं जत्थ पासइ—इंदं वा खंदं वा रुद्दं वा सिवं वा वेसमणं वा अज्जं वा कोट्टकिरियं[3] वा रायं वा[4] °ईसरं वा तलवरं वा माडंबियं वा कोडुंबियं वा इब्भं वा सेट्ठिं सेणावइं वा° सत्थवाहं[5] वा कागं वा साणं वा पाणं[6] वा—उच्चं पासइ उच्चं पणामं करेइ, नीयं पासइ नीयं पणामं करेइ, जं जहा पासइ तस्स तहा पणामं करेइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा॥

३५. तए णं से तामली मोरियपुत्ते तेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे[7] °निम्मंसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसंतए जाए यावि होत्था।

३६. तए णं तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[8] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं[9] °पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएणं° उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[10] धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा[11] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं

१. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); 'उवंगा' (३।४२) सूत्रे सोमिलस्य प्रव्रज्याप्रसंगे एतत् पदं नास्ति। अत्रापि तथैव युक्तमस्ति।
२. पच्चोरुहइ (अ, ब)।
३. ° इरियं (ता)।
४. सं० पा०—रायं वा जाव सत्थवाहं।
५. सत्थाहं (ता)।
६. पाणगं (अ)।
७. भुक्खे (अ, क, व, स), सं० पा०—लुक्खे जाव धमणि०।
८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
९. सं० पा०—विपुलेणं जाव उदग्गेणं।
१०. भ० ३।३५।
११. × (अ); ता (ता); इ (ब)।

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य[1] परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पादुग[2]-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता[3] संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते[4] °तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मंडलं आलिहइ, आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए° भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ॥

३७. तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८. तए णं ते बलिचंचा रायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, अयं च णं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे[5] नियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्पं पकरावेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिंदे[6] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता जाव[7] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए 'उद्धयाए दिव्वाए'[8] देवगईए तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं 'वीईवयमाणा-वीईवयमाणा'[9]

---

१. य पच्छासंगतिए य (अ, म) ।
२. पाउग (अ, क, ब, म) ।
३. आलिभित्ता (ता) ।
४. सं० पा०—जलंते जाव आपुच्छइ २ तामलित्तीए एगंते एडेइ जाव भत्त° ।
५. दिसाभाए (क, ता) ।
६. रुयगिंदे (अ, ब); रुयइंदे (क, ता, म) ।
७. राय० सू० १० ।
८. दिव्वाए उद्धुयाए (अ, क, ता, ब, स, वृ) ।
९. एते पदे 'रायपसेणइय'(१०)सूत्रात् पूरिते ।

जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तामलिस्स वालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसिं ठिच्चा दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेंति, उवदंसेत्ता तामलिं बालतवस्सिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति[1], करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचंचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पियं वंदामो नमंसामो[2] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो। अम्हण्णं[3] देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह[4] परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे कालं किच्चा बलिचंचाए[5] रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए णं तुब्भे अम्हं इंदा भविस्सह, तए णं तुब्भे अम्हेहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरिस्सह ।।

३९. तए णं से तामली वालतवस्सी तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुर-कुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ[6], तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

४०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं मोरियपुत्तं दोच्चं पि तच्चं पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति जाव[7] अम्हं च णं देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा[8] •अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिआ इंदाहीणकज्जा, तं तुब्भे णं देवाणु-प्पिया ! बलिचंचं रायहाणिं आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठं बंधह, निदाणं पकरेह°, ठितिपकप्पं पकरेह जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे[9] •एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणेइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

४१. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे कप्पे अणिंदे अपुरोहिए या वि होत्था ।।

१. पकरेंति (अ, ता)।
२. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जवासामो।
३. अम्हाणं (म, स)।
४. आढह (अ, स)।
५. बलिचंचा (म, ब, म, स)।
६. परियाणइ (अ, क, ता, म); परियाणाइ (ब)।
७. भ० ३।३८।
८. सं० पा०—अणिंदा जाव ठिति०।
९. सं० पा०—समाणे जाव तुसिणीए।

४३. तए णं से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं सट्ठिं वाससहस्साइं परियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसित्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेदित्ता कालकासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए[1] अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहियकालसमयंसि ईसाणदेविंदत्ताए[2] उववण्णे ।।

४४. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[3] भासा-मणपज्जत्तीए][4] ।।

४५. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं कालगतं जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविंदत्ताए उववण्णं पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[5] जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छंति, वामे पाए[6] सुंबेण[7] बंधंति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहंति[8], तामलित्तीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ढ-विकड्ढिं'[9] करेमाणा, महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयासि—केस[10] णं भो ! से तामली बालतवस्सी सयंगहियलिंगे[11] पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस णं से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविंदे देवराया ?—ति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलंति[12] निंदंति खिंसंति गरहंति अवमण्णंति तज्जेंति तालेंति परिवहेंति पव्वहेंति, आकड्ढ-विकड्ढिं करेंति, हीलेत्ता[13] °निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता° आकड्ढ-विकड्ढिं करेत्ता एगंते एडंति, एडिता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

४६. तए णं ते[14] ईसाणकप्पवासी[15] बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरयं हीलिज्जमाणं [illegible]ाणं[16] °खिंसिज्जमाणं गरहिज्जमाणं अवमण्णिज्जमाणं तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाणं परिवहिज्जमाणं पव्वहिज्जमाणं° आकड्ढ-

१. ° दूसंतरियंसि (अ); ° दूसंतरिये (ब) ।
२. ईसाणे ° (अ, ता) ।
३. भ० ३।१७ ।
४. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
५. भ० ३।३८ ।
६. पायंसि (क) ।
७. सुंदेणं (अ) ।
८. उट्ठुहंति (अ, ब, म, स) ।
९. आकट्ट-विकट्टिं (क, व, म, स) ।
१०. से के (अ, ब) ।
११. सइंगिहिय ° (क, ता, ब) ।
१२. हीलयंति (ता) ।
१३. सं० पा०—हिलेत्ता जाव आकड्ढ ।
१४. × (अ, ब) ।
१५. ईसाणंमि (ब) ।
१६. सं० पा०—निंदिज्जमाणं जाव आकड्ढ ।

विकड्ढि कीरमाणं पासंति, पासित्ता आसुरुत्ता[1] जाव[2] मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इंदत्ताए उववण्णं पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगंते एडेंति, एडेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।।

४७. तए णं ईसाणे देविंदे देवराया तेसिं ईसाणकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[3] मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु बलिचंचारायहाणिं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोएइ ।।

४८. तए णं सा बलिचंचा रायहाणी ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा अहे सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइया समाणी तेणं दिव्वप्पभावेणं इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था ।।

४९. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तं बलिचंचं[4] रायहाणिं इंगालब्भूयं जाव[5] समजोइब्भूयं पासंति, पासित्ता भीआ तत्था[6] तसिआ[7] उव्विग्गा संजायभया सव्वओ समंता आधावेंति परिधावेंति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा—समतुरंगेमाणा चिट्ठंति ।।

५०. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं परिकुवियं जाणित्ता ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुइं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणा सव्वे सपक्खिं सपडिदिसं ठिच्चा करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—अहो ! णं देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी[8] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी[9] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे° लद्धे पत्ते अभिसमण्णामाए, तं खामेमो णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं

१. आसुरत्ता (ब, म) ।
२. भ० ३।४५ ।
३. भ० ३।४५ ।
४. बलिचंचा (अ, क, ब, म, स) ।
५. भ० ३।४८ ।
६. उत्तत्था (ता, स) ।
७. तेसिया (ब); तुसिया (स); हस्तलिखितवृत्तौ क्वचित्तसियत्ति त्रुषितानंदरसाः, क्वचिच्च 'तुसियत्ति' त्रुषितानंदरसा इति लभ्यते ।
८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. सं० पा०—देविड्ढी जाव लद्धे ।

देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[1] णं देवाणुप्पिया ! णाइ[2] भुज्जो[3] एवं करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति ।।

५१. तए णं से ईसाणे देविंदे देवराया तेहिं बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे तं दिव्वं देविड्ढि जाव[4] तेयलेस्सं पडिसाहरइ । तप्पभिति च णं गोयमा ! ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया[5] बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाणं देविंदं देवरायं आढंति[6] •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं° पज्जुवासंति, ईसाणस्स य देविंदस्स देवरण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

एवं खलु गोयमा ! ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[7] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ।।

५२. ईसाणस्स भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवतियं[8] कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

५३. ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता° कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[10] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ।।

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चतरा चेव ईसिं उन्नयतरा[11] चेव ? ईसाणस्स वा देविंदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीयतरा चेव ईसिं निण्णतरा चेव ?
हंता गोयमा ! सक्कस्स तं चेव सव्वं नेयव्वं ।।

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—

१. खंतुमरिहंतु (अ, ब); खमंतुमरिहंतु (ता, स) ।
२. णाइं (ता, स) ।
३. भुज्जो-भुज्जो (अ, क, स) ।
४. भ० ३।५० ।
५. ° वत्थव्वा (अ, ता, ब, म, स) ।
६. आढायंति (क, ता); सं० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति ।
७. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
८. केवइ (ता) ।
९. सं० पा०—आउक्खएणं जाव कहिं ।
१०. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
११. उन्नयरा (अ, ता, ब, ब, स) ।

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए। देसे णीए, देसे निण्णे। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जाव[1] ईसिं निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५७. से भंते ! किं आढामाणे[2] पभू ? अणाढामाणे[3] पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवित्तए ?
हंता पभू ॥

५९. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६०. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणं देविंदं देवरायं सपक्खिं[4] सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
[5]°हंता पभू ॥

६१. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्कं देविंदं देवरायं सपक्खिं सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
हंता पभू ॥

६३. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६४. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेणं देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६५. [6]°से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

१. भ० ३।५४ ।
२. आढामीणे (अ, क, ता, ब, म); आढायमाणे (स)।
३. अणाढामीणे (अ, क, ता, ब, म); अणाढायमाणे (स)।
४. सपक्खं (क, ता)।
५. सं० पा०—जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा।
६. सं० पा०—जहा पादुब्भवा।

६६. पभू णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा सद्धिं आलावं वा संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ।।

६७. से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ।।

६८. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति[1] ?
हंता अत्थि ।।

६९. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे वा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति इति भो ! सक्का ! देविंदा ! देवराया ! दाहिणड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! ईसाणा ! देविंदा ! देवराया ! उत्तरड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! इति भो ! त्ति ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ।।

७०. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ?
हंता अत्थि ।।

७१. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति । तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

सणंकुमार-पदं

७२. सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए[2] ? दुल्लभबोहिए[2] ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए[3], नो अभवसिद्धिए । [4]°सम्म-

१. × (अ, ब, क) ।
२. ° बोहीए (अ, ब, स) ।
३. भवसिद्धीए (ता) ।
४. सं० पा०—एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्वं ।

दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे° ॥

७३. से केणट्ठेणं भंते !

गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेयसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए[1], °नो अभवसिदिए। सम्मद्दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे°, नो अचरिमे ॥

७४. सणंकुमारस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पण्णत्ता ॥

७५. से णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[2] °भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ° ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[3] °बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ![4]

संगहणी-गाहा

छट्ठट्ठममासो, अद्धमासो वासाइं अट्ठ छम्मासा।
तीसग-कुरुदत्ताणं, तव-भत्तपरिण्ण-परियाओ ॥१॥
उच्चत्त विमाणाणं, पाउब्भव पेच्छणा य संलावे।
किच्च विवादुप्पत्ती, सणंकुमारे य भवियत्तं[5] ॥२॥

१. सं० पा०—भवसिद्धिए जाव नो।
२. सं० पा०—आउक्खएणं जाव कहिं।
३. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
४. भ० १।५१।
५. भवियव्वं (ता); अतोग्रे सर्वेष्वादर्शेषु 'मोया सम्मत्ता' इति पाठोस्ति, वृत्तिकृतापि व्याख्यातोसौ, किन्तु मोया-प्रकरणं तामलि-तापसप्रकरणात् पूर्वमेव समाप्तम्, तेन नावश्यकोसौपाठः।

बीओ उद्देसो

७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ।।

७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि, चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[2] नट्टविहिं उवदंसेत्ता जामेव दिसिं[3] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

७९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

८०. एवं जाव[4] अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव[5] अत्थि णं भंते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

८१. से कहिं खाइ णं भंते ! असुरकुमारा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीतुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए[6] एवं असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव[7] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ।।

८२. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए ?
हंता अत्थि ।।

८३. केवतियण्णं[8] भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ? जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्चं पुण पुढविं गया य गमिस्संति य ।।

८४. किंपत्तियण्णं[9] भंते ! असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसंगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए—एवं खलु असुरकुमारा देवा तच्चं पुढविं गया य गमिस्संति य ।।

८५. अत्थि णं भंते ? असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ?
हंता अत्थि ।।

८६. केवतियण्णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं तिरियं गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जाव असंखेज्जा दीव-समुद्दा, नंदिस्सरवरं पुण दीवं गया य गमिस्संति य ।।

८७. किंपत्तियण्णं भंते ! असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गया य गमिस्संति य ?

---

१. ओ० सू० १६-५२ ।
२. राय० सू० ७-१२० ।
३. दिसं (ता, ब, म, स) ।
४. अ० सू० २८७ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. असीउत्तर० (अ, ब, म, स) ।
७. प० २ ।
८. केवतियं णं (स) ।
९. किंपत्तिय णं (अ, ता, ब, म) ।

गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो[1], एएसि णं जम्मणमहेसु वा, निक्खमणमहेसु वा, नाणुप्पायमहिमासु[2] वा, परिनिव्वाणमहिमासु वा—एवं खलु असुरकुमारा देवा नंदिस्सरवरं दीवं गया य गमिस्संति य ।।

८८. अत्थि णं भंते असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसिए ?
हंता अत्थि ।।

८९. केवतियण्णं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं उड्ढं गतिविसए ?
गोयमा ! 'जाव अच्चुतो'[3] कप्पो, सोहम्मं पुण कप्पं गया य गमिस्संति य ।।

९०. किंपत्तियण्णं भंते ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! तेसि णं देवाणं भवपच्चइए[4] वेराणुबंधे, ते णं देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेंति[5] अहालहुसगाइं रयणाइं गहाय आया[।] एगंतमंतं अवक्कमंति ।।

९१. अत्थि णं भंते ! तेसि देवाणं अहालहुसगाइं रयणाइं ?
हंता अत्थि ।।

९२. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
तओ से पच्छा कायं पव्वहंति ।।

९३. पभू णं भंते ! असुरकुमारा देवा तत्थ गया चेव[6] समाणा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे । ते णं ततो पडिनियत्तंति, ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छंति[7] । जइ णं ताओ अच्छराओ आढायंति परियाणंति, पभू णं ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए । अह णं ताओ अच्छराओ नो आढंति,[8] नो परियाणंति, नो णं पभू ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरित्तए । एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्मं कप्पं गया य गमिस्संति य ।।

९४. केवइयकालस्स[9] णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मं कप्पं गया य गमिस्संति य ?
गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहिं, अणंताहि उस्सप्पिणीहिं'[10] समतिक्कंताहिं

१. भगवंता (क, ब, स) ।
२. नाणुप्पत्ति ° (क) ।
३. जावच्चुए (अ. ता, ब, म, स) ।
४. °पच्चइय (अ, ब, म, स) ।
५. तासेंति २ (ता) ।
६. च्चेव (ता) ।
७. इह समागच्छंति (अ, ब) ।
८. आढायंति (क, ता, म, स) ।
९. केवइकालस्स (अ, क, ब, म, स) ।
१०. उस्सप्पिणीहिं अणंताहिं अवसप्पिणीहिं (अ, ब, स) ।

अत्थि णं एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९५. किं निस्साए णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! से जहानामए इहं सबरा[1] इ वा बब्बरा इ वा टंकणा[2] इ वा चुचुया[3] इ वा पल्हा[4] इ वा पुलिंदा इ वा एगं महं 'रण्णं वा'[5] गड्ढं वा दुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वयं वा नीसाए सुमहल्लमवि आसबलं वा हत्थिबलं वा जोहबलं वा धणुबलं वा आगलेंति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा नण्णत्थ[6] अरहंते वा अरहंतचेतियाणि वा अणगारे वा भाविअप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९६. सव्वे वि णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । महिड्ढिया णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९७. एस वि य णं भंते । चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ?
हंता गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ॥

९८. अहो णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुईए[7] •जाव[8] महाणुभागे । चमरस्स णं भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते° ? कहिं अणुपविट्ठे ?
कूडागारसालादिट्ठंतो[9] भाणियव्वो[10] ॥

९९. चमरेणं भंते ! असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी •[11]दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे° किण्णा लद्धे ? पत्ते ? अभिसमण्णागए ?

१००. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले वेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[12] ॥

१. सब्बरा (अ, ब) ।
२. ढंकणा (क) ।
३. भुंभुया (अ); चूचुया (अ); (क, ब); भुत्तुया (स) ।
४. पण्हाया (अ); पण्हवा (क, ता); पण्हा (ब, स) ।
५. × (अ, क, ब, म) ।
६. × (म, ता, ब) ।
७. सं० पा०—महज्जुईए जाव कहिं ।
८. भ० ३।४ ।
९. ° सालदिट्ठंतो (क, ता, ब, म) ।
१०. भ० ३।२६ ।
११. सं० पा०—तं चेव ।
१२. ओ० सू० १; एतद्वर्णने 'नंदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेव ग्राह्यम् ।

१०१. तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे पूरणे नामं गाहावई परिवसइ—अड्ढे दित्ते[1] •जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए या वि होत्था ॥

१०२. तए णं तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुटुंबजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि, सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जेणं अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसो खयं उवेहमाणे विहरामि ?

तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जावं च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-संबंधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं विणएणं चेइयं पज्जुवासइ, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं करेत्ता, विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं, वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुटुंबे ठावेत्ता, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता°, सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं गहाय मुंडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाणे[4] •इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणंसि° आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहगं गहाय बेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडित्ता जं मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं पंथे पहियाणं दलइत्तए।

१. सं० पा०—जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवरं चउप्पुडयं दारुमयं पडिग्गहयं करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइमसाइमं जाव सयमेव।

२. भ० २।६४।

३. भ० २।६६।

४. सं० पा०—तं चेव जाव आयावण°।

'जं मे' दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं काग-सुणयाणं[1] दलइत्तए। 'जं मे'[2] तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं मच्छ-कच्छभाणं दलइत्तए। जं मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे तं अप्पणा आहारं आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए तं चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहारं आहारेइ ॥

१०३. तए णं से पूरणे बालतवस्सी तेणं ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बालतवोकम्मेणं[3] °सुक्के लुक्खे निम्मंसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था ॥

१०४. तए णं तस्स पूरणस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अणिच्चजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं विपुलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेणं उदत्तेणं उत्तमेणं महाणुभागेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[4] धमणिसंतए जाए, तं अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता, पादुग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं चउप्पुडयं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडित्ता, बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते बेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडेइ, एडेत्ता बेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ॥

१०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणु-

१. सुणकाणं (क, ता); सुणगाणं (म)।
२. जम्मे (ता)।
३. सं० पा०—तं चेव जाव बेभेलस्स।
४. भ० ३।३५।
५. भ० २।६६।

पुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोय-संडे[1] उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हामि,[2] दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसणयणे ईसिपब्भारगएणं[3] काएणं, अहापणिहिएहिं गत्तेहिं, सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जेत्ता णं विहरामि ॥

१०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

१०७. तए णं से पूरणे बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइं दुवालसवासाइं परियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव[4] इंदत्ताए उववण्णे ॥

१०८. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववण्णे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति-भावं[5] गच्छइ, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भास-मणपज्जत्तीए[7]] ॥

१०९. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गए समाणे उड्ढं वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव[6] सोहम्मो कप्पो, पासइ य तत्थ—

सक्कं देविंदं देवरायं, मघवं पाकसासणं।
सयक्कतुं[8] सहस्सक्खं, वज्जपाणिं पुरंदरं[9] ॥

दाहिणड्ढलोगाहिवइं बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवइं एरावणवाहणं सुरिंदं अरयंबरवत्थधरं आलइयमालमउडं नव-हेम-चारुचित्त-चंचल-कुंडल-विलिहिज्ज-माणगंडं भासुरबोंदिं पलंबवणमालं दिव्वेणं वण्णेणं जाव[10] दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि जाव[11] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे[12] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—केस णं एस अपत्थियपत्थए[13] दुरंतपंतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे

१. असोयवणसंडे (क, म, स)।
२. परिगिण्हामि (स)।
३. ईसिं° (क, स)।
४. भ० ३।४३।
५. पज्जत्तभावं (ब)।
६. भ० ३।१७।
७. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
८. सयक्कउं (क, ता)।
९. सं० पा०—पुरंदरं जाव दस।
१०. उवा० २।४०।
११. उवा० २।४०; भ० ३।१६।
१२. इमे एया° (क, ब)।
१३. °पत्थिए (ब, म, स)।

जं णं ममं इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए[1] •दिव्वाए देवज्जुतीए° 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[2] उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—केस णं एस देवाणुप्पिया ! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ?

११०. तए णं ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[3]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! सक्के देविंदे देवराया जाव[4] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ॥

१११. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एवं वयासी—अण्णे खलु भो ! से सक्के देविंदे देवराया, अण्णे खलु भो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो ! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो ! से चमरे असुरिंदे असुरराया, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए[6] त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था ॥

११२. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ[7], पउंजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ[8], आभोएत्ता[9] इमेयारूवे अज्झत्थिए[10]•चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे°समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबूदीवे दीवे भारहे वासे सुंसुमारपुरे[11] नयरे असोगसंडे[12] उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं णीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सयणिज्जाओ[13] अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूसं परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

---

१. सं० पा०—देवड्ढीए जाव दिव्वे ।
२. एतान्यपि अत्र सप्तम्यन्तानि पदानि विद्यन्ते ।
३. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
४. भ० ३।१०६ ।
५. आसुरत्ते (अ, ब) ।
६. अच्चासादेत्तए (अ, ता, ब, स) ।
७. पयुंजइ (ता) ।
८. आलोएइ (ब) ।
९. अतोग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहार्यम् ।
१०. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
११. सुसमारपुरे (स) ।
१२. ° वणसंडे (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१३. सत्तणिज्जाओ (ता) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयणं परामुसइ, एगे अबीए[1] फलिहर-यणमायाए महया अमरिसं वहमाणे चमरचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं-णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव तिगिंछिकूडे[2] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जाव[3] उत्तरवेउ-व्वियं[4] रूवं विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरियं असंखे-ज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव सुंसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसंडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[5], •करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भं नीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमेइ, अवक्कमेत्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णति, समोह-णित्ता जाव[6] दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ[7] एगं महं घोरं घोरा-गारं भीमं भीमागारं भासुरं[8] भयाणीयं गंभीरं उत्तासणयं कालड्ढरत्त-मास-रासिसंकासं[9] जोयणसयसाहस्सीयं[10] महाबोंदिं विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ[11] वग्गइ[12] गज्जइ, हयहेसियं करेइ, हत्थिगुलगुलाइयं करेइ, रहघणघणाइयं करेइ, पायदद्दरगं करेइ, भूमिचवेडयं दलयइ, सीहणादं नदइ, उच्छोलेइ पच्छोलेइ, तिवतिं[13] छिंदइ, वामं भुयं ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए अंगुट्ठणहेण य वितिरिच्छं मुहं विडंवेइ, महया-महया सद्देण कलकलरवं करेइ एगे अवीए[14] फलिहरयणमायाए उड्ढं वेहासं उप्पइए—खोभंते चेव[15] अहेलोयं कंपेमाणे व[16] मेइणीतलं[17] साकड्ढंते[18] व तिरियलोयं, फोडेमाणे व अंबरतलं,

१. अवितिए (क, ता)।
२. तिगिच्छि (ता, म); तिगिच्छ (ब)।
३. राय० सू० १०।
४. °वेउव्वियरूवं (म)।
५. सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता।
६. राय० सू० १०।
७. समोहणइ (अ, स)।
८. भासरं (क, ता)।
९. भासरासि° (अ)।
१०. जोतण° (ता)।
११. बहुलासु प्रतिपु क्रियानन्तरं सर्वत्र क्त्वा-प्रत्ययस्य प्रयोगा दृश्यन्ते, यथा—अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता।
१२. × (क, ता, ब, म)।
१३. तिपतिं (ता)।
१४. अव्वितिए (क, ता, ब)।
१५. च्चेव (ता)।
१६. तिव (ता); वा (ब, म)।
१७. मेयणि° (अ); मेतिणी° (क, म); मेदिणी° (ता)।
१८. आकड्ढंते (अ, म, स); आसाकड्ढंते (ब)।

कत्थइ गज्जंते, कत्थइ विज्जुयायंते, कत्थइ वासं वासमाणे[1], कत्थइ रयुग्घायं पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्कायं पकरेमाणे, वाणमंतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे[2], जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे[3], फलिहरयणं अंबरतलंसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे[4] ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेंसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एगं पायं पउमवरवेइयाए करेइ, एगं पायं सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेणं महया-महया सद्देणं तिक्खुत्तो इंदकीलं आउडेइ, आउडेत्ता एवं वयासी—कहि णं भो[6] ! सक्के देविंदे देवराया ? कहि णं ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ[7] ? •कहि णं ते तायत्तीसयतावत्तीसगा ? कहि णं ते चत्तारि लोगपाला ? कहि णं ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ ? कहि णं ताओ तिण्णि परिसाओ ? कहि णं ते सत्त अणिया ? कहि णं ते सत्त अणियाहिवई ?° कहि णं ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? कहि णं ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज ममं अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमंतु त्ति कट्टु तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं अमणामं फरुसं गिरं निसिरइ।

११३. तए णं से सक्के देविंदे देवराया तं अणिट्ठं[8] •अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं° अमणामं अस्सुयपुव्वं फरुसं गिरं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—हं भो ! चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! अपत्थियपत्थया[10] ! •दुरंतपंतलक्खणा ! हिरिसिरिपरिवज्जिया !° हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि[11] ते सुहमत्थीति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्जं परामुसइ, परामुसित्ता तं जलंतं फुडंतं तडतडंतं[12] उक्कासहस्साइं विणि-

---

१. वासेमाणे (अ, क)।
२. वित्तासमाणे (अ)।
३. विपलासमाणे (अ)।
४. विउब्भासेमाणे (ता)।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरिय०।
६. से (क)।
७. सं० पा०—°सामाणियसाहस्सीओ जाव कहि।
८. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणामं।
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे।
१०. सं० पा०—अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°
११. नहि (ब)।
१२. तडवडंतं (ता); तडातडंतं (ब)।

म्मुयमाणं-विणिम्मुयमाणं, जालासहस्साइं पमुंचमाणं-पमुंचमाणं, इंगालसहस्साइं पविक्खिरमाणं-पविक्खिरमाणं, फुलिंगजालामालासहस्सेहिं चक्खुविक्खेवदिट्ठिपडिघातं पि पकरेमाणं हुयवहअइरेगतेयदिप्पंतं जइणवेगं फुल्लकिंसुयसमाणं महब्भयं भयंकरं चमरस्स असुरिंदस्स असुरण्णो वहाए वज्जं निसिरइ ॥

११४. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तं जलंतं जाव[1] भयंकरं वज्जमभिमुहं आवयमाणं पासइ, पासित्ता झियाइ पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहाइत्ता तहेव संभग्गमउडविडवे[2] सालंबहत्थाभरणे उड्ढंपाए अहोसिरे कक्खागयसेयं पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव[3] तिरियमसंखेज्जाणं दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जंबूदीवे दीवे जाव[4] जेणेव असोगवरपायवे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगवं सरणं' इति वुयमाणे ममं दोण्ह वि पायाणं अंतरंसि झत्ति वेगेणं समोवडिए[5] ॥

११५. तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते[7] वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु ओहिं पउंजइ, ममं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[8] दिव्वाए देवगईए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसंखेज्जा° दीव-समुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जाव[9] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरइ, अवियाइं मे गोयमा ! मुट्ठिवाएणं केसग्गे वीइत्था ॥

११६. तए णं से सक्के देविंदे देवराया वज्जं पडिसाहरित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासि—एवं खलु भंते ! अहं तुब्भं नीसाए चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए। तए णं मए परिकुविएणं समाणेणं चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए

---

१. भ० ३।११२ ।
२. °विडए (अ, क); °पिडए (ब) ।
३. भ० ३।११२ ।
४. भ० ३।११२ ।
५. समोवइए (ता) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. अरहंतं (क); अरहंता (ता) ।
८. भ० ३।११२ ।
९. भ० ३।११२ ।

वज्जे निसट्ठे[1]। तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया[3], •नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहंते वा, अरहंतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढं उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, तं महादुक्खं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु॰ ओहिं पउंजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमंसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[4] जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाणं चउरंगुलमसंपत्तं वज्जं पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए णं इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति[5] णं देवाणुप्पिया ! नाइ[6] भुज्जो एवं करणयाए[7] त्ति कट्टु ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, वामेणं पादेणं तिक्खुत्तो भूमिं विदलेइ[8], विदलेत्ता चमरं असुरिंदं असुररायं एवं वदासि—मुक्को सि णं भो चमरा ! असुरिंदा ! असुरराया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेणं—नाहिं[9] ते[10] दाणिं[11] ममातो[12] भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं[13] पडिगए ॥

११७. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[14] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेवं अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए ?

हंता पभू ॥

११८. से केणट्ठेणं[15] •भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढीए जाव[16] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गलं खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं॰ गेण्हित्तए ?

गोयमा ! पोग्गले णं खित्ते[17] समाणे पुव्वामेव सिग्घगई[18] भवित्ता ततो पच्छा

---

१. निसिट्ठे (अ, स)।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. सं० पा०—तहेव जाव ओहिं।
४. भ० ३।११५।
५. ॰मरुहंतु (अ, स)।
६. नाइं (ता, ब)।
७. पकरणयाए (वृ, स)।
८. दालेइ (अ, क, ब, स), दलइ (म)।
९. णाहिं (अ, क, ता); नहि (ब)।
१०. भे (ब)।
११. इदाणिं (क, म)।
१२. ममतो (अ, क)।
१३. दिसं (ता, ब, म)।
१४. भ० ३।४।
१५. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव गेण्हित्तए।
१६. भ० ३।४।
१७. खित्ते णं (अ); विखित्ते (स)।
१८. सिग्घागई (ब)।

मंदगती भवति, देवे णं महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्विं पि पच्छा वि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव। से तेणट्ठेणं जाव पभू गेण्हित्तए ॥

११९. जइ णं भंते! देवे[1] महिड्ढीए जाव[2] पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता णं गेण्हित्तए, कम्हा णं भंते! 'सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा'[3] चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए[4] साहित्थं गेण्हित्तए ?

गोयमा! असुरकुमाराणं देवाणं अहे गइविसए 'सीहे-सीहे'[5] चेव तुरिए-तुरिए चेव, उड्ढं गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मंदे-मंदे चेव। वेमाणियाणं देवाणं उड्ढं गइविसए सीहे-सीहे चेव। तुरिए-तुरिए चेव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मंदे-मंदे चेव।

जावतियं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तं वज्जे दोहिं, जं वज्जे दोहिं, तं चमरे तिहिं। सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकंडए, अहेलोयकंडए[6] संखेज्जगुणे।

जावतियं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं, तं सक्के दोहिं, जं सक्के दोहिं, तं वज्जे तीहिं। सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अहेलोयकंडए, उड्ढलोयकंडए संखेज्जगुणे।

एवं खलु गोयमा! सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा चमरे असुरिंदे असुरराया नो संचाइए साहत्थि गेण्हित्तए ॥

१२०. सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा? बहुए वा? तुल्ले वा? विसेसाहिए वा?

गोयमा! सव्वत्थोवं खेत्तं सक्के देविंदे देवराया अहे ओवयइ एक्केणं समएणं तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढं संखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२१. चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुररण्णो उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा? बहुए वा? तुल्ले वा? विसेसाहिए वा?

गोयमा! सव्वत्थोवं खेत्तं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पयइ एक्केणं समएणं, तिरियं संखेज्जे भागे गच्छइ, अहे संखेज्जे भागे गच्छइ ॥

१२२. [7]•वज्जस्स णं भंते! उड्ढं अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा? बहुए वा? तुल्ले वा? विसेसाहिए वा?

गोयमा! सव्वत्थोवं खेत्तं वज्जे अहे ओवयइ एक्केणं समएणं, तिरियं विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढं विसेसाहिए भागे गच्छइ° ॥

१. देविंदे (अ, ता, ब, स)।
२. भ० ३।११८।
३. सक्के देविंदे देवराया (स)।
४. संचाइति (अ); संचाएति (स)।
५. सिग्घे-सिग्घे (अ, स)।
६. अहो० (अ, ब)।
७. सं० पा०—वज्जं जहा सक्कस्स तहेव नवरं विसेसाहियं कायव्वं।

१२३. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले संखेज्जगुणे ।।

१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवरं—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ।।

१२५. वज्जस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ।।

१२६. एयस्स णं भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए णं दोण्णि[1] वि तुल्ला सव्वत्थोवा । सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस णं दोण्ह वि तुल्ले संखेज्जगुणे । चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस णं दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ।।

१२७. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा महया अवमाणेणं अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ।।

१२८. तए णं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणं पासंति, पासित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—किं णं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा चिंतासोयसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

१२९. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए । तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे[3] । तं भद्दण्णं[4] भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि[5] पभावेणं अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे

---

१. विण्णि (ता, म) ।
२. भ० ३।१२७ ।
३. निसिट्ठे (अ, स) ।
४. भद्दं णं (अ, स) ।
५. जस्संसि (ता) ।

इह संपत्ते इहेव अज्ज उवसंपिज्जत्ता णं विहरामि । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया । समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[1] पज्जुवासामो त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[2] सव्विड्ढीए जाव[3] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं[4] •करेत्ता वंदेता° नमंसित्ता एवं वयासि-एवं खलु भंते ! मए तुब्भं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए[5] । •तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे° । तं भद्दण्णं भवतु देवाणुप्पियाणं जस्सम्हि पभावेणं अकिट्ठे[6] •अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इह अज्ज उवसंपज्जित्ता णं° विहरामि । तं खामेमि णं देवाणुप्पिया[7] !• खमंतु णं देवाणुप्पिया ! खंतुमरिहंति णं देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एवं करणयाए त्ति कट्टु ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जाव[8] बत्तीसइबद्धं[9] नट्टविहिं उवदंसेइ, उवदंसेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

१३०. एवं खलु गोयमा ! चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[10] •दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए । ठिई सागरोवमं महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[11] अंतं काहिइ ।।

१३१. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसि णं देवाणं अहुणोववण्णाण[12] वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जइ—अहो ! णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव[14] अभिसमण्णागए, जारिसिया णं अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए । जारिसिया णं सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया णं अम्हेहि वि जाव अभिसमण्णागए । तं गच्छामो णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० ३।४ ।
३. राय० सू० ५८ ।
४. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता ।
५. सं० पा०—अच्चासाइए जाव तं ।
६. सं० पा०—अकिट्ठे जाव विहरामि ।
७. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव उत्तर° ।
८. राय० सू० ६५-१२० ।
९. बत्तीसविहं (क) ।
१०. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभि° ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अहुणोववण्णगाण (अ, ब) ।
१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ ।
१४. भ० ३।१३० ।

दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं। तं जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं, जाणउ ताव अम्ह वि सक्के देविंदे देवराया दिव्वं देविड्ढिं जाव अभिसमण्णागयं।

एवं खलु गोयमा! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो॥

१३२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[1]॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पदं

१३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था जाव[2] परिसा पडिगया॥

१३४. तेणं कालेणं तेणं समएणं[3] •समणस्स भगवओ महावीरस्स° अंतेवासी मंडिअपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[4] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—कइ णं भंते! किरियाओ पण्णत्ताओ?

मंडिअपुत्ता! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिआ, पाओसिआ[5], पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया॥

१३५. काइया णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-किरिया[6] य॥

१३६. अहिगरणिआ णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजोयणाहिगरणकिरिया[7] य, निवत्त-णाहिगरणकिरिया[8] य॥

१३७. पाओसिआ[9] णं भंते! किरिया कइविहा पण्णत्ता?

मंडिअपुत्ता! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-सिआ य॥

१. भ० १।५१।
२. भ० १।४-८।
३. सं० पा०—समएणं जाव अंतेवासी।
४. भ० १।२८८, २८६।
५. पायो° (क, ता)।
६. दुप्पयुत्त° (ता)।
७. °करण° (क, ता, स)।
८. °करण° (ता, ब, स)।
९. पादोसिया (अ, क, ब); पाओसिगा (ता)।

१३८. पारियावणिआ णं भंते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता'[1] ?
मंडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपारियावणिआय, परहत्थपारियावणिआ य ।।

१३९. पाणाइवायकिरिया णं भंते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता ?'[2]
मंडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहत्थपाणाइवायकिरिया य, परहत्थपाणाइवायकिरिया य ।।

किरिया-वेदणा-पदं

१४०. पुव्विं भंते ! किरिया, पच्छा वेदणा ? पुव्विं वेदणा, पच्छा किरिया ?
मंडिअपुत्ता ! पुव्विं किरिया, पच्छा वेदणा। णो पुव्विं वेदणा, पच्छा किरिया ।।

१४१. अत्थि णं भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ।।

१४२. कहण्णं[3] भंते ! समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?
मंडिअपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्तं च । एवं खलु समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ।।

अंतकिरिया-पदं

१४३. जीवे णं भंते ! सया समितं[4] एयति वेयति[5] 'चलति फंदइ घट्टइ'[6] खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ ?
हंता मंडिअपुत्ता ! जीवे णं सया समितं एयति[7] •वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं तं भावं परिणमइ ।।

१४४. जावं च णं भंते ! से जीवे सया समितं[8] •एयति वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ?
नो इणट्ठे[9] समट्ठे ।।

१४५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समितं[10] •एयति वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स° अंते अंतकिरिया न भवति ?
मंडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे सया समितं[11] •एयति वेयति चलति फंदइ

---

१. पुच्छा (ब)।
२. पुच्छा (ता, ब)।
३. कह णं (अ, क, ब); कहं णं (ता); कहि णं (स)।
४. समिय (अ, ता, ब, म, स)।
५. वेदति (ता)।
६. चलेइ फंदेइ घट्टेइ (अ, ब, स)।
७. सं० पा०—एयति जाव तं।
८. सं० पा०—समितं जाव परिणमइ।
९. तिणट्ठे (अ, क, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—समितं जाव अंते।
११. सं० पा०—समितं जाव परिणमइ।

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, तावं च णं से जीवे—'आरभइ सारभइ समारभइ'[1], आरंभे वट्टइ सारंभे वट्टइ समारंभे वट्टइ, 'आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे'[2], आरंभे वट्टमाणे सारंभे वट्टमाणे समारंभे वट्टमाणे बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खावणयाए[3] सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ॥

से तेणट्ठेणं मंडिअपुत्ता ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समितं एयति[4] •वेयति चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ तं तं भावं° परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया न भवति ॥

१४६. जीवे णं भंते ! सया समितं नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं तं भावं परिणमइ ?

हंता मंडिअपुत्ता ! जीवे णं सया समितं[6] •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं तं भावं परिणमइ ॥

१४७. जावं च णं भंते ! से जीवे नो एयति[7] •नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया भवइ ?

हंता[8] •मंडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया° भवइ ॥

१४८. से केणट्ठेणं[9] •भंते ! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स अंते अंतकिरिया° भवइ ?

मंडिअपुत्ता ! जावं च णं से जीवे सया समितं नो एयति[10] •नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरंभे वट्टइ नो सारंभे वट्टइ नो समारंभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरंभे अवट्टमाणे सारंभे अवट्टमाणे समारंभे अवट्टमाणे बहूणं पाणाणं भूयाणं

---

१. आरंभइ सारंभइ समारंभइ (अ, स)।

२. आरंभमाणे सारंभमाणे समारंभमाणे (अ, क, ता, स)।

३. क्वचित्पठ्यते—'दुक्खणयाए' इत्यादि, तच्च व्यक्तमेव, यच्च तत्र 'किलामणयाए उद्दवणयाए, इत्यधिकमभिधीयते° (वृ)।

४. सं० पा०—एयति जाव परिमणइ।

५. सं० पा०—एयति जाव नो।

६. सं० पा०—समितं जाव नो।

७. सं० पा०—एयति जाव नो।

८. सं० पा०—हंता जाव भवइ।

९. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव भवइ।

१०. सं० पा०—एयति जाव नो।

जीवाणं सत्ताणं अदुक्खावणयाए[1] •असोयावणयाए अजूरावणयाए अतिप्पावणयाए अपिट्टावणयाए° अपरियावणयाए वट्टइ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं[2] तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ?

हंता मसमसाविज्जइ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदयबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! से उदयबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ?

हंता विद्धंसमागच्छइ।

से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति[3]। अहे णं केइ पुरिसे तंसि हरयंसि एगं महं नावं सतासवं सतच्छिद्दं ओगाहेज्जा, से नूणं मंडिअपुत्ता! सा नावा तेहिं आसवदारेहिं[4] आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति?

हंता चिट्ठति।

अहे णं केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समंता आसवदाराइं पिहेइ, पिहेत्ता नावा-उस्सिचणएणं उदयं उस्सिचेज्जा से नूणं मंडिअपुत्ता! सा नावा तंसि उदयंसि उस्सित्तंसि समाणंसि खिप्पामेव उदाइ[5]?

हंता उदाइ।

एवामेव मंडिअपुत्ता! अत्तत्ता-संवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स[6] •भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिंदियस्स° गुत्तबंभयारिस्स, आउत्तं गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स[7] निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणं गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया[8] सुहुमा इरियावहिया[9] किरिया कज्जइ—सा पढमसमय-

१. सं० पा०—अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए।
२. सुक्क (अ, ब)।
३. चिट्ठइ हंता चिट्ठइ (ता, म, स)।
४. °द्दारेहिं (ता, ब, म)।
५. वुदाति (ता); उद्दाइ (म); उड्ढं उदाइ (स)
६. रिया° (ता, ब, म); सं० पा०—इरियासमितस्स जाव गुत्तबंभयारिस्स।
७. सर्वेष्वपि पदेषु 'आउत्तं' इति पदं गम्यम्।
८. वेमाता (ता); संपेहाए (वृपा)।
९. रिया० (अ, ता, ब)।

बद्धपुट्ठा[1], बितियसमयवेइया[2], ततियसमयनिज्जरिया[3]। सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मं वावि[4] भवति। से तेणट्ठेणं मंडिअपुत्ता! एवं वुच्चइ—जावं च णं से जीवे सया समितं नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घटइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो तं तं भावं परिणमइ, तावं च णं तस्स जीवस्स° अंते अंतकिरिया भवइ॥

पमत्तापमत्तद्धा-पदं

१४६. पमत्तसंजयस्स णं भंते! पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं[6] होइ?
मंडिअपुत्ता! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी। नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा॥

१५०. अप्पमत्तसंजयस्स णं भंते! अप्पमत्तसंजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य णं अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिरं होइ?
मंडिअपुत्ता! एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं 'देसूणा पुव्वकोडी'[7] नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं॥

१५१. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति भगवं मंडिअपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति॥

लवणसमुद्द-वुड्ढि-हाणि-पदं

१५२. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कम्हा णं भंते! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगे वड्ढइ वा? हायइ वा?
लवणसमुद्दवत्तव्वया[8] नेयव्वा जाव[9] लोयट्ठिई, लोयाणुभावे॥

१५३. सेवं भंते! सेवं भंते? त्ति जाव[10] विहरति[11]॥

१. °समत° (ता)।
२. बीयसमयवेतिता (क); °वेदिता (ता); बीय° (ब)।
३. टितिय° (ब)।
४. चावि (ता)।
५. सं० पा०—एयति जाव अंते।
६. केवचिरं (अ, क)।
७. पुव्वकोडी देसूणा (क, ता, ब, म, स)।
८. जहा जीवाभिगमे लवण° (स)।
९. जी० ३ मन्दरोद्देशकः।
१०. भ० १।५१।
११. विहरइ किरिया समत्ता (अ, क, ता, ब, म, स)

चउत्थो उद्देसो

भाविअप्प-पदं

१५४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देवं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणं[1] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं पासइ । ३. अत्थेगइए देवं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थेगइए नो देवं पासइ, नो जाणं पासइ ।।

१५५. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देविं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणिं[2] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. [3]●अत्थेगइए देविं पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देविं पासइ । ३. अत्थेगइए देविं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थेगइए नो देविं पासइ, नो जाणं पासइ° ।।

१५६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा देवं सदेवीअं वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहयं जाणरूवेणं जामाणं जाणइ-पासइ ?
[4]●गोयमा ! १. अत्थेगइए देवं सदेवीअं पासइ, नो जाणं पासइ । २. अत्थेगइए जाणं पासइ, नो देवं सदेवीअं पासइ । ३. अत्थेगइए देवं सदेवीअं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थेगइए नो देवं सदेवीअं पासइ, नो जाणं पासइ° ।।

१५७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं अंतो पासइ ? बाहिं पासइ ?
[5]●गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स अंतो पासइ, नो बाहिं पासइ । २. अत्थेगइए रुक्खस्स बाहिं पासइ, नो अंतो पासइ । ३. अत्थेगइए रुक्खस्स अंतो पि पासइ, बाहिं पि पासइ । ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो अंतो पासइ, नो बाहिं पासइ° ।।

१५८. [6]●अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं मूलं पासइ ? कंदं पासइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पासइ, नो कंदं पासइ । २. अत्थेगइए रुक्खस्स कंदं पासइ, नो मूलं पासइ । ३. अत्थेगइए रुक्खस्स मूलं पि पासइ, कंदं पि पासइ । ४. अत्थेगइए रुक्खस्स नो मूलं पासइ, नो कंदं पासइ° ।।

१. जायमाणं (अ, क, ब, स) ।
२. जाइमाणिं (अ, ब); जायमाणिं (क, स) ।
३. सं० पा०—एवं चेव ।
४. सं० पा०—एतेणं अभिलावेणं चत्तारि भंगा ।
५. सं० पा०—चउभंगो ।
६. सं० पा०—एवं किं मूलं पासइ, कंदं पासइ ? चउभंगो ।

१५९. मूलं पासइ ? खंधं पासइ ? चउभंगो ॥
१६०. एवं मूलेणं[1] [जाव ?] बीजं संजोएयव्वं ॥
१६१. एवं कंदेण वि समं संजोएयव्वं जाव बीयं ॥
१६२. एवं जाव पुप्फेण समं बीयं संजोएयव्वं ॥
१६३. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं फलं पासइ ? बीयं पासइ ? चउभंगो[2] ॥

वाउकाय-पदं

१६४. पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं इत्थिरूवं वा पुरिसरूवं वा [आसरूवं वा[3] ?] हत्थिरूवं वा जाणरूवं वा जुग्गरूवं वा गिल्लिरूवं वा थिल्लिरूवं[4] वा सीयरूवं वा संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाए[5] णं विकुव्वमाणे एगं महं पडागासंठियं रूवं विकुव्वइ ॥

१६५. पभू णं भंते ! वाउकाए एगं महं पडागासंठियं रूवं विउव्वित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

---

१. एवमिति मूलकंदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कंदादिपदानि वाच्यानि यावद्बीजपदम् । तत्र मूलम्, कंदः, स्कन्धः, त्वक्, शाखा, प्रवालम्, पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, बीजम् चेति दश पदानि, एषां च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसंयोगाः भङ्गाः–

१. मूल कंद	२. मूल स्कंध
३. मूल त्वक्	४. मूल शाखा
५. मूल प्रवाल	६. मूल पत्र
७. मूल पुष्प	८. मूल फल
९. मूल बीज	१०. कंद स्कंध
११. कंद त्वक्	१२. कंद शाखा
१३. कंद प्रवाल	१४. कंद पत्र
१५. कंद पुष्प	१६. कंद फल
१७. कंद बीज	१८. स्कंध त्वक्
१९. स्कंध शाखा	२०. स्कंध प्रवाल
२१. स्कंध पत्र	२२. स्कंध पुष्प
२३. स्कंध फल	२४. स्कंध बीज
२५. त्वक् शाखा	२६. त्वक् प्रवाल
२७. त्वक् पत्र	२८. त्वक् पुष्प
२९. त्वक् फल	३०. त्वक् बीज
३१. शाखा प्रवाल	३२. शाखा पत्र
३३. शाखा पुष्प	३४. शाखा फल
३५. शाखा बीज	३६. प्रवाल पत्र
३७. प्रवाल पुष्प	३८. प्रवाल फल
३९. प्रवाल बीज	४०. पत्र पुष्प
४१. पत्र फल	४२. पत्र बीज
४३. पुष्प फल	४४. पुष्प बीज
४५. फल बीज (वृ) ।	

२. चउभंगो एवं (ना) ।
३. १७९ सूत्रे 'आसरूवं' इति पाठो विद्यते वृत्तावपि तस्योल्लेखोस्ति, तेनात्रापि संभाव्यते ।
४. खिल्लि° (क) ।
५. वाउयाए (क, ता) ।

१६६. से भंते ! किं आइड्ढीए[1] गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

१६७. [2]°से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

१६८. से भंते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ° ॥

१६९. से भंते ! किं ऊसिओदयं[3] गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ ॥

१७०. से भंते ! किं एगओपडागं गच्छइ ? दुहओपडागं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ, नो दुहओपडागं गच्छइ ॥

१७१. से भंते ! किं वाउकाए ? पडागा[4] ?
गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा ॥

बलाहक-पदं

१७२. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं वा जाव[5] संदमाणियरूवं वा परिणामेत्तए ?
हंता पभू ॥

१७३. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गतित्तए ।
हंता पभू ॥

१७४. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! नो आइड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ॥

१७५. [6]°से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयकम्मुणा गच्छइ, परकम्मुणा गच्छइ ॥

१७६. से भंते ! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयप्पयोगेणं गच्छइ, परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

१७७. से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

---

१. आयड्ढीए (अ, ब, स); आतिड्ढीए (क, म)
२. सं० पा०—जहा आयड्ढीए एवं अयकम्मुणा वि आयप्पयोगेण वि भाणियव्वं ।
३. ऊसिओदगं (म, स) ।
४. पडागं वा (ता) ।
५. भ० २।१६४ ।
६. सं० पा०—एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेणं, परप्पयोगेणं । ऊसिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

१७८. से भंते ! किं बलाहए ? इत्थी ?
गोयमा ! बलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ।।

१७९. एवं[1] पुरिसे, आसे, हत्थी ।।

१८०. पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
जहा[2] इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ।।

१८१. [3]•से भंते ! किं एगओचक्कवालं गच्छइ ? दुहओचक्कवालं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओचक्कवालं पि गच्छइ, दुहओचक्कवालं पि गच्छइ° ।।

१८२. जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया[4] तहेव[5] ।।

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,[6] से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं[7] दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा । एवं जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा । जाव[8]—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए[9]•, से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ° ?
गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ।।

१८५. जीवे णं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता[10] कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ।।

---

१. भ० ३।१७३-१७८ ।
२. भ० ३।१७३-१७८ ।
३. सं० पा०—नवरं एगओ चक्कवालं पि दुहओचक्कवालं पि भाणियव्वं ।
४. संदमाणिया णं (अ, ब, स) ।
५. भ० ३।१७३-१७८ ।
६. उववज्जइए (अ) ।
७. जं लेसाइं (अ, स) ।
८. जाव जीवेणं भंते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भंते किंलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ । तं कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एवं जहा नेरइयाणं नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एवं जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता); पू० प० २ ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. परियाइतित्ता (अ, ब, स) ।

भावियप्प-वि[illegible]व्वणा-पदं

१८६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभारं[1] पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभारं पव्वयं उल्लंघेत्तए वा ? पल्लंघेत्तए वा ?
हंता पभू ॥

१८८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८९. •[2]अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता जावइयाइं रायगिहे नगरे रूवाइं, एवइयाइं विकुव्वित्ता वेभारं पव्वयं अंतो अणुप्पविसित्ता पभू समं वा विसमं करेत्तए ? विसमं वा समं करेत्तए ?
हंता पभू° ॥

१९०. से भंते ! किं माई विकुव्वइ ? अमाई ? विकुव्वइ
गोयमा ! माई विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वइ ॥

१९१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[3]—•माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ?
गोयमा ! माई णं पणीयं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा वामेति । तस्स णं तेणं पणीएणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा बहलीभवंति, पयणुए मंस-सोणिए भवति । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—सोइंदियत्ताए[4] •चक्खिंदियत्ताए घाणिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए° फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए, सुक्कत्ताए, सोणियत्ताए ।
अमाई णं लूहं पाण-भोयणं भोच्चा-भोच्चा णो वामेइ । तस्स णं तेणं लूहेणं पाण-भोयणेणं अट्ठि-अट्ठिमिंजा पयणूभवंति, बहले मंस-सोणिए । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमंति, तं जहा—उच्चारत्ताए पासवणत्ताए[5] •खेलत्ताए सिंघाणत्ताए वंतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताए° सोणियत्ताए । से तेणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ॥

---

१. वेब्भारं (ता) ।
२. सं० पा०—एवं चेव बितिओ वि आलावगो नवरं परियातिइत्ता पभू ।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो ।
४. सं० पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए।
५. सं० पा०—पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए ।
६. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।

१६२. माई णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[1] कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमाई णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ, अत्थि तस्स आराहणा ।।

१६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

पंचमो उद्देसो

१६४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[3] संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६५. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं इत्थीरूवं वा जाव[4] संदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू ।।

१६६. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइआइं पभू इत्थिरूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थंसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[5] पभू णं गोयमा ! अणगारे णं भाविअप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं[6] °उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए° । एस णं गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए, णो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा । एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव[7] संदमाणिया ।।

१६७. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपायं[8] गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ।।

१. अणालोतिय° (अ, ब, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० ३।१६४।
४. भ० ३।१६४।
५. भ० ३।४ ।
६. सं पा०—वितिकिण्णं जाव एस ।
७. भ० ३।१६४।
८. असि चम्म° (ता) ।

१९८. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू असिचम्म (पाय ?) हत्थकिच्च-गयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, तं चेव जाव[1] विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा ॥

१९९. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडागं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएणं[2] अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं[3] उप्पएज्जा ?
हंता[4] उप्पएज्जा ॥

२००. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ?
एवं चेव जाव[5] विकुव्विसु वा, विकुव्वतिवा वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०१. एवं दुहओपडागं पि ।

२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइतं काउं गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओजण्णोवइतकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

२०३. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू एगओजण्णोवइतकिच्चगयाइं रूवाइं विकुव्वित्तए ?
तं चेव जाव[6] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।

२०४. एवं दुहओजण्णोवइयं पि ॥

२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थियं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपल्हत्थिय किच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
तं चेव जाव[7] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०६. एवं दुहओपल्हत्थियं पि ॥

२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियंकं काउं चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपलियंककिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
तं चेव जाव[8] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२०८. एवं दुहओपलियंकं पि ॥

१. भ० ३।१९६ ।
२. एगततोपडागा° (ता) ।
३. वेहायसं (ब) ।
४. हंता गोयमा (अ, ता, ब, स) ।
५. भ० ३।१९६ ।
६. भ० ३।१९६ ।
७. भ० ३।२०२, २०३ ।
८. भ० ३।२०२, २०[illegible] ।

भाविअप्प-अभिजुंजणा-पदं

२०९. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा विग्घरूवं वा विगरूवं[1] वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं[2] वा अभिजुंजित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१०. अणगारे णं[3] •भंते ! भाविअप्पा बाहिरिए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा वग्घरूवं वा विगरूवं वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं वा अभिजुंजित्तए ?
हंता पभू° ॥

२११. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा (पभू ?) एगं महं आसरूवं वा अभिजुंजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ॥

२१२. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

२१३. [4]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

२१४. से भंते! किं आयप्पयोगेणं गच्छइ ? परप्पयोगेणं गच्छइ !
गोयमा ! आयप्पयोगेणं गच्छइ, नो परप्पयोगेणं गच्छइ ॥

२१५. से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

२१६. से णं भंते ! किं अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे ॥

२१७. एवं जाव[5] परासररूवं वा ॥

२१८. से भंते ! किं 'मायी विकुव्वइ'[6], ? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ॥

---

१. वग° (क, ता, ब, म) ।
२. इह अन्यान्यपि शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (वृ) ।
३. सं० पा०—एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ।
४. सं० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।
५. भ० ३।२०९, २११-२१६ ।
६. मायी अभिजुंजइ··· अधिकृतवाचनायां 'मायी विक्कुव्वइ' त्ति दृश्यते (वृ) ।

२१६. मायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु आभियोगिएसु[1] देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२०. अमायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२१. सेवं भंते ! सेवं भंते । त्ति[2] ।

संगहणी-गाहा

१. इत्थी असी पडागा, जण्णोवइए य होइ बोद्धव्वे[3] ।
पल्हत्थिय पलियंके, अभिओग विकुव्वणा मायी ।।

छट्ठो उद्देसो

भावियप्प-विकुव्वणा-पदं

२२२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२२३. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । 'सेस दंसण-[redacted][4] भवइ । से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ।।

१. आभियोगेसु (अ, ब, स); आभिओग्गिएसु (ता) ।
२. भ० १।५१ ।
३. बोधव्वे (अ, क, म, स) ।
४. से से दंसणे विवच्चासे (अ, ब, स, वृ); से से दंसणे विवरीए विवच्चासे (वृपा) ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।

२२५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी[1] •वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए° रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२२६. [2]•से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२२७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा !° तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दंसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ°, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२२८. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं, रायगिहं च नगरं, अंतरा[4] एगं महं जणवयग्गं[5] समोहए, समोहणित्ता वाणारसिं नगरिं रायगिहं च नगरं अंतरा[6] एगं महं जणवयग्गं जाणति-पासति ?
हंता जाणति-पासति ।

२२९. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२३०. से केणट्ठेणं[7] •भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एवं भवति—एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अंतरा एगे महं जणवयग्गे, नो खलु एस महं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभंगनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेस दंसण-विवच्चासे'[8] भवति । से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ।।

१. सं० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव तस्स ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव अण्णहाभावं ।
४. अंतरा य (क, ता, ब) ।
५. जणवयवग्गं (क, म, स, वृ); अत्र स्वीकृतः पाठः समीचीनः प्रतिभाति । वृत्तिकृतः सम्मुखवर्तिषु आदर्शेषु 'जणवयवग्गं' इति पाठः आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।
६. तं० च अंतरा (क, ता, ब, म) ।
७. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासइ ।
८. से से दंसणे विवच्चासे (अ, क, ब, स) ।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।

२३१. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२३२. से भंते ! किं तहाभावं[1] जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२३४. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२३५. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२३६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ° ।।

२३७. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, अंतरा एगं महं जणवयग्गं[3] समोहए, समोहणित्ता रायगिहं नगरं, वाणारसिं च नगरिं, अंतरा[4] एगं महं जणवयग्गं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

१. तहारूवं (क) ।
२. सं० पा०—बितिओ वि आलावगो एवं चेव नवरं वाणारसीए समोहणा णेयव्वा । रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ पासइ ।
३. जणवयवग्गं (क, म, स); जणवदग्गं (ता) ।
४. तं च अंतरा (क, ता, ब, म) ।

२३८. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अंतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु ममं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। सेस दंसण-अविवच्चासे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२४०. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव[1] सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४१. [2]°अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू° ॥

२४२. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव[3] विकुव्विंसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२४३. एवं जाव[4] सण्णिवेसरूवं वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते णं आयरक्खा—वण्णओ[5] ॥

२४५. एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा[6] ॥

२४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

१. भ० १।४६।
२. सं० पा०—एवं बितिओ वि आलावगो नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभु।
३. भ० ३।१८६।
४. भ० १।४६।
५. राय० सू० ६६४; वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे (ब, म); अयं च पुस्तकान्तरे साक्षाद् दृश्यत एव (वृ)।
६. प० २।
७. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

लोगपाल-पदं

२४७. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी—सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे ॥

२४८. एएसि णं भंते ! चउण्हं लोगपालाणं कति विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—संझप्पभे वरसिट्ठे सयंजले वग्गू ॥

२४९. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय[1]-गहगण[2]-नक्खत्त तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं जाव[3] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए, सत्तवण्णवडेंसए, चंपयवडेंसए, चूयवडेंसए[4], मज्झे सोहम्मवडेंसए ॥

सोम-पदं

२५०. तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणाइं वीइवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो संझप्पभे नामं महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं[5] आयाम-विक्खंभेणं, उयालीसं[6] जोयणसयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य[7] अडयाले जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[8] अभिसेओ, नवरं—सोमो देवो ॥

२५१. संझप्पभस्स णं महाविमाणस्स अहे, सपक्खि, सपडिदिसिं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं[9] ओगाहित्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

१. सूरिम (क, ता, म)।
२. गह (ता)।
३. राय० सू० १२४, १२५।
४. भूय० (ब, म, स)।
५. अड्ढ० (ता)।
६. ऊया० (क, ता, ब)।
७. × (अ, स)।
८. राय० सू० १२६-१८०।
९. जोयणसयसहस्साइं (क, ब)।

सोमा नामं रायहाणी पण्णत्ता—एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं जंबुद्दीवप्पमाणा। वेमाणियाणं पमाणस्स अद्धं नेयव्वं[1] जाव[2] ओवारियलेणं[3] सोलस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं पंच य सत्ताणउए जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्तं। पासायाणं चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि॥

२५२. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ, वायकुमारा[4], वायकुमारीओ[5], चंदा, सूरा, गहा णक्खत्ता, तारारूवा—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति॥

२५३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—गहदंडा इ वा, गहमुसला इ वा, गहगज्जिया इ वा, गहजुद्धा[6] इ वा, गहसिंघाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'[7] अब्भरुक्खा इ वा, संझा इ वा, गंधव्वनगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा, विज्जुया इ वा, पंसुवुट्ठी इ वा, जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चंदोवरागा इ वा सूरोवरागा इ वा, चंदपरिवेसा[8] इ वा, सूरपरिवेसा[9] इ वा, पडिचंदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इंदधणू इ वा, उदगमच्छा[10] इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा, पईणवाया इ वा[11], •दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढवाया इ वा, अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा, वाउक्कलिया इ वा, वायमंडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मंडलियावाया इ वा, गुंजावाया इ वा, झंझावाया इ वा°, संवट्टयवाया इ वा, गामदाहा इ वा, जाव[12] सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया[13]—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविं-

१. राय० सू० २०४-२०८।
२. भ० २।१२१।
३. उवगारियलेणं (अ, स)।
४. वायु° (क); वाउ° (ता)।
५. वायु° (क); वाउ° (ता)।
६. एवं गहजुद्धा (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. × (अ, ता, म, स)।
८. °परिएसा (ब, म)।
९. °परिएसा (ब, म)।
१०. उदगमच्छगे (ब, म)।
११. सं० पा०—पईणवाया इ वा जाव संवट्टयवाया।
१२. भ० १।४९।
१३. मकारोलाक्षणिकः।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया[1] अविण्णाया, तेसिं वा सोमकाइयाणं देवाणं ॥

२५४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[2] होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सण्णिच्चरे[3] चंदे सूरे सुक्के बुहे बहस्सई राहू ॥

२५५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभागं[4] पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं[5] देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे सोमे महाराया ॥

यम-पदं

२५६. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सोहम्मवडेंसयस्स[7] महाविमाणस्स दाहिणे णं सोहम्मे कप्पे असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नामं महाविमाणे[8] पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसय-सहस्साइं—जहा सोमस्स विमाणं तहा जाव[9] अभिसेओ । रायहाणी तहेव जाव[10] पासायपंतीओ ।

२५७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा[11]-•उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति, तं जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवयकाइया[12] इ वा, पेतकाइया इ वा, पेतदेवयकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कंदप्पा, निरयपाला[13], अभियोगा[14]—जे यावण्णे तहप्पगारा[15] सव्वे ते तब्भत्तिगा, तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा[16]-•उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति ॥

---

१. अमुया (अ, क, म); अस्मृतपदस्य असुयं अमुयं इतिरूपद्वयं भवति । वृत्तिकृता असुयत्ति अस्मृता इति व्याख्यातम् ।
२. अहाभिण्णाता (क, ता)
३. सणिचरे (अ); सण्णिच्छरे (क, ब, म); सणिचरे (ता) ।
४. सइंभागं (ता); सत्तिभागं (ब, म) ।
५. अहापच्चभिण्णायाणं (क); अहापच्चभिण्णाताणं (ता) ।
६. भ० ३।४ ।
७. सोहम्मवडंसयस्स (स) ।
८. विमाणो (क, ता, ब) ।
९. भ० ३।२५० ।
१०. भ० ३।२५१ ।
११. सं० पा०—आणा जाव चिट्ठंति ।
१२. जमदेवतक्काइया (ता); जमदेवकाइया (म, स) ।
१३. निरयवाला (ब) ।
१४. आभियोग्गा (ता, ब) ।
१५. तप्पगारा (ता, ब) ।
१६. सं० पा०—आणा जाव चिट्ठंति ।

२५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—डिंबा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा[1] इ वा, महारुहिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा, मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा कण्णवेयणा इ वा, नहवेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खंदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा[2] इ वा, एगाहिया इ वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया[3] इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ वा, 'सासाइवा, सोसा'[4] इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा, अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा[5] इ वा, भगंदला[6] इ वा, हिययसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पाससूला इ वा, कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कव्वड-मारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडंबमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी इ वा, संवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'[7] जे यावण्णे[8] तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा जमकाइयाणं देवाणं ॥

२५९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[9] होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबे अंबरिसे चेव, सामे सबले त्ति यावरे ।
रुद्दोवरुद्दे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
'असिपत्ते धणू कुंभे'[10], वालुए[11] वेतरणी[12] त्ति य ।
खरस्सरे महाघोसे, एते[13] पण्णरसाहिया ॥२॥

१. एवं महापुरिस° (अ, क, ता, ब, म. स) ।
२. भूमग्गहा (ता) ।
३. चतुत्थया (ता, म) ।
४. खासा इ वा सासा (अ) ।
५. अरसा (अ); हरिसा ब, म) ।
६. भगंदरा (ता) ।
७. ° भूयमणारिया (अ, क. ता); °भूतामणा-रिया (ब) ।
८. जे या वि अन्ने (ब, म) ।
९. अहाभिण्णाया (क, ता) ।
१०. असी य असिपत्ते कुंभे (क, वृ); असिपत्त धणू कुंभे (वृपा) ।
११. वालू (अ, ता, ब, म, स) ।
१२. वेदरणी (ब, म) ।
१३. एमेए (क, ब, वृ) ।

२६०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सतिभागं पलिग्रं ठिई पण्णत्ता, ग्रहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिग्रोवमं ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे जमे महाराया ॥

वरुण-पदं

२६१. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयंजले नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा! तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमे णं जहा सोमस्स तहा विमाण-रायधाणीग्रो भाणियव्वा जाव[2] पासादवडेंसया, नवरं—नाम-नाणत्तं ॥

२६२. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो[3] •इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति, तं जहा—वरुणकाइया इ वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा, नागकुमारीग्रो, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीग्रो, थणियकुमारा, थणियकुमारीग्रो—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4], •तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो ग्राणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति ॥

२६३. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—ग्रइवासा इ वा, मंदवासा इ वा, सुवुट्ठी इ वा, दुवुट्ठी[5] इ वा, उदब्भेदा[6] इ वा, उदप्पीला[7] इ वा, ग्रोवाहा[8] इ वा, पवाहा इ वा, गामवाहा इ वा, जाव[9] सण्णिवेसवाहा इ वा, पाणक्खया[10], •जणक्खया, धणक्खया, कु[illegible], वसणब्भूया मणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो ग्रण्णाया ग्रदिट्ठा ग्रसुया ग्रमुया ग्रविण्णाया°, तेसिं वा वरुणकाइयाणं देवाणं ॥

२६४. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा ग्रहावच्चाभिण्णाया होत्था, तं जहा—

कक्कोडए कद्दमए, ग्रंजणे संखवालए पुंडे।
पलासे मोए जए, दहिमुहे[11] ग्रयंपुले कायरिए ॥

---

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।२५०, २५१।
३. सं० पा०—महारण्णो जाव चिट्ठंति।
४. सं० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति।
५. मंदवुट्ठी (अ, क, ता, ब, म)।
६. दउब्भेदा (क, ब)।
७. दउप्पीला (क, ब)।
८. उदवाहा (अ, क)।
९. भ० ३।२५८।
१०. सं० पा०—पाणक्खया जाव तेसिं।
११. ओहिमुहे (क); उदधिमुहे (ता)।

२६५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे वरुणे महाराया ॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तस्स णं सोहम्मवडेंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे णं जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव[2] पासादवडेंसया ॥

२६७. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति, तं जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,'[3] दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमंतरा, वाणमंतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4] °तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठंति ॥

२६८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तंबागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा'[5] सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, वीय-वासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गंधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, वीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गंधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला[6] इ वा, दुक्काला इ वा, अप्पग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्खा इ वा, दुब्भिक्खा इ वा, कयविक्कया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइ वा—चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाइ वा, पहीणसेतुयाइ वा, पहीणमग्गाइ[7] वा, पहीणगोत्तागाराइ वा, उच्छण्णसामियाइ वा, उच्छण्णसेतुयाइ वा, (उच्छण्णमग्गाइ वा ?) उच्छणगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-तिग-चउक्क-

१. भ० ३।४ ।
२. भ० ३।२५०, २५१ ।
३. × (क, ता, म) ।
४. सं० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठंति ।
५. एवं सिसाग हिरण्ण° (ता) ।
६. मुयाला (ता) ।
७. × (क, ता, ब, म) ।

चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वा नगरनिद्धमणेसु[1] वा, सुसाण-गिरि-कंदर-संति-सेलोवट्ठाण-भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइं[2] चिट्ठंति, न ताइं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो 'अण्णायाइं अदिट्ठाइं असुयाइं अमुयाइं अविण्णयाइं'[3] तेसिं वा वेसमणकाइयाणं देवाणं ।।

२६९. सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, तं जहा—पुण्णभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुण्णरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामे[4] समिद्धे अमोहे असंगे[5] ।।

२७०. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता । एम-हिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे वेसमणे महाराया ।।

२७१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ।।

अट्ठमो उद्देसो

२७२. रायगिहे नगरे जाव[8] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[9] विहरंति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—चमरे असुरिंदे असुर-राया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे, वेसमणे[10], वरुणे ।।

१. °द्धवणेसु (वृ) ।
२. संनिक्खित्ता (अ, ता) ।
३. अन्नाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया (अ, क, ता, ब) ।
४. सव्वकाम (अ, ता, म) ।
५. असंमे (अ); असंते (क, स) ।
६. भ० ३।४ ।
७. भ० १।५१ ।
८. भ० १।४-१० ।
९. भ० ३।४ ।
१०. स्थानांगे ४।१२२ सूत्रे 'दाक्षिणात्यलोकपालेषु यौ तृतीयचतुर्थौ तौ ओदीच्येषु चतुर्थतृतीयौ स्तः'। प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च नैष क्रमो लभ्यते । वृत्तिकृता अस्य क्रमस्य पाठान्तर-रूपेणोल्लेखः कृतः—इह च पुस्तकान्तरेऽयमर्थो दृश्यते—दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रति-सूत्रं यौ तृतीयचतुर्थौ तावौदीच्येषु चतुर्थ-तृतीयाविति । किन्तु वैमानिकदेवेषु वृत्तिकृता तृतीयचतुर्थयोर्व्यत्ययः स्वीकृतः—सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वेन्द्रापेक्षयोत्तरेन्द्र-सम्बन्धिनां लोकपालानां तृतीयचतुर्थयो र्व्यत्ययो वाच्यः (वृ) । असौ क्रमः पूर्वक्रमाद् भिन्नोऽस्ति । अस्माभिः सर्वत्र स्थानाङ्गा-नुसारी एक एव क्रमः स्वीकृतः ।

२७३. नागकुमाराणं भंते ![1] •देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[2] विहरंति ?°
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—धरणे णं नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले,सेलवाले, संखवाले, भूयाणंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'संखवाले, सेलवाले'[3] ।।

२७४. जहा नागकुमारिंदाणं एताए वत्तव्वयाए नीयं एवं इमाणं नेयव्वं—
सुवण्णकुमाराणं—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे ।
विज्जुकुमाराणं—हरिकंत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकंत-सुप्पभकंता ।
अग्गिकुमाराणं—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह[4]-तेउकंत-तेउप्पभा ।
दीवकुमाराणं—पुण्ण-विसिट्ठ[5]-रूय-रूयंस-रूयकंत-रूयप्पभा ।
उदहीकुमाराणं—जलकंत-जलप्पभ-जल-जलरुय[6]-जलकंत-जलप्पभा ।
दिसाकुमाराणं—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीहविक्कमगती ।
वाउकुमाराणं—वेलंब-पभंजण-काल-महाकाल-अंजण-रिट्ठा ।
थणियकुमाराणं—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नंदियावत्त-महानंदियत्ता ।
एवं भाणियव्वं जहा[7] असुरकुमारा[8] ।।

२७५. पिसायकुमाराणं[9] •भंते ! देवाणं कइ देवा आहेवच्चं जाव[10] विहरंति ?°
गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य ।
अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ।।१।।
किन्नर-किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे ।
अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ।।२।।

एते वाणमंतराणं देवाणं ।।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. भ० ३।४ ।
३. सेलवाले संखवाले (अ, क, म) ।
४. तेउसीह (अ) ।
५. वसिट्ठ (ता, ब); विसट्ठ (म) ।
६. जलरूय (अ); जलरते (ठा० ४।१२२) ।
७. भ० ३।२७२ ।
८. अतोग्रे आदर्शेषु वृत्तौ च सांकेतिकः पाठो वर्तते । वृत्तिकृता तस्योल्लेख एवं कृतः— सो १ का २ चि ३ प्प ४ ते ५ रु ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन दाक्षिणभवनपतीन्द्राणां प्रथमलोकपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथायां, साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३ प्पभ ४ तेउ ५ तह रुए चेव ६ । जल तह ७ तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा उ ।। एवं द्वितीयादयोप्ययभ्यूह्याः (वृ) ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. भ० ३।४ ।

२७६. जोइसियाणं देवाणं दो देवा आहेवच्चं जाव[1] विहरंति, तं जहा—चंदे य, सूरे य ॥

२७७. सोहम्मीसाणेसु णं भंते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्चं जाव[2] विहरंति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्चं जाव विहरंति, तं जहा—सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणे देविंदे देवराया, सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे'[3]।
एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा। जे य इंदा ते य भाणियव्वा ॥

२७८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

२७९. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कइविहे णं भंते ! इंदियविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियविसए[6] पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियविसए चक्खिंदियविसए घाणिंदियविसए रसिंदियविसए फासिंदियविसए। जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ नेयव्वो अपरिसेसो ॥

---

१. भ० ३।४।

२. भ० ३।४।

३. वरुणे वेसमणे (क, ब, म, स)।

४. भ० १।५१।

५. भ० १।४-१०।

६. वाचनान्तरे च—'इंदियविसए उच्चावय—सुब्भिणो' त्ति दृश्यते, तत्र इन्द्रियविषयसूत्रं दर्शितमेव, उच्चावयसूत्रं त्वेवम्—'से नूणं भंते ! उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं परिणममाणा पोग्गला परिणमंतीति वत्तव्वं सिया ? हंता गोयमा !' इत्यादि, 'सुब्भिणो त्ति, इदं सूत्रं पुनरेवम्—'से नूणं भंते ! सुब्भिसद्दपोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति ? हंता गोयमा !' इत्यादि।

सत्तमो उद्देसो

२८०. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया, चंडा, जाया। एवं जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ'[2] कप्पो ॥

२८१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

१. भ० १।४-१०।

२. जावच्चुओ (अ, क, ब); ठा० ३।१४३-१६०; जी० ३।

३. भ० १।५१।

चउत्थं सतं

१, २, ३, ४ उद्देसो

संगहणी-गाहा

चत्तारि विमाणेहिं, चत्तारि य होंति रायहाणीहिं ।
नेरइए लेस्साहि य, दस उद्देसा चउत्थसए ॥१॥

१. रायगिहे नगरे जाव[1] एवं वयासी—ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे'[2] ॥

२. एएसि णं भंते ! लोगपालाणं कइ विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥

३. कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव[3] ईसाणे नामं कप्पे पण्णत्ते । तत्थ णं जाव[4] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—अंकवडेंसए, फलिहवडेंसए, रयणवडेंसए, जायरूववडेंसए, मज्झे[5] ईसाणवडेंसए ॥

१. भ० १।४-१० ।
२. वरुणे वेसमणे (ब) ।
३. प० २ ।
४. प० २ ।
५. मज्झे तत्थ (अ); मज्झे यत्थ (क, ता, म) ।

४. तस्स णं ईसाणवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे णं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं वीईवइत्ता, एत्थ णं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइं, जहा सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव[1] अच्चणिया समत्ता ।।

५. चउण्ह वि लोगपालाणं विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवरं—ठिईए नाणत्तं—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया धणयस्स होंति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाणं ।।१।।

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६. रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव[2] वरुणे महाराया ।।

नवमो उद्देसो

७. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए[3] नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए लेस्सापए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं ।।

---

१. भ० ३।२५०-२७१ ।
२. भ० ३।२५०-२७१ ।
३. अनेरइए णं भंते ! (अ, स) ।

दसमो उद्देसो

८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागंधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेसं पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागंधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति । एवं चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव[1]—

संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गंध-सुद्ध-अपसत्थ-संकिलिट्ठुण्हा ।
गइ-परिणाम-पएसोगाह-वग्गणायणमप्पबहुं ॥१॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

१. जावेत्यादि परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वार-परिसमाप्तिं यावदित्यर्थः (वृ) ।
२. भ० १।५१ ।

पंचमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ चंप-रवि २ अनिल ३ गंठिय ४ सद्दे ५-६ छउमाउ ७[1] एयण ८ नियंठे ।
९ रायगिहं १० चंपा-चंदिमा य दस पंचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे णं चंपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] । सामी समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं जाव[5] एवं वयासी—जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[6] पाईण-दाहिणमागच्छंति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति[7], दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छंति[8], पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छंति ?

हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छंति ॥

१. ब्माायु (अ, स) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० २।१३ ।
४. भ० १।७, ८ ।
५. भ० १।६, १० ।
६. पादीण° (अ, ता) ।
७. °पदीण° (ता, म) ।
८. उदीचि° (क, ता, ब, म) ।

जंबुद्दीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पदं

४. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे[1] दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम[2]-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे[3] दिवसे जाव पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ।।

५. जयाणं भंते ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि दिवसे भवइ; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं दिवसे जाव उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ।।

६. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ; जया णं उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।।

७. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया णं पच्चत्थिमे णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे उत्तर[4]-•दाहिणे णं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता° राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ।।

८. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारस-मुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे जाव राई भवइ ।।

१. उत्तरड्ढेवि (अ, ता, स) ।
२. पुरत्थिमेणं (अ, ता) ।
३. दाहिणड्ढे वि (ता) ।
४. स० पा०—उत्तर जाव राई ।

९. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे वि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ ; जया णं पच्चत्थिमे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, तदा णं जंबुदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ।।

१०. एवं एएणं कमेणं ओसारेयव्वं—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई । सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई ।
सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई । सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा चउद्दसमुहुत्ता राई ।
पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई । पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा पण्णरसमुहुत्ता राई ।
चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई । चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई ।
तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई । तेरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई ।।

११. जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं उत्तरड्ढे वि ; जया णं उत्तरड्ढे, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव राई भवइ ।।

१२. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि ; जया णं पच्चत्थिमे[1], तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव राई भवइ ।।

जंबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया-पदं

१३. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ; जया णं उत्तरड्ढे[2] वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमे णं अणंतरपुरक्खडे समयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ?

१. पच्चत्थिमे ण वि (अ, क, ता, ब, म, स) । २. उत्तरड्ढे वि (स) ।

हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तह चेव जाव पडिवज्जइ ॥

१४. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ ; जया णं पच्चत्थिमे णं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं[1] °जंबुद्दीवे दीवे° मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे णं अणंतरपच्छाकडसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवन्ने भवइ ?

हंता गोयमा ! जया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव पडिवन्ने भवइ ॥

१५. एवं जहा समएणं अभिलावो भणिओ वासाणं तहा आवलियाएवि भाणियव्वो । आणापाणूणवि[2], थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणवि । एएसिं सव्वेसिं जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥

१६. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाणं अभिलावो तहेव हेमंताण वि, गिम्हाण वि भाणियव्वो जाव[3] उऊए । एवं तिण्णि वि । एएसिं तीसं आलावगा भाणियव्वा ॥

जंबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पदं

१७. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएणं अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव[4] अणंतरपच्छाकडसमयंसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ॥

१८. जहा अयणेणं अभिलावो तहा संवच्छरेण वि भाणियव्वो । जुएण वि, वाससएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वंगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियंगेण वि, तुडिएण वि—एवं पुव्वंगे, पुव्वे, तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे[5], हूहूयंगे, हूहूए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, अत्थणिउरंगे, अत्थणिउरे, अउयंगे, अउए, णउयंगे, णउए, पउयंगे पउए, चूलियंगे, चूलिया, सीसपहेलियंगे सीसपहेलिया—पलिओवमेण, सागरोवमेण वि भाणियव्वो ॥

१. सं० पा०—तयाणं जाव मंदरस्स ।
२. °पाणूएण (ब) ।
३. भ० ५।१३-१५ ।
४. भ० ५।१३, १४ ।
५. अपपे (ब, म) ।

१६. जया णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; तया णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ?
हंता गोयमा ! तं चेव उच्चारेयव्वं जाव समणाउसो ।।

२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ।।

लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे णं भंते ! समुद्दे सूरिया उदीण[1]-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जच्चेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा[2], नवरं—अभिलावो इमो जाणियव्वो ।।

२२. जया णं भंते ! लवणसमुद्दे[3] दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तं चेव जाव[4] तदा णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं राई भवति ।।

२३. एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव[5] जया णं भंते ! लवणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ; जया णं उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया णं लवणसमुद्दे पुरत्थिम–पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी[6], °नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थ काले पण्णत्ते° समणाउसो ?
हंता गोयमा ! जाव समणाउसो[7] ।।

२४. धायइसंडे णं भंते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव जंबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसंडस्स वि भाणियव्वा, नवरं—इमेणं अभिलावेणं सव्वे आलावगा भाणियव्वा[8] ।।

२५. जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम–पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! एवं चेव जाव राई भवइ ।।

१. उदीचि (अ) ।
२. भ० ५।३ ।
३. लवणे समुद्दे (क, ब, स) ।
४. भ० ५।४ ।
५. भ० ५।५-१८ ।
६. सं० पा०— ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।
७. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्रं अध्याहार्यम् ।
८. भ० ५।३ ।

२६. जया णं भंते ! धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि; जया णं पच्चत्थिमे णं दिवसे भवइ, तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं उत्तर-दाहिणे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ।।

२७. एवं एएणं अभिलावेणं नेयव्वं जाव[1] जया णं भंते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी, तया णं उत्तरड्ढे वि; जया णं उत्तरड्ढे वि; तया णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नत्थि ओसप्पिणी जाव[2] समणाउसो ?
हंता गोयमा ! जाव समणाउसो[3] ।।

२८. जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया[4] तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवरं—कालोदस्स नामं भाणियव्वं ।।

२९. अब्भितरपुक्खरद्धे णं भंते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छंति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया[5] तहेव अब्भितरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवरं—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया णं अब्भितरपुक्खरद्धे मंदराणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे णं नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ।।

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

बीओ उद्देसो

वाउ-पदं

३१. रायगिहे नगरे जाव[7] एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[8] पत्था[9] वाया मंदा वाया 'महावाया वायंति ?'[10]
हंता अत्थि ।।

---

१. भ० ५।५-१८ ।
२. भ० ५।१६ ।
३. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एवं उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्रं अध्याहार्यम् ।
४. भ० ५।२१-२३ ।
५. भ० ५।२४-२७ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८. सस्नेहवाताः (वृ) ।
९. पच्छा (अ, क, ता, स) ।
१०. महावाता वाता वातंति (क, ता) सर्वत्र ।

३२. अत्थि णं भंते ! पुरत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ?
हंता अत्थि ।।

३३. एवं पच्चत्थिमे णं, दाहिणे णं, उत्तरे णं, उत्तर-पुरत्थिमे णं, 'दाहिणपच्चत्थिमे णं, दाहिण-पुरत्थिमे णं'[1] 'उत्तर-पच्चत्थिमे णं ।।

३४. जया णं भंते ! पुरत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति, तया णं पच्चत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति; जया णं पच्चत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ?
हंता गोयमा ! जया णं पुरत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति, तया णं पच्चत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति; जया णं पच्चत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति, तया णं पुरत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ।।

३५. एवं दिसासु, विदिसासु[2] ।।

३६. अत्थि णं भंते ! दीविच्चया[3] ईसिं पुरेवाया[4] ?
हंता अत्थि ।।

३७. अत्थि णं भंते ! सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[5] ?
हंता अत्थि ।।

३८. जया णं भंते ! दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[6], तया णं सामुद्दया वि ईसिं पुरेवाया[7], जया णं सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[8], तया णं दीविच्चया वि ईसिं पुरेवाया[9] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जया णं दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[10], णो णं तया सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[11], जया णं सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[11], णो णं तया दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[11] ?
गोयमा ! तेसि णं वायाणं अण्णमण्णविवच्चासेणं लवणसमुद्दे वेलं नाइक्कमइ । से तेणट्ठेणं जाव णो णं तया दीविच्चया ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ।।

१. दाहिणपुरत्थिमे णं दाहिणपच्चत्थिमे णं (स) ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११,
२. एवं विदिसासु (क, ता) । १२. पू० भ० ५।३१ ।
३. दीविच्चता (ब) ।

४०. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मंदा वाया महावाया वायंति ?
हंता अत्थि ॥

४१. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया जाव[1] वायंति ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए अहारियं रियति[2], तया णं ईसिं पुरेवाया जाव वायंति ॥

४२. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[3] ?
हंता अत्थि ॥

४३. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[4] ?
गोयमा ! जया णं वाउयाए उत्तरकिरियं रियइ, तया णं ईसिं पुरेवाया जाव[5] वायंति ॥

४४. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया[6] ?
हंता अत्थि ॥

४५. कया णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था वाया[7] ?
गोयमा ! जया णं वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा अप्पणो[8] परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकायं उदीरेंति तया णं ईसिं पुरेवाया जाव[9] वायंति[10] ॥

४६. वाउयाए णं भंते ! वाउयायं चेव आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
"●हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

४७. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?
हंता गोयमा ! वाउयाए णं वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ॥

४८. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

---

१. भ० ५।४० ।
२. रियंति (अ, क, म) ।
३,४. पू० भ० ५।४० ।
५. भ० ५।४० ।
६,७. पू० भ० ५।४० ।
८. अप्पणो वा (क, ता, ब) ।
९. भ० ५।४० ।
१०. इह चैकसूत्रेणैव वायुवानकारणत्रयस्य वक्तुं शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरणं तद्विचित्रत्वात्सूत्रगतेरिति मन्तव्यं, वाचनान्तरे त्वाद्यं कारणं महावातवर्जितानां, द्वितीयं तु मन्दवातवर्जितानां, तृतीयं तु चतुर्णामप्युक्तमिति [वृ] ।
११. सं० पा०—जहा खंदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ ।

४९. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए। ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ° ॥

ओदणादीणं किंसरीरत्त-पदं

५१. अह णं भंते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे घणे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणिज्झामिया, अगणिझूसिया[1], अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया। सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च आउजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव [illegible]जीवसरीरा[2] ति वत्तव्वं सिया ॥

५२. अह णं भंते ! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ? अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[3] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

५३. अह णं भंते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा। अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिंगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'[4]—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च तसपाणजीवसरीरा। तओ पच्छा सत्थातीया जाव[5] 'अगणिजीवसरीरा ति'[6] वत्तव्वं सिया ॥

---

१. °झूसिया अगणिसेविया (अ, स)। वृत्तौ अगणिझूसिया इति पदस्य अग्निना सेवितानि वा इति [illegible]: आसीत् सएव केषुचित् उत्तरवर्त्यादर्शेषु मूलपाठरूपेण स्वीकृतोभूत्।
२. अगणिकायसरी[illegible] (स)।
३. भ० ५।५१।
४. सिग-खुर-नखज्झामे (अ, ता, स)।
५. भ० ५।५१।
६. अगणि त्ति (अ, स)।

५४. अह णं भंते ! इंगाले, छारिए, भुसे[1], गोमए—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! इंगाले, छारिए, भुसे, गोमए—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च एगिंदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामिया वि जाव[2] पंचिंदियजीवसरीरप्पयोग-परिणामिया[3] वि । तओ पच्छा सत्थातीया जाव[4] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ॥

लवणसमुद्द-पदं

५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवइयं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते ?
एवं नेयव्वं जाव[5] लोगट्ठिई, लोगाणुभावे ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

आउ-पकरण-पडिसंवेदण-पदं

५७. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति भासंति पण्णवेंति परूवेंति[7]—से जहा-नामए जालगंठिया सिया—आणुपुव्विगढिया[8] अणंतरगढिया परंपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-संभारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठइ, एवामेव बहूणं जीवाणं बहूसु आजाति-सहस्सेसु[9] बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति ।
एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ[10], तं जहा—इह-भवियाउयं च, परभवियाउयं च ।
जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ[11] ।
•जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, तं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।

१. तुसे (क) ।
२. भ० २।१३६ ।
३. °परिणता (म) ।
४. भ० ५।५१ ।
५. जी० ३ मंदरोद्देशकः ।
६. भ० १।५१ ।
७. एवं परूवेंति (क, ब, म)।
८. आणुपुव्वि° (ब, स) ।
९. आयति° (क); आयाति° (ब) ।
१०. पडिसंवेदयति (अ, क, ब, म) ।
११. सं० पा०—पडिसंवेदेइ जाव से ।

इहभवियाउयस्स पडिसंवेदणयाए परभवियाउयं पडिसंवेदेइ,
परभवियाउयस्स पडिसंवेदणयाए इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दो आउयाइं पडिसंवेदेइ, तं जहा—इहभविया-उयं च, परभवियाउयं च° ।।

५८. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं तं अण्णउत्थिया तं चेव जाव परभवियाउयं च । जे ते एवमाहंसु तं मिच्छा, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—से जहानामए जालगंठिया सिया[1]—°आणुपुव्विगढिया अणंतरगढिया परंपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-संभारियत्ताए° अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स बहूहिं आजातिसहस्सेहिं बहूइं आउयसहस्साइं आणुपुव्विगढियाइं जाव चिट्ठंति ।
एगे वि य णं जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ।
जं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ, नो तं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।
जं समयं परभवियाउयं पडिसंवेदेइ, नो तं समयं इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।
इहभवियाउयस्स पडिसंवेदणाए, नो परभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।
परभवियाउयस्स पडिसंवेदणाए, नो इहभवियाउयं पडिसंवेदेइ ।
एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं आउयं पडिसंवेदेइ, तं जहा—इहभवियाउयं वा, परभवियाउयं वा ।।

साउयसंकमण-पदं

५६. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं साउए संकमइ ? निराउए संकमइ ?
गोयमा ! साउए संकमइ, नो निराउए संकमइ ।।

६०. से णं भंते ! आउए[2] कहिं कडे ? कहिं समाइण्णे ?
गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ।।

६१. एवं जाव[3] वेमाणियाणं दंडओ ।।

६२. से नूणं भंते ! जे 'जं भविए जोणिं'[4] उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, तं

१. सं० पा०—सिया जाव अण्णमण्णघडत्ताए ।
२. आउगे (ता) ।
३. पू० प० २ ।
४. विभक्तिपरिणामाद् यो यस्यां योनावुत्पत्तुं योग्य इत्यर्थः (व) ।

जहा—नेरइयाउयं वा[1] ? •तिरिक्खजोणियाउयं वा ? मणुस्साउयं वा ?° देवाउयं वा ?

हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा, तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा देवाउयं वा।

नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा[2], •सक्करप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, बालुयप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, पंकप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, धूमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, तमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा°, अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा।

तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा[3], •बेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, तेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, चउरिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा°।

मणुस्साउयं दुविहं[4] •पकरेइ, तं जहा—सम्मुच्छिममणुस्साउयं वा, गब्भवक्कंतियमणुस्साउयं वा°।

देवाउयं चउव्विहं[5] •पकरेइ, तं जहा—भवणवासिदेवाउयं वा, वाणमंतरदेवाउयं वा, जोइसियदेवाउयं वा, वेमाणियदेवाउयं वा° ॥

६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

चउत्थो उद्देसो

छउमत्थ-केवलीणं सद्दसवण-पदं

६४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहीसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, परिपिरियासद्दाणि[7] वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भंभासद्दाणि वा, होरंभसद्दाणि वा, भेरिसद्दाणि वा, झल्लरीसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, विततााणि वा, घणाणि वा, झुसिराणि[8] वा ?

१. सं० पा०—नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं।
२. सं० पा०—रयणप्पभापुढविणेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा°।
३. सं० पा०—भेदो सव्वो भाणियव्वो।
४. सं० पा०—मणुस्साउयं दुविहं।
५. सं० पा०—देवाउयं चउव्विहं।
६. भ० १।५१।
७. परि° (अ, स)।
८. सुसिराणि (क)।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा ।

ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?

गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सुणेइ[1] ।

•जाइं भंते ! पुट्ठाइं सुणेइ ताइं किं ओगाढाइं सुणेइ ? अणोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! ओगाढाइं सुणेइ, नो अणोगाढाइं सुणेइ ।

जाइं भंते ! ओगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं सुणेइ ? परंपरोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ, नो परंपरोगाढाइं सुणेइ ।

जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणूइं सुणेइ ? बादराइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणूइं पि सुणेइ, बादराइं पि सुणेइ ।

जाइं भंते ! अणूइं पि सुणेइ बादराइं पि सुणेइ ताइं किं उड्ढं सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरियं सुणेइ ?

गोयमा ! उड्ढं पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरियं पि सुणेइ ।

जाइं भंते ! उड्ढं पि सुणेइ अहे वि सुणेइ तिरियं पि सुणेइ ताइं किं आइं सुणेइ ? मज्झे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?

गोयमा ! आइं पि सुणेइ, मज्झे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ ।

जाइं भंते ! आइं पि सुणेइ मज्झे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइं किं सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?

गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ ।

जाइं भंते ! सविसए सुणेइ ताइं किं आणुपुव्विं सुणेइ ? अणाणुपुव्विं सुणेइ ?

गोयमा ! आणुपुव्विं सुणेइ, नो अणाणुपुव्वि सुणेइ ।

जाइं भंते ! आणुपुव्वि सुणेइ ताइं किं तिदिसिं सुणेइ जाव छद्दिसिं सुणेइ ?

गोयमा ! ° नियमा छद्दिसिं सुणेइ ।।

६५. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ।।

६६. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं[2] केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ-पासइ ।।

१. सं० पा०—सुणेइ जाव नियमा । २. ण भंते ! (स) ।

६७. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! केवलीणं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ । एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली ।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली ।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली ।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली ।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स ।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स[2] । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ।।

छउमत्थ-केवलीणं हास-पदं

६८. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
हंता हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ।।

६९. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा, तहा णं केवली वि हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

७०. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसंति वा, उस्सुयायंति वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा ।।

७१. जीवे णं भंते ! हसमाणे वा, उस्सुयमाणे वा कइ[6] कम्मपगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[7] वेमाणिए[8] । पोहत्तएहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

---

१. सं० पा०—तं चेव केवलीणं आरगयं वा पारागयं वा जाव पासइ ।
२. वाचनान्तरे तु 'निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धे' त्ति विशेषणत्रयं ज्ञानदर्शनयोरभीयते (वृ) ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव नो ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।
६. कति (क, ब, म) ।
७. पू० प० २ ।
८. वेमाणिए नेरइया णं भंते ! हसमाणा कइ°

छउमत्थ-केवलीणं निद्दा-पदं

७२. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हंता निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ।।

७३. [1]जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा णं केवली वि निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

७४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा, पयलायंति[2] वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ— जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ।।

७५. जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा, पयलायमाणे वा कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[3] वेमाणिए । पोहत्ति-एसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ।।

गब्भसाहरण-पदं

७६. 'से नूणं भंते ! हरि-नेगमेसी[4] सक्कदूए इत्थीगब्भं सहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ ? गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरइ ? जोणीओ जोणिं साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ।।

७७. पभू णं भंते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए[5] इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा, रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविह-बंधगा । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य (क, व, म, स) ।

१. सं० पा०—जहा हसेज्ज वा तहा नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायंति वा पयलायंति वा, से णं केवलिस्स नत्थि अण्णं तं चेव ।

२. पयलाइंति (स) ।

३. पू० प० २ ।

४. हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (अ, क, ता); हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (स); 'हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी' इति द्वयर्थकं पदं द्वयो र्वाचनायोः संमिश्रणेन जातम् ।

५. सक्कस्स णं दूते (व, स); सक्कस्स दूए (म) ।

हंता पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचि[1] आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा। एसुहुमं[2] च णं साहरेज्ज वा, नीहरेज्ज वा।

अइमुत्तग-पदं

७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते[3] नामं कुमार-समणे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए।।

७९. तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए[5] बहिया संपट्ठिए विहाराए।।

८०. तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहयं वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता 'णाविया मे, णाविया मे' नाविओ विव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि[6] पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ। तं च थेरा अद्दक्खु[7]। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे, से णं भंते! अइमुत्ते कुमार-समणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति[8] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति?

८१. अज्जोति! समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! ममं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए जाव[9] विणीए, से णं अइमुत्ते कुमार-समणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव[10] अंतं करेहिति। तं मा णं अज्जो! तुब्भे अइमुत्तं कुमार-समणं हीलेह निंदह खिसह गरहह अवमण्णह[11]। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह। अइमुत्ते णं कुमार-समणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव।।

८२. तए णं ते थेरा भगवंतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हंति[12], •अगिलाए उवगिण्हंति, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं° वेयावडियं[13] करेंति।।

१. किंचि वि (स)।
२. तेसुहुमं (ता)।
३. अतिमुत्ते (क, ब, म)।
४. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
५. रतहरणमाताए (ता)।
६. उदगंसि कट्टु (क, ता, ब, म, स)।
७. अदक्खु (ता, म)।
८. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं।
९. भ० ५।७८।
१०. भ० २।७३।
११. अवमण्णह परिभवह (वृपा)।
१२. सं० पा०—संगिण्हंति जाव वेयावडियं।
१३. वेदावडियं (ब, म)।

महासुक्कागयदेव-पण्ह-पदं

८३. तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्काश्रो कप्पाश्रो, महासामाणाश्रो[1] विमाणाश्रो दो देवा महिड्ढिया जाव[2] महाणुभागा समणस्स भगवश्रो महावीरस्स श्रंतियं पाउब्भूया। तए णं ते देवा समणं भगवं महावीरं[3] वंदंति नमंसंति, मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं पुच्छंति—

८४. कति णं भंते[4]! देवाणुप्पियाणं श्रंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[5] श्रंतं करेहिंति? तए णं समणे भगवं महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसिं देवाणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! ममं सत्त श्रंतेवासी-सयाइं सिज्झिहिंति जाव श्रंतं करेहिंति।

तए णं ते देवा समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ[6]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा नमंसमाणा श्रभिमुहा[7] •विणएणं पंजलियडा° पज्जुवासंति॥

८५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवश्रो महावीरस्स जेट्ठे श्रंतेवासी इंदभूई नामं श्रणगारे जाव[8] श्रदूरसामंते उड्ढंजाणू[9] •श्रहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा श्रप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तए णं तस्स भगवश्रो गोयमस्स झाणंत-रियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[10] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु दो देवा महिड्ढिया जाव[11] महाणुभागा समणस्स भग-वश्रो महावीरस्स श्रंतियं पाउब्भूया[12], तं नो खलु श्रहं ते देवे[13] जाणामि कयराश्रो कप्पाश्रो वा सग्गाश्रो वा विमाणाश्रो वा कस्स वा श्रत्थस्स श्रट्ठाए इहं हव्वमा-गया? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि नमंसामि जाव[14] पज्जु-वासामि, इमाइं च णं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं संपेहेइ,

---

१. महासमाणाओ (अ, ब, म); महासग्गाश्रो (स)। [illegible] 'महासग्गाओ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु समवायांगसूत्रस्य सप्त-दशसमवायस्य (१८) संदर्भे 'महासामाणाओ' इत्येव पाठः समीचीनोस्ति।

२. भ० ३।४।

३. महावीरं मणसा चेव (अ, स); महावीरं मणसा (ब, म)।

४. × (क, ता, ब, म)।

५. भ० २।७३।

६. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।

७. सं० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासंति।

८. भ० १।६।

९. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ।

१०. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

११. भ० ३।४।

१२. पादुब्भूता (क, ब, म)।

१३. देवा (ता, ब)।

१४. भ० २।३०।

संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासइ ॥

८६. गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—से नूणं तव गोयमा ! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[2] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए, से नूणं गोयमा ! अट्ठे[3] समट्ठे[4] ?
हंता अत्थि । तं गच्छाहि णं गोयमा ! एए चेव देवा इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेहिंति ॥

८७. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

८८. तए णं ते देवा भगवं गोयमं एज्जमाणं[5] पासंति, पासित्ता हट्ठ[6]•तुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव अब्भुवगच्छंति[7] जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति जाव[8] नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ[9] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[10] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं पाउब्भूया । तए णं अम्हे समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, वंदित्ता नमंसित्ता मणसा चेव इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छामो—कइ णं भंते ! देवाणुप्पियाणं अंतेवासीसयाइं सिज्झिहिंति जाव[11] अंतं करेहिंति ? तए णं समणे भगवं महावीरे अम्हेहिं मणसा पुट्ठे अम्हं[12] मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अंतेवासीसयाइं जाव अंतं करेहिंति । तए णं अम्हे समणेणं भगवया महावीरेणं मणसा चेव पुट्ठेणं मणसा चेव इमं एयारूवं वागरणं वागरिया समाणा समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो जाव[13] पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगवं गोयमं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

देवाणं नोसंजयवत्तव्वया-पदं

८९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति जाव[14] एवं वयासी—देवा णं भंते ! संजया ति वत्तव्वं सिया ?

---

१. भ० १।१० ।
२. भ० ५।८५ ।
३. अत्थे (अ, क, ता, स) ।
४. समत्थे (अ) ।
५. इज्जमाणं (ब) ।
६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
७. पच्चुवगच्छंति २ (अ, क, ता, ब) ।
८. भ० १।१० ।
९. महासग्गाओ (स) ।
१०. भ० ३।४ ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अम्हे (क, म) ।
१३. भ० २।३० ।
१४. भ० १।१० ।

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अब्भक्खाणमेयं देवाणं[1] ॥

६०. देवा णं भंते ! असंजता[2] ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । निट्ठुरवयणमेयं देवाणं[3] ॥

६१. देवा णं भंते ! णो संजयासंजया ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । असब्भूयमेयं देवाणं ॥

६२. से किं खाइ णं भंते ! देवा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! देवा णं नोसंजया ति वत्तव्वं सिया ॥

देवभासा-पदं

६३. देवा णं भंते ! कयराए भासाए भासंति ? कयरा व भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति । सा वि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ॥

छउमत्थ-केवलीणं नाणभेद-पदं

६४. केवली णं भंते ! अंतकरं वा, अंतिमसरीरियं[4] वा जाणइ-पासइ ?
हंता[5] जाणइ-पासइ ॥

६५. जहा णं भंते ! केवली अंतकरं वा, अंतिमसरीरियं वा जाणइ-पासइ, तहा[6] णं छउमत्थे[7] वि अंतकरं वा, अंतिमसरीरियं वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा ॥

६६. से किं तं सोच्चा ?
सोच्चा णं केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स[8] वा, केवलिसावियाए वा, केवलि-उवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा । से तं सोच्चा ॥

६७. से किं तं पमाणे ?
पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते; तं जहा— पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओगदारे तहा नेयव्वं पमाणं जाव[9] तेण परं सुत्तस्स वि अत्थस्स वि नो अत्तागमे, नो अणंतरागमे, परंपरागमे ॥

१. × (स) ।
२. अस्संजता (अ, क, ता, ब, म) ।
३. × (स) ।
४. °सारीरियं (अ, क, ब, म) ।
५. गोयमा (क, म); हंता गोयमा (स) ।
६. तधा (अ, स) ।
७. छदुमत्थे (ता) ।
८. °सावयस्स (क, ब, म, स) ।
९. अ० सू० ५१६-५५१ ।

९८. केवली णं भंते ! चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ?
हंता[1] जाणइ पासइ ।।

९९. जहा णं भंते ! केवली चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ, तहा णं छउमत्थे वि चरिमकम्मं वा, चरिमणिज्जरं वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोचा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा । जहा णं अंतकरेणं[2] आलावगो[3] तहा चरिमकम्मेण वि अपरिसेसिओ नेयव्वो ।।

केवलीणं पणीय-मण-वइ-पदं

१००. केवली णं भंते ! पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा ?
हंता धारेज्जा ।।

१०१. जण्णं[4] भंते ! केवली पणीयं मणं वा, वइं वा धारेज्जा, तण्णं[5] वेमाणिया देवा जाणंति-पासंति ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति ।।

१०२. से केणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति°, ण पासंति ?
गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा य, अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ णं जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणंति ण पासंति । 'तत्थ णं जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अमाइसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववण्णगा य, परंपरोववण्णगा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववण्णगा ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते परंपरोववण्णगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! परंपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अपज्जत्तगा य, पज्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते णं जाणंति-पासंति ।
से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पज्जत्तगा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणुवउत्ता य उवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणंति, ण पासंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणंति-पासंति, अत्थेगतिया ण जाणंति, ण पासंति'[7] ।।

---

१. गोयमा (अ, म); हता गोयमा (स) ।
२. अंतकरेणं वा (म, स) ।
३. भ० ५।९६, ९७ ।
४. जं णं (ता); जहा णं (म, स) ।
५. तं णं (क, ता, ब, म) ।
६. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव ण ।
७. एवं अणंतर परंपर पज्जत्त अपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता । तत्थ णं जे ते उवउत्ता

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिणा आलाव-पदं

१०३. पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ।।

१०४. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा• करेत्तए ?
गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा पुच्छंति, तण्णं इहगए केवली अट्ठं वा[2] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा• वागरणं वा वागरेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ।।

१०५. जण्णं भंते ! इहगए केवली अट्ठं वा[3] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा• वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासंति ?
हंता जाणंति-पासंति ।।

१०६. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति•-पासंति ?
गोयमा ! तेसि णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति•-पासंति ।।

१०७. अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा ? उवसंतमोहा ? खीणमोहा? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, नो खीणमोहा ।।

केवलीणं इंदियनाण-निसेध-पदं

१०८. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

ते जाणंति पासंति से तेणट्ठेणं तं चेव (अ, क, ता, ब, म, वृ); वाचानान्तरेत्विदं सूत्रं साक्षादेवउपलभ्यते (वृ) ।

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।

२. सं० पा०—अट्ठं वा जाव वागरणं ।

३. सं० पा०—अट्ठं वा जाव वागरेइ ।

४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति ।

५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पासंति ।

१०९. से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ०—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ ? गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ[2]। •एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स निव्वुडे दंसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ० ॥

केवलीणं जोगचंचलया-पदं

११०. केवली णं भंते ! अस्सिं समयंसि[3] जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं० वा ओगाहित्ता णं चिट्ठति, पभू णं केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा[4] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा० ओगाहित्ताणं चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१११. से केणट्ठेणं भंते[5] ! •एवं वुच्चइ०—केवली णं अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु[6] •हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ताणं० चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा[7] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं० चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! केवलिस्स णं वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए चलाइं उवकरणाइं भवंति। चलोवकरणट्ठयाए य णं केवली अस्सिं[8] समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा[9] •पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं० चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव[10] •आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ताणं० चिट्ठित्तए। से तेणट्ठेणं[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं अस्सिं समयंसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगा-

---

१. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव केवली।
२. सं० पा०—जाणइ जाव निव्वुडे दंसणे केवलिस्स से तेणट्ठेणं।
३. समतंसि (ता)।
४. सं० पा०—हत्थं वा जाव ओगाहित्ता।
५. सं० पा०—भंते जाव केवली।
६. सं० पा०—आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति।
७. सं० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठित्तए।
८. जंसि (अ)।
९. सं० पा०—हत्थं वा जाव चिट्ठति।
१०. सं० पा०—चेव जाव चिट्ठित्तए।
११. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव वुच्चइ। केवली णं अस्सिं समयंसि जाव चिट्ठित्तए।

हित्ता णं चिट्ठति, णो णं पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा पायं वा बाहं वा ऊरुं वा ओगाहित्ता णं° चिट्ठित्तए ।।

चोद्दसपुव्वीणं सामत्थ-पदं

११२. पभू णं भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वट्टेत्ता उवदंसेत्तए ?

हंता पभू ।।

११३. से केणट्ठेणं पभू चोद्दसपुव्वी जाव[1] उवदंसेत्तए ?

गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स णं अणंताइं दव्वाइं उक्कारियाभेएणं[2] भिज्जमाणाइं लद्धाइं पत्ताइं अभिसमण्णागयाइं भवंति ।

से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं, पडाओ पडसहस्सं, कडाओ कडसहस्सं, रहाओ रहसहस्सं, छत्ताओ छत्तसहस्सं, दंडाओ दंडसहस्सं अभिनिव्वट्टेत्ता° उवदंसेत्तए ।।

११४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

पंचमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

११५. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं, केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव[5] अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ।।

एवंभूय-अणेवंभूय-वेदणा-पदं

११६. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव[6] परूवेंति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एवं भूयं वेदणं वेदेंति ।।

---

१. भ० ५।११२ ।

२. प्रज्ञापनासूत्रे भाषापदे 'उक्करियाभेए' इति पदं लभ्यते, तत्रापि केषुचिदादर्शेषु उक्कारियाभेए इत्यपि पाठो लभ्यते ।

३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव उवदंसेत्तए ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।२०१-२०६ ।

६. भ० १।४२० ।

११७. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[1] सव्वे सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति। जे ते एवमाहंसु, मिच्छं[2] ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदेणं वेदेंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति ॥

११८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया[4] •पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति° ?
गोयमा ! जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेंति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदेणं वेदेंति।
जे णं पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेंति, ते णं पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवंभूयं वेदणं वेदेंति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवंभूयं वेदणं वेदेंति° ॥

११९. नेरइया णं भंते ! किं एवंभूयं वेदणं वेदेंति ? अणेवभूयं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! नेरइया णं एवंभूयं पि वेदणं वेदेंति, अणेवंभूयं पि वेदणं वेदेंति ॥

१२०. से केणट्ठेणं[6] •भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णं एवंभूयं पि वेदणं वेदेंति, अणेवंभूयं पि वेदणं वेदेंति° ?
गोयमा ? जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेंति, ते णं नेरइया एवंभूयं वेदणं वेदेंति।
जे णं नेरइया जहा कडा कम्मा नो तहा वेदणं वेदेंति, तेणं नेरइया अणेवंभयं वेदणं वेदेंसि। से तेणट्ठेणं ॥

१२१. एवं जाव[7] वेमाणिया ॥

कुलगरादि-पदं

१२२. संसारमंडलं नेयव्वं[8] ॥

१२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

१. भ० ५।११६।
२. मिच्छा (अ, क, ब, म, स)।
३. भ० १।४२१।
४. सं० पा०—तं चेव उच्चारेयव्वं।
५. सं० पा०—तहेव।
६. सं० पा०—तं चेव।
७. पू० प० २।
८. नेयव्वं। जंबूदीवे णं भंते ! इह भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?
गोयमा ! सत्त। एवं तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टिमायरो, इत्थि-

छट्ठो उद्देसो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्णं[2] भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा[3] ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता[4]—एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

१२५. कहण्णं भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता[5], नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं[6] एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६. कहण्णं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता[7] निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णित्ता 'अण्णयरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकारएणं'[8] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

१२७. कहण्णं भंते ! जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता जाव[9] पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेणं मणुण्णेणं पीतिकारएणं'[10] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

रयणं, बलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो; एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नामपरिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, ब, स); एषु आदर्शेषु द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं जातम् । वृत्तिकृता अस्य वाचनान्तरस्य उल्लेखोपि कृतोस्ति, यथा—अथ चेह स्थाने वाचनान्तरे कुलकर तीर्थंकरादि वक्तव्यता दृश्यते, ततश्च 'संसारमंडल' शब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह सूचितेति संभाव्यते (वृ) । पइण्णगसमवाय २१८-२४७ ।

१. भ० १।५१ ।

२. कह णं (अ, ता, म); कहि णं (क); । कह णं (ब) ।

३. गोयमा तिहिं ठाणेहिं तं (ब, स) सर्वत्र; द्रष्टव्यं—ठा० ३।१७-२० ।

४. ०हेत्ता (म) ।

५. अतिवतित्ता (अ, म) ।

६. फासु (अ, क, ता, म, स) ।

७. हीलित्ता (क, ता, ब, म) ।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएणं अणेसणिज्जेणं ति दृश्यते (वृ) ।

९. भ० २।३० ।

१०. वाचनान्रे तु फासुएणं इत्यादि दृश्यते (वृ) ।

कयविक्कए किरिया-पदं

१२८. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, तस्स णं भंते ! 'भंडं अणुगवेसमाणस्स'[1] किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया[2] किरिया कज्जइ ? मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जइ, पारिग्गहिया किरिया कज्जइ, मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।

अह से भंडे अभिसमण्णागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवंति ।।

१२९. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए[3] भंडं साइज्जेजा, भंडे य से अणुवणीए सिया ।

गाहावइस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[4] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

कइयस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसण-किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भंडाओ आरंभिया किरिया कज्जइ 'जाव[5] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया'[6] सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ । कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ।।

१३०. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स[7] °कइए भंडं साइज्जेजा°, भंडे से उवणीए सिया ।

कइयस्स णं भंते ! ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[8] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?

गाहावइस्स वा ताओ भंडाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादंस° किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! कइयस्स ताओ भंडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।

गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ।

१. तं भंडयं गवेस° (ब, म) ।
२. परि° (अ, स) ।
३. कतिए (क, ता, ब, म, स) ।
४. भ० ५।१२८ ।
५. भ० ५।१२८ ।
६. जाव अपच्चक्खाण मिच्छादंसणवत्तिया° (अ, स); जाव मिच्छादंसणवत्तिया° (क, ता, म); जाव मिच्छादंसण° (ब) ।
७. सं० पा०—विक्किणमाणस्स जाव भंडे ।
८. भ० ५।१२८ ।

१३१. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं[1] •विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?
कइयस्स णं भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[2] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गाहावइस्स वा ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! कइयस्स ताओ धणाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जंति । मिच्छादंसणकिरिया भयणाए ।
गाहावइस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति ॥

१३२. गाहावइस्स णं भंते ! भंडं विक्किणमाणस्स कइए भंडं साइज्जेजा, धणे से उवणीए सिया ।
गाहावइस्स णं भंते ! ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव[3] मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
कइयस्स वा ताओ धणाओ किं आरंभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादंसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! गाहावइस्स ताओ धणाओ आरंभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
कइयस्स णं ताओ सव्वाओ पयणुईभवंति° ॥

अगणिकाए महाकम्मादि पदं

१३३. अगणिकाए णं भंते ! अहुणोज्जलिए[4] समाणे महाकम्मतराए चेव[5], महाकिरियातराए चेव, महासवतराए[6] चेव, महावेदणतराए चेव भवइ । अहे णं समए-समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'[7] चरिमकालसमयंसि इंगालब्भूए मुम्मुरब्भूए छारियब्भूए[8], तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

---

१. सं० पा०—भंडं जाव धणे य से अणुवणीए सिया ? एयं पि जहा भंडे उवणीए तहा नेयव्वं ।
चउत्थो आलावगो—'धणे य से उवणीए सिया' जहा पढमो आलावगो—'भंडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो ।
पढम-चउत्थाणं एक्को गमो, बितिय-तइयाणं एक्को गमो ।

२. भ० ५।१२८ ।

३. भ० ५।१२८ ।

४. अहुणुज्जलिए (ता); अहुणुज्जलिए (ब) ।

५. च्चेव (ता) ।

६. महस्सव० (अ, ता, ब) ।

७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (अ,स); वोकसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (ता); वोयसिज्जमाणे २ (म) ।

८. छारब्भूए (अ) ।

चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेयणतराए चेव भवइ ?

हंता गोयमा ! अगणिकाए णं अहुणोज्जलिए समाणे तं चेव ॥

धणुपक्खेवे किरिया-पदं

१३४. पुरिसे णं भंते ! धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ,[1] परामुसित्ता ठाणं[2] ठाइ, ठिच्चा आयतकण्णातयं[3] उसुं करेति, उड्ढं वेहासं उसुं उव्विहइ ।

तए[4] णं से उसू[5] उड्ढं वेहासं[6] उव्विहिए समाणे जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणइ वत्तेति लेसेति[7] संघाएइ संघट्टेति परितावेइ किलामेइ[8], ठाणाओ ठाणं संकामेइ, जीवियाओ ववरोवेइ । तए णं भंते ! से पुरिसे कति-किरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे धणुं परामुसइ[9], °उसुं परामुसइ, ठाणं ठाइ, आयतकण्णातयं उसुं करेति, उड्ढं वेहासं उसुं° उव्विहइ, तावं च णं से पुरिसे काइयाए[10] °अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारियावणियाए°, पाणाइवाय-किरियाए— पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा[11] । एवं धणुपट्ठे[12] पंचहिं किरियाहिं, जीवा पंचहिं, ण्हारू पंचहिं, उसू पंचहिं—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहिं ॥

१३५. अहे[13] णं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसंभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव[14] जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[15] चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहिं किरियाहिं, धणुपट्ठे[16] चउहिं,

१. परामसइ (ब, म) ।
२. वेसाहं ठाणं (उ० १।२२) ।
३. °कण्णाइयं (अ, स); कण्णाययं (म, उ० १।२२) ।
४. ततो (क, ता, ब, स) ।
५. उसुं (स) ।
६. वेहासे (ता) ।
७. लेस्सेति (अ, ब, स) ।
८. किलोमेह उद्दवेह (भ० ८।२८७) ।
९. सं० पा०—परामुसइ जाव उव्विहइ ।
१०. सं० पा०—काइयाए जाव पाणाइवाय° ।
११. पुट्ठे (अ, ता, ब, म, स); पट्ठो (क) । अत्र जीवा इति कर्तृपदं बहुवचनान्तमस्ति तेन 'पुट्ठा' इति पदं स्वीकृतम् ।
१२. धणू° (अ, ता, स); धणूपिट्ठे (ब) ।
१३. अघे (ता) ।
१४. भ० ५।१३४ ।
१५. भ० ५।१३४ ।
१६. °पुट्ठे (अ, म, स) ।

जीवा चउहिं, ण्हारू चउहिं, उसू पंचहिं—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पंचहिं। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे[1] वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा॥

[illegible]वय-पदं

१३६. [illegible] णं भंते! एवमातिक्खंति जाव[2] परूवेंति—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणसयाइं बहुसमाइण्णे मणुयलोए[3] मणुस्सेहिं॥

१३७. से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमातिक्खंति जाव[4] बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। जे ते एवमाहंसु, 'मिच्छं ते एवमाहंसु'[5]। अहं पुण गोयमा! एव-माइक्खामि[6] °जाव[7] परूवेमि—से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया°, एवामेव जाव चत्तारि पंच जोयणस-याइं बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहिं॥

नेर[illegible]यविउव्वणा-पदं

१३८. नेरइया णं भंते! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए? पुहत्तं[8] पभू विउव्वित्तए?

गोयमा! एगत्तं पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तंपि पहू विउव्वित्तए। जहा जीवा-भिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव[9] विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स कायं अभिहण-माणा-अभिहणमाणा वेयणं उदीरेंति—उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं फरुसं निट्ठुरं चंडं तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं॥

आ[illegible]कम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति मणं पहारेत्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते[10] कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा॥

१४०. एएणं गमेणं नेयव्वं—कीयगडं[11], ठवियं[12], रइयं[13], कंतारभत्तं 'दुब्भिक्खभत्तं, वद्दलियाभत्तं'[14], गिलाणभत्तं, सेज्जायरपिंडं, रायपिंडं[15]॥

---

१. ओवग्गहे (अ)।
२. भ० १।४२०।
३. मणुस्स° (ता)।
४. भ० ५।१३६।
५. मिच्छा (अ, क, ब, म, स)।
६. सं० पा०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव।
७. भ० १।४२१।
८. पहुत्तं (ता)।
९. जी० ३; नेरइय-उद्देसो २।
१०. °लोतिय° (अ, स)।
११. कीयकडं (क, ब); उद्देसियं कीयकडं (ता)
१२. ठवियकं (क, ता); ठवितकडं (ब)।
१३. रतियकं (क, ब); रइयकं (ता)।
१४. °वत्तं वद्दलियावत्तं (ब)।
१५. × (क)।

१४१. आहाकम्मं 'अणवज्जे' त्ति[1] सयमेव परिभुंजित्ता भवति, से णं तस्स ठाणस्स[2] •अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ— नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°— अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४२. एयं पि तेह चेव जाव[3] रायपिंडं ॥

१४३. आहाकम्मं[4] 'अणवज्जे' त्ति अण्णमण्णस्स अणुप्पदावइत्ता भवइ, से णं तस्स[5] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ—अत्थि तस्स आराहणा° ॥

१४४. एयं पि तह चेव जाव[6] रायपिंडं ॥

१४५. आहाकम्मं णं 'अणवज्जे' त्ति बहुजणमज्झे पण्णवइत्ता भवति, से णं तस्स[7] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४६. एयं पि तह चेव जाव[8] रायपिंडं ॥

आयरिय-उवज्झायस्स सिद्धि-पदं

१४७. आयरिय- उवज्झाए णं भंते ! सविसयंसि गणं अगिलाए संगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव[9] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमति ॥

अब्भक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं

१४८. जे णं भंते ! परं अलिएणं असब्भूएणं अब्भक्खाणेणं[10] अब्भक्खाति[11], तस्स णं कहप्पगारा कम्मा कज्जंति ?

गोयमा ! जे णं परं अलिएणं, असंतएणं[12] अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाति, तस्स णं तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जंति। जत्थेव णं अभिसमागच्छति तत्थेव णं पडिसंवेदेति, तओ से पच्छा वेदेति ॥

१४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[13] ॥

१. त्ति बहुजणस्स मज्झे भासित्ता (अ, स)।
२. सं० पा०—ठाणस्स जाव अत्थि।
३. भ० ५।१४०।
४. अहाकम्मं (अ)।
५. सं० पा०—तस्स°।
६. भ० ५।१४०।
७. सं० पा०—तस्स जाव अत्थि।
८. भ० ५।१४०।
९. भ० १।४४।
१०. × (अ)।
११. अब्भाइक्खइ (क, ता, ब)।
१२. असंतवयणेणं (म, स)।
१३. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयति वेयति[1] °चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ°, तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति; सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ॥

१५१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव[2] तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति जाव तं तं भावं परिणमति । सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥

१५२. तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति ॥

१५३. चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति । सिय देसा एयंति, नो देसा एयंति ।
जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंधाण छेदादि-पदं

१५४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा[3] ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१५५. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥

१५६. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

१. सं० पा०—वेयति जाव तं ।
२. भ० ५।१५० ।
३. ओगाहिज्ज (क, ब, म, स) ।

१५७. [1]परमाणुपोग्गले णं भंते ? अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
से णं भंते ! पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
से णं भंते ! गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।
से णं भंते ! उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।।

१५८. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ।।

१५९. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए झियाएज्जा, अत्थेगइए नो झियाएज्जा ।
से णं भंते ! पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ।
हंता वीइवएज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए उल्ले सिया, अत्थेगइए नो उल्ले सिया ।
से णं भंते ! गंगाए महानईए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हंता हव्वमागच्छेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

१. सं० पा०—एवं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं तहिं नवरं झियाएज्ज भाणियव्वं । एवं पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं तहिं उल्ले सिया । एवं गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा तहिं विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा । से णं तत्थ परियावज्जेज्ज ।

गोयमा ! अत्थेगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो विणिहायमावज्जेज्जा ।

से णं भंते ! उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा ।

से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए परियावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो परियावज्जेज्जा° ।।

परमाणु-खंधाणं सअड्ढसमज्झादि-पदं

१६०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सअड्ढे[1] समज्झे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ।।

१६१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे ? उदाहु[2] अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्झे नो अपएसे ।।

१६२. तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा ।

गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे ।।

१६३. जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा ।।

१६४. संखेज्जपएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे ? पुच्छा ।

गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपएसे । जहा संखेज्जपएसिओ तहा असंखेज्जपएसिओ वि, अणंतपएसिओ वि ।।

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५. परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं—

१. देसेणं देसं फुसइ २. देसेहिं देसे फुसइ ३. देसेणं सव्वं फुसइ ४. देसेहिं देसे फुसइ ५. देसेहिं देसे फुसइ ६. देसेहिं सव्वं फुसइ ७. सव्वेणं देसं फुसइ ८. सव्वेणं देसे फुसइ ९. सव्वेणं सव्वं फुसइ[3] ?

गोयमा ! १. नो देसेणं देसं फुसइ २. नो देसेणं देसे फुसइ ३. नो देसेणं सव्वं फुसइ ४. नो देसेहिं देसं फुसइ ५. नो देसेहिं देसे फुसइ ६. नो देसेहिं सव्वं

१. सअद्धे (ब) ।
२. उआहु (ब) ।
३. (१) देशेन देशम् (२) देशेन देशान् (३) देशेन सर्वम् (४) देशैः देशम् (५) देशैः देशान् (६) देशैः सर्वम् (७) सर्वेण देशम् (८) सर्वेण देशान् (९) सर्वेण सर्वम् ।

फुसइ ७. नो सव्वेणं देसं फुसइ ८. नो सव्वेणं देसे फुसइ ९. सव्वेणं सव्वं फुसइ ।।

१६६. परमाणुपोग्गले[1] दुप्पएसियं फुसमाणे सत्तम-णवमेहिं फुसइ ।
परमाणुपोग्गले तिप्पएसियं फुसमाणे [illegible]हिं[2] तिहिं फुसइ ।
जहा परमाणुपोग्गले तिप्पएसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपएसिओ ।।

१६७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं देसेणं देसं फुसइ ? पुच्छा ।
ततिय-नवमेहिं फुसइ ।
दुप्पएसिओ दुप्पएसियं फुसमाणे पढम-ततिय-सत्तम-नवमेहिं फुसइ ।
दुप्पएसिओ तिप्पएसियं फुसमाणे आदिल्लएहि य, पच्छिल्लएहि य तिहिं[3] फुसइ, मज्झिमएहिं तिहिं विपडिसेहेयव्वं ।
दुप्पएसिओ जहा तिप्पएसियं फुसाविओ एवं फुसावेयव्वो जाव अणंतपएसियं ।।

१६८. तिपएसिए णं भंते ! खंधे परमाणुपोग्गलं फुसमाणे पुच्छा ।
ततिय-छट्ठ-नवमेहिं फुसइ ।
तिपएसिओ दुपएसियं फुसमाणे पढमएणं, ततिएणं, चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-नवमेहिं फुसइ ।
तिपएसिओ तिपएसियं फुसमाणे सव्वेसु वि ठाणेसु फुसइ ।
जहा तिपएसिओ तिपएसियं फुसाविओ एवं तिप्पएसिओ जाव अणंतपएसिएणं संजोएयव्वो ।
जहा तिपएसिओ एवं जाव अणंतपएसिओ भाणियव्वो ।।

परमाणु-खंधाणं संठिइ-पदं

१६९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवं जाव अणंतपएसिओ ।।

१७०. एगपएसोगाढे णं भंते ! पोग्गले सेए[4] तम्मि वा ठाणे वा, अण्णम्मि वा ठाणे कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं । एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे ।।

१. एवं पर० (क, ता) ।
२. अन्त्यैः ।
३. × (क, ता) ।
४. सेते (ता) ।

१७१. एगपएसोगाढे णं भंते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। एवं जाव असंखेज्ज-पएसोगाढे ।।

१७२. एगगुणकालए णं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवं जाव अणंत-गुणकालए ।
एवं वण्ण-गंध-रस-फास जाव[1] अणंतगुणलुक्खे । एवं सुहुमपरिणए पोग्गले, एवं बादरपरिणए पोग्गले ।।

१७३. सद्दपरिणए णं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ।।

१७४. असद्दपरिणए[2] °णं भंते ! पोग्गले कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं° ।।

परमाणु-खंधाणं अंतरकाल-पदं

१७५. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।।

१७६. दुप्पएसियस्स णं भंते ! खंधस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । एवं जाव अणंतपएसिओ ।।

१७७. एगपएसोगाढस्स णं भंते ! पोग्गलस्स सेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवं जाव असंखेज्ज-पएसोगाढे ।।

१७८. एगपएसोगाढस्स णं भंते । पोग्गलस्स निरेयस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं । एवं जाव असंखेज्जपएसोगाढे ।
वण्ण-गंध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाणं—एतेसिं 'जं चेव'[3] संचिट्ठणा तं चेव अंतरं पि भाणियव्वं[4] ।।

१७९. सद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।।

१८०. असद्दपरिणयस्स णं भंते ! पोग्गलस्स अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ।।

१. प० १ ।
२. सं० पा०—असद्दपरिणए जहा एगगुण-कालए ।
३. जच्चेव (अ, क, ता, ब, म) ।
४. भ० ५।१७२ ।

परमाणु-खंधाणं परोप्परं अप्पाबहुयत्त-पदं

१८१. एयस्स णं भंते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए, असंखेज्जगुणे, दव्वट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असंखेज्जगुणे।

संगहणी-गाहा

खेत्तोगाहणदव्वे, भावट्ठाणाउयं च अप्प-बहुं।
खेत्ते सव्वत्थोवे, सेसा ठाणा असंखेज्जगुणा ॥१॥

जीवाणं सारंभ सपरिग्गह-पदं

१८२. नेरइया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा।

१८३. से केणट्ठेणं[2] •भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा° अपरिग्गहा[3] ?
गोयमा ! नेरइया णं पुढविकायं समारंभंति[4], •आउकायं समारंभंति, तेउकायं समारंभंति, वाउकायं समारंभंति, वणस्सइकायं समारंभंति° तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा°॥

१८४. असुरकुमारा णं भंते ! किं सारंभा ? पुच्छा।
गोयमा ! असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा॥

१८५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमारा णं पुढविकायं समारंभंति जाव[6] तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवंति, आसण-सयण-भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, सचित्ताचित्त-मीसयाइं[7] दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति। से तेणट्ठेणं[8]

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव अपरिग्गहा।
३. नो अपरि° (ता)।
४. सं० पा०—समारंभंति जाव तसकायं।
५. सं० पा०—तं चेव।
६. भ० ५।१८३।
७. मिस्सियाइं (ब); मीसजाइं (क)
८. सं० पा०—तहेव।

°गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा° ।।

१८६. एवं जाव[1] थणियकुमारा । एगिंदिया जहा[2] नेरइया ।।

१८७. बेइंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
तं चेव[3] बेइंदिया णं पुढविकायं समारंभंति जाव[4] तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, बाहिरा[5] भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति'[6] ।।

१८८. एवं जाव[7] चउरिंदिया ।।

१८९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
तं चेव जाव[8] कम्मा परिग्गहिया भवंति, टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवंति, उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल[9]-वप्पिणा परिग्गहिया भवंति, अगड-तडाग[10]-दह-नईओ वावी-पुक्खरिणीदीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आरामुज्जाण[11]-काणणा वणा वणसंडा वणराईओ[12] परिग्गहियाओ भवंति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवंति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवंति, पासाद-घर-सरण-लेण- आवणा परिग्गहिया भवंति, सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवंति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्ख-जोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवंति, आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । से तेणट्ठेणं ।।

१९०. जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा[13] ।।

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।१८२, १८३ ।
३. ४. भ० ५।१८३ ।
५. बाहिरिया (अ, क, ब, म, स) ।
६. × (अ) ।
७. भ० २।१३८ ।
८. भ० ५।१८३ ।
९. पिल्लव (ब) ।
१०. तलाग (क, ता, ब, म) ।
११. °मुज्जाणा (क, ब, स) ।
१२. वणरातीओ (अ, ता, स) ।
१३. भ० ५।१८४, १८५ ।

हेउ-पदं

१९१. पंच[1] हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं जाणइ, हेउं पासइ, हेउं बुज्झइ, हेउं अभिसमागच्छइ, हेउं छउमत्थमरणं मरइ ॥

१९२. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउणा जाणइ जाव[2] हेउणा छउमत्थमरणं मरइ ॥

१९३. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउं ण जाणइ जाव[3] हेउं अण्णाणमरणं मरइ ॥

१९४. पंच हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउणा ण जाणइ जाव[4] हेउणा अण्णाणमरणं मरइ ॥

१९५. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउं जाणइ जाव[5] अहेउं केवलिमरणं मरइ ॥

१९६. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउणा जाणइ जाव[6] अहेउणा केवलिमरणं मरइ ॥

१९७. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउं न जाणइ जाव[7] अहेउं छउमत्थमरणं मरइ ॥

१९८. पंच अहेऊ पण्णत्ता, तं जहा—अहेउणा न जाणइ जाव[8] अहेउणा छउमत्थमरणं मरइ ॥

१९९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[9] ॥

अट्ठमो उद्देसो

नियंठिपुत्त-नारयपुत्त-पदं

२००. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[10] परिसा पडिगया ॥

२०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नारयपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[11] विहरति ।
तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी नियंठिपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विहरति ।

१. स्थानाङ्गस्य पंचमस्थाने (७५-८२) एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।
२. भ० ५।१९१ ।
३. भ० ५।१९१ ।
४. भ० ५।१९१ ।
५. भ० ५।१९१ ।
६. भ० ५।१९१ ।
७. भ० ५।१९१ ।
८. भ० ५।१९१ ।
९. भ० १।५१ ।
१०. भ० १।४-८ ।
११. भ० १।२८८ ।

तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सव्वपोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ।

२०२. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी— जइ णं ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, किं—

दव्वादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?

खेत्तादेसेणं अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा [1]•समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

कालादेसेणं [2]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

भावादेसेणं [3]•अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?•

तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा,

'खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि'[4] ।।

२०३. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी— जइणं अज्जो ! दव्वादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एवं ते परमाणुपोग्गले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, नो अणड्ढे अमज्झे अपएसे ।

जइ णं अज्जो खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे ।

जइ णं अज्जो ! कालादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगसमयट्ठितीए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[5] ।

१. सं० पा०—तह चेव ।
२. सं० पा०—तं चेव ।
३. सं० पा०—तहेव ।
४. एवं खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्वं (ता) ।
५. सपएसे ३ तं चेव (अ, क, ता, स) ।

जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे'।

अह ते एवं न भवति तो जं वयसि 'दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एवं खेत्तादेसेण वि, काला-देसेण वि, भावादेसेण वि' तं णं मिच्छा ॥

२०४. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं एवं वयासी—नो खलु एवं' देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो-पासामो। जइ णं देवाणुप्पिया नो गिलायंति परिकहित्तए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाणित्तए ॥

२०५. तए णं से नियंठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्तं अणगारं एवं वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता।

खेत्तादेसेण वि' °मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता।

कालादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता। भावादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणंता।°

जे दव्वओ अपएसे से खेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे सिय-अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे।

जे खेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए।

जहा खेत्तओ एवं कालओ, भावओ।

जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे। एवं कालओ, भावओ वि।

जे खेत्तओ सपएसे से दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए।

जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओ वि ॥

२०६. एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं दव्वादेसेणं, खेत्तादेसेणं, कालादेसेणं, भावादेसेणं सपएसाणं अपएसाण य कयरे कयरेहिंतो' °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेणं अपएसा, कालादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं अपएसा असंखेज्जगुणा, खेत्तादेसेणं अपएसा असंखे-

१. सपएसे ३ तं चेव (अ, क, ता, स)।
२. एयं (अ, क, ता, ब); × (स)।
३. सं० पा० खेत्तादेसेण वि एवं चेव कालादेसेण वि भावादेसेण वि एवं चेव।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

ज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेणं सपएसा विसेसाहिया ।।

२०७. तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियंठिपुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

जीवाणं-वुड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पदं

२०८. भंतेत्ति ! भगवं गोयमे समणं[1] •भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—जीवा णं भंते ! किं वड्ढंति ? हायंति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिया ।।

२०९. नेरइया णं भंते ! किं वड्ढंति ? हायंति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायंति वि, अवट्ठिया वि ।।

२१०. जहा नेरइया एवं जाव[2] वेमाणिया ।।

२११. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढंति, नो हायंति, अवट्ठिया वि ।।

११२. जीवा णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्धं ।।

२१३. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ।।

२१४. एवं हायंति वि[3] ।।

२१५. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता ।।

२१६. एवं 'सत्तसु वि[4]' पुढवीसु 'वड्ढंति, हायंति' भाणियव्वं, नवरं—अवट्ठिएसु इमं नाणत्तं, तं जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीसं मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइंदिया[5], वालुयप्पभाए मासं, पंकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ।।

२१७. असुरकुमारा वि वड्ढंति, हायंति जहा नेरइया । अवट्ठिया जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठचत्तालीसं[6] मुहुत्ता ।।

२१८. एवं दसविहा वि ।।

१. सं० पा०—समणं जाव एवं ।
२. पू० प० २ ।
३. वा (अ, क, ता, स) ।
४. सत्त (ता) ।
५. राइंदियाइं (अ, क, ब, म); राइंदिया णं (स) ।
६. अडतालीसं (ता) ।

२१९. एगिंदिया वड्ढंति वि, हायंति वि अवट्ठिया वि। एएहिं तिहिं वि जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं[1] ॥

२२०. बेइंदिया[2] 'वड्ढंति, हायंति' तहेव, अवट्ठिया जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो अंतोमुहुत्ता ॥

२२१. एवं जाव[3] चउरिंदिया ॥

२२२. अवसेसा सव्वे 'वड्ढंति, हायंति' तहेव, अवट्ठियाणं नाणत्तं इमं, तं जहा— संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो अंतोमुहुत्ता, गब्भवक्कंतियाणं चउव्वीसं मुहुत्ता, संमुच्छिममणुस्साणं अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चउवीसं मुहुत्ता, वाणमंतर-जोतिसिय[4]-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीसं मुहुत्ता, सणंकुमारे अट्ठारस राइंदियाइं चत्तालीस य मुहुत्ता, माहिंदे चउवीसं रइंदियाइं वीस य मुहुत्ता, बंभलोए पंचचत्तालीसं राइंदियाइं, लंतए नउइं[5] राइंदियाइं, महासुक्के सट्ठिं[6] राइंदियसयं, सहस्सारे दो राइंदियसयाइं, आणय-पाणयाणं संखेज्जा मासा, आरणच्चुयाणं संखेज्जाइं वासाइं, एवं गेवेज्जदेवा०[7], विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं असंखेज्जाइं वाससहस्साइं, सव्वट्ठसिद्धे पलिओवमस्स संखेज्जइभागो।

एवं भाणियव्वं —'वड्ढंति, हायंति जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं, अवट्ठियाणं जं भणियं'[8] ॥

२२३. सिद्धा णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२२४. केवइयं कालं अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

जीवाणं सोवचय-सावचयादि-पदं

२२५. जीवा णं भंते ! किं सोवचया ? सावचया ? सोवचय-सावचया ? निरुवचय-निरवचया ?

गोयमा ! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया।

एगिंदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहिं वि[9] पदेहिं भाणियव्वा ॥

१. असंखेज्जभागं (क, ब, म)।
२. बेंतिदिया (अ, स)।
३. भ० २।१३८।
४. जोतिस (अ, क, स)।
५. नउयं (अ, स)।
६. सट्ठं (ता, ब)।
७. गेवेज्जग० (ता)।
८. एतद् निगमनवाक्यं तेन पूर्वोक्तस्य पुनरुक्तमस्ति।
९. × (अ, क, स)।

२२६. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ॥

२२७. जीवा णं भंते ! केवतियं कालं निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२२८. नेरइया णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२२९. केवतियं कालं सावचया ?
एवं चेव ॥

२३०. केवतियं कालं सोवचय-सावचया ?
एवं चेव ॥

२३१. केवतियं कालं निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता ।
एगिंदिया सव्वे सोवचय-सावचया सव्वद्धं । सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचय-सावचया वि[1], जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं । अवट्ठिएहिं वक्कंतिकालो भाणियव्वो ॥

२३२. सिद्धा णं भंते ! केवतियं कालं सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अट्ठ समया ॥

२३३. केवतियं कालं निरुवचय-निरवचया ?
जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छ मासा ॥

२३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

१. वि निरुवचय-निरवचया वि (क, ब, स) । २. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

किमिदंरायगिह-पदं

२३५. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[1] एवं वयासी—किमिदं[2] भंते ! नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पुढवी नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आऊ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ[3] ? •किं तेऊ वाऊ वणस्सई नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा नगरं राहगिहं ति पवुच्चइ ? किं जल-थल-बिल-गुह-लेणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं अगड-तडाग दह-नईओ वावी-पुक्खरिणी-दीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं आरामुज्जाण-काणणा वणा वणसंडा वणराईओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं लोही-लोहकडाह-कडुच्छया नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं भवणा नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ? किं सयण-खंभ-भंड°-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ?

गोयमा ! पुढवि वि नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ ।।

२३६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढवी जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं जीवा इ य, अजीवा इ य नगरं रायगिहं ति पवुच्चइ । से तेणट्ठेणं तं चेव ।।

उज्जोय-अंधयार-पदं

२३७. से नूणं भंते ! दिया उज्जोए ? राइं अंधयारे ?

हंता गोयमा[4] ! •दिया उज्जोए, राइं° अंधयारे ।।

---

१. भ० १।४-१० ।

२. किमियं (क); किमितं (ब, म) ।

३. सं० पा०—पवुच्चइ जाव वणस्सई ? जहा—एयणुद्देसए पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्त ।

४. सं० पा०—गोयमा जाव अंधयारे ।

२३८. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं[1] असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेणं ।।

२३९. नेरइयाणं भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! नेरइयाणं नो उज्जोए, अंधयारे ।।

२४०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइयाणं असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेणं ।।

२४१. असुरकुमाराणं भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं उज्जोए, नो अंधयारे ।।

२४२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेणं । जाव[2] थणियकुमाराणं[3] ।।

२४३. पुढविक्काइया जाव[4] तेइंदिया 'जहा नेरइया[5]' ।।

२४४. चउरिंदियाणं भंते ! किं उज्जोए ? अंधयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अंधयारे वि ।।

२४५. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! चउरिंदियाणं सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेणं ।।

२४६. एवं जाव[6] मणुस्साणं ।।

२४७. वाणमंतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा[7] ।।

मणुस्सखेत्ते समयादि-पद[8]

२४८. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं तत्थगयाणं एवं पण्णायए, तं जहा––समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[9] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

२४९. से केणट्ठेणं[9] •भंते ! एवं वुच्चइ––नेरइयाणं तत्थगयाणं नो एवं पण्णायए, तं जहा°––समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं तेसिं एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेणं जाव नो एवं पण्णायए, तं जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ।।

१. रत्तिं (ता, ब, म) ।
२. जाव एवं वुच्चइ जाव (अ, क, ता, ब, म, स)
३. थणियाणं (क, ता, ब, म, स) ।
४. पू० प० २ ।
५. नेरइया जहा (क, ता, ब, म); भ० ५।२३९, २४० ।
६. पू० प० २ ।
७. भ० ५।२४१, २४२ ।
८. ठा० २।३८७-३८९ ।
९. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव समया ।
१०. ठा० २।३८७-३८९ ।

२५०. एवं जाव[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥

२५१. अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं इहगयाणं एवं पण्णायते[2], तं जहा—समया इ वा जाव[3] उस्सप्पिणी इ वा ?
हंता अत्थि ॥

२५२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! इहं तेसिं माणं, इहं तेसिं पमाणं, इहं चेव तेसिं एवं पण्णायते, तं जहा—समया इ वा जाव[4] उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेणं ॥

२५३. वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं[5] ॥

पासावच्चिज्ज-पदं

२५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—से नूणं भंते ! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा ? विगच्छिसु[6] वा, विगच्छंति वा, विगच्छिस्संति वा ? परित्ता राइंदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा ? विगच्छिंसु वा, विगच्छंति वा, विगच्छिस्संति वा ?
हंता अज्जो ! असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया तं चेव ॥

२५५. से केणट्ठेणं जाव विगच्छिस्संति वा ?
से नूणं भे अज्जो ! पासेणं अरहया पुरिसादाणिएणं सासए लोए बुइए—अणादीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले, अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए । तंसि च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पिं विसालंसि, अहे पलियंकसंठियंसि, मज्झे वरवइरविग्गहियंसि, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति । से भूए[7] उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहिं लोक्कइ पलोक्कइ, जे लोक्कइ से लोए ?
हंता भगवं ! से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ—असंखेज्जे लोए अणंता राइंदिया तं चेव ।

१. पू० प० २ ।
२. पण्णायति (अ, क, ब, म); पण्णायइ ता ।
३. ठा० २।३८७-३८९ ।
४. ठा० २।३८७-३८९ ।
५. भ० ५।२४८-२४९ ।
६. विगिच्छिसु (अ, ता, म) ।
७. नूणं (स) ।

तप्पभिइं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणंति सव्वण्णू सव्वदरिसी ॥

२५६. तए णं ते थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

२५७. तए णं ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव[1] चरिमेहिं उस्सास-निस्सासेहिं सिद्धा[2] °बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्थेगतिया देवलोएसु[3] उववण्णा ॥

देवलोय-पदं

२५८. कइविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी 'वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियभेदेणं'[4] ।

भवणवासी दसविहा, वाणमंतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पंचविहा वेमाणिया दुविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिदं रायगिहं ति य, उज्जोए अंधयार-समए य ।
पासंतिवासिपुच्छा, रातिंदिय देवलोगा य ॥१॥

२५९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

दसमो उद्देसो

२६०. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ[5] तहा नेयव्वो एसो वि, नवरं—चंदिमा भाणियव्वा ॥

१. भ० १।४३३ ।
२. सं० पा०—सिद्धा जाव सव्व° ।
३. देवा देवलोएसु (अ, क, ता, ब, म) ।
४. वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेणं (अ, ता, म) ।
५. भ० १।५१ ।
६. अस्यैव शतकस्य ।

छट्ठं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. वेदण २. आहार ३. महस्सवे य ४. सपदेश ५. तमुए[1] ६. भविए ।
७. साली ८. पुढवी ९. 'कम्म १०. अण्णउत्थि'[2] दस छट्ठगम्मि सए ॥१॥

पसत्थनिज्जराए सेयत्त-पदं

१. से नूणं भंते ! जे महावेदणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?
हंता गोयमा ! जे महावेदणे[3] से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए० ॥

२. छट्ठ-सत्तमासु णं भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेदणा ?
हंता महावेदणा ॥

३. ते णं भंते ! समणेहिंतो निग्गंथेहिंतो महानिज्जरतरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४. से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे महावेदणे[4] से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे० पसत्थ-निज्जराए ?
गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्था सिया—एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खंजणरागरत्ते । एएसि णं गोयमा ! दोण्हं वत्थाणं कयरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव; कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव,

१. तमुयाए (क्व०) ।
२. कम्मण्णउत्थि (क, ता, ब, म) ।
३. सं० पा०—एवं चेव ।
४. सं० पा०—महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव; जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खंजणरागरत्ते ?

भगवं ! तत्थ णं जे से[1] कद्दमरागरत्ते, से णं वत्थे[2] दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं[3], सिलिट्ठीकयाइं[4], खिलीभूताइं[5] भवंति । संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणिं आउडेमाणे[6] महया-महया सद्देणं, महया-महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं[7], •चिक्कणीकयाइं, सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइं भवंति । संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा,° नो महापज्जवसाणा[8] भवंति ।

भगवं ! तत्थ जे से[9] खंजणरागरत्ते, से णं वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं[10], विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तणहत्थयं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा !

से सुक्के तणहत्थए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं[11], •सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवंति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदु[12] •पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिंदु तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ? °

हंता विद्धंसमागच्छइ ।

१. से वत्थे (क, ब, म) ।
२. भंते (ब, म) ।
३. × (अ) ।
४. सिढिलीकयाइं (म, स) ।
५. खिलीकयाइं (अ, स) ।
६. आकोडेमाणे (अ, क, ता, ब, म, स) ।
७. सं० पा०—गाढीकयाइं जाव नो ।
८. °साणाइं (अ, स) ।
९. से वत्थे (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. कडाइं (अ, क, ता, ब, म, स) ।
११. सं० पा०—कम्माइं जाव महा° ।
१२. सं० पा०—उदगबिंदु जाव हंता ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं[1] अहाबादराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवंति। से तेणट्ठेणं जे महावेदणे से महानिज्जरे[2] •जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थ° निज्जराए।।

करण-पद[3]

५. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।।

६. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।।

७. एवं पंचिंदियाणं सव्वेसिं चउव्विहे करणे पण्णत्ते।
एगिंदियाणं दुविहे—कायकरणे य, कम्मकरणे य।
विगलिंदियाणं तिविहे—वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे।

८. नेरइयाणं भंते ! किं करणओ असायं वेदणं वेदेंति ? अकरणओ असायं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! नेरइया णं करणओ असायं वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ असायं वेदणं वेदेंति।।

९. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरइया णं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं चउव्विहेणं असुभेणं करणेणं नेरइया करणओ अस्सायं वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ। से तेणट्ठेणं।।

१०. असुरकुमारा णं किं करणओ ? अकरणओ ?
गोयमा ! करणओ, नो अकरणओ।।

११. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! असुरकुमाराणं चउव्विहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएणं सुभेणं करणेणं असुरकुमारा करणओ सातं वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ।।

१२. एवं जाव[1] थणियकुमारा।।

१. सं० पा०—निग्गंथाणं जाव महा°।
२. सं० पा०—महानिज्जरे जाव निज्जराए।
३. पू० प० २।

१३. पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं—इच्चेएणं सुभासुभेणं[1] करणेणं पुढविक्का-इया करणओ वेमायाए वेदणं वेदेंति, नो अकरणओ ।।

१४. ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेणं वेमायाए[2] ।
देवा सुभेणं सायं ।।

महावेदणा-महानिज्जरा-चउभंग-पदं

१५. जीवा णं भंते ! किं महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा महा-वेदणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा अप्पनिजरा ।।

१६. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे । छट्ठ-सत्तमासु[3] पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा । सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे । अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ।।

१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।

संगहणी-गाहा

महावेदणे य वत्थे, कद्दम-खंजणकए य अहिगरणी ।
तणहत्थे य कवल्ले, करण-महावेदणा जीवा[5] ।।१।।

१. असुभेणं (म) ।
२. विविधमात्रया कदाचित् साताम्, कदाचित् असातामित्यर्थः (वृ) ।
३. सत्तमीसु (क, ता, ब, म) ।
४. म० १।५१ ।
५. अतोग्रे 'सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति' पाठः सर्वेषु आदर्शेषु अस्ति, किन्तु संग्रहणी-गाथाया अनंतरं अस्य किं प्रयोजनं न ज्ञायते ।

बीओ उद्देसो

१८. रायगिहं नगरं जाव[1] एवं वयासी—आहारुद्देसओ जो पण्णवणाए[2] सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

तइओ उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. बहुकम्म २. वत्थपोग्गल-पयोगसा-वीससा य ३. सादीए ।
४. कम्मट्ठिति ५. त्थि ६. संजय ७. सम्मदिट्ठी य ८. सन्नी य ॥१॥
९. भविए १०. दंसण ११. पज्जत्त १२. भासय १३. परित्ते १४. नाण १५. जोगेय ।
१६, १७. उवओगाहारए १८. सुहुम १९. चरिमबंधे य २०. अप्पबहुं ॥२॥

महाकम्मादीणं पोग्गलबंधादि-पदं

२०. से नूणं भंते ! 'महाकम्मस्स, महाकिरियस्स, महासवस्स[4][5], 'महावेदणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जंति; सया समियं पोग्गला बज्झंति, सया समियं पोग्गला चिज्जंति, सया समियं पोग्गला उवचिज्जंति; सया समियं च णं तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए—नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?
हंता गोयमा ! महाकम्मस्स तं चेव ॥

२१. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा, धोयस्स वा, तंतुग्गयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झंति, सव्वओ पोग्गला चिज्जंति जाव[6] परिणमंति से तेणट्ठेणं ॥

---

१. भ० १।४-१० ।
२. प० २८ ।
३. भ० १।५१ ।
४. महस्सवस्स (ता, म) ।
५. महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स (अ); महासवस्स, महाकम्मस्स महाकिरियस्स (क, ता, म, स) ।
६. भ० ६।२० ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२. से नूणं भंते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जंति, सव्वओ पोग्गला छिज्जंति, सव्वओ पोग्गला विद्धंसंति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धंसंति; सया समियं पोग्गला भिज्जंति, सया समियं पोग्गला छिज्जंति, सया समियं पोग्गला विद्धंस्संति, सया समियं पोग्गला परिविद्धंस्संति; सया समियं च णं तस्स आया सुरूवत्ताए[१] •सुवण्णत्ताए सुगंधत्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए°, सुहत्ताए —नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?

हंता गोयमा ! जाव परिणमंति ॥

२३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पंकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स[२] वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वेमाणस्स[३] सव्वओ पोग्गला भिज्जंति जाव[४] परिणमंति। से तेणट्ठेणं ॥

कम्मोवचय-पदं

२४. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥

२५. जहा णं भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा णं 'जीवाणं कम्मोवचए'[५] किं पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा[६], नो वीससा ॥

२६. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जीवाणं तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे। इच्चेएणं तिविहेणं पयोगेणं जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा।

एवं सव्वेसिं पंचिंदियाणं तिविहे पयोगे भाणियव्वे।

पुढवीकाइयाणं एगविहेणं पयोगेणं, एवं जाव[७] वणस्सइकाइयाणं।

विगलिंदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—वइपयोगे,[८] कायपयोगे य।

१. सं० पा०—पसत्थं नेयव्वं जाव सुहत्ताए।
२. रतिल्लियस्स (ब, म, स)।
३. धोव्व° (अ, क, ब, म)।
४. भ० ६।२२।
५. भंते ! जीवस्स पुग्गलोवचए (ब)।
६. पओगसा (स)।
७. भ० १।४३७।
८. वय° (क, ब, म, स)।

इच्चेएणं दुविहेणं पयोगेणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा•, नो वीससा। 'एवं जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाणं'[2] ।।

कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पदं

२७. वत्थस्स णं भंते ! पोग्गलोवचए किं सादीए सपज्जवसिए ? सादीए अपज्जवसिए ? अणादीए सपज्जवसिए ? अणादीए अपज्जवसिए ?
गोयमा ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए ।।

२८. जहा णं भंते ! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा णं जीवाणं कम्मोवचए पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतियाणं जीवाणं कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाणं अणादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाणं अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव णं जीवाणं कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए ।।

२९. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! इरियावहियबंधयस्स[3] कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए। से तेणट्ठेणं ।।

जीवाणं सादि-अनादित्त-पदं

३०. वत्थे णं भंते ! किं सादीए सपज्जवसिए—चउभंगो ?
गोयमा ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा 'तिण्णि वि'[4] पडिसेहेयव्वा ।।

३१. जहा णं भंते ! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा णं जीवा किं सादीया सपज्जवसिया ? चउभंगो—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया सादीया सपज्जवसिया—चत्तारि वि भाणियव्वा ।।

३२. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा गतिरागतिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, सिद्धा गतिं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, भवसिद्धिया लद्धिं पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया। से तेणट्ठेणं ।।

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
२. एतद् द्विरुक्तमिव आभाति।
३. रिया° (अ, ता, ब, म)।
४. × (अ); तिण्णि (क, ता, ब, म)।

कम्मपगडी बंध विवेयण-पदं

३३. कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. नाणावरणिज्जं २. दरिसणावरणिज्जं[1] •३. वेदणिज्जं ४. मोहणिज्जं ५. आउगं ६. नामं ७. गोयं° ८. अंतराइयं ॥

३४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालं बंधट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
[2]•दरिसणावरणिज्जं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
वेदणिज्जं जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं[3] •तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
मोहण्ज्जिं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती – कम्मनिसेओ ।
आउगं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
नाम-गोयाणं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
अंतराइयं[4] •जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ॥

३५. नाणावरणिज्जं[5] णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, नपुंसओ वि बंधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ सिय बंधइ सिय नो बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ॥

३६. आउगं णं भंते ! कम्मं किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसओ बंधइ ? 'नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ बंधइ ?'[6]

१. दंसणा° (ब); सं० पा०—दरिसणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ।
२. सं० पा०—एवं दरिसणावरणिज्जं पि ।
३. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
४. सं० पा०—जहा नाणावरणिज्जं ।
५. नाणावरणिज्जे (अ, स) ।
६. पुच्छा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! इत्थी सिय बंधइ, सिय नो बंधइ ।[1] •पुरिसो सिय बंधइ, सिय नो बंधइ । नपुंसओ सिय बंधइ, सिय नो बंधइ ।° नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसओ न बंधइ ॥

३७. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं संजए बंधइ ? अस्संजए बंधइ ? संजयासंजए बंधइ ? नोसंजए नोअसंजए नोसंजयासंजए बंधइ ?
गोयमा ! संजए सिय बंधइ, सिय नो बंधइ । अस्संजए बंधइ, संजयासंजए वि बंधइ । नोसंजए नोअस्संजए नो संजयासंजए न बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

३८. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सम्मदिट्ठी बंधइ ? मिच्छदिट्ठी[2] बंधइ ? सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बंधइ, सिय नो बंधइ । मिच्छदिट्ठी बंधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बंधइ ॥

३९. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सण्णी बंधइ ? असण्णी बंधइ ? नोसण्णी नोअसण्णी बंधइ ?
गोयमा ! सण्णी सिय बंधइ, सिय नो बंधइ । असण्णी बंधइ । नोसण्णी नोअसण्णी न बंधइ ।
एवं वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ । वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला दो बंधंति, उवरिल्ले भयणाए । आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ॥

४०. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं भवसिद्धिए बंधइ ? अभवसिद्धिए बंधइ ? नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए बंधइ ?
गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए, अभवसिद्धिए बंधइ । नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए न बंधइ ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए । उवरिल्ले न बंधइ ॥

४१. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं चक्खुदंसणी बंधइ ? अचक्खुदंसणी बंधइ ? ओहिदंसणी बंधइ ? केवलदंसणी बंधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला तिण्णि बंधंति, केवलदंसणी भयणाए ॥

१. सं० पा०—एवं तिण्णि वि भाणियव्वा । २. मिच्छा° (क) ।

४२. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं पज्जत्तए बंधइ ? अपज्जत्तए बंधइ ? नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए बंधइ ?
गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बंधइ। नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए न बंधइ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगं हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बंधइ॥

४३. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं भासए बंधइ ? अभासए बंधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्जं भासए बंधइ, अभासए भयणाए॥

४४. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं परित्ते बंधइ ? अपरित्ते बंधइ ? नोपरित्ते नोअपरित्ते बंधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बंधइ। नोपरित्ते नोअपरित्ते न बंधइ। एवं आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ। आउयं[1] परित्ते वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न बंधइ॥

४५. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं आभिणिबोहियनाणी बंधइ ? सुयनाणी बंधइ ? ओहिनाणी बंधइ ? मणपज्जवनाणी बंधइ ? केवलनाणी बंधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए। केवलनाणी न बंधइ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला चत्तारि बंधंति, केवलनाणी भयणाए॥

४६. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं मइअण्णाणी बंधइ ? सुयअण्णाणी बंधइ ? विभंगनाणी बंधइ ?
गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बंधंति, आउगं भयणाए॥

४७. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं मणजोगी बंधइ ? वइजोगी[2] बंधइ ? कायजोगी बंधइ ? अजोगी बंधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बंधइ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्जं हेट्ठिल्ला बंधंति, अजोगी न बंधइ॥

४८. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सागारोवउत्ते[3] बंधइ ? अणागारोवउत्ते बंधइ ?
गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए॥

४९. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं आहारए बंधइ ? अणाहारए बंधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एवं वेदणिज्जाउयवज्जाणं छण्हं। वेदणिज्जं आहारए बंधइ, अणाहारए भयणाए। आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न बंधइ॥

१. आउए (अ, ब, स)।
२. वय° (म, स)।
३. सागारोवयुत्ते (अ, स)।

५०. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं सुहुमे बंधइ ? बादरे बंधइ ? नोसुहुमे नोबादरे बंधइ ?
गोयमा ! सुहुमे बंधइ, बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ।
एवं आउगवज्जाओ सत्त वि। आउगं सुहुमे बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बंधइ ॥

५१. नाणावरणिज्जं णं भंते ! कम्मं किं चरिमे बंधइ ? अचरिमे बंधइ ?
गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए ॥

वेदगावेदगाण जीवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

५२. एएसि णं भंते ! जीवाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं, नपुंसगवेदगाणं, अवेदगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?°
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा, नपुंसगवेदगा अणंतगुणा।
एएसिं सव्वेसिं पदाणं[2] अप्प-बहुगाइं उच्चारेयव्वाइं जाव[3] सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणंतगुणा ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

कालादेसेणं सपदेस-अपदेस-पदं

५४. जीवे णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! नियमा सपदेसे ॥

५५. नेरइए णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे ॥

५६. एवं जाव[5] सिद्धे ॥

५७. जीवा णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! नियमा सपदेसा ॥

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. भ० ६।३७-५१।
३. प० ३।
४. भ० १।५१।
५. पू० प० २।

५८. नेरइया णं भंते ! कालादेसेणं किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २. अहवा सपदेसा य अपदेसे य ३. अहवा सपदेसा य अपदेसा य ।।

५९. एवं जाव[1] थणियकुमारा ।।

६०. पुढविकाइया णं भंते ! किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ।।

६१. एवं जाव[2] वणप्फइकाइया[3] ।।

६२. सेसा जहा[4] नेरइया तहा जाव[5] सिद्धा ।।

६३. आहारगाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो । अणाहारगाणं जीवेगिंदियवज्जा[6] छब्भंगा एवं भाणियव्वा—१. सपदेसा वा २. अपदेसा वा ३. अहवा सपदेसे य अपदेसे य ४. अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५. अहवा सपदेसा य अपदेसे य ६. अहवा सपदेसा य अपदेसा य । सिद्धेहिं तियभंगो ।

भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा[7] ओहिया । नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो ।

सण्णीहिं जीवादिओ तियभंगो । असण्णीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो । नेरइयदेव-मणुएहिं छब्भंगो । नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहिं तियभंगो ।

सलेसा जहा ओहिया । कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ, नवरं—जस्स अत्थि एयाओ । तेउलेस्साए जीवादिओ तियभंगो, नवरं—पुढविक्काइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भंगा । पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभंगो । अलेसेहिं जीव-सिद्धेहिं तियभंगो । मणुएसु छब्भंगा ।

सम्मद्दिट्ठीहिं जीवादिओ तियभंगो । विगलिंदिएसु छब्भंगा । मिच्छदिट्ठीहिं एगिंदियवज्जो तियभंगो । सम्मामिच्छदिट्ठीहिं छब्भंगा । संजएहिं जीवादिओ तियभंगो । अस्संजएहिं[8] एगिंदियवज्जो तियभंगो । संजयासंजएहिं तियभंगो जीवादिओ । नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजय-जीव-सिद्धेहिं तियभंगो ।

सकसाईहिं[9] जीवादिओ तियभंगो । एगिंदिएसु अभंगकं । कोहकसाईहिं जीवे-गिंदियवज्जो तियभंगो । देवेहिं छब्भंगा । माणकसाई-मायाकसाईहिं जीवेगि-

१. पू० प० २ ।
२. पू० प० २ ।
३. वणस्सइ० (क) ।
४. भ० ६।५५, ५८ ।
५. पू० प० २ ।
६. जीवपदे एकेन्द्रियपदे च सपएसा य अप्पएसा य इत्येवंरूपः एक एव भंगकः, बहूनां विग्रहगत्यापन्नानां सप्रदेशानामप्रदेशानां च लाभात् (वृ) ।
७. भ० ६।५४, ५७ ।
८. असंजएहिं (क, म) ।
९. सकसादीहिं (ता) ।

दियवज्जो तियभंगो। नेरइय-देवेहिं छब्भंगा। लोभकसाईहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। नेरइएसु छब्भंगा अकसाई-जीव-मणुएहिं, सिद्धेहिं तियभंगो।

ओहियनाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे जीवादिओ तियभंगो। विगलिंदिएहिं छब्भंगा। ओहिनाणे 'मणपज्जवनाणे केवलनाणे'[1] जीवादिओ तियभंगो। ओहिए अण्णाणे, मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, एगिंदियवज्जो तियभंगो। विभंगनाणे जीवादिओ तियभंगो।

सजोगी[2] जहा ओहिओ, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी जीवादिओ तियभंगो, नवरं--कायजोगी एगिंदिया, तेसु अभंगयं[3]। अजोगी जहा अलेस्सा।

सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो।

सवेदगा जहा सकसाई। इत्थिवेदग-पुरिसवेदग-नपुंसगवेदगेसु जीवादिओ तियभंगो, नवरं--नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभंगयं। अवेदगा जहा अकसाई।

ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो। आहारगसरीरे जीव-मणुएसु छब्भंगा, तेयग-कम्मगाइं[4] जहा ओहिया। असरीरेहिं जीव-सिद्धेहि तियभंगो।

आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए[5] जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासा[6]-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी। आहार-अपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीर-अपज्जत्तीए, इंदिय-अपज्जत्तीए, आणापाण-अपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भंगा, भासा-मणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभंगो, नेरइय-देव-मणुएहि छब्भंगा।

संगहणी-गाहा

सपदेसाहारग-भविय-सण्णि-लेसा-दिट्ठि-संजय-कसाए।
नाणे जोगुवओगे, वेदे य सरीर-पज्जत्ती ॥१॥

पच्चक्खाणादि-पदं

६४. जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी? अपच्चक्खाणी? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? गोयमा? जीवा पच्छक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि॥

---

१. मणकेवलनाणे (अ, क, ता, म, स)।
२. सजोति (ता)।
३. अभंगगं (ता)।
४. कम्माइं (अ, ता, म); कम्मगाणं (म)।
५. आणापाणु° (क, ता, ब, म)।
६. भास (अ, क, ता, ब)।

६५. सव्वजीवाणं एवं पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव[1] चउरिंदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा[2]] । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि । मणूसा तिण्णि वि । सेसा जहा नेरइया ।।

६६. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं जाणंति ? अपच्चक्खाणं जाणंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं जाणंति ?
गोयमा ! जे पंचिंदिया ते तिण्णि वि जाणंति, अवसेसा 'पच्चक्खाणं न जाणंति'[3], अपच्चक्खाणं न जाणंति, पच्चक्खाणापच्चक्खाणं न जाणंति ।।

६७. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणं कुव्वंति ? अपच्चक्खाणं कुव्वंति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणं कुव्वंति ?
जहा ओहिओ तहा कुव्वणा ।।

६८. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि । अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाणं २. जाणइ, ३. कुव्वइ तिण्णेव ४. आउनिव्वत्ती ।
सपएसुद्देसम्मि य, एमेए दंडगा चउरो ।।१।।

६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

पंचमो उद्देसो

तमुक्काय-पदं

७०. किमियं भंते ! तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ? किं पुढवी[5] तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ? आऊ[6] तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ?
गोयमा ! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. अपच्चक्खाणं जाणंति (ता, म) ।
४. भ० १।५१ ।
५. पुढवि (अ, क, ता, स) ।
६. आउ (अ, क, ब, म, स) ।

७१. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाए णं अत्थेगइए सुभे देसं पकासेइ, अत्थेगइए[1] देसं नो पकासेइ। से तेणट्ठेणं ॥

७२. तमुक्काए[2] णं भंते ! कहिं समुट्ठिए ? कहिं संनिट्ठिए[3] ?
गोयमा ! जंबूदीवस्स दीवस्स बहिया तिरियमसंखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ अरुणोदयं समुद्दं बायालीसं जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलंताओ एगपएसियाए सेढीए—एत्थ[4] णं तमुक्काए समुट्ठिए। सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरियं पवित्थरमाणे-पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता णं उड्ढं पि य णं जाव[5] बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थडं संपत्ते—एत्थ णं तमुक्काए संनिट्ठिए[6] ॥

७३. तमुक्काए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अहे मल्लग-मूलसंठिए, उप्पिं कुक्कुडग[7]-पंजरगसंठिए पण्णत्ते ॥

७४. तमुक्काए णं भंते ! केवतियं विक्खंभेणं, केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संखेज्जवित्थडे य, असंखेज्जवित्थडे य।
तत्थ णं जे से संखेज्जवित्थडे, से णं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से असंखेज्जवित्थडे, से णं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते ॥

७५. तमुक्काए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं[8] जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[9] एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते। देवे णं महिड्ढीए जाव[10] महाणुभावे इणामेव-इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छिज्जा, से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[11] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव

१. × (क, ता)।
२. तमुकाए (अ, क, ता, ब, म)।
३. सण्णिट्ठिए (ता)।
४. तत्थ (म, स)।
५. × (अ)।
६. संनिविट्ठिए (अ, स); संनिहिते (क)।
७. कुकुडग (म, स)।
८. अयं णं (क, म); अय णं (ता, स)।
९. ठा० १।२४८।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।३८।

एकाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतियं तमुक्कायं वीईवएज्जा अत्थेगतियं तमुक्कायं नो वीईवएज्जा । एमहालए णं गोयमा ! तमुक्काए पण्णत्ते ।।

७६. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७७. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए गामा इ वा ? जाव[1] सण्णिवेसा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

७८. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए ओराला बलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ।।

७९. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो[2] वि पकरेति ।।

८०. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे[3] ?
हंता अत्थि ।।

८१. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
तिण्णि वि पकरेंति ।।

८२. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए बादरे पुढविकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

८३. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ।।

८४. अत्थि णं भंते ! तमुक्काए चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण'[4] सा ।।

८५. तमुक्काए णं भंते ! केरिसए वण्णएणं पण्णत्ते ?
गोयमा ! काले कालोभासे गंभीरे[5] लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते । देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्जा[6], अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा[7] सीहं-सीहं तुरियं-तुरियं खिप्पामेव वीतीवएज्जा ।।

८६. तमुक्कायस्स णं भंते ? कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

१. भ० १।४९ ।
२. नाओ (ता, म) ।
३. विज्जयाए (अ); विज्जुए (क, ता, ब, म) ।
४. काउसणिया पुणं (ता) ।
५. गंभीर (अ, क, ता, ब, स, वृ) ।
६. खोभाएज्ज (क, ता, म); खभाएज्जा (स) ।
७. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अंधकारे इ वा, महंधकारे इवा, लोगंधकारे इ वा, लोगतमिसे[1] इ वा, देवंधकारे इ वा, देवतमिसे[2] इ वा, देवरण्णे[3] इ वा, देववूहे[4] इ वा, देवफलिहे[5] इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा समुद्दे[6] ॥

८७. तमुक्काए णं भंते ! किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ?
गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि ॥

८८. तमुक्काए णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[7] तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं[8] अदुवा अणंतक्खुत्तो, नो चेव णं बादरपुढविकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए वा ।

कण्हराइ-पदं

८९. कइ णं भंते ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ[9] ?
गोयमा ! अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९०. कहि णं भंते ! एयाओ अट्ठ कण्हरातीओ[10] पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं, हव्विं[11] बंभलोए कप्पे 'रिट्ठे विमाणपत्थडे[12]', एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंस-संठाणसंठियाओ अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुरत्थिमे णं दो, पच्चत्थिमे णं दो, दाहिणे णं दो, उत्तरे णं दो । पुरत्थिमब्भंतरा[13] कण्हराती दाहिण-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, दाहिणब्भंतरा कण्हराती पच्चत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, पच्चत्थिमब्भंतरा कण्हराती उत्तर-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा, उत्तरब्भंतरा[14] कण्हराती पुरत्थिम-बाहिरं कण्हरातिं पुट्ठा ।

---

१. °तिमिसे (क, ता, म) ।
२. देवतिमिसे (म, क, ता, स) ।
३. देवारण्णे (क, ता, ब) ।
४. देवपूहे (ता) ।
५. °पलिहे (ता) ।
६. समुद्देति वा (अ, स) ।
७. भ० १।४३७ ।
८. असइं-असइं (ता) ।
९. द्रष्टव्यं—ठा० ८।४३-४७ ।
१०. °रायीतो (ब) ।
११. हेट्ठि (अ, क, ब, म); हिट्ठि (स); स्थानाङ्ग-सूत्रे (८।४३, वृत्तिपत्र ४१०) अभयदेव-सूरिणा 'हेट्ठि ति अधस्तात्' ब्रह्मलोकस्य इति व्याख्यातम् । अत्र च (वृत्तिपत्र २७१) 'हव्वि त्ति समं' इति व्याख्यातम् ।
१२. रिट्ठविमाण° (ठा० ८।४३) ।
१३. पुरत्थिमब्भितरा (क) ।
१४. उत्तरमब्भंतरा (ब, स) ।

दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरातीओ छलंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ कण्हरातीओ तंसाओ, दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ अब्भंतराओ कण्हरातीओ चउरंसाओ।

संगहणी-गाहा

पुव्वावरा छलंसा, तंसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा।
अब्भंतर चउरंसा, सव्वा वि य कण्हरातीओ ॥१॥

९१. कण्हरातीओ णं भंते ! केवतियं आयामेणं ? केवतियं विक्खंभेणं ? केवतियं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामेणं, संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ताओ ॥

९२. कण्हरातीओ णं भंते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अयं णं जंबुद्दीवे दीवे[1] •जाव[2] देवे णं महिड्ढीए जाव[3] महाणुभावे इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबूदीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छिज्जा, से णं देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[4] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव एकाहं वा, दुयाहं वा, तियाहं वा, उक्कोसेणं° अद्धमासं वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हरातिं वीईवएज्जा। अत्थेगइए कण्हरातिं णो वीईवएज्जा, एमहालियाओ णं गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९३. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९४. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु गामा इ वा ? जाव[5] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु ओराला बलाहया संसेयंति ? सम्मुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि ॥

९६. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥

१. सं० पा०—दीवे जाव अद्धमासं।
२. भ० ६।७५।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।३८।
५. भ० १।४९ :

९७. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे ?
[1]हंता अत्थि ॥

९८. तं भंते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति° ॥

९९. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु बादरे आउकाए ? बादरे अगणिकाए ? बादरे वणप्फइकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१००. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०१. अत्थि णं भंते ! कण्हरातीसु चंदाभा ति वा ? सुराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१०२. कण्हरातीओ णं भंते ! केरिसियाओ वण्णेणं पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! कालाओ [2]कालोभासाओ गंभीराओ लोमहरिसजणणाओ भीमाओ उत्तासणाओ परमकिण्हाओ वण्णेणं पण्णत्ताओ। देवे वि णं अत्थेगतिए जे णं तप्पढमयाए पासित्ता णं खुभाएज्जा, अहेणं अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा सीहं-सीहं तुरियं-तुरियं° खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

१०३. कण्हराती णं भंते ! कति [3]नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा, मघा इ वा, माघवई इ वा, वायफलिहा इ वा, वायपलिक्खोभा इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा ॥

१०४. कण्हरातीओ णं भंते ! किं पुढवीपरिणामाओ ? आउपरिणामाओ ? जीवपरिणामाओ ? पोग्गलपरिणामाओ ?
गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पोग्गलपरिणामाओ वि ॥

१०५. कण्हरातीसु णं भंते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[4] तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतक्खुत्तो; नो चेव णं बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए, बादरवणप्फइकाइयत्ताए वा ॥

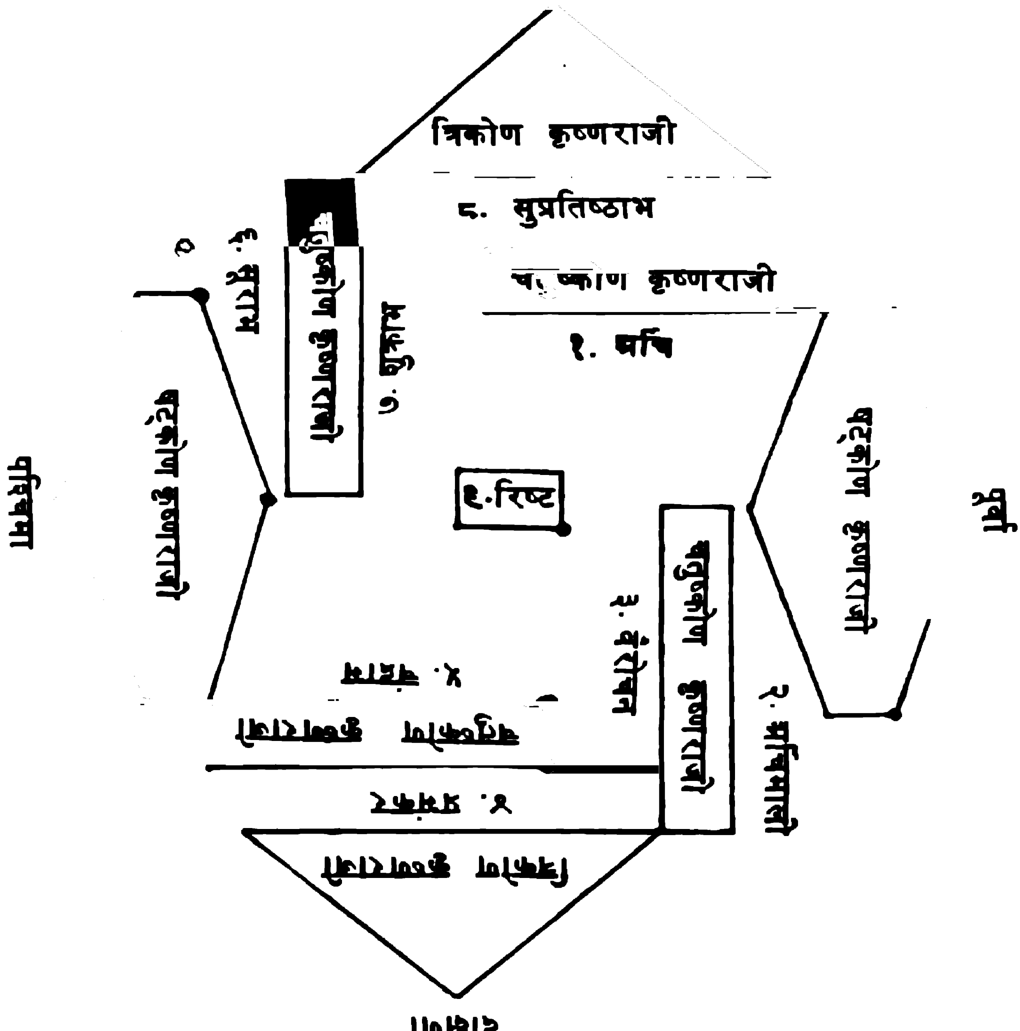
१. सं० पा०—जहा ओराला तहा ।
२. सं० पा०—कालाओ जाव खिप्पामेव ।
३. केवइया (ता) ।
४. भ० १।४३७ ।

लोगंतियदेव-पदं

१०६. एएसि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१. अच्ची २. अच्चिमाली ३. वइरोयणे ४. पभंकरे[1] ५. चंदाभे ६. सूराभे ७. सुक्काभे[2] ८. सुपइट्ठाभे, 'मज्झे रिट्ठाभे'[3] ।।

कृष्णराजी : स्थापना

उत्तरा



१. वमंकरे (ता) ।

२. सुकाभे (ता) ।

३. इह चावकाशान्तरवर्तिषु अष्टासु अर्चिःप्रभृतिषु विमानेषु वाच्येषु यत् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्टं विमानं नवमं उक्तं ता[illegible] अवसेयम् (वृ) ।

१०७. कहि णं भंते ! अच्चि-विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उत्तर-पुरत्थिमे णं ।।

१०८. कहि णं भंते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पुरत्थिमे णं । एवं परिवाडीए नेयव्वं जाव—

१०९. कहि णं भंते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! बहुमज्झदेसभाए ।।

११०. एएसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा परिवसंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ।।१।।

१११. कहि णं भंते ! सारस्सया देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसंति ।।

११२. कहि णं भंते ! आइच्चा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे । एवं नेयव्वं जहाणुपुव्वीए जाव—

११३. कहि णं भंते ! रिट्ठा देवा परिवसंति ?
गोयमा ! रिट्ठम्मि विमाणे ।।

११४. सारस्सयमाइच्चाणं भंते । देवाणं कति देवा, कति देवसया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो[1] पण्णत्तो ।
वण्ही—वरुणाणं देवाणं चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
गद्दतोय—तुसियाणं देवाणं सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
अवसेसाणं नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो ।

संगहणी-गाहा

पढम-जुगलम्मि सत्तओ, सयाणि बीयम्मि चउद्दससहस्सा ।
तइए सत्तसहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ।।१।।

११५. लोगंतिगविमाणा णं भंते ! किंपइट्ठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता । एवं नेयव्वं विमाणाण पइट्ठाणं, बाहुल्लुच्चत्तमेव संठाणं, बंभलोयवत्तव्वया नेयव्वा[2] जाव[3]—

---

१. × (अ, क, ता, ब, म) ।
२. नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए (अ, स)
३. जी० ३ ।

११६. लोयंतियविमाणेसु णं भंते । सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए, आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणस्फइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवित्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतक्खुत्तो, नो चेव णं देवित्ताए[1] ।।
११७. 'लोगंतिय देवाणं'[2] भंते ! केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।
११८. लोगंतियविमाणेहिंतो णं भंते ! केवतियं अबाहाए[3] लोगंते पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए लोगंते पण्णत्ते ।।
११९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं आवास-पदं

१२०. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[5] अहेसत्तमा[6] । रयणप्पभाईणं आवासा भाणियव्वा जाव[7] अहेसत्तमाए । एवं जत्तिया[8] आवासा ते भाणियव्वा जाव[9]—
१२१. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—विजए[10], °वेजयंते, जयंते, अपराजिए° सव्वट्ठसिद्धे ।।

मारणंतियसमुग्घाय-पदं

१२२. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि

१. देवत्ताए (म, स) ।
२. लोगंतियविमाणेसु णं (अ, क, ता, ब, म) ।
३. आबाहाए (ता) ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।२११ ।
६. तमतमा (अ, स) ।
७. भ० १।२१२ ।
८. जे जत्तिया (अ, क, ब, म, स) ।
९. भ० १।२१३-२१५ ।
१०. सं० पा०—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे ।

नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा; अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तति[1], ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा। एवं जाव[2] अहेसत्तमा पुढवी ॥

१२३. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए, जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव[3] थणियकुमारा ॥

१२४. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं केवइयं गच्छेज्जा ? केवइयं पाउणेज्जा ?

गोयमा ! लोयंतं गच्छेज्जा, लोयंतं पाउणेज्जा ॥

१२५. से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा; अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ[4], दोच्चं पि मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे णं अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तं वा, संखेज्जइभागमेत्तं वा, वालग्गं वा, वालग्ग-पुहत्तं[5] वा; एवं लिक्ख-जूय-जव-अंगुल जाव[6] जोयणकोडिं वा, जोयणकोडाकोडिं वा संखेज्जेसु वा असंखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगंते वा एगपएसियं सेढिं मोत्तूण असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि पुढविकाइया-वासंसि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा।

जहा पुरत्थिमे णं मंदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढे, अहे।

१. नियत्तेति (अ, स)।
२. भ० १।२११।
३. पू० प० २।
४. इह हव्वमा० (स)।
५. ०पुहुत्तं (म)।
६. वृ; भ० सू० ४००।

जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ [illegible] भाणियव्वा ।

१२६. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?
जहा नेरइया[1], एवं जाव[2] अणुत्तरोववाइया ॥

१२७. जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीरं वा बंधेज्जा ?
तं चेव जाव[3] आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा ।

१२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

सत्तमो उद्देसो

धन्नाणं जोणि-ठिइ-पदं

१२९. अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं[5] लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं । तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ[6], तेण परं वीए अवीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !

१३०. अह भंते ! कल[7]-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव[8]-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण[9]-पलिमंथगमाईणं[10]—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं

१. भ० ६।१२२ ।
२. भ० १।२१४, २१५ ।
३. भ० ६।१२२ ।
४. भ० १।५१ ।
५. उल्लित्ताणं (स) ।
६. विद्धंसेइ (अ, क, स) ।
७. कलाव (अ); कलाय (ब, स); कालाव (म)
८. निप्पाव (ता, स) ।
९. संतीण (अ, ब, स) ।
१०. तिलिमिथग० (ता) ।

मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

'गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पंच संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो ! [1]

१३१. अह भंते ! अयसि-कुसुंभग-कोद्दव-कंगु-वरग[2]-रालग-कोद्दूसग[3]-सण-सरिसव-मूलाबीयमाईणं[4]—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

"गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ, तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो'[5] !

गणना-काल-पदं

१३२. एगमेगस्स णं भंते ! मुहुत्तस्स केवतिया ऊसासद्धा वियाहिया ?[6]

गोयमा ! असंखेज्जाणं समयाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा 'आवलिय त्ति'[7] पवुच्चइ, संखेज्जा आवलिया ऊसासो, संखेज्जा आवलिया निस्सासो—

गाहा—

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स[8] जंतुणो।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्त पाणूइं[9] से थोवे, सत्त थोवाइं से लवे।
लवाणं सत्तहत्तरिए[10], एस मुहुत्ते वियाहिए ॥२॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइं तेवत्तरिं च ऊसासा।
एस मुहुत्तो दिट्ठो, सव्वेहिं अणंतनाणीहिं ॥३॥

१. सं० पा०—जहा सालीणं तहा एयाणि वि नवरं पंच संवच्छराइं सेसं तं चेव।
२. वरट्ट (ठा० ७।६०)।
३. कोडुसग (ब)।
४. मूलग० (अ, क, स)।
५. सं० पा०—एयाणि वि तहेव नवरं सत्त संवच्छराइं।
६. तुलना—ठा० ३।१२५; ५।२०६; ७।६०।
७. आवलिया ति (क, ता, ब)।
८. णिरुवकट्ठस्स (ता)।
९. पाणूणि (अ, स)।
१०. सत्तस० (क, ब)।

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू[1], तिण्णि उडू अयणे, दो[2] अयणा संवच्छरे, 'पंच संवच्छराइं'[3] जुगे, वीसं जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंगा सयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे[4],हूहूयंगे[5], हूहूए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, अत्थनिउरंगे, अत्थनिउरे[6],अउयंगे, अउए[7], 'नउयंगे, नउए, पउयंगे, पउए[8] चूलियंगे, चूलिया, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण परं ओवमिए[9] ॥

ओवमिय-काल-पदं

१३३. से किं तं ओवमिए ?
ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य ॥

१३४. 'से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ?'[10]

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छेत्तुं भेत्तुं व[11] जं किर न सक्का।
तं परमाणु सिद्धा, वदंति आदिं पमाणाणं ॥१॥

अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्ढरेणू[12] इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालग्गे[13] इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्झे इ वा, अंगुले इ वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणुस्साणं वालग्गे; 'एवं हरिवास-रम्मग-हेमवय-एरन्नवयाणं, पुव्वविदेहाणं मणुस्साणं अट्ठ वालग्गा सा एगा

---

१. उदू (ता, व)।
२. बे (ता, ब)।
३. पंचसंवच्छरिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. अपपे (ब, स)।
५. हूहुय (अ, क, स)।
६. °निपूरे (क, ता, ब)।
७. अतुए (अ, स); अपुए (क); अज्जुए (व)।
८. पदुए २, नउए २ (अ, ता, स); पज्जुए य° (क); पज्जुए य नज्जुए य (ब)।
९. उवमिए (अ, क, ब, म, स)। तुलना—अ० सू० ४१७।
१०. से किं तं पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स); से किं तं पलितोवमे २ (क, ता)।
११. च (अ, क, ब, म, स, वृ)।
१२. उद्ध० (अ, क, ता, ब, म)।
१३. बालग्गा (स)।

लिक्खा[1], अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अंगुले ।

एएणं अंगुलपमाणेणं छ अंगुलाणि पादो, बारस अंगुलाइं विहत्थी[2], चउवीसं अंगुलाइं रयणी, अडयालीसं अंगुलाइं कुच्छी, छन्नउतिं[3] अंगुलाणि से एगे दंडे इ वा, धणू इ वा, जूए इ वा, नालिया इ वा, अक्खे इ वा, मुसले इ वा ।

एएणं धणुप्पमाणेणं दो धणुसहस्साइं गाउयं, चत्तारि गाउयाइं जोयणं ।

एएणं जोयणप्पमाणेणं जे पल्ले जोयणं आयाम-विक्खंभेणं, जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, तं तिउणं[4], सविसेसं परिरएणं—से णं एगाहिय-बेहिय-तेहिय[5], उक्कोसं सत्तरत्तप्परूढाणं संमट्ठे[6] संनिचिए भरिए[7] वालग्गकोडीणं ।

ते णं वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा[8], नो परिविद्धंसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वमागच्छेज्जा ।

तओ[9] णं वाससए-वाससए गते[10] एगमेगं वालग्गं अवहाय[11] जावतिएणं कालेणं से पल्ले खीणे निरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ । से त्तं पलिओवमे ।

गाहा—

२. एएसिं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ, एक्कस्स भवे परिमाणं ॥

१. प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते । तस्य पूर्णपाठः इत्थमस्ति—
अट्ठ देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणुस्साणं वालग्गा हरिवास-रम्मगवासाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।
अट्ठ हरिवास-रम्मगवासाणंम णुस्साणं वालग्गा हेमवय-हेरण्णवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।
अट्ठ हेमवय-हेरण्णवयाणं मणुस्साणं वालग्गा पुव्वविदेह-अवर विदेहाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।
अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाणं मणुस्साणं वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे ।
अट्ठ भरहेरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा सा एगा लिक्खा (अ० सू० ३९९) ।

२. वितत्थी (अ) ।

३. छण्हउइ (ता) ।

४. तिओणं (अ) ।

५. षष्ठीबहुवचनलोपाद् एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकाणाम् (वृ) ।

६. संसट्ठे (अ, म) ।

७. हरिए (ता) ।

८. कुत्थेज्जा (अ, ब, म) ।

९. तए (अ, क) ।

१०. × (अ, ता, म, स) ।

११. अवहाय २ (ता) ।

एएणं सागरोवमपमाणेणं चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा १. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २. दो[1] सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा[2] ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमा ५. एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा ६.।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीसं वाससहस्साइं कालो दूसमा[3] २. ॰एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३. दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा ४. तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा॰ ५. चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६.।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमट्ठ-पत्ताए[4], भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे[5] होत्था ?
गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए—आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव[6] तत्थ णं बहवे भारया मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति। तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव[7] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव[8] छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली[9], सहा, सणिचारी ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

१. दुण्णि (क)।
२. दुसमा (ता, स)।
३. सं० पा०—दूसमा जाव चत्तारि।
४. उत्तमट्ठ० (स)।
५. पडोगारे (ता, ब, म)।
६. जी० ३; जं० २।
७. जी० ३; जं० २।
८. जी० ३; जं० २।
९. तेयतली (ब)।
१०. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

पुढवी-आदिसु गेहादिपुच्छा-पदं

१३७. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[1] ईसीपब्भारा ॥

१३८. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३९. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४०. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति[3] ॥

१४१. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ?
हंता अत्थि । तिण्णि वि पकरेंति[4] ॥

१४२. अत्थि णं भंते । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१४३. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदिम[5]-•सूरिय-गहगण-नक्खत्त° तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं दोच्चाए पुढवीए भाणियव्वं, एवं तच्चाए वि भाणियव्वं, नवरं—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नागो पकरेति । चउत्थीए वि एवं, नवरं—देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो । एवं हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो[6] पकरेति ।

१. ठा० ८।१०८ ।
२. भ० १।४६ ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० ६।७६ ।
४. द्रष्टव्यम्—भ० ६।८१ ।
५. सं० पा०—चंदिम जाव तारारूवा ।
६. देवो एक्को (अ, क, ब, म, स) ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला बलाहया[1] ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसद्दे वि ।।

१४७. अत्थि णं भंते । बादरे पुढवीकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ।।

१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं बंभलोए वि । एवं बंभलोगस्स[3] उवरिं सव्वेहिं देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य बादरे आउकाए, बादरे अगणिकाए, बादरे वणस्सइकाए । अण्णं तं चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढवी य अगणि-पुढवीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ।।१।।

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

१५२. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता[5] ? °ठितिनामनिहत्ता ? ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ?° अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ।।

१. पू०—भ० ६।७८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. बम्ह० (क, ब) ।
४. पू० प० २ ।
५. सं० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग० ।
६. पू० प० २ ।

१५३. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ताउया ? जाव[1] अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा । जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि । दंडओ जाव[2] वेमाणियाणं ॥

१५४. एवं एए दुवालस दंडगा भाणियव्वा—
जीवा णं भंते ! किं १. जातिनामनिहत्ता ? २. जातिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३. जातिनामनिउत्ता ? ४. जातिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५. जातिगोयनिहत्ता ? ६. जातिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७. जातिगोयनिउत्ता ? ८. जातिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ९. जातिनामगोयनिहत्ता ? १०. जातिनामगोयनिहाउत्तया ?
जीवा णं भंते ! किं ११. जातिनामगोयनिउत्ता ?
१२. जातिनामगोयनिउत्ताउया ?
जाव[3] ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. भ० ६।१५१ । २. पू० प० २ ।

३. एतत् पदं त्रयोदशभंगात् द्वासप्ततितमपर्यन्तानां भंगानां संग्राहकमस्ति—
जीवा णं भंते ! किं १३. गतिनामनिहत्ता ? १४. गतिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १५. गतिनामनिउत्ता ? १६. गतिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १७. गतिगोयनिहत्ता ? १८. गतिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं १९. गतिगोयनिउत्ता ? २०. गतिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २१. गतिनामगोयनिहत्ता ? २२. गतिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २३. गतिनामगोयनिउत्ता ? २४. गतिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २५. ठितिनामनिहत्ता ? २६. ठितिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २७. ठितिनामनिउत्ता ? २८. ठितिनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं २९. ठितिगोयनिहत्ता ? ३०. ठितिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३१. ठितिगोयनिउत्ता ? ३२. ठितिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३३. ठितिनामगोयनिहत्ता ? ३४. ठितिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३५. ठितिनामगोयनिउत्ता ? ३६. ठितिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३७. ओगाहणानामनिहत्ता ? ३८. ओगाहणानामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ३९. ओगाहणानामनिउत्ता ? ४०. ओगाहणानामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४१. ओगाहणागोयनिहत्ता ? ४२. ओगाहणागोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४३. ओगाहणागोयनिउत्ता ? ४४. ओगाहणागोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४५. ओगाहणानामगोयनिहत्ता ? ४६. ओगाहणानामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४७. ओगाहणानामगोयनिउत्ता ? ४८. ओगाहणानामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ४९. पएसनामनिहत्ता ? ५०. पएसनामनिहत्ताउया ?

गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया वि । दंडओ जाव[1] वेमाणियाणं ।।

लवणादिसमुद्द-पदं

१५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए[2] ? पत्थडोदए ? खुभियजले ? अखुभियजले ?

गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले ।।

१५६. [3]●जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुभियजले, नो अखुभियजले; तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं उस्सिओदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अखुभियजला ?

गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा, पत्थडोदगा; नो खुभियजला, अखुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ।।

१५७. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?

हंता अत्थि ।।

१५८. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति, संमुच्छंति, वासं वासंति, तहा णं बाहिरगेसु वि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?

जीवा णं भंते ! किं ५१. पएसनामनिउत्ता ? ५२. पएसनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५३. पएसगोयनिहत्ता ? ५४. पएसगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५५. पएसगोयनिउत्ता ? ५६. पएसगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५७. पएसनामगोयनिहत्ता ? ५८. पएसनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५९. पएसनामगोयनिउत्ता ? ६०. पएसनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६१. अणुभागनामनिहत्ता ? ६२. अणुभागनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६३. अणुभागनामनिउत्ता ? ६४. अणुभागनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६५. अणुभागगोयनिहत्ता ? ६६. अणुभागगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६७. अणुभागगोयनिउत्ता ? ६८. अणुभागगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६९. अणुभागनामगोयनिहत्ता ? ७०. अणुभागनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७१. अणुभागनामगोयनिउत्ता ? ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. पू० प० २ ।
२. उसिओदए (क, म, स) ।
३. सं० पा०—एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से ।

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—बाहिरगा णं समुद्दा पुण्णा जाव[1] समभरघडत्ताए चिट्ठंति ?

गोयमा ! बाहिरगेसु णं समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उवचयंति° । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—बाहिरया णं समुद्दा[2] पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति, संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा, दुगुणा, दुगुणप्पमाणा[3] जाव[4] अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीव-समुद्दा सयंभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

१६०. दीव-समुद्दा णं भंते ! केवतिया नामधेज्जेहिं पण्णत्ता ।

गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गंधा, सुभा रसा, सुभा फासा, एवतिया णं दीव-समुद्दा नामधेज्जेहिं पण्णत्ता । एवं नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो, परिणामो, सव्वजीवाणं (उप्पाओ[5] ?) ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

कम्मप्पगडिबंध-पदं

१६२. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मप्पगडीओ बंधति ?

गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबंधए वा । बंधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो[7] ॥

---

१. भ० ६।१५६ ।

२. दीव-समुद्दा (अ, क, ता, ब, म, स); जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ 'समुद्दा इत्येवपदमस्ति, तदेवात्र प्रासंगिकम् ।

३. °माणाओ (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. अस्य पूरकपाठः जीवाभिगमस्य तृतीयप्रतिपत्तौ लभ्यते । स चैवमस्ति—
'पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा-पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया बहुउप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपोंडरीयमहापोंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुल्लकेसरोवचिया पत्तेय-पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेयं-पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ता ।

५. सव्वजीवाणं ति—सर्वं जीवानां द्वीप-समुद्रेषूत्पादो नेतव्यः—इति सूचितं वृत्तिकृता । तदनुसृत्यात्र 'सव्वजीवाणं उप्पाओ' इतिपाठो युज्यते ।

६. भ० १।५१ ।

७. प० २४ ।

महिड्ढीयदेव-वि .व्वणा-पदं

१६३. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[2] पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६४. देवे णं भंते । बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
हंता पभू ।।

१६५. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ।
एवं एएणं गमेणं जाव[3] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो ।।

१६६. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[4] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं[5] पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए[6] परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ।।

१६७. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले[7] °परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ।
एवं एएणं गमेणं जाव[8] १. एगवण्णं एगरूवं २. एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं—चउभंगो° ।
एवं कालगपोग्गलं लोहियपोग्गलत्ताए । एवं कालएणं जाव सुक्किलं । एवं नीलएणं जाव सुक्किलं । एवं 'लोहिएणं जाव सुक्किलं'[9] । एवं हालिद्दएणं जाव सुक्किलं । एवं[10] एयाए परिवाडीए गंध-रस फासा[11] ।

---

१. भ० ३।४ ।
२. अपरियादिइत्ता (अ, ता, ब, म) ।
३. भ० ६।१६३, १६४ ।
४. भ० ३।४ ।
५. कालतं (क) ।
६. णीलपोग्ग० (अ, क, ता) ।
७. सं० पा०—तं चेव नवरं परिणामेति त्ति भाणियव्वं ।
८. भ० ६।१६३, १६४ ।
९. लो।हयपोग्गलं जाव सुक्किलत्ताए (अ, स); लोहियपोग्गलं जाव सुक्किलं (म) ।
१०. तं एवं (अ, क, ता, ब, म) ।
११. कक्खडफासपोग्गलं मउय-फासपोग्गलत्ताए, एवं दो दो गरुयलहुय-सीयउसिण-णिद्धलुक्ख-वण्णाई सव्वत्थ परिणामेइ । आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता (अ,ब,म,स) ।

अविसुद्धलेसादि देवाणं जाणणा-पासणा-पदं

१६८. १. अविसुद्धलेसे णं भंते ! देवे असमोहएणं[1] अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं, देविं, अण्णयरं[2] जाणइ-पासइ ?

णो तिणट्ठे समट्ठे[3] ।

एवं—२. अविसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ३. अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ४. अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ५. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ६. अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ७. विसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ८. विसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ॥

१६९. ९. विसुद्धलेसे णं भंते ! देवे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं जाणइ-पासइ ?

हंता जाणइ-पासइ ।

एवं—१०. विसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ११. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं १२. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ॥

१७०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

---

१. असंमो० (अ, ता, म, स) ।

२. अणगारं (क, ब) ।

३. समट्ठे एवं हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ-पासइ (क, ता, वृ); स्वीकृतपाठस्य वृत्तिकृता वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतोस्ति—वाचनान्तरे तु सर्वमेवेदं साक्षाद्दृश्यते (वृ) । 'अ, ब, म, स' संकेतितादर्शेषु द्वयोर्वाचनयोर्मिश्रणं दृश्यते । तत्र द्वादशभंगानन्तरं 'एवं हेट्ठिल्लएहिं' इत्यादि पाठोस्ति ।

४. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

सुह-दुह-उवदंसण-पदं

१७१. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव[1] परूवेंति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाणं जीवाणं नो चक्किया केइ सुहं वा दुहं वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, माससमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि[2], लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता[3] उवदंसेत्तए ।।

१७२. से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[4] मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[5] परूवेमि सव्वलोए वि य णं सव्वजीवाणं नो चक्किया केइ सुहं वा[6] ०दुहं वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, माससमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता० उवदंसेत्तए ।।

१७३. से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव[7] विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते । देवे णं महिड्ढीए जाव[8] महाणुभागे एगं महं सविलेवणं गंधसमुग्गगं गहाय तं अवद्दालेति, अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं[9] अच्छरानिवाएहिं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा । से नूणं गोयमा ! से केवलकप्पे जंबुद्दीवे दीवे तेहिं घाणपोग्गलेहिं फुडे ?

हंता फुडे ।

चक्किया णं गोयमा ! केइ[10] तेसिं घाणपोग्गलाणं कोलट्ठिमायमवि[11], ०निप्फावमायमवि, कलमायमवि, माससमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता० उवदंसेत्तए ?

नो तिणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुहं वा जाव उवदंसेत्तए ।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे णं भंते ! जीवे ? जीवे जीवे ?

गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ।।

१. भ० १।४२० ।
२. जूय० (क, ब); ऊया० (ता) ।
३. ० तेत्ता (ता) ।
४. भ० १।४२१ ।
५. भ० १।४२१ ।
६. सं० पा०—तं चेव जाव उवदंसेत्तए ।
७. भ० ६।३५ ।
८. भ० ३।४ ।
९. तिहिं (अ, स) ।
१०. केयति (स) ।
११. सं० पा०—कोलट्ठिमायमवि जाव उवदंसेत्तए

१७५. जीवे णं भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ।।

१७६. जीवे णं भंते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?
गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय नोअसुरकुमारे ।।

१७७. एवं दंडओ भाणियव्वो[1] जाव[2] वेमाणियाणं ।।

१७८. जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?
गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति ।।

१७९. जीवति भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ।।

१८०. एवं दंडओ नेयव्वो जाव[3] वेमाणियाणं ।।

१८१. भवसिद्धिए णं भंते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धिए ?
गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए, सिय अनेरइए । नेरइए वि य सिय भवसिद्धीए, सिय अभवसिद्धीए ।।

१८२. एवं दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

वेदणा-पदं

१८३. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव[5] परूवेंति—एवं खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति ।।

१८४. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जं णं ते अण्णउत्थिया जाव[6] मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति, आहच्च सायं । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगंतसायं वेदणं वेदेंति, आहच्च अस्सायं[8] । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेदणं वेदेंति—आहच्च सायमसायं ।।

१८५. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइया एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति, आहच्च सायं । भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया एगंतसायं वेदणं वेदेंति, आहच्च अस्सायं । पुढविक्काइया जाव[9] मणुस्सा वेमायाए वेदणं वेदेंति—आहच्च सायमसायं । से तेणट्ठेणं ।।

---

१. नेतव्वो (क, ता, ब) ।
२. पू० प० २ ।
३. पू० प० २ ।
४. पू० प० २ ।
५. भ० १।४२० ।
६. भ० १।४२१ ।
७. भ० १।४२१ ।
८. असायं वेदणं वेदेंति (अ, ता, म, स) ।
९. पू० प० २ ।

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति तं किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ? परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ?
गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो अणंतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति, नो परंपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेंति ।
जहा नेरइया तहा जाव[1] वेमाणियाणं दंडओ ।।

केवलि-नाण-पदं

१८७. केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१८८. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ जाव[2] निव्वुडे दंसणे केवलिस्स । से तेणट्ठेणं ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुहं दुक्खं, जीवे जीवति तहेव भविया य ।
एगंतदुक्खं वेयण-अत्तमायाय केवली ।।१।।

१८९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ।।

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।६७ ।
३. भ० १।५१ ।

सत्तमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. आहार २. विरति ३. थावर, ४. जीवा ५. पक्खी य ६. आउ ७. अणगारे।
८. छउमत्थ ९. असंवुड, १०. अण्णउत्थि दस सत्तमंमि सए ॥ १ ॥

अणाहारग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[1] एवं वदासी—जीवे णं भंते ! कं[2] समयमणाहारए भवइ ?

गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए। एवं दंडओ—जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए[3], सेसा ततिए समए[4] ॥

सव्वप्पाहारग-पदं

२. जीवे णं भंते ! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति ?

गोयमा ! पढमसमयोववन्नए[5] वा चरिमसमयभवत्थे[6] वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवति। दंडओ भाणियव्वो जाव[1] वेमाणियाणं ॥

१. भ० १।४-१०।
२. किं (म)।
३. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
४. 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
५. °समए° (स)।
६. पू० प० २।

लोगसंठाण-पदं

३. किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[1], •मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले ; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए°, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि[2] च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकार-संठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तम्रो पच्छा सिज्झइ[3] •बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ।।

समणोवासगस्स किरिया-पदं

४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए[4] अच्छमाणस्स[5] तस्स णं भंते ! किं रियावहिया[6] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ।।

५. से केणट्ठेणं[7] •भंते ! एवं वुच्चइ—नो रियावहिया किरिया कज्जइ ?° संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ । से तेणट्ठेणं ।।

समणोवासगस्स अणाउट्टिहिंसा-पदं

६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढवि-समारंभे अपच्चक्खाए भवइ । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ।।

७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइसमारंभे पच्चक्खाए । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ।।

१. सं० पा०—विच्छिण्णे जाव उप्पिं ।
२. तंसि (अ); तंसि तेसिं (ता); तस्सि (म) ।
३. सं० पा०—सिज्झइ जाव अंतं ।
४. समणोवासए (क, स) ।
५. अत्थ° (अ, ब, म, स) ।
६. इरिया° (क, ता) ।
७. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव संपराइया

समणोवासगस्स लाभेण लाभ-पदं

८. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[1] पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?
गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा[2] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए णं तामेव[3] समाहिं पडिलभइ ॥

९. समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा[4] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणे किं चयति ?
गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं[5] चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तओ पच्छा सिज्झति जाव[6] अंतं करेति ॥

अकम्मस्स गति-पदं

१०. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
हंता अत्थि ॥

११. कहण्णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए[7], निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१२. कहण्णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे-परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं-भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि[8] उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ?
हंता भवइ ।
अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?

---

१. खातिम-सातिमेणं (अ, ब, स) ।
२. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
३. तमेव (क्व०) ।
४. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
५. दुचयं (स) ।
६. भ० ७।३ ।
७. बंधवोच्छेदणताए (ता) ।
८. इह मकारो प्राकृतप्रभवो (वृ) ।

हंता भवइ।

एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१३. कहण्णं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति[1] ?

गोयमा ! से जहानामए कलसिंबलिया इ वा, मुग्गसिंबलिया इ वा, मासर्सिं-बलिया इ वा, सिंबलिसिंबलिया[2] इ वा, एरंडमिंजिया इ वा उण्हे दिन्ना[3] सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ। एवं खलु गोयमा ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१४. कहण्णं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति। एवं खलु गोयमा ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

१५. कहण्णं भंते ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?

गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ। एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति।

एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए[4], निरंगणयाए[5], °गतिपरिणामेणं, बंधणछेदण-याए, निरिंधणयाए°[6], पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६. दुक्खी भंते ! दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ॥

१७. दुक्खी भंते ! नेरइए दुक्खेणं फुडे ? अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ?

गोयमा ! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे ॥

१८. एवं दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ॥

१९. एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेणं फुडे २. दुक्खी दुक्खं परियायइ ३. दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ४. दुक्खी दुक्खं वेदेति ५. दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२०. अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स[7] वा, निसीय-माणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्ह-

१. पण्णत्ता (अ, क, ता, ब, म, स)।

२. सेंबलिसेंबलिया (ता)।

३. दित्ता (स)।

४. नीसंगयाए (अ, क, ब, म, स)।

५. सं० पा०—निरंगणयाए जाव पुव्व°।

६. पू० प० २।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्त' इति पदं गम्यम्।

माणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं[1] रियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ।।

२१. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा[2] भवंति तस्स णं रियावहिया किरिया कज्जइ[3], जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ[4]। अहासुत्तं रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ । से णं उस्सुत्तमेव रीयती[5] । से तेणट्ठेणं ।।

सइंगालादिदोस-दुट्ठ-पाणभोयण-पदं

२२. अह भंते ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता महयाअप्पत्तियं कोहकिलामं करेमाणे आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे ।
जे णं निग्गंथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं° पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं[7] अण्णदव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे ।
एस णं गोयमा ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

२३. अह भंते ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण खाइम-

१. × (क, ता, ब) ।
२. विच्छिण्णा (ब) ।
३. कज्जइ नो संपराइया किरिया कज्जइ (म) ।
४. कज्जइ नो इरियावहिया किरिया कज्जइ (म, स) ।
५. रियति (अ, क, ब, म, स) ।
६. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
७. गुणप्पयाण° (अ, स); गुणुप्पायणा° (ता)
८. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

साइमं°पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए[1] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमा°-हारेइ, एस णं गोयमा ! वीतिंगाले पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे वा[2] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण पाण खाइम साइमं° पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तियं[3] •कोहकिलामं करेमाणे आहारमा°हारेइ, एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे वा[4] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं° पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोस-विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।

एस णं गोयमा ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

२४. अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कं-तस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कंते[5] पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे वा[6] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असणं-पाण-खाइम°-साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्ता[7] आहारमाहारेइ एस णं गोयमा ! कालातिक्कंते पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे वा[8] •निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम°-साइमं पडिग्गाहेत्ता परं अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता[9] आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! मग्गातिक्कंते पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गंथे[10] वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं[11] •असण-पाण-खाइम°साइमं पडिग्गाहेत्ता परं बत्तीसाए कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! पमाणातिक्कंते पाण-भोयणे ।

अट्ठ कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे[12], दुवालस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए[13], सोलस

१. सं० पा०—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।
२. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
३. सं० पा०—महयाअप्पत्तियं जाव आहारेइ ।
४. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।
५. क्षेत्रं—सूर्यसंबन्धितापक्षेत्रं दिनमित्यर्थः । तद-तिक्रान्तं यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तम् (वृ) ।
६. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव साइमं ।
७. उवायणा° (अ, म) ।
८. सं० पा०—निग्गंथे वा जाव साइमं ।
९. वीइक्कमावइत्ता (स) ।
१०. निग्गंथो (क, ता, स) ।
११. सं० पा०—एसणिज्जं जाव साइमं ।
१२. साधुर्भवतीति गम्यम् ।
१३. अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाण[1]●मेत्ते कवले° आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए[2], बत्तीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोईति वत्तव्वं सिया। एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२५. अह भंते ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[3], एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे ववगय-चुय-चइय-चत्तदेहं, जीवविप्पजढं, अकयं, अकारियं, असंकप्पियं, अणाहूयं, अकीयकडं, अणुद्दिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुक्कं, उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं, वीतिगालं, वीतधूमं, संजोयणादोसविप्पमुक्कं, असुरसुरं[4], अचवचवं, अदुयं, अविलंबियं, अपरिसाडिं, अक्खोवंजण-वणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[5] ●एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स° पाण-भोयणस्स अट्ठे[6] पण्णत्ते ॥

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते । त्ति[7] ॥

बीओ उद्देसो

सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पदं

२७. से नूणं भंते ! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति ? दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति ॥

१. सं० पा०—°पमाणे जाव आहार° ।
२. ओमोदरिय (अ, ता, स); ओमोदरियाए (ब)।
३. °पारि° (ता) ।
४. असुरसुरं (ता) ।
५. सं० पा० सत्थपरिणामियस्स जाव पाण ।
६. अयमट्ठे (अ) ।
७. भ० १।५१ ।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वपाणेहिं जाव[1] सव्वसत्तेहिं[2] •पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति° ? सिय दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति ।
एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ । एवं खलु से मुसावाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंवुडे, एगंतदंडे, एगंतबाले यावि भवति ।
जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति ।
एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ । एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, संवुडे, एगंतपंडिए यावि भवति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[3]—•सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति°, सिय दुपच्चक्खायं भवति ॥

पच्चक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य, उत्तरगुणपच्चक्खाणे य ॥

३०. मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य, देसमूलगुणपच्चक्खाणे य ॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[4],

१. भ० ७।२७ ।
२. सं० पा०—सव्वसत्तेहिं जाव सिय ।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय ।
४. सं० पा०—वेरमणं जाव सव्वाओ ।

•सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।।

३२. देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[1], •थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं°, थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।।

३३. उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुण-पच्चक्खाणे य ।।

३४. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—

गाहा—

१, २. अणागयमइक्कंतं ३. कोडीसहियं ४. नियंटियं चेव ।
५, ६. सागारमणागारं ७. परिमाणकडं ८. निरवसेसं ।
९. संकेयं[2] चेव १०. अद्धाए, पच्चक्खाणं भवे दसहा ।।१।।

३५. देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. दिसिव्वयं[3] २. उवभोगपरिभोग-परिमाणं ३. अणत्थदंडवेरमणं[4] ४. सामाइयं ५. देसावगासियं ६. पोसहोववासो ७. अतिहिसंविभागो[5] । अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाराहणता[6] ।।

पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पदं

३६. जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? उत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्च-क्खाणी वि ।।

३७. नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्च-क्खाणी ।।

१. सं० पा०—वेरमणं जाव थूलाओ ।
२. साएतं (ता, म); साकेयं (स, वृ); संकेयगं (ठा० १०।१०१) केत: चिन्हं सहकेतेन वर्तते सकेतम्—दीर्घता च प्राकृतत्वात् (वृ) ।
३. दिसुव्वतं (ता) ।
४. अणट्ठा° (ता) ।
५. अहासंविभाग (म) ।
६. संलेखनामविगणय्य सप्त देशोत्तरगुणा इत्युक्तम्, अस्याश्चैतेषु पाठो देशोत्तरगुणधारिणाऽपीयमन्ते विधातव्येत्यस्यार्थस्य ख्यापनार्थ: (वृ) ।

३८. एवं जाव[1] चउरिंदिया ॥

३९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४०. एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥

४१. एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।

गोयमा ! सव्वत्थोवा[3] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४२. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

४३. जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ॥

४४. नेरइयाणं पुच्छा।

गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥

४५. एवं जाव[4] चउरिंदिया ॥

४६. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।

गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी[5], अपच्चक्खाणी वि ॥

४७. [6]•मणुस्साणं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ॥

१. पू० प० २।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
३. सव्वत्थोवा जीवा (अ)।
४. पू० प० २।
५. ° पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स)।
६. सं० पा०—मणुस्सा जहा जीवा।

४८. वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४९. एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ॥

५०. [2]•एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अप्पच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ॥

५१. एएसि णं भंते ! मणुस्साणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा° ॥

५२. जीवा णं भंते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि,[3] •देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।
पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव । सेसा अपच्चक्खाणी जाव[4] वेमाणिया ॥

५३. एएसि णं भंते ! जीवाणं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीणं अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दंडए जाव[5] मणुस्साणं ॥

५४. जीवा णं भंते ! किं संजया ? असंजया ? संजयासंजया ?
गोयमा ! जीवा संजया वि,[6] •असंजया वि, संजयासंजया वि ।° एवं जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्वं जाव[7] वेमाणिया । अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्वं[8] ॥

५५. जीवा णं भंते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी ?

१. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—एवं अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्ले दंडए, नवरं—सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।
३. सं० पा०—तिण्णि वि।
४. पू० प० २ ।
५. भ० ७।४०-४२ ।
६. सं० पा०—तिण्णि वि ।
७. प० ३२ ।
८. भ० ७।४०-४२ ।

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि,[१] •अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि ॥

५६. एवं मणुस्साण वि[२]। पंचिदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया। सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव[३] वेमाणिया ॥

५७. एएसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं[४] •अपच्चक्खाणीणं पच्चक्खाणापच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा।
पंचिदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा। मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा[५] ॥

सासय-असासय-पदं

५८. जीवा णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[६]—•जीवा सिय सासया°, सिय असासया ॥

६०. नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि। एवं जाव[७] वेमाणिया सिय सासया, सिय असासया ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[८] ॥

१. सं० पा०—तिण्णि वि।
२. वि तिण्णि वि (अ, स)।
३. पू० प० २।
४. सं० पा०—पच्चक्खाणीएणं जाव विसेसाहिया
५. तुलना—भ० ६।६४।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय।
७. पू० प० २।
८. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-आहार-पदं

६२. वणस्सइकाइया णं भंते ! कं[1] कालं सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवंति ?
गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं[2] च णं सरदे[3], तदाणंतरं च णं हेमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे। गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति ।।

६३. जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ?
गोयमा ! गिम्हासु णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए वक्कमंति, चयंति[4], उववज्जंति। एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया[5], •फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति ।।

६४. से नूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा[6], •खंधा खंधजीवफुडा, तया तयाजीवफुडा, साला सालजीवफुडा, पवाला पवालजीवफुडा, पत्ता पत्तजीवफुडा, पुप्फा पुप्फजीवफुडा, फला फलजीवफुडा°, बीया बीयजीवफुडा ?
हंता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव बीया बीयजीवफुडा ।।

६५. जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा जाव[7] बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सइकाइया आहारेंति ? कम्हा परिणामेंति ?
गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति। कंदा कंदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति। एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति ।।

१. किं (क, म)।
२. तद° (ब)।
३. सरए (अ)।
४. विउक्कमंति (अ, क); विउक्कमंति चयंति (स)।
५. सं० पा०—पुप्फिया जाव चिट्ठंति।
६. सं० पा०—कंदजीवफुडा जाव बीया।
७. भ० ७।६४।

अणंतकाय-पदं

६६. अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सिरिलि[1], किट्ठिया[2], छिरिया, छीरविरालिया[3], कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, खेलूडे[4] भद्दमोत्था[5], पिंडहलिद्दा[6], लोही, णीहू, थीहू, थिभगा[7], अस्सकण्णी, सीहकण्णी, सिउंढी[8], मुसंढी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता[9] ?
हंता गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ।।

अप्पकम्म-महाकम्म-पदं

६७. सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय[10] ।।

६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठितिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ।।

६९. सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ।।

७०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठितिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ।।

७१. एवं असुरकुमारे वि, नवरं—तेउलेसा अब्भहिया । एवं जाव[11] वेमाणिया । जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ । जोइसियस्स न भण्णइ जाव—

७२. सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए ? सुक्कलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ।।

७३. से केणट्ठेणं ?[12] °गोयमा ! ठितिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! ° जाव महाकम्मतराए ।।

---

१. सिस्सेरिलि (ता) ।
२. किट्टिया (अ, ता) ।
३. छीरि° (अ) ।
४. खल्लूडे (अ); खल्लुए (ता) ।
५. अद्दमोत्था (अ, म, स) ।
६. भिड° (क) ।
७. विभंगा (अ); थिरुगा (म, स) ।
८. सीहंढी (अ); सीदंडी (क); संदिट्ठी (ब); सीदंवी (म); सादंठी (स) ।
९. विचित्तविहिसत्ता (वृपा) ।
१०. सिया (अ, ब) ।
११. पू० प० २ ।
१२. सं० पा०—सेसं जहा नेरइयस्स ।

वेदणा-निज्जरा-पदं

७४. से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! कम्मं[1] वेदणा, नोकम्मं निज्जरा । से तेणट्ठेणं गोयमा[2] ! •एवं वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा॰ न सा वेदणा ॥

७६. नेरइया णं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! नेरइयाणं कम्मं वेदणा, नोकम्मं निज्जरा । से तेणट्ठेणं गोयमा[3] ! •एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा॰ न सा वेदणा ॥

७८. एवं जाव[4] वेमाणियाणं ॥

७९. से नूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरेंसु ? जं निज्जरेंसु तं वेदेंसु ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु ? जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु ?
गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्जरेंसु । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु ॥

८१. एवं[5] नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ॥

८२. से नूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति ? जं निज्जरेंति तं वेदेंति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव नो तं वेदेंति ?
गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति ॥

८४. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८५. से नूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति ? जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. कम्म (अ, क, म) ।
२. सं० पा०—गोयमा जाव न ।
३. सं० पा०—गोयमा जाव न ।
४. पू० प० २ ।
५. नेरइया णं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरेंसु एवं (अ, क, ता, ब, म, स) ।

८६. से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति ?
गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति । से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति ॥
८७. एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया[1]॥
८८. से नूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥
८९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति—अण्णम्मि समए वेदेंति, अण्णम्मि समए निज्जरेंति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ॥
९०. नेरइया णं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥
९१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया णं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति—अण्णम्मि समए वेदेंति, अण्णम्मि समए निज्जरेंति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए ॥
९२. एवं जाव वेमाणियाणं ॥

सासय-असासय-पदं

९३. नेरइया णं भंते ! किं सासया ? असासया ?
गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ॥
९४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेणं जाव सिय सासया, सिय असासया ॥
९५. एवं जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ॥
९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

१. भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

संसारत्थजीव-पदं

९७. रायगिहे नयरे जाव[1] एवं वयासि—कतिविहा णं भंते! संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता?
गोयमा! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया। एवं जहा जीवाभिगमे जाव[2] एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ, तं जहा—सम्मत्तकिरियं वा, मिच्छत्तकिरियं वा[3]॥

९८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[4]॥

पंचमो उद्देसो

जोणीसंगह-पदं

९९. रायगिहे जाव एवं वयासी—खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते! कतिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते?
गोयमा! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—अंडया, पोयया, संमुच्छिमा। एवं जहा जीवाभिगमे जाव[5] नो चेव णं ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहालया णं गोयमा! ते विमाणा पण्णत्ता[6]॥

१००. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[7]॥

---

१. भ० १।४-१०।

२. जी० ३।

३. अतोग्रे एका संग्रहगाथा लभ्यते—
जीवा छव्विह पुढवी,
जीवाण ठिती भवट्ठिती काये।
निल्लेवण अणगारे,
किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता॥
(अ, ता, ब, म, स, वृपा)।

४. भ० १।५१।

५. जी० ३।

६. अतोग्रे एका संग्रहगाथा लभ्यते—
जोणीसंगह-लेसा,
दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे।
उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-
वीहीओ॥ (वृपा)।

७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए[2], से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ?
गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारेसु वि, एवं जाव[3] वेमाणिएसु ।।

१०२. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ ?
गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ । एवं जाव वेमाणिएसु ।।

१०३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेदणं वेदेंति, आहच्च सायं ।।

१०४. जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
गोयमा । इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतसातं वेदणं वेदेति, आहच्च असायं[4] । एवं जाव[5] थणियकुमारेसु ।।

१०५. जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा ।
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एवं उववज्जमाणे वि, अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदणं वेदेति । एवं जाव[6] मणुस्सेसु । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ।।

१०६. जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव[7] वेमाणिया ।।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. उववज्जति (ब) ।
३. पू० प० २ ।
४. अस्सायं (अ, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. पू० प० २ ।
७. पू० प० २ ।

कक्कस-अकक्कसवेयणीय-पदं

१०७. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ।।

१०८. कहण्णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाइवाएणं जाव[1] मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।।

१०९. अत्थि णं भंते ! नेरइया णं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
एवं चेव । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ।।

११०. अत्थि णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ।।

१११. कहण्णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव[3] परिग्गहवेरमणेणं, कोहविवेगेणं जाव[4] मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।।

११२. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्साणं जहा जीवाणं ।।

सायासाय-वेयणीय-पदं

११३. अत्थि णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ।।

११४. कहण्णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूणं पाणाणं[5] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।।

११५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
हंता अत्थि ।।

११६. कहण्णं भंते ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, पर-

---

१. भ० १।३८४ ।
२. पू० प० २ ।
३. भ० १।३८५ ।
४. ठा० १।११५-१२५ ।
५. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं ।

पिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं[1] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं दुक्ख-णयाए, सोयणयाए[2], •जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिट्टणयाए°, परियावणयाए—एवं खलु गोयमा ! जीवाणं असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।।

दुस्समदुस्समा-पदं

११७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे[3] इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-कट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?
गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भंभब्भूए[4] कोलाहलभूए[5] । समाणुभावेण[6] य णं खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयंकरा वाया संवट्टगा य वाहिंति । इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समंता रउस्सला[7] रेणुकलुस-तमपडल-निरालोगा । समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति[8] । अहियं[9] सूरिया तवइस्संति । अदुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[10] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,[11] वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चंडानिलपहय-तिक्खधारा-निवायपउरं वासं वासिहिंति, जेणं भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासमगयं[12] जणवयं, चउप्पयगवेलए, खहयरे य पक्खि-संघे, गामारण्ण-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालंकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धंसेहिंति, पव्वय-गिरि-डोंगरुत्थल[13]-भट्ठिमादीए वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति, सलिलबिल-गड्डु-दुग्गविसमनिण्णुन्नयाइं च गंगा-सिंधुवज्जाइं समीकरेहिंति ।।

११८. तीसे णं भंते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सति ?
गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-ब्भूया[14] तत्तसमजोतिभूया[15] धूलिबहुला रेणुबहुला पंकबहुला पणगबहुला चलणि-

१. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं ।
२. सं० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।
३. दीवे भारहे वासे (अ, क, ब, म, स) ।
४. भंभाभूए (अ, क, म); भंभेभूए (ब) ।
५. कोलाहलग° (क, ब, म) ।
६. समयाणु° (स, वृ) ।
७. रयोसला (क, ता, ब, म); रओसला (स) ।
८. मोच्छिहंति (अ, क, ता, ब, म, स) ।
९. अहितं (क, ब, म) ।
१०. खट्टमेहा (म); खत्तमेहा (वृपा) ।
११. अजवणिज्जोदगा (अ, ब, स, वृपा); अप्पि-वणिज्जोदया (क, म); अवणिज्जोदगा (ता)
१२. °समा० (ब, स) ।
१३. डोंगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।
१४. कवल्लय° (क); कवल्लग° (ता) ।
१५. प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा स्थानांगस्य

बहुला[1] बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा[2] यावि भविस्सति ।

११६. तीसे णं भंते ! समाए भरहे[3] वासे मणुयाणं केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा! मणुया भविस्संति दुरूवा दुवण्णा[4] दुग्गंधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता[5] •अप्पिया असुभा अमणुण्णा° अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा[6] अणिट्ठस्सरा •अकंतस्सरा अप्पियस्सरा असुभस्सरा अमणुण्णस्सरा° अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बंध-वेरनिरया, मज्जायातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोग-विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मंसु-रोमा, काला, खर-फरुस-झामवण्णा, फुट्टसिरा, कविल-पलियकेसा, बहुण्हारुसंपिणद्ध[7]-दुद्दंसणिज्जरूवा, संकुडितवलीतरंगपरिवेढियंग-मंगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदंतसेढी, उब्भडघडामुहा[8] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[9]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छु-कसराभिभूया, खरतिक्खनखकंडूइय[10]-विक्खयतणू[11], दद्दु-किडिभ-सिब्भ[12]-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलंगा, टोलगति[13]-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुअट्ठिगविभत्त-दुब्बला कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-कुभोइणो, असुइणो, अणेगवाहि-परिपीलियंगमंगा, खलंत-विब्भलगती[14], निरुच्छाहा,सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ठ-नट्ठतेया, अभिक्खणं सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्झडियमलिणपंसुरउग्गुंडियं-गमंगा[15], बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, उस्सण्णं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा, उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, 'पुत्तनत्तुपरिवाल-पणयबहुला'[16] गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयड्ढं च पव्वयं

(८।१०) सूत्रे 'तत्त' पदं पृथग् गृहीतं, वृत्तावपि च तथैव व्याख्यातमस्ति । जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति (२ वक्षस्कार) वृत्तौ अत्र च 'तत्त' पदं समस्तं गृहीतमस्ति, व्याख्यातमपि च तथैव ।

१. चलनप्रमाणः कर्दमश्चलनी (वृ) ।

२. दोन्निक्कमा (अ, स) ।

३. भारहे (अ, क, स) ।

४. दुव्वण्णा (ता, ब, म) ।

५. सं० पा०—अकंता जाव अमणामा ।

६. सं० पा०—अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा

७. °ण्हारुणि° (अ, ब, स); °ण्हारुणिसंविणद्ध (ता) ।

८. °घडमुहा (अ, म), °घडोमुहा (क, ब); °घाडामुहा (ता. वृपा); घडग=घडा । अत्र एकपदे सन्धिर्जातः ।

९. बंग (क, ता, ब, म, वृपा) ।

१०. °कंडूइय (ता, ब, स) ।

११. विक्कय (अ, क) ।

१२. सिभ (ता, स) ।

१३. टोलागति (ता, ब, म, वृपा) ।

१४. बंभल (अ); बेंभल (क, ता) ।

१५. °रयपुंडियंगमंगा (अ) ।

१६. °परियार० (अ); °परियाल० (ब, स); °परिवालपणयबहुला (क, वृपा) ।

निस्साए बात्तवरिं[1] निम्रोदा[2] बीयं बीयमेत्ता[3] बिलवासिणो भविस्संति ।।

१२०. ते णं भंते ! मणुया कं आहारं आहारेहिंति ?
गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगा-सिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं वोज्झिहिंति, से वि य णं जले बहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव णं आउबहुले भविस्सति । तए णं ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य बिलेहिंतो निद्धाहिंति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइं गाहेहिंति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ।।

१२१. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा, उस्सण्णं[4] मंसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ?
गोयमा ! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ।।

१२२. ते णं भंते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा निस्सीला तहेव जाव[5] कहिं उववज्जिहिंति ?
गोयमा ! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ।।

१२३. ते णं भंते ! ढंका, कंका, विलका[6], मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव[7] कहिं उववज्जिहिंति ?
गोयमा ! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति ।।

१२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ।।

सत्तमो उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

१२५. संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स[9], °आउत्तं चिट्ठमाणस्स, आउत्तं निसीयमाणस्स°, आउत्तं तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं

---

१. बाहत्तरि (ता, ब) ।
२. नियोया (ता) ।
३. बीयामेत्ता (अ, क, ब, म, स) ।
४. ओस्सण्णं (अ, स) ।
५. भ० ७।१२१ ।
६. पिलका (ग्र) ।
७. भ० ७।१२१ ।
८. भ० १।५१ ।
९. सं० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्तं ।

पादपुंछणं गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स णं भंते ! किं इरिया-वहिया[1] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ।।

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया, किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ[2], •जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति, तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरिया-वहिया किरिया कज्जइ°, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तमेव रीयइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ[3] ।।

काम-भोग-पदं

१२७. रूवी भंते ! कामा ? अरूवी कामा ?
गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ।।

१२८. सचित्ता भंते ! कामा ? अचित्ता कामा ?
गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ।।

१२९. जीवा भंते ! कामा ? अजीवा कामा ?
गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ।।

१३०. जीवाणं भंते ! कामा ? अजीवाणं कामा ?
गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ।।

१३१. कतिविहा णं भंते ! कामा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा य, रूवा य ।।

१३२. रूवी[4] भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?
गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ।।

१३३. सचित्ता भंते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?
गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।।

१३४. जीवा भंते ! भोगा[5] ? •अजीवा भोगा ?°
गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।।

१. रिया० (ब) ।
२. सं० पा०—तहेव जाव उस्सुत्तं ।
३. तुलना—भ० ७।२०, २१ ।
४. रूवि (अ, क, ता, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—भोगा पुच्छा ।

१३५. जीवाणं भंते ! भोगा ? अजीवाणं भोगा ?
गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा ।।

१३६. कतिविहा णं भंते ! भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, तं जहा—गंधा, रसा, फासा ।।

१३७. कतिविहा णं भंते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा काम-भोगा पण्णत्ता, तं जहा—सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा ।।

१३८. जीवा णं भंते ! किं कामी ? भोगी ?
गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ।।

१३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ— जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
गोयमा ! सोइंदिय-चक्खिंदियाइं पडुच्च कामी, घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेणं गोयमा[1] ! •एवं वुच्चइ-जीवा कामी वि°, भोगी वि ।।

१४०. नेरइया णं भंते ! किं कामी ? भोगी ?
एवं चेव जाव[2] थणियकुमारा ।।

१४१. पुढविकाइयाणं— पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ।।

१४२. से केणट्ठेणं जाव भोगी ?
गोयमा ! फासिंदियं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव भोगी । एवं जाव वणस्सइ-काइया । बेइंदिया एवं चेव, नवरं—जिब्भिंदियफासिंदियाइं पडुच्च । तेइंदिया वि एवं चेव, नवरं— घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च ।।

१४३. चउरिंदियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! चउरिंदिया कामी वि, भोगी वि ।।

१४४. से केणट्ठेणं जाव भोगी वि ?
गोयमा ! चक्खिंदियं पडुच्च कामी, घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेणं जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया ।।

१४५. एएसि णं भंते ! जीवाणं 'कामभोगीणं, नोकामीणं, नोभोगीणं, भोगीण'[3] य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

१. सं० पा०—गोयमा जाव भोगी ।
२. × (अ); एवं जाव (क, ब, म, स); पू० प० २ ।
३. कामीणं भोगीणं नोकामीणं नोभोगीण य (क, ता) ।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा[1] ॥

दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पदं

१४६. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे जे[2] भविए अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह[3] ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे। पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४७. आहोहिए[4] णं भंते ! मणूसे जे भविए अण्णयरेसु देवलोएसु[5] °देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे। पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवइ ॥

१४८. परमाहोहिए णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव[6] भवग्गहणेणं सिज्झित्तए जाव[7] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी[8] °नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे। पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ° ॥

१. मणंत० (ता)।
२. मणुस्से (ता)।
३. वदहा (ता, ब)।
४. अहोहिएणं (ता, ब)।
५. सं० पा०—एवं चेव जहा छउमत्थे जाव महा°।
६. तेणं चेव (क, ता, ब, म)।
७. भ० १।४४।
८. सं० पा०—सेसं जहा छउमत्थस्स।

१४६. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं[1] °सिज्झित्तए जाव[2] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवति ।।

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया जाव[3] वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए णं अंधा, मूढा, तमंपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ।
१५१. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?
हंता ! अत्थि ।।
१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वदेंति ।।

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?
हंता अत्थि ।।
१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देव-

१. सं० पा०—एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा° ।
२. भ० १।४४ ।
३. भ० १।४३७ ।

लोगगयाइं रूवाइं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ॥

१५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'[1] ॥

अट्ठमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

१५६. छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं, [2]•केवलेणं संवरेणं, केवलेणं बंभचेरवासेणं, केवलाहिं पवयणमायाहिं सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइंसु ? सव्वदुक्खाणं अंतं करिंसु ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे जाव'[3]—

१५७. से नूणं भंते ! उप्पण्णणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया ?

हंता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्वं सिया'° ॥

हत्थि-कुंथु-जीव-समाणत्त-पदं

१५८. से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ।

[4]•से नूणं भंते ! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सासतराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव [illegible]तराए चेव ?

कुंथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसासतराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?

---

१. भ० १।५१ ।

२. सं० पा०—एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं जाव अलमत्थु ।

३. भ० १।२०१-२०८ ।

४. तुलना—भ० १।२००-२०६; ५।११५ ।

५. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे जाव खुड्डियं ।

हंता गोयमा हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव,
हत्थीओ कुंथू अप्पकिरियतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,
हत्थीओ कुंथू अप्पासवतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,
एवं आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहिं हत्थीओ कुंथू अप्पतराए चेव कुंथूओ वा हत्थी महातराए चेव ।।

१५९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ – हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवाया निवायगंभीरा। अह णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो-अंतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-निच्छिड्डाइं दुवार-वयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा ।
तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो-अंतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं बाहिं ।
अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो अंतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं, नो चेव णं कूडागारसालं, नो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं ।
एवं—गोकिलिंजेणं पच्छियापिडएणं गंडमाणियाए आढएणं अद्धाढएणं पत्थएणं अद्धपत्थएणं कुलवेणं अद्धकुलवेणं चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए बत्तीसियाए चउसट्ठियाए ।
अह णं पुरिसे तं पईवं दीवचंपएणं पिहेज्जा। तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो-अंतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, नो चेव णं कूडागारसालं, नो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं ।
एवामेव गोयमा ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं निव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्तीकरेइ—खुड्डियं वा महालियं वा ।° से तेणट्ठेणं गोयमा[1] ! •एवं वुच्चइ—हत्थिस्स य कुंथुस्स य° समे चेव जीवे[2] ।।

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

१. सं० पा०—गोयमा जाव समे ।
२. एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ) ।

हंता गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे[1] •जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से° सुहे । एवं जाव[2] वेमाणियाणं ॥

दसविहसण्णा-पदं

१६१. कति णं भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओहसण्णा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

नेरइयाणं दसविहवेदणा-पदं

१६२. नेरइया दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति, तं जहा—सीयं, उसिणं, खुहं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, जरं, दाहं, भयं, सोगं ॥

हत्थि-कुंथूणं अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

१६३. से नूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हंता गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य[3] •समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—•हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ— हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ।

अहाकम्मादि-पदं

१६५. अहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
[6]•गोयमा ! अहाकम्मं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ°[7] जाव सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं ।

१६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

१. सं० पा०—कम्मे जाव सुहे ।
२. पू० प० २ ।
३. सं० पा०—कुंथुस्स य जाव कज्जइ ।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जइ ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जइ ।
६. सं० पा—एवं जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं ।
७. भ० १।४३६-४४० ।
८. भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

असंवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पदं

१६७. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं विउव्वित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६८. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्णं एगरूवं[1] •विउव्वित्तए ?°
हंता पभू ॥

१६९. से णं भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अण्णत्थगए पोग्गले[2] •परियाइत्ता° विकुव्वइ ।
एवं २. एगवण्णं अणेगरूवं[3] ३. •अणेगवण्णं एगरूवं ४. अणेगवण्णं अणेगरूवं— चउभंगो ॥

१७०. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालगं पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? नीलगं पोग्गलं वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू जाव[4]—

१७१. असंवुडे णं भंते ! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू निद्धपोग्गलं लुक्खपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? लुक्खपोग्गलं वा निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ॥

१७२. से णं भंते किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति° ॥

---

१. सं० पा०—एगरूवं जाव हंता ।
२. सं० पा०—पोग्गले जाव विकुव्वइ ।
३. सं० पा०—चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इह वि भाणियव्वं, नवरं अणगारे इहगयं च इहगते चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेसं तं चेव जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए । हंता पभू । से भंते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ।
४. भ० ६।१६३-१६७ ।

महासिलाकंटयसंगाम-पदं

१७३. नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था? के पराजइत्था[1]? गोयमा! वज्जी, विदेहपुत्ते जइत्था[2], नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था॥

१७४. तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटगं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उदाइं[3] हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह॥

१७५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[4] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं[5] उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छियं सुसज्जं जाव[6] भीमं संगामियं अओज्झं[7] उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं° सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

१७६. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए[10] पिणद्धगेवेज्ज[11]-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्ल-दामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे[12] मंगलजयसद्दकयालोए[13] जाव[14] जेणेव उदाई हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे॥

---

१. पराजितत्था (ता)।
२. जदित्था (क, ता)।
३. उदायिं (क, ता, ब, म); उदातिं (स)।
४. भ० ३।११०।
५. सुणिउणेहिं एवं जहा ओववाइए जाव (अ, क, ता, ब, म, स)। वाचनान्तरे त्विदं-साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।
६. ओ० सू० ५७।
७. अउज्झं (ब, स)।
८. सं० पा०—गय जाव सण्णाहेंति।
९. सं० पा०—करयल जाव कूणियस्स।
१०. °पट्टीए (अ, क, ब, म, स)।
११. पिणिद्ध° (ता, म, स)।
१२. °वीतियंगे (म, स); °वीतितंगे (क, ब)।
१३. जत° (ब); °कयलोए एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, ब, म, स)।
१४. ओ० सू० ६३।

१७७. तए णं से कूणिए राया[1] हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे[2] जाव[3] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटगं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य। 'एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए'[4], एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए॥

१७८. तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटगं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए[5] दिसोदिसिं पडिसेहित्था॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे?
गोयमा! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सव्वे से जाणेइ महासिलाए अहं[6] अभिहए। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—महासिलाकंटए संगामे॥

१८०. महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ?
गोयमा! चउरासीइं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ॥

१८१. ते णं भंते! मणुया निस्सीला[7] °निग्गुणा निम्मेरा° निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया? कहिं उववण्णा?
गोयमा! उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववण्णा॥

रहमुसलसंगाम-पदं

१८२. नायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विण्णायमेयं अरहया—रहमुसले संगामे[8]।
रहमुसले णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था? के पराजइत्था?
गोयमा! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था॥

१. णरिंदे (क, ता, ब, म)।
२. °वच्छे एवं जहा उववाइए (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. ओ० सू० ६५।
४. × (अ, ब, म, स)।
५. किच्छोवगयपाणे (ना० १।८।१६६)।
६. हं (क, ब, म)।
७. सं० पा०—निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाण।
८. संगामे रह २ (ता)।

१८३. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं[1] •जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह॥

१८४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव[2] मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहिं सुनिउणेहिं उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छियं सुसज्जं जाव[3] भीमं संगामियं अओज्झं भूयाणंदं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

१८५. तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीजियंगे, मंगलजयसद्दकयालोए जाव[4] जेणेव भूयाणंदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणंदं हत्थिरायं दुरूढे॥

१८६. तए णं से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे जाव[5] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ•। मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[6] एगं महं आयसं किढिणपडिरूवगं[7] विउव्वित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा—देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य। एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए[8],

१. सं० पा०—सेसं जहा महासिलाकंटए नवरं भूयाणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एवं तहेव जाव चिट्ठइ।
२. ३।११०।
३. ओ० सू० ५७।
४. ओ० सू० ६३।
५. ओ० सू० ६५।
६. असुरराया (अ, स)।
७. कढिण° (अ); किड्डिण° (क, स)।
८. सं० पा०—तहेव जाव दिसोदिसिं।

°एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ।।

१८७. तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए° दिसोदिसिं पडिसेहित्था ।।

१८८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—रहमुसले संगामे ?
गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खयं, जणवहं, जणप्पमद्दं, जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वओ समंता परिधावित्था । से तेणट्ठेणं[1] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—रहमुसले संगामे ।।

१८९. रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।।

१९०. ते णं भंते ! मणुया निस्सीला[2] °निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया ? कहिं° उववन्ना ?
गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए[3] कुच्छिंसि उववन्नाओ । एगे देवलोगेसु उववन्ने । एगे सुकुले पच्चायाए । अवसेसा उस्सण्णं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।।

१९१. कम्हा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं[4] दलइत्था ?
गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए । एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्जं दलइत्था ।।

वरुण-नागनत्तुय-पदं

१९२. बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ—एवं खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु 'अभिमुहा चेव पहया'[6] समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।।

१९३. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[7] °जाव[8] परूवेइ—एवं

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव रह° ।
२. सं० पा०—निस्सीला जाव उववन्ना ।
३. मच्छीए (म) ।
४. साहिज्जं (क); साहज्जं (ता, म) ।
५. भ० १।४२० ।
६. अभिहता चेव पहुता (क, स); अभिहया (ता)
७. सं० पा०—एवमाइक्ख° जाव उववत्तारो ।
८. भ० १।४२० ।

खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[1] परूवेमि—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ—अड्ढे जाव[3] अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं 'ओसह-भेसज्जेणं'[5] पडिलाभेमाणे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।।

१९४. तए णं से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायाभिओगेणं[6], गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता कोडुंबियपुरिसे[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव[8] उवट्ठावेह[9], हय-गय-रह-पवर[10]-•जोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह°, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१९५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[11] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव[12] चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेंति, हय-गय-रह[13]-•पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं° सण्णाहेंति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव[14] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।।

१९६. तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, [15]•उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए[16] सकोरेंटमल्ल[17]-

१. भ० १।४२१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. भ० २।९४ ।
४. भ० २।९४ ।
५. वृत्तौ उद्धृते पाठे एतन्नास्ति । भ० २।९४ सूत्रादसौ पाठः पूरितस्तत्रापि 'क' प्रतौ एतत् नास्ति ।
६. रायाहियोगेणं (अ, स); रायनियोगेणं (ता)
७. कोदुंबिय° (ता); कोटुंबिय° (स) ।
८. युक्तमेव रथसामग्र्या इति गम्यम् (वृ) ।
९. उवट्ठवेह (अ) ।
१०. सं० पा०—पवर जाव सण्णाहेत्ता ।
११. भ० ७।१७५ ।
१२. राय० सू० ६८१; वाचनान्तरे तु साक्षादेव दृश्यते (वृ) ।
१३. सं० पा०—रह जाव सण्णाहेंति ।
१४. भ० ७।१७५ ।
१५. सं० पा०—जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते ।
१६. पू० भ० ७।१७६ ।
१७. सं० पा०—सकोरेंटमल्ल जाव धरिज्ज° ।

•दामेणं छत्तेणं° धरिज्जमाणेणं, अणेगगणनायग[1]-•दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°-दूय-संधिपालसद्धिं[2] संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता हय-गय-रह[4]-•पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं° संपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते[5] जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाए ॥

१६७. तए णं से वरुणे नागनत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणइ से पडिहणित्तए[6], अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसलं संगामं संगामेति ॥

१६८. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'[7] सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वमागए ॥

१६९. तए णं से पुरिसे वरुणं नागनत्तुयं एवं वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

२००. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तं पुरिसं एवं वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि ॥

२०१. तए णं से पुरिसे वरुणेणं नागनत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठिच्चा आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता वरुणं नागनत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ ॥

२०२. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णाययं उसुं करेइ, करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेइ ॥

२०३. तए णं से वरुणे नागनत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खमति,

---

१. सं० पा०—अणेगगणनायग जाव दूय ।
२. संधिवाल० (अ, क, ब, म); संधिवालंग० (ता) ।
३. दुहेति (क); दुहति (ता, ब) ।
४. सं० पा०—रह जाव संपरिवुडे ।
५. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स)
६. पडिपह० (ता) ।
७. सरिसत्तए सरिसव्वए (क) ।
८. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

पडिनिक्खमित्ता एगंतमंतं[1] अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल[2]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[3] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव[4] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ[5] मे से भगवं तत्थगए[6]•इहगयं ति कट्टु° वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एवं जाव[7] थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं पि णं अहं तस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए•[8] जाव[9] मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए। जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं जाव[10] मा णं वाइय-पित्तिय-संभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु° एयं पि णं चरिमेहिं ऊसास-नीसासेहिं वोसिरिस्सामि त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए[11] कालगए॥

वरुणनागनत्तुय-मित्त-पदं

२०४. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे[12] •अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे° अधारणिज्जमिति कट्टु वरुणं नागनत्तुयं रहमुसलाओ संगामाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा वरुणे जाव[13] तुरए विसज्जेति, पडसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे[14]

---

१. एगंतं (क)।
२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. ओ० सू० २१।
४. ओ० सू० २१।
५. पासइ (ता)।
६. सं० पा०—तत्थगए जाव वंदइ।
७. भ० ७।१३२।
८. सं० पा०—एवं जहा खंदओ जाव एवं।
९. भ० १।३८४।
१०. भ० २।५२।
११. पुव्विं (ता)।
१२. सं० पा०—अत्थामे जाव अधारणिज्जमिति
१३. भ० ७।२०३।
१४. सं० पा०—पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलिं।

•संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं वयासी—जाइ णं भंते ! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं, ताइं णं 'ममं पि'[1] भवंतु त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ[2], मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए ।।

२०५. तए णं तं वरुणं नागनत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए[3], दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए या वि होत्था ।।

२०६. तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[4] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा[5] •अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति ।।

२०७. वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ।।

२०८. से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं[6] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ।।

२०९. वरुणस्स णं भंते ! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?
गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ।।

२१०. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] अंतं काहिति ।।

२११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ।।

---

१. मम वि (ब) ।
२. ओमुयति (अ, क, ता, ब) ।
३. निवाहिते (अ, क, ता) ।
४. भ० १।४२० ।
५. सं० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।
६. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं ।
७. भ० ७।२०८ ।
८. भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

कालोदाइ-पभितीणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

२१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[1]। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई[3], उदए, नामुदए[4], नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए[5], संखवालए, सुहत्थी गाहावई॥

२१३. तए णं तेसिं अण्णउत्थियाणं अण्णया कयाइ[6] एगयओ सहियाणं[7] समुवागयाणं सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे[8] मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं[9]।

तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, 'आगासत्थिकायं, पोग्गलत्थिकायं'[10]। एगं च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पण्णवेति।

तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं। एगं च णं समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति। से कहमेयं मण्णे एवं?

२१४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[11] गुणसिलए चेइए समोसढे जाव[12] परिसा पडिगया॥

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. सेवलो° (ता)।
४. णामुए (ता); णोमुदए (ब)।
५. × (अ, ता, म)।
६. कयाई (क); कदायी (ता, ब, म); कयाइ (स)।
७. × (क, ता, ब, म, स)।
८. अतमेतारूवे (ता)।
९. आगासत्थिकायं (अ, क, ता, ब, म, स); भ० ७।२१।८ सूत्रे कालोदायिना प्रतिपादितस्य भगवतः सिद्धान्तस्य भगवता स्ववचनेन स्वीकृतिः क्रियते। तत्र 'तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई! अहं पंचत्थिकायं पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं' एतदनुसारेण एष पाठो युक्तोस्ति, तेन एतदनुसारेणासौ स्वीकृतः।
१०. पोग्गलत्थिकायं आगासत्थिकायं (ता)।
११. भ० १।७।
१२. भ० १।८।

२१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे 'गोयमे गोत्तेणं'[1] जाव[2] भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जतं भत्त-पाणं पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ[3] •नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंतं[4] जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ° रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति ।।

२१६. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[5], अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धमत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं[6] । तं चेव जाव[7] रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति । से कहमेयं गोयमा ! एवं ?

कालोदाइस्स समाहाणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

२१७. तए णं से भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो । अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो । तं चेयसा[8] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं वदासी[9], वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[10] भत्त-पाणं पडिदंसेति, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे जाव[11] पज्जुवासति ।।

२१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था । कालोदाई य तं देसं हव्वमागए । कालोदाईति ! समणे भगवं महावीरे कालोदाइं

१. गोयमगोत्ते णं (अ, ता) ।
२. एवं जहा वितियसते णियंठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० २।१०६-१०९ ।
३. सं० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसंभंतं जाव रियं ।
४. भ० २।११० सूत्रे '°मसंभंते' इति पाठः स्वीकृतोस्ति ।
५. अविउप्पकडा (अ, क, ब, म, वृपा) ।
६. आगासत्थिकायं (अ, क, ब, म, स) ।
७. भ० ७।२१३ ।
८. वेदसा (अ, ता, म, वृपा) ।
९. वदंति (ता, ब, म) ।
१०. एवं जहा नियंठुद्देसए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० २।११० ।
११. भ० ३।१३ ।

एवं वयासी—से नूणं भे कालोदाई ! अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति तहेव जाव[1] से कहमेयं मण्णे एवं ? से नूणं कालोदाई ! अत्थे समत्थे ?

हंता अत्थि । तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई ! अहं पंचत्थिकायं पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं ।

तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए[2] पण्णवेमि, [3]•तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, पोग्गलत्थिकायं । एगं च णं अहं जीवत्थिकायं अरूवीकायं जीवकायं पण्णवेमि ।

तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिाए अरूवीकाए पण्णवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं ।° एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पण्णवेमि ॥

२१९. तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अधम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा ? सइत्तए वा ? चिट्ठइत्तए[4] वा ? निसीइत्तए वा ? तुयट्टित्तए वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा, सइत्तए वा[5], •चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा°, तुयट्टित्तए वा ॥

२२०. एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति । एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए । एवं जहा खंदए तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ जाव[6] विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२१. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१. भ० ७।२१३ ।
२. अजीवताए (क); अजीवत्थिकाए (स) ।
३. सं० पा०—तहेव जाव एगं ।
४. चिट्ठित्तए (अ, ब, ता) ।
५. सं० पा०—सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
६. भ० २।५०-६३ ।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पदं

२२२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे, गुणसिलए चेइए। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ जाव[1] समोसढे, परिसा जाव[2] पडिगया ॥

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग-संजुत्ता कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

२२४. कहण्णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणा-कुलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगंधत्ताए जाव[3] दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए जाव[4] मिच्छादंसणसल्ले, तस्स[5] णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे'[6] दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगंधत्ताए जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा 'पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति'[7]।

२२५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

२२६. कहण्णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा[8] °कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जंति ?
कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं ओसहमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव[9] सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाय-वेरमणे जाव[10] परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव[11] मिच्छादंसणसल्लविवेगे, तस्स

१. भ० १।७।
२. भ० १।८।
३. जहा महस्सवए जाव (अ, क, ता, ब, म, स); भ० ६।२०।
४. भ० १।३८४।
५. तस्य प्राणातिपातादेः (वृ)।
६. परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म)।
७. फलविवाग जाव कज्जंति (अ); फल जाव कज्जंति (क, ता)।
८. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जंति।
९. भ० ६।२२।
१०. भ० १।३८५।
११. ठा० १।११५-१२५।

णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमइ। एवं खलु कालोदाई! जीवाणं कल्लाणा कम्मा[1] •कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जंति ॥

२२७. दो भंते! पुरिसा सरिसया[2] •सरित्तया सरिव्वया° सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति। तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ। एएसि णं भंते! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[3]? •अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव?° अप्पवेयणतराए चेव? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ?

कालोदाई! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव[4], •महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[5], •अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे[6] •अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव? अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव°? अप्पवेयणतराए चेव?

कालोदाई! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविक्कायं समारंभति, बहुतरागं आउक्कायं समारंभति, अप्पतरागं तेउक्कायं समारंभति, बहुतरागं वाउकायं समारंभति, बहुतरागं वणस्सइकायं समारंभति, बहुतरागं तसकायं समारंभति।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविकायं समारंभति, अप्पतरागं आउक्कायं समारंभति, बहुतरागं तेउक्कायं समारंभति, अप्पतरागं वाउकायं समारंभति, अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभति, अप्पतरागं तसकायं समारंभति। से तेणट्ठेणं कालोदायी![7] •एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महा-

१. सं० पा०—कम्मा जाव कज्जंति।
२. सं० पा०—सरिसया जाव सरिसभंड°।
३. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
४. सं० पा०—चेव जाव महावेयण°।
५. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
६. सं० पा०—पुरिसे जाव अप्पवेयण°।
७. सं० पा०—कालोदायी जाव अप्पवेयण°।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेय°तराए चेव ॥

२२९. अत्थि णं भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति ? उज्जोवेंति ? तवेंति ? पभासेंति ?

हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भंते ! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति[1] ? •उज्जोवेंति ? तवेंति? ° पभासेंति ?

कालोदाई ! कुद्धस्स[2] अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहिं-जहिं च णं सा निपतति तहिं-तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[3], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति। एतेणं कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[4], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति ॥

२३१. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२३२. [6]•तए णं से कालोदाई ! अणगारे जाव[7] चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

१. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
२. विभक्तिपरिणामात्क्रुद्धेन (वृ)।
३. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
४. सं० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं।
६. सं० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख°।
७. भ० १।४३३।
८. भ० १।५१।

अट्ठमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. पोग्गल २. आसीविस ३. रुक्ख ४. किरिय ५. आजीव ६, ७. फासुकमदत्ते ।
८. पडिणीय ९. बंध १०. आराहणा य दस अट्ठमंमि सते ॥१॥

पोग्गलपरिणति-पदं

१. रायगिहे जाव[1] एवं वदासी—कतिविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—पयोगपरिणया, मीसापरिणया[2], वीससापरिणया ॥

(१) **पयोगपरिणति-पदं**

२. पयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियपयोगपरिणया[3], •बेइंदियपयोग-परिणया, तेइंदियपयोगपरिणया, चउरिंदियपयोगपरिणया°, पंचिंदियपयोग-परिणया ॥

३. एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया[4], •आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, तेउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, वाउ-काइयएगिंदियपयोगपरिणया°, वणस्सइकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ॥

१. भ० १।४-१० ।
२. मीससा° (अ, स); मीस° (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—एगिंदियपयोगपरिणया जाव पंचिंदिय° ।
४. सं० पा०—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया जाव वणस्सइ° ।

४. पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया य। आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एवं चेव। एवं दुयओ[1] भेदो जाव वणस्सइकाइया य ॥

५. बेइंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। एवं तेइंदिय-चउरिंदियपयोगपरिणया वि ॥

६. पंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया, तिरिक्ख-मणुस्स-देवपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

७. नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—रयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया[2] वि जाव[3] अहेसत्तमपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया वि ॥

८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, खहचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

९. जलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियजलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१०. थलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, परिसप्पथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

११. चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१२. एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। एवं भुयपरिसप्पा वि। एवं खहयरा वि ॥

१३. मणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।

१. दुपओ (क, ब, स, वृपा)।
२. रयणप्पभा° (अ, स)।
३. भ० २।७७।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१४. देवपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासिदेवपंचिंदियपयोगपरिणया, एवं जाव[1] वेमाणिया ॥

१५. भवणवासिदेवपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारदेवपंचिंदियपयोगपरिणया जाव[2] थणियकुमारदेवपंचिंदियपयोगपरिणया ॥

१६. एवं एएणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरा—पिसाया जाव[3] गंधव्वा । जोतिसिया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—चंदविमाणजोतिसिया जाव[4] ताराविमाणजोतिसियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया । वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—कप्पोवगवेमाणिया कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगवेमाणिया दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणिया जाव[5] अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया । कप्पातीतगवेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया, अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणिया । गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया नवविहा पण्णत्ता, तं जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया जाव[6] उवरिम-उवरिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया ॥

१७. अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—विजयअणुत्तरोववातिय[7] °कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग° परिणया जाव[8] सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोगपरिणया[9] ॥

(२) पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

१८. सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा[10]—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[11] °एगिंदियपयोग°

---

१. भ० २।११६ ।
२. पू० प० २ ।
३. ठा० ८।११६ ।
४. ठा० ५।५२ ।
५. अ० सू० २८७ ।
६. ठा० ९।३८ ।
७. सं०पा०—विजयअणुत्तरोववातिय जाव परिणया
८. भ० ६।१२१ ।
९. °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. अतोग्रे 'केति अपज्जत्तगं पढमं भणंति पच्छा पज्जत्तगं' इति पाठोऽस्ति । वृत्तौ नासौ व्याख्यातोऽस्ति । असौ मतभेदसूचकः पाठो वृत्त्युत्तरकाले मूले प्रक्षिप्तोभूदितिसंभाव्यते ।
११. सं० पा०—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणया; एगपदे सन्धिरत्र, तेन 'पज्जत्तग' इति परिपदस्य 'पज्जत्ता' इति रूपं जातम् ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[1]°एगिंदियपयोग°परिणया य।
बादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया।
एक्केका दुविहा सुहुमा य, बादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

१९. बेइंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगबेइंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि॥

२०. रयणप्पभपुढविनेरइयपयोगपरिणयाणं पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगरयणप्पभ जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एवं जाव अहेसत्तमा॥

२१. संमुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग। एवं गब्भवक्कंतिया वि। संमुच्छिमचउप्पयथलचरा एवं चेव। एवं गब्भवक्कंतिया वि। एवं जाव संमुच्छिमखहयरगब्भवक्कंतिया य। एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा॥

२२. संमुच्छिममणुस्सपंचिंदिय—पुच्छा।
गोयमा! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव॥

२३. गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदिय पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि॥

२४. असुरकुमारभवणवासिदेवाणं पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुरकुमार। एवं जाव[2] थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य॥

२५. एवं एतेणं अभिलावेणं दुयएणं भेदेणं पिसाया जाव[3] गंधव्वा। चंदा जाव[4] ताराविमाणा। सोहम्मकप्पोवगा जाव[5] अच्चुतो। हेट्ठिमहेट्ठिम-गेवेज्जकप्पातीत जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्ज। विजयअणुत्तरोववाइय जाव[7] अपराजिय।

२६. सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय, अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि॥

१. सं० पा०—°पुढविकाइय जाव परिणया।
२. पू० प० ३।
३. ठा० ८।११६।
४. ठा० ५।५२।
५. अ० सू० २८७।
६. ठा० ९।३८।
७. भ० ६।१२१।

(३) सरीरं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

२७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[1]। जे पज्जत्तासुहुम जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, नवरं—जे पज्ज-त्ताबादरवाउकाइयएगिंदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[2]। सेसं तं चेव ॥

२८. जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एवं जाव अहेसत्तमा ॥

२९. जे अपज्जत्तासंमुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। एवं पज्जत्तगा वि। गब्भवक्कंतियअपज्जत्ता एवं चेव। पज्जत्तगा णं एवं चेव, नवरं—सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं। एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिया एवं चउप्पया[3]-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्प खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥

३०. जे संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर-प्पयोगपरिणया[4]। एवं गब्भवक्कंतिया वि। अपज्जत्तगा वि, पज्जत्तगा वि एवं चेव, नवरं—सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि ॥

३१. जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एवं पज्जत्तगा वि। एवं दुयएणं भेदेणं जाव थणियकुमारा। एवं पिसाया जाव गंधव्वा। चंदा जाव ताराविमाणा। सोहम्मकप्पो जावच्चुओ। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग जाव उवरिम-उवरिमगेवेज्जग। विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय। एक्केक्के दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[5]-•कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग°परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ॥

(४) इंदियं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३२. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एवं चेव। जे अपज्जत्ताबादरपुढविकाइय एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि। एवं चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सतिकाइआ ॥

१. कम्म° (अ, ब, म); कम्मग° (स); अत्रापि स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धिः।
२. °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. चतुष्पद (क, ब)।
४. °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स)।
५. अपज्जत्ता° (अ, क, ता, ब, म, स); सं० पा०—°वाइय जाव परिणया।

३३. जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ताबेइंदिय एवं चेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं ।।

३४. जे[1] अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एवं सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग°परिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय[3]•घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोग°परिणया ।।

(५) सरीरं इंदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३५. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम°एवं चेव। बादरअपज्जत्ता एवं चेव। एवं पज्जत्तगा वि।

एवं एतेणं अभिलावेणं जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[4]•कप्पातीतगवेमाणिय°देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय जाव फासिंदियप्पयोगपरिणया ।।

(६) वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३६. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील-लोहिय[5]-हालिद्द-सुक्किल्लवण्णपरिणया वि; गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि; रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अंबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि; फासओ कक्खडफासपरिणया वि[6], •मउयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि°, लुक्खफासपरिणया वि; संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि, वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-संठाणपरिणया वि।

जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एवं चेव। एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।।

१. जाव (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—°वाइय जाव परिणया।
३. सं० पा०—चक्खिदय जाव परिणया।
४. अपज्जत्ता० (अ, क, ब, स); सं० पा०—°वाइय जाव देव०।
५. लोहिग (ता, ब, म)।
६. सं० पा०—वि जाव लुक्ख०।

(७) सरीरं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेव-पंचिदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया[1] ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

(८) इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३८. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2]-°कप्पातीतगवेमाणिय° देवपंचिदियसोतिंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ॥

(९) सरीरं इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३९. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-फासिंदियपयोग-परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिदियवेउव्विय-तेया-कम्मा-सोइंदिय जाव फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसंठाण परिणया वि । 'एते नव दंडगा'[3] ॥

मीसपरिणति-पदं

४०. मीसापरिणया[4] णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पंचिदिय-मीसापरिणया ॥

४१. एगिंदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
एवं जहा पयोगपरिणएहिं नव दंडगा भणिया, एवं मीसापरिणएहिं वि नव

१. °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. सं० पा०—°वाइय जाव देव° ।
३. एवं नव दंडगा भणिया (अ, स) ।
४. मीस° (अ) ।

दंडगा भाणियव्वा, तहेव सव्वं निरवसेसं, नवरं—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेसं तं चेव जाव[1] जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।।

वीससापरिणति-पदं

४२. वीससापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—वण्णपरिणया, गंधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, संठाणपरिणया ।
जे वण्णपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालवण्णपरिणया जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणया ।
जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुब्भिगंधपरिणया[3], दुब्भिगंधपरिणया[4] ।
जे रसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—तित्तरसपरिणया जाव[5] महुररसपरिणया ।
जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तं जहा—कक्खडफासपरिणया जाव[6] लुक्खफासपरिणया ।
जे संठाणपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणया जाव[7] आयतसंठाणपरिणया ।
जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि ।
एवं जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेसं जाव[8] जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ।।

एगं दव्वं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

४३. एगे भंते ! दव्वे किं पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?
गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ।।

पयोगपरिणति-पदं

४४. जइ पयोगपरिणए किं मणपयोगपरिणए[9] ? वइपयोगपरिणए[10] ? कायपयोगपरिणए[11] ?

---

१. भ० ८।३-३६ ।
२. भ० ८।३६ ।
३. सुगंधपरिणया वि(अ, स); सुरभि०(ता, ब) ।
४. दुगंधपरिणया वि(अ, स); दुरभि०(ता, ब) ।
५. भ० ८।३६ ।
६. भ० ८।३६ ।
७. भ० ८।३६ ।
८. प० १ ।
९. मणप्प० (ता, म) ।
१०. वयप० (क); वयप्प० (ब, म) ।
११. कायप्प० (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! मणपयोगपरिणए वा, वइपयोगपरिणए वा, कायपयोगपरिणए वा ॥

मणपयोगपरिणति-पदं

४५. जइ मणपयोगपरिणए किं सच्चमणपयोगपरिणए ? मोसमणपयोगपरिणए ? सच्चामोसमणपयोगपरिणए ? असच्चामोसमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणए वा, मोसमणपयोगपरिणए वा, सच्चामोसमणपयोगपरिणए वा, असच्चामोसमणपयोगपरिणए वा ॥

४६. जइ सच्चमणपयोगपरिणए किं आरंभसच्चमणपयोगपरिणए ? अणारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? सारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? समारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असमारंभसच्चम० पयोगपरिणए ?
गोयमा ! आरंभसच्चमणपयोगपरिणए वा जाव असमारंभसच्चमणपयोगपरिणए वा ॥

४७. जइ मोसमणपयोगपरिणए किं आरंभमोसमणपयोगपरिणए ?
एवं जहा सच्चेणं तहा मोसेण वि । एवं सच्चामोसमणपयोगेण वि । एवं असच्चामोसमणपयोगेण वि ॥

वइपयोगपरिणति-पदं

४८. जइ वइपयोगपरिणए किं सच्चवइपयोगपरिणए ? मोसवइपयोगपरिणए ?
एवं जहा मणपयोगपरिणए तहा वइपयोगपरिणए वि जाव असमारंभवइपयोगपरिणए वा ॥

कायपयोगपरिणति-पदं

४९. जइ कायपयोगपरिणए किं ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगसरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? कम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५०. जइ ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? जाव[1] पंचिंदियओरालिय[2]°सरीरकायपयोग°परिणए ?

१. एवं जाव (अ, स) ।
२. सं० पा०—पंचिंदियओरालिय जाव परिणए ।

गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव[1] पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५१. जइ एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय°ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?

गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय[2]°ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय[3]°ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा ॥

५२. जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए[4] किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा ॥

५३. जइ सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए किं पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ?

गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा । एवं बादरा वि । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं दुयओ भेदो—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५४. जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

५५. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?

एवं चउक्कओ भेदो जाव खहचराणं ॥

५६. जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं संमुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?

गोयमा ! दोसु वि ॥

५७. जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ?

१. बेइंदिय जाव परिणए वा (अ, क, ब, म, स); बेइंदिय जाव (ता) ।
२. सं० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
३. सं० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
४. सं० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
५. °सरीर जाव परिणए (अ,क, ता, ब,म, स) ।

गोयमा ! पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए वा ।।

५८. जइ ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए ? जाव पंचिंदियओरालिय जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए एवं जहा ओरालिय-सरीरकायपयोगपरिणएणं आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकाय-पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवरं—बादरवाउक्काइय-गब्भव-वक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणीय-गब्भवक्कंतियमणुस्साणं[1]—एएसिणं पज्जत्ता-पज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं ।।

५९. जइ वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोग-परिणए ? पंचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा, पंचिंदिय जाव परिणए वा ।।

६०. जइ एगिंदिय जाव परिणए किं वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ? अवा-उक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए । एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे[2] वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पा-तीतावेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्ता-सव्वट्ठसिद्धअणत्तरोववाइय जाव परिणए वा ।।

६१. जइ वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायपयोग-परिणए ? जाव पंचिंदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एवं जहा वेउव्वियं तहा वेउव्वियमीसगं पि, नवरं—देव-नेरइयाणं अपज्जत्त-गाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं[3] जाव नो पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीर-कायपयोगपरिणए ।।

६२. जइ आहारगसरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायपयोगपरिणए? अमणुस्साहारग जाव परिणए ?

एवं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्ज-वासाउय जाव परिणए ।।

---

१. °मणुस्साण य (अ, क, ता, ब) ।

२. एतन्नामके प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे ।

३. पज्जत्तगाणं तहेव (अ, स); अत्र द्वयोर्मिश्रणम्; तहेव (क, ता, म) ।

६३. जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकाय-पयोगपरिणए ?
एवं जहा आहारगं तहेव मीसगं पि निरवसेसं भाणियव्वं ।।

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पंचिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एवं जहा ओगाहणसंठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°कप्पातीतगवेमाणिय°देवपंचिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ।।

मीसपरिणति-पदं

६५. जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए[2] ? कायमीसा-परिणए ?
गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ।।

६६. जइ मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ? जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्वं निरवसेसं जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ।।

वीससापरिणति-पदं

६७. जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए ? गंधपरिणए ? रसपरिणए ? फास-परिणए ? संठाणपरिणए ?
गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गंधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, संठाणपरिणए वा ।।

६८. जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए जाव[3] सुक्किलवण्णपरिणए ?
गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ।।

६९. जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए ? दुब्भिगंधपरिणए ?
गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए वा, दुब्भिगंधपरिणए वा ।।

७०. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा ।
गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ।।

७१. जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?
गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ।।

१. सं० पा०—°वाइय जाव देव° ।
२. वय° (ब, स); वति° (क) ।
३. नील जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७२. जइ संठाणपरिणए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमंडलसंठाणपरिणए वा जाव आयतसंठाणपरिणए वा ॥

दोण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

७३. दो भंते दव्वा ! किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए ५. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे वीससापरिणए ६. अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

७४. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १. मणपयोगपरिणया वा २. वइपयोगपरिणया वा ३. कायपयोगपरिणया वा ४. अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे वइपयोगपरिणए ५. अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ६. अहवेगे वइपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ॥

७५. जइ मणपयोगपरिणया किं सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १. सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चमोसमणपयोगपरिणया वा ५. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे मोसमणपयोगपरिणए ६. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ७. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ८. अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ९. अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए १०. अहवेगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ॥

७६. जइ सच्चमणपयोगपरिणया किं आरंभसच्चमणपयोगपरिणया ? जाव[1] असमारंभसच्चमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! आरंभसच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असमारंभसच्चमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे आरंभसच्चमणपयोगपरिणए, एगे अणारंभसच्चमणपयोगपरिणए । एवं एएणं गमेणं दुयासंजोएणं[2] नेयव्वं, सव्वे संजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेंति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ॥

७७. जइ मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया ?
एवं मीसापरिणया वि ॥

---

१. भ० ८।४६ । २. दुय० (ब) ।

७८. जइ वीससापरिणया किं वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरंससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाण-परिणए ॥

तिण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

७९. तिण्णि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया ६. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए[1] ७. अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ८. अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया ९. अहवा दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८०. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एवं एक्कासंयोगो[2], दुयासंयोगो[3], तियासंयोगो[4] य भाणियव्वो ॥

८१. जइ मणपयोगपरिणया किं सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया । एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अहवेगे तंससंठाणपरिणए, एगे चउरंससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १. पयोगपरिणया वा २. मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि[5] मीसापरिणया ५. अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ६. अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७. अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ८. अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ९. अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे मीसापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ११. अहवा दो मीसापरिणया, दो

---

१. मीससा° (स) ।
२. एक्क° (ब) ।
३. दुय° (ब) ।
४. तिय° (ब) ।
५. तिण्णिओ (ता) ।

वीससापरिणया १२. अहवा तिण्णि मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १३. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १४. अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १५. अहवा दो पयोग-परिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ।।

८३. जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य दव्वा भाणियव्वा—दुयासंजोएणं तियासंजोएणं जाव दससंजोएणं बारससंजोएणं उवजुंजिऊणं[1] जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेति ते सव्वे भाणियव्वा; एए पुण जहा नवमसए[2] पवेसणए भणिहामो तहा उवजुंजिऊण भाणियव्वा जाव असंखेज्जा अणंता एवं चेव, नवरं—एक्कं पदं अब्भहियं जाव अहवा अणंता परिमंडल-संठाणपरिणया जाव अणंता आयतसंठाणपरिणया ।।

८४. एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं पयोगपरिणयाणं, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाणं य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ॰ विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा ।।

८५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

बीओ उद्देसो

आसीविस-पदं

८६. कतिविहा णं भंते ! आसीविसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, तं जहा—जातिआसीविसा य, कम्म-आसीविसा य ।।

८७. जातिआसीविसा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

१. उवजुज्जित्तणं (क); उववज्जिऊणं (ता); उवजुत्तिऊणं (ब); उवजुज्जिऊणं (स)।
२. भ० ९।८६-१३२ ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. भ० १।५१ ।

गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मंडुक्कजाति-आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे[1] ॥

८८. विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगयं[2] विसट्टमाणं पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु[3] वा, करेंति वा, करिस्संति वा ॥

८९. मंडुक्कजातिआसीविसस्स [4]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?°
गोयमा ! पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसप-रिगयं [5]°विसट्टमाणं पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

९०. [6]°उरगजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विस-परिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

९१. मणुस्सजातिआसीविसस्स [7]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए । विसए से विसट्टयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा,° करिस्संति वा ॥

९२. जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसी-विसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?
गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्स-कम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३. जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरि-क्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ।
जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

१. मणुय° (ता) ।
२. विसपरिणयं (ठा० ४।५१४) ।
३. इह चैकवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ) ।
४. सं० पा० पुच्छा ।
५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव करिस्संति ।
६. सं० पा०—एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं—जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति ।
७. सं० पा०—वि एवं चेव, नवरं—समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति ।

णियकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव[१] पज्जत्तासंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतिय-पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे ।।

९४. जइ मणुस्सकम्मासीविसे किं संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे ? गब्भवक्कंतिय-मणुस्सकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे, एवं जहा वेउव्वियसरीरं जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतिय-मणुस्सकम्मासीविसे[२], नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ।।

९५. जइ देवकम्मासीविसे किं भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ?
गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे वि ।
जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे वि ।
जइ असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे[३] किं पज्जत्ताअसुरकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे । एवं जाव थणियकुमाराणं ।
जइ वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमंतरदेवकम्मासीविसे ? एवं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं । जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं ।
जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे[४] ? कप्पा-तीयावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ।
जइ कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

१. प० २१ ।
२. ०कम्मभूमग० (स) ।
३. असुरकुमार जाव कम्म० (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. कप्पोवग० (अ, क, ता, म, स) ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा[1] °वेमाणियदेव°कम्मासीविसे किं पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एवं जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।।

छउमत्थ-केवलि-पदं

९६. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा—१. धम्मत्थिकायं २. अधम्मत्थिकायं ३. आगासत्थिकायं ४. जीवं असरीरपडिबद्धं ५. परमाणुपोग्गलं ६. सद्दं ७. गंधं ८. वातं ९. अयं जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ १०. अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ-पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं[2], °अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवं असरीरपडिबद्धं, परमाणुपोग्गलं, सद्दं, गंधं, वातं, अयं जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं° करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।।

नाण-पदं

९७. कतिविहे णं भंते ! नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ।।

९८. से किं तं आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा । एवं जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव[3] सेत्तं केवलनाणे[4] ।।

१. सं० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मासीविसे ।
२. सं० पा०—धम्मत्थिकायं जाव करेस्सइ ।
३. राय० सू० ७४१-७४५ ।
४. यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्यामङ्गप्ररूपणेत्यभिधाय 'जाव भवियअभविया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्तं तस्यायमर्थः—श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्यां श्रुतविषयं दर्शयतेदमभिहितम्—'इच्चेयंमि दुवालसंगे गणिपिडए अणंता भावा अणंता

९९. **अण्णाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?**
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, विभंगनाणे ॥

१००. से किं तं मइअण्णाणे ?
मइअण्णाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—ओग्गहो[1], °ईहा, अवाओ°, धारणा ॥

१०१. से किं तं ओग्गहे ?
ओग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य । एवं जहेव आभिणिबोहियनाणं तहेव, नवरं—एगट्ठियवज्जं[2] जाव[3] नोइंदियधारणा । सेत्तं धारणा, सेत्तं मइअण्णाणे ॥

१०२. से किं तं सुयअण्णाणे ?
सुयअण्णाणे—जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छंदबुद्धि-मइ-विगप्पियं, तं जहा—भारहं, रामायणं जहा नंदीए जाव[4] चत्तारि वेदा संगोवंगा । सेत्तं सुयअण्णाणे ॥

१०३. से किं तं विभंगनाणे ?
विभंगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—गामसंठिए, नगरसंठिए, जाव[5] सण्णिवेससंठिए, दीवसंठिए, समुद्दसंठिए, वाससंठिए, वासहरसंठिए, पव्वयसंठिए, रुक्खसंठिए, थूभसंठिए, हयसंठिए, गयसंठिए, नरसंठिए, किन्नरसंठिए, किंपुरिससंठिए, महोरगसंठिए, गंधव्वसंठिए, उसभसंठिए, पसुसंठिए, पसयसंठिए, विहगसंठिए, वानरसंठिए—नाणासंठाणसंठिए[6] पण्णत्ते ॥

जीवाणं नाणि-अण्णाणित्त-पदं

१०४. जीवा णं भंते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! जीवा नाणी वि, अण्णाणी वि ।
जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी[7] ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी

अभावा जाव अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ते' त्ति, अस्य च सूत्रस्य या संग्रहगाथा—
भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणा जीवा ।
अजीव भवियाऽभविया, तत्तो सिद्धा
असिद्धा य ॥
इत्येवंरूपा, तस्या: खण्डमिदमेतदन्तं
श्रुतज्ञानसूत्रमिहाध्येयमिति (वृ) ।

१. सं० पा०—ओग्गहो जाव धारणा ।

२. १. ओगेण्हणया २. उवधारणया ३. सवणया ४. अवलंबणया ५. मेहा (नंदी सू० ४३); इत्यादीनि पंच-पंचैकार्थिकान्यवग्रहादीनामधीतानि, मत्यज्ञाने तु न तान्यध्येयानीति भाव: (वृ) ।

३. नंदी सू० ४०-४८ ।

४. नंदी सू० ६७ ।

५. भ० १।४९ ।

६. नाणासंठिए (ता, ब) ।

७. दुयाणाणी (क, ता, ब, म, स) ।

य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा अभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी॥

१०५. नेरइया णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए॥

१०६. असुरकुमारा णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?

जहेव नेरइया तहेव, तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। एवं जाव[1] थणियकुमारा॥

१०७. पुढविक्काइया णं भंते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नो नाणी, अण्णाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एवं जाव वणस्सइकाइया॥

१०८. बेइंदियाणं पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एवं तेइंदिय-चउरिंदिया वि॥

१०९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एवं तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पंच नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। वाणमंतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि नियमा॥

११०. सिद्धाणं भंते! पुच्छा।

गोयमा! नाणी, नो अण्णाणी; नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. पू० प० २।

अंतरालगति पडुच्च—

१११. 'निरयगतिया णं''[1] भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । तिण्णि नाणाइं नियमा, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ।।

११२. तिरियगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा[2] ।।

११३. मणुस्सगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा । देवगतिया जहा निरयगतिया ।।

११४. सिद्धगतिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा[3] सिद्धा ।।

इंदिय पडुच्च—

११५. सइंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ।।

११६. एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा पुढविकाइया । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया णं दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया ।।

११७. अणिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ।।

कायं पडुच्च—

११८. सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइ-अण्णाणी य सुयअण्णाणी य । तसकाइया जहा सकाइया ।।

११९. अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ।।

सुहुम-बादरं पडुच्च—

१२०. सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा पुढविक्काइया ।।

---

१. निरयगतियाणं (वृ) ।
२. नियमं (ता) ।
३. भ० ८।११० ।

१२१. बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ।।

१२२. नोसुहुमा-नोबादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ।।

पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च—

१२३. पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ।।

१२४. पज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा । जहा नेरइया एवं थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा एगिंदिया । एवं जाव चउरिंदिया ।।

१२५. पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

१२६. अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ।

१२७. अपज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया ।।

१२८. बेइंदियाणं पुच्छा ।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ।।

१२९. अपज्जत्तगा णं भंते ! मणुस्सा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा । वाणमंतरा जहा नेरइया । अपज्जत्तगाणं जोइसिय-वेमाणियाणं तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—नियमा ।।

१३०. नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ।।

भवत्थं पडुच्च—

१३१. निरयभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ।।

१३२. तिरियभवत्था णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ।।

१३३. मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ।।

१३४. देवभवत्था णं भंते !
जहा निरयभवत्था । अभवत्था जहा सिद्धा ।।

भवसिद्धियाभवसिद्धियं पडुच्च—

१३५. भवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ।।

१३६. अभवसिद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी; तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ।।

१३७. नोभवसिद्धिया-नोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ।।

सण्णि-असण्णि पडुच्च—

१३८. सण्णीणं पुच्छा ।
जहा सइंदिया । असण्णी जहा बेइंदिया । नोसण्णी-नोअसण्णी जहा सिद्धा ।।

लद्धि-पदं

१३९. कतिविहा णं भंते लद्धी पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, तं जहा—१. नाणलद्धी २. दंसणलद्धी ३. चरित्तलद्धी ४. चरित्ताचरित्तलद्धी ५. दाणलद्धी ६. लाभलद्धी ७. भोग-लद्धी ८. उवभोगलद्धी ९. वीरियलद्धी १०. इंदियलद्धी ।।

१४०. नाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणलद्धी जाव[1] केवल-नाणलद्धी ।।

१४१. अण्णाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणलद्धी, सुयअण्णाणलद्धी, विभंगनाणलद्धी ।।

१४२. दंसणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी ।।

१४३. चरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयचरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणिय-चरित्तलद्धी, परिहारविसुद्धिचरित्तलद्धी, सुहुमसंपरायचरित्तलद्धी, अहक्खाय-चरित्तलद्धी ।।

---

१. भ० ८।९७ ।

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता । एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५. वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—बालवीरियलद्धी, पंडियवीरियलद्धी, बालपंडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियलद्धी जाव[1] फासिंदियलद्धी ॥

नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पदं

१४७. नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, एवं पंच नाणाइं भयणाए ॥

१४८. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिबोहियनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए ॥

१५०. तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणलद्धिया वि । तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया[2] ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५३. मणपज्जवनाणलद्धियाणं पुच्छा ।

१. भ० २।७७ ।
२. लद्धीया (अ, ब, म, स); अर्थसमीक्षया एतत्पदमशुद्धं प्रतिभाति ।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी ।

१५४. तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ।

१५५. केवलनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

१५६. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । केवलनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५७. अण्णाणलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी । तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥

१५८. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । पंच नाणाइं भयणाए । जहा अण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भणिया, एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा । विभंगनाणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा ।

दंसणं पडुच्च—

१५९. दंसणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६०. तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि ।
सम्मदंसणलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ॥
मिच्छादंसणलद्धियाणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं—भयणाए ।
सम्मामिच्छादंसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धिया अलद्धिया तहेव भाणियव्वा ॥

चरित्तं-पडुच्च—

१६१. चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पंच नाणाइं भयणाए ॥

तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं-भयणाए ।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं—भयणाए । एवं जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवरं—अहक्खायचरित्तलद्धीयाणं[1] पंच नाणाइं भयणाए ॥

चरित्ताचरित्तं पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी। जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी ॥

दाणाइं पडुच्च—

१६४. तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ।
दाणलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६५. तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी । एवं जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया'[2] य भाणियव्वा ।

बालाइवीरियं पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए ।

पंडियवीरियलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं, अण्णाणाणि य भयणाए ।

बालपंडियवीरियलद्धियाणं तिण्णि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

इंदियं पडुच्च—

१६६. इंदियलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१६७. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी । नियमा एगनाणी—केवलनाणी ॥

१. °लद्धीए (अ, क, ता, ब, म, स) । २. लद्धी अलद्धी (अ, क, ता, ब, म, स) ।

१६८. सोइंदियलद्धिया णं जहा इंदियलद्धिया ॥

१६९. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । चक्खिंदिय-घाणिंदियाणं लद्धीया अलद्धीया य जहेव सोइंदियस्स ॥

१७०. जिब्भिंदियलद्धियाणं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइं— भयणाए ॥

१७१. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । फासिंदियलद्धीया अलद्धीया य जहा इंदियलद्धिया अलद्धिया य ॥

उवउत्ताणं नाणि-अण्णाणित्त-पदं

१७२. सागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१७३. आभिणिबोहियनाणसागारोवउत्ता णं भंते ?
चत्तारि नाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धीया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।
मइअण्णाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए । एवं सुयअण्णाणसागारोवउत्ता वि । विभंगनाणसागारोवउत्ताणं तिण्णि अण्णाणाइं नियमा ॥

१७४. अणागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
पंच नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए । एवं चक्खुदंसण-अचक्खुदंसणअणागारोवउत्ता वि, नवरं—चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१७५. ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा तिअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी । केवलदंसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ॥

जोगं पडुच्च—

१७६. सजोगी णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सकाइया । एवं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ॥

---

१. भ० ८।११८ ।

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकाइया ॥

१७८. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सइंदिया । एवं जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ॥

कसायं पडुच्च—

१७६. सकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं जाव लोभकसाई ॥

१८०. अकसाई णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
पंच नाणाइं भयणाए ॥

वेदं पडुच्च—

१८१. सवेदगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुंसग वेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ॥

आहारगं पडुच्च—

१८२. आहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकसाई, नवरं—केवलनाणं पि ॥

१८३. अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं, अण्णाणाइं तिण्णि—भयणाए ॥

नाणाणं विसय-पदं

१८४. आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
[2]°कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ-पासइ[3]° ॥

---

१. भ० ८।११५ ।

२. सं० पा०—एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।

३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विवक्षाभेदोस्ति—दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ, न पासइ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ, न पासइ ।

१८५. सुयनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
[1]°खेत्तओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्तं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वकालं जाणइ-पासइ ।°
भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ-पासइ ॥

१८६. ओहिनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं ओहिनाणी[2] °जहण्णेणं अणंताइं रूविदव्वाइं जाणइ-पासइ । उक्कोसेणं सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं जाणइ-पासइ । उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोगे लोयमेत्ताइं खंडाइं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं जाणइ-पासइ । उक्कोसेणं असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ अईयमणागयं च कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ णं ओहिनाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ-पासइ । उक्कोसेण वि अणंते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ-पासइ° ॥

१८७. मणपज्जवनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए[3] °खंधे जाणइ-पासइ । ते चेव विउलमई अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ णं उज्जुमई अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे, उड्ढं जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं जाव अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु

कालओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ, न पासइ ।
भावओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ, न पासइ (सू० ५४) ।

१. सं० पा०—एवं खेत्तओ वि, कालओ वि ।
२. सं० पा०—ओहिनाणी रूविदव्वाइं जाणइ-पासइ जहा नंदीए जाव भावओ ।
३. सं० पा०—जहा नंदीए जाव भावओ ।

छप्पण्णए अंतरदीवगेसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-पासइ ।
तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स, असंखिज्जयभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ-पासइ ।
तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।
भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ-पासइ ।
तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ-पासइ°।।

१८८. केवलनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ ।
[1]°खेत्तओ णं केवलनाणी सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ° ।।

१८९. मइअण्णाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ[2] ।
°खेत्तओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं खेत्तं जाणइ-पासइ ।
कालओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं कालं जाणइ-पासइ ।°
भावओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ।।

१९०. सुयअण्णाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।
दव्वओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ[3]।

१. सं० पा०—एवं जाव भावओ ।
२. सं० पा०—पासइ जाव भावओ ।
३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमवलोक्यते 'दंसेति निदंसेति उवदंसेति' (वृ) ।

'•खेत्तओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयं खेत्तं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ। कालओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयं कालं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ°। भावओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ', •पण्णवेइ, परूवेइ° ॥

१६१. विभंगनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ।
'•खेत्तओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयं खेत्तं जाणइ-पासइ।
कालओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयं कालं जाणइ-पासइ।°
भावओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

नाणीणं संठिइ-पदं

१६२. नाणी णं भंते ! नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! नाणी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. सादीए वा अपज्जवसिए २. सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं ॥

१६३. आभिणिबोहियनाणी णं भंते ! आभिणिबोहिय' •नाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! एवं चेव' ॥

१६४. एवं' सुयनाणी वि ॥

१६५. ओहिनाणी वि एवं' चेव, नवरं—जहण्णेणं एक्कं समयं ॥

१६६. मणपज्जवनाणी णं भंते ! मणपज्जवनाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥

१६७. केवलनाणी णं भंते ! केवलनाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

१६८. अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी णं भंते ! पुच्छा।

१. सं० पा०—एवं खेत्तओ कालओ।
२. सं० पा०—तं चेव।
३. सं० पा०—एवं जाव भावओ।
४. सं० पा०—एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विब्भंगनाणी एएसिं दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] संचिट्ठणा जहा कायठितीए अंतरं सव्वं जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए।
५. भ० ८।१६२।
६. भ० ८।१६२।
७. भ० ८।१६२।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. अणादीए वा अपज्जवसिए २. अणादीए वा सपज्जवसिए ३. सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१९९. विभंगनाणी णं भंते ! पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ॥

नाणीणं अंतर-पदं

२००. आभिणिबोहियनाणिस्स णं भंते ! अंतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव[1] अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं ॥

२०१. सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीणं एवं चेव ॥

२०२. केवलनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

२०३. मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइं साइरेगाइं ॥

२०४. विभंगनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ॥

नाणीणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२०५. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं, सुयनाणीणं, ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणंत-गुणा ॥

२०६. एतेसि णं भंते ! जीवाणं मइअण्णाणीणं, सुयअण्णाणीणं, विभंगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

---

१. भ० ८।१९८।

२०७. एतेसि णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं सुयनाणीणं ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीणं मतिअण्णाणीणं सुयअण्णाणीणं विभंगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असंखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगनाणी असंखेज्जगुणा, केवलनाणी अणंतगुणा, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य दो वि तुल्ला अणंतगुणा° ।।

नाणपज्जव-पदं

२०८. केवतिया णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ।।

२०९. केवतिया णं भंते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
एवं चेव ।।

२१०. एवं जाव केवलनाणस्स । एवं मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स ।।

२११. केवतिया णं भंते ! विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ।।

नाणपज्जवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

२१२. एतेसि णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं, ओहिनाणपज्जवाणं, मणपज्जवनाणपज्जवाणं, केवलनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ।।

२१३. एएसि णं भंते ! मइअण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा ।।

२१४. एएसि णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं जाव केवलनाणपज्जवाणं, मइअण्णाणपज्जवाणं, सुयअण्णाणपज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा ?

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ।।

२१५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-पदं

२१६. कतिविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ।।

२१७. से किं तं संखेज्जजीविया ?
संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

ताल[2] तमाले तक्कलि, तेयलि[3] •साले य सालकल्लाणे ।
सरले जावति केयइ, कंदलि तह चम्मरुक्खे य ।।१।।
भुयरुक्ख हिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खे य होति बोधव्वे ।
पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य• ।।२।।

जे यावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ।।

२१८. से किं तं असंखेज्जजीविया ?
असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य ।।

२१९. से किं तं एगट्ठिया ?
एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

निंबंब जंबु[4] •कोसंब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य ।
सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ।।१।।
पुत्तंजीवयरिट्ठे, बिभेलए हरडए य भल्लाए ।
उंबभरिया[5] खीरिणि, बोधव्वे धायइ पियाले ।।२।।

१. भ० १।५१ ।
२. ताले (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी ।
४. सं० पा०—जहा पण्णवणापदे जाव फला ।
५. प्रज्ञापनावृत्तौ 'उंबेभरिका' इति लभ्यते । भ० २२।२ सूत्रे 'उंबभरिका' इतिपदमस्ति ।

पूइयनिंबारग सेण्हा, तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग नागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोगे य॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला एगट्ठिया। सेत्तं एगट्ठिया॥

२२०. से किं तं बहुबीयगा?

बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

अत्थिय तिंदु कविट्ठे, अंबाडग माउलिंग बिल्ले य।
आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उंबर वडे य॥१॥
नग्गोह नंदिरुक्खे, पिप्परि सयरी पिलुक्खरुक्खे य।
काउंबरी कुत्थुंभरि, बोधव्वा देवदाली य॥२॥
तिलए लउए छत्तोह, सिरीसे सत्तिवण्ण दहिवण्णे।
लोद्ध धव चंदणज्जुण, नीमे कुडए कयंबे य॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि णं मूला वि असंखेज्जजीविया, कंदा वि खंधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया।° फला बहुबीयगा। सेत्तं बहुबीयगा। सेत्तं असंखेज्जजीविया॥

२२१. से किं तं अणंतजीविया?

अणंतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—आलुए, मूलए, सिंगबेरे—एवं जहा—सत्तमसए जाव[1] सिउंढी[2], मुसुंढी। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं अणंतजीविया॥

जीवपएसाणं-अंतर-पदं

२२२. अह भंते! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एएसि णं दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिन्नाणं जे अंतरा ते वि णं तेहिं जीवपएसेहिं फुडा?

हंता फुडा॥

२२३. पुरिसे णं भंते! अंतरे हत्थेण वा पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए[3] वा कट्ठेण वा किलिंचेण[4] वा आमुसमाणे वा संमुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अण्णयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा,

१. भ० ७।६६।
२. सीउण्हे (अ); सीउण्ही (क); सीउण्णी (ता); सीकण्हे (स)।
३. सलागए (अ); × (ता)।
४. कलिंचेण (अ, ता, ब, म, स)।

...णेण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ[1] ॥

चरिम-अचरिम-पदं

२२४. कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव[2] अहेसत्तमा, ईसीपब्भारा ॥

२२५. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा ? अचरिमा ?
चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[3]—

२२६. वेमाणिया णं भंते ! फासचरिमेणं किं चरिमा ? अचरिमा ?
गोयमा ! चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

२२८. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पंच किरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया—एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[6] सव्वत्थोवाओ मिच्छादंसणवत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, पारिग्गहियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, आरंभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ ॥

२२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

१. संकमइ (म, स) ।
२. भ० २।७५ ।
३. प० १० ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-८ ।
६. प० २२ ।
७. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

आजीवियसंदब्भे समणोवासय-पदं

२३०. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—आजीविया णं भंते ! थेरे भगवंते एवं वयासी—समणोवासगस्स[2] णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भंडं अवहरेज्जा, से णं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सभंडं[3] अणुगवेसइ ? परायगं भंडं अणुगवेसइ ?

गोयमा ! सभंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ॥

२३१. तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं से भंडे अभंडे भवइ[4] ?

हंता भवइ ॥

२३२. से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सभंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ?

गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—नो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कंसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मादीए संतसारसावदेज्जे[5], ममत्तभावे[6] पुण से अपरिण्णाए भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सभंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ॥

२३३. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ[7] जायं चरेज्जा, से णं भंते ! किं जायं चरइ ? अजायं चरइ ?

गोयमा ! जायं चरइ ? नो अजायं चरइ ॥

२३४. तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ?

हंता भवइ ॥

२३५. से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ—जायं चरइ ? नो अजायं चरइ ?

गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—नो मे माता, नो मे पिता, नो मे भाया, नो मे भगिणी, नो मे भज्जा, नो मे पुत्ता, नो मे धूया, नो मे सुण्हा; पेज्जबंधणे पुण से अव्वोच्छिन्ने[8] भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा[9] ! °एवं वुच्चइ—जायं चरइ°, नो अजायं चरइ ॥

---

१. भ० १।४-८।

२. एवं वक्ष्यमाणप्रकारमवादिषुः, यच्च ते तान् प्रत्यवादिषुस्तद्गौतमः स्वयमेव पृच्छन्नाह (वृ)।

३. सयभंडं (अ); सं भंडं (ता, म); सयं भंडं (स)।

४. हवइ (ता)।

५. °सापदेज्जे (ता); सावतेज्जे (ब)।

६. ममत्ति° (क, ता, ब)।

७. केवइ (ता)।

८. अवो° (अ)।

९. सं० पा०—गोयमा जाव नो।

२३६. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए[1] भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ।।

२३७. तीयं पडिक्कममाणे किं १. तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? २. तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ३. तिविहं एगविहेणं पडिक्कमति ? ४. दुविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? ५. दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ६. दुविहं एगविहेणं पडिक्कमति ? ७. एगविहं तिविहेणं पडिक्कमति ? ८. एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति ? ९. एगविहं एगविहेणं पडिक्कमति ?
गोयमा ! तिविहं वा[2] तिविहेणं पडिक्कमति, तिविहं वा दुविहेणं पडिक्कमति, एवं[3] चेव जाव एगविहं वा एगविहेणं पडिक्कमति ।
१. तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
२. तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
५. तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा ६. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा ७. अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा ।
८. दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १०. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
११. दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा १२. अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३. अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा १४. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १६. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा १७. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा १८. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १९. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
२०. दुविहं एक्कविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१. अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा २२. अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३. अहवा

---

१. [illegible] तु 'अपच्चक्खा[illegible]' इत्यस्य स्थाने 'पच्चक्खाए' त्ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' त्ति दृश्यते (वृ) ।
२. × (स) ।
३. तं (अ, क, ता, स) ।

न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा २४. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा २५. अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा २६. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा २७. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा २८. अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा ।

२९. एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ, मणसा वयसा कायसा ३०. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३१. अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।

३२. एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३३. अहवा न करेइ मणसा कायसा ३४. अहवा न करेइ वयसा कायसा ३५. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३६. अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३७. अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३८. अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ३९. अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४०. अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ।

४१. एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४२. अहवा न करेइ वयसा ४३. अहवा न करेइ कायसा ४४. अहवा न कारवेइ मणसा ४५. अहवा न कारवेइ वयसा ४६. अहवा न कारवेइ कायसा ४७. अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा ४८. अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा ४९. अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ॥

२३८. पडुप्पन्नं संवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ ?
एवं जहा पडिक्कममाणेणं एगूणपन्नं भंगा भणिया एवं संवरमाणेण वि एगूणपन्नं भंगा भाणियव्वा ॥

२३९. अणागयं पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ ?
एवं एते[1] चेव भंगा एगूणपन्नं[2] भाणियव्वा जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ॥

२४०. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?
एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भंगसयं भणियं, तहा मुसावायस्स वि भाणियव्वं । एवं अदिन्नादाणस्स वि[3], एवं थूलगस्स वि मेहुणस्स, थूलगस्स वि परिग्गहस्स जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा ।
एते खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु एरिसगा आजीविओवासगा भवंति ॥

१. × (अ, म); ते (क, ब, स) ।
२. × (ता) ।
३. वि भाणितव्वं (ता) ।

२४१. आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति ।।

२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, तं जहा—१. ताले २. तालपलंबे ३. उव्विहे ४. संविहे ५. अवविहे ६. उदए[1] ७. नामुदए ८. णम्मुदए[2] ९. अणुवालए १०. संखवालए ११. अयंपुले १२. कायरए[3]—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहंतदेवतागा[4], अम्मापिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिक्कंता, [तं जहा—उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं][5] पलंडुल्हसुणकंदमूलविवज्जगा[6], अणिल्लंछिएहिं[7] अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं छेत्तेहिं[8] वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं समणुजाणेत्तए, तं जहा—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे[9], दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया[10], असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ।।

२४३. कतिविहा णं भंते ! देवलोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा जोइसिया, वेमाणिया ।।

२४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[11] ।।

१. उवए (अ)।
२. णमुदए (स)।
३. कातरिए (ता, ब, म)।
४. °देवयागा (क्व०)।
५. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
६. पलंडूल्हसण° (स)।
७. अणे° (क, ता, स)।
८. बित्तेहिं (अ); छत्तेहिं (क, म); चित्तेहिं (स)
९. निलंछण° (अ); णेल्लंछण° (ता)।
१०. तलाय° (अ, स)।
११. भ° १।५१।

छट्ठो उद्देसो

समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पदं

२४५. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४६. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण[1]•-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ?
गोयमा ! बहुतरिया[2] से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४७. समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं अस्संजय-विरय[3]-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मं फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण[4]-•खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणस्स° किं कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ[5] निज्जरा कज्जइ ॥

उवनिमंतिपिंडादि-परिभोगविहि-पदं

२४८. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि । से य तं पडिग्गाहेज्जा[6], थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे[7] सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे[8] सिया ॥

२४९. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि । से य ते पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा •[9]सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा ते नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वा सिया । एवं जाव दसहिं पिंडेहिं

---

१. सं० पा०—पाण जाव पडिलाभेमाणस्स ।
२. बहुतरिता (क, ब, म) ।
३. अविरय (अ, क, ब, म) ।
४. सं० पा०—पाण जाव किं ।
५. कावि (क, ब) ।
६. पडिगाहेज्जा (अ, स); पडिग्गहेज्जा (ब) ।
७. अणुप्पतातव्वे (ता) ।
८. परिट्ठवेयव्वे (अ, स) ।
९. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा ।

उवनिमंतेज्जा, नवरं—एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि। सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

२५०. निग्गंथं च णं गाहावइ[१]•कुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं° केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा—एगं आउसो ! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि। से य तं पडिग्गाहेज्जा, •[२]थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया। जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पम्मज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वे सिया। एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं।

एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कंबल-लट्ठि-संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, विउट्टामि[३], विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराणं अंतियं[४] आलोएस्सामि जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि।

१. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य पुव्वामेव[५] अमुहा सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

२. से य संपट्ठिए असंपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

३. से य संपट्ठिए असंपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

---

१. सं० पा०—गाहावइ जाव केइ।
२. सं० पा०—तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, सेसं तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे।
३. विउट्टेमि (ता)।
४. अंतिए (अ)।
५. × (अ, ता, ब, म)।

४. से य संपट्ठिए असंपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

५. से य संपट्ठिए संपत्ते, थेरा य अमुहा सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

६. से य संपट्ठिए संपत्ते अप्पणा य °[1]अमुहे सिया। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

७. से य संपट्ठिए संपत्ते, थेरा य कालं करेज्जा। से णं भंते ! किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

८. से य संपट्ठिए संपत्ते अप्पणा य कालं करेज्जा। से णं भंते किं आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए° ॥

२५२. निग्गंथेण य बहिया वियारभूमिं[2] वा विहारभूमिं वा निक्खंतेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥

२५३. निग्गंथेण य गामाणुगामं दूइज्जमाणेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ॥

२५४. निग्गंथीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्मं पडिवज्जामि; तओ पच्छा पवत्तिणीए[3] अंतियं आलो[illegible] जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि।

सा य संपट्ठिया असंपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया। सा णं भंते ! किं आराहिया ? विराहिया ?

गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया।

सा य संपट्ठिया जहा निग्गंथस्स तिण्णि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया ॥

१. सं० पा०—एवं संपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असंपत्तेणं।

२. विचार° (ता, म); वितार (ब)°।

३. पवित्तिणीए (अ, ता, ब, स)।

२५५. से केणट्ठण भंते ! एवं वुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोमं वा, गयलोमं वा, सणलोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्झमाणे दड्ढे'[1] त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिण्णे[2], °पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्झमाणे° दड्ढे त्ति वत्तव्वं सिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, तंतुग्गयं वा मंजिट्ठ[3]-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया ?
हंता भगवं ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते[4], °पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे° रत्ते त्ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—आराहए, नो विराहए ॥

जोति-जलण-पदं

२५६. पदीवस्स णं भंते ! झियायमाणस्स किं पदीवे झियाइ ? लट्ठी झियाइ ? वत्ती झियाइ ? तेल्ले झियाइ ? दीवचंपए झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो पदीवे झियाइ[5], °नो लट्ठी झियाइ, नो वत्ती झियाइ, नो तेल्ले झियाइ°, नो दीवचंपए झियाइ, जोती झियाइ ॥

२५७. अगारस्स[6] णं भंते ! झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ ? कुड्डा झियाइ ? कडणा झियाइ ? धारणा झियाइ ? बलहरणे झियाइ ? वंसा झियाइ ? मल्ला झियाइ ? वागा झियाइ ? छित्तरा झियाइ ? छाणे झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो अगारे झियाइ, नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोती झियाइ ॥

किरिया-पदं

२५८. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए ॥

१. डज्झमाणे डज्झे (ता, ब)।
२. सं० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे।
३. मंजिट्ठा (अ, स)।
४. सं० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते।
५. सं० पा०—झियाइ जाव नो।
६. आगारे (अ, म, स)।

२५९. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।।

२६०. असुरकुमारे णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
एवं चेव । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे ।।

२६१. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए ।।

२६२. नेरइए णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए ?
एवं एसो वि[1] जहा[2] पढमो दंडओ तहा[3] भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा[4] जीवे ।।

२६३. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ।।

२६४. नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
एवं एसो वि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवरं—मणुस्सा जहा जीवा ।।

२६५. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि ।।

२६६. नेरइया णं भंते ! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—मणुस्सा जहा जीवा ।।

२६७. जीवे णं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए ।।

२६८. नेरइए णं भंते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—मणुस्से जहा जीवे । एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिया तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, नवरं—पंचमकिरिया न भण्णइ, सेसं तं चेव । एवं जहा वेउव्वियं तहा आहारगं पि, तेयगं पि कम्मगं पि भाणियव्वं—एक्केक्के चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव—

२६९. वेमाणिया णं भंते ! कम्मगसरीरेहिंतो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि ।।

२७०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ।।

१. × (अ, क, ता, म, स) ।
२. भ० ८।२५६ ।
३. तहा इमो वि अपरिसेसो (अ, क, ता, ब, स)
४. भ० ८।२५८ ।
५. भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्तं पडुच्च –

२७१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे—वण्णओ[1], गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलावट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[3] समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ।।

२७२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना °[5]बलसंपन्ना विणयसंपन्ना नाणसंपन्ना दंसण-संपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासंपन्ना लाघवसंपन्ना ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइंदिया जिय-परीसहा° जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामंते उड्ढंजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति[6] ।।

२७३. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो तिविहं तिविहेणं अस्संजय-'विरय-पडिहय'[7]-°[8]पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा° एगंतबाला या वि भवह ।।

२७४. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय[9]-°पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा°, एगंतबाला या वि भवामो ?

२७५. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे[10] णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह। तए णं ते तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ।।

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. भ० १।७।
४. भ० १।८।
५. सं० पा०—जहा बितियसए जाव जीवियास।
६. जाव विहरंति (अ, क, ता, म, स)।
७. अविरय-अपडिहय (अ, क, ब, म, स)।
८. सं० पा०—जहा सत्तमसए बितिए उद्देसए जाव एगंतबाला।
९. सं० पा०—विरय जाव एगंतबाला।
१०. तुम्हे (ब)।

२७६. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जामो, जए[1] णं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा[2], •अदिन्नं भुंजमाणा° अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

२७७. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भण्णं[3] अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे[4] अणिसिट्ठे । तुब्भण्णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुब्भं, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह[5], •अदिन्नं भुंजह°, अदिन्नं सातिज्जह । तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव[6] एगंतबाला या वि भवह ॥

२७८. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जामो । अम्हे णं अज्जो ! दिन्नं गेण्हामो, दिन्नं भुंजामो, दिन्नं सातिज्जामो । तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा, दिन्नं भुंजमाणा, दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-•[7]पच्चक्खायपावकम्मा, अकिरिया, संवुडा° एगंतपंडिया या वि भवामो ॥

२७९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! तुम्हे दिन्नं गेण्हह[8], •दिन्नं भुंजह°, दिन्नं सातिज्जह, जए[9] णं तुब्भे दिन्नं गेण्हमाणा जाव[10] एगंतपंडिया या वि भवह ?

२८०. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—अम्हण्णं अज्जो ! दिज्जमाणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे निसिट्ठे । अम्हण्णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हण्णं तं, नो खलु तं गाहावइस्स, तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हामो, दिन्नं भुंजामो, दिन्नं सातिज्जामो तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा[11],•दिन्नं भुंजमाणा,° दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंत-

१. तए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. सं० पा०—गेण्हमाणा जाव अदिन्नं ।
३. तुम्हाणं (म, स) ।
४. निसरिज्ज° (क) ।
५. सं० पा०—गेण्हह जाव अदिन्नं ।
६. भ० ८।२७६ ।
७. सं० पा०—जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडिया
८. सं० पा०—गेण्हह जाव दिन्नं ।
९. तए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. भ० ८।२७८ ।
११. सं० पा०—गेण्हमाणा जाव दिन्नं ।

पंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ।।

२८१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

२८२. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह, तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबाला या वि भवह ।।

२८३. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

२८४. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भण्णं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने °[1]पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे । तुब्भण्णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा°, गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुब्भं । तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह जाव[2] एगंतबाला या वि भवह ।।

हिंसं पडुच्च —

२८५. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ।।

२८६. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

२८७. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह संघाएह संघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा अभिहणमाणा[3] °वत्तेमाणा लेसेमाणा संघाएमाणा संघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ।।

२८८. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्दवेमो । अम्हे णं अज्जो !

१. सं० पा०—तं चेव जाव गाहावइस्स ।
२. तं चेव जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा ।

रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पदेसं पदेसेणं वयामो, तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा, पदेसं पदेसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो, तए णं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतपंडिया या वि भवामो। तुब्भे णं अज्जो! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह॥

२८९. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवामो?

२९०. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला या वि भवह॥

गममाणगयं पडुच्च—

२९१. तए णं ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भण्णं अज्जो! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते॥

२९२. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हं गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते। अम्हण्णं अज्जो! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते। तुब्भण्णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं[1] °नगरं संपाविउकामे° असंपत्ते तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णउत्थिए एवं पडिभणंति,[2] पडिभणित्ता गइप्पवायं नाम अज्झयणं पण्णवइंसु॥

२९३. कतिविहे णं भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते?
गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, तं जहा—पओगगई, ततगई, बंधणछेयण-गई, उववायगई, विहायगई[3]। एत्तो आरब्भ[4] पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं विहायगई।

२९४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[6]॥

१. सं० पा०—रायगिहं जाव असंपत्ते।
२. पडिहएइ (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. विहागती (ता)।
४. आरद्धं (क, ता, ब, म)।
५. प० १६।
६. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

पडिणीय-पदं

२९५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—गुरू णं भंते ! पडुच्च[2] कति पडिणीया[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए ॥

२९६. गति[4] णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए[5] ॥

२९७. समूहण्णं भंते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए ॥

२९८. अणुकंपं पडुच्च °[6]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ॥

२९९. सुयण्णं भंते । पडुच्च °[7]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ॥

३००. भावण्णं भंते ! पडुच्च °[8]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ॥

पंचववहार-पदं

३०१. कतिविहे णं भंते ! ववहारे[9] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए ।

१. भ० १।४-१० ।
२. पडुच्चा (क, म) ।
३. पडणिया (ता, म); तुलना—ठा० ३।४८८-४९३ ।
४. अत्र णकारयोगे अनुस्वारलोपः ।
५. दुहालोग° (अ, ब, म); उभयपडि° (क); दुहलोग° (ता) ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. सं० पा०—पुच्छा ।
९. तुलना—ठा० ५।१२४; ब० १० ।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा।
णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा।
इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं आणाए, धारणाए, जीएणं।
जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहारं पट्ठवेज्जा।
से किमाहु भंते! आगमवलिया समणा निग्गंथा?
इच्चेतं पंचविहं ववहारं जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा'[1] तहिं-तहिं अणिस्सिओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ[2]॥

बंध-पदं

३०२. कतिविहे णं भंते! बंधे पण्णत्ते?
गोयमा! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—इरियावहियबंधे[3] य, संपराइयबंधे य॥

इरियावहियबंध-पदं

३०३. इरियावहियं[4] णं भंते! कम्मं किं नेरइओ बंधइ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ? तिरिक्खजोणिणी बंधइ? मणुस्सो बंधइ? मणुस्सी बंधइ? देवो बंधइ? देवी बंधइ?
गोयमा! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ। पुव्व पडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च १. मणुस्सो वा बंधइ २. मणुस्सी वा बंधइ ३. मणुस्सा वा बंधंति ४. मणुस्सीओ वा बंधंति ५. अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ ६. अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधंति ७. अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधंति ८. अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति॥

१. तहा-तहा (अ, स)।
२. हन्त! आहुरेवेति गुरुवचनं गम्यमिति, अन्ये तु 'से किमाहु भंते!' इत्यादेवं व्याख्यान्ति—अथ किमाहुर्भदन्त! आगमबलिका: श्रमणा निर्ग्रन्था:! पञ्चविधव्यवहारस्य फलमिति शेष:, अत्रोत्तरमाह—'इच्चेय' मित्यादि (वृ)।
३. °वधिय° (म); °वहिया° (स)।
४. °वहिया (अ, क, स); °वहिय (ता)।

३०४. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुंसगो बंधइ ? इत्थीओ ? बंधंति ? पुरिसा बंधंति ? नपुंसगा बंधंति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ?
गोयमा ! नो इत्थी बंधइ, नो पुरिसो बंधइ[1] •नो नपुंसगो बंधइ, नो इत्थीओ बंधंति, नो पुरिसा बंधंति, नो नपुंसगा बंधंति, नोइत्थी नोपुरिसो° नोनपुंसगो बंधइ—पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधइ अवगयवेदा वा बंधंति ॥

३०५. जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति तं भंते ! किं १. इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? २. पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? ३. नपुंसगपच्छाकडो बंधइ ? ४. इत्थीपच्छाकडा बंधंति ? ५. पुरिसपच्छाकडा बंधंति ? ६. नपुंसगपच्छाकडा बंधंति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य । बंधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ८ एवं एते छव्वीसं भंगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ?
गोयमा ! १. इत्थीपच्छाकडो वि बंधइ २. पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ ३. नपुंसगपच्छाकडो वि बंधइ ४. इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति ५. पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति ६. नपुंसगपच्छाकडा वि बंधंति ७. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ, एवं एए चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा जाव[2] २६. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ॥

३०६. तं भंते ! किं १. बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? २. बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? ३. बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ? ५. न बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? ६. न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? ७. न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? ८. न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ?
गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, एवं तं चेव सव्वं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।

---

१. सं० पा०—बधइ जाव नोनपुंसगो ।
२. ८. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बंधंति ९. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य बधइ १०. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य बंधंति ११. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति

गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, एवं जाव' अत्थेगतिए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, नो चेव णं न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ॥

३०७. तं भंते ! किं सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ?
गोयमा ! सादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो सादीयं अपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं सपज्जवसियं बंधइ, नो अणादीयं अपज्जवसियं बंधइ ॥

३०८. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? देसेणं सव्वं बंधइ ? सव्वेणं देसं बंधइ ? सव्वेणं सव्वं बंधइ ?
गोयमा ! नो देसेणं देसं बंधइ, नो देसेणं सव्वं बंधइ,नो सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ॥

संपराइयबंध-पदं

३०९. संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ ? तिरिक्खजोणिओ बंधइ ? जाव' देवी बंधइ ?
गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बंधइ, मणुस्सो वि बंधइ, मणुस्सी वि बंधइ, देवो वि बंधइ, देवी वि बंधइ ॥

३१०. तं भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? तहेव जाव' नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ जाव नपुंसगा वि बंधंति, 'अहवा एते'' य अवगयवेदो य बंधइ, अहवा एते य अवगयवेदा य बंधंति ॥

१५. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १६. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १७. अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ १८. अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति १९. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २०. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २१. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २३. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ २४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति २५. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ।

१. अत्र जाव-पदेन त्रयो भङ्गा गृहीताः ।
२. भ० ८।३०३ ।
३. भ० ८।३०४ ।
४. अहवेए (अ, ब, स); अहवेते (ता, म) ।

३११. 'जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ, अवगयवेदा य बंधंति'[1] तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ ? पुरिसपच्छाकडो बंधइ ? एवं जहेव इरियावहिय-बंधगस्स तहेव निरवसेसं जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ।।

३१२. तं भंते ! किं १. बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? २. बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? ३. बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? ४. बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ?

गोयमा ! १. अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ २. अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ३. अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ४. अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

३१३. तं भंते ! किं सादीयं सपज्जवसियं बंधइ ? पुच्छा तहेव ।

गोयमा ! सादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणादीयं वा अपज्जवसियं बंधइ, नो चेव णं सादीयं अपज्जवसियं बंधइ ।।

३१४. तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? एवं जहेव इरियावहियबंधगस्स जाव[2] सव्वेणं सव्वं बंधइ ।।

कम्मपगडीसु परीसहसमवतार-पदं

३१५. कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं दंसणावरणिज्जं वेदणिज्जं मोहणिज्जं आउगं नामं गोयं[3] अंतराइयं ।।

३१६. कइ णं भंते ! परीसहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिंछापरीसहे, पिवासापरीसहे[4] °सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइ-परीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोस-परीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे [5]पण्णापरीसहे नाणपरीसहे° दंसण-परीसहे[6] ।।

३१७. एए णं भंते ! बावीसं परीसहा कतिसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति ?

गोयमा ! चउसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति, तं जहा—नाणावरणिज्जे, वेदणिज्जे, मोहणिज्जे, अंतराइए ।।

---

१. × (ब) ।

२. भ० ८।३०८ ।

३. गोदं (ब) ।

४. सं० पा०—दिगिंछापरीसहे जाव दंसण° ।

५. अन्नाणपरीसहे (उत्त० २।३) ।

६. नाणपरीसहे दंसणपरीसहे पण्णापरीसहे (स० २२।१) ।

३१८. नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, तं जहा—पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[1] य ।।

३१९. वेदणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरंति, तं जहा—
पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
तणफास—जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जम्मि ।।१।।

३२०. दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एगे दंसणपरीसहे समोयरइ ।।

३२१. चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरंति, तं जहा—
अरती अचेल इत्थी, निसीहिया जायणा य अक्कोसे ।
सक्कार-पुरक्कारे, चरित्तमोहम्मि सत्तेते ।।१।।

३२२. अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ।।

३२३. सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीसं परीसहा पण्णत्ता । वीसं पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं निसीहिआ-परीसहं वेदेइ, जं समयं निसीहिआपरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।।

३२४. 'एवं अट्ठविहबंधगस्स वि'[2] ।।

३२५. छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दस परिसहा पण्णता । बारस पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं[3] वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जा-परीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।।

१. अण्णाण° (अ) ।
२. अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परिसहा प० गो० बावीसं परीसहा, तं छुहापरीसहे पिवासा परीसहे सीयपरीसहे उसिणपरीसहे दंस-मसगपरीसहे जाव अलाभपरीसहे, एवं अट्ठ-विहबंधगस्स वि (क, ब, म); अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परीसहा प० गो० बावीसं परीसहा पं० एवं अट्ठविधबंधगस्स (ता, स) ।
३. उसुण ° (ता) ।

३२६. एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एवं चेव—जहेव छव्विहबंधगस्स ।।

३२७. एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।।

३२८. अबंधगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।।

सूरिय-पदं

३२९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य[1] •मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति°, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ।।

३३०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण[2]•मुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं ।।

३३१. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि[3] •य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ– जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि[4] दूरे य मूले य दीसंति ? जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि

१. सं० पा०—तं चेव जाव अत्थमण° ।
२. सं० पा०—उग्गमण जाव उच्चत्तेणं ।
३. सं० पा०—अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं । 'अ, ता, ता, म, स' संकेतितादर्शेषु 'अत्थमणमुहुत्तसि मूले जाव उच्चत्तेणं' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पदं नावश्यकं प्रतिभाति ।
४. °मुहुत्तंसि य (अ, क, ता, ब, म, स)।

दूरे य मूले य दीसंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति जाव अत्थमण'°मुहुत्तंसि दूरे य मूले य° दीसंति ॥

३३२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं गच्छंति ? पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति ? अणागयं खेत्तं गच्छंति ?
गोयमा ! नो तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छंति ॥

३३३. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति ? पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति ? अणागयं खेत्तं ओभासंति ?
गोयमा ! नो तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति ॥

३३४. तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासंति ? अपुट्ठं ओभासंति ?
गोयमा ! पुट्ठं ओभासंति, नो अपुट्ठं ओभासंति जाव' नियमा छद्दिसिं ॥

३३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं उज्जोवेंति ?
एवं चेव जाव नियमा छद्दिसिं ॥

३३६. एवं तवेंति, एवं भासंति जाव नियमा छद्दिसिं ॥

३३७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरियाणं किं तीए खेत्ते किरिया कज्जइ ? पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ॥

३३८. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव' नियमा छद्दिसिं ॥

३३९. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवंति ? केवतियं खेत्तं अहे तवंति ? केवतियं खेत्तं तिरियं तवंति ?
गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति, अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवंति, सीयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णिय तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवंति ॥

जोइसियाणं उववत्ति-पदं

३४०. अंतो णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ?

१. सं० पा०—अत्थमण जाव दीसंति।
२. भ० १।२५९-२६६।
३. भ० १।२५९-२६६।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[1]—

३४१. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं विरहिए उववाएणं ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४२. बहिया णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-ताराख्वा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ?
जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

३४३. इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

३४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

नवमो उद्देसो

बंध-पदं

३४५. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७. अणादियवीससाबंधे[4] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

१. जी० ३ ।
२. जी० ३ ।
३. भ० १।५१ ।
४. अणातीत० (ता) ।

३४९. [धम्मत्थि]कायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वद्धं । एवं अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि[1] ।।

३५०. सादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ।।

३५१. से किं तं बंधणपच्चइए ?
बंधणपच्चइए—जण्णं परमाणुपोग्गल-दुप्पदेसिय-तिप्पदेसिय जाव दसपदेसिय-संखेज्जपदेसिय-असंखेज्जपदेसिय-अणंतपदेसियाणं खंधाणं वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बंधणपच्चएणं[2] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । सेत्तं बंधणपच्चइए ।।

३५२. से किं तं भायणपच्चइए ?
भायणपच्चइए—जण्णं जुण्णसुर-जुण्णगुल-जुण्णतंदुलाणं भायणपच्चएणं[3] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं भायणपच्चइए ।।

३५३. से किं तं परिणामपच्चइए ?
परिणामपच्चइए—जण्णं अब्भाणं, अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए जाव[4] अमोहाणं परिणामपच्चएणं[5] बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्तं परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीयवीससाबंधे । सेत्तं वीससाबंधे ।।

पयोगबंध-पदं

३५४. से किं तं पयोगबंधे ?
पयोगबंधे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए ।
तत्थ णं जे से अणादीए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं, तत्थ वि णं तिण्हं-तिण्हं अणादीए अपज्जवसिए, सेसाणं सादीए । तत्थ णं जे से सादीए अपज्जवसिए से णं सिद्धाणं । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से णं

१. अस्य सूत्रस्यानन्तरं 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठोऽस्ति—'धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ गो नत्थि अंतरं एवं तिण्हवि सेत्तं अणादीयवीससाबंधे ।'
२. °पच्चइएणं (ब) ।
३. °पच्चइएणं (अ, स) ।
४. भ० ३।२५३ ।
५. °पच्चइएणं (अ, स) ।

चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— आलावणबंधे, अल्लियावणबंधे, सरीरबंधे, सरीर-प्पयोगबंधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५. से किं तं आलावणबंधे ?
आलावणबंधे— जण्णं तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलाल-भाराण वा[1], वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहिं आलावण-बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं आलावण-बंधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६. से किं तं अल्लियावणबंधे ?
अल्लियावणबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चय-बंधे, साहणणाबंधे[2] ॥

३५७. से किं तं लेसणाबंधे ?
लेसणाबंधे— जण्णं कुड्डाणं, कोट्टिमाणं[3], खंभाणं, पासायाणं, कट्ठाणं, चम्माणं, घडाणं, पडाणं, कडाणं छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसण-एहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं लेसणाबंधे ॥

३५८. से किं तं उच्चयबंधे ? उच्चयबंधे—जण्णं तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगर-रासीण वा, उच्चत्तेण बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं उच्चयबंधे ॥

३५९. से किं तं समुच्चयबंधे ?
समुच्चयबंधे—जण्णं अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजालि-याणं, सराणं, सरपंतियाणं, सरसरपंतियाणं, बिलपंतियाणं देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाणं, फरिहाणं[4], पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[5]-महापह-पहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिला[6]-समुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं समुच्चयबंधे ॥

१. वा वेल्लभाराण वा (अ, स)।
२. साहणबंधे (ता); सहणाण ° (म, स)।
३. कुट्टिमाणं (क)।
४. परिहाणं (क, ब, म)।
५. चउमुह (क, ता)।
६. सिलेस (अ, स); सेला (ता)

३६०. से किं तं साहणणाबंधे ?
साहणणाबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—देससाहणणाबंधे य, सव्वसाहणणाबंधे य ॥

३६१. से किं तं देससाहणणाबंधे ?
देससाहणणाबंधे—जण्णं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[1]-आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणमादीणं देस-साहणणाबंधे[2] समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं देससाहणणाबंधे ॥

३६२. से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ?
सव्वसाहणणाबंधे—से णं खीरोदगमाईणं। सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे। सेत्तं साहणणाबंधे। सेत्तं अल्लियावणबंधे ॥

सरीरं पडुच्च—

३६३. से किं तं सरीरबंधे ?
सरीरबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुव्वपयोगपच्चइए[3] य, पडुप्पन्नपयोग-पच्चइए[4] य ॥

३६४. से किं तं पुव्वपयोगपच्चइए ?
पुव्वपयोगपच्चइए—जण्णं नेरइयाणं संसारत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ-तत्थ तेसु-तेसु कारणेसु समोहण्णमाणाणं[5] जीवप्पदेसाणं[6] बंधे समुप्पज्जइ। सेत्तं पुव्व-पयोगपच्चइए ॥

३६५. से किं तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए ?
पडुप्पन्नपयोगपच्चइए—जण्णं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अंतरा मंथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माणं बंधे समुप्पज्जइ। किं कारणं ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवंति[7]। सेत्तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए। सेत्तं सरीरबंधे ॥

१. कडेच्छुय (ता, ब, म); कडुच्छुया (भ० ५।१८९)
२. देससावणणाएबंधे (ता)।
३. पुव्वप्पओग ° (ता)।
४. पच्चुप्पण्ण ° (ता, ब, म)।
५. समोहण ° (स)।
६. इह जीवप्रदेशानामित्युक्तावपि शरीरबन्धाधिकारात्तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेश इति न्यायेन जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानामिति द्रष्टव्यं, शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे समुद्घातेन विक्षिप्य सङ्कोचितानामुपसर्जनीकृततैजसादिशरीरप्रदेशानां जीवप्रदेशानामेवेति (वृ)।
७. शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे तेयाकम्माणं बंधे समुप्पज्जइ (वृ)।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं तं सरीरप्पयोगबंधे ?
सरीरप्पयोगबंधे पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–ओरालियसरीरप्पयोगबंधे, वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे, आहारगसरीरप्पयोगबंधे, तेयासरीरप्पयोगबंधे, कम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा--एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे, बेइंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३६८. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे, एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे य, अप्पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्स[2]•पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोग°-बंधे य ॥

३६९. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३७०. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
एवं चेव । पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया । एवं बेइंदिया, एवं तेइंदिया, एवं चउरिंदिया ॥

३७१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? एवं चेव ॥

३७२. मणुस्स पंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया[3] •कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएणं मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे ॥

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?

---

१. प० २१ ।
२. सं० पा०— °मणुस्स जाव बंधे ।
३. सं० पा०—पमादपच्चया जाव आउयं ।

गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

३७४. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
एवं चेव। एवं पुढविक्काइया एवं जाव—

३७५. मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

३७६. ओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं[1] ॥

३७७. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं ॥

३७८. पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं खुड्डागं[2] भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं। एवं सव्वेसिं सव्वबंधो एक्कं समयं, देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा सा ठिती सा समयूणा कायव्वा, जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं देसबंधो जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा जाव मणुस्साणं देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं समयूणाइं।

३७९. ओरालियसरीरबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं ॥

३८०. एगिंदियओरालियपुच्छा।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८१. पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा।
सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि समया। जहा पुढविक्काइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयवज्जाणं, नवरं—सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समया-

१. समयऊणाइं (क)। २. खुड्डाग (क) प्रायः सर्वत्र।

हिया कायव्वा। वाउक्काइयाणं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥

३८२. पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा।
सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया। देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं॥

३८३. जीवस्स णं भंते! एगिंदियत्ते, नोएगिंदियत्ते, पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं॥

३८४. जीवस्स णं भंते! पुढविक्काइयत्ते, नोपुढविक्काइयत्ते, पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ?
गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो। देसबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो। जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं। वणस्सइकाइयाणं दोण्णि खुड्डाइं एवं चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो[2]॥

३८५. एएसि णं भंते! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबंधगा विसेसाहिया, देसबंधगा असंखेज्जगुणा॥

१. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म); तिसमयूणाइं एवं चेव (स); अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम्। 'एवं चेव' त्ति करणात् 'तिसमयूणाइं' ति द्वयम्।

२. तरुकालो वण° (ता)।

३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

वेउव्वियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३८६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य पंचेंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ।।

३८७. जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ? अवाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पयोगबंधे ?
एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो[1] जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध[2] •अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे य ।।

३८८. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं च लद्धिं वा[4] पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे ।।

३८९. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए एवं चेव जाव लद्धिं पडुच्च वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय[5] •सरीरप्पयोग° बंधे ।।

३९०. रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि[6] •नेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोग° बंधे, एवं जाव अहेसत्तमाए ।।

३९१. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जहा वाउक्काइयाणं । मणुस्सपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे एवं चेव । असुरकुमारभवणवासिदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमारा । एवं वाणमंतरा । एवं जोइसिया । एवं सोहम्मकप्पोवया[7] वेमाणिया । एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया । अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव ।

१. प० २१ ।
२. सं० पा०—°सिद्ध जाव पयोगबंधे ।
३. सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४. वा लद्धिं (अ); वा लद्धिं वा (क, ता, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—°वेउव्विय जाव बंधे ।
६. सं० पा०—°पुढवि जाव बंधे ।
७. °कप्पोवा (ता) ।

३६२. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ।
वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे वि एवं चेव । रयणप्पभापुढवि-नेरइया एवं चेव । एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥

३६३. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते । कालग्रो केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया । देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३६४. वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं ग्रंतोमुहुत्तं ॥

३६५. रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं । एवं जाव ग्रहे सत्तमा, नवरं— देसबंधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया सा समयूणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं, ग्रसुरकुमार-नागकुमार जाव ग्रणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं, नवरं— जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा जाव ग्रणुत्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं ॥

३६६. वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालग्रो केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं ग्रणंतं कालं— ग्रणंताग्रो[2] °ग्रोसप्पिणीग्रो उस्सप्पिणीग्रो कालग्रो, खेत्तग्रो ग्रणंता लोगा— ग्रसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा° ग्रावलियाए ग्रसंखेज्जइभागो । एवं देसबंधंतरं पि ॥

३६७. वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं ग्रंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिग्रोवमस्स ग्रसंखेज्जइभागं । एवं देसबंधंतरं पि ॥

३६८. तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं ग्रंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं । एवं देसबंधंतरं पि । एवं मणूसस्स वि[3] ॥

१. तिसमऊणाइं (क, ता, ब) ।
२. सं० पा०—अणंताओ जाव आवलियाए ।
३. मणुयस्स (क, म); मणुस्सा (ता, ब) ।

३९९. जीवस्स णं भंते ! वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं देसबंधंतरं पि ।।

४००. जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, नोरयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, पुणरवि रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अहेसत्तमाए, नवरं—जा जस्स ठिती जहण्णिया सा सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं । असुर-कुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाणं—एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेर-इयाणं, नवरं—सव्वबंधंतरं जस्स जा ठिती जहण्णिया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ।।

४०१. जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते[1], नोआणयदेवत्ते, पुणरवि आणयदेवत्ते पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । एवं जाव अच्चुए, नवरं—जस्स जा ठिती सा सव्वबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ।।

४०२. गेवेज्जाकप्पातीतापुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।।

४०३. जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं ।।

४०४. एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

१. आणया° (अ) । २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च –

४०५. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

४०६. जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ?
गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीप्पयोगबंधे। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव[1] इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त[2] °संजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कंतियमणुस्सा°हारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०७. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] °पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च° लद्धिं वा पडुच्च[4] आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पयोगबंधे ॥

४०८. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि ॥

४०९. आहारगसरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

४१०. आहारगसरीरप्पयोगबंधंतरं[5] णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं – अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा – अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं देसबंधंतरं पि ॥

४११. एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ॥

१. प० २१।
२. सं० पा०—°पमत्त जाव आहारग°।
३. सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव लद्धिं।
४. पडुच्चा (ता, ब)।
५. °बंधंतरे (अ, क, स)।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया

तेयासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१२ तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे, बेइंदिय-तेयासरीरप्पयोगबंधे जाव पंचिन्दियतेयासरीरप्पयोगबंधे ॥

४१३. एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे जाव[1] पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पयोग°-बंधे य ॥

४१४. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च° आउयं वा[4] पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगबंधे ॥

४१५. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे ॥

४१६. तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[5] वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

४१७. तेयासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ॥

४१८. एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ॥

कम्मासरीरप्पयोगं पडुच्च –

४१९. कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

१. प० २१ ।
२. सं० पा०—°वाइय जाव बंधे ।
३. सं० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउयं ।
४. च (ता, ब, म) ।
५. अणादिए (ता) ।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

४२०. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिण्हवणयाए, नाणंतराएणं, नाणप्पदोसेणं, नाणच्चासातणयाए[1], नाणविसंवादणाजोगेणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोग-नामाए[2] कम्मस्स उदएणं नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४२१. दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, •[3]दंसणणिण्हवणयाए, दंसणंतराएणं, दंसणप्प-दोसेणं, दंसणच्चासातणयाए°, दंसणविसंवादणाजोगेणं दंसणावरणिज्जकम्मा-सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं[4] •दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर°प्पयोग-बंधे ॥

४२२. सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, •[5]जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्प-योगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा[6]•सरीरप्पयोग°बंधे ॥

४२३. असायावेयणिज्ज[7]•कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं° ? गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, •[8]परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खण-याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए असाया-वेयणिज्जकम्मा[9]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असायावेयणिज्जकम्मा-सरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२४. मोहणिज्जकम्मासरीर[10]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं° ? गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमाययाए तिव्वलोभयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर[11]-•प्पयोगनामाए कम्मस उदएणं मोहणिज्जकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

१. °सादणाए (अ); सादणताए (क, ब, म); °सातणाताए (ता)।
२. नाणावरणिज्जं° (अ, स)।
३. सं० पा०—एवं जहा नाणावरणिज्जं, नवरं—दंसणनामं घेतव्वं जाव दंसण°।
४. सं० पा०—उदएणं जाव पयोग°।
५. सं० पा०—एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया°।
६. सं० पा०—°कम्मा जाव बंधे।
७. सं० पा०—पुच्छा।
८. सं० पा०—जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया°।
९. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग°।
१०. सं० पा०—पुच्छा।
११. सं० पा०—°सरीर जाव पयोग°।

४२५. नेरइयाउयकम्मासरीर[1]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, 'पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं'[2] नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४२६. तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल[4]-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मा[5]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२७. मणुस्साउयकम्मासरीर[6]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए[7], अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा[8]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं मणुस्साउयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२८. देवाउयकम्मासरीर[9]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं[10], अकामनिज्जराए देवाउयकम्मा[11]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं देवाउयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ॥

४२९. सुभनामकम्मासरीर[12]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?०
गोयमा ! काउज्जुययाए[13], 'भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए',[14] अविसंवादणाजोगेणं सुभनामकम्मा[15]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सुभनामकम्मासरीरप्पयोगबंधे ॥

४३०. असुभनामकम्मासरीर[16]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, 'भासअणुज्जुययाए विसंवाद-

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. कुणिमाहारेणं, पंचिदियवहेणं (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. °तोल (अ); °तुल्ल (स) ।
५. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. साणुक्कोसियाए (अ); साणुक्कोसणयाए (क)
८. सं० पा०—पुच्छा ।
९. सं० पा०—पुच्छा ।
१०. बालतवेणं (ब) ।
११. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
१२. सं० पा०—पुच्छा ।
१३. कायजुययाए (अ); कायउज्जुययाए (स)
१४. भासुज्जुययाए भावुज्जुययाए (ता) ।
१५. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
१६. सं० पा०—पुच्छा ।

णाजोगेणं[1] [illegible]कम्मा[2]•सरीरप्पयोगनामाए° कम्मस्स उदएणं असुभनाम-कम्मासरीर°प्पयोगबंधे ।।

४३१. उच्चागोयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, बलअमदेणं, रूवअमदेणं, तवअमदेणं, 'सुयअमदेणं, लाभअमदेणं',[4] इस्सरियअमदेणं[5] उच्चागोयकम्मा[6]•सरीरप्पयोग-नामाए कम्मस्स उदएणं उच्चागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ।।

४३२. नीयागोयकम्मासरीर[7]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेणं, बलमदेणं[8], •रूवमदेणं, तवमदेणं, सुयमदेणं, लाभमदेणं°, इस्सरियमदेणं[9] नीयागोयकम्मा[10]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं नीयागोयकम्मासरीर°प्पयोगबंधे ।।

४३३. अंतराइयकम्मासरीर[11]•प्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?°
गोयमा ! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियं-तराएणं, अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मा-सरीरप्पयोगबंधे ।।

पयोगबंधस्स देसबंध-सव्वबंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एवं जाव अंतराइयं ।।

४३५. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[12]•वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए° । एवं जाव अंतराइयस्स ।।

४३६. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स[13]•अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणादीयस्स सपज्ज-वसियस्स नत्थि अंतरं° । एवं जाव अंतराइयस्स ।।

४३७. एएसि णं भंते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण

---

१. वायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुयाए (ता) ।
२. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. लाभअमदेणं, सुयअमदेणं (अ) ।
५. दिस्सरिय° (म) ।
६. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
७. सं० पा०—पुच्छा ।
८. सं० पा०—बलमदेणं जाव इस्सरिय° ।
९. तिस्सरिय° (म) ।
१०. सं० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
११. सं० पा०—पुच्छा ।
१२. सं० पा०—एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव ।
१३. सं० पा०—एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव ।

य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अबंधगा देसबंधगा, अणंतगुणा° । एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स ।।

४३८. आउयस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा ।।

४३९. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
आहारगसरीरस्स[2] किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए ।।
तेयासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ।
कम्मासरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
[3]•गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! ° देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४०. जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ।।

४४१. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । आहारगसरीरस्स एवं चेव । तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेवं भाणियव्वं जाव[4] देसबंधए, नो सव्वबंधए ।।

४४२. जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स ।
२. आहारासरीरस्स (ता, ब) ।
३. सं० पा०—जहेव तेयगस्स जाव देसबंधए ।
४. भ० ८।४३९ ।

गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४३. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं वेउव्वियस्स वि । तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं[1] ॥

४४४. जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । एवं जहा आहारगस्स सव्वबंधेणं भणियं तहा देस-बंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ॥

४४५. जस्स णं भंते ! तेयासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए वा, अबंधए वा ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए वा, सव्वबंधए वा ?
वेउव्वियसरीस्स किं बंधए ? अबंधए ?
एवं चेव । एवं आहारगस्स[2] वि ।
कम्मगसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधए किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४६. जस्स णं भंते ! कम्मासरीरस्स देसबंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! नो बंधए, अबंधए । जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
तेयासरीरस्स[3] °किं बंधए ? अबंधए ?
गोयमा ! बंधए, नो अबंधए ।
जइ बंधइ किं देसबंधए ? सव्वबंधए ?
गोयमा ! ° देसबंधए, नो सव्वबंधए ॥

४४७. एएसि णं भंते ! जीवाणं[4] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं

१. भ० ८।४३६।
२. आहारगसरीरस्स (अ, स) ।
३. सं० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसबंधए ।
४. सव्वजीवाणं (अ, स) ।

देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा?

गोयमा! १. सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा २. तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा ३. वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा ४. तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ५. तेया-कम्मगाणं[2] अबंधगा अणंतगुणा ६. ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा ७. तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया ८. तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा ९. तेया-कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया १०. वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ११. आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

४४८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[3] ॥

दसमो उद्देसो

सुय-सील-पद

४४९. रायगिहे नगरे जाव[4] एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भंते! एवमाइक्खंति जाव[5] एवं परूवेंति—एवं खलु १. सीलं सेयं २. सुयं सेयं ३. 'सुयं सीलं सेयं'[6] ॥

४५०. से कहमेयं भंते! एवं?

गोयमा! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[7] जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव[8] परूवेमि—

एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा—१. सीलसंपन्ने नामं एगे नो सुयसंपन्ने २. सुयसंपन्ने नामं एगे नो सीलसंपन्ने ३. एगे सीलसंपन्ने वि सुयसंपन्ने वि ४. एगे नो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने।

तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं—उवरए, अविण्णायधम्मे। एस णं गोयमा! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते।

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. °गाणं दोण्ह वि तुल्ला (अ, ता, स)।
३. भ० १।५१।
४. भ० १।४-१०।
५. भ० १।४२०।
६. सुयं सेयं सीलं सेयं (क, ता, ब, स, वृ)।
७. भ० ८।४४९।
८. भ० १।४२१।

तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए, विण्णायधम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ।
तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं—उवरए, विण्णायधम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ।
तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुयवं—अणुवरए, अविण्णायधम्मे । एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते ।

आराहणा-पदं

४५१. कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा—नाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ॥

४५२. नाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४५३. दंसणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
[1]°गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥

४५४. चरित्ताराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता !
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ॥°

४५५. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ? जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
गोयमा ! 'जस्स उक्कोसिया'[2] नाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा ॥

४५६. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
[3]°गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा° ॥

४५७. जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा ?

---

१. सं० पा०—एवं चेव तिविहा वि, एवं चरित्ताराहणा वि ।
२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, ब) ।
३. सं० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणियव्वा।

गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा[1] वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ।।

४५८. उक्कोसियण्णं[2] भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति[4], अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ।।

४५९. उक्कोसियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं °[5]सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति° ।।

४६०. उक्कोसियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता [6]°कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति,° अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ।।

४६१. मज्झिमियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ।।

४६२. मज्झिमियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता [7]°कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ ।।

४६३. मज्झिमियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ° ।।

---

१. उक्कोसिया (ब, स)।
२. उक्कोसिया ण (अ, क, ब, स); उक्कोसियणं (ता)।
३. भ० १।४४।
४. करेति, अत्थेगतिए दोच्चे णं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव अंतं करेति (क, ब, म, स)।
५. सं० पा०—एवं चेव।
६. सं० पा०—एवं चेव नवरं अत्थेगतिए।
७. सं० पा०—एवं चेव एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि।

४६४. जहण्णियण्णं भंते ! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।।

४६५. [1]°जहण्णियण्णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ ।।

४६६. जहण्णियण्णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ° ।।

पोग्गलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा--वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे ।।

४६८. वण्णपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणामे । एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ।।

४६९. संठाणपरिणामे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे जाव[3] आयतसंठाणपरिणामे ।।

पोग्गलपएसस्स दव्वादीहिं भंग-पदं

४७०. एगे[4] भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे किं १. दव्वं ? २. दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४. दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य ? ६. उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

१. सं० पा०—एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि ।
२. भ० ८।३६ ।
३. भ० ८।३६ ।
४. एगे णं (अ) ।

गोयमा ! १. सिय दव्वं २. सिय दव्वदेसे ३. नो दव्वाइं ४. नो दव्वदेसा ५. नो दव्वं च दव्वदेसे य ६. नो दव्वं च दव्वदेसा य ७. नो दव्वाइं च दव्वदेसे य ८. नो दव्वाइं च दव्वदेसा य ।।

४७१. दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा किं दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा[1] ।
गोयमा ! सिय दिव्वं, सिय दव्वदेसे, सिय दव्वाइं, सिय दव्वदेसा, सिय दव्वं च दव्वदेसे य[2] । सेसा पडिसेहेयव्वा ।।

४७२. तिण्णि भंते पोग्गलत्थिकायपदेसा किं दव्वं ? दव्वदेसे ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्वं, सिय दव्वदेसे, एवं सत्त भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसे य, नो दव्वाइं च दव्वदेसा य ।।

४७३. चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा किं दव्वं ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्वं, सिय दव्वदेसे, अट्ठ वि भंगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य । जहा चत्तारि भणिया एवं पंच, छ, सत्त जाव असंखेज्जा ।।

४७४. अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा किं दव्वं ?
एवं चेव जाव सिय दव्वाइं च दव्वदेसा य ।।

पएस-परिमाण-पदं

४७५. केवतिया णं भंते ! लोयागासपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा लोयागासपदेसा पण्णत्ता ।।

४७६. एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावतिया लोयागासपदेसा, एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपदेसा पण्णत्ता ।।

कम्माणं अविभागपलिच्छेद-पदं

४७७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव[3] अंतराइयं ।।

४७८. नेरइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ । एवं सव्वजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाणं ।।

१. पुच्छा तहेव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. य नो दव्वं च दव्वदेसा य (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. भ० ६।३३ ।

४७६. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८०. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।।

४८१. एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एवं जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीणं भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं अंतराइयस्स[1] ।।

४८२. एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणंतेहिं ।।

४८३. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं[2] अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियमं अणंतेहिं । जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स, नवरं—मणूसस्स जहा जीवस्स ।।

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स णं भंते । जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियमं अणंतेहिं । जहा जीवस्स एवं जाव वेमाणियस्स, नवरं—मणूसस्स जहा जीवस्स । एवं जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स । एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं, नवरं—वेयणिज्जस्स, आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसिं चउण्ह वि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं । सेसं तं चेव ।।

४८५. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ? जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिज्जं तस्स वि नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ।।

४८६. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? जस्स वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?

१. अंतरातियस्स (अ, स); अंतरादियस्स (ता) २. केवइएहिं (ता) ।

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं[1] अत्थि जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ॥

४८७. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४८८. जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स आउयं ? [2]°जस्स आउयं तस्स नाणावरणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स नाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।° एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं, अंतराइएण जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तहेव नियमं परोप्परं भाणियव्वाणि ॥

४८९. जस्स णं भंते ! दरिसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ?
जहा नाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दरिसणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं जाव अंतराइएणं ॥

४९०. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं ? जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९१. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स वेयणिज्जं ?
एवं एयाणि परोप्परं नियमं । जहा आउएण समं एवं नामेण वि गोएण वि समं भाणियव्वं ॥

४९२. जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं ? [3]°जस्स अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं ?°
गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ॥

४९३. जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं ? जस्स आउयं तस्स मोहणिज्जं ?
गोयमा ! जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स[4] मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि । एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियव्वं ॥

१. नितमं (ब) ।
२. सं० पा०—एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएण वि समं भाणियव्वं ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. तस्स पुण (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४९४. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं ? [1]•जस्स नामं तस्स आउयं ?◦
गोयमा ! दो वि परोप्परं नियमं । एवं गोत्तेण वि समं भाणियव्वं ।।

४९५. जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं ? [2]•जस्स अंतराइयं तस्स आउयं ?◦
गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियमं अत्थि ।।

४९६. जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं [3]•जस्स गोयं तस्स नामं ?◦
गोयमा ! दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ।।

४९७. जस्स णं भंते ! नामं तस्स अंतराइय ? [4]•जस्स अंतराइयं तस्स नामं ?◦
गोयमा जस्स नामं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स नामं नियमं अत्थि ।।

४९८. जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराइयं ? [5]•जस्स अंतराइयं तस्स गोयं ?◦
गोयमा ! जस्स गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोयं नियमं अत्थि ।।

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४९९. जीवे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ।।

५००. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, घडेणं घडी, पडेणं पडी, करेणं करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ।।

५०१. नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली ! पोग्गले ?
एवं चेव । एवं जाव वेमाणिए, नवरं—जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ भाणियव्वाइं ।।

५०२. सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ।।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. सं० पा०—पुच्छा ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

५०३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•सिद्धे नो पोग्गली•, पोग्गले ?
गोयमा ! जीवं पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले ।।

५०४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव पोग्गले ।
२. भ० १।५१ ।

नवमं सतं

पढमो उद्देसो

१. जंबुद्दीवे २. जोइस, ३०. अंतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय ।
३३. कुंडग्गामे ३४. पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। माणिभद्दे[2] चेतिए—वण्णओ[3]। सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव[4] भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ! किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ?

'एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव[5] एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया'[6] ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

१. ओ० सू० १ ।
२. माणिभद्दे (ता, म) ।
३. ओ० सू०—२-१३ ।
४. भ० १।८-१० ।
५. जं० १-६ ।
६. वाचनान्तरे पुनरिदं दृश्यते—जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा नेयव्वं जोइसविहूणं जाव—
खंडा जोयण वासा,
पव्वय कूडाण तित्थ सेढीओ ।
विजय द्दह सलिलाओ,
य पिंडए होति संगहणी ॥ (वृ) ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

जोइस-पदं

३. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिसु वा ? पभासेंति वा ? पभासिस्संति वा ?
एवं जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

एगं च सयसहस्सं, तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीणं[3] ॥१॥

सोभिसु[4], सोभिंति, सोभिस्संति ॥

४. लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिसु वा ? पभासेंति वा ? पभासिस्संति वा ?
एवं जहा जीवाभिगमे जाव[5] ताराओ । धायइसंडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भंतरपुक्खरद्धे[6], मणुस्सखेत्ते—एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव[7]—एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीणं ॥

५. पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिसु वा ? पभासेंति वा ? पभासिस्संति वा ?
एवं सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोतिसियाणं[8] भाणियव्वं जाव[9] सयंभूरमणे जाव सोभिंसु वा, सोभिंति वा, सोभिस्संति वा ॥

६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

१. भ० १।४-१० ।
२. जी० ३ ।
३. °कोडाकोडीणं (ता, ब, म) ।
४. सोभं सोभिंसु (ब, म) ।
५. जी० ३ ।
६. अब्भिंतर° (स) ।
७. जी० ३ ।
८. जोतिसं (क, ता, ब, म) ।
९. जी० ३ ।
१०. भ० १।५१ ।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कहि णं भंते। दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[2] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं 'चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे णं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं। से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। दोण्ह वि पमाणं वण्णओ य। एवं एएणं कमेणं[3] 'एवं जहा जीवाभिगमे जाव[4] सुद्धदंतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !'[5]
एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं-सएणं आयाम-विक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं —दीवे-दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

९. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज[8] सवणयाए ?

१. भ० १।४-१० ।
२. एगरूय° (अ); एगुरुय° (ब, म); एगोरुय° (स)।
३. ×(क ता)।
४. जी० ३।
५. वाचनान्तरे त्विदं दृश्यते एवं जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो नाणत्तं अट्ठधणुसया उस्सेहो चाउसट्ठिपिट्ठकरंडया अणुसज्जणा नत्थि (वृ)।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।
८. लभेज्जा (अ, म, स)।

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ।।

१०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे 'नो कडे'[1] भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'असोच्चा णं'[2] जाव नो लभेज्ज सवणयाए ।।

११. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ।।

१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ।।

१३. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ।।

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा

१. कडे नो (ता) । २. तं चेव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

केवलं मुंडे भवित्ता[1] °अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा॥

१५. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा[2]?
गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा॥

१६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा?
गोयमा! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा॥

१७. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा?
गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा॥

१८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा?
गोयमा! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव[3] तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा॥

१९. असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा?
गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं[4] संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा॥

१. सं० पा०—भवित्ता जाव नो।
२. आवासेज्जा (ता, ब)।
३. जाव अत्थेगतिए (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा ॥

२१. असोच्चा णं भंते केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२३. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ?
[1]गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं—ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे।

गोयमा ! जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ असोच्चा णं जाव केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२५. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२७. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खग्रोवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलं मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा° ।।

२९. असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

'•गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा° । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

३१. असोच्चा[2] णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—१. केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए २. केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ३. केवलं मुंडे भवित्ता अागाराओ अणगारियं पव्वएज्जा ४. केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा ५. केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा ६. केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ७. केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा[3] ८. •केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ९. केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा° १०. केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ११. केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा—१. अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए २. अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा ३. अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए[4] •केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा ४. अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा ५. अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा ६. [5]•अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं नो संवरेज्जा° ७. अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए[6] •केवलं आभिणीबोहियनाणं° नो उप्पा-

१. सं० पा०—एवं चेव, नवरं—केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भाणियव्वे, सेसं तं चेव ।
२. एकत्रिंशद्-द्वात्रिंशत् सूत्रयोः पूर्वपादित एव विषयः पुनरुक्तोऽस्ति । वृत्तिकृतात्र एका टिप्पणीकृतास्ति पूर्वोक्तानेवार्थान् पुनः समुदायेनाह (वृ), किन्तु समग्रविषयस्य पौनरुक्त्यदर्शनेन द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणं प्रतीयते ।
३. सं० पा०—उप्पाडेज्जा जाव केवलं ।
४. सं० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।
५. सं० पा०—एवं संवरेण वि ।
६. सं० पा०—अत्थेगतिए जाव नो ।

डेज्जा ८. [1]●अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाणं नो उप्पाडेज्जा ९. अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा १०. अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं मणपज्जवनाणं नो उप्पाडेज्जा° ११. अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं तं चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! १. जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ २. जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ३. जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ४. [2]●जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ५. जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ६. जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ७. जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ८. जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ९. जस्स णं ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १०. जस्स णं° मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ११. जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए नो कडे भवइ, से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ।

जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, एवं जाव जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ, से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।।

३३. तस्स णं[3] छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[4] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए, पगइउव-

१. सं० पा०—एवं जाव मणपज्जवनाणं । मणपज्जव० ।

२. सं० पा०—एवं चरित्तावरणिज्जाणं जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाणं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं जाव

३. णं भंते (अ, क, ता, ब, स)।

४. पगिज्झिय २ (स)।

संतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणयाए[1], विणीययाए, अण्णया कयावि 'सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं'[2] तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गणगवेसणं[3] करेमाणस्स विब्भंगे नामं अण्णाणे समुप्पज्जइ। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं[4] समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ-पासइ। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासंडत्थे सारंभे सपरिग्गहे संकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्झमाणे वि जाणइ। से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, सम्मत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएति, समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जइ, चरित्तं पडिवज्जित्ता लिंगं पडिवज्जइ। तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहिं सम्मदंसणपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं से विब्भंगे अण्णाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ॥

३४. से णं भंते! कतिसु लेस्सासु[5] होज्जा?
गोयमा! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए॥

३५. से णं भंते! कतिसु नाणेसु होज्जा?
गोयमा! तिसु—आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा॥

३६. से णं भंते! किं सजोगी होज्जा? अजोगी होज्जा?
गोयमा! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा? वइजोगी होज्जा? कायजोगी होज्जा?
गोयमा! मणजोगी वा[6] होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा॥

३७. से णं भंते! किं सागारोवउत्ते होज्जा? अणागारोवउत्ते होज्जा?
गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा॥

३८. से णं भंते! कयरम्मि संघयणे होज्जा?
गोयमा! वइरोसभनारायसंघयणे[7] होज्जा॥

---

१. अल्लीणयाए भद्दयाए (अ, क, ता, ब, म, स)।
२. × (क, ता,)।
३. इहापूह° (ब, म); इहाव्वूह° (ता)।
४. विभंग° (अ, ता, म)।
५. लेसासु (क, ता, स)।
६. वि (क) सर्वत्र।
७. वइरोसह° (ब, म)।

३९. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥
४०. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ॥
४१. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥
४२. से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुंसगवेदए होज्जा ? 'नंपुसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुंसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुंसगवेदए वा होज्जा ॥
४३. से णं भंते ! किं सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु—संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥
४४. तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥
४५. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥
४६. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए[4] अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, ताल-

१. × (क, ब, म) ।
२. × (क, ब, म) ।
३. सकसादी (अ, ता) ।
४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

मत्थाकडं[1] च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स[2] अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जति ।।

४७. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ? नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ।।

४८. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ? णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ।।

४९. से णं भंते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ? हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

५०. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरियं होज्जा ? गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा । उड्ढं होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गंधावइ-मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा पंडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरणं पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरियं होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरणं पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ।।

५१. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं दस । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खिय-उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल-नाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

१. °मत्थ° (अ, क); मत्था—अत्र एकपदे सन्धिर्जातः । वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तकं—मस्तकशुची कृत्तं—छिन्नं यस्यासौ मस्तककृत्तः, तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्तः, छान्दसत्वाच्चैवं निर्देशः, तालमस्तककृत्तः इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ) ।

२. पविट्ठस्स (अ, क, ता, म) ।

३. अण्णत्थ (ता) ।

४. भ० १।४४ ।

५. होज्जमाणे (ब, स) ।

६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा,[1] •केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्सवा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए ॥

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं जाव नो लभेज्ज सवणयाए° ॥

५४. एवं 'जा चेव'[2] असोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'[3] सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवरं —अभिलावो सोच्चे त्ति, सेसं तं चेव निरवसेसं जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा जाव[4] केवलनाणं उप्पाडेज्जा ॥

५५. तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, [5]•पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापोहमग्गण°गवेसणं करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ। से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ-पासइ ॥

१. सं० पा०—वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं ।

२. जच्चेव (क, ता, म); जहेव (स)

३. सच्चेव (क, ता, ब, म)।

४. भ० ९।११-३२।

५. सं० पा०—तहेव जाव गवेसणं ।

५६. से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव[1] सुक्कलेस्साए ॥

५७. से णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे[2] आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा ॥

५८. से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
[3]•गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥

५९. से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥

६०. से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसंघयणे होज्जा ॥

६१. से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अण्णयरे संठाणे होज्जा ॥

६२. से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ॥

६३. से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउए होज्जा° ॥

६४. से णं भंते ! किं सवेदए [4]•होज्जा ? अवेदए होज्जा ?°
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-नपुंसगवेदए'[5] होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपुंसगवेदए वा होज्जा ॥

---

१. भ० १।१०२।
२. होज्जमाणे (अ, क,)।
३. सं० पा०—एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं च—एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।
४. सं० पा०—पुच्छा।
५. नपुंसगवेदए (अ, म)।

६५. से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा।
जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—संजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि—संजलणलोभे होज्जा ॥

६६. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा [1]•अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

६७. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

६८. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय-भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ। जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ ॥

६९. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हंता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ॥

७०. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा[2] ॥

१. सं० पा०—एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल°।

२. वा तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, ब)।

७१. से णं भंते ! सिज्झति बुज्झति जाव[1] सव्वदुक्खाणं अंतं करेइ ?
हंता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

७२. तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

७३. तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
'हंता सिज्झंति'[2] जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

७४. से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव[3] अड्ढाइज्जदीवसमुद्द-तदेक्कदेसभाए होज्जा ॥

७५. ते णं भंते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सोच्चा णं केवलिस्स वा जाव[4] तप्पक्खियउवासियाए[5] वा अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ॥

७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बत्तीसइमो उद्देसो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[7]। दूतिपलासए चेइए[8]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥

७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए नामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—

१. भ० १।४४।
२. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. भ० ६।५०।
४. भ० ६।५१।
५. केवलिउवासियाए (अ, क, ता, स)।
६. भ० १।५१।
७. ओ० सू० १।
८. चेइए वण्णओ (ता)।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७९. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति ॥

८०. संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति ? निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ?
गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८१. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उववज्जंति ? निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति ?
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥

८२. संतरं भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव थणियकुमारा ॥

८३. संतरं भंते ! पुढविक्काइया उव्वट्टंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति । एवं जाव वणस्सइकाइया—नो संतरं, निरंतरं उव्वट्टंति ॥

८४. संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति ? निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ?
गंगेया ! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति । एवं जाव वाणमंतरा ॥

८५. संतरं भंते ! जोइसिया चयंति ?—पुच्छा ।
गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति । एवं वेमाणिया वि ॥

पवेसण-पदं

८६. कतिविहे णं भंते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥

८७. नेरइयपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

१. सांतरं (क, ता, म) । २. रयणप्पभ° (क, ता) ।

८८. एगे भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥

८९. दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एवं एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९०. तिण्णि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

१. द्विसंयोगजा भङ्गाः २१ ।
२. द्विसंयोगजा भङ्गाः ४२ ।

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]॥

६१. चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव एगे रय-

१. त्रिसंयोगजा भङ्गाः ३५। २. द्विसंयोगजा भङ्गाः ६३।

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियासंजोगो[1] तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, 'अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'[3], अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

१. तिय० (अ, म, स)।

२. त्रिसंयोगजा भङ्गाः १०५।

३. एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९२. पंच भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?
—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा अगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव

१. चतुःसंयोगजा भङ्गाः ३५। २. द्विसंयोगजा भङ्गाः ८४

अहेसत्तमाए । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा चउण्हं तियासंजोगो[1] भणितो तहा पंचण्ह वि तियासंजोगो भाणियव्वो, नवरं—तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह[2] दोण्णि, सेसं तं चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहेसत्तमाए। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो नवरं—अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[4]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे

१. तिय° (क)।
२. इमाहिं (अ, क, ब, म, स); इमेहिं (ता)।
३. त्रिसंयोगजा भङ्गाः २१०।
४. चतुःसंयोगजा भङ्गाः १४०

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९३. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा ।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए । एवं एएणं कमेणं जहा पचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो,

१. पञ्चसंयोगजा भङ्गाः २१ । २. द्विसंयोगजा भङ्गाः १०५

नवरं—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं तं चेव[1]। चउक्कसंजोगो वि तहेव[2], पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव पच्छिमो भंगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए'[4] एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

६४. सत्त भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं तं चेव[6]। तियासंजोगो[7], चउक्कसंजोगो[8], पंचसंजोगो[9], छक्कसंजोगो[10] य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ[11] संचारेयव्वो जाव छक्कगसंजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[12]। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा॥

६५. अट्ठ भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो[13] जाव

---

१. त्रिसंयोगजा भङ्गाः ३५०।
२. चतुःसंयोगजा भङ्गाः ३५०।
३. पञ्चसंयोगजा भङ्गाः १०५।
४. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
५. षट्संयोगजा भङ्गाः ७।
६. द्विसंयोगजा भङ्गाः १२६।
७. त्रिसंयोगजा भङ्गाः ५२५।
८. चतुःसंयोगजा भङ्गाः ७००।
९. पंचा° (क); पञ्चसंयोगजा भङ्गाः ३१५।
१०. छक्का° (क, ब)।
११. अहिओ (अ); अहितो (क); अधितो (ता)।
१२. षट्संयोगजा भङ्गाः ४२।
१३. द्विसंयोगजा भङ्गाः १४७, त्रिसंयोगजा भङ्गा ७३५, चतुःसंयोगजा भङ्गाः १२२५, पञ्चसंयोगजा भङ्गाः ७३५।

छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव जाव छक्कगसंजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]।

अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं संचारेयव्वं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]॥

९६. नव भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो[3] जाव सत्तगसंजोगो[4] य जहा अट्ठण्हं भणियं तहा नवण्हं पि भाणियव्वं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९७. दस भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो[6] जाव सत्तसंजोगो य जहा नवण्हं, नवरं—एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव पच्छिमो[7] आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[8]॥

९८. संखेज्जा भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे

१. षट्संयोगजा भङ्गाः १४७।

२. सप्तसंयोगजा भङ्गाः ७।

३. [illegible] भङ्गाः १६८, त्रिसंयोगजा भङ्गाः ६८०, चतुःसंयोगजा भङ्गाः १६६०, पञ्चसंयोगजा भङ्गाः १४७०, षट्संयोगजा भङ्गाः ३६२।

४. [illegible]गो (अ)।

५. सप्तसंयोगजा भङ्गाः २८।

६. द्विसंयोगजा भङ्गाः १८६, त्रिसंयोगजा भङ्गाः १२६०, चतुःसंयोगजा भङ्गाः २६४०, पञ्चसंयोगजा भङ्गाः २६४६, षट्-संयोगजा भङ्गाः ८८२।

७. अपच्छिमो (अ, क, ता, म, स)।

८. सप्तसंयोगजा भङ्गाः ८४।

रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं समं चारिया एवं सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा, एवं एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं एक्केक्को रयणप्पभाए संचारेयव्वो जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो जाव सत्तगसंजोगो य जहा दसण्हं तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स—अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए जाव संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा॥

९९. असंखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासंजोगो जाव सत्तगसंजोगो' य जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं—असंखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

१००. उक्कोसेणं भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गंगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव

१. सत्ता°, (अ ता, ब)।

अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥

१०१. एयस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइय-पवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, एवं पडिलोमगं[2] जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

१०२. तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

गंगेया ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥

१०३. एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएणं पविसमाणे किं एगिं-दिएसु होज्जा जाव पंचिंदिएसु होज्जा ?

गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा ॥

१०४. दो भंते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा ।

गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिं-दिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा, एवं जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्ख-जोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्जा ॥

१०५. उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएणं—पुच्छा ।

गंगेया ! सव्वे वि ताव एगिंदिएसु होज्जा, अहवा एगिंदिएसु वा[3] बेइंदिएसु वा होज्जा । एवं जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो, तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो[4], पंचसंजोगो[5] उवजुंजिऊण[6] भाणियव्वो जाव अहवा एगिंदिएसु वा, बेइंदिएसु वा जाव पंचिं-दिएसु वा होज्जा ॥

१०६. एयस्स णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[7] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गंगेया ! सव्वथोवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्ख-

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. उप्पडि° (क, ता, ब) ।
३. य, (अ, ता); या (क) ।
४. चउक्का° (अ, क, ब) ।
५. पंचा° (क, ब) ।
६. उववज्जिऊण (अ); उवउज्जित्तण (क), उवउज्जिऊण (ता, स) ।
७. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, बेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए ।।

१०७. मणुस्सपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य ।।

१०८. एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ?
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।।

१०९. दो भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस ।।

११०. संखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एक्केक्कं उस्सारितेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

१११. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं जाव असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

११२. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा संमुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु य होज्जा ।।

११३. एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए संमुच्छिममणुस्सपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

११४. देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणियदेवपवेसणए ॥

११५. एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा ? वाणमंतर जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६. दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा ।
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्ज त्ति ॥

११७. उक्कोसा भंते ! —पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८. एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥

११९. एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसणगस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

१२०. संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति ?

संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ?

गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति, नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति ।

संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया । सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ।।

सतो असतो उववज्जणादि-पदं

१२१. सतो[2] भंते ! नेरइया उववज्जंति, असतो[3] नेरइया उववज्जंति, सतो असुर-कुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति ? सतो नेरइया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति, सतो असुर-कुमारा उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति ?

---

१. सांतरं (क, ता, ब, म) ।

२. अस्मिन् प्रकरणे द्वयोर्वाचनायोर्मिश्रणं दृश्यते । प्रथमा वाचना किञ्चित् संक्षिप्तास्ति, द्वितीया च किञ्चिद् विस्तृता । एतन् मिश्रणं वृत्ति-रचनातः उत्तरकालमेव जातं सम्भाव्यते, तेनैव वृत्तिकृता नास्मिन् विषये किञ्चिद् लिखितम् । आदर्शेषु च प्राप्यते । अस्माभि-र्वृत्तिमनुसृत्य एका वाचना स्वीकृता, द्वितीया च पाठान्तरे न्यस्ता, यथा—
'सतो भंते ! नेरइया उववज्जंति ? असतो नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया ।
'सतो भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? असतो नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं ।'

३. असओ (ता) ।

गंगेया ! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, सतो असुरकुमारा उववज्जंति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, नो असतो वेमाणिया उववज्जंति, सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ।।

१२२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ?

से नूणं भे[1] गंगेया ! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे [2]°परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइंगाकार-संठिए । तंसि च णं सासयंसि लोगंसि अणादियंसि अणवदग्गंसि परित्तंसि परिवुडंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि, मज्झे संखित्तंसि, उप्पि विसालंसि, अहे पलियंकसंठियंसि, मज्झे वरवइरविग्गहियंसि, उप्पि उद्धमुइंगाकारसंठियंसि अणंता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयंति ।

से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहिं लोक्कइ पलोक्कइ°, जे लोक्कइ से लोए । से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ।।

सतो परतो वा जाणणा-पदं

१२३. सयं[3] भंते ! एतेवं[4] जाणह, उदाहु असयं, असोच्चा एतेवं जाणह, उदाहु सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया, चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ?

गंगेया ! सयं एतेवं जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति ।।

१२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—[5]°सयं एतेवं जाणामि, नो असयं, असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति जाव सतो वेमाणिया चयंति°, नो असतो वेमाणिया चयंति ?

१. ते (अ) ।
२. सं० पा०—जहा पंचमसए जाव जे ।
३. सतं (क, ता) ।
४. एवं (अ, क); एते एवं (ता); एयं एवं (ब)
५. सं० पा०—तं चेव जाव नो ।

गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ। दाहिणे णं, [1]•पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स°। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं एतेवं जाणामि, नो असयं असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति॥

सयं असयं उववज्जणा-पदं

१२५. सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ?
गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—•सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु° उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गंगेया[3] ! •एवं वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु° उववज्जंति॥

१२७. सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गंगेया ! सयं असुरकुमारा[4] •असुरकुमारेसु° उववज्जंति, नो असयं असुर-कुमारा[5] •असुरकुमारेसु° उववज्जंति॥

१२८. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं[6], कम्मविगतीए[7], कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं

---

१. सं० पा०—एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स।
२. सं० पा०—वुच्चइ जाव उववज्जंति।
३. सं० पा०—गंगेया जाव उववज्जंति।
४. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
५. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
६. कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं (अ, क, वृपा)।
७. कम्मचियत्ताए (ता)।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[1] •असुरकुमारत्ताए॰ उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। एवं जाव थणियकुमारा ।।

१२९. सयं भंते ! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गंगेया ! सयं पुढविक्काइया[2] •पुढविक्काइएसु॰ उववज्जंति नो असयं पुढविक्काइया[3] •पुढविक्काइएसु॰ उववज्जंति ।।

१३०. से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; सुभासुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभासुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभासुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं पुढविक्काइया[4] •पुढविक्काइएसु॰ उववज्जंति, नो असयं पुढविक्काइया[5] •पुढविक्काइएसु॰ उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ।।

१३१. एवं जाव मणुस्सा ।।

१३२. वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं वेमाणिया[6] •वेमाणिएसु॰ उववज्जंति, नो असयं[7] •वेमाणिया वेमाणिएसु॰ उववज्जंति ।।

गंगेयस्स संबोधि-पदं

१३३. तप्पभितिं च णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणइ सव्वण्णुं सव्वदरिसिं। तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं [8] •सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।।

१३४. तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं सपडिक्कमणं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।।

१३५. तए णं से गंगेये अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता

१. सं० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
२. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जंति।
३. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जंति।
४. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जंति।
५. सं० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जंति।
६. सं० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जंति।
७. सं० पा०—असयं जाव उववज्जंति।
८. सं० पा०—एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्वं जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणयं अदंतवणयं अच्छत्तयं अणोवाहणयं भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ।।

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७. तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[2] । बहुसालए चेइए—वण्णओ[3] । तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए रिव्वेद[5]-जजुव्वेद[6]-सामवेद-अथव्वणवेद-[7]इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[8] उवलद्धपुण्णपावे जाव[9] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[10] पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा पज्जुवासइ ।।

१. भ० १।५१ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० २-१३ ।
४. भ० २।६४ ।
५. रिउवेद (अ, स); रिउव्वेद (क); रुव्वेद (म)
६. यजुवेद (अ); यजुव्वेद (म) ।
७. सं० पा०—जहा खंदओ जाव अण्णेसु ।
८. अधिगत° (ता); अहिगय° (ब, म) ।
९. भ० २।६४ ।
१०. ओ० सू० १५ ।

१३९. तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणंदं माहणिं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[2] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[3] सुहंसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूवं[4] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[5] धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो[6] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासमो। एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए[7] आणुगामियत्ताए भविस्सइ॥

१४०. तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ[8]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया करयल[9] •परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ॥

१४१. तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगेहिं[10], जंबूणयामयकलावजुत्त-परिविसिट्ठेहिं[11], रययामयघंटा-सुत्तरज्जुय-पवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घंटियाजालपरिगयं, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमियं, पवरलक्खणोववेयं-धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह॥

१४२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ[12]•तुट्ठचित्त-माणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया

---

१. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए।
२. भ० १।७।
३. ओ० सू० १९।
४. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।
५. आयरियस्स (अ, स)।
६. सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो।
७. × (क, ता, ब, म); निस्सेयसाए (भ० २।३०)।
८. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।
९. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
१०. ° संगएहिं (ता, म)।
११. परिविसट्ठेहिं (अ, स); पविसिट्ठेहिं (क, ता)।
१२. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया।

करयल[1]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति[2], पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता[3] तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥

१४३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे[5] ॥

१४४. तए णं सा देवाणंदा माहणी ण्हाया[6] जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं, चिलातियाहिं जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं[9] जाणप्पवरं दुरूढा ॥

१४५. तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे नियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[10] तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छाति, [तं जहा—१. सच्चित्ताणं दव्वाणं

---

१. सं० पा०—करयल ।
२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. उवट्ठवेत्ता जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. भ० ३।३३ ।
५. द्रूढे (ता) ।
६. वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एवं दृश्यते—अंतो अंतेउरंसि ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता, किंच [किंते (व)]-वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-हाररचित-उचिय-कडग-खुड्डाग-एकावली-कंठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयंगी, चीणसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमाल उत्तरिज्जा, सव्वोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदिता, वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा (वृ) ।
७. भ० ३।३३ ।
८. वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं बउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिगिणियाहिं चारु (वास) गिणियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहिं आरवीहिं दमिलीहिं सिहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं(पुक्कलीहिं) बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं इंगित-चिंतित-पत्थिय-वियाणियाहिं कुसलाहिं विणीयाहिं (अ, ता, ब, स); इदं च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ) ।
९. जाव धम्मियं (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१०. चुत्तीसाए (म) ।

विश्रोसरणयाए [1]•२. अचित्ताणं दव्वाणं अविश्रोसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेणं ४. चक्खुप्फासे अंजलिप्पग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं][2] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४६. तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं जाव[3] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरग-वंदपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—१. सचित्ताणं दव्वाणं विश्रोसरणयाए २. अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए ३. विणयोणयाए गायलट्ठीए ४. चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं ५. मणस्स एगत्तीभावकरणेणं][4] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा[5] पज्जुवासइ ॥

१४७. तए णं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया पप्पुयलोयणा[6] संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१४८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—किं णं भंते ! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया [7]•पप्पुयलोयणा संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव समूसविय° रोमकूवा देवाणुप्पियं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?
गोयमादि[8] ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! देवाणंदा माहणी ममं अम्मगा, अहण्णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए। 'तण्णं एसा'[9] देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहरागेणं आगयपण्हया[10] •पप्पुयलोयणा, संवरियवलयबाहा कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलंबगं पिव° समूसवियरोमकूवा ममं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१. सं० पा०—एवं जहा बितियसए जाव तिविहाए।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
३. भ० ९।१४४।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
५. पंजलिउडा (अ)।
६. पप्फुय° (अ, ता, स); पप्फुल्ल° (क)।
७. सं० पा०—तं चेव जाव रोमकूवा।
८. गोयमादी (क, ता, ब, म)।
९. तए णं सा (अ, म)।
१०. सं० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय°।

१४९. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए[1] •मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ॥

१५०. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं[3] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[4]• आयाहिण पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वदासी—एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! [5]•अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! ° —से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य।

[7]•से जहानामाए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

---

१. सं० पा०—इसिपरिसाए जाव।
२. ओ० सू० ७१-७९।
३. अंतिए (ता)।
४. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता।
५. सं० पा०—जहा खंदओ जाव से।
६. सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता।
७. सं० पा०—एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयारगोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं ॥

१५१. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तं माहणं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव मुंडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीइयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं एवं उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्वं ।

तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं संपडिवज्जइ °जाव[1] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[2] बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम[3]-•दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव[4] तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता[5] •चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१५२. तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं[6] •करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खियं ॥

१५३. तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचंदणाए अज्जाए[7] सीसिणित्ताए दलयइ ॥

१५४. तए णं सा अज्जचंदणा अज्जा देवाणंदं माहणिं सयमेव[8] मुंडावेति, सयमेव सेहावेति । एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं संपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव[9] संजमेणं संजमति ॥

१५५. तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, [10]•अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

१. भ० २।५३-५७ ।
२. जाव (अ, क, ता, ब, स) ।
३. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
४. भ० १।४३३ ।
५. सं० पा०—आराहेत्ता जाव सव्व° ।
६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता ।
७. × (ब, म) ।
८. सयमेव पव्वावेति सयमेव (क, ब, म) ।
९. भ० २।५४ ।
१०. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव सव्व° ।

सेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धा बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा ° सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

जमालि-पदं

१५६. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[1]। तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूते, उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिवद्धेहिं णाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं[3] उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसंत-गिम्ह-पज्जंते छप्पि उऊ[4] जहाविभवेणं माणेमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१५७. तए णं खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर[5]-•चउम्मुह-महा-पह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ °, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[6] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं[7] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे ° विहरइ।

तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव[8] एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गामं नयरं मज्झं-मज्झेणं निग्गच्छंति[9], निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छंति एवं जहा ओववाइए जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासंति ॥

१५८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—किण्णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्णं एते बहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया[2], कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता,[3] •जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य बहवे राईसर—तलवर--माडंबिय—कोडुंबिय—इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयबलिकम्मा जहा ओववाइए जाव[4] खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति ?— एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कंचुइ[5]-पुरिसं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वदासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ?

१५९. तए णं से कंचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल[6]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जमालिं खत्तियकुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी— नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा जाव[7] निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव[8] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नयरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं[9] •ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा जाव[10] निग्गच्छंति ॥

१६०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे कंचुइ[11]-पुरिसस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१. सं०पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. नाता (क, ब, म)।
३. सं०पा०—जहा ओववाइए जाव सत्थवाह°।
४. ओ० सू० ५२।
५. कंचुइज्ज (अ, क, ता, ब)।
६. सं० पा०—करयल।
७. भ० ९।१५८।
८. ओ० सू० १६।
९. सं० पा०—ओग्गहं जाव विहरइ।
१०. ओसू सू० ५२; जाव अप्पेगइया वंदणवत्तिय जाव (अ, क, ता, ब, म)।
११. कंचुति (अ, क, व, स)।

१६१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा[1] •चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं ° पच्चप्पिणंति ।

१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] चंदणुक्खित्तगायसरीरे[3] सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[4], दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं[5] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडकरपहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं पाहणाओ[6] य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे[7] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[8] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१६३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि[9] •परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ ° जाव[10] परिसा पडिगया ॥

१. सं० पा०—समाणा जाव पच्चप्पिणंति ।
२. जाव ओववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); मज्जनगृहप्रकरणे परिवारवर्णनस्य सूचना स्वाभाविकी नास्ति, अतः प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः । न च एतद्रूपेणासौ पाठः औपपातिके लभ्यते, अतएवासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः । द्रष्टव्यम्—ओ० सू० ६३ ।
३. चंदणोकिण्ण° (ता, म); चंदणोखिण्ण° (ब)
४. द्रूहइ (अ, ता, ब); द्रूहति (क) ।
५. संकोरंट° (म, स) ।
६. वाहणाओ (अ, म); पाणहाओ (क); वाणहाओ (स) ।
७. अंजलितमउ० (ता) ।
८. सं० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।
९. सं० पा०—इसि जाव धम्मकहा ।
१०. ओ० सू० ७१-७९ ।

१६४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ'•तुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो' •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते' ! •इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते !°—से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

१६५. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो' •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंट'•मल्लदामेणं छत्तेणं° धरिज्जमाणेणं महयाभडचडगर'•पहकरवंद°परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्मताओ' ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ॥

१६६. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—धन्ने सि णं तुमं जाया ! कयत्थे सि णं तुमं जाया ! कयपुण्णे सि णं तुमं जाया ! कयलक्खणे सि णं तुमं जाया ! जण्णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ॥

१. सं० पा०—हट्ठ जाव हियए।
२. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता।
३. सं० पा०—भंते जाव से।
४. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता।
५. सं० पा०—सकोरेंट जाव धरिज्जमाणेणं।
६. सं० पा०—चडगर जाव परिक्खित्ते।
७. अम्मयाओ (अ, स); अम्माताओ (ब)।

१६७. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्चं पि एवं वयासी—एवं खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते[1], ●से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए०, अभिरुइए। तए णं अहं अम्मताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीते जम्मण[2]-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

१६८. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं अस्सुयपुव्वं गिरं सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलंतचिलिणगत्ता[3], सोगभरपवेवियंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुन्ननिच्छाया[4], गयसिरीया पसिढिलभूसण[5]-पडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय[6]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई[7], सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त[8] व्व चंपगलया, निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि[9] धसत्ति सव्वंगेहिं[9] संनिवडिया[10] ।।

१६९. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए[11] तुरियं कंचण-भिंगारमुहविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी[12], उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं, सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी रोयमाणी कंदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए[13] हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव[14] दुल्लभे सवणयाए[15], किमंग ! पुण पासणयाए ? तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

---

१. सं० पा०—निसंते जाव अभिरुइए।
२. जम्मजरा (क्व०)।
३. ०विलीणगत्ता (अ, ब, स)।
४. ०लावण्ण० (ना० १।१।१०५)।
५. पसढिल० (अ, क, ता, म)।
६. ०खुम्मिय० (ना० १।१।१०५)।
७. ०गुरुई (अ, ता, ब, स)।
८. ०णितत्त (ता); ०णिकत्त (ब)।
९. सव्वंगेहिं धसत्ति (ना० १।१।१०५)।
१०. निवडिया (अ, ता, स)।
११. ० यत्तियाए (क, ता); चेट्या इति गम्यम् (वृ)।
१२. सीयलविमलजल० (अ); सीतलविमल० (क); ०सीतलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित० (ता); ०निव्ववित० (ब); सीयलविमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित० (स)
१३. जीवियउस्सासिए (वृपा, ना० १।१।१०६)।
१४. विव (क).
१५. समणयाए (अ)।

भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे मम एवं वदह—तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते तं चेव जाव[1] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलबिंदु-सन्निभे सुविणदंसणोवमे[2] विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस[3] णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[4] °भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमं च ते जाया ! सरीरगं पविसिट्ठरूवं[5] लक्खण-वंजण-गुणोववेयं उत्तमबल-वीरियसत्त-जुत्तं विण्णाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमूसियं[6] अभिजायमहक्खमं विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त[7]-लट्ठपंचिंदियपडुं[8] पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि ॥

१७२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च णं ते जाया ! सरीरगं तं चेव जाव[9] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठविय-सव्वकालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्वं भविस्सइ । से केस णं जाणइ अम्मताओ ! के पुव्विं [10]°गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे

१. भ० ९।१६९ ।
२. सुविणगसदं° (क, म); सुविणगदं° (स) ।
३. के (ता, ना० १।१।१०७) ।
४. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए ।
५. पइवि° (ता, ब) ।
६. °समूविय (ता) ।
७. उयग्ग (ता) ।
८. लट्ठं° (स) ।
९. भ० ९।१६९ ।
१०. सं० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७३. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ[1] कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ[2], मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ[3], विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवपभाविणीओ[4], मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंग-सुंदरीओ[5]। तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं[6] °समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि ॥

१७४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे मम एयं वदह—इमाओ ते जाया! विपुलकुल-बालियाओ जाव[7] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगा कामभोगा[8] उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणुण्णदुरुय[9]-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास[10]-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा[11], अप्पकालिया, लहुसगा[12], 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा'[13], परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, 'सदा साहुगरहणिज्जा'[14],

१. °वालियाओ (स); सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोव्वण-गुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणि-एल्लियाओ (अ, क, ब, म, स); असौ पाठः 'ता' संकेतिते आदर्शे नास्ति तथा वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः। नायाधम्मकहाओ (१।१। १०८) असौ विद्यते। तस्य वाचनान्तरे चैष पाठो नास्ति। वाचनान्तरगतश्च पाठः प्रस्तुतभगवतीपाठसदृशोस्ति।

२. सुहोइयाओ (ब)।

३. °णियाओ (ब)।

४. प्पगब्भभप्पभा° (अ); पगब्भवयभा° (क, वृ); पगब्भवपभा° (ता); पगब्भुब्भवपभा-विणीओ (वृपा)।

५. °सुंदरीओ भारियाओ (ब, म, स)।

६. सं० पा०—कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

७. भ० ९।१७३।

८. कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (अ, ब, म, स)।

९. °दुरूव (अ, क, ब, स)।

१०. मद° (ता); मत° (ब)।

११. बीभत्था (ब)।

१२. लहूसगा (अ, क, ब, म)।

१३. °दुक्खबहुजण° (क, ता, ब, म)।

१४. साधुजणगरहणिज्जा (ता)।

अणंतसंसारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण[1], दुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा। से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए? के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि णं अम्मताओ[2]! •तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७५. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य[3], सुवण्णे य, कंसे य, दूसे य, विउलधण-कणग[4]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवालरत्तरयण°-संतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, परिभाएउं, तं अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवंस[5]•तंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि॥

१७६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह—इमं च ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव[6] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अग्गिसामण्णे[7], •चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे°, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ [8]•अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि णं अम्मताओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१७७. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मताओ जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभयुव्वेयणकरीहिं[9] पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी—एवं

१. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यः (वृ)।
२. सं० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए।
३. या (क, ता, ब, म) सर्वत्र।
४. सं० पा०—कणग जाव संतसार°।
५. सं० पा०—वड्ढियकुलवंस जाव पव्वइहिसि।
६. भ० ९।१७५।
७. सं० पा०—अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे।
८. सं० पा०—तं चेव जाव पव्वइत्तए।
९. °भयुव्वेवक° (ता); भयुव्वेवणक° (ब)।

खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले[1] •पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थं ठिया जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिवायंति° सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति।

अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गंगा वा महानदी पडिसोयंगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो, तिक्खं कमियव्वं, गरुयं[2] लंबेयव्वं, असिधारगं वयं चरियव्वं।

नो[3] खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए[4] इ वा, अज्झोयरए[5] इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कंदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा।

तुमं सि च णं जाया ! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नालं चोरा, नालं वाला, नालं दंसा, नालं मसगा, नालं वाइय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए। तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं[6] •कालगएहिं समाणेहिं परिणयवए, वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि॥

१७८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ[7] ! जण्णं तुब्भे ममं एवं वदह— एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले तं चेव जाव[8] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्मताओ ! तुब्भेहिं

१. सं० पा०—जहा आवस्सए जाव सव्व°।
२. गुरुयं (अ)।
३. णो य (अ, ता, ब)।
४. मीसजाए (ता); मिस्साजाए (ब)।
५. उज्झो° (अ, स)।
६. सं० पा०— अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि।
७. अम्मयाओ (अ, स)।
८. भ० ९।१७७।

अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७६. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा[2] •पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा° विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमण्णित्था ॥

१८०. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जहा ओववाइए जाव[3] सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति[4] ॥

१८१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेंति[5] ॥

१८२. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं, •अट्ठसएणं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पामयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसएणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं°, अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि-णिग्घोसणाइय°रवेणं महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति, अभिसिंचित्ता करयल[7]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

---

१. सं० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ।
२. सं० पा०—वा जाव विण्णवेत्तए ।
३. ओ० सू० ५५ ।
४. पच्चप्पिणंति (अ, क, ता, ब, म, स); नायाधम्मकहाओ (१।१।११६, ११७) सूत्रानुसारेण एतत्पदं स्वीकृतम् । 'पच्चप्पिणंति' इति पदं अत्र नावश्यकं प्रतिभाति ।
५. सं० पा०—एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएणं ।
६. सं० पा०—सविड्ढीए जाव रवेणं ।
७. सं० पा०—करयल जाव जएणं ।

मत्थए अंजलिं कट्टु° जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो? किं पयच्छामो ? 'किणा व'[1] ते अट्ठो ?

१८३. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं[2], कासवगं च सद्दावियं[3] ॥

१८४. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय[4] 'दोहिं सयसहस्सेहिं'[5] कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह ॥

१८५. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[6]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति°, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं [7]°गिण्हंति, गिण्हित्ता दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेंति, सयसहस्सेणं° कासवगं सद्दावेंति ॥

१८६. तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे[8] °कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल[9]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए करणिज्जं ?

१८७. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे नि[redacted]ोग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१८८. तए णं से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे

---

१. किं णा वा (ब, म); किं णा व (स)।
२. आणिउं (ता. ब)।
३. सद्दावेउं (ता); सद्दावितुं (ब)।
४. गहेत्ता (ता)।
५. दोहि सयसहस्सेणं (अ, क); एगमतसहस्सेणं (ता); सयसहस्सेणं (ब, म, स); बहुवचनान्तं पदं नायाधम्मकहाओ (१।१।१२२) सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम्।
६. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेत्ता।
७. सं० पा०—तहेव जाव कासवगं।
८. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव सरीरे।
९. सं० पा०—करयल।

हट्ठतुट्ठे करयल[1]°परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु° एवं सामी ! तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए[2] पोत्तीए मुहं बंधइ, बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ ॥

१८६. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेत्ता 'सुद्धे वत्थे'[3] बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिण्णमुत्ता-वलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं[4] अंसूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एवं वयासी—एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति ॥

१६०. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया[5]-पीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं चक्खुहरं वण्ण-फरिसजुत्तं[6] हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचितंतकम्मं महरिहं हंसलक्खणपडसाडगं परिहिंति, परिहित्ता हारं पिणद्धेंति[7], पिणद्धेत्ता अद्धहारं पिणद्धेंति[8], पिणद्धेत्ता [9]°एगावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता रयणावलिं पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता एवं—अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दियाणंतगं विकच्छसुत्तगं[10] मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं[11]° चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणद्धेंति, किं बहुणा ? गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति[12] ॥

---

१. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
२. चउप्फलाए (ना० १।१।१२५) ।
३. सुद्धवत्थेणं (अ, स) ।
४. °दूसहदूसहाइं (क, ब, म) ।
५. सीया (अ, ब, म, स) ।
६. °संजुत्तं (अ) ।
७. पिणिहेंति (ता, ब) ।
८. पिणहेंति (ब) ।
९. सं० पा०—एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं ।
१०. वच्छसुत्तं (म० वृ०); वेकच्छसुत्तं (वृपा) ।
११. वाचनान्तरे त्वयमलंकारवर्णकः साक्षाल्लिखित एव दृश्यते (वृ) ।
१२. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकं 'दद्दरमलयसुगंधि-गंधिएहिं गायाइं भुकुंडेंति' त्ति दृश्यते (वृ) ।

१६१. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव[1] मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं[2] पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।।

१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं—चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ[3], दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

१६३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ।।

१६४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ।।

१६५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय[6]-•हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण•-रूव-जोव्वण-विलासकलिया[7] सरदब्भ[8]-हिम-रयय-कुमुद-कुंदेंदुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी'[9] चिट्ठति ।।

---

१. राय० सू० १७ ।

२. वाचनान्तरे पुनरयं वर्णकः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ) ।

३. द्रुहति (क, ता, ब) ।

४. भ० ३।३३ ।

५. भ० ३।३३ ।

६. सं० पा०—संगयगय जाव रूव ।

७. विलासकलिया सुंदरथण (अ, ब, म, स); एषु आदर्शेषु 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे 'सुंदरथण' इति संक्षिप्तपाठो विद्यते; किन्तु एष पाठः 'विलासकलिया' इति पदस्यादौ विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते । वृत्तिकृतापि उक्तपदानन्तरमसौ पाठः स्वीकृतः, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रूवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथणजहणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेय' त्ति सूचितम् (वृ), अस्माकं पाठानुसन्धानप्रयुक्ते प्रतिद्वये एष पाठो नास्ति । एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते ।

८. × (अ, ब, म, स) ।

९. उवधरेमाणीओ उवधरेमाणीओ (अ); उवरिधरेमाणीओ २ (स) ।

१९६. तए णं तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार[1]•चारुवेसाओ संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ, चिल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ[2] गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठंति ॥

१९७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[3]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ॥

१९८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[4]•चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ ॥

१९९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, एगाभरणवसण[5]-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह ॥

२००. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं[7] •सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं° सद्दावेंति ॥

२०१. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा[8] जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

१. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
२. सेयवरचामराओ (क) ।
३. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
४. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
५. एगाभरणभरण° (अ) ।
६. भ० ९।१८५ ।
७. सं० पा०—सरित्तयं जाव सद्दावेंति ।
८. अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठः नायाधम्मकहाओ (१।१।१४०) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः ।
९. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, ° वद्धावेत्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं करणिज्जं ॥

२०२. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं[1] एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय[2]•वलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण°-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहेह ॥

२०३. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा जाव[3] पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[4] एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति ॥

२०४. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[5]-•णंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा। तदाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं[6],•दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धय-विजयवेजयंती य ऊसिया°गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

•[7]तदाणंतरं च णं वेरुलिय-भिसंत-विमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभियं चंदमंडलणिभं समूसियं विमलं आयवत्तं, पवरं सीहासणं वरमणिरयणपाद-पीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं वहूकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्तं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं।

तदाणंतरं च णं वहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

तदाणंतरं च णं वहवे दंडिणो मुंडिणो सिहंडिणो जडिणो पिंछिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कंदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायंता य गायंता य णच्चंता य हसंता य भासंता य सासंता य सावेंता य रक्खंता य° आलोयं च करेमाणा जय-जय सद्दं पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया।

---

१. °सहस्सं पि (अ, क, ब, म, स)।

२. सं० पा०—कय जाव गहिय°।

३. भ० ६।१८५।

४. भ० ६।२०१।

५. सं० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा।

६. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव गगण°; अनेन च यदुपात्तं तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ)।

७. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं; एतच्च वाचनान्तरे प्रायः साक्षाद्दृश्यत एव (वृ); वृत्तिकृता वाचनान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृताऽस्ति।

तदाणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओववाइए जाव[1] महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।।

२०५. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयबलिकम्मे[2] •कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार° विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगर-विंदपरिक्खित्ते[3] 'जमालिं खत्तियकुमारं'[4] पिट्ठओ अणुगच्छइ ।।

२०६. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा[5], उभओ पासिं नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसंगेल्ली ।।

२०७. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिंगारे, परिग्गहियतालियंटे[6], ऊसवियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरबालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव[7] दुंदुहि-णिग्घोस-णादितरवेणं[8] खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ।।

२०८. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग-तिय-चउक्क-•चच्चर-चउम्मुह-महापह° पहेसु[9] बहवे अत्थत्थिया[10] •कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं° अभिनंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी—जय-जय नंदा ! धम्मेणं, जय-जय नंदा ! तवेणं, जय-

१. ओ० सू० ५२ ।

२. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव विभूसिए ।

३. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।

५. आसवारा (वृपा) ।

६. °तालयंटे (क, ता) ।

७. भ० ६।१८२ ।

८. अतोग्रे 'अ, ब, म, स' इति संकेतितेषु आदर्शेषु एतावान् अधिकः पाठो लभ्यते—'तदाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाणंतरं च णं अट्ठसयं गयाणं, अट्ठसयं तुरयाणं, अट्ठसयं रहाणं, तदाणंतरं च णं लउड-असि-कोंतहत्थाणं बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं, तदाणंतरं च णं बहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ संपट्ठिया ।' असौ पाठः अतः पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोषेण प्रमादेन वा अत्र प्रवेशः प्राप्तः । पं० बेचरदाससम्पादितभगवत्यामपि इत्थमेव अस्ति ।

९. सं० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।

१०. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनंदंता

जय नंदा ! भद्दं ते[1] अभग्गेहिं[2] नाण-दंसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं[3], अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जियं पालेहि समणधम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू भाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर ! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च नाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमूं अभिभविय[4] गामकंटकोवसग्गा णं, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य ॥

२०९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे •हिययमालासहस्सेहिं अभिणंदिज्जमाणे-अभिणंदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कंतिसोहग्गगुणेहिं पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे बहूणं नरनारिसहस्साणं दाहिणहत्थेणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मंजुमंजुणा घोसेणं आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपंतिसहस्साइं समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुंडग्गामे नयरे मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छइ,[5] निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

२१०. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[6] •आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते[7] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव[8] सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे नोवलिप्पति पंकरएणं, नोवलिप्पति जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे

---

१. भवतादिति गम्यते (वृ) ।
२. अभिग्गहेहिं (अ) ।
३. चरित्तमुत्तमेहि (अ, क, म, स); चरित्तमुत्तेहिं (ता) ।
४. अभिभविया (अ, क, म); अभिभविता (ता); अभिसमिया (ब) ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ ।
६. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
७. सं० पा०—कंते जाव किमंग ।
८. ओ० सू० १५० ।

नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएणं, नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणेणं । एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेणं, इच्छइ[1] देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए[2] । तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सीसभिक्खं ॥

२११. 'तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी'[3]—अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

२१२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[4] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ॥

२१३. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि[5]•धार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि° विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी—'जइयव्वं जाया ! घडियव्वं[6] जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएतव्वं त्ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१४. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, [7]•उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

१. × (अ, क, ता, ब, म, स) ।

२. पव्वतेति (अ); पव्वयति (क); पव्वइतइ (ता); पव्वतिति (ब); पव्वतित (म); पव्वतिते (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए' एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाओ (१।१।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्तः । सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तनं जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठानां नहि कश्चिदर्थोऽवगम्यते ।

३. × (अ, क, ब, म) ।

४. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।

५. सं० पा०—वारि जाव विणिम्मुयमाणी ।

६. घडियव्वं जाया जइयव्वं (अ, क, ता, ब, म, स) ।

७. सं० पा०—एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं॥

२१५. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ° जाव[1] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[2]-•दसम-दुवालसेहिं° मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

२१६. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए॥

२१७. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

२१८. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं[3] •बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए॥

२१९. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ[4], •नो परिजाणइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ।

२२०. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ

१. भ० २।५३.५७।
२. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव मासद्ध।
३. सं० पा०—सद्धिं जाव विहरित्तए।
४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवय-विहारं विहरइ ॥

२२१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था—वण्णओ[1], कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव[2] वणसंडस्स। तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[3]। पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव[4] पुढविसिलापट्टओ ॥

२२२. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[5] °गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे° सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२४. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं 'अरसेहि य'[6], विरसेहि य अंतेहि य, पंतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कंतेहि य, पमाणाइक्कंतेहि य'[7] पाण-भोयणेहिं अण्णया कयाइ सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए—उज्जले विउले[8] पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे। पित्तज्जरपरि-गतसरीरे, दाहवक्कंतिए[9] या वि विहरइ ॥

२२५. तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सेज्जा-संथारगं संथरह ॥

२२६. तए णं ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-संथारगं संथरेंति ॥

२२७. तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—ममं[10] णं देवाणुप्पिया! सेज्जा-संथारए किं कडे? कज्जइ?

तते णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाणं सेज्जा-संथारए कडे, कज्जइ ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० २-१३।
५. सं० पा०—चरमाणे जाव सुहंसुहेणं।
६. अरसेहिं या (क, ता, ब) सर्वत्र।
७. य सीओएहि य (अ); य सीएहिं (ब); य सीतेहि य (स)।
८. वितुले (ब, म); तिउले (स, वृ); विउले (वृपा)।
९. दाहवुक्कंतिए (ब)।
१०. मम (अ, स)।

२२८. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जण्णं समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव[2] एवं परूवेइ—एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए[3], •वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए°, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ- एवं खलु चलमाणे चलिए [4]•जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। जम्हा णं सेज्जा-संथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए° जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे॥

२२९. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, अत्थेगतिया समणा निग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति, ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति। तत्थ णं जे ते समणा निग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

२३०. तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ[5] ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२. भ० १।४२०।
३. सं० पा०—उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
४. सं० पा०—तं चेव जाव।
५. कयाति (अ, ब, स); कदायी (ता)।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्थावक्कमणेणं[1] अवक्कंता, नो खलु अहं तहा छउमत्थावक्कमणेणं[2] अवक्कंते, अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते ॥

२३१. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी—नो खलु जमाली ! केवलिस्स नाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा 'थंभंसि वा'[3] थूभंसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा, जदि णं तुमं जमाली ! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवलि भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

२३२. तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए[4] •वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, नो संचाएति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

२३३. जमालीति ! समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी—अत्थि णं जमाली ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव[5] णं एतप्पगारं भासं भासित्तए, जहा णं तुमं ।

सासए लोए जमाली[6] ! जं न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।

असासए लोए जमाली ! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।

सासए जीवे जमाली ! जं न कयाइ नासि[7], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे ।

१. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
२. छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
३. × (अ, ब, म) ।
४. सं० पा०—कंखिए जाव कलुस° ।
५. च्चेव (ता) ।
६. × (क, ता) ।
७. सं० पा०—नासि जाव निच्चे ।

असासए जीवे जमाली ! जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ॥

२३४. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव[1] एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स[2] अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥

२३५. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसिता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स एवं भासमाणस्स एवं पण्णवेमाणस्स एवं परूवेमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं [3]°मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु° देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ॥

२३६. कतिविहा णं भंते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ॥

२३७. कहिं णं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

१. भ० १।४२० ।
२. ट्ठाणस्स (ता, म, स) ।
३. सं० पा०—तं चेव जाव देव° ।

गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ॥

२३८. कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं, हिट्ठिं सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ॥

२३९. कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?
गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठिं लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ॥

२४०. देवकिब्बिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति ?
गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारा[2] अवण्णकारा अकित्तिकारा बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा—तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ॥

२४१. देवकिब्बिसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, 'भवक्खएणं, ठितिक्खएणं'[3] अणंतरं चयं चइत्ता कहि गच्छंति ? कहि उववज्जंति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति[4] °मुच्चंति परिणिव्वायंति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति, अत्थेगतिया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ॥

२४२. जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अंताहारे पंताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी[5] °अंतजीवी पंतजीवी लूहजीवी° तुच्छजीवी उवसंतजीवी पसंतजीवी विवित्तजीवी ?
हंता गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ॥

२४३. जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

१. हव्वि (ता) सर्वत्र; हव्वि (म) ।
२. °करा (अ, स); सर्वत्र; अयसकारगा (वृ) ।
३. ठितिक्खएणं भवक्खएणं (ता) ।
४. सं० पा०—बुज्झंति जाव अंतं ।
५. सं० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरस-सागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए[1] •अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भा-वणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे° वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे[2] •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए° उववन्ने ।।

२४४. जमाली णं भंते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[3] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? °कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पंच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइं संसारं अणु-परियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति[4] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ।।

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ।।

चोत्तीसइमो उद्देसो

एगस्स वधे अणेगवध-पदं

२४६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[6] एवं वयासी—पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ[7] ? नोपुरिसे हणइ ?
गोयमा ! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ।।

२४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

१. सं० पा०—अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे ।
२. सं० पा०—कप्पे जाव उववन्ने ।
३. सं० पा०—आउक्खएणं जाव कहिं ।
४. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
५. भ० १।५१ ।
६. भ० १।४-१० ।
७. छणइ (वृपा) ।

गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिसं हणमाणे 'अणेगे जीवे'[1] हणइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४८. पुरिसे णं भंते ! आसं हणमाणे किं आसं हणइ ? नोआसे[2] हणइ ?
गोयमा ! आसं पि हणइ, नोआसे वि हणइ ॥
से केणट्ठेणं ?
अट्ठो तहेव । एवं हत्थि, सीहं, वग्घं जाव[3] चिल्ललगं[4] ॥

इसिस्स वधे अणंतवध-पदं

२४९. पुरिसे णं भंते ? इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ ? नोइसिं हणइ ?
गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ ॥

२५०. से केणट्ठेणं भंते ? एवं वुच्चइ[5]—°इसिं पि हणइ,° नोइसिं पि हणइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे 'अणंते जीवे'[6] हणइ । से तेणट्ठेणं [7]°गोयमा ! एवं वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसिं पि हणइ° ॥

वेर-बंध-पदं

२५१. पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ?'[8]
गोयमा ! नियमं—ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

१. अणेगा जीवा (अ, क, ता, म, स) ।
२. नोआसं (ब); नोआसे वि (म) ।
३. प० १ ।
४. चित्तलगं (ब); अतोग्रे 'क, ता, ब' एषु—'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति; 'अ, ब, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललगं इति पाठानन्तरं एष पाठोस्ति—
'पुरिसे णं भंते ! अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे किं अण्णयरं तसं पाणं हणइ, नोअण्णयरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अण्णयरं पि तसं पाणं हणइ, नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अण्णयरं पि तसं पाणं, हणइ नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं एगं अण्णयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अण्णयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! तं चेव । एए सव्वे वि एक्कगमा' । वृत्तावपि नासौ व्याख्यातः, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।
५. सं० पा०—वुच्चइ जाव नोइसिं ।
६. अणंता जीवा (अ, क, ता, ब, म) ।
७. सं० पा०—निक्खेवो ।
८. × (ता) ।

पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे। एवं आसं जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण[1] य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे ॥

२५२. पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे ? नोइसिवेरेणं पुट्ठे ?
गोयमा ! नियमं[2] इसिवेरेण य[3] नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥

पुढविक्काइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्कायं चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइयं चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥

२५४. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! पुढविक्काइए णं आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा। एवं तेउक्काइयं, वाउक्काइयं, एवं वणस्सइकाइयं ॥

२५५. आउक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमइ वा [4]°जाव नीससइ वा ?
हंता गोयमा ! आउक्काइए णं पुढविक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा° ॥

२५६. आउक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं चेव आणमइ वा ?
एवं चेव। एवं तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयं ॥

२५७. तेउक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं आणमइ वा ? एवं जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८. पुढविक्काइए णं भंते ! पुढविक्काइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२५९. पुढविक्काइए णं भंते ! आउक्काइयं आणममाणे वा ?
एवं चेव। एवं जाव वणस्सइकाइयं। एवं आउक्काइएण वि सव्वे[5] भाणियव्वा। एवं तेउक्काइएण वि, एवं वाउक्काइएण वि जाव—

१. चित्तला° (ब); चिल्लला° (म)।
२. नियमं ताव (क); नितमं (ब)।
३. य जाव (ता); एतत् सम्यक्नास्ति। ऋषिपक्षे तु ऋषिवैरेण नो नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक एव (वृ)।
४. सं० पा०—एवं चेव
५. सव्वे वि (ता, स)।

२६०. वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२६१. वाउक्काइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं 'पचालेमाणे वा'[1] पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए। एवं कंदं, एवं जाव[2]—

२६२. बीयं पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ॥

२६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

१. × (क)।
२. भ० ८।२१६।
३. भ० १।५१

दसमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. दिस २. संवुडअणगारे[1], ३. आइड्ढी[2] ४. सामहत्थि ५. देवि ६. सभा।
७-३४ उत्तरअंतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पदं

१. रायगिहे[3] जाव[4] एवं वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा ति'[5] पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एवं चेव। एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो[6] वि ॥

३. कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो[7] ॥

४. एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

१. संवुडमणगारे (अ, क, ब, म)।
२. आयड्ढी (अ, स)।
३. रायगिघे (ता)।
४. भ० १।४-१०।
५. पाईणत्ति (क, स); पादीणा ति (ता)।
६. अहा (अ, क, ब, म); अधो (ता)।
७. अहा (अ, क, ब, म); अधा (ता)।

इंदा अग्गेयी जम्मा[1], य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इंदा णं भंते ! दिसा किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

गोयमा ! जीवा वि, [2]•जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि°, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया[3] •तेइंदिया चउरिंदिया° पंचिंदिया, अणिंदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा[4] एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा ७. अद्धासमए ॥

६. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा—पुच्छा ।

गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स य देसे । एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो । एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा । अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा, अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा । एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा[5] य, अरूविअजीवा य ।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा जाव परमाणुपोग्गला ।

१. जमा (ख) ।
२. सं० पा०—तं चेव जाव अजीवपदेसा ।
३. सं० पा०—बेइंदिया जाव पंचिंदिया ।
४. नियमं (ता); × (ब) ।
५. रूविं अजीवा (ता, ब) ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए[1] ।।

७. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा ?
जहा इंदा 'तहेव निरवसेसं'[2] । नेरती[3] य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इंदा । वायव्वा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इंदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदाए । एवं तमाए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति ।।

सरीर-पदं

८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए[4] °वेउव्विए आहारए तेयए° कम्मए ।।

९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] अप्पाबहुगं ति ।।

१०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

बीओ उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

१. अद्धासमए । विदिसासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सव्वत्थ (अ, ब, म, स) ।
२. तहा निरवसेसा (क) ।
३. निरुती (क) ।
४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।
५. प० २१ ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।

गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा[1] •पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स° तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ? गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा [2]•वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ° । से णं उस्सुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव[3] तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ?—पुच्छा । गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ?

[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ।° से णं अहासुत्तमेव रीयति । से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा । एवं जोणीपदं निरवसेसं भाणियव्वं[5] ॥

वेयणा-पदं

१६. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ?

१. सं० पा०—ठिच्चा जाव तस्स ।
२. सं० पा०—एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से ।
३. भ० १०।११ ।
४. सं० पा०—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से ।
५. प० ६ ।

गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीग्रोसिणा। एवं वेयणापदं भाणियव्वं जाव[1]—

१७. नेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति ? सुहं वेयणं वेदेंति ? ग्रदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ?
गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेयणं वेदेंति, ग्रदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति ।।

भिक्खुपडिमा-पदं

१८. मासियण्णं[2] भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स ग्रणगारस्स[3], निच्चं 'वोसट्ठकाए, चियत्त-देहे'[4] जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जंति, तं जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ ग्रहियासेइ। एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहिं जाव[5] ग्राराहिया भवइ ।।

ग्रकिच्चट्ठाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्खू य ग्रण्णयरं ग्रकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता[6] से णं तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स ग्राराहणा, से णं तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ।।

२०. भिक्खू य ग्रण्णयरं ग्रकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—पच्छा वि णं ग्रहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स ग्रालोएस्सामि[7], •पडिक्कमिस्सामि, निंदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्टिस्सामि, विसोहिस्सामि, ग्रकरणयाए ग्रब्भुट्ठिस्सामि, ग्रहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं° पडिवज्जिस्सामि[8], से णं तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय[9] •पडिक्कंते कालं करेइ° नत्थि तस्स ग्राराहणा, से णं तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ।।

२१. भिक्खू य ग्रण्णयरं ग्रकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे कालं किच्चा ग्रण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, किमंग ! पुण ग्रहं ग्रणपन्नियदेवत्तणंपि[10] नो लभिस्सामि त्ति

१. प० ३५ ।
२. मासिय णं भंते (क, ता, म) ।
३. अयमाचारो भवतीति शेषः ।
४. वोसट्ठे काए चियत्ते देहे (वृ) ।
५. दसा० ७ ।
६. प्रतिषेविता भवतीति गम्यम् । वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने पडिसेविज्ज त्ति दृश्यते (वृ) ।
७. सं० पा०—आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि ।
८. पडिक्कमामि (ब) ।
९. सं० पा०—अणालोइय जाव नत्थि ।
१०. ग्रणवण्णि° (ब) ।

कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति'।।

तइओ उद्देसो

आइड्ढीए परिड्ढीए वीइवयण-पदं

२३. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—आइड्ढीए[3] णं भंते ! देवे जाव चत्तारि, पंच देवावासंतराइं वीतिक्कंते[4], तेण परं परिड्ढीए ?
हंता गोयमा ! आइड्ढीए णं [5]°देवे जाव चत्तारि, पंच देवावासंतराइं वीतिक्कंते, तेण परं परिड्ढीए ।° एवं असुरकुमारे वि, नवरं—असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तं चेव । एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं वाणमंतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण परं परिड्ढीए ।।

देवाणं विणयविहि-पदं

२४. अप्पिड्ढीए णं भंते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२५. समिड्ढीए णं भंते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ।।

२६. [6]से भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू ।।

२७. से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।।

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. आतड्ढिए (अ, स); आतिड्ढीए (क, ब, म), आयड्ढीए (ता)
४. वीईवयइ (वृपा) ।
५. सं० पा०—तं चेव
६. से णं (ब, म, स) ।

२८. महिड्ढीए णं भंते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

२६. से भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू ।।

३०. से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।।

३१. अप्पिड्ढिए[1] णं भंते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया । एवं जाव थणियकुमारेणं । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएणं एवं चेव ।।

३२. अप्पिड्ढिए णं भंते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३३. समिड्ढिए[2] णं भंते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
एवं तहेव देवेण य देवीए य दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ।।

३४. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
एवं एसो वि ततिओ[3] दंडओ भाणियव्वो जाव—

३५. महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

३६. अप्पिड्ढिया णं भंते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव । महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव । एवं एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—

३७. महिड्ढिया[4] णं भंते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्भंमज्भेणं वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ।।

३८. सा भंते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

---

१. अप्पड्ढीए (क्व०) ।
२. समड्ढीए (अ) ।
३. तिओ (अ, स,) ।
४. महड्ढिया (क्व) ।

गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू। तहेव जाव पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा। एए चत्तारि दंडगा॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३९. आसस्स णं भंते ! धावमाणस्स किं 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगस्स[1] य अंतरा एत्थ णं 'कब्बडए नामं'[2] वाए संमुच्छइ[3], जेणं आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो[4]—पण्णवणी णं एस भासा ? न एसा भासा मोसा ?
हंता गोयमा ! आसइस्सामो, [5]°सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—पण्णवणी णं एसा भासा°, न एसा भासा मोसा॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6]॥

---

१. जगयस्स (अ, क, स,); जातस्स (ता)।
२. कक्कडनामं (ता); कब्बडए नामं (स)।
३. समुत्थइ (अ, ता, ब, म, स)।
४. अतोग्रे गाथाद्वयं लभ्यते—
आमंतणी आणवणी,
जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य॥
अणभिग्गहिया भासा,
भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा।
संसयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव॥
(अ, क, ता, ब, म, स); अस्मिन् संग्रहगाथाद्वये 'असच्चामोसा' भाषाया द्वादशप्रकारा निरूपिताः सन्ति। प्रज्ञापनायाः भाषापदे एवमेवास्ति। अत्र प्रज्ञापनीभाषाप्रकरणे प्रासङ्गिकरूपेण अमू संग्रहगाथे लिखिते आस्ताम्। केनचित् प्रतिलिपिकर्त्रा मूले प्रक्षिप्ते। उत्तरकाले तथैव अनुगते, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्याते।
५. सं० पा०—तं चेव जाव न।
६. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णश्रो[1]। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवश्रो महावीरस्स जेट्ठे श्रंतेवासी इंदभूई नामं श्रणगारे जाव[3] उड्ढंजाणू[4] °श्रहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवश्रो महावीरस्स श्रंतेवासी सामहत्थी नामं श्रणगारे पगइभद्दए[5] °पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दवसंपन्ने श्रल्लीणे विणीए समणस्स भगवश्रो महावीरस्स श्रदूरसामंते उड्ढं-जाणू श्रहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा श्रप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

४५. तए णं से सामहत्थी श्रणगारे जायसड्ढे जाव[6] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव[7] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

४६. श्रत्थि णं भंते! चमरस्स श्रसुरिंदस्स श्रसुरकुमारण्णो तावत्तीसगा[8] देवा-ताव-त्तीसगा देवा ?

हंता श्रत्थि ॥

४७. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चमरस्स श्रसुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ताव—त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

एवं खलु सामहत्थी! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था—वण्णश्रो[9]। तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं[10] सहाया[11] गाहावई समणोवासया परिवसंति—श्रड्ढा जाव[12] बहुजणस्स श्रपरि-भूता श्रभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा[13] जाव[14] श्रहापरिग्गहिएहिं तवो-कम्मेहिं श्रप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० १।७,८।
३. भ० १।६।
४. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ।
५. सं० पा०—जहा रोहे जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ।
६. भ० १।१०।
७. भ० १।१०।
८. तायत्तीसगा (क्व०)।
९. ओ० सू० १।
१०. तावत्तीसं (क, ता, ब, म)।
११. साहाया (अ)।
१२. भ० २।६४।
१३. उवलद्धपुण्ण वण्णओ (अ, क, ता, ब, म, स)।
१४. भ० २।६४।

४८. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा संविग्गविहारी भवित्ता तम्रो पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ओसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाच्छंदा अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता, अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

४९. जप्पभिइं च णं भंते ! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइं च णं भंते ! एवं वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

५०. अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हंता अत्थि ॥

५१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव जप्पभिइं च णं भंते ! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइं च णं भंते ! एवं वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्ती-सगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—जं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ[1], °भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयंति, अण्णे उववज्जंति ॥

५२. अत्थि णं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हंता अत्थि ॥

१. सं० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो[1] ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णग्रो[2]। तत्थ णं बेभेले सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति – जहा चमरस्स जाव[3] तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ।।

५४. जप्पभिइं च णं भंते ! ते बेभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेसं तं चेव जाव[4] निच्चे, ग्रव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए ग्रण्णे चयंति, ग्रण्णे उववज्जंति ।।

५५. ग्रत्थि णं भंते ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हंता ग्रत्थि ।।

५६. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—जं न कयाइ नासी जाव ग्रण्णे चयंति, ग्रण्णे उवव-ज्जंति । एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव[5] महाघोसस्स ।।

५७. ग्रत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो [6]•तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?°
हंता ग्रत्थि ।।

५८. से केणट्ठेणं जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालए[7] नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णग्रो । तत्थ णं पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव[8] विहरंति ।।

५९. तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउ-णित्ता, मासियाए संलेहणाए ग्रत्ताणं झूसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं ग्रणसणाए छेदेत्ता, ग्रालोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा[9] सक्कस्स देविंदस्स

१. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. ओ० सू० १, एतद्वर्णनं 'नंदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेवग्राह्यम् ।
३. भ० १०।४७-४८।
४. भ० १०।४९-५१।
५. भ० ३।२७४।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. वालाए (अ); पालाए (ब); पालासए (स) ।
८. भ० १०।४७।
९. सं० पा०—किच्चा जाव उववन्ना ।

देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ता[3]° उववन्ना। जप्पभिइं च णं भंते! ते पालगा[1] तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा, सेसं जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६०. अत्थि णं भंते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
एवं जहा सक्कस्स, नवरं—चंपाए नयरीए जाव[2] उववण्णा जप्पभिइं च णं भंते! ते चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया, सेसं तं चेव जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६१. अत्थि णं भंते! सणंकुमारस्स देविंदस्स [3]°देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?°
हंता अत्थि ॥

६२. से केणट्ठेणं?
जहा धरणस्स तहेव, एवं जाव पाणयस्स, एवं अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जंति ॥

६३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

देवाणं तुडिएण सद्धिं दिव्वभोग-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे। गुणसिलए चेइए जाव[5] परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव[6] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा जायसंसया जहा गोयमसामी जाव[7] पज्जुवासमाणा एवं वयासी—

६५. चमरस्स णं भंते असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?

१. वालगा (अ, म); पालागा (क, ब); पालासगा (स)।
२. भ० १०।५७-५६।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-८।
६. भ० ८।२७२।
७. भ० १।१०।

अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं[1] परिवारो पण्णत्तो ॥

६६. पभू णं भंते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं अट्ठट्ठ देवीसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए ॥

६७. पभू णं भंते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए जाव[2] विहरित्तए ?

अज्जो! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वंदणिज्जाओ नमंसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति[3]। से तेणट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[4] •चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सिहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहरित्तए ॥

६९. पभू णं अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए[5] •तावत्तीसगेहिं, चउहिं लोगपालेहिं, पंचहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं°, अण्णेहिं[6] य बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहि य, देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय[7]•नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं° भुंजमाणे विहरित्तए ?

केवलं परियारिड्ढीए, नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

१. °सहस्सा (ता, स)।
२. भ० १०।६७।
३. भवंति तेसिं पणिहाए णो पभू (अ, स)।
४. सं० पा०—असुरकुमारराय जाव विहरित्तए।
५. सं० पा०—तायत्तीसाए जाव अण्णेहि
६. अण्णेसि (अ, स)।
७. सं० पा०—महयाहय जाव भुंजमाणे।

७०. चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुंधरा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं[1] देवीसहस्सं परिवारे[2] पण्णत्ते ॥

७१. पभू णं ताओ 'एगामेगा देवी'[3] अण्णं एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्तं तुडिए ॥

७२. पभू णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[4] सूरियाभस्स । सेसं तं चेव जाव[5] नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७३. चमरस्स णं भंते[6] ! °असुरिंदस्स असुरकुमार° रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ?
एवं चेव[7], नवरं—जमाए रायहाणीए, सेसं जहा सोमस्स । एवं वरुणस्स वि, नवरं—वरुणाए रायहाणीए । एवं वेसमणस्स वि, नवरं—वेसमणाए राय-हाणीए । सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं[8] ॥

७४. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुंभा[9], निसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरस्स, नवरं—बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । सेसं तं चेव जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं ॥

७५. बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया[11], असणी । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वरुणस्स[12] ॥

१. एगमेगंसि (स) ।
२. परियारो (ता) ।
३. एगमेगाओ देवीओ (अ) एगमेगाए देवीए (स) ।
४. राय० सू० ७।
५. भ० १०।६७-६९।
६. सं० पा०—भंते जाव रण्णो ।
७. भ० १०।७०-७२ ।
८. °वत्तियं (व) ।
९. सुभा (अ, ब, स) ।
१०. भ० ३।१२।
११. विजया (स) ।
१२. वेसमणस्स (अ, स) ।

७६. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अला[1], सक्का[2], सतेरा[3], सोदामिणी, इंदा, घणविज्जुया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्सं[4] परिवारो पण्णत्तो ॥

७७. पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेणं छत्तीसाइं देविसहस्साइं । सेत्तं तुडिए ॥

७८. पभू णं भंते ! धरणे ? सेसं तं चेव[5], नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणंसि सीहासणंसि, सओ परियारो[6] । सेसं तं चेव ॥

७९. धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स[7] महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेसं जहा[8] चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि ॥

८०. भूयाणंदस्स भंते !—पुच्छा ।
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूया रूयंसा, सुरूया, रूयगावती, रूयकंता, रूयप्पभा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए ऐगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ॥

८१. भूयाणंदस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं । एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं ।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं । उत्तरिल्लाणं इंदाणं[9] जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं—इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । लोगपालाणं सव्वेसिं रायहा-

१. आला (ब); इला (क्व०) ।
२. मक्का (ता, ब, म); सुक्का (स), कमा (ना० २।३।६) ।
३. सतारा (अ, स) ।
४. ०सहस्सा (अ, ता, ब, म, स) ।
५. भ० १०।६७-६६ ।
६. भ० ३।१४।
७. काललोगपालस्स (अ); लोगपालस्स काललोगपालस्स (स) ।
८. भ० १०।७०-७२।
९. × (ता, ब) ।
१०. भ० ३।१४, १५ ।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[1] चमरस्स लोग-पालाणं ॥

८२. कालस्स णं भंते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, सेसं जहा[2] चमरलोगपालाणं। परिवारो तहेव, नवरं—कालाए रायहाणीए, कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं महाकालस्स वि ॥

८३. सुरूवस्स णं भंते ! भूतिंदस्स भूतरण्णो—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एवं पडिरूवस्स वि ॥

८४. पुण्णभद्दस्स णं भंते ! जक्खिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एवं माणिभद्दस्स वि ॥

८५. भीमस्स णं भंते ! रक्खसिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, वसुमती[3], कणगा, रयणप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा कालस्स। एवं महाभीमस्स वि ॥

८६. किन्नरस्स णं—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—वडेंसा, केतुमती, रतिसेणा, रइप्पिया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं किंपुरिसस्स वि ॥

८७. सप्पुरिसस्स णं—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं महापुरिसस्स वि ॥

८८. अतिकायस्स णं—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा[4], भुयगवती,

१. भ० १०।७०-७३।
२. भ० १०।७१, ७२।
३. पउमवती (अ, स); पउमावती (क, म)।
४. भुयंगा (स)।

महाकच्छा, फुडा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं महाकायस्स वि॥

८९. गीयरइस्स णं—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं तं चेव। एवं गीयजसस्स वि। सव्वेसिं एएसिं जहा कालस्स, नवरं—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेसं तं चेव॥

९०. चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो - पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभंकरा। एवं जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभंकरा। सेसं तं चेव जाव[4] नो चेव णं मेहुणवत्तियं॥

९१. इंगालस्स णं भंते! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं[5] जहा चंदस्स, नवरं—इंगालवडेंसए विमाणे, इंगालगंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं वियालगस्स वि। एवं अट्ठासीतिए वि महग्गहाणं[6] भाणियव्वं जाव[7] भावकेउस्स, नवरं—वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेसं तं चेव॥

९२. सक्कस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अंजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी। तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो॥

९३. पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए?
एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देवीसयसहस्सं। सेत्तं तुडिए॥

९४. पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं

१. ओसिणाभा (ता, स)।
२. जी० ३।
३. आयच्चा (अ, स).
४. भ० १०।६७-६९।
५. सेसं तं चेव (अ, स)।
६. महागहाणं (अ, क, ब, स)।
७. ठा० २।३२५।
८. सेया (अ, स); सुयी (क, ता, म)।

भुंजमाणे विहरित्तए। सेसं जहा चमरस्स, नवरं—परियारो जहा[1] मोउद्देसए॥

९५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा[2] चमरलोगपालाणं, नवरं—सयंपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव। एवं जाव वेसमणस्स, नवरं—विमाणाइं जहा[3] ततियसए॥

९६. ईसाणस्स णं भंते!—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा[4] सक्कस्स॥

९७. ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पुहवी, राई, रयणी, विज्जू। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं, एवं जाव वरुणस्स, नवरं—विमाणा जहा[5] चउत्थसए, सेसं तं चेव जाव[6] नो चेव णं मेहुणवत्तियं॥

९८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[7]॥

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९. कहि णं भंते! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता?
गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

---

१. भ० ३।१६।
२. भ० १०।७०-७२।
३. भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६।
४. भ० १०।९२-९४।
५. भ० ४।२-४।
६. भ० १०।९७-९९।
७. भ० १।५१।

वीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[1] पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए[2], °सत्तवण्णवडेंसए, चंपगवडेंसए, चूयवडेंसए° मज्झे, सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,

एवं जह सूरियाभे, तहेव माणं[3] तहेव उववाओ।
सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स।
अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव[4] आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइं ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव[5] केमहासोक्खे[6]।
गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससय-सहस्साणं जाव[7] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविंदे देवराया ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरदीव-पदं

१०२. कहि णं भंते ! उत्तरिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[9] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[10] सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा ॥

१०३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[11] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१. राय० सू० १२४, १२५।
२. सं० पा०—असोगवडेंसए जाव मज्झे।
३. पमाणं (अ, क, ता, म, स)।
४. राय० सू० १२६-६६६।
५. भ० ३।४।
६. केमहेसक्खे (ब, स)।
७. भ० ३।१६।
८. भ० १।५१।
९. एगुरुय° (अ, म, स)।
१०. जी० ३।
११. भ० १।५१।

एक्कारसं सतं

पढमो उद्देसो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४. कुंभी ५. नाली य ६. पउम ७. कण्णी य[1] ।
८. नलिण ९. सिव १०. लोग ११,१२. कालालभिय दस दो य एक्कारे[2] ॥१॥

उप्पलजीवाणं उववायादि-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे । तेण परं जे अण्णे जीवा उववज्जंति ते णं नो एगजीवा अणेगजीवा ॥

२. ते णं भंते ! जीवा कतोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति'[4] ? देवेहिंतो उववज्जंति ?

१. या (ब) ।
२. अतोग्रे प्रमोद्देशकद्वारसंग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—
उववाओ परिमाणं,
अवहारुच्चत्त बंध वेदे य ।
उदए उदीरणाए,
लेसा दिट्ठी य नाणे य ॥
जोगुवओगे वण्ण,
रसमाई ऊसासगे य आहारे ।
विरई किरिया बंधे,
सन्न कसायित्थि बंधे य ॥
सन्निदिय अणुबंधे,
संवेहाहार ठिइ समुग्घाए ।
चयणं मूलादीसु य,
उववाओ सव्वजीवाणं ॥ (वृपा) ॥
३. भ० १।४-१० ।
४. तिरि मणु (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति देवेहिंतो वि उववज्जंति । एवं उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव[1] ईसाणेति ।।

३. ते णं भंते ! जीवा एगसमए णं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा[2] असंखेज्जा वा उववज्जंति ।।

४. ते णं भंते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेणं अवहीरंति ?
गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा'[3] असंखेज्जाहिं ओसप्पिणि[4]-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया ।।

५. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।।

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ?
गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा, बंधगा वा ।।

७. एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं—आउयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! १. बंधए वा २. अबंधए वा ३. बंधगा वा ४. अबंधगा वा ५. अहवा बंधए य अबंधए य ६. अहवा बंधए य अबंधगा य ७. अहवा बंधगा य अबंधए य ८. अहवा बंधगा य अबंधगा य—एते अट्ठ भंगा ।।

८. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?
गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । एवं जाव अंतराइयस्स ।।

९. ते णं भंते ! जीवा किं सायावेदगा ? असायावेदगा ?
गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भंगा ।।

१०. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई ? अणुदई ?
गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एवं जाव अंतराइयस्स ।।

११. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा ? अणुदीरगा ?
गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा । एवं जाव अंतराइयस्स, नवरं—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भंगा ।।

१२. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

१. प० ६ ।
२. वा उवव (ता) ।
३. अवहीरेमाणा २ (स) ।
४. ०प्पिणीहिं (ब, म) ।

गोयमा ! कण्हलेसे वा[1] •नीललेसे वा काउलेसे वा° तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-चउक्कसंजोगेणं[2] असीती भंगा[3] भवंति ।।

१३. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा ।।

१४. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ।।

१५. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ।।

१६. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भंगा ।।

१७. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवण्णा, कतिगंधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ।।

१८. ते णं भंते ! जीवा किं 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?'[4]
गोयमा ! १. उस्सासए वा २. निस्सासए वा ३. नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५. निस्सासगा वा ६. नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भंगा। एते[5] छव्वीसं भंगा भवंति ।।

१९. ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ।।

२०. ते णं भंते ! जीवा किं विरया ? अविरया ? विरयाविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ।।

२१. ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ।।

१. सं० पा०—वा जाव तेउलेसे ।
२. चउक्कसंजोगेण य (अ, क, ता, म, स); चतुक्कासंजोगेण य (ब) ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. उस्सासा निस्सासा नोउस्सासानिस्सासा (क, ता, म) ।
५. एवं (ता) ।

२२. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ? अट्ठविहबंधगा ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा—अट्ठ भंगा ॥

२३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भंगा[1] ॥

२४. ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीती भंगा[2] ॥

२५. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा, नपुंसगवेदगा वा ॥

२६. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थिवेदबंधगा ? पुरिसवेदबंधगा ? नपुंसगवेदबंधगा ?
गोयमा ! इत्थिवेदबंधए वा, पुरिसवेदबंधए वा, नपुंसगवेदबंधए वा—छव्वीसं भंगा[3] ॥

२७. ते णं भंते ! जीवा किं सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।

२८. ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया ? अणिंदिया ?
गोयमा ! नो अणिंदिया, सइंदिए वा, सइंदिया वा ॥

२९. से णं भंते ! उप्पलजीवेत्ति[4] कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

३०. से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥

३१. से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा !
एवं चेव । एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ॥

३२. से णं भंते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे[5], से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं 'कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?

१, २. द्रष्टव्यम्—भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
३. भ० ११।१८।
४. ०जीवे (ब) ।
५. से वण० (अ, क, ब, म, स) ।

गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकालं[1], एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा[2] ॥

३३. से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि ॥

३४. से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति —पुच्छा।
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहत्तं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?
गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं, कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइं, भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव[3] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, नवरं—नियमा छद्दिसिं, सेसं तं चेव ॥

३६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ॥

३७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥

३८. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति ? असमोहता मरंति ?
गोयमा ! समोहता वि मरंति, असमोहता वि मरंति ॥

३९. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं

१. × (क, ता, म)। वि (ब)।
२. एवं चेव नवरमणंतं कालं जाव कालाएसेण ३. प० २८।१।

नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं[1] ॥

४०. अह भंते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए[2] उववन्नपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाणं उववायादि पदं

४२. सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[4] अणंतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

१. प० ६ ।
२. °विभंगत्ताए (अ) ।
३. भ० १।५१।
४. भ० ११।१-४०।
५. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

४४. पलासे णं भंते ? एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहत्ता[1]। देवेहिंतो[2] न उववज्जंति ॥

४५. लेसासु—ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीसं भंगा[3], सेसं तं चेव ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

४७. कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवरं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

१. °पुहुत्तं (अ, ब)।
२. देवा एएसु (अ, ब); देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति। अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठ: स्वीकृत:।
३. भ० ११।१८।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।५१।

पंचमो उद्देसो

४९. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा ॥

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

छट्ठो उद्देसो

५१. पउमे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ॥

५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

५३. कण्णिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं ॥

५४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

५५. नलिणे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव[1] अणंतखुत्तो ।।

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

नवमो उद्देसो

सिवरायरिसि-पदं

५७. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे[3] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[4] । तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय[5]-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे[6] सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए[7] ●दरिसणिज्जे अभिरूवे ० पडिरूवे ।।

५८. तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[8] । तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[9] । तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते जाव[10] रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ।।

१. भ० ११।१-४०।
२. भ० १।५१।
३. हत्थिणागपुरे (अ, म); हत्थिणपुरे (क); हत्थिणाउरे (ता) ।
४. ओ० सू० १।
५. सव्वोदुय (क, म) ।
६. °सन्निगासे (अ, क, ब, स) ।
७. सं० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे ।
८. ओ० सू० १४।
९. ओ० सू० १५।
१०. राय० सू० ६७३,६७४।

५६. तए णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] ●चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं[2] ●सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणे फल वित्तिविसेसे, जेणाहं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि, धणेणं वड्ढामि, धण्णेणं वड्ढामि॰, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोसेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतेउरेणं वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण[3]-●मणि-मोत्तिय-संखसिलप्पवाल-रत्तरयण॰-संतसारसावएज्जेणं[4] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं[5] ●सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं॰ 'एगंतसो खयं'[6] उवेहमाणे[7] विहरामि ? तं जावताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि जाव[8] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[10] तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूले वाणपत्था तावसा भवंति, [तं जहा—होत्तिया पोत्तिया[11] कोत्तिया जहा ओववाइए जाव[12] आयावणाहिं पंचग्गि-

१. सं॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
२. सं॰ पा॰—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं।
३. सं॰ पा॰—रयण जाव संत॰।
४. ॰सावदेज्जेणं (क, ब, म, स)।
५. सं॰ पा—पोराणाणं जाव एगंतसोक्खयं।
६. एगंतसोक्खयं (अ)।
७. उव्वेह॰ (स)।
८. तं चेव जाव (अ, क, ब, म, स)।
९. भ॰ २।६६।
१०. कडेच्छुयं (क, ता, ब, म)।
११. सोत्तिया (क, ब, वृपा)।
१२. केषुचिदादर्शेषु विस्तृतः पाठोस्ति। तदनन्तरं 'जहा ओववाइए' इति संक्षिप्तपाठस्य सूचनमप्यस्ति। एतद् द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणेन जातम्। केवलं 'ब' संकेतितादर्शे एकैव विस्तृतवाचना लभ्यते। सा च इत्थमस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंवउट्ठा [हुंचउट्ठा (अ) हुंपतुट्ठा (क, ब); उट्टिया (ता)] दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला 'उद्धकंडुयगा अहोकंडुयगा' ['×' (क, ब, म)] दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अंबुवासिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो [वेलवासिणो (म)] अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-पंडु-पत्तपुप्फफलाहारा उद्दंडा रुक्खमूलिया मंडलिया विलवासिणो [वलिवासिणो (क); पलवासिणो (ब); वणवासिणो (म)] दिसापोक्खिया, आतावणेहिं पं[illegible]

तावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति]' तत्थ णं जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्भिय-पगिज्भिय[2] •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स° विहरित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सुबहुं लोहीलोह[4]•कडाह-कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[5] सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

६०. तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति॥

६१. तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग-दंडनायग[6]-•राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-° संधिपाल-सद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[7] अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव[8] दुंदुहि-णिग्घोसणाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचइ, अभिसिं-

इंगालसोल्लियं कंदु (डु)सोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति।

'ओववाइय' सूत्रस्य (९४) पूर्णपाठः एवमस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुंबउट्ठा दंतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा संपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा संखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दंडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अंबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कंदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कंद-मूल-तय-पत्त-पुप्फ-फलाहारा जलाभिसेय-कढिण-गाया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इंगालसोल्लियं कंदुसोल्लियं कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा।'

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. सं० पा०—पगिज्भिय जाव विहरित्तए।
३. भ० २।६६।
४. सं० पा०—लोह जाव घडावेत्ता।
५. ओ० सू० ५५।
६. सं० पा०—दंडनायग जाव संधिपाल।
७. भ० ९।१८२।
८. भ० ९।१८२।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव[1] कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेइ, करेत्ता करयल[2]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि° कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं [3]•मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं अणवरयं अभिणंदंतो य अभित्थुणंतो य एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि। इंदो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चंदो इव ताराणं, भरहो इव मणुयाणं बहूइं वासाइं बहूइं वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं बहूइं वाससयसहस्साइं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो° परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसिं च बहूणं गामागर-नगर-[4]•खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

६२. तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

६३. तए णं से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-[6]•सयण-संबंधि°-परिजणं 'रायाणो य खत्तिए य'[7] आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए [8]•कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकिय° सरीरे भोयणवेलाए[9] भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि[10]-परिजणेणं राएहि य खत्तिएहि सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं [11]•आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ।

१. भ० ९।१९०।
२. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. सं० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव परमाउं।
४. सं० पा०—नगर जाव विहराहि।
५. ओ० सू० १४।
६. सं० पा०—नियग जाव परिजणं।
७. रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स); रायाणो रायखत्तिए य (ता, ब)।
८. सं० पा०—ण्हाए जाव सरीरे।
९. × (ता, ब)।
१०. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
११. सं० पा०—एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ

जिमियभुत्तुरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तं मित्त-नाइ-[1] •नियग-सयण-संबंधि-° परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुयं[2] •तंबियं तावस° भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव[3] तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य णं समाणे अय-मेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं [4]•छट्ठेणं अणि-क्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'— अयमेयारूवं° अभिग्गहं[5] अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उव-संपज्जित्ताणं विहरइ ।।

६४. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता किढिण[6]-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेइ, पुर-त्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं[7] रायरिसिं-अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरइ[8], पसरित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव हरियाणि य ताइं गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-संकाइयगं भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण संमज्जणं करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए[9] जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'गंगं महानदिं'[10] ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जल-मज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता जलाभिसेयं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए[11] गंगाओ महा-

१. सं० पा—नाइ जाव परिजणं ।
२. सं० पा०—कडच्छुयं जाव भंडगं ।
३. भ० ११।५६ ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव अभिग्गहं ।
५. अभिग्गहं अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।
६. कढिण (अ) ।
७. सिवे (ब, स) ।
८. सरइ (ता, म) ।
९. दब्भकलस° (अ); दब्भसगब्भकलसा (सग) हत्थगए (ता, वृपा) ।
१०. गंगामहानदीं (क, ब, म) ।
११. दब्भसगब्भकलसा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं[1] रएति[2], रएत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ, संधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे," [तं जहा—

सकहं वक्कलं ठाणं, सिज्जाभंडं कमंडलुं ।
दंडदारुं तहप्पाणं, अहे ताइं समादहे ॥१॥][3]

महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, हुणित्ता चरुं साहेइ, साहेत्ता बलिवइस्सदेवं[4] करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ॥

६५. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता [5]°वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° दाहिणगं दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[6] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

६८. तए णं से सिवे रायरिसि [7]°तच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिमं दिसं पोक्खेइ°, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[8] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

७०. तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमण[9]°पारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-संकाइयगं गिण्हइ, गिण्हित्ता° उत्तरदिसं पोक्खेइ,

१. वेतिं (अ, क, म, स) ।
२. रयावेइ (ता) ।
३. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।
४. बलिविस्सदेवं (अ, क, ता); बलिं विस्सदेवं (ब); बलिविस्सादेवं (म); बलिविइस्सदेवं (स) ।
५. सं० पा०—एवं जहा पढमपारणगं नवरं ।
६. भ० ११।६४ ।
७. सं० पा०—सेसं तं चेव नवरं ।
८. भ० ११।६४ ।
९. सं० पा०—एवं तं चेव नवरं ।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेसं तं चेव जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं[2] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए॰ आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[3] •पगइउवसंतयाए, पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए॰ विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे[4] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणइ, न पासइ ॥

७२. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था— अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[6] •तंबियं तावस॰भंडगं किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[7]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव[8] एवं परूवेइ- अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए[9] •सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना॰ दीवा य समुद्दा य ॥

७३. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[10]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[11] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे

---

१. भ० ११।६४।
२. सं० पा०—दिसाचक्कवालेणं जाव आयावेमाणस्स।
३. सं० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए।
४. अण्णाणे (अ, क, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
६. कडुच्छुयं (अ, स); कडेच्छुयं (क, ब); सं० पा० –कडच्छुयं जाव भंडगं।
७. सं० पा० –तिग जाव पहेसु।
८. भ० १।४२०।
९. सं० पा०—लोए जाव दीवा।
१०. सं० पा०—तिग जाव पहेसु।
११. भ० १।४२०।

नाणदंसणे[1] •समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं ?

७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा[2] •निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा° पडिगया॥

७५. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव[3] घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! [4]•ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेयं मन्ने एवं ?

७६. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे [5]•जाव[6] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एवं खलु भंते! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य॥

७७. से कहमेयं भंते! एवं ?

गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा! 'एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं नाणे

१. सं० पा०—नाणदंसणे जाव तेण।
२. सं० पा०—परिसा जाव पडिगया।
३. भ० २।१०६-१०६।
४. सं० पा०—तं चेव जाव वोच्छिन्ना।
५. सं० पा०—जहा नियंठुद्देसए जाव तेण।
६. भ० २।११०।

समुप्पन्ने ।' 'तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव' भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-•'तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म '•हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव' सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

७८. 'अत्थि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं—सवण्णाइं पि, अवण्णाइं पि सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि, अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं' •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि'' ॥

७९. 'अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं' •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठंति ? हंता अत्थि'' ॥

---

१. अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्ननिर्दिष्टः पाठोस्ति—'से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया नास्य सङ्गतिर्जायते । 'से बहुजणे' इत्यादिपाठः 'भंडनिक्खेवं करेइ' (७२) अतः उत्तरवर्ती (७३) वर्तते । अस्य पूर्वविन्यासो नैव युक्तः स्यात् । संभाव्यते संक्षेपीकरणे क्वचिद् विपर्यासो जातः । अस्माभिरस्य पाठस्य सङ्गतिः तत्रत्यवातना ६३ सूत्रेण संपादितास्ति ।

२. भ० ११।६३-७२ ।

३. सं० पा०—तं चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४. सं० पा०—तं चेव जाव तेण ।

५. भ० ६।१५६।

६. सं० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

७. × (अ, क, ब, म) ।

८. सं० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए ।

९. × (ता) ।

८०. अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि [1]●अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्ण-बद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि° । एवं जाव—

८१. [2]●अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगं-धाइं पि, अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति?
हंता अत्थि° ॥

८२. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

८३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग[4]-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाण[6]●दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य । तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव[7] भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग[8]-●तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य । तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव[9] तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव[10] असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

८४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए णं

१. सं० पा०—एवं चेव ।
२. सं० पा०—सयंभूरमणसमुद्दे जाव हंता ।
३. अंतियं (अ, क, स) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
५. भ० ११४२० ।
६. सं० पा०—नाण जाव समुद्दा ।
७. भ० ११।७३।
८. सं० पा०—सिंघाडग जाव समुद्दा ।
९. भ० ११।७३।
१०. भ० ११।७७।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स[1] •वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स° कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे[2] खिप्पामेव परिवडिए ।।

८५. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[5] सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं[6] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स[7] •वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स° गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[8] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य[9] •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[10]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° किढिण-संकाइयगं च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[11] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे[12]•सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं° पंजलिकडे[13] पज्जुवासइ ।।

८६. तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए[14] धम्मं परिकहेइ जाव[15] आणाए आराहए भवइ ।।

८७. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[16] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुबहुं लोही-लोहकडाह[17]-•कडच्छुयं तंबियं तावसभंडगं° किढिण-संकाइयगं च

---

१. सं० पा०—कंखियस्स जाव कलुस° ।
२. अण्णाणे (क, स) ।
३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. भ० १।७।
५. ओ० सू० १६।
६. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
७. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव गहणयाए।
८. भ० २।३०।
९. सं० पा०—य जाव भविस्सइ ।
१०. सं० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।
११. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं (स) ।
१२. सं० पा०—नातिदूरे जाव पंजलिकडे ।
१३. पंजलियडे (ता) ।
१४. पू०—ओ० सू० ७१।
१५. ओ० सू० ७१-७७।
१६. भ० २।५२।
१७. सं० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।

एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ? गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

'संघयणं संठाणं, उच्चत्तं आउयं च परिवसणा ।'[2]

एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3]—

अव्वाबाहं सोक्खं, अणुहोंति सासयं सिद्धा ॥

८९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

दसमो उद्देसो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ॥

९१. खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अहेलोयखेत्तलोए[6], तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९२. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए[7] जाव[8] अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

१. भ० ९।१५०,१५१।
२. एतत् संग्रहगाथार्धं औपपातिके नोपलभ्यते । इदं च कुतश्चिद् अन्यस्थानाद् उद्धृतमस्ति ।
३. ओ० सू० १९५।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. अहो ० (अ, क, म, स); अधे ० (ता) ।
७. रयणप्पभ ० (ता) ।
८. भ० २।७५।

९३. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तं जहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ॥

९४. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए[1] •ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतय - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण°-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९५. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते ॥

९६. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते ॥

९७. उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइंगाकारसंठिए पण्णत्ते ॥

लोयसंठाण-पदं

९८. लोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए पण्णत्ते[2], तं जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, [3]•उप्पिं विसाले; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

अलोयसंठाण-पदं

९९. अलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए[4] पण्णत्ते ॥

१. सं॰ पा॰—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय॰ ।
२. लोए पण्णत्ते (अ, क, ब, म, स) ।
३. सं॰ पा॰—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं ।
४. सुसिरगोलकसंठिए (ब) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१००. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?

[1]•गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।

जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अणिंदिया ।

जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।

जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।

जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।

जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २. धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३. नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५. नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६. आगासत्थिकायस्स पदेसा° ७. अद्धासमए ।।

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं चेव । एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि ।।

१०२. लोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे[2], नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा[3] •पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे°, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव ।।

१०३. अलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?

एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव[4] सव्वागासे अणंतभागूणे ।।

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए ।

२. भ० २।१३९; १०।५।

३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अधम्मत्थि• ।

४. भ० २।१४० ।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमं १. एगिंदियदेसा २. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे ३. अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । एवं मज्झिल्लविरहिओ[1] जाव[2] अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा । जे जीवपदेसा ते नियमं १. एगिंदियपदेसा २. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा ३. अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आइल्लविरहिओ[3] जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभंगो ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य । रूवी तहेव । जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, '•नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे°[4], अद्धासमए ।।

१०५. तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?
एवं जहा[5] अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं—अद्धासमयो नत्थि । अरूवी चउव्विहा ।।

१०६. '•लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा° ?[6]
जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे ।।

१०७. अलोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, '•नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा; एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए°[7] अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे ।।

१०८. दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए 'अणंता जीवदव्वा, अणंता अजीवदव्वा'[8], अणंता

---

१. 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' इत्येवं रूपो यो मध्यमभङ्गः तद्विरहितोसौ त्रिकभङ्गः । मध्यमभङ्गकस्य असम्भवात् तथाहि द्वीन्द्रियस्स एकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैवभावात् (वृ) ।
२. जाव अणिंदिएसु जाव (अ, क, ता, ब, म) ।
३. 'अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स य पदेसे' इत्येवंरूपाद्यभङ्गकविरहितः त्रिकभङ्गः, तथाहि नास्त्येव एकत्राकाशप्रदेशे केवल-समुद्घातं विना एकस्य जीवस्य एकप्रदेश. सम्भवोऽसङ्ख्यातानामेव भावात् (वृ) ।
४. सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकायस्स वि ।
५. भ० ११।१०४।
६. सं० पा०—लोगस्स ।
७. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतेहिं ।
८. अणंताइं जीवदव्वाइं अणंताइं अजीवदव्वाइं (क, ब, म) ।

जीवाजीवदव्वा। एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि, 'एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि (एवं लोए वि ?)'[1]। दव्वओ णं अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे[2] •अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते° सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि[3], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, एवं[4] •तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए, एवं लोए एवं° अलोए।

भावओ णं अहेलोयखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा, [5]•अणंता गंधपज्जवा, अणंता रसपज्जवा, अणंता फासपज्जवा, अणंता संठाणपज्जवा, अणंता गरुयलहुयपज्जवा,° अणंता अगरुयलहुयपज्जवा, एवं[6] •तिरियलोयखेत्तलोए, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए, एवं° लोए। भावओ णं अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,[7] •नेवत्थि गंधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि संठाणपज्जवा°, नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[8], एगे अजीवदव्वदेसे[9] •अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स° अणंतभागूणे॥

लोयस्स परिमाण-पदं

१०६. लोए णं भंते! केमहालए पण्णत्ते?

गोयमा! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव[10]-•समुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव[11] एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं

---

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्रलोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते। कारणमत्र न ज्ञायते। अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एवं स्यात्—'एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, एवं लोए वि'।

२. सं० पा० — अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३. सं० पा०—नासि जाव निच्चे।

४. सं० पा० —एवं जाव अलोए।

५. सं० पा०—जहा खंदए जाव अणंता।

६. सं० पा०—एवं जाव लोए।

७. सं० पा०—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि।

८. अगरुयलहुय० (अ, क, ब, म, स, वृ); अलोके अगुरुलघुपर्यवाणां भावात् अत्र 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' एतत्पर्यन्त एव पाठो युज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति। वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एवं व्याख्या कृता—अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणां पुद्गलानां तत्राभावात् (वृ)। यदि वृत्तिकृता शुद्धः पाठो लब्धोभविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकताभविष्यत्।

९. सं० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे।

१०. सं० पा०—सव्वदीव जाव परिक्खेवेणं।

११. ठा० १।२४८।

दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस अंगुलाइं अद्धंगुलगं च किंचिविसेसाहिए° परिक्खेवेणं ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्ढीया जाव[1] महासोक्खा[2] जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ताणं चिट्ठेज्जा । अहे णं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा । पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए । ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] °तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते [5]एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते" एगे देवे अहोभिमुहे पयाते ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाते । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं[6] °ते देवा लोगंतं° संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति ।

तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए ? अगए बहुए ? गोयमा ! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाओ से गए असंखेज्जगुणे । लोए णं गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते ।।

अलोयस्स परिमाण-पदं

११०. अलोए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयाम-विक्खंभेणं, [7]°एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए° परिक्खेवेणं ।

१. भ० ३।४।
२. महेसक्खा (अ, ता, ब, स); महासुक्खा (क)।
३. बहिभिमुहे (क, ता)।
४. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
५. एवं दाहिणाभिमुहे एवं पच्चत्थाभिमुहे एवं उत्तराभिमुहे एवं उड्ढाभिमुहे (अ, क, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—णं जाव संपाउणंति।
७. सं० पा०—जहा खंदए जाव परिक्खेवेणं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्ढिया •'जाव'[2] महासोक्खा जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता° संपरिक्खित्ताणं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू णं गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, [5]•एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते एगे देवे° उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।

तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाते। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। [6]•तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति। तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति।°

तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए ? अगए बहुए ? गोयमा ! नो गए बहुए, अगए बहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणंतभागे। अलोए णं गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपदेसा अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा[7] •अण्णमण्णबद्धपुट्ठा° अण्णमण्ण-

---

१. सं० पा०—तहेव जाव संपरिक्खित्ताणं।
२. भ० ३।४।
३. बाहिराभिमुहीओ (अ, क, ता, ब, म, स); अस्य पूर्ववर्तिलोकसूत्रे 'बहियामुहे' इति पाठोस्ति। अत्र सदृशो एव प्रकरणे केनचिद् लिपिदोषादिकारणेन परिवर्तनं दृश्यते। अस्माभिः पूर्वसूत्रानुसारी पाठः स्वीकृतः।
४. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
५. सं० पा०—एवं जाव उत्तर°।
६. सं० पा०—तं चेव जाव तेसि।
७. सं० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण°

घडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।।

११२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदिय-पदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं भंते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाहं वा[1] •वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा° करेंति ?

गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारागारचारुवेसा[2] •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि (जणसहस्साउलंसि ?) जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति ?

हंता समभिलोएंति ।

ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता सन्निपडियाओ ?

हंता सन्निपडियाओ[3] । अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

'सा वा'[4] नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति ? छविच्छेदं वा करेइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति ? छविच्छेदं वा करेंति ?

नो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—'[5] •लोगस्स णं एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आबाहं वा वाबाहं वा उप्पायंति°, छविच्छेदं वा करेंति ।।

११३. लोगस्स णं भंते एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाणं, उक्कोसपए जीवपदेसाणं सव्वजीवाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. सं० पा०—आबाहं वा जाव करेंति ।

२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया ।

३. सन्निवडियाओ (अ) ।

४. अहवा सा (अ, स) ।

५. सं० पा०—तं चेव जाव छविच्छेदं ।

६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ।।

११४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[2] । दूतिपलासे चेइए—वण्णओ जाव[3] पुढविसिलापट्टओ । तत्थ णं वाणियग्गामे नगरे सुदंसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[5] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । सामी समोसढे जाव[6] परिसा पज्जुवासइ ।।

११६. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय[7]°बलि-कम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गछित्ता जेणेव दूतिपलासे[8] चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, [तं जहा—सच्चित्ताणं दव्वाणं विओसरणयाए][9] जहा उसभदत्तो जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ।।

११७. तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए[11] परिसाए[12] धम्मं परिकहेइ जाव[13] आणाए आराहए भवइ ।।

१. भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।९४।
५. भ० २।९४।
६. ओ० सू० १९-५२।
७. सं० पा०—कय जाव पायच्छित्ते ।
८. दूतिपलासए (अ) ।
९. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश: प्रतीयते ।
१०. भ० ९।१४५।
११. °महालयाए (स) ।
१२. पू०—ओ० सू० ७१।
१३. ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[1] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता॰ नमंसित्ता एवं वयासी—

११९. कतिविहे णं भंते ! काले पण्णत्ते ?
सुदंसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, तं जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ॥

१२०. से किं तं पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले[2] य। चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ। उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२१. जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जदा णं जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ॥

१२२. कदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ। जदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवई, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ॥

---

१. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता। २. रत्ति॰ (अ, क, ब, म)।

१२३. कदा णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ ?
सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। पोसपुण्णिमाए[1] णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१२४. अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?
हंता अत्थि ॥

१२५. कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?
सुदंसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु[2], एत्थ[3] णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति—पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ। चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता[4] दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। सेत्तं पमाणकाले ॥

१२६. से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?
अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं। 'सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले'[5] ॥

१२७. से किं तं मरणकाले ?
मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ[6]। सेत्तं मरणकाले ॥

१२८. से किं तं अद्धाकाले ?
'अद्धाकाले – से णं'[7] समयट्ठयाए[8] आवलियट्ठयाए जाव[9] उस्सप्पिणीट्ठयाए। एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहाराछेदेणं[10] छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमाग-च्छइ, सेत्तं समए समयट्ठयाए। असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ। संखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव[11]—

एएसि णं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया।
तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

१. पोसस्स पुण्णिमाए (म)।
२. ०मासु णं (क, ता, स)।
३. तत्थ (अ, स)।
४. चउभागमुहुत्ता (अ)।
५. सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले (अ, म, स); सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले। सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले (ता)।
६. वियुज्यते इति शेषः (वृ)।
७. अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स)।
८. समयद्धयाए (अ) सर्वत्र।
९. भ० सू० ४१५।
१०. दोहारच्छेदेणं (क, ब); दोहाराछेयणेणं (वृ)
११. भ० ६।१३२-१३४।

१२९. एएहि णं भंते ! पलिओवम-सागरोवमेहिं किं पयोयणं ?
सुदंसणा ! एएहिं पलिओवम-सागरोवमेहिं नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाणं आउयाइं मविज्जंति ।।

१३०. नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

१३१. अत्थि णं भंते ! एएसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा ?
हंता अत्थि ।।

१३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं 'खएति वा'[2] अवचएति वा ?
एवं खलु सुदंसणा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[3]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे बले नामं राया होत्था—वण्णओ[4]। तस्स णं बलस्स रण्णो पभावई नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव[5] पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ।।

१३३. तए णं सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे, बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले[7] मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव[8]-मघमघेंत[9]-गंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए,
तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय-गंभीरे'[10] गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय[11]-खोमियदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे[12] सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे[13] सुगंधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए अद्धरत्तकाल-

१. प० ४।
२. जाव (अ, क, ता, ब, म, स)।
३. ओ० सू० १।
४. भ० ११।५३।
५. ओ० सू० १४।
६. ओ० सू० १५।
७. चिलग (अ)।
८. धूम (ता)।
९. °मघंत (म)।
१०. मज्झेणं गंभीरे (ता); मज्झेण य गंभीरे (वृपा); पण्णत्तगंडविब्बोयणे त्ति क्वचित् दृश्यते (वृ)।
११. उयचिय (म, स); उवचिय (वृ०)।
१२. पनिच्छण्ण (ता)।
१३. तुल्ल° (म)।

मयंसि[1] सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूवं ओरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुविणं[2] पासित्ता णं पडिबुद्धा।

हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडरतरोरुरमणिज्ज[3]-पेच्छणिज्जं थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबिय-मुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभंतलट्ठओट्ठं[4] 'रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुजीहं'[5] मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंत-वट्ट-तडिविमलसरि-सनयणं विसालपीवरोरुं पडिपुण्णविपुलखंधं मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न[6]-केसरसडोवसोभियं ऊसिय[7]-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलंगूलं[8] सोमं सोमाकारं लीलायंतं जंभायंतं[9], नहयलाओ ओवयमाणं, नियवयणमतिवयंतं[10] सीहं सुविणे पासित्ता णं 'पडिबुद्धा समाणी'[11] हट्ठतुट्ठ[12]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण• हियया धाराहयकलंबगं पिव समूसवियरोमकूवा[13] तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभ-त्तिचित्तंसि[14] भद्दासणंसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवर-गया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलव-माणी-संलवमाणी एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए तं चेव जाव नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ?

---

१. अड्ढ° (ता, म)।
२. महासुविणं सुविणे (क, ता, ब, म, स, वृ)।
३. पंडुर °(अ, ब, स,)।
४. °उट्ठं (अ, क, ब, स)।
५. वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीहं महुगुलियाभिसंतपिंगलच्छं (वृ)।
६. विक्किण्ण (ता, वृपा)।
७. ऊससिय (ता)।
८. अप्फोडियतलनंगोलं (ख)।
९. × (अ, ख, ता, म)।
१०. नियवयणकमलसरमइवंतं (ता, म)।
११. पडिबुद्धा तए णं सा पभावती देवी अयमेया-रूवं ओरालं जाव सस्सिरीयं महासुमिणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्ध समाणी (क, ख, ता, ब, स)।
१२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
१३. समूससित° (ब)।
१४. रयणविचित्तंसि (ता)।

१३४. तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम[2]-चंचुमालइयतणुए[3] ऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, करेत्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव[4] मंगल्लाहिं मिय-महुर[5]-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव[6] सस्सिरीए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे'[7], अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! 'रज्जलाभो देवाणुप्पिए !'[8] एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं कुलपव्वयं कुलवडेंसयं कुलतिलगं कुलकित्तिकरं कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं[9] •लक्खण-वंजण-गुणोववेयं माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगं° ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि ।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-[10]परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । तं ओराले णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि[11]-•दीहाउ-कल्लाण°-मंगल्लकारए णं तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहति ।।

१३५. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा[12] करयल[13]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणु-

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
२. °नीम° (ता, ब) ।
३. °तणुय (अ, क, ख, ता, म, स) ।
४. भ० ११।१३३।
५. महुररिभियगंभीर (ना० १।१।२०) ।
६. भ० ११।१३३।
७. × (अ) ।
८. × (म) ।
९. सं० पा०—°पंचिंदियसरीरं जाव ससि°
१०. विण्णाय (अ, ता, स) ।
११. सं० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए ।
१२. हट्ठतुट्ठ (अ, ता, स) ।
१३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

प्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ[1], पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल[2]•मसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए° गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीयित्ता एवं वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं[3] पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं[4] कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त[5]-सुइय-संमज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क[6]•-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं° गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह[7] य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तियं[8] पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[9] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं[10] •गंधोदयसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

१३८. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ[11] पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसालं अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव[12] ससिव्व पियदंसणे नरवई[13] जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

१. संपडिच्छइ (ख, स) ।
२. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
३. देवतगुरु° (ता) ।
४. × (अ) ।
५. गंधोदय (ब) ।
६. सं० पा०—पवरकुंदुरुक्क जाव गंध° ।
७. करावेह (ख, स) ।
८. ममेत जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. भ० ६।१४२।
१०. सं० पा०—उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति ।
११. पायवीढाओ (ख, ब, म) ।
१२. ओ० सू० ६३ ।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); औपपातिकानुसारेण स्वीकृतपाठः एव समीचीनः । आदर्शेषु परिवर्तनं संक्षेपीकरणेन जातम् । पाठसंक्षेपे प्राय एवं भवत्येव ।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं[1] सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं[2] ईहामिय-उसभ[3]-•तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्ति-चित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं[4] अंगसुहफासयं[5] सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविह-सत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ।।

१३९. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति ।।

१४०. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय[7]•बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति । तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।।

१४१. तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

१. °पच्चुत्थुयाइं (म)।
२. सण्हबहुभत्ति° (ब, म)।
३. सं० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्तं।
४. °पच्चुत्थयं (ब, म, स)।
५. °फासुयं (स, ब)।
६. भ० ९।१४२।
७. सं० पा०—कय जाव सरीरा।
८. सं० पा०—करयल।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव[1] सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव[2] महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२. तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति[3], संचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—

गय उसह[4] सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं ।
पउमसर[5] सागर विमाणभवण[6] रयणुच्चय सिहिं च[7] ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति । मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति । इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि[9]-°दीहाउ कल्लाण°-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[10] °अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं° वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव[11] देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति ।

---

१. भ० ११।१३३।
२. भ० ११।१३३।
३. संलवंति (ता) ।
४. वसहं (क, ता, म) ।
५. पदुमसर (ता) ।
६. 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकारं भवनं विमानभवनं, अथवा देवलोकाद्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु नरकात् तन्माता भवनमिति (वृ) ।
७. इह च गाथायां केषुचित्पदेष्वनुस्वारस्याश्रवणं गाथाऽनुलोम्याद् दृश्यम् (वृ) ।
८. भ० ११।१३४।
९. सं० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए ।
१०. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं ।
११. भ० ११।१३४।

से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण[2]-•मंगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे° दिट्ठे॥

१४३. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल[3]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु ते सुविण-लक्खणपाढगे एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया[4]! •तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया!° से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ[5], पडिच्छित्ता सुविण-लक्खणपाढए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव[6] मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं संलवमाणे-संलवमाणे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगर-मायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कम-माणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति तं चेव जाव[7] मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसि णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[8] रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[9] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ॥

१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई।
२. सं० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे।
३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव से।
५. संपडिच्छइ (क, ता, म, स)।
६. भ० ११।१३४।
७. भ० ११।१४२।
८. भ० ११।१४२।
९. भ० ११।१३४।

१४४. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल[1]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एयमेयं देवाणुप्पिया ! जाव[2] तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्ति[3]•चित्ताओ भद्दासणाओ° अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल[4]•मसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए° गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा ॥

१४५. तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[5] सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं नातिसीतेहिं नातिउण्हेहिं नातितित्तेहिं नातिकडुएहिं नातिकसाएहिं नातिअंबिलेहिं नातिमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं[6] भोयण-च्छायण-गंध-मल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-मउएहिं[7] सयणासणेहिं पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुण्णदोहला[8] सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा तं गब्भं 'सुहंसुहेणं परिवहति'[9] ॥

१४६. तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं[10] •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगं °ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया ॥

१४७. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[11]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडि-पुण्णाणं जाव[12] सुरूवं दारगं पयाया । तं एयण्णं[13] देवाणुप्पियाणं पियट्ठयाए पियं निवेदेमो । पियं भे भवतु ॥

१४८. तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

१. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
२. भ० ११।१३५।
३. सं पा०—°भत्ति जाव अब्भुट्ठेइ ।
४. सं० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
५. भ० ७।१७६।
६. तदु° (ख); उतु° (ता, म); उडु° (ब) ।
७. विविस° (अ, ख, ता, ब, स) ।
८. संपन्न° (अ); °डोहला (ता) ।
९. वाचनान्तरे—सुहंसुहेणं आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ त्ति दृश्यते (वृ) ।
१०. सं० पा०—गुणोववेयं जाव ससि° ।
११. सं० पा०—करयल ।
१२. भ० ११।१३४ ।
१३. एतणं (अ, स); एतं (ता) ।
१४. सं०पा०—हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव कूवे ।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चंचुमालइयतणुए ऊसवियरोम°कूवे तासिं अंगपडिया-रियाणं मउडवज्जं जहामालियं[1] ओमोयं दलयइ[2], दलयित्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं भिंगारं पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४९. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, करेत्ता माणुम्माण-वड्ढणं[3] करेह, करेत्ता हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-संमज्जिओ-वलित्तं जाव[4] गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसंजुत्तं[5] उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१५०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[6] तमाण-त्तियं पच्चप्पिणंति ॥

१५१. तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं चेव जाव[7] मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं[8] अदंडकोदंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलिय-अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धयमुइंगं[9] अमिलायमल्लदामं[10] पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेति ॥

१५२. तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सय-साहस्सिए य लंभे[11] पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एवं यावि विहरइ ॥

१५३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदंसावणियं[12] करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीइ-

---

१. जहाजमालितं (ता) ।
२. दलति (ता) ।
३. °वड्ढं (ता) ।
४. ओ० सू० ५५ ।
५. °महिमसक्कारं वा (अ, म, स); आयाम-जावदिसक्कारं वा (क); °संजुत्तं वा आया-मेजाहूससक्खा (ख); पूता° (ता); पूया-महिमसक्कारं वा (ब) ।
६. भ० ११।१४६ ।
७. ओ० सू० ६३ ।
८. °पावेसं (ख); अहड° (ता) ।
९. अणुद्धत° (क); अणद्धुत्त° (ब) ।
१०. अमिलाण° (ता) ।
११. लाभे (क, ब); लंभो (ता) ।
१२. °दंसणियं (क); औपपातिकादागमेषु 'दंस-णियं' इति पाठः प्रायेण स्वीकृतोस्ति । तत्र स्वीकृतपाठो नोपलब्धः । अर्थदृष्ट्यासौ समी-चीनोस्ति ।

वक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते 'बारसमे दिवसे'[1] विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता •[2]मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं रायाणो य° खत्तिए य आमंतेति, आमंतेत्ता तम्रो पच्छा ण्हाया तं चेव जाव[3] सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स° राईण य खत्तियाण य पुरम्रो अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्ध-णकरं अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'महब्बले-महब्बले'[5]। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति महब्बले त्ति ।।

१५४. तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए],[6] एवं जहा दढपइण्णस्स जाव[7] निव्वाय[8]-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति ।।

१५५. तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं वा चंद-सूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पचंकामणं[9] वा पजेमामणं[10] वा पिंडवद्धणं वा पजंपावणं[11] वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं[12] वा चोलोयणगं[13] वा उवणयणं वा, अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाण[14]-जम्मणमादि-याइं कोउयाइं करेंति ।।

१५६. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि

---

१. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, म, स); बारसादिवसे (ता); बारहदिवसे (ब); 'रायपसेणइयं' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतः। विशेषावबोधाय द्रष्टव्यं 'ओववाइय' सूत्रस्य १४४ सूत्रस्य प्रथमं पादटिप्पणम् ।

२. सं० पा०—जहा सिवो जाव खत्तिए ।

३. भ० ११।६३ ।

४. सं० पा०—नाइ जाव राईण ।

५. महब्बले (अ, क, ख, ब, म, स) ।

६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते ।

७. ओ० वाचनान्तर पृष्ठ १५१, १५२; राय० सू० ८०४ ।

८. निवात (अ, ता, ब, म); नियात (ख) ।

९. पयचंकमाणं (अ); पचंकम्मावणं (ख, ब); पचवक्कामवणं (ता); पयिचंकामणं (म) । पयचंकमणं (स) ।

१०. जेमावणं (क, ब, म, स) ।

११. पजंपमाणं (क, ख); पजंपामणं (ब) ।

१२. °पलेहणं (ख); °वलेहणगं (ता) ।

१३. चोलायणगं (अ); चोलोपणगं (क, स,); चोलगाणि (ता); चोलोयणं (ब) ।

१४. गब्भदाण (अ, ख); गब्भायाण (ता); गब्भादाण (ब, वृ); 'गब्भाहाण' पदस्य हकारदकारयोर्लिपिसादृश्यात् 'गब्भादाण' रूपे परिवर्तनं जातमिति संभाव्यते ।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवर्णेति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव[1] अलंभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

१५७. तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव[1] अलंभोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेंसए कारेंति[3]—अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[2] पडिरूवे । तेसि णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेस-भागे, एत्थ णं महेगं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णओ जहा राय-प्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव[4] पडिरूवे ॥

१५८. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वा-लंकारविभूसियं पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठंगतिलग-कंकण-अवि-हववहुउवणीयं[6] मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयार-कयसंतिकम्मं सरि-सियाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं [7]विणीयाणं कयकोउय-मंगलपायच्छित्ताणं[7] सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लि-याणं[8] अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविसु ॥

१५९. तए णं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति, तं जहा – अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ [9]कुंडलजोए कुंडलजोयप्पवरे[9] अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुय-लाइं खोमजुयलप्पवराइं, एवं वडगजुयलाइं,[10] एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्ल-जुयलाइं, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एवं धिईओ, कित्तीओ, वुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसइबद्धेणं नाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं, एवं सिबियाओ[11], एवं संद-

१. ओ० सू० १४६-१४८; राय० सू० ८०५-८०६ ।
२. राय० सू० ८१०।
३. करेंति (अ, म, स) ।
४. राय० सू० १३७।
५. राय० सू० ३२।
६. अविधववधुओवणीतं (ता) ।
७. × (व) ।
८. आणिते (ति) ल्लियाणं (क, ख, ता, ब, म) ।
९. कुंडलजुए कुंडलजुय° (म, स) ।
१०. पडलगजुयलाइं (अ) ।
११. सिबिया (अ); सिताओ (ता) ।

माणीओ[1], एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे संगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एवं दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं वरिसधरे, एवं महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलंबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंबणदीवे[2], एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए पंजरदीवे, एवं चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ[3] ३, अट्ठ सोवण्णियाइं थासगाइं३, अट्ठ सोवण्णियाइं मल्लगाइं३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ[4]३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ[5]३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए[6]३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ[7]३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लंके३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ३, अट्ठ हंसासणाइं, अट्ठ कोंचासणाइं, एवं गरुलासणाइं, उन्नयासणाइं, पणयासणाइं, दोहासणाइं, भद्दासणाइं, पक्खासणाइं, मगरासणाइं, अट्ठ पउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, [8]°अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एवं पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अंजण-समुग्गे°, अट्ठ सरिसव-समुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव[9] अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, 'अट्ठ करोडियाओ',[10] अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ[11], °अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मंडणधाईओ अट्ठ खेल्लावणधाईओ°, अट्ठ अंकधाईओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ[12], अट्ठ कीडागारीओ[13], अट्ठ दवकारीओ[14], अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ,

१. संदमाणी (अ); संदमाणियाओ (क, ता, ब, म)।
२. उक्कंपणदीवे (क, ख, ता, ब, स)।
३. 'एवं तिण्णि वि' इति पाठस्य सूचकमङ्कमिदं सर्वत्र।
४. चवलियाओ (ख); चवलियाओ अट्ठसोवण्णियाओ तिलियाओ (ता)।
५. कवचियाओ (अ, ख, ता, ब, म); कतिवियाओ (क)।
६. अवाडए (अ, स); अवयडए (ता)।
७. अवक्काओ (अ, क, ख, ता, म)।
८. सं० पा०—जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ।
९. ओ० सू० ७०; भ० ९।१४४।
१०. × (अ, क, ख, ता, ब, म)।
११. सं० पा०—खीरधाईओ जाव अट्ठ।
१२. × (ख)।
१३. कीलाकरीओ (ता)।
१४. उवकारीओ (क, ता)।

अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ[1], अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिधरणीओ, अट्ठ वाहिरियाओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ वाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग[2]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-°संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं[3], पकामं परिभाएउं[4] ॥

१६०. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहुं हिरण्णं वा[5] •सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं° परिभाएउं ॥

१६१. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव[6] पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[7] धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव[8] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा जाव जण-सन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा[10] जमाली तहेव चिंता,

१. महाणसीओ (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—कणग जाव संतसार।
३. परिभोत्तुं (क, ब, म, स)।
४. परिभाइउं (ख); परियाभाएउं (ता)।
५. सं० पा०—हिरण्णं वा जाव परिभाएउं।
६. भ० ६।१५६।
७. पदोप्पए (ख); पतोप्पए (ब, म)।
८. राय० सू० ६८६।
९. राय० सू० ६८७; ओ सू० ५२; भ० ६।१५७।
१०. भ० ६।१५८।

तहेव कंचुइज्ज-पुरिसं सद्दावेति, [1]•सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नयरे इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति ।।

१६५. तए णं से कंचुइ-पुरिसे महब्बलेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इंदमहे इ वा जाव[2] निग्गच्छंति । एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स वहिया सहसंववणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं एते बहवे उग्गा, भोगा जाव[3] निग्गच्छंति ।।

१६६. तए णं से महब्बले कुमारे° तहेव[4] रहवरेणं निग्गच्छति । धम्मकहा जहा[5] केसिसामिस्स । सो वि तहेव अम्मापियरं आपुच्छइ, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए । तहेव वुत्तपडिवुत्तिया[6], नवरं—इमाओ य ते जाया ! विउलरायकुलबालियाओ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेसं तं चेव जाव[7] ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी—तं इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।।

१६७. तए णं से महब्बले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१६८. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव सयाभिसेओ भाणियव्वो जाव[8] अभिसिंचति, करयलपरिग्गहियं[9] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? सेसं जहा जमालिस्स तहेव जाव[10]—

१६९. तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[11]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

१. सं० पा०—कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ । एवं खलु देवाणप्पिया ! विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे, सेसं तं चेव जाव सो वि तहेव ।

२. भ० ६।१५८।

३. भ० ६।१५८।

४. भ० ६।१६०-१६२ ।

५. राय० सू० ६६३।

६. वुत्तपडिवत्तया (क्व) ।

७. भ० ६।१६४-१७६।

८. भ० ११।५६-६२।

९. सं० पा०—करयपलरिग्गहियं ।

१०. भ० ६।१८०-२१५ ।

११. सं० पा०—चउत्थ जाव विचित्तेहिं ।

सेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-[1]•गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे कप्पे वीईवइत्ता° बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता तओ[2] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए॥

१७०. तए णं तुमं सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! 'इदाणिं पि'[3] करेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचाएति वा॥

१७१. तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं[4] परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स 'सण्णीपुव्वे जातीसरणे'[5] समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति॥

१७२. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे[6] आणंदंसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते[7]! •तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते!°—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स

१. सं० पा०—जहा अम्मडो जाव बंभलोए। औपपातिकादर्शेषु तद् वृत्तौ च नैष पाठो लभ्यते, तेन चिन्त्यमिदम्।
२. तओ चेव (अ); ताओ (ता, ब, म); ताओ चेव (स)।
३. इदाणि वि (अ, क, ख, ता, ब)।
४. सोभणेणं (ता)।
५. सण्णीपुव्वजाती° (अ, क, ता, ब, वृ)।
६. °सड्ढ° (म)।
७. सं० पा०—भंते जाव से।

जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव ।।

१७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

बारसमो उद्देसो

इसिभद्दपुत्त-पदं

१७४. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था— वण्णओ[3] । संखवणे चेइए—वण्णओ[4] । तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

१७५. तए णं तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं सहियाणं सण्णिविट्ठाणं[7] सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे[8] समुप्पज्जित्था— देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

१७६. तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।।

१७७. तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

१. भ० ६।१५१।
२. भ० १।५१।
३. ओ० सू० १।
४. ओ० सू० २-१३।
५. भ० २।६४।
६. भ० २।६४।
७. समुवविट्ठाणं (अ); समुविट्ठाणं (ख, ब, म, वृ) समुवेट्ठाणं (ता); द्रष्टव्यम्—भ० ७।२१२ ।
८. मिहोकहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, ख, म); अज्झत्थिए (ब) ।

१७८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव[1] समोसढे जाव[2] परिसा पज्जुवासइ। तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा •[3]अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे जाव[4] आलभियाए नगरीए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो।

एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं-सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति, मेलायित्ता पायविहारचारेणं आलभियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ॥

१७९. तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी—एवं खलु भंते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवमाइक्खइ जाव[8] परूवेइ—देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दस

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० २२-५२।
३. सं० पा०—एवं जहा तुंगियउद्देसए जाव पज्जुवासंति।
४. ओ० सू० ५२।
५. भ० २।६७।
६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० ७१-७७।
८. भ० १।४२०।

वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव[1] तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।

१८०. से कहमेयं भंते ! एवं ?

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी—जण्णं अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भं एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया जाव तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे णं एसमट्ठे, अहं 'पि णं'[2] अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता॰। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे णं एसमट्ठे'[5] ॥

१८१. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता[6] जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति। तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

१८२. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण[7]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

१. भ० ११।१६६।
२. पुण (अ, स)।
३. भ० १।४२१।
४. सं० पा०—तं चेव जाव तेण।
५. सच्चमेमे अट्ठे (क, ख, ता, ब, म)।
६. नमंसित्ता उट्ठाते उट्ठेंति २ (ता)।
७. गुणव्वय (ख, ब, म)।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ।।

१८३. से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[1] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[2] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ।।

१८४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[3] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१८५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

पोग्गल-परिव्वायग-पदं

१८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ णं संखवणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[5]। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए[6]—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव[7] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[8] •पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरइ ।।

१८७. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठंछट्ठेणं[9] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[10] •पगइउवसंतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउमद्दवसंपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स° विब्भंगे नामं नाणे[11] समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणइ-पासइ ।।

१८८. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि णं ममं अतिसेसे नाणदंसणे

१. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं ।
२. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अंतं ।
३. भ० १।५१।
४. ओ० सू० १ ।
५. ओ० सू० २-१३ ।
६. परिव्वायए परिवसति (अ, स) ।
७. भ० २।२४ ।
८. सं० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे ।
९. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणस्स
१०. सं० पा०—जहा सिवस्स जाव विब्भंगे ।
११. अण्णाणे (अ) ।
१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता 'तिदंडं च कुंडियं च' जाव[1] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिंघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं° वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१८९. तए णं [5]•पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।° से कहमेयं मन्ने एवं ?

१९०. सामी समोसढे[6], •परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, °परिसा पडिगया। भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्वं भाणियव्वं जाव[7] अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एवं भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१९१. अत्थि णं भंते ! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, •[8]सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं

१. तिदंडकुंडियं (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. भ० २।३१।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
४. सं० पा०—तहेव जाव वोच्छिण्णा।
५. सं० पा०—आलभियाए नगरीए एवं एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स तं चेव जाव से।
६. सं० पा०—समोसढे जाव परिसा।
७. भ० ११।७५-७७।
८. सं० पा०—तहेव जाव हंता।

पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ? ०

हंता अत्थि ।

एवं ईसाणे वि, एवं जाव[1] अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?

हंता अत्थि ॥

१६२. तए णं सा महतिमहालिया परिसा जाव[2] जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

१६३. तए णं आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-[3]चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । तं नो इणट्ठे समट्ठे । समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव[4] देवलोएसु णं देवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१६४. तए णं से पोग्गले परिव्वायए बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स संकियस्स कंखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभंगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए ॥

१६५. तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव[5] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[6] संखवणे चेइए

१. भ० ११।६४ ।
२. भ० ११।८२ ।
३. सं० पा०—अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं—तिदंडकुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ २ तिदंडकुंडियं च जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव ।
४. भ० ११।८३, १६० ।
५. भ० १।७ ।
६. ओ० सू० १६।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[1] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिकडे पज्जुवासइ ॥

१९६. तए णं समणे भगवं महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[3] आणाए आराहए भवइ ॥

१९७. तए णं से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[4] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[5] धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव[6] पव्वइओ, तहेव[7] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव[8] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१९८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणस्स कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ?

गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

१. भ० २।३० ।
२. भ० २।३१ ।
३. ओ० सू० ७१-७७ ।
४. भ० २।५२ ।
५. भ० २।३१ ।
६. भ० ९।१५०,१५१
७. भ० ९।१५१ ।
८. भ० ९।१५१ ।

संघयणं संठाणं, उच्चत्तं आउयं च परिवसणा ।
एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा॰ जाव[1]—
अव्वाबाहं सोक्खं, अणुभवंति सासयं सिद्धा ॥

१६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

१. ओ॰ सू॰ १६५ । २. भ॰ १।५१ ।

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. संखे २. जयंति ३. पुढवि ४. पोग्गल ५. अइवाय ६. राहु ७. लोगे य ।
८. नागे य ९. देव १०. आया, बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

संख-पोक्खली-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1] । कोट्ठए चेइए —वण्णओ[2] । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव[4] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[5] सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा जाव[6] पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव[7] पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति-महालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[8] जाव[9] परिसा पडिगया ॥

३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता पसि-

१. ओ० सू० १ ।
२. ओ० सू० २-१३ ।
३. भ० २।९४ ।
४. भ० २।९४ ।
५. ओ० सू० १५ ।
६. ओ० सू० ५२ ।
७. भ० ११।१७८ ।
८. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. ओ० सू० ७१-७९ ।

णाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति[1], परियादियित्ता उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं'[2] उवक्खडावेह। तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[3] विस्साएमाणा 'परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा'[4] पक्खियं पोसहं[5] पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ॥

५. तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

६. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेयं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं[7] साइमं अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं[8] पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि[9]-सुवण्णस्स ववगयमाला[10]-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[11] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए° पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ॥

७. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-

१. पडियाइयंति (ता)।
२. असणपाणखाइमसाइमं (क, ख, ता, ब, म)।
३. आसाएमाणा (स)।
४. परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (ब, क, ख, स); परिभुंजमाणा परियाभाएमाणा (ता)।
५. पोसहियं (तं) (ख, ता, म)।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
८. पोसहियं (ख, ता, म,)।
९. उम्मुक्क° (ब, म)।
१०. °मल्लग (ता)।
११. सं० पा०—बंभचारी जाव पक्खियं।

प्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं संखं समणोवासमं सद्दावेत्तए ॥

८. तए णं से पोक्खली समणोवासए 'ते समणोवासए'[1] एवं वयासी—अच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय[2]-वीसत्था, अहण्णं संखं समणोवासगं सद्दावेमि त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

९. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता आस-णेणं उवनिमंतेइ[3], उवनिमंतेत्ता एवं वयासी—संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१०. तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी—कहिण्णं[4] देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए ?

११. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[5] °ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे° विहरइ ॥

१२. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं[6] देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं[7] °पाणं खाइमं° साइमं अस्साए-माणा[8] °विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं° पडिजा-गरमाणा विहरामो ॥

१३. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी—नो खलु

१. × (ख, ता, ब, म)।
२. सुनिव्वुया (अ, स)।
३. निमंतेइ (ता)।
४. कहि णं (अ, क, ख, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—बंभचारी जाव विहरइ।
६. × (क, ख, ता, ब, म)।
७. सं० पा०—असणं जाव साइमं।
८. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव पडिजागर-माणा।

कप्पइ देवाणुप्पिया ! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणस्स[1] •विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं° पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स[2] •बंभचारिस्स ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स° विहरित्तए, 'तं छंदेणं'[3] देवाणुप्पिया ! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[4] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह ॥

१४. तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव[5] विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया ! तुब्भे विउलं असणं[6] •पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ । तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा जाव विहरंति ॥

१५. तए णं तस्स संखस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे[7] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव[9] पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर[10] परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[11] •निग्गच्छइ,

१. सं० पा०—अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स ।
२. सं० पा०—पोसहियस्स जाव विहरित्तए ।
३. तत्थ णं (अ); तं णं छंदेणं (ख) ।
४. सं० पा०—अस्साएमाणा जाव विहरह ।
५. भ० १२।६ ।
६. सं० पा०—असणं ४ जाव विहरह ।
७. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
८. भ० २।६६ ।
९. भ० २।३१ ।
१०. × (ब) ।
११. सं० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि ।

निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए॰ पज्जुवासति ॥

१६. तए णं ते समणोवासगा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[१] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[२] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति[३], मेलायित्ता [४]॰पायविहारचारेणं सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं जाव[५] तिविहाए पज्जुवासणाए॰ पज्जुवासंति ॥

१७. तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[६] जाव[७] आणाए आराहए भवइ ॥

१८. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासयं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं [८]॰पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा॰ विहरिस्सामो । तए णं तुमं पोसहसालाए[९] ॰पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे॰ विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलसि[१०] ॥

१९. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी – मा णं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह । संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥

१. भ० २।६६ ।
२. भ० २।६७ ।
३. मिलायंति (अ, ख, ब, स) ।
४. सं० पा०—सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति ।
५. भ० २।६७ ।
६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. ओ० सू० ७१-७७ ।
८. सं० पा०—असणं जाव विहरिस्सामो ।
९. सं० पा०—पोसहसालाए जाव विहरिए ।
१०. हीलेसि (अ, स) ।

२०. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहा णं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ।।

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णनाणदंसणधरा [1]•अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए° सव्वण्णू सव्वदरिसी—एए णं बुद्धा[2] बुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे अणगारा भगवंतो [3]रियासमिया[4] भासासमिया •एसणासमिया आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया° गुत्तबंभचारी[5]—एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति—एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया[7] •पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया°, सुदक्खुजागरिया ।।

२२. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ [8]•धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ।।

२३. माणवसट्टे णं भंते ! जीवे [9]•किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं

१. सं० पा०—जहा खंदए जाव सव्वण्णू ।
२. × (अ) ।
३. इरिया ° (ब म) ।
४. सं० पा०—भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी ।
५. °चारिणो (अ) ।
६. भ० २।९४ ।
७. सं० पा०—जागरिया जाव सुदक्खु° ।
८. सं० पा०—एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ।
९. सं० पा०—एवं चेव, एवं मायवसट्टे वि एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।

उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[1] अणुपरियट्टइ ॥

२४. मायवसट्टे[2] णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[3] अणुपरियट्टइ ॥

२५. लोभवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव[4] अणुपरियट्टइ ॥

२६. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति । तए णं ते समणोवासगा [5]•पसिणाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, परियादियित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२७. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं [6]•मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! संखे समणोवासए बहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं संखस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ॥

२८. से णं भंते ! संखे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं• अंतं काहिति ॥

२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

१. भ० १२।२२ ।
२. मायावयट्टे (ब, म) ।
३. भ० १२।२२ ।
४. भ० १२।२२ ।
५. सं० पा०—सेसं जहा आलभियाए जाव पडिगया ।
६. सं०पा०—सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अंतं ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

उदयणादीणं धम्मसवण-पदं

३०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। चंदोतरणे[2] चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे[4] नामं राया होत्था—वण्णओ[5]। तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था[6]—सुकुमालपाणिपाया जाव[7] सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव[8] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवीए नणंदा, वेसालियसावयाणं[9] अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी[10] जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

३१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[11] परिसा पज्जुवासइ॥

३२. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे[12] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भिंतर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं[13] करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव[14] पज्जुवासइ॥

३३. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावतिं देविं एवं वयासी—[15]

१. ओ० सू० १।
२. चंदोत्तराए (अ); चंदोवरणे (ब); चंदोवतरणे (स)।
३. ओ० सू० २-१३।
४. उदायणे (अ); उद्दायणे (स)।
५. ओ० सू० १४।
६. होत्था वण्णओ (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० १५।
८. भ० २।९४।
९. वेसालीसावयाणं (अ, क, ख, ब, म, स)।
१०. °सिज्जायरी (ब, म)।
११. ओ० सू० २२-५२।
१२. हट्ठतुट्ठ (ता)।
१३. पू०—ओ० सू० ५५।
१४. ओ० सू० ५६-६९।
१५. सं० पा०—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ।

•एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव' सव्वण्णू सव्व-दरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव' सुहंसुहेणं विहरमाणे चंदोतरणे चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जाव' एयं णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-साए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ ॥

३४. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए '•एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-माणहियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जयंतीए समणोवासियाए एयमट्ठं विणएणं° पडिसुणेइ ॥

३५. तए णं सा मिगावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव' धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह' •उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

३६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मियं जाण-प्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

३७. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव' अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव' चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकंचुइज्ज-महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता' •धम्मिए जाणप्पवरं° दुरूढा" ॥

३८. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा" समाणी नियगपरियालसंपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव" धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ॥

३९. तए णं सा मिगावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं जहा देवाणंदा

१. भ० १।७ ।
२. ओ० सू० १६ ।
३. भ० ६।१३६ ।
४. सं० पा०—जहा देवाणंदा जाव पडिसुणेइ ।
५. भ० ६।१४१ ।
६. सं० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति ।
७. भ० २।६७ ।
८. भ० ६।१४४ ।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव दुरूढा ।
१०. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
११. दूढा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
१२. भ० ६।१४५ ।

जाव[1] वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उदयणं रायं पुरओ कट्टु ठिया[2] चेव[3] •सपरिवारा सुस्सूसमाणी णमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंजलिकडा° पज्जुवासइ ॥

४०. तए णं समणे भगवं महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव[4] धम्मं परिकहेइ जाव[5] परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पदं

४१. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं[6] भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं[7] •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४२. कहण्णं भंते ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं मुसावायवेरमणेणं अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेणं कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति ॥

४३. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं आउलीकरेंति ॥

४४. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं परित्तीकरेंति ॥

४५. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ?

१. भ० ६।१४६ ।
२. ठितिया (अ, क, ख, स) ।
३. सं० पा०—चेव जाव पज्जुवासइ ।
४. भ० ६।१४९ ।
५. ओ० सू० ७१-७९ ।
६. कह णं (क, ता, ब); कहं णं (ख, म); कहिण्णं (स) ।
७. सं० पा०—पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति एवं जहा पढमसए जाव वीतिवयंति ।

जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं दीहीकरेंति ।।

४६. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ?
जयंतो पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं ह्रस्सीकरेंति ।।

४७. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ?
जयंती ! पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं अणुपरियट्टंति ।।

४८. कहण्णं भंते ! जीवा संसारं वीतिवयंति ?
जयंती ! पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं—एवं खलु जयंती ! जीवा संसारं॰ वीतिवयंति ।।

४९. भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओ ? परिणामओ ?
जयंती ! सभावओ, नो परिणामओ ।।

५०. सव्वेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ?
हंता जयंती ! सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ।।

५१. जइ णं भंते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५२. से केणं खाइणं[1] अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
जयंति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणंताहिं ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—सव्वेवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ।।

५३. सुत्तत्तं भंते ! साहू ? जागरियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।।

५४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं[2] ॰जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं॰ साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-

---

१. खाइएणं (ता); खातेणं (स)।

२. सं० पा०—अत्थेगतियाणं जाव साहू।

रंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू । एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए[1] •जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति एएसि णं जीवाणं सुत्ततं साहू ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया[2] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । एए णं जीवा 'जागरा समाणा'[3] बहूणं पाणाणं[4] •भूयाणं जीवाणं° सत्ताणं अदुक्खणयाए[5] •असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए वट्टंति । एए[6] णं जीवा जागरा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू ।।

५५. बलियत्तं भंते ! साहू ? दुब्बलियत्तं साहू ?

जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।।

५६. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[7]—•अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं° साहू ?

जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव[8] अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू । एए णं जीवा [9]•दुब्बलिया समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति । एए णं जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू ।

१. सं०पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए।
२. सं० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेणं ।
३. जागरमाणा (अ, क, ख) ।
४. सं० पा०—पाणाणं जाव सत्ताणं ।
५. सं० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए ।
६. ते (अ) ।
७. सं० पा०—वुच्चइ जाव साहू ।
८. भ० १२।५४ ।
९. सं० पा०—एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियवत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो ।

जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू। एए णं जीवा बलिया समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा बलिया समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं° संजोएत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू। से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ—•[1]अत्थेगतियाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं° साहू॥

५७. दक्खत्तं भंते ! साहू ? आलसियत्तं साहू ?
जयंती ! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू॥

५८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—•[2]अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू ?
जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू। एए णं जीवा आलसा[3] समाणा नो बहूणं [4]•पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा आलसा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति। एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू।
जयंति ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं° संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं[5] उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहिं तवस्सिवेयावच्चेहिं गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं संघवेयावच्चेहिं साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू। से तेणट्ठेणं [6]•जयंती ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं° साहू॥

१. सं० पा०—तं चेव जाव साहू।
२. सं० पा०—तं चेव जाव साहू।
३. अलसा (अ, ब)।
४. सं० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव संजोएत्तारो।
५. °वेदावच्चेहिं (अ, ब)।
६. सं० पा०—तं चेव जाव साहू।

५९. सोइंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? [1]•किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
जयंती ! सोइंदियवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, असायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ॥

६०. [2]•चक्खिदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६१. घाणिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६२. रसिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव अणुपरियट्टइ ॥

६३. फासिंदियवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एवं चेव जाव° अणुपरियट्टइ ॥

६४. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पव्वइया जाव[3] सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

६५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

तइओ उद्देसो

पुढवी-पदं

६६. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पढमा, दोच्चा जाव सत्तमा ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ।
२. सं० पा०—एवं चक्खिंदियवसट्टे वि एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।
३. भ० ९।१५२-१५५ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-१० ।

६७. पढमा णं भंते ! पुढवी किंगोत्ता पण्णत्ता ?
गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] अप्पाबहुगं ति ।।
६८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९. रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ।।
७०. तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ।।
७१. चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,[4] °साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ।।
७२. पंच भंते ! परमाणुपोग्गला [5]°एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?°
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपए-

१. जी० ३।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।४-१०।
४. सं० पा०—साहण्णंति जाव पुच्छा।
५. सं० पा०—पुच्छा।

सिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति॥

७३. छब्भंते! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?° गोयमा छप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७४. सत्त भंते! परमाणुपोग्गला [2]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?° गोयमा! सत्तपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपए-

---

१. सं० पा०—पुच्छा। २. सं० पा०—पुच्छा।

सिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति॥

७५. अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला '•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ'। •से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति॥

७६. नव भंते ! परमाणुपोग्गला '•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?° गोयमा' ! •नवपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा' वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे

१. सं० पा०—पुच्छा।
२. सं० पा०—भवइ जाव दुहा।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सं० पा०—गोयमा जाव नवहा।
५. नवविहा (ता, स)।

भवइ; [1]•अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ;° अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति॥

७७. दस भंते! परमाणुपोग्गला[2] •एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ?

---

१. सं० पा०—एवं एक्केक्कं संचारेंतेहिं जाव अहवा।
२. सं० पा—°पोग्गला जाव दुहा।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ°--दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ; [1]अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ°; अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति। पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति। छहा कज्जमाणे एगयओ पंच

---

१. सं० पा०—एवं एक्केक्कं संचारेंतेणं जाव अहवा।

परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा भवंति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७८. संखेज्जा णं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ? गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि संखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले; एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए

खंधे, एगयम्रो संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयम्रो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले, एगयम्रो दुपएसिए खंधे, एगयम्रो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले एगयम्रो दसपएसिए खंधे, एगयम्रो दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयम्रो दुपएसिए खंधे, एगयम्रो तिण्णि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति जाव अहवा एगयम्रो दसपएसिए खंधे, एगयम्रो तिण्णि संखेज्ज-पएसिया खंधा भवंति; अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं एएणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसंजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयम्रो नव परमाणुपोग्गला, एगयम्रो संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयम्रो दुपएसिए, एगयम्रो संखेज्जपएसिए खंधे भवइ। एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो जाव अहवा एगयम्रो दसपएसिए खंधे, एगयम्रो नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति॥

७६. असंखेज्जा भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति[1], साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, संखेज्जहा वि, असंखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयम्रो दसपएसिए खंधे भवइ, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो संखेज्ज-पएसिए खंधे, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो असंखेज्ज-पएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयम्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले, एगयम्रो दुपए-सिए खंधे, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयम्रो परमाणु-पोग्गले, एगयम्रो दसपएसिए खंधे, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले, एगयम्रो संखेज्जपएसिए खंधे, एगयम्रो असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयम्रो परमाणुपोग्गले, एगयम्रो दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयम्रो दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव अहवा एगयम्रो संखेज्जपएसिए खंधे, एगयम्रो दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयम्रो तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयम्रो असंखेज्ज-पएसिए खंधे भवइ; एवं चउक्कगसंजोगो जाव दसगसंजोगो। एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं—असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं जाव अहवा दस

१. साहणंति (अ, क, ख, म, स)।

असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति॥

८०. अणंता णं भंते! परमाणुपोग्गला[1] °एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता° किं भवइ?

गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि 'संखेज्जहा वि असंखेज्जहा वि'[2] अणंतहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिण्णि अणंतपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; एवं चउक्कसंजोगो जाव असंखेज्जगसंजोगो। एते सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताण वि भाणियव्वं, नवरं—एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं जाव अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा

1. सं० पा०—परमाणुपोग्गला जाव किं।
2. संखेज्जाअसंखेज्ज (अ, क, ब, स); संखेज्जा-असंखेज्जा (ख, म): संखेज्जाऽसंखेज्जा (ता)।

एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति ॥

पोग्गलपरियट्ट-पदं

८१. एएसि णं भंते! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा-भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया ?
हंता गोयमा! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा '•भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति° मक्खाया ॥

८२. कइविहे णं भंते! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गलपरियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे[2] ॥

८३. नेरइयाणं भंते! कतिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव[3] आणापाणुपोग्गलपरियट्टे। एवं जाव[4] वेमाणियाणं ॥

८४. एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता।
केवइया पुरेक्खडा[5] ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा ॥

८५. एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा '•अतीता ?
अणंता।
केवइया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा।° एवं जाव वेमाणियस्स ॥

१. सं० पा०—साहणणा जाव मक्खाया।
२. आणपाणु° (ख)।
३. भ० १२।८२।
४. पू० प० २।
५. पुरेक्कडा (अ); पुरक्खडा (क, ता)।
६. सं० पा०—एवं चेव जाव एवं।

८६. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता। एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा। एवं जाव[1] वेमाणियस्स। एवं जाव[2] आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति ॥

८७. नेरइयाणं भंते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता।
केवइया पुरेक्खडा ?
अणंता। एवं जाव वेमाणियाणं। एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि। एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाणं। एवं एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसति-दंडगा ॥

८८. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
नत्थि एक्को वि।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्को वि ॥

८९. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
एवं चेव। एवं जाव थणियकुमारत्ते[3] ॥

९०. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
अणंता।
केवतिया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा। एवं जाव मणुस्सत्ते। वाण-मंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

९१. एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा° ?
एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते। एवं जाव थणियकुमारस्स। एवं पुढविक्काइयस्स वि। एवं जाव वेमाणियस्स। सव्वेसिं[4] एक्को गमो[5] ॥

१. पू० प० २।
२. भ० १२।८२।
३. °कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते (अ, स)।
४. सव्वेसिं उ (ता)।
५. गमओ (क, ता, ब, म, स)।

६२. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
एकुत्तरिया[1] जाव अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
नत्थि एक्कोवि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि[2] । एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं[3] तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।
तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि । वइ-पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं—एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

६४. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
'नत्थि एक्कोवि'[4] ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि । एवं जाव थणियकुमारत्ते ॥

६५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
अणंता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते । एवं जाव वेमाणियाणं[5] वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा —जत्थ[6] अत्थि तत्थ[7] अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ[8] नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

६६. वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?

---

१. एगुत्तरिया (अ); एक्कुत्तरिया (क, ता) ।
२. तेक्कोवि (ब, म) ।
३. °सरीरं अत्थि (अ, स) ।
४. नत्थेक्कोवि (क, ख, म) ।
५. वेमाणियस्स (क, ता, ब) ।
६. जस्स (क, ता, ब, म) ।
७. तस्स (क, ता, ब, म) ।
८. जस्स (क, ख, ता, ब, म) ।

अणंता ॥

९७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गल-परियट्टे ?
गोयमा ! जण्णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं अभिसमण्णागयाइं परियादियाइं परिणामियाइं निज्जिण्णाइं निसिरियाइं निसिट्ठाइं भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ।
एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवरं—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं—आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए गहियाइं, सेसं तं चेव ॥

९८. ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?
गोयमा ! अणंताहिं 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं'[1] एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ । एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि । एवं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ॥

९९. एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गल-परियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्ट-निव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्त-णाकाले अणंतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, वेउव्विय-पोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ॥

१००. एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, ओरालिय-

१. ओसप्पिणि-उस्स° (अ, स, ब, म); उस्सपिणीहिं ओस° (क); उस्सप्पिणि-ओस° (स) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, कम्मगपोग्गल-परियट्टा अणंतगुणा ।।

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं जाव[1] विहरइ ।।

पंचमो उद्देसो

वण्णादिं अवण्णादिं च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे—एस णं कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते ।।

१०३. अह भंते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, 'दुगंधे, पंचरसे'[3], चउफासे पण्णत्ते ।।

१०४. अह भंते ! माणे, मदे, दप्पे, थंभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे[4], परपरिवाए, उक्कोसे[5], अवक्कोसे[6], उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे, [7]•दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते° ।।

१०५. अह भंते ! माया, उवही, नियडी, वलए[8], गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए[9], जिम्हे[10], किब्बिसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया, पलिउंचणया, सातिजोगे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचवण्णे [11]•दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०६. अह भंते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. पंचरसे दुगंधे (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. अत्तुक्कासे (क, ख); अत्तुक्करिसे (ता) ।
५. उक्कासे (ख, वृपा) ।
६. अवक्कासे (ख, वृपा) ।
७. सं० पा०—जहा कोहे तहेव ।
८. वलये (अ, क, ख, ब, म, स) ।
९. कुरूए (म) ।
१०. झिमे (अ, ब, स); जिम्मे (क); झिम्मे (ख); पिम्हे (ता) ।
११. सं० पा०—जहेव कोहे ।

णासा[1], नंदिरागे[2]—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[3]•गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०७. ग्रह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे[4], •ग्र०भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादंसणसल्ले —एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[5]•गोयमा ! पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०८. ग्रह भंते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव[6] परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[7] मिच्छादंसणसल्लविवेगे— एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! ग्रवण्णे, ग्रगंधे, ग्ररसे, ग्रफासे पण्णत्ते ।।

१०९. ग्रह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया[8], पारिणामिया—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[9]•गोयमा ! ग्रवण्णा, ग्रगंधा, ग्ररसा, ग्रफासा पण्णत्ता° ।।

११०. ग्रह भंते ! ग्रोग्गहे, ईहा, ग्रवाए[10], धारणा—एस णं कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[11]•गोयमा ! ग्रवण्णा, ग्रगंधा, ग्ररसा°, ग्रफासा पण्णत्ता ।।

१११. ग्रह भंते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[12]•गोयमा ! ग्रवण्णे, ग्रगंधे, ग्ररसे°, ग्रफासे पण्णत्ते ।।

११२. सत्तमे णं भंते ! ग्रोवासंतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[13]•गोयमा ! ग्रवण्णे, ग्रगंधे, ग्ररसे°, ग्रफासे पण्णत्ते ।।

११३. सत्तमे णं भंते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[14]•गोयमा । पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे° ग्रट्ठफासे पण्णत्ते ।
एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे ग्रोवासंतरे ग्रवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइं ग्रट्ठफासाइं । एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्वं । जंबुद्दीवे दीवे जाव सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी,

---

१. इदं च क्वचिन्न दृश्यते (वृ) ।
२. नंदीरागे (क, ब, म) ।
३. सं० पा०—जहेव कोहे ।
४. सं० पा०—कलहे जाव मिच्छा° ।
५. सं० पा०—जहेव कोहे तहेव चउफासे ।
६. भ० १।३८५ ।
७. ठा० १।११५-१२५ ।
८. कम्मिया (अ, क, ख, ता, म) ।
९. सं० पा०—तं चेव जाव अफासा ।
१०. अपोहे (क); अपाए (ब, म) ।
११. सं० पा०—एवं चेव जाव अफासा ।
१२. सं० पा०—तं चेव जाव अफासे ।
१३. सं० पा०—एवं चेव जाव अफासे ।
१४. सं० पा०—जहा पाणाइवाए नवरं अट्ठफासे ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा--एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ।।

११४. नेरइयाणं भंते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइं पडुच्च[1] पंचवण्णा, 'दुगंधा, पंचरसा'[2], अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं पडुच्च पंचवण्णा, दुगंधा, पंचरसा, चउफासा पण्णत्ता। जीवं पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एवं जाव थणियकुमारा ।।

११५. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं। जीवं पडुच्च तहेव। एवं जाव चउरिंदिया, नवरं—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेसं जहा नेरइयाणं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ।।

११६. मणुस्साणं—पुच्छा।
ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया।
धम्मत्थिकाए जाव[3] पोग्गलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवरं—पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे, दुगंधे, पंचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते।
नाणावरणिज्जे जाव[4] अंतराइए—एयाणि चउफासाणि ।।

११७. कण्हलेसा णं भंते ! कतिवण्णा [5]॰जाव कतिफासा पण्णत्ता ?॰
दव्वलेसं पडुच्च पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। भावलेसं पडुच्च अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता। एवं जाव[6] सुक्कलेस्सा।
सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी, चक्खुदंसणे, अचक्खुदंसणे, ओहिदंसणे, केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव[7] विभंगनाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगंधाणि, अरसाणि, अफासाणि।
ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे[8] चउफासे। मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे।
सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ।।

११८. सव्वदव्वा णं भंते ! कतिवण्णा [9]॰जाव कतिफासा पण्णत्ता ?॰

---

१. पडुच्चा (ता, ब, म)।
२. पंचरसा दुगंधा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. भ० २।१२४।
४. भ० ६।३३।
५. सं० पा०—पुच्छा।
६. भ० १।१०२।
७. भ० २।१३७।
८. कम्मसरीरे (ब, म)।
९. सं० पा०—पुच्छा।

गोयमा ! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा, एगगंधा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता। अत्थेगतिया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता। एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि। तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा। एवं अणागयद्धा वि, सव्वद्धा वि ॥

११९. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे कतिवण्णं, कतिगंधं, कतिरसं, कतिफासं परिणामं[1] परिणमइ ?
गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणामं[2] परिणमइ ॥

कम्मओ विभत्ति-पदं

१२०. कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?
हंता गोयमा ! कम्मओ णं [3]°जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं° परिणमइ ॥

१२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

छट्ठो उद्देसो

चंद-सूर-गहण पदं

१२२. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—बहुजण णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[6] एवं परूवेइ एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं खलु राहू चंदं गेण्हति ॥

१२३. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] एवं परूवेमि—एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव[8] महेसक्खे[9] वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगंधधरे वराभरणधारी।

१. × (ता)।
२. × (ता)।
३. सं० पा०—तं चेव जाव परिणमइ।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. भ० १।४२०।
७. भ० १।४२१।
८. भ० ३।४।
९. महेसक्के (ब); महासोक्खे (म)।

राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—सिंघाडए[1] जडिलए खतए[2] खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे[3] कण्हसप्पे।

राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा, पण्णत्ता, तं जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते।

जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू। एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एवं दाहिणेणं उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं उत्तरपुरत्थिमेणं दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा। एवं चेव जाव तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिण-पुरत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं खलु राहू चंदं गेण्हति। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं[4] आवरेत्ता णं पासेणं वीतीवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेत्ता णं पच्चोसक्कइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं खलु राहुणा चंदे वंते। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खि सपडि-दिसिं आवरेत्ता णं चिट्ठइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति—एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे, एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे॥

१२४. कतिविहे णं भंते! राहू पण्णत्ते?

गोयमा! दुविहे राहू पण्णत्ते, तं जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसतिभागं

---

१. संघाडए (ब)।
२. खत्तए (अ); खंतए (ख); खंभए (स)।
३. अच्छभे (ब)।
४. चंदस्स लेसं (क, ब, म)।

चंदलेस्सं आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ, तं जहा—पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं जाव पन्नरसेमु पन्नरसमं भागं[1]। चरिमसमये चंदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[2] भवइ। तमेव[3] सुक्कपक्खस्स[4] उवदंसेमाणे-उवदंसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढमं भागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं। चरिमसमये चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[5] भवइ। तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहण्णेणं 'छण्हं मासाणं'[6] उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स[7], अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स[8]॥

ससि-आइच्च-पदं

१२५. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चंदे ससी?
गोयमा! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो मियंके विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा! एवं वुच्चइ—चंदे ससी, चंदे° ससी॥

१२६. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे आदिच्चे?
गोयमा! सूरादिया णं समया इ वा आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेणं[11] •गोयमा! एवं वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे° आदिच्चे॥

चंद-सूराणं कामभोग-पदं

१२७. चंदस्स णं भंते! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?
जहा दसमसए जाव[12] नो चेव णं मेहुणवत्तियं। सूरस्स वि तहेव॥

१२८. चंदिम-सूरिया णं भंते! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति?
गोयमा! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे[13] अत्थगवेसणयाए सोलसवास-

१. 'आवरेत्ता णं चिट्ठइ' त्ति वाक्यशेषः (वृ)।
२. रत्ते य विरत्ते य (क)।
३. तामेव (क, ख, ता, ब, म)।
४. प्रतिपदादिष्विति गम्यते (वृ)।
५. रत्ते य विरत्ते य (अ, ख, ता); रत्ते य विरत्ते वा (क, ब, म, स)।
६. छम्मासाणं (ता)।
७. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
८. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव ससी।
१०. ठा० २।३८७-३८६।
११. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव आदिच्चे।
१२. भ० १०।६०।
१३. अचिरवत्तावाहुज्जे (ता)।

विप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियगं गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकार-विभूसिए मणुण्णं थालिपागसुद्धं[1] अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि [2]•अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियंधयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूए।

तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गंभीरे गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे सुगंधवरकुसुम-चुण्ण°-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए[3] •संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-संलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे[4] •रसे रूवे गंधे° पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?

ओरालं समणाउसो!

तस्स णं गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त[5]-•तारारूवाणं जोतिसियाणं° कामभोगेहिंतो चंदिम-सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चंदिम-सूरिया णं गोयमा! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥

---

१. थालिपागसिद्धं (ब)।

२. सं० पा०—वण्णओ महब्बले कुमारे जाव सयणो°।

३. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसा[illegible] जाव कलियाए।

४. सं० पा०—फरिसे जाव पंचविहे।

५. पा० सं०—नक्खत्त जाव काम°।

१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता[1] •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पदं

१३०. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—केमहालए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते—पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखेज्जाओ [3]•जोयणकोडाकोडीओ°, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं ॥

१३१. एयंसि[4] णं भंते ! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अया-सयस्स एगं महं अया-वयं करेज्जा. से णं तत्थ जहण्णेणं एक्कं वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अया-सहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा, उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा । अत्थि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणेण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे[5] भवइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
होज्जा वि णं गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे,

१. सं० पा०—नमंसित्ता जाव विहरइ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. सं० पा०—एवं चेव ।
४. एयस्सि (ता) ।
५. अणक्कतपुव्वे (क, स) ।

जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव नहेहिं वा अणोक्कंतपुव्वे, नो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं, संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मबहुत्तं, जम्मण-मरणबाहुल्लं च पडुच्च अत्थि[1] केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेणं [2]•गोयमा ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा°, न मए वा वि ॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३. कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव[3] अणुत्तरविमाणेत्ति जाव[4] अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥

१३४. अयण्णं[5] भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ॥

१३५. सव्वजीवा वि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु[6]•एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१३६. अयण्णं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि° ? एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियव्वा। एवं जाव धूमप्पभाए ॥

१३७. अयण्णं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि निरयावासंसि° ? सेसं तं चेव[7] ॥

१३८. अयण्णं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि° ? सेसं जहा रयणप्पभाए ॥

---

१. 'नत्थि' इति पदं लभ्यते, किन्तु प्रस्तुतवाक्यारम्भे 'नो चेव णं' इति पाठोस्ति, तेनैतन्न सङ्गच्छते। वृत्तौ सम्यक्पाठोस्ति। स एवास्माभिः स्वीकृतः।
२. सं० पा०—तं चेव जाव न।
३. भ० १।२११-२५५।
४. भ० ५।२२२।
५. अय णं (अ, क, ता, म); अयं णं (ख, ब)
६. सं० पा०—तं चेव जाव अणंतखुत्तो।
७. भ० १२।१३४।

१३९. अयण्णं भंते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा[1] ! •असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो। सव्वजीवा वि णं भंते ! एवं चेव। एवं जाव थणियकुमारेसु। नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया॥

१४०. अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविक्काइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा[2] !• असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो। एवं सव्वजीवा वि। एवं जाव वणस्सइकाइएसु॥

१४१. अयण्णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु[3] एगमेगंसि बेइंदियावासंसि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा[4] ! •असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो। सव्वजीवा वि णं एवं चेव। एवं जाव मणुस्सेसु, नवरं—तेइंदिएसु[5] जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेइंदियाणं, वाणमंतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणेसु[6] य जहा असुरकुमाराणं॥

१४२. अयण्णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु[7] विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए [8]•जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए-आसण-सयण-भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो।° एवं सव्वजीवा वि। एवं जाव आणयपाणएसु, एवं आरणच्चुएसु वि॥

१४३. अयण्णं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एवं चेव॥

१४४. अयण्णं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढविकाइयत्ताए ?

तहेव जाव असइं, अदुवा अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा देवीत्ताए वा। एवं सव्वजीवा वि॥

१. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
२. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
३. बेंदिया° (अ, क, ख, व, म, स)।
४. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
५. तेंदिएसु (ख, स)।
६. सोहम्मीसाणे (अ, क, ख, ता, ब, म)।
७. बारसेसु (ख); बारस (ता)।
८. सं० पा०—सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव अणंतखुत्तो नो चेव णं देवित्ताए।

१४५. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए[1], भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ॥

१४६. सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,[2] °पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१४७. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[3] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१४८. सव्वजीवा वि णं भंते ! [4]°इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१४९. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए,[5] °तलवरत्ताए, माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,° सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[6] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१५०. [7]°सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए, माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो° ॥

१५१. अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए[8], भाइल्लत्ताए[9], भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[10] ! °असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥

१५२. [11]°सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

१. × (ख, म); पतित्ताए (ब, स)।
२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा हंता गो जाव अणंतखुत्तो।
३. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
४. सं० पा०—एवं चेव।
५. सं० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए।
६. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
७. सं० पा०—सव्वजीवाणं एवं चेव।
८. भियगत्ताए (ख)।
९. भाइलत्ताए (ता); भाइल्लगत्ताए (क्व०)।
१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।
११. सं० पा०—एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो।

भाइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ॥
१५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

अट्ठमो उद्देसो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[3] महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा ॥
१५५. से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा ॥
१५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ?
हंता सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥
१५७. देवे णं भंते ! महिड्ढीए [5]•जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ॥
१५८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए[6] •जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवरं—इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ॥

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९ अह भंते ! गोनंगूलवसभे[7], कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भ० १।३३६ ।
४. भ० १।४४ ।
५. सं० पा०—एवं चेव जाव बिसरीरेसु ।
६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु ।
७. गोलंगूल° (क, ब); गोणंगल° (ख, ता) ।

निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं[1] सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया ॥
१६०. अह भंते ! सीहे वग्घे, [2]°वगे, दीविए अच्छे, तरच्छे°, परस्सरे—एए णं निस्सीला [3]°निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ॥
१६१. अह भंते ! ढंके कंके विलए[4] मद्दुए सिखी—एए णं निस्सीला [5]°निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ॥
१६२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

नवमो उद्देसो

पंचविह-देव-पदं

१६३. कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा[7], भावदेवा ॥
१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ?
गोयमा ! जे भविए[8] पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए[9] । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ॥

१. उक्कोसेणं (क) ।
२. सं० पा०—जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ।
३. सं० पा०—एवं चेव जाव वत्तव्वं ।
४. पिलए (अ, ख, ता, स) ।
५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं ।
६. भ० १।५१ ।
७. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स); 'देवाहिदेव' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
८. इह जातौ एकवचनमतो बहुवचनार्थे व्याख्येयम् (वृ) ।
९. ते यस्माद्भाविदेवभावा इति गम्यम् (वृ) ।

१६५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नरदेवा-नरदेवा ?
गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी[1] उप्पण्णसमत्तचक्करयणप्पहाणा 'नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसरायवरसहस्साणुयातमग्गा'[2] सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—नरदेवा-नरदेवा ॥

१६६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—धम्मदेवा-धम्मदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवंतो[4] रियासमिया[5] जाव[6] गुत्तबंभयारी। से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—धम्मदेवा-धम्मदेवा ॥

१६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवातिदेवा[8]-देवातिदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो[9] उप्पण्णनाण-दंसणधरा[10] •अरहा जिणा केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणया सव्वण्णू° सव्वदरिसी। से तेणट्ठेणं[11] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—देवातिदेवा-देवातिदेवा ॥

१६८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भावदेवा-भावदेवा ?
गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा[12] देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति। से तेणट्ठेणं[13] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—भावदेवा-भावदेवा ॥

पंचविह-देवाणं उववाय-पदं

१६९. भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो वि उववज्जंति। भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव[14] अणुत्तरोववाइय त्ति, नवरं—असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति[15] ॥

१. ते यस्माद् इति वाक्यशेषः (वृ)।
२. चिन्हाङ्कितः पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नरदेवा।
४. ते यस्माद् इति वाक्यशेषः (वृ)।
५. इरिया° (क)।
६. भ० २।५५।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव धम्म°।
८. देवाधिदेवा (अ, क, ब, म, स)।
९. भगवंता (ख, ब, म); ते यस्मात् (वृ)।
१०. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्व°।
११. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव देवाति°।
१२. ते यस्मात् (वृ)।
१३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भाव°
१४. प० ६।
१५. उववज्जंति नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति (क, ख, ता, ब, म)।

१७०. नरदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

१७१. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, नो सक्करप्पभापुढविनेरइएहिंतो जाव नो अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ॥

१७२. जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतरदेवेहिंतो, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंतीए भेदेणं जाव[1] सव्वट्ठसिद्धत्ति ॥

१७३. धम्मदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति—पुच्छा ।
एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवरं—तम-अहेसत्तम-तेउ-वाउ-असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अंतरदीवगवज्जेसु ॥

१७४. देवातिदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

१७५. जइ नेरइएहिंतो ? एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाम्रो खोडेयव्वाम्रो ॥

१७६. जइ देवेहिंतो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ॥

१७७. भावदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति ? एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ॥

पंचविह-देवाणं ठिइ-पदं

१७८. भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ॥

१७९. नरदेवाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं सत्त वाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ॥

१८०. धम्मदेवाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

---

१. प० ६ ।

१८१. देवातिदेवाणं[1]—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ।।

१८२. भावदेवाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।।

पंचविह-देवाणं विउव्वणा-पदं

१८३. भवियदव्वदेवा णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए ? पुहत्तं पभू विउव्वित्तए ? गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए । एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव पंचिंदियरूवं वा, पुहत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा[2] जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति । एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ।।

१८४. देवातिदेवाणं[3]—पुच्छा ।
गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वंति[4] वा, विउव्विस्संति वा ।
भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ।।

पंचविह-देवाणं उव्वट्टण-पदं

१८५. भवियदव्वदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति —किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति ।
'जइ देवेसु उववज्जंति° ?'[5] सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ।।

१८६. नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, नो देवेसु उववज्जंति ।
जइ नेरइएसु उववज्जंति° ? सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ।।

१८७. धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जंति ।।

१. देवाधि° (अ, क, ब, म, स) ।
२. पच्छा अप्पणो (अ, म, स) ।
३. देवाधि° (अ, क, ख, ब, म, स) ।
४. विउव्विंति (ब, म, स)
५. × (ब, म) ।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा ।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतरदेवेसु उववज्जंति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जंति, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति । सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°वेमाणियदेवेसु° उववज्जंति, अत्थेगतिया सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

१८९. देवातिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?
गोयमा ! सिज्झंति जाव[2] सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

१९०. भावदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता - पुच्छा ।
जहा[3] वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ॥

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पदं

१९१. भवियदव्वदेवे णं भंते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिरं[4] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं जच्चेव[5] ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवरं—धम्मदेवस्स जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

पंचविह-देवाणं अंतर-पदं

१९२. भवियदव्वदेवस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ॥

१९३. नरदेवाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१९४. धम्मदेवस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥

१९५. देवातिदेवाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नत्थि अंतरं ॥

१९६. भावदेवस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—वणस्सइकालो ॥

१. सं० पा०—°अणु[illegible] जाव उव°
२. भ० १।४४ ।
३. प० ६ ।
४. केवचिरं (अ, क, ख, म) ।
५. जहेव (ब, स) ।

पंचविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१९७. एएसि णं भंते ! भवियदव्वदेवाणं, नरदेवाणं[1], •धम्मदेवाणं, देवातिदेवाणं•, भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा ।।

१९८. एएसि णं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं[3]—सोहम्मगाणं जाव अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा,[5] •सहस्सारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, माहिंदे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असंखेज्जगुणा, वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा•, जोतिसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा ।।

१९९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

दसमो उद्देसो

अट्ठविह-आय-पदं

२००. कतिविहा णं भंते ! आया[7] पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तं जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, नाणाया, दंसणाया, चरित्ताया, वीरियाया ।।

२०१. जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया ? जस्स कसायाया तस्स दवियाया ?

१. सं० पा०—नरदेवाणं जाव भावदेवाणं ।

२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. × (क, म); देवाणं (ब) ।

४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

५. सं० पा०—एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया ।

६. भ० १।५१ ।

७. आता (अ, स, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ॥

२०२. जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [1]•जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ॥

२०३. जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।
गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स वि दंसणाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि । [2]•जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि° ॥

२०४. जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।
गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एवं उवओगायाए वि समं कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ[3] । एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा[4] । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियमं अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ॥

१. सं० पा०—एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।
२. सं० पा०—एवं वीरियायाए वि समं ।
३. भणितव्वाओ (ख, ता) ।
४. नेयव्वा (ब) ।

अट्ठविह-आयाणं अप्पाबहुत्त-पदं

२०५. एयासि णं भंते ! दवियायाणं, कसायायाणं जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उवओगदविय-दंसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥

नाणदंसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पदं

२०६. आया भंते ! नाणे ? 'अण्णे नाणे'[2] ?
गोयमा आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, नाणे पुण नियमं आया ॥

२०७. आया भंते ! नेरइयाणं नाणे ? अण्णे नेरइयाणं नाणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाणं सिय नाणे, सिय अण्णाणे । नाणे पुण से नियमं आया । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

२०८. आया भंते ! पुढविकाइयाणं अण्णाणे ? अण्णे पुढविकाइयाणं अण्णाणे ?
गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं नियमं अण्णाणे, अण्णाणे वि नियमं आया । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदिय-तेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ॥

२०९. आया भंते ! दंसणे ? अण्णे दंसणे ?
गोयमा ! आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया ॥

२१०. आया भंते ! नेरइयाणं दंसणे ? अण्णे नेरइयाणं दंसणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाणं नियमं दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया । एवं जाव वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ ॥

सियवाद-पदं

२११. आया भंते ! रयणप्पभा पुढवी ? अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?
गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२१२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे[3] अवत्तव्वं—रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं [4]•गोयमा !

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. अण्णाणे (म, स) ।
३. आतिट्ठा (ता, ब, म) ।
४. सं० पा०—तं चेव जाव नोआयाति

एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं—आयाति य° नोआयाति य ।।

२१३. आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी ?
जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एवं जाव अहेसत्तमा ।।

२१४. आया भंते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया[1], °सिय अवत्तव्वं—आयाति य° नोआयाति य ।।

२१५. से केणट्ठेणं भंते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव आयाति य नोआयाति य । एवं जाव अच्चुए कप्पे ।।

२१६. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?
एवं जहा रयणप्पभा तहेव । एवं अणुत्तरविमाणा वि । एवं ईसिपब्भारा वि ।।

२१७. आया भंते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?
एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ।।

२१८. आया भंते ! दुपएसिए खंधे ? अण्णे दुपएसिए खंधे ?
गोयमा ! दुपएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ।।

२१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खंधे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ।।

२२०. आया भंते ! तिपएसिए खंधे ? अण्णे तिपएसिए खंधे ?

---

१. सं० पा०—नोआया जाव नोआयाति ।

गोयमा ! तिपसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य नोआया य ७. सिय आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ८. सिय आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ[1] य नोआयाओ य ९. सिय आयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १०. सिय नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ११. सिय नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १२. सिय नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १३. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया—एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ? गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नोआया य ७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य ९. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य[2] १०. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ११. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १२. देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १३. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया तं चेव जाव नोआयाति य ॥

१. आयाइ (ता); प्रायः एकवचनम् ।

२. य एए तिण्णि भंगा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२२२. आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे ? अण्णे [1]चउप्पएसिए खंधे ?०
गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. सिय नोआया य अवत्तव्वं[2] १६. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं —आयाति य नोआयाति य ।।

२२३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो १२-१५. असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो १६. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं-- आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सब्भाव-पज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वाइं--आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं--आयाति य नोआयाति य १९. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं- आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं— निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ।।

२२४. आया भंते ! पंचपएसिए खंधे ? अण्णे पंचपएसिए खंधे ?
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे १. सिय आया २. सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं —आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५. नोआया य अवत्तव्वेण य[3] १६. [4]°सिय आया य नोआया

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
३. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गाः ।
४. सं० पा०—तियगसंजोगे एक्को न पडइ;

य अवत्तव्वं १७. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं १९. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं २०. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं २१. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वाइं २२. सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं °।।

२२५. से केणट्ठेणं भंते ! '•एवं वुच्चइ— पंचपएसिए खंधे सिय आया जाव सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वं ? °

गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे— एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति, तियसंजोगे[2] एक्को न पडइ।

छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। जहा छप्पएसिए एवं जाव अणंतपएसिए।।

२२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ।।

एकसंयोगजाः त्रयो भङ्गाः, द्विसंयोगजाः द्वादश भङ्गाः, त्रिकसंयोगजाः सप्त भङ्गाः सर्वे मीलिता द्वाविंशतिर्भङ्गाः पञ्चप्रदेशिकस्कन्धे भवन्ति। त्रिकसंयोगे अष्टमो भङ्गः 'सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वाइं' इतिरूपः पंचप्रदेशिकस्कन्धत्वात् न सम्भवति। अतः उक्तं 'तियसंजोगे एक्को न पडइ'।

१. सं० पा०— तं चेव पडिउच्चारेयव्वं।

२. तियगसंजोगे (ख); तिगसंजोगे (ब, म)।

३. भ० १।५१।

तेरसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पुढवी २. देव ३. मणंतर, ४. पुढवी ५. आहारमेव ६. उववाए ।
७. भासा ८,९. कम्मणगारे, केयाघडिया[1] १०. समुग्घाए ॥ १ ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

२. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ॥

३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु १. एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ? २. केवतिया काउलेस्सा उववज्जंति ? ३. केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? ४. केवतिया सुक्कपक्खिया उववज्जंति ? ५. केवतिया सण्णी उववज्जंति ? ६. केवतिया असण्णी उववज्जंति ? ७. केवतिया भवसिद्धिया[3] उववज्जंति ? ८. केवतिया अभवसिद्धिया उववज्जंति ? ९. केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ? १०. केवतिया सुयनाणी उववज्जंति ? ११. केवतिया ओहिनाणी उववज्जंति ? १२. केवतिया मइअण्णाणी उववज्जंति ? १३. केवतिया सुयअण्णाणी उववज्जंति ? १४. केवतिया विब्भंगनाणी उववज्जंति ? १५. केवतिया चक्खुदंसणी

१. केयाहडिया (अ, क, ख, ब, म) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भवसिद्धीया (अ, ब, म, स) ।

उववज्जंति ? १६. केवतिया अचक्खुदसणी उववज्जंति ? १७. केवतिया ओहिदंसणी उववज्जंति ? १८. केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? १९. केवतिया भयसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? २०. केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? २१. केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जंति ? २२. केवतिया इत्थिवेदगा उववज्जंति ? २३. केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जंति ? २४ केवतिया नपुंसगवेदगा उववज्जंति ? २५-२८ केवतिया कोहकसाई उववज्जंति जाव केवतिया लोभकसाई उववज्जंति ? २९-३३. केवतिया सोइंदियोवउत्ता उववज्जंति जाव केवतिया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३४. केवतिया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३५. केवतिया मणजोगी उववज्जंति ? ३६. केवतिया वइजोगी उववज्जंति ? ३७. केवतिया कायजोगी उववज्जंति ? ३८. केवतिया सागारोवउत्ता उववज्जंति ? ३९. केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति । एवं सुक्कपक्खिया वि, 'एवं सण्णी, एवं असण्णी'[1], एवं भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी । चक्खुदंसणी न उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति एवं ओहिदंसणी वि । आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वि । इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पुरिसवेयगा न उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेयगा[2] उववज्जंति । एवं कोहकसाई जाव लोभकसाई । सोइंदियोवउत्ता न उववज्जंति, एवं जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदिओवउत्ता उववज्जंति । मणजोगी न उववज्जंति, एवं वइजोगी वि । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति । एवं सागारोवउत्ता वि, एवं अणागारोव-उत्ता'[3] वि ॥

१. एवं सण्णी वि असण्णी वि (अ); एवं सण्णी असण्णी (क, ता); एवं सण्णी एवं असण्णी वि (स) ।

२. नपुंसगवेदा (क, ब, म); नपुंसगा (ख, ता) ।

३. अणगारोवउत्ता (अ, क, ख, ता, म) ।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पदं

४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु[1] एगसमएणं केवतिया नेरइया उव्वट्टंति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति । एवं जाव सण्णी । असण्णी न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टंति । एवं जाव सुयअण्णाणी । विभंगनाणी न उव्वट्टंति, चक्खुदंसणी न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति । एवं जाव लोभकसाई । सोइंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति । मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति । एवं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ।।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं

५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? केवतिया काउलेस्सा जाव केवतिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतराहारा पण्णत्ता ? केवतिया परंपराहारा पण्णत्ता ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया चरिमा पण्णत्ता ? केवतिया अचरिमा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव संखेज्जा सण्णी पण्णत्ता । असण्णी सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता । संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता । एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता । इत्थिवेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेदगा पण्णत्ता । एवं कोह-

१. निरएसु (ता) ।

कसाई वि, माणकसाई जहा असण्णी, एवं जाव लोभकसाई। संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियोवउत्ता। नोइंदियोवउत्ता जहा असण्णी। संखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता। एवं जाव अणागारोवउत्ता। अणंतरोववण्णगा सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहा असण्णी। संखेज्जा परंपरोववण्णगा पण्णत्ता। एवं जहा अणंतरोववण्णगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा। परंपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परंपरोववण्णगा॥

६. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति?
गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति। एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[1] तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता[2], नवरं—संखेज्जवित्थडेसु असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव॥

७. सक्करप्पभाए णं भंते! पुढवीए केवतिया निरयावास[3]॰सयसहस्सा पण्णत्ता॰?
गोयमा! पणुवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा? असंखेज्जवित्थडा?
एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवरं—असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेसं तं चेव॥

८. वालुयप्पभाए णं—पुच्छा।
गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, नाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा[4] पढमसए॥

९. पंकप्पभाए णं—पुच्छा।
गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं—ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव॥

१०. धूमप्पभाए णं—पुच्छा।

१. गमा (ता)।

२. पण्णत्ता नाणत्तं लेसासु लेसाओ जहा पढमसए (अ, क, ख, ब, म, स); रत्नप्रभायां एकैव कापोतीलेश्या भवति, तेन नासौ पाठः संगच्छते।

३. स॰ पा॰—पुच्छा।

४. भ॰ १।२४४।

गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए ।।

११. तमाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास[1]•सयसहस्सा पण्णत्ता° ?
गोयमा ! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । सेसं जहा पंकप्पभाए ।।

१२. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरा[2] •महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए°, अपइट्ठाणे ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ।।

१३. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु[3] महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति ?
एवं जहा पंकप्पभाए, नवरं—तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पण्णत्तएसु[4] तहेव अत्थि । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं—असंखेज्जा भाणियव्वा ।

१४. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ? सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति ।।

१५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ?
एवं चेव ।।

१६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडा नरगा किं सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? मिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ?
गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव तमाए वि ।।

१७. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव[5] संखेज्जवित्थडे नरए किं सम्मद्दिट्ठी नेरइया—पुच्छा ।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. सं० पा०—अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ।
३. महतिमहा जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. पण्णत्ताएसु (अ, ता, म, स); पण्णत्तेसु (क, ब) ।
५. भ० १३।१२ ।

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छद्दिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति। एवं उव्वट्टंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा ॥

१८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ॥

१९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेस्से जाव उववज्जंति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु-संकिलिस्समाणेसु कण्हलेसं परिणमइ, परिणमित्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥

२०. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! जाव उववज्जंति ॥

२१. से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमइ, परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जंति ॥

२२. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ?
एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ॥

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

बीओ उद्देसो

२४. कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया ॥

२५. भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।५१।

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—असुरकुमारा—एवं भेओ[1] जहा बितियसए देवुद्देसए जाव[2] अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ।।

२६. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठिं[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ।।

२७. चोयट्ठीए[4] णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जंति जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव[5] वागरणं, नवरं—दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव । उव्वट्टंतगा वि तहेव, नवरं—असण्णी उव्वट्टंति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव । पण्णत्तएसु[6] तहेव, नवरं—संखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगा वि, नपुंसगवेदगा नत्थि । कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता । एवं माणकसाई मायकसाई । संखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेसं तं चेव । तिसु वि गमएसु[7] चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं—तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा जाव[8] असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

२८. केवतिया णं भंते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एवं जाव थणियकुमारा, नवरं—जत्थ जत्तिया भवणा[9] ।।

२९. केवतिया णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा ।।

३०. संखेज्जेसु णं भंते ! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवतिया वाणमंतरा उववज्जंति ?
एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[10] तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिण्णि गमगा ।।

१. × (ता, ब) ।
२. भ० २।११७; प० २ ।
३. चोसट्ठिं (स) ।
४. चोसट्ठीए (स) ।
५. भ० १३।३ ।
६. पण्णत्ताएसु (अ, क, ब, म, स) ।
७. गमएसु संखेज्जेसु (अ, स) ।
८. भ० १३।५ ।
९. भ० १।२१३ ।
१०. गमा (क, ख, ता, ब, म) ।

३१. केवतिया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ० ?
एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—एगा तेउलेस्सा । उववज्जंतेसु पण्णत्तेसु य असण्णी नत्थि, सेसं तं चेव ।।

३२. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ।।

३३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जंति ? केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति ?
एवं जहा जोइसियाणं तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—तिसु वि संखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयव्वा, सेसं तं चेव । असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिण्णि गमगा, नवरं—तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा । ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति, सेसं तं चेव । एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा । सणंकुमारे एवं चेव, नवरं—इत्थीवेयगा उववज्जंतेसु[2] पण्णत्तेसु य न भण्णंति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव । एवं जाव सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु य, सेसं तं चेव ।।

३४. आणय-पाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता ।
तेणं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि । एवं संखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु चयंतेसु य एवं चेव संखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असंखेज्जा, नवरं—नोइंदियोवउत्ता अणंतरोववण्णगा अणंतरोवगाढगा अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असंखेज्जा भाणियव्वा । 'आरण-अच्चुएसु'[3] एवं चेव जहा आणय-पाणएसु, नाणत्तं विमाणेसु । एवं गेवेज्जगा वि ।।

---

१. जोतिसियावाससहस्सा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. न उववज्जंति (स) ।
३. आरणच्चुएसु (अ, क, ख, ब, म, स) ।

३५. कति णं भंते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ।
'ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा ? असंखेज्जवित्थडा ?
गोयमा'[1] ! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ।।

३६. पंचसु णं भंते ! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जंति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जंति—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न वि पण्णत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति जाव संखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेसं तं चेव । असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णंति, नवरं—अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

३७. चोयट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति ? मिच्छदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति ?
एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया[2] तहा भाणियव्वा । एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एवं जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णंति, सेसं तं चेव ।।

३८. से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति ?
हंता गोयमा ! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए[3] तहेव भाणियव्वं । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाणं, जहा नीललेस्साए एवं जाव पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, नवरं—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु-विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सं परिणमंति, परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति । से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति ।।

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

१. × (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. भ० १३।१४ ।
३. भ० १३।१८-२२ ।
४. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४०. नेरइया णं भंते ! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एवं परियारणापद[1] निरवसेसं भाणियव्वं ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नरय-नेरइयाणं अप्पमहंत-पदं

४२. कति[3] णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

४३. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया[4] °महानिरया पण्णत्ता, तं जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए,° अपइट्ठाणे । ते णं नरगा छट्ठीए[5] तमाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा[6] चेव, महावित्थिण्णतरा[7] चेव, महोगासतरा[8] चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो[9] तहा महापवेसणतरा[10] चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा[11] चेव । तेसु णं नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,

१. प० ३४ ।

२. भ० १।५१ ।

३. इह च द्वारगाथे क्वचिद् दृश्यंते, तद्यथा—

१. नेरइय २. फास ३. पणिहि,
४. निरयंते चेव ५. लोयमज्झे य ।
६. दिसिविदिसाण य पवहा,
७. पवत्तणं अत्थिकाएहिं ॥१॥
८. अत्थी पएसफुसणा,
९. ओगाहणया य जीवमोगाढा ।
१०. अत्थि पएसनिसीयणं,
११. बहुसमे लोयसंठाणे ॥२॥ (वृ) ।

४. सं० पा०—महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे ।

५. छठाए (अ, क, ख, ता, म) ।

६. महंतरा (क, ब, म) ।

७. महाविच्छिण्णतरा (अ, स) ।

८. महावासतरा (अ, क); महोवासतरा (ख, ता); महावासंतरा (म, स) ।

९. 'नो' शब्दः उत्तरपदद्वयेपि सम्बन्धनीयः (वृ) ।

१०. महापवेसणतरा (म, स) ।

११. अणोयणतरा (अ, ख, ता, म, स, वृपा) ।

महासवतरा[1] चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा[2] चेव, अप्पजुतियतरा[3] चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव ।

छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव; महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव; नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव; महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव; नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'[4] चेव, अप्पजुइयतरा चेव ।

छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव; नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव । तेसु णं नरएसु नेरइया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव; नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव; अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव; नो तहा महड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव ।

पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता । एवं जहा छट्ठीए भणिया एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव रयणप्पभंति जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव ।।

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४४. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?

गोयमा ! अणिट्ठं जाव[5] अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया । एवं आउफासं, एवं जाव वणस्सइफासं ।।

१. महस्सवतरा (क, ता, म) ।
२. अप्पिड्ढतरा (ता, ब) ।
३. अप्पज्जुत्तितरा (अ, ता, ब) ।
४. तहप्पिड्ढियतरा (अ, क, ख, स); तहिप्पिड्ढयतरा (ता) ।
५. भ० १।३५७ ।

नरयाणं बाहल्ल-खुड्डत्त-पदं

४५. इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु ?
[1]●हंता गोयमा ! इमा णं रयणप्पभापुढवी दोच्चं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु।
दोच्चा णं भंते ! पुढवी तच्चं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं—पुच्छा।
हंता गोयमा ! दोच्चा णं पुढवी जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु। एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तमं पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु° ।।

निरयपरिसामंत-पदं

४६. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु[2] जे पुढविक्काइया [3]●जाव वणस्सइकाइया तेणं जीवा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु तं चेव जाव महावेदणतरा चेव। एवं° जाव अहेसत्तमा ।।

लोगमज्झ-पदं

४७. कहि णं भंते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स असंखेज्जइभागं ओगाहेत्ता, एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

४८. कहि णं भंते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए ओवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहेत्ता, एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

४९. कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं[4] बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।।

५०. कहि णं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए

१. सं० पा०—एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए।
२. निरयपरिसामंतेसु (ता)।
३. सं० पा०—एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव।
४. हत्थिं (क); हव्वि (ख, ता); हिट्ठि (ब); हट्ठि (म)।

पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[1], एत्थ णं तिरियलोगमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. [2]°दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५. पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १०. अहो ॥

५१ एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

इंदा अग्गेयी जमा, य नेरई वारुणी य वायव्वा।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा° ॥१॥

५२. इंदा णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपदेसादीया, कतिपदेसुत्तरा, कतिपदेसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! इंदा णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, दुपएसादीया, दुपएसुत्तरा, लोगं पडुच्च[3] असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया [illegible]सिया, लोगं पडुच्च मुरवसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिया पण्णत्ता ॥

५३. अग्गेयी णं भंते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! अग्गेयी णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, एगपएसादीया, एगपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया अलोगं, पडुच्च अणंतपए-सिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया [illegible], छिण्ण[illegible]तावलिसंठिया पण्णत्ता। जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी। एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि[4], जहा अग्गेई तहा चत्तारि विदिसाओ ॥

५४. विमला णं भंते ! दिसा किमादीया, [5]°किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, [illegible]पज्जवसिया, किंसंठिया पण्णत्ता° ?
गोयमा ! विमला णं दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसादीया, दुपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोगं पडुच्च [6]°असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, लोगं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च सादीया अपज्जवसिया°, रुयगसंठिया पण्णत्ता। एवं तमा वि ॥

१. खुड्डाग° (ता, ब)।
२. सं० पा०—एवं जहा दसमसए जाव नाम-धेज्जे त्ति।
३. पडुच्चा (ता) सर्वत्र।
४. चत्तारि वि (क, ख, ता, ब, म)।
५. सं० पा०—पुच्छा जहा अग्गेयीए।
६. सं० पा०—सेसं जहा अग्गेयीए नवरं रुयग-संठिया।

लोय-पदं

५५. किमियं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! पंचत्थिकाया, एस णं एवतिए लोएत्ति पवुच्चइ, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए[1] °आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए °, पोग्गलत्थिकाए ॥

५६. धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण-गमण-भासुम्मेस[2]-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावण्णे तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति । गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए ॥

५७. अधम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! अधम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण-निसीयण-तुयट्टण[3], मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावण्णे तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अधम्मत्थिकाए पवत्तंति । ठाणलक्खणे णं अधम्मत्थिकाए ॥

५८. आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं 'अजीवाण य'[4] किं पवत्तति ?
गोयमा ! आगासत्थिकाए णं जीवदव्वाण 'य अजीवदव्वाण य'[5] भायणभूए—

एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे सयं पि माएज्जा ।
कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥१॥

अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ॥

५९. जीवत्थिकाए णं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ?
गोयमा ! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं [6]°अणंताणं ओहिनाणपज्जवाणं, अणंताणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं, अणंताणं केवलनाणपज्जवाणं, अणंताणं मइअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयअण्णाणपज्जवाणं, अणंताणं विभंगनाणपज्जवाणं, अणंताणं चक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं अचक्खुदंसणपज्जवाणं, अणंताणं ओहिदंसणपज्जवाणं, अणंताणं केवलदंसणपज्जवाणं ° उवयोगं गच्छति । उवयोगलक्खणे[7] णं जीवे ॥

६०. पोग्गलत्थिकाए णं [8]°भंते ! जीवाणं किं पवत्तति° ?

१. अहम्म° (अ, क, म, स); सं० पा०— अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए ।
२. मासुमोस (अ, स); भासुमेस (ख) ।
३. प्रथमाबहुवचनलोपदर्शनात् (वृ) ।
४. × (ख, ब, म) ।
५. × (ख) ।
६. सं० पा०—एवं जहा बितियसए अत्थिकाय॰ उद्देसए जाव उवयोगं ।
७. उवओग° (क, ता); उवजोग° (ब) ।
८. सं० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं जीवाणं ओरालिय-वेउव्विय-'आहारा-तेया कम्मा'[1]-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय - जिब्भिंदिय - फासिंदिय-मणजोग-वइजोग-काय-जोग-आणापाणूणं च गहणं पवत्तति । गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ॥

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१. एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहण्णपदे[2] चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं ॥

६२. एगे भंते ! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहण्णपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

६३. एगे भंते ! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसपदे सत्तहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? छहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं । एवं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं वि, अद्धासमएहिं वि ॥

६४. एगे भंते ! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकाय[3]•पदेसेहिं पुट्ठे ?• जहण्णपदे चउहिं, उक्कोसपदे सत्तहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकाय[4]•पदेसेहिं पुट्ठे ?• सत्तहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं । सेसं जहा[5] धम्मत्थिकायस्स ॥

६५. एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? एवं जहेव[6] जीवत्थिकायस्स ॥

६६. दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? गोयमा ! जहण्णपदे छहिं, उक्कोसपदे बारसहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? बारसहिं । सेसं जहा[7] धम्मत्थिकायस्स ॥

१. आहारए तेयकम्मए (ख) ।
२. गोयमा ! जहण्णपदे (स) सर्वत्र ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. भ० १३।६१ ।
६. भ० १३।६४ ।
७. भ० १३।६१ ।

६७. तिण्णि भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? जहण्णपदे अट्ठहिं, उक्कोसपदे सत्तरसहिं । एवं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं वि । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? सत्तरसहिं । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एवं एएणं गमेणं भाणियव्वा[1] जाव दस, नवरं—जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपदे पंच । चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे दसहिं, उक्कोसपदे बावीसाए । पंच पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बारसहिं उक्कोसपदे सत्तावीसाए । छ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे चोद्दसहिं, उक्कोसपदे बत्तीसाए । सत्त पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे सोलसहिं, उक्कोसपदे सत्ततीसाए । अट्ठ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे अट्ठारसहिं, उक्कोसपदे बायालीसाए । नव पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए । दस पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बावीसाए, उक्कोसपदे बावन्नाए । आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं ।।

६८. संखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपदे तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं ? एवं चेव । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं ? तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं ? अणंतेहिं । केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं? अणंतेहिं । केवतिएहिं अद्धासमएहिं ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे[2], •जइ पुट्ठे नियमं॰ अणंतेहिं ।।

६९. असंखेज्जा भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? जहण्णपदे तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपदे तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं । सेसं जहा संखेज्जाणं जाव नियमं अणंतेहिं ।।

७०. अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ? एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं ।।

७१. एगे भंते ! अद्धासमए केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? सत्तहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे? एवं चेव, एवं आगासत्थिकाएहिं वि । केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणंतेहिं, एवं जाव अद्धासमएहिं ।।

७२. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? 'नत्थि एक्केण'[3] वि । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं ? असंखेज्जेहिं । केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं ? असंखेज्जेहिं । केवतिएहिं जीवत्थिकाय-

१. भाणियव्वं (म, स) ।
२. सं॰ पा॰—पुट्ठे जाव अणंतेहिं ।
३. नत्थिक्केण (अ, स, ता); नत्थि इक्केण (क) ।

पदेसेहिं ? अणंतेहिं । 'केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं ? अणंतेहिं । केवतिएहिं अद्धासमएहिं ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं'[1] ॥

७३. अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
असंखेज्जेहिं । केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहिं ? नत्थि एक्केण वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एवं एएणं गमएणं सव्वे[2] वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु तिसु[3] अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि ॥

धम्मत्थिकायादीणं ओगाढ-पदं

७४. जत्थ णं भंते ! एगे धम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ओगाढा? अणंता । केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणंता । केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता ॥

७५. जत्थ णं भंते ! एगे अधम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? 'नत्थि एक्को'[4] वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७६. जत्थ णं भंते ! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को । एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता । एवं जाव अद्धासमया ॥

७७. जत्थ णं भंते ! एगे जीवत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
एक्को, एवं अधम्मत्थिकायपदेसा वि, एवं आगासत्थिकायपदेसा वि । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ॥

७८. जत्थ णं भंते ! एगे पोग्गलत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?

१. एवं पोग्गलत्थि अद्धासमएहिं य (ख, ता) । ३. × (ता) ।
२. सव्वेसिण (क); सव्वेण (ता, ब, म) । ४. नत्थेक्को (ता); नत्थेक्के (ब, स)

एवं जहा जीवत्थिकायपदेसे तहेव निरवसेसं ।।

७९. जत्थ णं भंते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को सिय दोण्णि, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

८०. जत्थ णं भंते ! तिण्णि पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि । सेसं जहेव दोण्हं, एवं एक्केक्को वड्ढियव्वो पदेसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसेहिं जहेव दोण्हं जाव दसण्हं सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस । संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोण्णि जाव सिय दस, सिय संखेज्जा । असंखेज्जाणं सिय एक्को जाव सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा । जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि ।।

८१. जत्थ णं भंते! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा? अणंता । एवं जाव अद्धासमया ।।

८२. जत्थ णं भंते! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? असंखेज्जा । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? असंखेज्जा । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणंता । एवं जाव अद्धासमया ।।

८३. जत्थ णं भंते ! अधम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
असंखेज्जा । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स । एवं सव्वे—सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वो, परट्ठाणे आदिल्लगा तिण्णि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिण्णि अणंता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्को वि ।।

८४. जत्थ णं भंते ! एगे पुढविक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा ?
असंखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असंखेज्जा । केवतिया तेउकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा । केवतिया वाउकाइया ओगाढा ? असंखेज्जा । केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता ।

८५. जत्थ णं भंते ! एगे आउक्काइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा? असंखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असंखेज्जा । एवं जहेव

पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणंता ।।

८६. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय--आगासत्थिकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुणत्थ[2] जीवा ओगाढा ।।

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एयंसि णं धम्मत्थि[3]•काय-अधम्मत्थिकाय°-आगासत्थिकायंसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा[4] •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा अणंता पुणत्थ जीवा° ओगाढा ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा [5]•णिवाया णिवायगंभीरा । अह णं केई पुरिसे पदीवसहस्सं गहाय कूडागारसालाए अंतो-अंतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरंतर-णिच्छिड्डाइं° दुवारवयणाइं पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पदीवसहस्सं[6] पलीवेज्जा । से नूणं गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्णसंबद्धाओ अण्णमण्णपुट्ठाओ अण्णमण्णसंबद्धपुट्ठाओ[7] अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
'हंता चिट्ठंति'[8] ।
चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?
भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणंता पुणत्थ[9] जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अणंता पुणत्थ जीवा ओगाढा ।।

लोय-पदं

८८. कहि णं भंते ! लोए बहुसमे, कहि णं भंते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[10], एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ।।

१. एतेसि (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. पुण तत्थ (अ, ख, म, स); पुणेत्थ (क) ।
३. सं० पा०—धम्मत्थि जाव आगासत्थिकायंसि ।
४. सं० पा०—वा जाव ओगाढा ।
५. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइं ।
६. दीव° (अ) ।
७. जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
८. × (ब, म) ।
९. पुण तत्थ (अ, ख, ब, म, स) ।
१०. खुड्डाग° (ब) ।

८९. कहि णं भंते ! विग्गहविग्गहिए[1] लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! विग्गहकंडए, एत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ॥

९०. किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठियसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[2], मज्झे [3]•संखित्ते, उप्पिं विसाले; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए। तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं ° अंतं करेति ॥

९१. एयस्स णं भंते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए ॥

९२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

पंचमो उद्देसो

आहार-पदं

९३. नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा ? अचित्ताहारा ? मीसाहारा ?
गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा। एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो[6] ॥

९४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

१. विग्गहिए (अ)।
२. वित्थिण्णे (अ, ब, म)।
३. सं० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अंतं।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।
६. प० २८।१।
७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

९५. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—संतरं भंते ! नेरइया उववज्जंति ? निरंतरं नेरइया उववज्जंति ?
गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति । एवं असुरकुमारा वि । एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव[2] संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ।।

चमरचंच-आवास-पदं

९६. कहि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[3] चमरचंचे[4] नामं आवासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे—एवं जहा वितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा[5] । तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमे णं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ 'पणतीसं च सयसहस्साइं'[6] पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दं तिरियं वीइवइत्ता, एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते—चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं । से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव[7] चत्तारि पासायपंतीओ ।

१. भ० १।४-१० ।
२. भ० ९ ८०-८५ ।
३. असुररण्णो (अ, ता, म, स) ।
४. चमरचंचा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. भ० २।११८-१२१; नेयव्वा, नवरं—इमं नाणत्तं जाव तिगिच्छकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स, अण्णेसिं च बहूणं सेसं तं चेव जाव तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं (अ, क, ख, ता, ब, म स); अस्मिन् द्वितीयशतकस्य सभाख्योद्देशकस्य समर्पणमस्ति । एतत्समर्पणानुसारेण द्वितीयशतकस्य, 'जंबुद्दीवप्पमाणा' एतावत्पर्यन्तः पाठोत्र समायोजनार्हः, किन्तु 'नवरं इमं नाणत्तं' अस्याभिप्रायो नावगम्यते । 'नेयव्वा' अतः परवर्तिपाठो नावश्यकः प्रतिभाति, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः ।
६. तं चेव जाव (अ, क, ख, ता, ब) ।
७. भ० २।१२१ ।

९७. चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९८. से केणं खाइं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे आवासे ? गोयमा ! से जहानामए—इहं मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणियलेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारावारियलेणाइ[1] वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति सयंति [2]•चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं° कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुभवमाणा विहरंति, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेंति । एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डा-रतिपत्तियं, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेति । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे° आवासे ॥

९९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

१००. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ[5] •चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

उद्दायणकहा-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[6] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[7] । तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[8] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

१०२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु[10] जणवएसु वीतीभए[11] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[12] । तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए,

१. वारधारिय° (अ, क, म); धारवारिय° (ख, ब); धारिवारिय° (स) ।
२. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण° ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव आवासे ।
४. भ० १।५१ ।
५. सं० पा०—गुणसिलाओ जाव विहरइ ।
६. ओ० सू० १ ।
७. ओ० सू० २-१३ ।
८. सं० पा०—चरमाणे जाव विहरमाणे ।
९. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव विहरइ ।
१०. सिंधु° (स) ।
११. वीभवे (ता); 'विदर्भे' ति केचित् (वृ) ।
१२. ओ० सू० १ ।

एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे—वण्णओ[1]। तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे[2] नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[3]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पउमावती नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[4]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था—वण्णओ जाव[5] विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी[6] नामं कुमारे होत्था—सुकुमाल[7]•पाणिपाए अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजायसव्वंग-सुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे पडिरूवे। से णं अभीयी कुमारे जुवराया वि होत्था—उद्दायणस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्ख-माणे°-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे[8] केसी नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे। से णं उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं[9], महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर[10]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं[11] •सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[12] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१०३. तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव[13] पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ॥

१०४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[14] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे°

१. भ० ११।५७।
२. ओदायणे (अ); उदायणे (स) सर्वत्र।
३. ओ० सू० १४।
४. ओ० सू० १५।
५. ओ० सू० १५।
६. अभीति (अ, स,)।
७. सं० पा०—जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे।
८. भायणेज्जे (अ, ख, म)।
९. नगरसयाणं (अ, ब, म, वृपा)।
१०. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
११. सं० पा०—पोरेवच्चं जाव कारेमाणे।
१२. भ० ३।९४।
१३. भ० १२।६।
१४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था

समुप्पज्जित्था—धन्ना णं ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संबाहसण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना णं ते राईसर-तलवर[1]-●माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो[2] जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति जाव[3] पज्जुवासंति । जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[4] ●दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा[5] ●अप्पाणं भावेमाणे° विहरेज्जा, तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा नमंसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा ।।

१०५. तए णं समणे भगवं महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवं अज्झत्थियं[6] ●चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° समुप्पन्नं वियाणित्ता चंपाओ नगरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु[7]●गामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[8] संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१०६. तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ।।

१०७. तए णं से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं सब्भितरबाहिरियं जहा कूणिओ ओववाइए जाव[10] पज्जुवासइ । पउमावती-पामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव[11] पज्जुवासंति । धम्मकहा ।।

१०८. तए णं से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव[12] नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते[13] ! ●अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छिय-

१. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह° ।
२. °प्पभिइओ (अ, स) ।
३. भ० २।३० ।
४. सं० पा०—गामाणुगामं जाव विहरमाणे ।
५. सं० पा०—तवसा जाव विहरेज्जा ।
६. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं ।
७. सं० पा०—गामाणु जाव विहरमाणे ।
८. भ० १।७ ।
९. ओ० सू० ५२ ।
१०. ओ० सू० ५५-६६ ।
११. ओ० सू० ७० ।
१२. भ० १।१० ।
१३. सं० पा०—भंते जाव से ।

मेयं भंते ! °—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।।

१०६. तए णं से उद्दायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थि द्रुहइ[2], द्रुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

११०. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अभीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्ठे कंते[4] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग पुण पासणयाए ? तं जदि णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[5] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य[6] •बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य° जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[7] •अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए, सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थि ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं

१. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।
२. दुहइ (ता) ।
३. अब्भत्थिए (अ, ता, स); सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. सं० पा०—कंते जाव किमंग ।
५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि ।
६. सं० पा०—रट्ठे य जाव जणवए ।
७. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए ।
८. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए ।

सब्भिंतरबाहिरियं[1] •आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[2] सुगंधवरगंधगंधियं गंध-वट्टिभूयं करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

१११. तए णं से उद्दायणे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! केसिस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव[3] परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीयीभयपामोक्खाणं तिण्णि तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर[4]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर सेणावच्चं° कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति ॥

११२. तए णं से केसी कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[5] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

११३. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ ॥

११४. तए णं से केसी राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ—एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भिंतरबाहिरियं तहेव जाव[6] निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेंति ॥

११५. तए णं से केसी राया अणेगगणनायग[7]-•दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिपाल-सद्धिं°-संपरिवुडे उद्दायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं जहा जमालिस्स जाव[8] महया-महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण सामी! किं देमो? किं पयच्छामो? किणा वा ते अट्ठो?

११६. तए णं से उद्दायणे राया केसिं रायं एवं वयासी—इच्छामि णं देवाणुप्पिया! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणियं, कासवगं च सद्दावियं—एवं जहा[9] जमालिस्स, नवरं—पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा ॥

११७. तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, रयावेत्ता उद्दायणं रायं सेया-पीतएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेसं जहा जमालिस्स

---

१. सं० पा०—°बाहिरियं जाव पच्चप्पिणंति ।
२. ओ० सू० ५५ ।
३. भ० ११।६१ ।
४. सं० पा०—राईसर जाव कारेमाणे ।
५. ओ० सू० १४ ।
६. भ० ९।१८०, १८१ ।
७. सं० पा०—अणेगगणनायग जाव संपरिवुडे ।
८. भ० ९।१८२ ।
९. भ० ९।१८४-१८६ ।

जाव[1] चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव[2] अम्मधाती, नवरं पउमावती हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा सेसं तं चेव जाव[3] छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ॥

११८. [4]•तए णं सा पउमावती देवी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायणं रायं एवं वयासी—जइयव्वं सामी! घडियव्वं सामी! परक्कमियव्वं सामी! अस्सिं च णं अट्ठे° नो पमादेयव्वं त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता[5] •जामेव दिसं पाउब्भुया तामेव दिसं° पडिगया ॥

११९. तए णं से उद्दायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सेसं जहा उसभदत्तस्स जाव[6] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उद्दायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए—इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं रायं

१. भ० ९।१९०-१९२।
२. भ० ९।१९३, १९४।
३. भ० ९।१९५-२०९।
४. सं० पा०—तं चेव पउमावती पडिच्छइ जाव घडियव्वं सामी! जाव नो।
५. सं० पा०—नमंसित्ता जाव पडिगया।
६. भ० ९।१५०,१५१।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
८. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइए।

उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए णं से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था॥

१२१. इमीसे[2] रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठिं[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। तए णं से अभीयीकुमारे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठीए आयावाअसुरकुमारावाससयसहस्सेसु[4] अण्णयरंसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो। तत्थ णं अत्थेगतियाणं आयावगाणं असुरकुमाराणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं अभीयिस्स वि देवस्स एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता॥

१२२. से णं भंते! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[5] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति॥

१२३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[6]॥

सत्तमो उद्देसो

भासा-पदं

१२४. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—आया भंते! भासा? अण्णा भासा?
गोयमा! नो आया भासा, अण्णा भासा।
रूविं भंते! भासा? अरूविं भासा?

1. भ० २।९४।
2. तेणं कालेणं तेणं समएणं इमीसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अयं पाठः अप्रासङ्गिकोस्ति। शाश्वतपदार्थानां निरूपणे कालनिर्देशो नावश्यकोस्ति। केनापि कारणेन प्रवाहपाती लेखः संजातः इति प्रतीयते, तेनात्र पाठान्तरत्वेनास्माभिः स्वीकृतः।
3. चोसट्ठि (स)।
4. °सहस्सेसु असुरकुमारावासेसु (ता)।
5. भ० २।७३।
6. भ० १।५१।
7. भ० १।४-१०।

गोयमा ! रूविं भासा, नो अरूविं भासा ।
सचित्ता[1] भंते ! भासा ? अचित्ता[2] भासा ?
गोयमा ! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा ।
जीवा भंते ! भासा ? अजीवा भासा ?
गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
जीवाणं भंते ! भासा ? अजीवाणं भासा ?
गोयमा ! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिक्कंता भासा ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति ।।

१२५. कतिविहा णं भंते ! भासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, तं जहा—सच्चा, मोसा, सच्चामोसा असच्चामोसा ।।

मण-पदं

१२६. आया भंते ! मणे ? अण्णे मणे ?
गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे ।
[3]●रूविं भंते ! मणे ? अरूविं मणे ?
गोयमा ! रूविं मणे, नो अरूविं मणे ।
सचित्ते भंते ! मणे ? अचित्ते मणे ?
गोयमा ! नो सचित्ते मणे, अचित्ते मणे ।
जीवे भंते ! मणे ? अजीवे मणे ?
गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ।।
जीवाणं भंते ! मणे ? अजीवाणं मणे ?
गोयमा ! जीवाणं मणे°, नो अजीवाणं मणे ।
पुव्वि भंते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? [4]●मणसमयवीतिक्कंते मणे ?

१. सच्चित्ता (क, ता, म) ।
२. अच्चित्ता (क, ता, म) ।
३. सं० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव नो ।
४. सं० पा०—एवं जहेव भासा ।

गोयमा ! नो पुव्विं मणे, मणिज्जमाणे मणे, नो मणसमयवीतिक्कंते मणे° ।
पुव्विं भंते ! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिक्कंते मणे भिज्जति ?[१]°
गोयमा ! नो पुव्विं मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, नो मणसमयवीतिक्कंते मणे भिज्जति° ।।

१२७. कतिविहे णं भंते ! मणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चे[२], °मोसे, सच्चामोसे°, असच्चामोसे ।।

काय-पदं

१२८. आया भंते ! काये ? अण्णे काये ?
गोयमा ! आया वि काये, अण्णे वि काये ।
रूविं भंते ! काये ? अरूविं काये[३] ?
गोयमा ! रूविं पि काये, अरूविं पि काये ।
[४]°सचित्ते भंते ! काये ? अचित्ते काये ?
गोयमा ! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये ।
जीवे भंते ! काये ? अजीवे काये ?
गोयमा ! जीवे वि काये, अजीवे वि काये ।
जीवाणं भंते ! काये ? अजीवाणं काये ?
गोयमा ! जीवाण वि काये, अजीवाण वि काये° ।
पुव्विं भंते ! काये[५] ? [६]°कायिज्जमाणे काये ? कायसमयवीतिक्कंते काये° ?
गोयमा ! पुव्विं पि काये, कायिज्जमाणे वि काये, कायसमयवीतिक्कंते वि काये ।
पुव्विं भंते ! काये भिज्जति ? [६]°कायिज्जमाणे काये भिज्जति ? कायसमयवीतिक्कंते काये भिज्जति ?°
गोयमा ! पुव्विं पि काये भिज्जति[७], °कायिज्जमाणे वि काये भिज्जति, कायसमयवीतिक्कंते वि° काये भिज्जति ।।

१२९. कतिविहे णं भंते ! काये पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे काये पण्णत्ते, तं जहा—ओरालिए[८], ओरालियमीसए, वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारगमीसए, कम्मए ।।

---

१. सं० पा०—एवं जहेव भासा ।
२. सं० पा०—सच्चे जाव असच्चामोसे ।
३. काये पुच्छा (स) ।
४. सं० पा०—एवं एक्केक्के पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये । जीवे वि काए, अजीवे वि काए, जीवाण वि काए, अजीवाण वि काये ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. सं० पा०—भिज्जति जाव काये ।
८. ओराले (स) ।

मरण-पदं

१३०. कतिविहे णं भंते ! मरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे मरणे पण्णत्ते, तं जहा—आवीचियमरणे[1], ओहिमरणे[2], आतियंतियमरणे[3], बालमरणे, पंडियमरणे ॥

१३१. आवीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा - दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ॥

१३२. दव्वावीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्खजोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ॥

१३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे-नेरइयदव्वावीचियमरणे ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं 'निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं'[4] अभिसमण्णागयाइं भवंति ताइं दव्वाइं आवीचिमणुसमयं[5] निरंतरं मरंति त्ति कट्टु । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देवदव्वावीचियमरणे ॥

१३४. खेत्तावीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्तावीचियमरणे ॥

१३५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे-नेरइयखेत्तावीचियमरणे ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एवं जाव भावावीचियमरणे ॥

१३६. ओहिमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे,[6] °कालोहिमरणे, भवोहिमरणे°, भावोहिमरणे ॥

१. आवीयिय° (ब) ।
२. अवहि° (ब, म) ।
३. आदितिय° (अ, स); आदियंतिय; (क, ख, ब) ।
४. × (ब) ।
५. आवीचियम° (क, स) ।
६. सं० पा०—खेत्तोहिमरणे जाव भवो° ।

१३७. दव्वोहिमरणे णं भंते कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहि-मरणे ।।

१३८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वोहिमरणे-नेरइयदव्वोहिमरणे ?
गोयमा ! 'जे णं'[1] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, 'ते णं'[2] नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले पुणो वि मरिस्संति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे । एवं तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वोहिमरणे[3] वि । एवं एएणं गमेणं खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ।।

१३९. आतियंतियमरणे णं भंते ! —पुच्छा ।
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वातियंतियमरणे, खेत्तातियंतियमरणे जाव भावातियंतियमरणे ।।

१४०. दव्वातियंतियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयदव्वातियंतियमरणे जाव देवदव्वा-तियंतियमरणे ।।।

१४१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वातियंतियमरणे-नेरइयदव्वातियंतिय-मरणे ?
गोयमा ! 'जे णं'[4] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, 'ते णं'[5] नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले नो पुणो वि मरिस्संति । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वातियंतियमरणे । एवं तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वातियं-तियमरणे । एवं खेत्तातियंतियमरणे वि, एवं जाव भावातियंतियमरणे वि ।।

१४२. बालमरणेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, तं जहा—१. वलयमरणे '[6]२. वसट्टमरणे ३. अंतोसल्लमरणे ४. तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७. जलप्पवेसे ८. जलणप्पवेसे ९. विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे ११. वेहाणसे° १२. गद्धपट्ठे ।।

१४३. पंडियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य ।।

१४४. पाओवगमणे[7] णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

१. जं एां (अ, क, ख, ता, ब); जण्णं (म) ।
२. जं णं (अ, ता, ब, स); जे एां (ख); 'त' इति गम्यम् (वृ) ।
३. देवोहिमरणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
४. जं एां (अ, क, ता, स); जण्णं (म) ।
५. जे णं (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६. सं० पा०—जहा खंदए जाव गद्धपट्ठे ।
७. °गमणमरणेणं (ता); पाओवगमरणेणं (ब) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमं अपडिकम्मे ।।

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
[1]•गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य।° नियमं सपडिकम्मे ।।

१४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

अट्ठमो उद्देसो

कम्मपगडि-पदं

१४७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। एवं बंधट्ठिइ-उद्देसो[3] भाणियव्वो निरवसेसो जहा[4] पण्णवणाए[5] ।।

१४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

नवमो उद्देसो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ।।

१. सं० पा०—एवं तं चेव नवरं नियमं सपडिकम्मे ।
२. भ० १।५१ ।
३. उद्देसओ (क, ता, ब, म) ।
४. प० २४ ।
५. इह च वाचनान्तरे संग्रहणीगाथास्ति, सा चेयं—
पयडीणं भेयठिई, बंधोवि य इंदियाणुवाएणं ।
केरिसय जहन्नठिइं, बंधइ उक्कोसियं वावि ।।
(वृ) ।
६. भ० १।५१ ।
७. भ० १।४-१० ।

१५०. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू केयाघडियाकिच्चहत्थगयाइं[1] रूवाइं विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे °गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ जाव[2] पभू णं गोयमा ! अणगारे णं भाविअप्पा केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं बहूहिं इत्थिरूवेहिं आइण्णं वितिकिण्णं उवत्थडं संथडं फुडं अवगाढावगाढं करेत्तए। एस णं गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए°, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्विस्सति वा ॥

१५१. से जहानामए केइ पुरिसे हिरण्णपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगएणं[4] अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
सेसं तं चेव एवं सुवण्णपेलं, एवं रयणपेलं, वइरपेलं, वत्थपेलं[5], आभरणपेलं, एवं वियलकडं[6], सुंबकडं[7], चम्मकडं[8], कंबलकडं[9], एवं अयभारं, तंबभारं, तउयभारं, सीसगभारं, हिरण्णभारं, सुवण्णभारं, वइरभारं ॥

१५२. से जहानामए वग्गुली सिया, दो वि पाए उल्लंबिया-उल्लंबिया उड्ढंपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
एवं जण्णोवइयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[10] विउव्विस्सति वा ॥

१५३. से जहानामए जलोया सिया, उदगंसि कायं उव्विहिया-उव्विहिया गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं जहा वग्गुलीए ॥

१५४. से जहानामए बीयंबीयगसउणे[11] सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ॥

१५५. से जहानामए पक्खिविरालए सिया, रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ॥

---

१. केयाघडियाहत्थ (त्थे) किच्चगयाइ (क, ख, ता, ब, म, स)।
२. सं० पा०—एवं जहा तइयसए पंचमुद्देसए जाव नो।
३. भ० ३।४।
४. हिरण्णपेर° (ता); हिरण्णपेउ° (क्व०)।
५. × (क, ब, म)।
६. वियलकिडं (क, ख, ब, स); विदलकिरं (ता)।
७. मुंठकडं (अ); मुंठकिडं (ख, ब); मुंठकिरं (ता); मुंट्टिकडं (म); °किड्डं (स)।
८. °किडं (क, ख, ब); °किरं (ता); किड्डं (स)।
९. °किडं (क, ख, ब); °किरं (ता); °किड्डं (स)।
१०. भ० ३।२०२,२०३।
११. °सउणए (ख, ता)।

१५६. से जहानामए जीवंजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे-समतुरंगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेसं तं चेव ।।

१५७. से जहानामए हंसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हंसकिच्चगएणं अप्पाणेणं, तं चेव ।।

१५८. से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइं डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ।।

१५९. से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं, सेसं जहा[1] केयाघडियाए । एवं छत्तं, एवं चम्मं[2] ।।

१६०. से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव । एवं वइरं, वेरुलियं जाव[3] रिट्ठं । एवं उप्पलहत्थगं, एवं पउमहत्थगं, कुमुदहत्थगं, [4]°नलिणहत्थगं, सुभगहत्थगं, सुगंधियहत्थगं, पोंडरीयहत्थगं, महापोंडरीयहत्थगं, सयपत्तहत्थगं°, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव ।।

१६१. से जहानामए केइ पुरिसे भिसं अवद्दालिय-अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएणं अप्पाणेणं, तं चेव ।।

१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेसं जहा[5] वग्गुलीए ।।

१६३. से जहानामए वणसंडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव[6] महामेहनिकुरंबभूए[7], पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वणसंडकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? सेसं तं चेव ।।

१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्प-गंभीरसीयलजला जाव[8] सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा पोक्खरणीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?

हंता उप्पएज्जा ।।

१६५. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? सेसं तं चेव जाव विउव्विस्सति वा ।।

१. भ० १३।१४६,१५० ।
२. चमरं (म) ।
३. भ० ३।४ ।
४. सं० पा०—एवं जाव से ।
५. भ० १३।१५२ ।
६. ओ० सू० ४ ।
७. °निउयम्बभूए (स); °निकुरंबभूए (ता, ब) ।
८. ओ० सू० ६, भ० वृत्ति ।

१६६. से भंते ! किं मायी विउव्वति ? अमायी विउव्वति ?
गोयमा ! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति । मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय'•पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा । अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेइ°, अत्थि तस्स आराहणा ।।

१६७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ।।

दसमो उद्देसो

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

१६८. कति णं भंते ! छाउमत्थियसमुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पण्णवणाए जाव' आहारगसमुग्घायेत्ति ।।

१६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव' विहरइ ।।

———

१. सं० पा०—एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि ।
२. भ० १।५१ ।
३. प० ३६ ।
४. भ० १।५१ ।

चोद्दसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. चर २. उम्माद ३. सरीरे, ४. पोग्गल ५. अगणी तहा ६. किमाहारे ।
७,८. संसिट्ठमंतरे[1] खलु, ९. अणगारे १०. केवली चेव ॥ १ ॥

लेस्साणुसारि-उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं देवावासं वीतिक्कंते, परमं देवावासमसंपत्ते, एत्थ णं अंतरा कालं करेज्जा, तस्स णं भंते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ[3] तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव[4] पडिपडति[5], से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥

२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिक्कंते, परमं असुर-[6]कुमारावासमसंपत्ते, एत्थ णं अंतरा कालं करेज्जा, तस्स णं भंते ! कहिं गती ? कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा असुरकुमारावासा, तहिं तस्स गती, तहिं तस्स उववाए पण्णत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडिपडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ।°
एवं जाव थणियकुमारावासं, जोइसियावासं, एवं वेमाणियावासं जाव विहरइ ॥

१. संसट्ठ° (अ, क, ख, ब, म, स) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. पलियस्सओ (ख); परियस्सतो (ब, म) ।
४. °मेवा (क, ब) ।
५. परिपडइ (ता) ।
६. सं० पा०—एवं चेव ।

नेरइयादीणं गतिविसय-पदं

३. नेरइयाणं भंते ! कहं सीहा गती ? कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए—केइपुरिसे तरुणे बलवं जुगवं[1] •जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-निचित-गत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे॰ निउणसिप्पोवगए आउंटियं[2] बाहं पसारेज्जा, पसारियं वा बाहं आउंटेज्जा[3], विक्खिण्णं वा मुट्ठिं साहरेज्जा, साहरियं वा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसियं[4] वा अच्छिं निम्मिसेज्जा, निम्मिसियं वा अच्छिं उम्मिसेज्जा, 'भवे एयारूवे'[5] ? नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइया णं एगसमइएण[6] वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जंति । नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—एगिंदियाणं चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे । सेसं तं चेव ॥

नेरइयादीणं अणंतरोववन्नगादि-पदं

४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरोववन्नगा ? परंपरोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि, अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि ॥

५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[7] •नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि॰, अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे णं नेरइया अपढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया परंपरोववन्नगा, जे णं नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा । से तेणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा वि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥

६. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ॥

---

१. सं० पा०—जुगवं जाव निउण॰ ।
२. आउट्टियं (अ, ख, स); आउंदियं (क); आदिउट्टियं (ता) ।
३. आउट्टेज्जा (ता) ।
४. अणिमिसियं (अ, क, ता, ब, म, स); उण्णिसियं (ख) ।
५. भवे एयारूवे सिया (अ); भवेयारूवे (क, ख, ता, ब, म) ।
६. ॰समएण (अ) ।
७. सं० पा०—वुच्चइ जाव अणंतर ।

७. परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।।

८. अणंतर-परंपर-अणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । सेसं तं चेव ।।

९. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरनिग्गया ? परंपरनिग्गया ? अणंतर-परंपर-अनिग्गया ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरनिग्गया वि, 'परंपरनिग्गया वि'[1], अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ।।

१०. से केणट्ठेणं जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतर-परंपर-अनिग्गया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अणंतर-परंपर-अनिग्गया वि । एवं जाव वेमाणिया ।।

११. अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति ।।

१२. परंपरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति ।।

१३. अणंतरं-परंपर-अनिग्गया णं भंते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति । निरवसेसं जाव वेमाणिया ।।

१४. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा[2] ? परंपरखेदोववन्नगा ? अणंतर-परंपर-खेदाणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणंतरखेदोववन्नगा वि, परंपरखेदोववन्नगा वि, अणंतर-

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. °खेत्तोववन्नगा (क, ब); खेतोववन्नगा (ता) ।

परंपर-खेदाणुववन्नगा वि। एवं एएणं अभिलावेणं ते[1] चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा ॥

१५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

उम्माद-पदं

१६. कतिविहे णं भंते ! उम्मादे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे[3] य, मोहणिज्जस्स य[4] कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव ॥

१७. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं ॥

१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स 'य कम्मस्स'[5] उदएणं ?
गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा। से तेणट्ठेणं[6] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स° उदएणं[7] ॥

१९. असुरकुमाराणं भंते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ?
[8]•गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स कम्मस्स य उदएणं ॥

२०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तं जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं ?

---

१. तं (ब)।
२. भ० १।५१।
३. जक्खादेसे (ता); जक्खायेसे (ब); जक्खावेसे (वव०)।
४. व (ता); वा (स)।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. स० पा०—तेणट्ठेणं जाव उदएणं।
७. उम्मादे (म)।
८. सं० पा०—एवं जहेव नेरइयाणं नवरं देवे।

गोयमा ! ° देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा [1]•कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणिज्जा ° । से तेणट्ठेणं जाव उदएणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं जाव मणुस्साणं—एएसिं जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।।

वुट्ठिकायकरण-पदं

२१. अत्थि णं भंते ! पज्जण्णे[2] कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति[3] ?
हंता अत्थि ।।

२२. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भिंतरपरिसए देवे सद्दावेइ । तए णं ते अब्भिंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते मज्झिमपरिसगा[4] देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति । तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति । तए णं ते [5]•आभिओगिया देवा° सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति । तए णं ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति । एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति ।।

२३. अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
हंता अत्थि ।।

२४. किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो—एएसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमण-महिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति । एवं नागकुमारा वि, एवं जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ।।

तमुक्कायकरण-पदं

२५. जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्कायं काउकामे भवति से कह-मियाणिं पकरेति ?

१. सं० पा०—सेसं तं चेव ।
२. पज्जुण्णे (क, ता, म) ।
३. इह स्थाने शक्रोपि तं प्रकरोतीति दृश्यम् (वृ)।
४. °परिसोववण्णगा (अ, ख, ब) ।
५. सं० पा०—ते जाव सद्दाविया ।

गोयमा! ताहे चेव णं से ईसाणे देविंदे देवराया अब्भिंतरपरिसए देवे सद्दावेति। तए णं ते अब्भिंतरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा [1]•मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति। तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति। तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति। तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति°। तए णं ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काइए देवे सद्दावेंति। तए णं ते तमुक्काइया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्कायं पकरेंति। एवं खलु गोयमा! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्कायं पकरेति॥

२६. अत्थि णं भंते! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेंति?
हंता अत्थि॥

२७. किंपत्तियं णं भंते! असुरकुमारा देवा तमुक्कायं पकरेंति?
गोयमा! किड्डा-रतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउं वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एवं खलु गोयमा! असुरकुमारा वि देवा तमुक्कायं पकरेंति। एवं जाव[2] वेमाणिया॥

२८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

तइओ उद्देसो

विणयविहि-पदं

२९. [4]देवे णं भंते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं[5] वीइवएज्जा?
गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

३०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा?
गोयमा! दुविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य,

१. सं० पा०—एवं जहेव सक्कस्स जाव तए।
२. भ० १४।२३।
३. भ० १।५१।
४. उद्देशकस्य प्रारम्भे क्वचिदियं द्वारगाथा दृश्यते—
महक्काए सक्कारे,
सत्थेणं वीईवयंति देवा उ।
वासं चेव य ठाणा,
नेरइयाणं तु परिणामे॥
५. मज्झेणं मज्झेणं (अ, क, ख, ता, ब)।

अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए[1] देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वंदइ, नो नमंसइ, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेइ, नो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं[2] पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा। तत्थ णं जे से अमायीसम्मद्दिट्ठी-उववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वंदइ नमंसइ[3] •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासइ। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[4]—•अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए° नो वीइवएज्जा ॥

३१. असुरकुमारे णं भंते ! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झं-मज्झेणं वीइवएज्जा ? एवं चेव। एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव[5] वेमाणिए ॥

३२. अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा ? किइकम्मे इ वा ? अब्भुट्ठाणे इ वा ? अंजलिपग्गहे इ वा ? आसणाभिग्गहे इ वा ? आस-णाणुप्पदाणे इ वा ? एंतस्स[6] पच्चुग्गच्छणया[7] ? ठियस्स पज्जुवासणया ? गच्छंतस्स पडिसंसाहणया ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३३. अत्थि णं भंते ! असुरकुमाराणं सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा ?

हंता अत्थि। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं जाव चउरिंदियाणं—एएसिं[8] जहा नेरइयाणं ॥

३४. अत्थि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे इ वा जाव गच्छंतस्स पडिसंसाहणया वा ?

हंता अत्थि। नो चेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा ॥

३५. [9]•अत्थि णं भंते ! मणुस्साणं सक्कारे इ वा ? सम्माणे इ वा ? किइकम्मे इ वा ? अब्भुट्ठाणे इ वा ? अंजलिपग्गहे इ वा ? आसणाभिग्गहे इ वा ? आस-णाणुप्पदाणे इ वा ? एंतस्स पच्चुग्गच्छणया ? ठियस्स पज्जुवासणया ? गच्छं-तस्स पडिसंसाहणया ?

हंता अत्थि।° वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥

१. °मिच्छदिट्ठी° (अ, क, ख, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. सं० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासइ।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव नो।
५. भ० १४।२३।
६. इंतस्स (अ)।
७. पच्चण्णत्थणया (अ)।
८. एसिं (क, ख, ता, ब, म)।
९. सं० पा०—मणुस्साणं जाव वेमाणियाणं।

३६. अप्पिड्ढिए[1] णं भंते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३७. समिड्ढिए[2] णं भंते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ॥

३८. से णं भंते ! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू ? अणक्कमित्ता पभू ?
गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ॥

३९. से णं भंते ! किं पुव्वि सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा सत्थेणं अक्कमिज्जा । एवं एएणं अभिलावेणं जहा दसमसए आइड्ढी-उद्देसए[3] तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव[4] महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ॥

४०. रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं °अकंतं अप्पियं असुभं अमणुण्णं° अमणामं । एवं जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया ॥

४१. [5]°रयणप्पभपुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं वेदनापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ।° एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए जाव[6]—

४२. अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते ! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ?
गोयमा ! अणिट्ठं जाव अमणामं ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

१. अप्पिड्ढीए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. समिड्ढीए (अ, क, ब, म); समड्ढीए (ता, स) ।
३. आतिड्ढीयउद्देसए (ता, ब, म) ।
४. भ० १०।२८-३८ ।
५. सं० पा०—अणिट्ठं जाव अमणामं ।
६. सं० पा०—एवं वेदणापरिणामं ।
७. जी० ३ ।
८. भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४. [1]एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी ? समयं अलुक्खी ? समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्विं च णं करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूवं परिणामं परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ?

हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं तं चेव जाव एगरूवे सिया ।।

४५. एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं लुक्खी ? एवं चेव ।।

४६. [2]•एस णं भंते ! पोग्गले अणागयमणंतं सासयं समयं लुक्खी ? एवं चेव° ।।

४७. एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी ? एवं चेव खंधे वि जहा पोग्गले ।।

४८. एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं दुक्खी ? समयं अदुक्खी ? समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्विं च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूयं परिणामं परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?

हंता गोयमा ! एस णं जीवे तीतमणंतं सासयं समयं जाव एगभूए सिया । एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ।।

४९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सासए ? असासए ?

गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ।।

५०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं[3] •गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं° फासपज्जवेहिं असासए । से तेणट्ठेणं[4] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—सिय सासए, सिय असासए ।।

५१. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे ? अचरिमे ?

गोयमा ! दव्वादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे । खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । कालादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । भावादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

१. इह पुनरुद्देशकार्थसंग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते, सा चेयं—
१. पोग्गल २. खंधे ३. जीवे,
४. परमाणू ५. सासए य चरमे य ।
६. दुविहे खलु परिणामे,
अज्जीवाणं च जीवाणं ।।

२. सं० पा०—एवं अणागयमणंतं पि ।

३. सं० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव फास° ।

४. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सिय ।

५२. कतिविहे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तं जहा—जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य । एवं परिणामपयं[1] निरवसेसं भाणियव्वं ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

अगणिकायस्स अतिक्कमण-पदं

५४. [3]नेरइए णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं[4] वीइवएज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ।

से णं तत्थ झियाएज्जा ?

नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं नो वीइवएज्जा । से तेणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा ॥

५६. असुरकुमारे णं भंते ! अगणिकायस्स [5]•मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?॰

गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥

५७. से केणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा ?

गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से णं—एवं जहेव नेरइए जाव कमइ । तत्थ णं जे से अविग्गहगतिसमावन्नए

१. प० १३ ।

२. भ० १।५१ ।

३. इह च क्वचिदुद्देशकार्थसंग्रहगाथा दृश्यते, सा चेयं—
नेरइय अगणिमज्झे,
दस ठाणा तिरिय पोग्गले देवे ।
पव्वयभित्ती उल्लंघणा,
य पल्लंघणा चेव ॥

४. मज्झेणं मज्झेणं (अ, क, ख, ता, ब) ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । से तेणट्ठेणं । एवं जाव थणियकुमारा । एगिंदिया जहा नेरइया ।।

५८. बेइंदिया णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, नवरं—
जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ?
हंता झियाएज्जा । सेसं तं चेव । एवं जाव चउरिंदिए ।।

५९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! अगणिकायस्स [1]°मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा° ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।।

६०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । अविग्गहगतिसमावन्नगा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इड्ढिप्पत्ता य, अणिड्ढिप्पत्ता य । तत्थ णं जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ । तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिंदियतिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे णं वीइवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा ?
हंता झियाएज्जा । से तेणट्ठेणं जाव नो वीइवएज्जा । एवं मणुस्से वि । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे ।।

पच्चणुब्भव-पदं

६१. नेरइया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गंधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लावण्णे[2], अणिट्ठे जसे कित्ती, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म[3]-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे ।।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. लायण्णे (ता) ।
३. कम्मए (ता) ।

६२. असुरकुमारा दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे। एवं जाव थणियकुमारा ।।

६३. पुढविक्काइया छट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एवं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एवं जाव वणस्सइकाइया ।।

६४. बेइंदिया[1] सत्तट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा रसा, सेसं जहा एगिंदियाणं ।।

६५. तेइंदिया अट्ठट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा गंधा, सेसं जहा बेइंदियाणं ।।

६६. चउरिंदिया नवट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेसं जहा तेइंदियाणं ।।

६७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा—इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एवं मणुस्सा वि, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।।

देवस्स उल्लंघण-पल्लंघण-पदं

६८. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[2] महेसक्खे[3] बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वयं वा तिरियभित्तिं वा उल्लंघेत्तए वा पल्लंघेत्तए वा ?
[4]नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६९. देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय[5]°पव्वयं वा तिरियभित्तिं वा उल्लंघेत्तए वा° पल्लंघेत्तए वा ?
हंता पभू ।।

७०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

१. बेंदिया (ब)।
२. भ० १।३३६।
३. महेसक्के (ब)।
४. णो नो (अ, स)।
५. सं० पा०—तिरिय जाव पल्लंघेत्तए।
६. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं किमाहारादि-पदं

७१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासि—नेरइया णं भंते ! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणिया[2], किंठितीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! नेरइया णं पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गल-ट्ठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणामेव[3] विप्परिया-समेंति । एवं जाव वेमाणिया ।।

७२. नेरइया णं भंते ! किं वीचीदव्वाइं[4] आहारेंति ? अवीचीदव्वाइं आहारेंति ?
गोयमा ! नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि आहारेंति ।।

७३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया वीची[5] •दव्वाइं पि आहारेंति, अवीची-दव्वाइं पि° आहारेंति ?
गोयमा ! जे णं नेरइया एगपएसूणाइं पि दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया वीचीदव्वाइं आहारेंति, जे णं नेरइया पडिपुण्णाइं दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरइया अवीचीदव्वाइं आहारेंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[6]—•नेरइया वीचीदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि° आहारेंति । एवं जाव वेमाणिया[7] ।।

देविंदाणं भोग-पदं

७४. जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे[8] भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वइ—एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं जाव[9] अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं । तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स[10] उवरिं[11] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[12] मणीणं फासो । तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे, एत्थ[13] णं महं एगं पासायवडेंसगं विउव्वइ—

१. भ० १।४-१० ।
२. किंजोणीया (अ, ब, म) ।
३. कम्मणामेव (ब) ।
४. वीचि° (अ, क, ख, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—तं चेव जाव आहारेंति ।
६. सं० पा०—वुच्चइ जाव आहारेंति ।
७. °णिया आहारेंति (स) ।
८. भोजिउकामे (ख); भुंजउंकामे (स) ।
९. भ० ६।७५ ।
१०. नेमिरूवस्स (ख, ता, ब) ।
११. अवरिं (ख, ता, म); भवरि (ब) ।
१२. राय० सू० २४-३१ ।
१३. तत्थ (अ, क, ता, ब, म, स) ।

पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसियमिव वण्णओ जाव[1] पडिरूवं। तस्स णं पासायवडेंसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव[2] पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा[3] वेमाणियाणं। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं 'एगे देवसयणिज्जे'[4] विउव्वइ, सयणिज्जवण्णओ जाव[5] पडिरूवे। तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं[6]—नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य सद्धिं महयाहयनट्ट[7]-°गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइंगपडुप्पवाइय-रवेणं° दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ॥

७५. जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउकामे भवइ से कहमियाणि पकरेति?

जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं। एवं सणंकुमारे वि, नवरं—पासायवडेंसओ छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तिण्णि जोयणसयाइं विक्खंभेणं, मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं, एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ, सपरिवारं भाणियव्वं[8]। तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव[9] चउहि य बावत्तरीहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहि य बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहयनट्ट जाव[10] विहरइ। एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ, नवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो[11]। पासायउच्चत्तं—जं सएसु-सएसु कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो जाव[12] अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं। 'तत्थ णं'[13] अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेसं तं चेव॥

७६. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[14]॥

१. राय० सू० १३७।
२. राय० सू० ३४।
३. राय० सू० ३६।
४. विभक्तिव्यत्ययेन 'एगं देवसयणिज्जं'।
५. राय० सू० २४५।
६. अणिएहिं तं (अ)।
७. सं० पा०—महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइं।
८. राय० सू० ३७-४४
९. प० २।
१०. भ० १४।७४।
११. प० २।
१२. भ० ११।६४।
१३. एत्थ णं गो (अ)।
१४. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७. रायगिहे जाव[1] परिसा पडिगया। गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी - चिर संसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुओसि मे गोयमा ! चिरपरिचिओसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि[2] मे गोयमा ! चिराणुगओसि मे गोयमा ! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ॥

७८. जहा णं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ?
हंता गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ॥

७९. से केणट्ठेणं[3] °भंते ! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[4]—°वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए ॥

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि, एवं तुल्ल-

---

१. भ० १।४-८।
२. चिरजभुसिओसि (ता, म)।
३. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासंति।

अणंतपएसिए वि। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए ?
गोयमा ! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले, एवं जाव दसपएसोगाढे। तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे[1] °पोग्गले तुल्लसंखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे पोग्गले तुल्लसंखेज्ज-पएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले°, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसोगाढे वि। से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कालतुल्लए-कालतुल्लए ?
गोयमा ! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एकसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ नो तुल्ले, एवं जाव दससमयट्ठितीए, तुल्लसंखेज्जसमयट्ठितीए एवं चेव, एवं तुल्लअसंखेज्जसमयट्ठितीए वि। से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—कालतुल्लए-कालतुल्लए।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवतुल्लए-भवतुल्लए ?
गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एवं चेव, एवं मणुस्से, एवं देवे वि। से तेणट्ठेणं[4] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—भवतुल्लए-भवतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए ?
गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स[5] पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालावइरित्तस्स[6] पोग्गलस्स भावओ नो तुल्ले, एवं जाव दसगुणकालए, एवं तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोग्गले, एवं तुल्लअसंखेज्ज-गुणकालए वि, एवं तुल्लअणंतगुणकालए वि। जहा कालए, एवं नीलए, लोहियए, हालिद्दए, सुक्किलए। एवं सुब्भिगंधे, एवं दुब्भिगंधे। एवं तित्ते जाव[7] महुरे। एवं कक्खडे जाव[8] लुक्खे। ओदइए भावे ओदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, ओदइए भावे ओदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एवं ओवस-मिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए। सन्निवाइए भावे सन्निवाइयस्स

1. सं० पा०—तुल्लसंखेज्ज।
2. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव खेत्ततुल्लए।
3. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव कालतुल्लए।
4. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भवतुल्लए।
5. °कालस्स (अ, क, ब, स)।
6. °काल° (अ, ख, स); स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धिः।
7. भ० ८।३६।
8. भ० ८।३६;

भावस्स भावग्रो तुल्ले, सन्निवाइए भावे सन्निवाइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावग्रो नो तुल्ले। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—संठाणतुल्लए-संठाणतुल्लए?
गोयमा! परिमंडले संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले परिमंडले संठाणे परिमंडलसंठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणग्रो नो तुल्ले, एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, ग्रायए। समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणग्रो तुल्ले समचउरंसे संठाणे समचउरंससंठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणग्रो नो तुल्ले, 'एवं परिमंडले वि'[1], एवं[2] •साई खुज्जे वामणे° हुंडे। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा! एवं वुच्चइ °—संठाणतुल्लए-संठाणतुल्लए॥

भत्तपच्चक्खायस्स ग्राहार-पदं

८२. भत्तपच्चक्खायए णं भंते! अणगारे मुच्छिए[4] •गिद्धे गढिए °ग्रज्झोववन्ने आहारमाहारेति, ग्रहे णं वीससाए कालं करेइ, तग्रो पच्छा ग्रमुच्छिए ग्रगिद्धे ग्रगढिए[5] ग्रणज्झोववन्ने ग्राहारमाहारेति?
हंता गोयमा! भत्तपच्चक्खायए णं ग्रणगारे '•मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने ग्राहारमाहारेति, ग्रहे णं वीससाए कालं करेइ, तग्रो पच्छा ग्रमुच्छिए ग्रगिद्धे ग्रगढिए ग्रणज्झोववन्ने ग्राहारमाहारेति° ॥

८३. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—भत्तपच्चक्खायए णं '•ग्रणगारे मुच्छिए गिद्धे गढिए ग्रज्झोववन्ने ग्राहारमाहारेति, ग्रहे णं वीससाए कालं करेइ, तग्रो पच्छा ग्रमुच्छिए ग्रगिद्धे ग्रगढिए ग्रणज्झोववन्ने ग्राहारमाहारेति?°
गोयमा! भत्तपच्चक्खायए णं ग्रणगारे मुच्छिए[8] •गिद्धे गढिए° ग्रज्झोववन्ने ग्राहारे[9] भवइ, ग्रहे णं वीससाए कालं करेइ, तग्रो पच्छा ग्रमुच्छिए[10] •ग्रगिद्धे ग्रगढिए ग्रणज्झोववन्ने° आहारे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव ग्राहारमाहारेति॥

लवसत्तम देव-पदं

८४. ग्रत्थि णं भंते! लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा?
हंता ग्रत्थि॥

---

१. × (अ, ख); एवं जाव परिमंडले वि (क, ता, ब, म)।
२. सं० पा०—एवं जाव हुंडे।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव संठाणतुल्लए।
४. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—तं चेव।
७. सं० पा०—तं चेव।
८. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
९. ग्रत्रकपदे सन्धिस्तेन 'आहारए' इति स्थाने 'ग्राहारे' इति प्रयोगो दृश्यते।
१०. सं० पा०—अमुच्छिए जाव आहारे।

८५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव[1] निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा पक्काणं[2], परियाताणं[3], हरियाणं, हरियकंडाणं तिक्खेणं नवपज्जणएणं[3] असिअएणं पडिसाहरिया-पडिसाहरिया पडिसंखिविया-पडिसंखिविया जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु सत्त लवे[4] लुएज्जा, जदि[5] णं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवतियं कालं आउए पहुप्पते[6] तो णं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंता[7] •बुज्झंता मुच्चंता परिनिव्वायंता सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंता । से तेणट्ठेणं[8] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ॥

अणुत्तरोववाइयदेव-पदं

८६. अत्थि णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
हंता अत्थि ॥

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं अणुत्तरा सद्दा[9], •अणुत्तरा रूवा, अणुत्तरा गंधा, अणुत्तरा रसा, अणुत्तरा°फासा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ॥

८८. अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा केवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ?
गोयमा ! जावतियं छट्ठभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ॥

८९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. भ० १४।३ ।
२. पिक्काणं (म, स) ।
३. नवपज्जएणं (क, ता, स); नवपज्जवएणं (म) ।
४. लए (अ, क, ख, ता, ब); लवए (म, स) ।
५. जति (अ, ख, म, स) ।
६. बहुप्पते (अ, क); बहुप्पंते (ख, ब, म, स); पहुप्पंते (ता) ।
७. सिज्झेज्जा (ता); सं० पा०—सिज्झंता जाव अंते ।
८. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव लवसत्तमा ।
९. सं० पा०—सद्दा जाव फासा ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

अबाहाए अंतर-पदं

९०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य[1] पुढवीए केवतिए[2] अबाहाए[3] अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

९१. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य ।।

९२. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

९३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए [4]°अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

९४. जोतिसस्स णं भंते ! सोहम्मीसाणाण य कप्पाणं केवतिए [5]°अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयण[6]°सहस्साइं अबाहाए° अंतरे पण्णत्ते ।।

९५. सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणंकुमार-माहिंदाण य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ।।

९६. सणंकुमार-माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ।।

९७. बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ।।

९८. लंतयस्स णं भंते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एवं सहस्सारस्स आणय-'पाणयाण य कप्पाणं'[7], एवं आणय-पाणयाणं[8] आरणच्चुयाण य कप्पाणं, एवं आरच्चुयाणं गेवेज्जविमाणाण य, एवं गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य ।।

१. × (अ, क, ब, म) ।
२. केवतियं (अ, क, ख, ता, ब, म, स) प्रायः ।
३. आबाहाए (अ, क, ता, स) सर्वत्र; अबाहे (ख); आबाहए (ब, म) ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. सं० पा०—जोयण जाव अंतरे ।
७. पाणयकप्पाणं (क, स) ।
८. पाणयाणं कप्पाणं (अ, क, म) ।

९९. ग्रणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिंपब्भाराए[1] य पुढवीए केवतिए '•ग्रबाहाए ग्रंतरे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! दुवालस जोयणे ग्रबाहाए ग्रंतरे पण्णत्ते ॥

१००. ईसिंपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए ग्रलोगस्स य केवतिए ग्रबाहाए '•ग्रंतरे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! देसूणं जोयणं ग्रबाहाए ग्रंतरे पण्णत्ते ॥

रुक्खाणं पुणब्भव-पदं

१०१. एस णं भंते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिती[5] । से णं तत्थ[6] ग्रच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय-पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ॥

१०२. से णं भंते ! तग्रोहिंतो ग्रणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जि-हिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] सव्वदुक्खाणं ग्रंतं काहिति ॥

१०३. एस णं भंते ! साललट्ठिया[8] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[9] •कहिं गमिहिति ? ° कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले[10] महेसरिए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से[11] णं तत्थ ग्रच्चिय-वंदिय[12]-•पूइय-सक्का-रिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे° लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ॥

१०४. से णं भंते ! तग्रोहिंतो ग्रणंतरं उव्वट्टित्ता [13]•कहिं गमिहिति ? कहिं उवव-ज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° ग्रंतं काहिति ॥

१. ईसि ° (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. सं० पा०—पुच्छा ।
३. सं० पा०—पुच्छा ।
४. गच्छिहिति (अ, क, ख, स)
५. पच्चाहिति (ता, ब, म) ।
६. तत्था (क, ता, ब) ।
७. भ० २।७३ ।
८. सालिलट्ठिल्लिया (ख); साललट्ठिल्लिया (ता)
९. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
१०. विंज्झ° (क, ख, ता, ब) ।
११. सा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
१२. सं० पा०—वंदिय जाव लाउल्लोइय° ।
१३. सं० पा०—सेसं जहा सालरुक्खस्स जाव ग्रंतं ।

१०५. एस णं भंते ! उंबरलट्ठिया[1] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[2] •कहिं गमिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[3]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि° भविस्सइ ।।

१०६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता [4]•कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ।।

अम्मड-अंतेवासि-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि [5]•जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानदीए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ नगराओ पुरिमतालं नयरं संपट्ठिया विहाराए ।।

१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ।।

१०९. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णा-वायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चं पि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि तं नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं

१. उंबरि° (अ, स) ।
२. सं० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
३. सं० पा०—वंदिय जाव भविस्सइ ।
४. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव अंतं ।
५. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा ।

महानइं ओगाहित्ता वालुयासंथारए संथरित्ता संलेहणा-झूसियाणं भत्तपाण-पडियाइक्खियाणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडेंति, एडेत्ता गंगं महानइं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता वालुयासंथारए संथरंति, संथरित्ता वालुयासंथारयं दुरुहंति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा संपलियंकनिसण्णा करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[1] सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[2] संपाविउकामस्स।

नमोत्थु णं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्हं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स।

पुव्विं णं अम्हेहिं अम्मडस्स परिव्वायगस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणिं अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं मुसावायं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं अदिण्णादाणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं मेहुणं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं कोहं माणं मायं लोहं पेज्जं दोसं कलहं अब्भक्खाणं पेसुण्णं परपरिवायं अरइरइं मायामोसं मिच्छादंसणसल्लं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं—चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए।

जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं मणुण्णं मणामं पेज्जं वेसासियं संमयं बहुमयं अणुमयं भंड-करंडग-समाणं मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसा, मा णं मसगा, मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय[1] विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगया कालं अणवकंखमाणा विहरंति।

तए णं ते परिव्वाया बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहिं तेसिं उववाए पण्णत्ते।

---

१. ओ० सू० २१।
२. ओ० सू० २१।

१. विभक्तिरहितं पदम्।

तेसि णं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! दससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ।
अत्थि णं भंते ! तेसिं देवाणं इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?
हंता अत्थि ।
ते णं भंते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?
हंता अत्थि ।।°

अम्मड-चरिया-पदं

११०. बहुजणे णं भंते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए [1]°आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ।
से कहमेयं भंते ?
एवं खलु गोयमा ! जं णं से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ, सच्चे णं एसमट्ठे अहंपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि—एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ।।

१११. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ?
गोयमा ! अम्मडस्स णं परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए पगइउवसंतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसंपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पण्णा ।
तए णं से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउं कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहिं उवेइ ।।

१. सं० पा०—एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव ।

११२. पहू णं भंते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे। गोयमा ! अम्मडे णं परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बंध-मोक्खकुसले असहेज्ज[1] देवासुरनाग-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, इणमो निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे, चउद्दसअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं अणुपालेमाणे, समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° जाव[2] दढप्पइण्णो अंतं काहिति ॥

अव्वाबाहदेव-सत्ति-पदं

११३. अत्थि णं भंते ! अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
हंता अत्थि ॥

११४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ?
गोयमा ! पभू णं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढि, दिव्वं देवज्जुतिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आवाहं वा वाबाहं[3] वा उप्पाएइ, छविच्छेयं वा करेइ, एसुहुमं[4] च णं उवदंसेज्जा। से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा! एवं वुच्चइ°—अव्वाबाहा देवा, अव्वाबाहा देवा ॥

सक्कस्स सत्ति-पदं

११५. पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं सपाणिणा[6] असिणा छिंदित्ता कमंडलुंसि[7] पक्खिवित्तए ?
हंता पभू ॥

११६. से कहमिदाणिं पकरेति ?
गोयमा ! छिंदिया-छिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, भिंदिया-भिंदिया च णं

---

१. विभक्तिरहितं पदम् ।
२. ओ० सू० १२१-१५४ ।
३. पबाहं (क, वृ); वाबाहं (वृपा) ।
४. एस्सुमुहं (ता, ब, म) ।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव अव्वाबाहा ।
६. सापाणिणा (ख, ता, ब) ।
७. कमंडलुंमि (अ, क, म); कमंडलुंपि (ख, ब, स) ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया-चुण्णिया च णं पक्खिवेज्जा, तम्रो पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुमं च णं पक्खिवेज्जा ।।

जंभगदेव-पदं

११७. ग्रत्थि णं भंते ! जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
हंता अत्थि ।।

११८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंभगा देवा, जंभगा देवा ?
गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्चं पमुदित-पक्कीलिया कंदप्परतिमोहणसीला । जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से णं पुरिसे महंतं ग्रयसं पाउणेज्जा । जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से णं महंतं जसं पाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जंभगा देवा, जंभगा देवा ।।

११९. कतिविहा णं भंते ! जंभगा देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—ग्रन्नजंभगा, पाणजंभगा, वत्थजंभगा, लेणजंभगा, सयणजंभगा, पुप्फजंभगा, फलजंभगा, 'पुप्फ-फल-जंभगा'[1], विज्जा-जंभगा[2] ग्रवियत्तिजंभगा ।।

१२०. जंभगा णं भंते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति ?
गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त-विचित्त-जमगपव्वएसु, कंचणपव्वएसु य, एत्थ णं जंभगा देवा वसहिं उवेंति ।।

१२१. जंभगाणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगं पलिग्रोवमं ठिती पण्णत्ता ।।

१२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पदं

१२३. ग्रणगारे णं भंते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूविं[4] सकम्मलेस्सं जाणइ-पासइ ?

१. मंतजंभगा (वृपा) ।
२. अहिवइजंभगा (वृपा)
३. भ० १।५१ ।
४. सरूवं (अ) ।

हंता गोयमा ! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो[1] •कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ °-पासइ ॥

१२४. अत्थि णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति[2] उज्जोएंति तवेंति पभासेंति ?

हंता अत्थि ॥

१२५. कयरे णं भंते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति जाव पभासेंति ?

गोयमा ! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ[3] पभावेंति[4], एए णं गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति उज्जोएंति तवेंति पभासेंति ॥

अत्ताणत्त-पोग्गल-पदं

१२६. नेरइयाणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?

गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ॥

१२७. असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?

गोयमा ! अत्ता पोग्गला, नो अणत्ता पोग्गला । एवं जाव[5] थणियकुमाराणं ॥

१२८. पुढविकाइयाणं [6]•भंते ! किं अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?°

गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एवं जाव[7] मणुस्साणं । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ॥

इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पदं

१२९. नेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला ? अणिट्ठा पोग्गला ?

गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । जहा अत्ता भणिया एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुण्णा वि भाणियव्वा । एए[8] पंच दंडगा ॥

देवाणं भासासहस्स-पदं

१३०. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ?

हंता पभू ॥

१३१. सा णं भंते ! किं एगा भासा ? भासासहस्सं ?

गोयमा ! एगा णं सा भासा, नो खलु तं भासासहस्सं ॥

---

१. सं० पा०—अप्पणो जाव पासइ ।
२. तोभासंति (क, म) ।
३. अभिनिस्संडाओ (क); अभिनिस्संदाओ (ता)
४. पयावेंति (ता); पभावेति एवं (म, स) ।
५. पू० प० २ ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. पू० प० २ ।
८. एवं (अ, क, ब, म, स) ।
९. भ० १।३३९ ।

सूरिय-पदं

१३२. तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं गोयमे अचिरुग्गयं बालसूरियं जासुमणाकुसुम-पुंजप्पकासं लोहितगं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव[1] समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ[2], •उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे पज्जुवासमाणे° एवं वयासी—किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्ठे ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे ।।

१३३. किमिदं भंते ! सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ?
[3]•गोयमा । सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा ।।

१३४. किमिदं भंते सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स छाया ?
गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया ।।

१३५. किमिदं भंते । सूरिए ? किमिदं भंते ! सूरियस्स लेस्सा ?
गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा° ।।

समणाणं तेयलेस्सा-पद

१३६. जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, ते[4] णं कस्स तेयलेस्सं वीईवयंति ?

गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

दुमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

एवं एएणं[5] अभिलावेणं—तिमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरकुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गंथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयई ।

पंचमासपरियाए समणे निग्गंथे चंदिम-सूरियाणं जोतिसिंदाणं जोतिसराईणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

छम्मासपरियाए[6] समणे निग्गंथे सोहम्मीसाणाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।

१. भ० १।१० ।
२. सं० पा०—उवागच्छइ जाव नमंसित्ता जाव एवं ।
३. सं० पा०—एवं चेव एवं छाया एवं लेस्सा ।
४. एते (क, ता, ब, म, स); तए (ख) ।
५. तेतेणं (ब) ।
६. छमास° (स) ।

सत्तमासपरियाए समणे निग्गंथे सणंकुमार-माहिंदाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
अट्ठमासपरियाए समणे निग्गंथे बंभलोग-लंतगाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
नवमासपरियाए समणे निग्गंथे महासुक्क-सहस्साराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
दसमासपरियाए समणे निग्गंथे आणय-पाणय-आरण-च्चुयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गंथे गेवेज्जगाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
बारसमासपरियाए समणे निग्गंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ ।
तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] °बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेति ॥

१३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

केवलि-पदं

१३८. केवली णं भंते ! छउमत्थं[3] जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१३९. जहा णं भंते ! केवली छउमत्थं जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१४०. केवली णं भंते ! आहोहियं[4] जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं परमाहोहियं[5], एवं केवलिं, एवं सिद्धं जाव—

१४१. जहा णं भंते ! केवली सिद्धं जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि सिद्धं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१. सं० पा०—सिज्झति जाव अंतं ।
२. भ० १।५१ ।
३. छदुमत्थं (ता); छतुमत्थं (ब) ।
४. आधोधियं (अ, स); आबोधीयं (क); आहोधियं (ख); अधोवियं (ता); आधोवियं (ब); आधोहियं (म) ।
५. परमावधियं (अ); परमाबोहियं (क); परमोवियं (ख); परमहोहियं (ता); परमाधोवियं (ब); परमाधोहियं (म, स) ।

१४२. केवली णं भंते ! भासेज्ज वा ? वागरेज्जा वा ?
हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ॥

१४३. जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागोज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
गोयमा ! केवली णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे[1] •अकम्मे अबले अवीरिए° अपुरिसक्कारपरक्कमे। से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा° वागरेज्ज वा ॥

१४५. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा ? निम्मिसेज्ज वा ?
हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ॥

१४६. जहा णं भंते ! केवली उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि उम्मिसेज्ज वा निम्मसेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एवं चेव[3]। एवं आउंटेज्ज[4] वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ॥

१४७. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१४८. जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

१४९. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं जाव अहेसत्तमं ॥

१५०. केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्मकप्पे त्ति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ। एवं चेव। एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ॥

१५१. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणं गेवेज्जविमाणे त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं अणुत्तरविमाणे वि ॥

१५२. केवली णं भंते ईसिपब्भारं पुढविं ईसिपब्भारपुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव ॥

१. सं० पा०—अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार°।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज।
३. भ० १४।१४४।
४. आउट्टेज्ज (अ, स); आउट्टावेज्ज (क म); आउंट्टावेज्ज (ख, ता); आउंटावेज्ज (ब)।

१५३. केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गले त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव। एवं दुपएसियं खंधं, एवं जाव —

१५४. जहा णं भंते ! केवली अणंतपएसियं खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि अणंतपएसियं[1] °खंधं अणंतपएसिए खंधे त्ति जाणइ°-पासइ ? हंता जाणइ-पासइ ॥

१५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

१. सं० पा० — अणंतपएसिय जाव पासइ।
२. भ० १।५१।

पन्नरसमं सतं

नमो सुयदेवयाए भगवईए[1]

गोसालग-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे[3] दिसीभाए, तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला[5] नामं कुंभकारी आजीविओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव[6] बहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो ! आजीवियसमये अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा[7] अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे, कलंदे[8], कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते[9] ॥

४. तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं[10] पुव्वगयं मग्गदसमं 'सएहिं-सएहिं'[11] मतिदंसणेहिं निज्जूहंति[12], निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु ॥

---

१. एतद् वृत्तौ व्याख्यातं नास्ति।
२. ओ० सू० १।
३. °पुरच्छिमे (स)।
४. ओ० सू० २-१३।
५. हालाहाला (ता, स)।
६. भ० २।९४।
७. दिक्चरा भगवच्छिष्याः पार्श्वस्थीभूता इति टीकाकारः 'पासावच्चिज्ज' त्ति चूर्णिकारः (वृ)।
८. कणंदे (क, ता, म)।
९. गोतमपुत्ते (क, ब, म)।
१०. निमित्तमिति शेषः (वृ)।
११. सतेहिं २ (अ, क, ब, म, स)।
१२. निजूहंति (ता, स); निज्जुंति (ब, म)।

५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा ।।

६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे[1] विहरइ ।।

७. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[2]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[3], •एवं भासइ, एवं पण्णवेइ°, एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[4], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्दं° पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं मन्ने एवं ?

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पडिगया ।।

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं[6] •सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउलतेयलेस्से° छट्ठंछट्ठेणं [7]•अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

१०. तए णं भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगंसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

१. पभासेमाणे (ख, ता) ।
२. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
३. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं ।
४. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।
५. भ० १।७,८ ।
६. सं० पा०—गोत्तेणं जाव छट्ठंछट्ठेणं ।
७. सं० पा०—एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

११. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥

१२. तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव[1] जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं मन्ने एवं ?

१३. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे[2] ●जाव[3] समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सावत्थीओ नगरीओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे॰ पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ! [4]●छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे॰ जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणियं[5] परिकहियं ॥

१४. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ । तण्णं मिच्छा । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—

१. भ० १५।६ ।
२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ जाव पज्जुवासमाणे ।
३. भ० १।१० ।
४. सं० पा०—छट्ठं तं चेव जाव जिणसद्दं ।
५. ॰परियाणिणं (अ,व,स); ॰पारियाणं (ता) ।

एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलीपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था। तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्दा नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] पडिरूवा। तए णं सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था॥

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे जाव[2] नंदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ णं सरवणे सण्णिवेसे गोबहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेद जाव[4] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। तस्स णं गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था॥

१६. तए णं से मंखली मंखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्त-फलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अण्णत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए॥

१७. तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं जाव[5] पडिरूवगं दारगं पयाया॥

१८. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते[6] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते॰ 'बारसमे दिवसे'[7] अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं गोसाले-गोसाले त्ति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति गोसाले ति॥

१९. तए णं से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[8]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडिएक्कं[9] चित्तफलगं करेइ, करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१. ओ॰ सू॰ १५।
२. ओ॰ सू॰ १।
३. भ॰ २।९४।
४. भ॰ २।२४।
५. भ॰ ११।१३४।
६. सं॰ पा॰—वीतिक्कंते जाव बारसमे।
७. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब); बारसहे दिवसे (म); बारसाहे दिवसे (स); द्रष्टव्यम्—भ॰ ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
८. विण्णाय (अ, स)।
९. पडिएक्कं (क, ता, ब)।

भगवओ विहार-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं[2] समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए जाव[3] एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ।।

२१. तए णं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं[5] वासावासं उवागए[6] । दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि[7] वासावासं उवागए ।।

पढम-मासखमण-पदं

२२. तए णं अहं गोयमा ! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ।।

२३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[8] दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय[9]-°मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे° अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा !

२४. तए णं अहं गोयमा ! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं[10] बाहिरियं मज्झंमज्झेणं[11] निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

---

१. आगारवासमज्झे वसित्ता (अ, ख, ब, म, स); अगारवासमज्झे वसित्ता (क); अगारवासे वसित्ता (ता); अगारवासं—गृहवासमध्युष्य इति वृत्तिगतव्याख्यानुसारेण प्रस्तुतपाठः स्वीकृतः ।

२. देवत्तिगएहिं (क, ख, ता, म); देवत्तेगतेहिं (ब, स) ।

३. आयारचूला १५।२६-२६ ।

४. पव्वइत्तए (ता, स) ।

५. अंतरावासं (क, म, वृपा) ।

६. उवगए (ता) ।

७. एगदेसंमि (ब) ।

८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

९. सं० पा०—नीय जाव अण्णत्थ ।

१०. नालंदा (अ) ।

११. मज्झेणं २ (क, ख, ता, ब, म) ।

उच्च-नीय[1]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

२५. तए णं से विजए गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[2]•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

२६. तए णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

२७. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[4] •एवं भासइ एवं पण्णवेइ° एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स ॥

२८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं

१. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।
२. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ।
३. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
४. सं० पा०—एवमाइक्खइ जाव एवं।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ।।

२९. तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ।।

दोच्च-मासखमण-पदं

३०. तए णं अहं गोयमा! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला[1], तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासखमणं[2] उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ।।

३१. तए णं अहं गोयमा! दोच्च[3]-मासखमणपारणगंसि[4] तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे[5] •तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ।।

३२. तए णं से आणंदे गाहावई ममं एज्जमाणं पासइ, [6]•पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ।।

३३. तए णं तस्स आणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ।।

३४. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

१. तंतवाय° (ता) सर्वत्र ।
२. मासखवणं (ता) ।
३. दोच्चं (अ, क, ब, म, स) ।
४. मासक्खमणंसि (ता, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—नगरे जाव अडमाणे ।
६. सं० पा०—एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं ।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! आणंदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! आणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणंदस्स गाहावइस्स, आणंदस्स गाहावइस्स ।।

३५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्न-संसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव आणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं आणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ।।

३६. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परि-जाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ।।

तच्च-मासखमण-पदं

३७. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता॰ तच्चं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ।।

३८. तए णं अहं गोयमा ! तच्च[1]-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्ख-मामि, पडिनिक्खमित्ता [2]॰नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्ग-च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे ।।

३९. तए णं से सुणंदे गाहावई [3]॰ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए

---

१. तच्चं (क, ख, ब) ।
२. सं० पा०—तहेव जाव अडमाणे ।
३. सं० पा०—एवं जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेइ सेसं तं चेव जाव चउत्थं ।

णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४०. तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! सुणंदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! सुणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्म-जीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणंदस्स गाहावइस्स ॥

४२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं सुणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ॥

४३. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

चउत्थ-मासखमण-पद

४४. तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता° चउत्थं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

४५. तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते, एत्थ णं कोल्लाए नामं सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ[1]। तत्थ णं कोल्लाए सण्णिवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[2] बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय जाव[3] बंभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ॥

४६. तए णं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं माहणे आयामेत्था ॥

४७. तए णं अहं गोयमा ! चउत्थ-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए सण्णिवेसे उच्च-नीय[4]-°मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

४८. तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं [5]°पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए [illegible] आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४९. तए णं तस्स बहुलस्स माहणस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

५०. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. भ० १५।१५।

२. भ० २।९४।

३. भ० २।२४।

४. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।

५. सं० पा०—तहेव जाव ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं जहा विजयस्स जाव बहुले माहणे २।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स° ।।

५१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भिंतरबाहिरियाए ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, ममं कत्थवि[1] सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ[2] य कुंडियाओ य वाहणाओ[3] य चित्तफलगं च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं भंडं[4] कारेइ, कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ।।

५२. तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, [5]•कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! बहुले माहणे, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्म°जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ।।

गोसालस्स सिस्सरूवेण अंगीकरण-पदं

५३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जारिसिया णं ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती[7] जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती[8] •जसे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे लद्धे पत्ते

१. कत्थति (अ, क, ख, व, म); कत्थइ (ता) ।
२. × (ता); भंडियाओ (वृपा) ।
३. पाहणाओ (क, ख, ता, ब, म) ।
४. मुंडं (अ, ता) ।
५. सं० पा०—तं चेव जाव जीवियफले ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७. जुत्ती (क, ब, म) ।
८. सं० पा०—जती जाव परक्कमे ।

अभिसमण्णागए, तं निस्संदिद्धं[1] णं एत्थं[2] ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोल्लाए सण्णिवेसे सब्भितरबाहिरिए[3] ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, ममं सव्वओ[4] °समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणे 'कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स'[5] बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमण्णागए ।।

५४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं[6] °करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! मम धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं अंतेवासी ।।

५५. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि ।।

५६. तए णं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं[7] विहरित्था ।।

तिलथंभय-पदं

५७. तए णं अहं गोयमा ! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगरं संपट्ठिए विहाराए । तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।।

५८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासइ, पासित्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं भंते ! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ?

तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ । एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए[8] सत्त तिला पच्चायाइस्संति ।।

५९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए[9]

१. निस्संदिद्ध (ख, म); निस्संदिद्धे (स) ।
२. एत्थं (अ, ता, ब, म) ।
३. सब्भंतर° (अ, ख) ।
४. सं० पा० —सव्वओ जाव करेमाणे ।
५. कोल्लागसण्णिवेसस्स (अ, स) ।
६. सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता ।
७. कुर्वन्निति वाक्यशेषः (वृ) ।
८. °सुंग° (ता) ।
९. पणिहाय (ता) ।

'अयं णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते एडेइ। तक्खणमेत्तं च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति[1], खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलपफुसियं[2] रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाता॥

वेसियायण-बालतवस्सि-पदं

६०. तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि। तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयट्ठयाए च णं पडियाओ-पडियाओ 'तत्थेव-तत्थेव'[3] भुज्जो-भुज्जो पच्चोरुभेइ॥

६१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासइ, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी—किं भवं मुणी? मुणिए? उदाहु जूयासेज्जायरए?

६२. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

६३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किं भवं मुणी? मुणिए? 'उदाहु जूयासेज्जायरए?'[4]

६४. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरइ॥

---

१. °तणाए (अ, ख); °तणाएति (स)।
२. °पप्फुसियं (अ, ब)।
३. तत्थेवा २ (क, ता, ब, म)।
४. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
५. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

६५. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[1] एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा[2] तेयलेस्सा पडिहया ।।

६६. तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं[3] तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी—से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं !

६७. तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—किं णं भंते ! एस[4] जूयासिज्जायरए तुब्भे एवं वयासी—से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं ?

६८. तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं पाससि, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी—किं भवं मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किं भवं मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'[5] तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगंसि तेयलेस्सं निस्सिरइ । तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[6] एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि'[7], •जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया । तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिणं तेयलेस्सं° पडिहयं जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं

१. तेयपडि° (क, म); सा तेय° (ख, ब, स); साउसिणतेय° (ता); अत्र अनेके पाठभेदा दृश्यन्ते । शीतलतेजोलेश्यासन्दर्भे 'उसिण' पदमावश्यकमस्ति । ६८ सूत्रे अस्यैव प्रसङ्गस्य पुनरुक्तौ 'ता' प्रतौ 'उसिणतेय' इति पाठो दृश्यते । तेनापि 'उसिण' पदस्य पु ष्टिर्जायते ।

२. उसुणा (क, ख, ता, ब); साउसिणा (स) ।

३. तं उसिणं (अ, ता); सीओसिणं (स) ।

४. एसे (ख, ता, ब) ।

५. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, ब, स) ।

६. सायतेय° (अ, ख, ब); तेय° (क, म); सीओसिणतेय° (स) ।

७. सं० पा०—निसिरामि जाव पडिहयं ।

पासित्ता साउसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एवं वयासी—से गतमेयं भगवं ! गत-गतमेयं भगवं !

६९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कहण्णं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?

७०. तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ।।

७१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेति ।।

तिलथंभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं

७२. तए णं अहं गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थगामं नगरं संपट्ठिए[3] विहाराए। जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते। तदा ममं एवमाइक्खह जाव परूवेह—गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। '[4]•एते य सत्त तिल-पुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला° पच्चायाइस्संति, तण्णं मिच्छा। इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ—एस णं से तिलथंभए नो निप्फन्ने, अनिप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ।।

७३. तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—तुमं णं गोसाला ! तदा ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए 'अयण्णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चो-सक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता[5] •तं तिलथंभगं सलेट्ठुयायं चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता• एगंतमंते एडेसि। तक्ख-णमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए

१. सं० पा०—भीए जाव संजायभए।
२. सं० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
३. संपत्थिए (अ, क, ख, ब, म); पत्थिए (ता)।
४. सं० पा—तं चेव जाव पच्चायाइस्संति।
५. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव एगंतमंते।

खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव [1]•पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णाति-मट्टियं पविरलपफुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासंति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फ-जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। तं एस णं गोसाला! से तिलथंभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्न-मेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभयस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एवं खलु गोसाला! वणस्सइ-काइया पउट्टपरिहारं परिहरंति॥

७४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[2] अरोए-माणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलंसि सत्त तिले पप्फोडेइ॥

७५. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था – एवं खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति—'एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलि-पुत्तस्स पउट्टे[4]', एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णत्ते॥

गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पदं

७६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य विय-डासएणं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेसे जाए॥

गोसालस्स पुव्वकहा-उवसंहार-पदं

७७. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तं जहा—साणे[6], [7]•कलंदे, कणियारे, अच्छिद्दे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमायुपुत्ते। तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सएहिं-सएहिं मतिदंसणेहिं निज्जूहंति, निज्जूहित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठाइंसु।

१. सं० पा०—तं चेव जाव तस्स।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. सं० पा० —अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. × (ता)।
५. सं० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
६. साले (ब)।
७. सं० पा०—तं चेव सव्वं जाव अजिणे

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोय-मेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा—

लाभं अलाभं सुहं दुक्खं, जीवियं मरणं तहा ।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केव-लिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी°, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोयमा ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[1], °अरहा अरह-प्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी[2], °अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्ण सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं° पगासेमाणे विहरइ ॥

७८. तए णं सा महतिमहालया महच्चपरिसा [3]°समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[4]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्णं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ तं मिच्छा । समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था । तए णं तस्स मंखस्स एवं चेव तं सव्वं भाणियव्वं जाव[5] अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ ॥

८०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[6] °रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[7] जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारा-

१. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।
२. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।
३. सं० पा०—जहा सिवे जाव पडिगया ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।
५. भ० १५।१४-७६ ।
६. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
७. लेखसंक्षेपकरणेन 'निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता' इति पाठो न दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१५।२४ ।

वणे[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि[2] आजीवियसंघसंपरिवुडे[3] महया अमरिसं वहमाणे एवं चावि विहरइ ॥

गोसालस्स आणंदथेरसमक्खं अक्कोसपदंसण-पदं

८२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए जाव[4] विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

८२. तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव[5] उच्च-नीय-मज्झिमाइं[6] •कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ ॥

८३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकरावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि ॥

८४. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ॥

८५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! इत्तो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया[7] वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए नाणाविहविउलपणियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं[8] गहाय एगं महं अगामियं[9] अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा ॥

८६. तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे[10] ॥

८७. तए णं ते वणिया झीणोदगा[11] समाणा तण्हाए परब्भमाणा[12] अण्णमण्णे सद्दावेंति,

---

१. कुंभकारावदणे (ता)।
२. कुंभकारावदणंसि (ता)।
३. °संघपरिवुडे (ता, ब, म)।
४. भ० १।२८८।
५. भ० २।१०७-१०९।
६. सं० पा०—मज्झिमाइं जाव अडमाणे।
७. उच्चावगा (ख, ता, ब, स)।
८. पत्थायणं (ता)।
९. आगामियं (अ, म, स); अकामियं (क, ख, ता)।
१०. खीणे (अ, क, म, स)।
११. खीणोदगा (म, स)।
१२. परिभवमाणा (अ, स); परिब्भममाणा (ता); परब्भवमाणा (म)।

सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए[1] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए° अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे भीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे णं अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति—किण्हं किण्होभासं जाव[2] महामेहनिकुरंबभूयं[3] पासादीयं[4] •दरिसणिज्जं अभिरूवं° पडिरूवं ।

तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महेगं वम्मीयं[5] आसादेंति । तस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ[6] अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ[7] •दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ ।।

८८. तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए[8] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगस्स° सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे । इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए । इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ[9], •अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाण-संठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं[10] भिंदित्तए, अवियाइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो ।।

८९. तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालिय-वण्णाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणियं पिबंति, पिबित्ता वाहणाइं पज्जेंति, पज्जेत्ता भायणाइं भरेंति, भरेत्ता दोच्चं पि अण्णमण्णं एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स

१. सं० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।
२. ओ० सू० ४ ।
३. °निकुरंबभूयं (क, ख, ता, ब, म) ।
४. सं० पा०—पासादीयं जाव पडिरूवं ।
५. वम्मियं (अ, क) ।
६. वप्पू (अ, क): वपूओ (ख, म) ।
७. सं० पा०—पासादियाओ जाव पडिरूवाओ ।
८. सं० पा०—अगामियाए जाव सव्वओ ।
९. सं० पा०—अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ ।
१०. वप्पि (अ, स); वपुं (क, ब, म) ।

पढमाए वप्पूए[1] भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९०. तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं[2] महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए[3], दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थं ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो ॥

९१. तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति। तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं[4] भिंदित्तए, अवियाइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ॥

९२. तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे[5] °अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए°, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे, एसा चउत्थी वप्पू[6] मा भिज्जउ, चउत्थी णं वप्पू सउवसग्गा यावि होत्था ॥

९३. तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स[7] °पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स° हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स

१. वप्पाए (अ, ख, स)।
२. तवणिज्जं (अ, क, ब, म, स)।
३. मासादिए (म, स)।
४. वप्पं (म, ख, स)।
५. सं० पा०—उदगरयणे जाव तच्चाए
६. वप्पा (ता)।
७. सं० पा०—सुहकामगस्स जाव हिय।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, 'नो पत्तियंति'[1] नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा[2] अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं भिंदंति। ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं 'अतिकायं महाकायं'[3] मसिमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयल-[4] चंचलचलंतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छं लोहागर-धम्ममाण-धमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं 'समुहं तुरियं चवलं'[5] धमंतं दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति ॥

६४. तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सणियं-सणियं उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं द्रुहति[7], द्रुहित्ता आदिच्चं निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति ॥

६५. तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि[8] होत्था। तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हिय-कामए[9] •सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए° हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए ॥

६६. एवामेव आणंदा! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वंति, गुव्वंति[10], थुव्वंति[11]—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे। तं जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च णं आणंदा! सारक्खामि संगोवामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए जाव[12] निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंड[13]•मत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं° साहिए। तं गच्छ[14] णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवए-सगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि ॥

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. अतिकायमहाकायं (क, ख, ता, म)।
४. °जुवल (अ, ख, ब, स)।
५. समुहिं तुरियचवलं (अ, क, ख, ता, ब); समुदियतुरियचवलं (वृ)।
६. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७. द्रुहेन्ति (क, ता, म); दुरुहति (स)।
८. वि (क, ता, ब)।
९. सं० पा० हियकामए जाव हिय।
१०. × (अ, क, ख, ता); गुवंति (ब, म)।
११. तुवंति (क, ख); × (ब, म); 'थुवंति' त्ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभमंती' ति दृश्यते (वृ)।
१२. भ० १५।६२।
१३. सं० पा०—सभंड जाव साहिए।
१४. गच्छाहि (ब, म)।

आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पदं

९७. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए जाव[1] संजाय-भए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं सावत्थि नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय[2]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए °अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए[3] •कुंभकारावणस्स अदूरसामंते °वीइवयामि, तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए[4] •कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं° पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि।

तए णं अहं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि।

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] नियगं नगरं साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स[6] •समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं° परिकहेहि॥

९८. तं पभू णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए? विसए णं भंते! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स[7] •तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए? समत्थे णं भंते! गोसाले[8] •मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए?

पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं[9] •तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए। विसए णं आणंदा! गोसालस्स[10] •मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए। समत्थे णं आणंदा! गोसाले[11]

१. भ० १५।६६।
२. सं० पा०—नीय जाव अडमाणे।
३. सं० पा०—कुंभकारीए जाव वीइवयामि।
४. सं० पा०—हालाहलाए जाव पासित्ता।
५. भ० १५।८५-९५।
६. सं० पा०—धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि।
७. सं० पा०—मंखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए।
८. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए।
९. सं० पा०—तवेणं जाव करेत्तए।
१०. सं० पा०—गोसालस्स जाव करेत्तए।
११. सं० पा०—गोसाले जाव करेत्तए।

•मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं[1] पुण करेज्जा। जावतिए णं आणंदा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'[2], एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो। जावइए णं आणंदा! अणगाराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो। जावतिए णं आणंदा! थेराणं भगवंताणं तवे तेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो। तं पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं[3] •एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए, विसए णं आणंदा[4]! •गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए, समत्थे णं आणंदा[5]! •गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं° करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा॥

आणंदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं

९९. तं गच्छ णं तुमं आणंदा! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि— मा णं अज्जो! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने॥

१००. तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं तं चेव सव्वं जाव[6] 'गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं'[7] एयमट्ठं परिकहेहि, तं मा णं

१. परियावणियं (अ, स)।
२. तवतेए (स) सर्वत्र।
३. सं० पा०—तेएणं जाव करेत्तए।
४. सं० पा०—आणंदा जाव करेत्तए।
५. सं० पा०—आणंदा जाव करेत्तए।
६. भ० १५।८२-९९।
७. नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गपर्यालोचनया नैष संगच्छते। 'नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्रष्टव्यं १५।९६। यदि एतदन्तः पाठोत्र विवक्षितः स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणेभ्यः तदर्थज्ञापनस्य निर्देशनं—एतत् सर्वं तस्मिन् पाठे नैव प्राप्तं भवेत्। कथं च आनन्दः भगवतः निर्देशमश्रावयित्वा गौतमादिभ्यः 'तं मा णं अज्जो' इत्यादि निर्देशं कुर्यात्? एतत् न स्वाभाविकम्। तेन प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे

अज्जो ! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ[1], •धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं ° मिच्छं विप्पडिवन्ने ॥

गोसालस्स भगवंतं पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवण-पदं

१०१. जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं[2] सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—सुट्ठु णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साहू णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी—गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी ।

जे णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु[3] देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नामं कुंडियायणीए[4] अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

जे वि आइं आउसो कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त संजूहे, सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पंच कम्मणि[5] सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिण्णि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति[6] सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा ।

से जहा वा गंगा महानदी जओ पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिया[7], एस णं अद्धा पंचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं ।

लिपिकरणे वा कश्चिद् विपर्ययो जातः । प्रसङ्गानुसारेण 'जाव' पदस्यानन्तरं गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि' इति पाठः उपयुज्यते ।

१. सं० पा०—पडिचोएउ जाव मिच्छं ।

२. तुरियं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स); दृष्टव्यम्—भ० १५।६७ ।

३. अण्णतरेसु चेव (ता) ।

४. कोंडयायणि॰ (क, म); कुंडियणिए (ता) ।

५. कम्मुणि (अ, ख, ता); कम्माणि (क); कर्मणामित्यर्थः (वृ) ।

६. परिनिव्वाइंति (अ, ख, स) ।

७. पज्जवत्थिया (अ, क, स); पज्जुपत्थिया (ता) ।

एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा । सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा । सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मदुगंगा[1] । सत्त मदुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा । सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवतीगंगा[2] । सत्त आवती-गंगाओ सा एगा परमावती । एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्नं[3] गंगासया भवंतीति मक्खाया ।

तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बायरबोंदि-कलेवरे चेव । तत्थ णं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्पे । तत्थ णं जे से बायर-बोंदिकलेवरे तओ णं वाससए गए, वाससए गए एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावतिएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे । एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे ।

१. अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जति । से णं तत्थ[4] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

२. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[5] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं° चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

३. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

४. से णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

५. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता पंचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

६. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ । से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति ।

१. महुगंगा (ब); मढुगंगा (म); मच्चुगंगा (क्व०)।
२. अवतीगंगा (क, ख, ब, म)।
३. गुणपण्णं (अ. स); अगुणपण्णा (ता)।
४. तत्था (ता)।
५. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता।

७. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता—बंभलोगे नामं से कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडोणायते उदोणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए जाव[1] पडिरूवा—से णं तत्थ देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता सत्तमे सण्णि-गब्भे जीवे पच्चायाति।

से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालगभद्दलए मिउ-कुंडलकुंचिय[2]-केसए मट्ठगंडतल-कण्णपीढए देवकुमार-सप्पभए दारए पयाति। से णं अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकण्णए चेव संखाणं पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तं जहा—१. एणेज्जस्स २. मल्लरामस्स ३. मंडियस्स[3] ४. रोहस्स ५. भारद्दाइस्स ६. अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७. गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स।

तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिसि चेइयंसि उदाइस्स कुंडियायणस्स सरीरं विप्पजहामि, विप्पज-हित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयर-णंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता [illegible] सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नगरीए बहिया अंगमंदिरंसि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहा-वणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीसं वासाइं चउत्थं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से पंचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकाल-गंसि[4] चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं

१. प० २।
२. कुंतल० (ता)।
३. मंडिअस्स (क, ता, ब)।
४. कालगयंसि (स)।

अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोंडियायणंसि[1] चेइयंसि भारद्दाइस्स[2] सरीरं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइं छट्ठं पउट्टपरिहारं परिहरामि।

तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसहं थिरसंघयणं ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइं इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि। एवामेव आउसो कासवा! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवंतीति मक्खाया, तं सुट्ठु णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी—साहू णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी—गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी॥

भगवया गोसालगवयणस्स पडियार-पदं

१०२. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहिं परब्भमाणे[3]-परब्भमाणे कत्थ य गड्डं वा दरिं वा दुग्गं वा णिण्णं[4] वा पव्वयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे[5] एगेणं महं उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण[6] वा तणसूएण वा अत्ताणं आवरेत्ताणं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मण्णइ, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुमं पि गोसाला! अणण्णे संते अण्णमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा॥

गोसालस्स पुणरक्कोस-पदं

१०३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं

---

१. कंडियायणंसि (स)।
२. भारद्दाइयस्स (अ, ता, स)।
३. परिब्भमाणे (ता); पारब्भमाणे (म); परज्झमाणे (स)।
४. णिण्णं (क, ता); णिल्लं (म)।
५. अणासा° (ता)।
६. °पोम्हेण (क, ख); °पोंभेण (ता)।

आओसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति, उच्चावयाहिं 'निब्भंछणाहिं निब्भंछेति'[1], उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी– नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो सुहमत्थि[2] ।।

गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासीकरण-पदं

१०४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए[3] सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने अल्लीणे° विणीए धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं[5] धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति[6] •सक्कारेति सम्माणेति° कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ[7] चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? तं मा एवं गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ।।

१०५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेति ।।

१०६. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ[8], •उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति, उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि ।।

गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पदं

१०७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाण-

१. णिब्भच्छणाहिं णिब्भच्छेइ (ता) ।
२. सुहमत्थि (अ, स) ।
३. पवीण° (क, म); पडीण° (ता, ब) ।
४. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।
५. यारियं (अ, ता, ब, म) ।
६. सं० पा०—नमंसति जाव कल्लाणं ।
७. भगवया (क, ख, ता, ब) ।
८. सं० पा०—आओसइ जाव सुहमत्थि ।

वए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[1] विणीए धम्मायरियाणुरागेणं [2]•एयमट्ठं असद्दहमाणे उठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासति, किमंग पुण तुमं गोसाला! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने? तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला!° सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा॥

१०८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ॥

१०९. तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए॥

गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पदं

११०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आओसणाहिं आओसइ, [3]•उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति, उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एवं वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि॥

१११. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा [4]•अंतियं एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं°पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला! तुमं मए चेव पव्वाविए[5],

१. भ० १५।१०४।
२. सं० पा०—जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव।
३. सं० पा०—सव्वं तं चेव जाव सुहमत्थि।
४. सं० पा०—तं चेव जाव पज्जुवासति।
५. सं० पा०—पव्वाविए जाव मए।

•मए चेव मुंडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए°, मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने ? तं मा एवं गोसाला[1] ! •नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया° नो अण्णा ।।

११२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ; पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति—से जहानामए वाउक्कलिया[2] इ वा वायमंडलिया इ वा सेलंसि[3] वा कुड्डंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवारिज्जमाणी[4] वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो कमति नो पक्कमति अंचियंचि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे[5] तमेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अंतो-अंतो अणुप्पविट्ठे ।।

११३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि ।।

११४. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—नो खलु अहं गोसाला ! तव तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं[6] •मासाणं पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव° कालं करेस्सामि, अहण्णं अण्णाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि । तुमं णं गोसाला ! अप्पणा चेव सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए[7] छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि ।।

सावत्थीए जणपवाद-पदं

११५. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो [illegible] एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—एवं खलु

१. सं० पा०—गोसाला जाव नो ।
२. वाओ° (ता); वातु° (म) ।
३. तृतीयार्थे सप्तमी (वृ) ।
४. आवरि°(अ, क, ख, ब, म, स) ।
५. पडिणियत्तेमाणे (स) ।
६. सं० पा०—छण्हं जाव कालं ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति—
एगे वदंति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, एगे वदंति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि ।
तत्थ णं के पुण सम्मावादी[1] ? के मिच्छावादी ?
तत्थ णं जे से [illegible] जणे से वदति—समणे भगवं महावीरे सम्मावादी,
गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी ।।

गोसालेण समणाणं पसिणवागरण-पदं

११६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए[2] अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाए[3], एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए[4] •नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए° विणट्ठतेए जाए, तं छंदेणं अज्जो ! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह ।।

११७. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति, अट्ठेहि य हेऊहि य[5] •कारणेहि य निप्पट्ठपसिण°वागरणं[6] करेंति[7] ।।

११८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहि निग्गंथेहि धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे[8], •धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य° निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे नो संचाएति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए, छविच्छेदं वा करेत्तए ।।

१. सम्मावाती (अ, क, ख, ब, स) ।
२. °ज्झामिए (ता, म) ।
३. जाव (अ, म, स) ।
४. सं० पा०—गयतेए जाव विणट्ठतेए ।
५. सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरणं ।
६. °वाकरणं (अ) ।
७. वाकरेंति (अ); वा वागरेंति (ता) ।
८. सं० पा०—पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठ°
९. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।

गोसालस्स संघभेद-पदं

११९. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य[1] •पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं° कीरमाणं, आमुरुत्तं[2] •रुट्ठं कुवियं चंडिक्कियं° मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अत्थेगतिया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ।।

गोसालस्स पडिगमण-पदं

१२०. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे[3], रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे, अवडुं[4] कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हा हा अहो! हओहमस्सि त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणि-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे[5] विहरइ ।।

गोसालेणं नाणासिद्धंत-परूवण-पदं

१२१. अज्जोति! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—जावतिए णं अज्जो! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१. अंगाणं २. वंगाणं ३. मगहाणं ४. मलयाणं ५. मालवगाणं[6] ६. अच्छाणं ७. वच्छाणं ८. कोच्छाणं

---

१. सं० पा०—हेऊहि य जाव कीरमाणं।
२. सं० पा०—आमुरुत्तं जाव मिसि°।
३. असाहेमाणे (ख)।
४. अवटठुं (अ, स); अवडुयं (ता)।
५. परिसिंचमाणे २ (ता)।
६. मालवंगाणं (ख); मालवंताणं (ता)।

९. पाढाणं १०. लाढाणं ११. वज्जीणं १२. मोलीणं[1] १३. कासीणं १४. कोसलाणं १५. अवाहाणं १६. सुंभुत्तराणं[2] घाताए वहाए उच्छादणयाए भासीकरणयाए।

जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं[3] •हालाहलाए कुंभकारीए॰ अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेइ, तं जहा—१. चरिमे पाणे २. चरिमे गेये ३. चरिमे नट्टे ४. चरिमे अंजलिकम्मे ५. चरिमे पोक्खलसंवट्टए महामेहे ६. चरिमे सेयणए गंधहत्थी ७. चरिमे महासिलाकंटए संगामे ८. अहं च णं इमीसे ओसप्पिणिसमाए[4] चउवीसाए तित्थगराणं[5] चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्सं जाव[6] अंतं करेस्सं।

जं पि य अज्जो ! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-[7] उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्स वि णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति॥

१२२. से किं तं पाणए ?

पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४. सिलापब्भट्ठए। सेत्तं पाणए॥

१२३. से किं तं अपाणए ?

अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंबलिपाणए[8] ४. सुद्धपाणए॥

१२४. से किं तं थालपाणए ?

थालपाणए—जे णं दाथालगं वा दावारगं वा दाकुंभगं वा दाकलसं वा सीतलगं उल्लगं[9] हत्थेहिं परामुसइ, न य पाणियं पियइ। सेत्तं थालपाणए॥

१२५. से किं तं तयापाणए ?

तयापाणए—जे णं अंबं वा अंबाडगं वा जहा पओगपदे जाव[10] बोरं[11] वा तेंबरुयं[12]

---

१. मालीणं (अ, ख, ता, ब, म)।

२. सुभुत्तराणं (अ, क, म); सुंभत्तराणं (ख); संभुत्तराणं (ता, ब); सुभत्तराणं (स)।

३. सं० पा०—अभिक्खणं जाव अंजलिकम्मं।

४. ओसप्पिणीए (स)।

५. तित्थकराणं (अ, क, ब, म, स); तित्थंकराणं (ख)।

६. भ० १।४४।

७. आदंचणि (अ, क, ख, ब, म)।

८. संबलि॰ (अ, ख); सेवलि॰ (ब); संवएलि॰ (म)।

९. ओलग्ग (ख)।

१०. प० १६।

११. पोरं (अ); पोरं (क, ता, म); चोरं (ब)।

१२. तंवरुयं (अ, म); तंबुरुयं (ता); तेबुंरुयं (ब); तिंदुरुयं (स)।

वा तरुणगं आमगं[1] आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ। सेत्तं तयापाणए ॥

१२६. से किं तं सिंबलिपाणए ?
सिंबलिपाणए—जे णं कलसंगलियं[2] वा मुग्गसंगलियं वा माससंगलियं वा सिंबलि-संगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियति। सेत्तं सिंबलिपाणए ॥

१२७. से किं तं सुद्धपाणए ?
सुद्धपाणए—जे णं छम्मासे सुद्धखाइमं खाइ, दो मासे पुढविसंथारोवगए, दो मासे कट्ठसंथारोवगए, दो मासे दब्भसंथारोवगए, तस्स णं बहुपडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा अंतियं पाउब्भ-वंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति, जे णं ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साइज्जति तस्स णं संसि[4] सरीरगंसि अगणिकाए संभवति, से णं सएणं तेएणं सरीरगं झामेति, झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति। सेत्तं सुद्धपाणए ॥

अयंपुल-आजीविओवासय-पदं

१२८. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले नामं आजीविओवासए परिवसइ—अड्ढे, जहा हालाहला जाव[5] आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—किंसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता ?

१२९. तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदंसणधरे[8] •जिणे अरहा केवली° सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि

१. आमलगं (ता)।
२. °सिंगलियं (क, ता)।
३. भ० १।३३९।
४. तंसि (अ, म, स)।
५. भ० १५।१।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. सं० पा०—उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव
९. भ० २।६६।

सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता जाव[1] पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं वागरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं[3] जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगयं[4] •मज्जपाणगं पीयमाणं, अभिक्खणं गायमाणं, अभिक्खणं नच्चमाणं, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए° अंजलिकम्मं करेमाणं सीयलएणं मट्टिया[5]•पाणएणं आयंचिण-उदएणं° गायाइं परिसिंचमाणं पासइ, पासित्ता लज्जिए विलिए विड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ ।।

१३०. तए णं ते आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं लज्जियं जाव[6] पच्चोसक्कमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव अयंपुला ! इतो ।।

१३१. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए आजीवियथेरेहिं एवं वुत्ते समाणे जेणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आजीविए थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासइ ।।

१३२. अयंपुलाति ! आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी—से नूणं ते अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[8] •कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था°—किंसंठिया णं हल्ला पण्णत्ता ?

तए णं तव अयंपुला ! दोच्चं पि अयमेयारूवे तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव[9] सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए । से नूणं ते अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए जाव अंजलिं करेमाणे

१. भ० २।३१ ।
२. भ० २।६७ ।
३. मज्झेणं मज्झेणं (क, ता, ब) सर्वत्र ।
४. सं० पा०—अंबकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्मं ।
५. सं० पा—मट्टिया जाव गायाइं ।
६. भ० १५।१२६ ।
७. भ० १।१० ।
८. सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव किंसंठिया ।
९. भ० १५।१२६ ।

विहरइ, तत्थ वि णं भगवं इमाइं अट्ठ चरिमाइं पण्णवेति, तं जहा—चरिमे पाणे जाव[1] अंतं करेस्सति ।

जं पि य अयंपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया[2]•पाणएणं आयंचिण-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे° विहरइ, तत्थ वि णं भगवं इमाइं चत्तारि पाणगाइं, चत्तारि अपाणगाइं पण्णवेति ।

से किं तं पाणए ? पाणए जाव[3] तओ पच्छा सिज्झति जाव अंतं करेति ।

तं गच्छ णं तुमं अयंपुला ! एस चेव तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयारूवं वागरणं वागरेहिति ।।

१३३. तए णं से अयंपुले आजीविओवासए आजीविएहिं थेरेहिं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१३४. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंबकूणग[4]-एडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति ।।

१३५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियाणं थेराणं संगारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अंबकूणगं एगंतमंते एडेइ ।।

१३६. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं तिक्खुत्तो जाव[5] पज्जुवासति ।।

१३७. अयंपुलादि ! गोसाले मंखलिपुत्ते अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी—से नूणं अयंपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव[6] जेणेव ममं अंतियं तेणेव हव्वमागए । से नूणं अयंपुला ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

तं नो खलु एस अंबकूणए, अंबचोयए[7] णं एसे । किंसंठिया हल्ला पण्णत्ता ? वंसीमूलसंठिया हल्ला पण्णत्ता । वीणं वाएहि रे वीरगा ! वीणं वाएहि रे वीरगा !

१३८. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं इमं एयारूवं वागरणं वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ[8]•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियइ, परियादिइत्ता उट्ठाए

१. भ० १५।१२१ ।
२. सं० पा०—मट्टिया जाव विहरइ ।
३. भ० १५।१२२-१२७ ।
४. अंबखुणग (अ, क); अंबउणग (ता, ब) ।
५. भ० १।१० ।
६. भ० १५।१२८-१३३ ।
७. अंबचोवए (ता) ।
८. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदइ नमंसइ[1], •वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३९. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेह[2], ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपह, अणुलिंपित्ता महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह, नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहेह[3], दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[4]-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा[5]-उग्घोसेमाणा एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[6], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराणं चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव[7] सव्वदुक्खप्पहीणे—इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरणं करेह ॥

१४०. तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ॥

गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी[9], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरिते[10] अहण्णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहिं य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा

१. सं० पा०—नमंसइ जाव पडिगए ।
२. 'ण्हावेह' इति रूपं समीचीनं प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेइ, ण्हाणेइ' इति रूपद्वयमपि लभ्यते ।
३. दुहेह (अ, क, ख, ता) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
५. घोसेमाणा (अ, ख, ब) ;
६. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।
७. भ० १।४३ ।
८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
९. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं ।
१०. विहरइ (क, ता, स) ।

वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्त-रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्प-लावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ—एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय[2]-सवह-साविए पकरेति, पकरेत्ता एवं वयासी—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी जाव पगासे-माणे विहरिए। अहण्णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए[3] •समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो सत्तर-त्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए° छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणित्ता वामे पाए सुंबेणं बंधेह[4], बंधेत्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह[5], उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वदह—नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंख-लिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिण-प्पलावी जाव विहरइ। महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह—एवं वदित्ता कालगए॥

गोसालस्स नीहरण-पदं

१४२. तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति, पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, आलिहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पदे सुंबेणं बंधंति, बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभंति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[7]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउ-म्मुह-महापह°-पहेसु आकड्ढ-विकड्ढिं करेमाणा णीयं-णीयं सद्देणं उग्घोसेमाणा-

१. सं० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्दं।
२. उच्चाविय (अ, म)।
३. सं० पा०—समणघायए जाव छउमत्थे।
४. बंधहा (अ, ब); बंधह (स, म, स); बंधेहा (ता)।
५. उट्ठुभह (अ, ख, ब, स); उट्ठुभंस्स(ता); उच्छुभह (वृपा)
६. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।
७. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु।

उग्घोसेमाणा एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरण-ट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, मुइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइं'[2] अवंगुणंति[3], अवंगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१४४. तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे[5] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[9] महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[11] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया ॥

१४६. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले[13] •विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए[15] यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं

१. भ० १५।१४१।
२. दाराइं (ता)।
३. अवंगुवंति (ता)।
४. भ० १५।१३६।
५. मेढिय° (क); मिंढिय° (ब)।
६. ओ० सू० १।
७. साल° (अ, क, ब, म, स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. ओ० सू० ४।
१०. भ० ३।६४।
११. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
१२. भ० १।७, ८।
१३. सं० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे।
१४. × (वृ); दुग्गे (वृपा)।
१५. दाहवक्कंतीए (अ, ख, ता, म, स)।

पिपकरेइ, चाउवण्णं[1] च णं वागरेति—एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे[2] समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव कालं करेस्सति ॥

सीहस्स माणसियदुक्ख-पदं

१४७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे—पगइभद्दए जाव[3] विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ[4] °पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरति ॥

१४८. तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झ॰त्थिए[5] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव[6] छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्संति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुण्णे ॥

भगवया सीहस्स आसासण-पदं

१४९. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! ममं अंतेवासी सीहे नामं अणगारे पगइभद्दए[7] °जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति।

तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्संति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव

१. चाउव्वण्णं (ब)।
२. आदिट्ठे (क, ता)।
३. भ० १।२८८।
४. सं० पा०—बाहाओ जाव विहरइ।
५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
६. भ० १५।१४६।
७. सं० पा०—तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव परुण्णे।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अंतो-अंतो अणु-पविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स° परुण्णे। तं गच्छह णं अज्जो! तुब्भे सीहं अणगारं सद्दाह[1]॥

१५०. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सीहं अणगारं एवं वयासी—सीहा! धम्मायरिया सद्दावेंति॥

१५१. तए णं से सीहे अणगारे समणेहिं निग्गंथेहिं सद्धिं मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्ख-मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं जाव[2] पज्जुवासति॥

१५२. सीहादि! समणे भगवं महावीरे सीहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं ते सीहा! झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे[3] °अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव कालं करेस्सति, वदिस्संति य णं अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालु-याकच्छगं अंतो-अंतो अणुपविसित्ता महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स° परुण्णे। से नूणं ते सीहा! अट्ठे समट्ठे?

हंता अत्थि।

तं नो खलु अहं सीहा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं[4] °पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए छउमत्थे चेव° कालं करेस्सं अहण्णं अद्ध सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुमं सीहा! मेंढियगामं नगरं, रेवतीए गाहावतिणीए गिहं, तत्थ णं रेवतीए गाहावतिणीए ममं अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'[5] उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्ठो॥

१. सद्दह (अ, क, ता)।
२. भ० १।१०।
३. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव परुण्णे।
४. सं० पा०—मासाणं जाव कालं।
५. कवोतासरीरा (क, ब); कतोयासरीरगा (ता)।

सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पदं

१५३. तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभंतं[2] मुहपोत्तियं[3] पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता [4]•भायणवत्थाइं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता° जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय[5]•मचवलमसंभंतं जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

१५४. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१५५. तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाहराहि, तेणं अट्ठो ॥

१५६. तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी—केस णं सीहा ! से नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि ?

१५७. [6]•तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु रेवई ! ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

२. भ० २।१०७ सूत्रे आदर्शेषु अतुरियमचवलमसंभंते' इति पाठोस्ति । अत्र च आदर्शेषु 'अतुरियमचवलमसंभंतं' इति पाठोस्ति । उभयमपि रूपं नास्ति अशुद्धमिति यथा प्राप्तमुपात्तम् ।

३. °पत्तियं (स) ।

४. सं० पा०—जहा गोयमसामी जाव जेणेव

५. सं० पा०—अतुरिय जाव जेणेव ।

६. सं० पा०—एवं जहा खंदए जाव जओ ।

जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए°, जओ णं अहं जाणामि ॥

१५८. तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[1] हट्ठतुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तगं[2] मोएति, मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि[3] तं सव्वं सम्मं निस्सिरति ॥

१५९. तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेणं दव्वसुद्धेणं[4] •दायगसुद्धेणं पडिगाहग-सुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं° दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, [5]•संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भू-याइं, तं जहा— वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

१६०. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ— धन्ना णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयत्था णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयपुण्णा णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! रेवतीए गाहा-वतिणीए, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहाव-तिणीए, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा— वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया णं लोया, सुलद्धे माणु-स्सए° जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए ॥

१६१. तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि-निक्खमित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव[6] भत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं निस्सिरति ॥

भगवओ आरोग्ग-पदं

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए[7] •अगिद्धे अगढिए° अणज्झोववन्ने

१. निसम्मा (क, ता, ब) ।
२. पत्तं (क, ख, ता, ब, म) ।
३. पडिग्गहंसि (ता) ।
४. सं० पा०—दव्वसुद्धेणं जाव दाणेण ।
५. सं० पा०—जहा विजयस्स जाव जम्म-जीवियफले ।
६. भ० २।११० ।
७. सं० पा०—अमुच्छिए जाव अण[illegible] ।

बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति ॥

163. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायंके खिप्पामेव उवसंते, हट्ठे जाए, अरोगे[1], बलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे—हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे. हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे ॥

सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं

164. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी पाईणजाणवए[2] सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[3] विणीए, से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[4] बंभ-लंतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

से णं भंते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] °अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[6] सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ॥

सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं

165. एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से णं भंते ! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?

एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य

---

1. आरोए (अ, म); आरोते (ब)।
2. पतीण° (अ, स); पदीण° (क, ब); पडीण° (स, ता)।
3. भ० 1।288।
4. भ० 11।166।
5. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे।
6. भ० 2।73।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[1] आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बाबीसं सागरोवमाइं [2]•ठिती पण्णत्ता।
से णं भंते! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति॥

गोसालस्स भवब्भमण-पदं

१६६. एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए? कहिं उववन्ने?
एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए जाव[3] छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[4] अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता॥

१६७. से णं भंते! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं[5] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति°? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[6] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं° वीइक्कंताणं जाव[7] सुरूवे दारए पयाहिति॥

१६८. जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणिं च णं सयदुवारे नगरे सब्भिंतर-बाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति॥

१६९. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते[8] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे° संपत्ते 'बारसमे दिवसे'[9] अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं

---

१. भ० १५।१६४।
२. सं० पा०—सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अंतं।
३. भ० १५।१४१।
४. भ० १५।१६५।
५. सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव कहिं।
६. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं।
७. भ० ११।१४६।
८. सं० पा०—वीइक्कंते जाव संपत्ते।
९. बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

नामधेज्जं काहिंति—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए[1] •भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य° रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति ॥

१७०. तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ जाव[2] विहरिस्सइ ॥

१७१. तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य ॥

तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर[4]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[5] अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति, तंजहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे। तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो 'दोच्चे वि'[6] नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति ॥

१७२. तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल[7]-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतल-विमल-सन्निगासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दूरूढे[8] समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर[9]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे-विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति[10] विमलवाहणे त्ति ॥

१. सं० पा०—सब्भिंतरबाहिरिए जाव रयणवासे।
२. ओ० सू० १४।
३. भ० १।३३६।
४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
५. °प्पभितीओ (स)।
६. दोच्चं पि (स)।
७. संखदल (क, ख, ता, वृ)।
८. दुरूढे (स)।
९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
१०. ठा० ६।६२ सूत्रानुसारेण एतत् पदं स्वीकृतम्।

१७३. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णया कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति—अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भंछेहिति[1], अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए निरुंभेहिति[2], अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पगतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुंछणं आच्छिंदिहिति विच्छिंदिहिति भिंदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति ॥

१७४. तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर[3]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं° वदिहिंति—एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने—अप्पेगतिए आओसति[4] जाव निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया! एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं विमलवाहणस्स रण्णो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जण्णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विण्णवेत्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेहिंति[5], पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिंति[6], उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[7] •दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेहिंति[8], वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति[9]—एवं खलु देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आओसति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेंति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा जाव जणवयस्स वा सेयं, जण्णं देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमंतु णं देवाणुप्पिया! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए ॥

१७५. तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर[10]•-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-

१. निब्भत्थेहिति (अ, क); निब्भच्छेहिति (ख, ता)।
२. रुंभेहिति (अ, ता, ब, म)।
३. सं० पा०—राईसर जाव वदिहिंति।
४. आउस्सइ (ब, स)।
५. पडिसुणेंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. उवागच्छंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं।
८. वद्धावेंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९. वदंति (अ, क, ख, ता); वदासी (ब, म, स)।
१०. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।

इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्ते[1] समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति मिच्छा-विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिति ॥

१७६. तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सइ—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे वण्णओ[2] ॥

१७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[3] सुमंगले नामं अणगारे जाइसंपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव[4] संखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[5] °तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१७८. तए णं से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति ॥

१७९. तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं[6] °अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहं आयावणभूमीए° आयावेमाणं पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते[7] °रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८०. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहेति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[8] °सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१८१. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८२. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति—नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[9] छउमत्थे चेव कालगए, तं जइ ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं[10] सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहिया-

१. विण्णविए (ता)।
२. भ० ११।५७।
३. पओपए (ता)।
४. भ० ११।१६२; राय० सू० ६८६।
५. सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे।
६. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव आयावेमाणं।
७. आसुरत्ते (अ); सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
८. सं० पा०—पगिज्झिय जाव आसावेमाणे।
९. भ० १५।१४१।
१०. होइत्तणं (अ, ब); होइऊण (ख); होइऊणं (म, स)।

सियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं[1] •खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवया महावीरेणं पभुणा वि[2] •होऊणं सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं° अहियासियं, तं नो खलु ते अहं तहा सम्मं सहिस्सं[3] •खमिस्सं तितिक्खिस्सं° अहियासिस्सं, अहं ते नवरं—सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेज्जामि ॥

१८३. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८४. तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णिहिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं[5] •एगाहच्चं कूडाहच्चं° भासरासिं करेहिति ॥

१८५. सुमंगले णं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव[6] भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! सुमंगले अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम[7]-•दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए[8] छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम जाव[9] गेविज्जविमाणावाससयं वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता ।

से णं भंते ! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ[10] •आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[11] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

१. सं० पा०—सहियं जाव अहियासियं ।
२. सं० पा०—वि जाव अहियासियं ।
३. सं० पा०—सहिस्सं जाव अहियासिस्सं ।
४. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
५. सं० पा०—तेएणं जाव भासरासिं ।
६. भ० १५।१८४।
७. सं० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
८. अण जाव (अ, क, ख, ता, ब, स) ।
९. भ० १५।१६५ ।
१०. सं० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।
११. भ० २।७३ ।

१८६. विमलवाहणे णं भंते ! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव[1] भासरासीकए समाणे कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि[2] नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ णं वि सत्थवज्झे[3] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं[4] उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह[5] °वक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा° दोच्चं पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल[6] °ट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[7] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[8] °ट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं° उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[9] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि पंचमाए[10] °धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं तओहिंतो अणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि उरएसु उववज्जिहिति[11] । °तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि[12] °नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से णं ततो अणंतरं° उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[13] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पंक[14] °-

---

१. भ० १५।१८४ ।
२. °ट्ठिईयंसि (ता, म) ।
३. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. सं० पा०—दाह जाव दोच्चं ।
६. सं० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
७. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
८. सं० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
९. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१०. सं० पा०—पंचमाए जाव उव्वट्टित्ता ।
११. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१२. सं० पा०—उक्कोसकालट्ठिइयंसि जाव उव्वट्टित्ता ।
१३. सं० पा०—तहेव जाव किच्चा ।
१४. सं० पा०—पंक जाव उव्वट्टित्ता ।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओहितो अणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति[1] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[2]•ट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[3]• दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय[4]-प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति[5] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए[6] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ[7]•वज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए[8] •पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओणंतरं० उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति[9] । •तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति[10] ।
•से णं ततो अणंतरं० उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[11] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं० किच्चा दोच्चं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं[13] उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, विययपक्खीणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।
सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं

१. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
२. सं० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
३. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४. सं० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता ।
५. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
६. सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
७. सं० पा०—सत्थ जाव किच्चा ।
८. सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
९. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१०. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता ।
११. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१२. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—गोहाणं, नउलाणं, जहा पण्णवणापए[1] जाव[1] जाहगाणं चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो[2] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं जहा—अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह[3]•स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइं भवंति, तं जहा—एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सणहप्पदाणं[4], तेसु अणेगसयसहस्स[5]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं जलयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—मच्छाणं, कच्छभाणं जाव[6] सुंसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पण्णवणापदे जाव[8] गोमयकीडाणं, तेसु अणेगसय[9]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—उवचियाणं जाव[10] हत्थिसोंडाणं, तेसु अणेग[11]•सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति॥

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुलाकिमियाणं जाव[12] समुद्दलिक्खाणं, तेसु

१. प० १।
२. सं० पा०—सेसं जहा सहचराणं जाव किच्चा।
३. सं० पा०—अणेगसयसह जाव किच्चा।
४. सणहप्फदाणं (अ, ता, स)।
५. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
६. प० १।
७. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा
८. प० १।
९. सं० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
१०. प० १।
११. सं० पा०—अणेग जाव किच्चा।
१२. प० १।

अणेगसय[1]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिंति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा° जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, तं जहा—रुक्खाणं, गुच्छाणं जाव[2] कुहणाणं, तेसु अणेगसय[3]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[4] •दाहवक्कंतीए[5] कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पाईणवायाणं जाव[6] सुद्धवायाणं तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिंति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—इंगालाणं जाव[8] सूरकंतमणिनिस्सियाणं, तेसु अणेगसयसहस्स[9]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिंति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—ओसाणं[10] जाव[11] खातोदगाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुढवीणं, सक्कराणं जाव[13] सूरकंताणं, तेसु अणेगसय[14]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाहिंति—उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविक्काइएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[15] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[16]•दाहवक्कंतीए

---

१. सं० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
२. प० १।
३. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ।
४. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
५. 'दाहवक्कंतीए' इति पाठः क्वचिद् युज्यते, किन्तु सर्वत्र प्रवाहपाती दृश्यते।
६. प० १।
७. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८. प० १।
९. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
१०. उस्साणं (क, ख, ब)।
११. प० १।
१२. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव च्चिा।
१३. प० १।
१४. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिंति।
१५. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१६. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।

कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[1] •दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति।

तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएणं[2] सुक्केणं, पडिरूवएणं विणएणं, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति। सा णं तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कंता जाव[3] अणुमया, भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा णं सीयं, मा णं उण्हं जाव[4] परिसहोवसग्गा फुसंतु। तए णं सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं[5] उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं [6]•लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति।° तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं[7] जाव[8] दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु। से णं 'तओहिंतो अणंतरं'[9] उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति[10] •लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति[11], •लभित्ता

१. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
२. पडिरूविएणं (अ, क, ख, ता, ब, म) सर्वत्र।
३. भ० २।५२।
४. भ० २।५२।
५. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. सं० पा०—तं चेव जाव तत्थ।
७. अग्गिकुमार (ता)।
८. पू० प० २।
९. तओ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१०. सं० पा०—लभिहिति जाव विराहियसामण्णे।
११. सं० पा०—लभिहिति जाव अविराहियसामण्णे।

केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति। तत्थ वि य णं ° अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति[1]।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उवव-ज्जिहिति।

से णं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से णं तओहिंतो[2] °अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-हिति। तत्थ वि य णं ° अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति— अड्ढाइं जाव[3] अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए[4] पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[5] केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति॥

१८७. तए णं से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्धं आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एवं वदिहिइ—एवं खलु अहं अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[6] छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलगं च णं अहं अज्जो अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिए, तं मा णं अज्जो! 'तुब्भं केयि'[7] भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा णं से वि एवं चेव अणादीयं अणवदग्गं[8] °दीहमद्धं चाउरंत°संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति, जहा णं अहं॥

---

१. अतो अग्रे 'म, स' सङ्केतितादर्शयोः निम्न-वर्ती पाठो विद्यते—
'से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति, तत्थ वि य णं अविरहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु सप्तभवा दृश्यन्ते—षट्सु दाक्षिणात्येषु कल्पेषु सर्वार्थसिद्धेषु च तेन ईशानकल्पस्य पाठः न संगच्छते।

२. सं० पा०—तओहिंतो जाव अविराहियसा-मण्णे।

३. ओ० सू० १४१।

४. पुमत्ताए (ब)।

५. ओ० सू० १४२-१५३।

६. भ० १५।१४१।

७. तुमं केवि (ता)।

८. सं० पा०—अणवदग्गं जाव संसार°।

१८८. तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा दढप्पइण्णं केवलिं वंदिहिंति नमंसिहिंति, वंदित्ता नमंसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिंति[1] पडिक्कमिहिंति निंदिहिंति जाव[2] अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जिहिंति ॥

१८९. तए णं से दढप्पइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं जाणेत्ता भत्तं पच्चक्खाहिति, एवं जहा ओववाइए जाव[3] सव्वदुक्खाणमंतं काहिति ॥

१९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

---

१. आलोइएहिंति (स) ।
२. भ० ८।२५१ ।
३. ओ० सू० १५४
४. भ० १।५१ ।

सोलसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. अहिगरणि २. जरा ३. कम्मे, ४. जावतियं ५. गंगदत्त ६. सुमिणे य ।
७.उवओग ८.लोग ९.बलि[1] १०.ओहि, ११.दीव १२.उदही १३.दिसा १४.थणिते[2] ।१।

वाउयाय-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! अधिकरणिंसि वाउयाए वक्कमति ?
हंता अत्थि ।।

२. से भंते ! किं पुट्ठे उद्दाइ ? अपुट्ठे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ ।।

३. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
[4]°गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।।

४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।। °

१. वलि (क, ब); पलि (ता) ।
२. थणिया (ता, स) ।
३. भ० १।४-१० ।
४. सं० पा०—एवं जहा खंदए जाव से तेणट्ठेणं नो असरीरी निक्खमइ; स्पृष्टः स्वकाय-[illegible] सशरीरश्च कडेवरान्निष्क्रामति कार्म्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वशरीरीति (वृ); पूरितः पाठः अस्य वृत्तिव्याख्यानस्य संवादी वर्तते । आदर्शानां संक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असौ वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोस्ति ।

अगणिकाय-पदं

५. इंगालकारियाए णं भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि राइंदियाइं । अण्णे वि तत्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ।।

कतिकिरिय-पदं

६. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[1] पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अए निव्वत्तिए, अयकोट्ठे निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

७. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिव्वमाणे वा निक्खिव्वमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ [2] अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिवइ वा॰ निक्खिवइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अयो निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, चम्मेट्ठे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी निव्वत्तिया, अधिकरणिखोडी निव्वत्तिया, उदगदोणी निव्वत्तिया, अधिकरणसाला निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

अधिकरणी-अधिकरण-पदं

८. जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ।।

९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?

---

१. भ० १।३६५ ।

२. सं० पा०—अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ ।

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि°, अधिकरणं पि ।।

१०. नेरइए णं भंते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि । एवं जहेव जीवे तहेव नेरइए वि । एवं निरंतरं जाव[2] वेमाणिए ।।

११. जीवे णं भंते ! किं साहिकरणी ? निरहिकरणी[3] ?
गोयमा ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी ।।

१२. से केणट्ठेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव नो निरहिकरणी । एवं जाव वेमाणिए ।।

१३. जीवे णं भंते ! किं आयाहिकरणी ? पराहिकरणी ? तदुभयाहिकरणी ?
गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराहिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि ।।

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव तदुभयाहिकरणी वि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव तदुभयाहिकरणी वि । एवं जाव वेमाणिए ।।

१५. जीवाणं भंते ! अधिकरणे किं आयप्पयोगनिव्वत्तिए ? परप्पयोगनिव्वत्तिए ? तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ?
गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि ।।

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि । एवं जाव वेमाणियाणं ।।

१७. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए[4], •वेउव्विए, आहारए, तेयए°, कम्मए ।।

१८. कति णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए[5], •चक्खिंदिए, घाणिंदिए, रसिंदिए°, फासिंदिए ।।

१९. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ।।

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं ।
२. पू० प० २ ।
३. निराधिकरणी (अ, क, ता, ब, स) ।
४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए ।
५. सं० पा०—सोइंदिए जाव फासिंदिए ।

२०. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ— अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि ॥

२२. पुढविकाइएणं णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं चेव । एवं जाव मणुस्से । एवं वेउव्वियसरीरं पि, नवरं—'जस्स अत्थि'[1] ॥

२३. जीवे णं भंते ! आहारगसरीरं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ॥

२४. से केणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि ?
गोयमा ! पमायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं जाव अधिकरणं पि । एवं मणुस्से वि । तेयासरीरं जहा ओरालियं, नवरं—सव्वजीवाणं भाणियव्वं । एवं कम्मगसरीरं पि ॥

२५. जीवे णं भंते ! सोइंदियं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइंदियं पि भाणियव्वं, नवरं—जस्स अत्थि सोइंदियं । एवं[2] चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाण वि, नवरं—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि ॥

२६. जीवे णं भंते ! मणजोगं निव्वत्तेमाणे किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?
एवं जहेव सोइंदियं तहेव निरवसेसं । वइजोगो एवं चेव, नवरं—एगिंदियवज्जाणं । एवं कायजोगो वि, नवरं— सव्वजीवाणं जाव वेमाणिए ।

२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

जीवाणं जरा-सोग-पदं

२८. रायगिहे जाव[4] एवं वयासी— जीवाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! जीवाणं जरा वि, सोगे वि ॥

१. जस्सत्थि (अ) ।
२. एवं सोइंदिय (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।

२९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—●जीवाणं जरा वि०, सोगे वि ?
गोयमा ! जे णं जीवा सारीरं वेदणं वेदेंति तेसि णं जीवाणं जरा, जे णं जीवा माणसं वेदणं वेदेंति तेसि णं जीवाणं सोगे। से तेणट्ठेणं[2] ●गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं जरा वि०, सोगे वि। एवं नेरइयाण वि। एवं जाव[3] थणियकुमाराणं ॥

३०. पुढविकाइयाणं भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे ॥

३१. से केणट्ठेणं[4] ●भंते ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा०, नो सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइया णं सारीरं वेद णं वेदेंति, नो माणसं वेदणं वेदेंति। से तेणट्ठेणं[5] ●गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा०, नो सोगे। एवं जाव चउरिंदियाणं। सेसाणं जहा जीवाणं जाव वेमाणियाणं ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] पज्जुवासति ॥

सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति, 'एत्थ णं'[8] समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे। एवं जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्के वि, नवरं—आभिओगे ण सद्दावेति, 'हरी पायत्ताणियाहिवई[9],' सुघोसा[10] घंटा, पालओ विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले[11] रतिकरपव्वए, सेसं तं चेव जाव[12] नामगं सावेत्ता पज्जुवासति। धम्मकहा जाव[13] परिसा पडिगया ॥

३४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! ओग्गहे पण्णत्ते ?

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव सोगे।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सोगे।
३. पू० प० २।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव जरा।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
६. भ० १।५१।
७. भ० ३।१०९।
८. यत्थ (क, ख, ब); यत्था (ता)।
९. पायत्ताणियाहिवई हरी (ख); हरी य पाय० (ब)।
१०. सुघोस णं (ता)।
११. दाहिणिल्ले (ता)।
१२. भ० ३।२७।
१३. ओ० सू० ७१-७९।

सक्का ! पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारियओग्गहे, साहम्मिओग्गहे[1] ।

जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति एएसि णं ओग्गहं अणुजाणामीति कट्टु समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव[2] दिव्वं जाणविमाणं द्रुहति, द्रुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

सक्क-संबंधि-वागरण-पदं

३५. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जण्णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया तुब्भे[3] एवं वदइ, सच्चे णं एसमट्ठे[4] ?

हंता सच्चे ॥

३६. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सम्मावादी ? मिच्छावादी ?

गोयमा ! सम्मावादी, नो मिच्छावादी ॥

३७. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सच्चं भासं भासति ? मोसं भासं भासति ? सच्चामोसं भासं भासति ? असच्चामोसं भासं भासति ?

गोयमा ! सच्चं पि भासं भासति जाव असच्चामोसं पि भासं भासति ॥

३८. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं सावज्जं भासं भासति ? अणवज्जं भासं भासति ?

गोयमा ! सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं भासति ॥

३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि[5] •भासं भासति°, अणवज्जं पि भासं भासति ?

गोयमा ! जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं अणिज्जूहित्ता[6] णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया सावज्जं भासं भासति, जाहे णं सक्के देविंदे देवराया सुहुमकायं निज्जूहित्ता णं भासं भासति ताहे णं सक्के देविंदे देवराया अणवज्जं भासं भासति । से तेणट्ठेणं[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सक्के देविंदे देवराया सावज्जं पि भासं भासति, अणवज्जं पि भासं° भासति ॥

४०. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धीए ? अभवसिद्धीए ? सम्मदिट्ठीए ? मिच्छदिट्ठीए ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

१. साहम्मियओग्गहे (अ, स) ।
२. तामेव (ता, म) ।
३. तुब्भे णं (अ, म) ।
४. एतमट्ठे (ता) ।
५. सं० पा०—सावज्जं पि जाव अणवज्जं ।
६. अणिज्जूहित्ता (म) ।
७. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव भासति ।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए। सम्मदिट्ठीए, नो मिच्छदिट्ठीए। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे। एवं जहा मोउद्देसए सणंकुमारे जाव[1] नो अचरिमे ॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाणं भंते ! किं चेयकडा[2] कम्मा कज्जंति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं चेयकडा[3] कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति ॥

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—•जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा° कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयंके से वहाए होति, संकप्पे से वहाए होति, मरणंते से वहाए होति तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा° कम्मा कज्जंति। एवं नेरइयाण वि। एवंजाव[6] वेमाणियाणं ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव[8] एवं वयासी—कति णं भंते ! कम्मप॰डीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—नाणावरणिज्जं जाव[9] अंतराइयं, एवं जाव[10] वेमाणियाणं ॥

१. भ० ३।७३।
२. चेत° (ब)।
३. चेदे° (ता)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जंति।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जंति।
६. पू० प० २।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९. भ० ६।३३।
१०. पू० प० २।

४५. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ—एवं जहा पण्णवणाए वेदावेउद्देसओ[1] सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो। वेदाबंधो[2] वि तहेव, बंधावेदो[3] वि तहेव, बंधाबंधो[4] वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं ति[5] ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं

४७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ णं एगजंबुए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ[8]। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[9] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° एगजंबुए समोसढे जाव[10] परिसा पडिगया ॥

४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी - अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[11] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स तस्स णं पुरत्थिमेणं अवड्ढं दिवसं नो कप्पति हत्थं वा पादं वा बाहं वा ऊरुं आउंटावेत्तए[12] वा पसारेत्तए वा, पच्चत्थिमेणं से अवड्ढं दिवसं कप्पति हत्थं वा[13] •पादं वा बाहं वा° ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा। तस्स णं अंसियाओ लंबंति। तं च वेज्जे अदक्खु। ईसिं पाडेति, पाडेत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा। से नूणं भंते ! जे छिंदति तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं धम्मंतराएणं[14] ?

१. प० २७।
२. प० २६।
३. प० २५।
४. प० २४।
५. इह संग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते—
वेयावेओ पढमो, वेयाबंधो य बीयओ होइ।
बंधावेओ तइओ, चउत्थओ बंधबंधो उ ॥
(वृ)।
६. ओ० सू० १।
७. एगजंबूए (स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. सं० पा०—चरमाणे जाव एगजंबुए।
१०. भ० ९।७७।
११. सं० पा०—अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स।
१२. आउंट्टा° (क, ता); आउट्टा° (स)।
१३. सं० पा०—हत्थं वा जाव ऊरुं।
१४. °राइएणं (स)।

हंता गोयमा ! जे छिंदति[1] •तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेणं° धम्मंतराएणं ।।

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१. रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—
जावतियं णं भंते ! अन्नगिलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण[4] वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।
जावतियं णं भंते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहिं वा वाससहस्सेण[5] वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।
जावतियं णं भंते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहिं वा वाससयसहस्सेण वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।
जावतियं णं भंते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहिं वा वासकोडीए वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।
जावतियं णं भंते ! दसमभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहिं वा वासकोडाकोडीए वा खवयंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।।

५२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण वा नो खवयंति, जावतियं चउत्थभत्तिए—एवं तं चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्वं जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ?

१. सं० पा०—छिंदति जाव धम्मंतराएणं ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० १।४।१० ।
४. वाससएहिं (अ, क, ता, म, स) ।
५. वाससहस्सेहिं (क, ता, ब) ।

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलि-तरंग-संपिणद्धगत्ते[1] पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे भुसिए[2] पिवासिए दुब्बले किलंते एगं महं कोसंब-गंडियं सुक्कं[3] जडिलं[4] गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्धं अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेइ, नो महंताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, [5]•सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइं भवंति। संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे अहिकरणिं आउडेमाणे महया[6]-•महया सद्देणं, महया-महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ, तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, सिलट्ठीकयाइं खिलीभूताइं भवंति। संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव[7] मेहावी निउणसिप्पोवगए एगं महं सामलि-गंडियं उल्लं अजडिलं अगंठिल्लं अचिक्कणं अवाइद्धं सपत्तियं तिक्खेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे नो महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेति, महं-ताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं[8] खिप्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति जावतियं तावतियं[9] •पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति।

से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा—[10]•से नूणं गोयमा ! से सुक्के तणहत्थगए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति।

१. संविण° (ख, ता)।
२. झुंझितं (क, ख, म); जुज्झिते (ब); झूरितः इति टीकाकारः (वृ)।
३. सुक्खं (अ, ख, ता, ब)।
४. जटिलं (अ)।
५. सं० पा०—एवं जहा छट्ठसए जाव नो।
६. सं० पा० महया जाव नो।
७. भ० १४।३।
८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९. सं० पा०—तावतियं जाव महापज्जवसाणा।
१०. सं० पा०—एवं जहा छट्ठसए तहा अयोक-बल्ले वि जाव महापज्जवसाणा।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ?
हंता विद्धंसमागच्छइ ।
एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए[1] समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयंति ।।

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ।।

पंचमो उद्देसो

सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। एगजंबुए चेइए—वण्णओ[3]। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[4] परिसा पज्जुवासति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी—एवं जहेव बितियउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ जाव[5] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[6] °समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—
देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[7] महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[8] पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।
देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

---

१. अन्नइलायए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० २२-५२ ।
६. भ० १६।३३ ।
७. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ।
८. भ० १।३३६ ।
९. अपरियादिइत्ता (क, ख, ब) ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे एवं एएणं अभिलावेणं गमित्तए वा, भासित्तए वा, विआगरित्तए वा, उम्मिसावेत्तए वा, निमिसावेत्तए वा, आउंटावेत्तए वा, ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइत्तए वा, विउव्वित्तए वा, परियारेत्तए वा जाव हंता पभू —इमाइं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं[1] वंदति, वंदित्ता तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुहति[2], दुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।।

गंगदत्तदेवस्स संदब्भे परिणममाण-परिणय-पदं

५५. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अण्णदा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति सक्कारेति जाव[3] पज्जुवासति, किण्णं भंते ! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदइ नमंसइ जाव[4] पडिगए ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए य ।

तए णं से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया ।

तए णं से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए देवे तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया । तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं एवं पडिहणइ[5], पडिहणित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता अयमेयारूवे[6] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया एगजंबुए चेइए अहापडिरूवं[7] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे• विहरइ, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता

१. •वंदएणं (अ, ख, ब, म) ।
२. दुरुहइ (स) ।
३. भ० २।३० ।
४. भ० १६।५४ ।
५. पडिभणइ (ता) ।
६. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
७. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
८. भ० २।३० ।

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं [1]•तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहूहिं महासामाणविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे° जाव[2] दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे[3] नगरे, जेणेव एगजंबुए चेइए, जेणेव ममं अंतियं तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ॥

५६. जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देसं हव्वमागए। तए णं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! महासुक्के कप्पे महासामाणे[4] विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठि-उववन्नए देवे ममं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया। तए णं अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भंते ! एवं ?

५७. गंगदत्तादि[5] ! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं गंगदत्ता ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—परिणममाणा पोग्गला[6] •परिणया, नो अपरिणया; परिणमंतीति पोग्गला परिणया°, नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे ॥

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासति[8] ॥

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९. तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य[9] •महतिमहालियाए परिसाए° धम्मं परिकहेइ जाव[10] आराहए भवति ॥

---

१. सं० पा०—परियारो जहा सूरियाभस्स जाव
२. राय० सू० ५८।
३. उल्लुया° (ख, ब, म)।
४. महासमाणे (अ, क, ता, ब)।
५. °दी (ता, ब, म)।
६. सं० पा०—पोग्गला जाव नो।
७. भ० १।१०।
८. पज्जुवाहति (म)।
९. सं० पा०—तीसे य जाव धम्मं।
१०. ओ० सू० ७१-७७।

६०. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! गंगदत्ते देवे किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? [1]सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ? गंगदत्ताइ ! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी—गंगदत्ता ! तुमण्णं भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए। सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे ।।

गंगदत्तदेवेण नट्ट-उवदंसण-पदं

६१. तए णं से गंगदत्ते देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।
जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए ।।

६२. तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे गंगदत्तस्स देवस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए संचिट्ठति ।।

६३. तए णं से गंगदत्ते देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।
जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए त्ति कट्टु ° जाव बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसेति, उवदंसेत्ता जाव[2] तामेव दिसं पडिगए ।।

---

१. सं० पा०—एवं जहा सूरियाभो । २. राय० सू० ६५-१२० ।

६४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[1] •वंदइ नमसंइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुतो[2] •दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं° अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठंतो जाव[3] सरीरं अणुप्पविट्ठे । अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए [4]•महज्जुइए महब्बले महायसे° महेसक्खे ॥

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पदं

६५. गंगदत्तेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढो सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे[5] ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? किं वा गोत्तेणं ?
कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ?
किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ?
कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ?

६६. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6] । सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[7] । तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नाम गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

६७. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव[9] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं[10], •आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं, आगास फालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं, धम्मज्झएणं पुरओ° पकड्ढिज्जमाणेणं-पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

---

१. सं० पा०—महावीरं जाव एवं ।
२. सं० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे ।
३. राय० सू० १२३ ।
४. सं० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे ।
५. सं० पा०—लद्धे जाव गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
६. ओ० सू० १ ।
७. भ० ११।५७ ।
८. भ० २।९४ ।
९. भ० १।७ ।
१०. सं० पा०—चक्केणं जाव पकड्ढिज्ज० ।

गामं[1] •दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे° जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जाव[2] विहरति। परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासति॥

६८. तए णं से गंगदत्ते गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए[4] कयबलिकम्मे जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं हत्थिणापुरं[6] नगरं मज्झंमज्झेणं[7] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुणिसुव्वयं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ जाव[8] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति॥

६९. तए णं मुणिसुव्वए अरहा गंगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[9] परिसा पडिगया॥

७०. तए णं से गंगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव[10] से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे[11] •भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं॥

७१. तए णं से गंगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएणं अरहया एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियाओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउलं असण-पाण[12]-•खाइम-साइमं° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग[13]-•सयण-संबंधि-परियणं° आमंतेति, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव[14] जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेति। तं मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° जेट्ठपुत्तं च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-

१. सं० पा०—गामाणुगामं जाव जेणेव।
२. भ० १।७।
३. ओ० सू० ५२।
४. जाव (ख, स)।
५. भ० २।६७।
६. हत्थिणपुरं (अ, म); हत्थिणाउरं (ता, ब); हत्थिणागपुरं (स)।
७. मज्झेण २ (अ, ख, ता, ब, म)।
८. ओ० सू० ६९।
९. ओ० सू० ७१-७९।
१०. भ० २।५२।
११. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वयामि।
१२. सं० पा०—पाण जाव उवक्खडावेते।
१३. सं० पा०—नियग जाव आमंतेति।
१४. भ० ३।१०२।
१५. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते।

नियग[1]-•सयण-संबंधि°-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[2] दुंदुहि-निग्घोसनादितरवेणं हत्थिणागपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति। एवं जहा उद्दायणे जाव[3] सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ जाव[4] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि जाव[5] गंगदत्तदेवत्ताए उववन्ने॥

७२. तए णं से गंगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभावं गच्छति, [तं जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भासा-मणपज्जत्तीए][7] एवं खलु गोयमा! गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी[8] •सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए॥

७३. गंगदत्तस्स णं भंते! देवस्स केवतियं कालं ठिति पण्णत्ता?
गोयमा! सत्तरस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता॥

७४. गंगदत्ते णं भंते! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[10] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति॥

७५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[11]॥

छट्ठो उद्देसो

सुविण-पदं

७६. कतिविहे णं भंते? सुविणदंसणे[12] पण्णत्ते?
गोयमा! पंचविहे सुविणदंसणे पण्णत्ते, तं जहा—अहातच्चे, पताणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदंसणे[13]॥

---

१. सं० पा०—नियग जाव परिजणेणं।
२. भ० ६।१८२।
३. भ० १३।११७।
४. भ० ११।११८; ६।१५०, १५१।
५. भ० ३।१७।
६. भ० ३।१७।
७. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांशः प्रतीयते।
८. सं० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।
९. सं० पा०—आउक्खएणं जाव महाविदेहे।
१०. भ० २।७३।
११. भ० १।५१।
१२. सुमिण° (अ)।
१३. अवत्त° (अ, क, ख, ब)।

७७. सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासति ? जागरे सुविणं पासति ? सुत्तजागरे सुविणं पासति ?
गोयमा ! नो सुत्ते सुविणं पासति, नो जागरे सुविणं पासति, सुत्तजागरे सुविणं पासति ।।

७८. जीवा णं भंते ! किं सुत्ता ? जागरा ? सुत्तजागरा ?
गोयमा ? जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि ।।

७९. नेरइयाणं भंते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा । एवं जाव[1] चउरिंदिया ।।

८०. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

८१. संवुडे णं भंते ! सुविणं पासति ? असंवुडे सुविणं पासति ? संवुडासंवुडे सुविणं पासति ?
गोयमा ! संवुडे वि सुविणं पासति, असंवुडे वि सुविणं पासति, संवुडासंवुडे वि सुविणं पासति । संवुडे सुविणं पासति अहातच्चं पासति । असंवुडे सुविणं पासति तहा वा तं होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा । संवुडासंवुडे सुविणं पासति [2]°तहा वा तं होज्जा, अण्णहा वा तं होज्जा° ।।

८२. जीवा णं भंते ! किं संवुडा ? असंवुडा ? संवुडासंवुडा ?
गोयमा ! जीवा संवुडा वि, असंवुडा वि, संवुडासंवुडा वि । एवं जहेव सुत्ताणं दंडओ तहेव भाणियव्वो ।।

८३. कति णं भंते ! सुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बायालीसं सुविणा पण्णत्ता ।।

८४. कति णं भंते ! महासुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं महासुविणा पण्णत्ता ।।

८५. कति णं भंते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ।।

८६. तित्थगरमायरो णं भंते ! तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे[3] पासित्ता णं पडिबुज्झंति ?
गोयमा ! तित्थगरमायरो तित्थगरंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—गय-उसभ जाव[4] सिहिं च ।।

१. पू० प० २ ।
२. सं० पा०—एवं चेव ।
३. महासुविणे सुविणे (अ, क, ख, ता, ब) ।
४. भ० ११।१४२ ।

८७. चक्कवट्टिमायरो णं भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ?
गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि गब्भं[1] वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं[2] •इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—गय-उसभ° जाव सिहिं च ।।

८८. वासुदेवमायरो णं - पुच्छा ।
गोयमा ! वासुदेवमायरो[3] •वासुदेवंसि गब्भं° वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।।

८९. बलदेवमायरो—पुच्छा ।
गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।।

९०. मंडलियमायरो णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं 'पासित्ता णं'[4] पडिबुज्झंति ।।

भगवओ महासुविण-दंसण-पदं

९१. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—
१. एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
२. एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं[5] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
३. एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[6] पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
५. एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासिता णं पडिबुद्धे ।
६. एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
७. एगं च णं 'महं सागरं'[7] उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१. जाव (अ, ख, म); जाव गब्भं (क, ता, ब, स) ।
२. सं० पा०—एवं जहा तित्थगरमायरो जाव ।
३. सं० पा०—वासुदेवमायरो जाव वक्कम° ।
४. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. पूसकोइलं (अ, क, ख, ता, ब) ।
६. चित्तपक्खगं (क, ता) ।
७. महासागरं (अ) ।

९. एगं च णं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१०. एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं सीहासणवरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

१. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए ।

२. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किल[1] •पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्भाणोवगए विहरति ।

३. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्त[2] •पक्खगं पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे विचित्तं ससमयपर-समइयं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेति पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति उवदंसेति, तं जहा—आयारं, सूयगडं जाव[3] दिट्ठिवायं[4] ।

४. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, तं जहा—अगार-धम्मं वा, अणगारधम्मं वा ।

५. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं[5] •सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।

६. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं[6] •सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरे, जोतिसिए, वेमाणिए ।

७. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सागरं[7] •उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणा-दीए अणवदग्गे[8] •दीहमद्धे चाउरंते° संसारकंतारे तिण्णे[9] ।

८. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं[10] •तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता

१. सं० पा०—सुक्किल जाव पडिबुद्धे ।
२. सं० पा०—चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे ।
३. भ० २०।७५ ।
४. दिट्ठिवातं (अ, ब); दिट्ठिवादं (ता) ।
५. सं० पा०—गोवग्गं जाव पडिबुद्धे ।
६. सं० पा०—पउमसरं जाव पडिबुद्धे ।
७. सं० पा०—सागरं जाव पडिबुद्धे ।
८. अणवतग्गे (ब); सं० पा०—अणवदग्गे जाव संसार° ।
९. नित्थिण्णे (अ) ।
१०. सं० पा०—दिणयरं जाव पडिबुद्धे ।

णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे[1] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं हरिवेरुलिय[2]•वण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमंति—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए[3] •उवरिं सीहासण-वरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली[4] धम्मं आघवेति[5] •पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति° उवदंसेति ।।

सुविण-फल-पदं

९२. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हयपंतिं वा गयपंतिं वा[6] •नरपंतिं वा किन्नरपंतिं वा किंपुरिसपंतिं वा महोरगपंतिं वा गंधव्वपंतिं वा° वसभपंतिं वा पासमाणे पासति, दुरूहमाणे दुरूहति, दूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव[7] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं दामिणिं[8] पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव[9] बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं रज्जुं [illegible] दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति[10] अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा[11] •नीलसुत्तगं वा लोहिय-सुत्तगं वा हालिद्दसुत्तगं वा° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

१. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवल° ।
२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।
३. सं० पा०—[illegible]ूलियाए जाव पडिबुद्धे ।
४. केवलीणं (क); [illegible] (ठा० १०।१०३)
५. सं० पा०—आघवेति जाव उवदंसेति ।
६. सं० पा०—गयपंतिं वा जाव वसभपंतिं ।
७. भ० १।४४ ।
८. दामं (ख) ।
९. तक्खणामेव अप्पाणं (ख); तक्खणा चेव (ता)
१०. छिंदणमिति (ता) ।
११. सं० पा०—किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल° ।

उग्गोवेति, उग्गोवितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्ग-हणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

९६. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं अयरासिं वा तंबरासिं वा तउयरासिं वा सीसगरासिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

९७. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हिरण्णरासिं वा सुवण्णरासिं वा रयण-रासिं वा वइररासिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे[1] दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

९८. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं तणरासिं वा [2]°कट्ठरासिं वा पत्तरासिं वा तयरासिं वा तुसरासिं वा भुसरासिं वा गोमयरासिं वा° अवकररासिं वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

९९. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सरथंभं वा वीरणथंभं वा वंसीमूलथंभं वा वल्लीमूलथंभं वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाणं अंतं करेति ॥

१००. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं खीरकुंभं वा दधिकुंभं वा घयकुंभं वा मधुकुंभं वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

१०१. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सुरावियडकुंभं वा सोवीरवियडकुंभं वा तेल्लकुंभं वा वसाकुंभं वा पासमाणे पासति, भिंदमाणे भिंदति, भिन्नमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाणं अंतं करेति ॥

१०२. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं पउमसरं कुसुमियं पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

१०३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं सागरं उम्मीवीयीसहस्सकलियं[3] पासमाणे

१. दुरूहमाणे (अ, ख, स)।
२. सं० पा०—जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं।
३. उम्मीवीयी जाव कलियं (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

१०४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं भवणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं विमाणं सव्वरयणामयं पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दूरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

गंध-पोग्गल-पदं

१०६. अह भंते ! कोट्ठपुडाण वा जाव[1] केयइपुडाण वा अणुवायंसि उब्भिज्जमाणाण वा[2] •निब्भिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा° ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणाणं किं कोट्ठे वाति जाव केयई[3] वाति ?
गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयई वाति, घाणसहगया पोग्गला वांति[4] ।।

१०७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ।।

सत्तमो उद्देसो

१०८. कतिविहे णं भंते ! उवओगे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एवं जहा उवओगपदं[6] पण्णवणाए तहेव निरवसेसं नेयव्वं[7], पासणयापदं[8] च नेयव्वं[9] ।।

१०९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ।।

१. राय० सू० ३० ।
२. सं० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ; रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्जमाणाण' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि भिन्नान्यपि च लभ्यन्ते ।
३. केयती (अ, क, म, स) ।
४. वाति (अ, क, ब, म, स) ।
५. भ० १।५१ ।
६. प० २९ ।
७. भाणियव्वं (स) ।
८. पासणापदं (अ, क, ख, ता, ब, म); प० ३० ।
९. निरवसेसं नेयव्वं (स) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

लोगस्स चरिमंते जीवाजीवादिमग्गणा-पदं

११०. केमहालए[1] णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, जहा बारसमसए तहेव जाव[2] असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं ।।

१११. लोयस्स णं भंते ! पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसे—एवं जहा दसमसए अग्गेयी दिसा तहेव[3], नवरं—देसेसु अणिंदियाण आइल्लविरहिओ । जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि । सेसं तं चेव निरवसेसं[4] ।।

११२. लोगस्स णं भंते ! दाहिणिल्ले चरिमंते किं जीवा ? एवं चेव । एवं पच्चत्थिमिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि ।।

११३. लोगस्स णं भंते ! उवरिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते नियमं[5] एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियस्स[6] य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं । जे जीवप्पदेसा ते नियमं एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियस्स पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एवं आदिल्लविरहिओ जाव पंचिंदियाणं । अजीवा जहा[7] दसमसए तमाए तहेव निरवसेसं ।।

११४. लोगस्स णं भंते ! हेट्ठिल्ले चरिमंते किं जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि, जे जीवदेसा ते नियमं एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा, एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं । पदेसा आइल्ल-

१. किमहालए (अ, क, ख, ता, म, स) ।
२. भ० १२।१३०, २।४५ ।
३. भ० १०।६ ।
४. सव्वं (अ, क, ता, ब, म) ।
५. नितमं (ब) ।
६. बेंदियस्स (म, स) ।
७. भ० १०।७ ।

विरहिया सव्वेसिं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते तहेव। अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमंते तहेव ॥

११५. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते किं जीवा पुच्छा। गोयमा ! नो जीवा, एवं जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमंता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा[1] दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेसं। हेट्ठिल्ले चरिमंते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमंते तहेव, नवरं—देसे पंचिंदिएसु तियभंगो त्ति सेसं तं चेव। एवं जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एवं सक्करप्पभाए वि। उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले। एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स। गेवेज्जविमाणाणं एवं चेव, नवरं—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमंतेसु देसेसु पंचिंदियाण वि मज्झिल्लविरहिओ चेव, सेसं तहेव। एवं जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि ॥

परमाणुपोग्गलस्स गति-पदं

११६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ पुरत्थिमिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं[2] °चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति ? उत्तरिल्लाओ चरिमंताओ दाहिणिल्लं[3] °चरिमंतं एगसमएणं° गच्छति ? उवरिल्लाओ चरिमंताओ हेट्ठिल्लं चरिमंतं एगसमएणं[4] गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमंताओ उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ? हंता गोयमा ! परमाणुपोग्गले णं लोगस्स पुरत्थिमिल्लं तं चेव जाव उवरिल्लं चरिमंतं एगसमएणं गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७. पुरिसे णं भंते ! वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेमाणे[5] वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं मे पुरिसे वासं वासति, वासं नो वासतीति हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेति वा पसारेति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए[6] °अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए°—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥

१. भ० १०।७।
२. सं० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति।
३. सं० पा०—दाहिणिल्लं जाव गच्छति।
४. एवं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. आउंटारेमाणे (ता) सर्वत्रापि।
६. सं० पा०—काइयाए जाव पंचहिं।

अलोए गतिनिसेध-पदं

११८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[1] महेसक्खे लोगंते ठिच्चा पभू अलोगंसि हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

११९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगंते ठिच्चा नो पभू अलोगंसि हत्थं वा[2] •पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा• पसारेत्तए वा ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला । पोग्गलामेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ । अलोए णं नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगंते ठिच्चा नो पभू अलोगंसि हत्थं वा पायं वा बाहुं वा ऊरुं वा आउंटावेत्तए वा• पसारेत्तए वा ॥

१२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

नवमो उद्देसो

बलिस्स सभा-पदं

१२१. कहिण्णं[5] भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं तिरियमसंखेज्जे जहेव चमरस्स जाव[6] बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे नामं उप्पायपव्वए पण्णत्ते । सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए—एवं पमाणं जहेव तिगिच्छिकूडस्स पासायवडेंसगस्स वि तं चेव पमाणं, सीहासणं सपरिवारं बलिस्स परियारेणं, अट्ठो तहेव[7], नवरं—

१. भ० १।३३६ ।
२. सं० पा०—हत्थं वा जाव पसारेत्तए ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पसारेत्तए ।
४. भ० १।५१ ।
५. कहि णं (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
६. भ० २।११८ ।
७. यथा तिगिच्छकूटस्य नामान्वर्थाभिधायकं वाक्यं तथाऽस्यापि वाच्यं, केवलं तिगिच्छकूटान्वर्थ- [illegible]रे यस्मात्तिगिच्छिप्रभाण्युत्पलादीनि तत्र सन्ति तेन तिगिच्छकूट इत्युच्यत इत्युक्तं इह तु रुचकेन्द्रप्रभाणि तानि सन्तीति वाच्यं, रुचकेन्द्रस्तु रत्नविशेष इति, तत्पुनरर्थतः

रुयगिंदप्पभाइं-रुयगिंदप्पभाइं-रुयगिंदप्पभाइं। सेसं तं चेव जाव बलिचंचाए रायहाणीए अण्णेसिं च जाव रुयगिंदस्स णं उप्पायपव्वयस्स उत्तरे णं छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता, एत्थ णं बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो बलिचंचा नामं रायहाणी पण्णत्ता। एगं जोयणसयसहस्सं पमाणं, तहेव जाव बलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्वं तहेव निरवसेसं, नवरं—सातिरेगं सागरोवमं ठिती पण्णत्ता। सेसं तं चेव जाव[1] बली वइरोयणिंदे, बली वइरोयणिंदे॥

१२२. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा[3] णं भंते! ओही पण्णत्ता?
गोयमा! दुविहा ओही पण्णत्ता। ओहीपदं निरवसेसं भाणियव्वं[4]॥

१२४. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[5] विहरइ॥

इक्कारसमो उद्देसो

दीवकुमारादि-पदं

१२५. दीवकुमारा णं भंते! सव्वे समाहारा? सव्वे समुस्सासनिस्सासा?
नो इणट्ठे समट्ठे। एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए दीवकुमाराणं वत्तव्वया तहेव जाव[6] समाउया, समुस्सासनिस्सासा[7]॥

सूत्रमेवमध्येयं—'से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—रुयगिंदे-रुयगिंदे उप्पायपव्वए? गोयमा! रुयगिंदे णं बहूणि उप्पलाणि पउमाइं कुमुयाइं जाव रुयगिंदवण्णाइं रुयगिंदलेसाइं रुयगिंदप्पभाइं, से तेणट्ठेणं रुयगिंदे-रुयगिंदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ)।

१. भ० २।११८-१२१।

२. १।५१।

३. कतिविहे (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

४. प० ३३।

५. भ० १।५१।

६. भ० १।७४, ७५।

७. °निस्सासा। एवं नागा वि (अ, ता, ब, म, स)।

१२६. दीवकुमाराणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[1], °नीललेस्सा, काउलेस्सा°, तेउलेस्सा ॥

१२७. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरे-हिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

१२८. एएसि णं भंते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पिड्ढिया वा ? महिड्ढिया वा ?
गोयमा ! कण्हलेस्साहिंतो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा ॥

१२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[3] विहरइ ॥

१२-१४ उद्देसा

१३०. उदहिकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? एवं चेव ॥

१३१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१३२. एवं दिसाकुमारा वि ॥

१३३. एवं थणियकुमारा वि ॥

१३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[4] विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।५१ ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. कुंजर २.संजय ३.सेलेसि, ४.किरिय ५.ईसाण ६,७. पुढवि ८,९. दग १०,११. वाऊ।
१२. एगिंदिय १३. नाग १४. सुवण्ण, १५. विज्जु १६,१७. वातग्गि[1] सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—उदायी णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥

२. उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि[3] निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥

३. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

४. भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

१. वायुग्गि (अ, म, स)।
२. भ० १।४-१०।
३. °ट्ठितीयंसि (अ, ख, ब, म)।
४. भ० २।७३।

किरिया-पदं

५. पुरिसे णं भंते ! तलमारुहइ[1], आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तलमारुहइ, आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[2] पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए, तलफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

६. अहे णं भंते ! से तलफले अप्पणो गरुयत्ताए[3] •भारियत्ताए गरुयसंभारियत्ताए अहे वीससाए° पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव[4] जीवियाओ ववरोवेति, तए[5] णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से[6] तलफले अप्पणो गरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले निव्वत्तिए ते[7] णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

७. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव[8] बीए निव्वत्तिए, ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

८. अहे णं भंते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए[9] णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

---

१. तलमारुभइ (अ, ख, ता, ब, म); ताल° (क) ।
२. भ० १६।११७ ।
३. सं० पा०—गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे ।
४. ×(अ); भ० ५।१३४ ।
५. ततो (ब) ।
६. से पुरिसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'पुरिसे' इति पदं अशुद्धमस्ति । एतत् च लिपिदोषादागतम् । वृत्तौ तत्तालफलमिति लभ्यते । भ० ५।१३५ सूत्रे 'जावं च णं से उसू' इति पाठोस्ति । तत्सादृश्यादत्रापि 'जावं च णं से तलफले' इति पाठः सङ्गतोस्ति ।
७. ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र 'अपि' पदं प्रवाहपाति आगतम् । वृत्तौ फलनिर्वर्त्तकास्तु पंचक्रिया एव इति व्याख्यायां 'तु' पदेन पूर्वप्रकरणाद् भेदः सूचितः । अस्मिन्नर्थे 'अपि' पदस्य प्रयोगः सङ्गतो न स्यात् ।
८. भ० ७।६४ ।
९. ततो (क, ता, म) ।

गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । 'जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे[1] निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा'[2] । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए ते णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

९. पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स कंदे पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स कंदं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

१०. अहे णं भंते ! से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से कंदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए, खंधे निव्वत्तिए जाव बीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो कंदे निव्वत्तिए ते[3] णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा । जहा कंदे, एवं जाव बीयं ॥

११. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा— ओरालिए जाव[4] कम्मए ॥

१२. कति णं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव[5] फासिंदिए ॥

१३. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

१४. जीवे णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । एवं पुढविकाइए वि । एवं जाव मणुस्से ॥

१. मूले (ख, ता, ब) ।
२. × (अ) ।
३. ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. भ० १०१८ ।
५. भ० २।७७ ।

१५. जीवा णं भंते ! ओरालियसरीरं निव्वत्तेमाणा कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि । एवं पुढविकाइया वि । एवं जाव मणुस्सा । एवं वेउव्वियसरीरेण वि दो दंडगा, नवरं—जस्स अत्थि वेउव्वियं । एवं जाव कम्मगसरीरं । एवं सोइंदियं जाव फासिंदियं । एवं मणजोगं, वइजोगं, कायजोगं, जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं । एए एगत्त-पुहत्तेणं छव्वीसं दंडगा ॥

भाव-पदं

१६. कतिविहे णं भंते ! भावे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए[1], ओवसमिए[2] •खइए, खओवसमिए, पारिणामिए॰, सन्निवाइए ॥

१७. से किं तं ओदइए ?
ओदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उदए य, उदयनिप्फन्ने[3] य । एवं एएणं अभिलावेणं जहा अणुओगदारे छन्नामं[4] तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] सेत्तं सन्निवाइए भावे ॥

१८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

धम्माधम्म-ठित-पदं

१९. से नूणं भंते ! संजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते ? अस्संजत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते ? संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
हंता गोयमा ! संजत-विरत[7]-•पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते, अस्सं-जत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते, संजतासंजते॰ धम्माधम्मे ठिते ॥

१. उदतिए (अ, क, ब, म) ।
२. सं॰ पा॰—ओवसमिए जाव सन्निवाइए ।
३. निष्पन्ने (अ, म); निप्पन्ने (स) ।
४. छणामं (अ, ब, म) ।
५. अ॰ २७३-२९७ ।
६. भ॰ १।५१ ।
७. सं॰ पा॰—विरत जाव धम्माधम्मे ।

२०. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मंसि वा, अधम्मंसि वा, धम्माधम्मंसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा[2], •सइतए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा° तुयट्टित्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२१. से केणं खाइं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
गोयमा ! संजत-विरत[3]-•पडिहत-पच्चक्खाता°पावकम्मे धम्मे ठिते, धम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । अस्संजत[4]-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात°-पावकम्मे अधम्मे ठिते, अधम्मं चेव उवसंपज्जित्ताणं विहरति । संजतासंजते धम्माधम्मे ठिते, धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेणं जाव धम्माधम्मे ठिते ।।

२२. जीवा णं भंते ! किं धम्मे ठिता ? अधम्मे ठिता ? धम्माधम्मे ठिता ?
गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिता, अधम्मे वि ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता ।।

२३. नेराइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, नो धम्माधम्मे ठिता । एवं जाव चउरिंदियाणं ।।

२४. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासया बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे अणिक्खित्ते से णं एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ।।

२६. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु समणा पंडिया, समणोवासगा बालपंडिया, जस्स णं एगपाणाए वि दंडे निक्खित्ते से णं नो एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ।।

२७. जीवा णं भंते ! किं बाला ? पंडिया ? बालपंडिया ?
गोयमा ! बाला वि, पंडिया वि, बालपंडिया वि ।।

२८. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपंडिया । एवं जाव चउरिंदिया ।।

---

१. एतेसिं (अ, क, ब, म, स); अत्र षष्ठीबहुवचनान्तं पदं शुद्धं न प्रतिभाति ।
२. सं० पा०—आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
३. सं० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।
४. सं० पा०—अस्संजत जाव पावकम्मे ।

२९. पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया बाला, नो पंडिया, बालपंडिया वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

जीवस्स जीवायाए एगत्त-पदं

३०. अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु पाणाइवाए, मुसावाए जाव[1] मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[2] मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । उप्पत्तियाए[3] °वेणइयाए कम्मयाए° पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया । ओग्गहे, ईहा-अवाए धारणाए वट्टमाणस्स[4] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया । उट्ठाणे[5] °कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे वट्टमाणस्स[6] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया । नेरइयत्ते तिरिक्ख-मणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स[7] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया । नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स[8] °अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया । एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छदिट्ठीए सम्मामिच्छदिट्ठीए, एवं चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे विभंगनाणे, आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए, एवं ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, एवं मणजोगे वइजोगे कायजोगे सागारोवओगे, अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया ।।

३१. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया ।।

रूवि-अरूवि-पदं

३२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं[10] विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१. भ० १।३८४ ।
२. भ० १।३८५ ।
३. सं० पा०—उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए ।
४. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया ।
५. सं० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे ।
६. ७, ८. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया ।
९. भ० १।३३६ ।
१०. रूपातीतममूर्त्तमात्मानमिति गम्यते (वृ) ।

३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं[1] •महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता° नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि[2], 'मए एयं'[3] नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदस्स[4], समोहस्स, सलेसस्स,ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे[6] ॥

३५. •से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि[7], •अहमेयं पासामि, अहमेयं बुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं°—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा[8] •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव° लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

१. सं० पा०—णं जाव नो।
२. अभिसमागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म, वृ)।
३. मएतं (ता) सर्वत्र।
४. सवेदगस्स (ता, स)।
५. सं० पा०—गोयमा जाव चिट्ठित्तए।
६. सं० पा०—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए।
७. सं० पा०—जाणामि जाव जण्णं।
८. सं० पा०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए।
१०. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

एयणा-पदं

३७. सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सया समियं एयति वेयति[1] •चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं तं भावं परिणमति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थेगेणं परप्पयोगेणं ॥

३८. कतिविहा णं भंते ! एयणा[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, 'भवेयणा, भावेयणा'[3] ॥

३९. दव्वेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयदव्वेयणा, तिरिक्खजोणियदव्वेयणा, मणुस्सदव्वेयणा, देवदव्वेयणा ॥

४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वेयणा-नेरइयदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा नेरइयदव्वेयणं एइंसु[4] वा, एयंति वा, एइस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिरिक्खजोणियदव्वेयणा-तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ?
[5]•गोयमा ! जण्णं तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टमाणा तिरिक्खजोणियदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सदव्वेयणा-मणुस्सदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टमाणा मणुस्सदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव मणुस्सदव्वेयणा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवदव्वेयणा-देवदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं देवा देवदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ देवा देवदव्वे वट्टमाणा देवदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा । से तेणट्ठेणं जाव° देवदव्वेयणा ॥

---

१. सं० पा०—वेयति जाव तं ।
२. एतणा (ता, ब) ।
३. भावेयणा, भवेयणा (म) ।
४. एयंसु (अ, ब, म) ।
५. सं० पा०—एवं चेव, नवरं—तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं, सेसं तं चेव, एवं जाव देवदव्वेयणा ।

४१. खेत्तेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा ।।

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयखेत्तेयणा-नेरइयखेत्तेयणा ?
एवं चेव, नवरं—नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एवं जाव देवखेत्तेयणा। एवं कालेयणा वि, एवं भवेयणा वि, एवं भावेयणा वि, एवं जाव देवभावेयणा ।।

चलणा-पदं

४३. कतिविहा णं भंते ! चलणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, तं जहा—सरीरचलणा, इंदियचलणा, जोगचलणा ।।

४४. सरीरचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मग-सरीरचलणा ।।

४५. इंदियचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियचलणा जाव फासिंदियचलणा ।।

४६. जोगचलणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगचलणा, वइजोगचलणा, कायजोग-चलणा ।।

४७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—ओरालियसरीरचलणा-ओरालियसरीर-चलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव ओरालियसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वेउव्वियसरीरचलणा-वेउव्वियसरीरचलणा ?
एवं चेव, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा। एवं जाव कम्मगसरीरचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोइंदियचलणा—सोइंदियचलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा सोइंदिये वट्टमाणा सोइंदियपायोग्गाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए परिणामेमाणा सोइंदियचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव सोइंदियचलणा। एवं जाव फासिंदियचलणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणजोगचलणा-मणजोगचलणा ?
गोयमा! जण्णं जीवा मणाजोगे वट्टमाणा मणजोगपाओग्गाइं दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोगचलणं चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव मणजोगचलणा। एवं वइजोगचलणा वि। एवं कायजोगचलणा वि ।।

संवेगादि-पदं

४८. अह भंते ! संवेगे, निव्वेए, गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया, आलोयणया, निंदणया, गरहणया, खमावणया[1], 'विउसमणया'[2], सुयसहायता[3] भावे अप्पडिबद्धया, विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, कसायपच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उवहिपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खमा, विरागया, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, मणसमन्नाहरणया[4], वइसमन्नाहरणया, कायसमन्नाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, नाणसंपन्नया, दंसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया—एए णं[5] किंपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

गोयमा ! संवेगे, निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया एए णं सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे जाव[7] एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हंता अत्थि ॥

५१. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ '•जाव'[8] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

५२. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

---

१. खमासणया (अ); खमायणया (क, ख, ता, ब, म, वृ)।
२. एतत् च क्वचिद् न दृश्यते (वृ)।
३. सुयसहायता विओसरणता (ता); सुहसाहयया विउसमणया (ब)।
४. मणसमाधा (हा) रणया (उत्त० २९।१)।
५. णं भंते पदा (अ, क)।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।
८. सं० पा०—एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो।
९. भ० १।२५९-२६६।

५३. सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

५४. सा भंते ! किं आणुपुव्वि कडा कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ। जा य कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा°, नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्वं सिया। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जीवाणं एगिंदियाण य निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं। सेसाणं नियमं छद्दिसिं ॥

५५. अत्थि णं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जइ ?
हंता अत्थि ॥

५६. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
जहा पाणाइवाएणं दंडओ एवं मुसावाएण वि। एवं अदिन्नादाणेण वि, मेहुणेण[1] वि, परिग्गहेण वि। एवं एते पंच दंडगा ॥

५७. जं समयं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव जाव[2] वत्तव्वं सिया जाव वेमाणियाणं। एवं जाव परिग्गहेणं। एवं एते वि पंच दंडगा ॥

५८. जं देसं णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ? एवं चेव जाव परिग्गहेणं। एते वि पंच दंडगा ॥

५९. जं पएसं णं भंते ! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? एवं तहेव दंडओ। एवं जाव परिग्गहेणं। एवं एते वीसं दंडगा ॥

दुक्ख-वेदणा-पदं

६०. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे ? परकडे दुक्खे ? तदुभयकडे दुक्खे ?
गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६१. जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेंति ? परकडं दुक्खं वेदेंति ? तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति ?
गोयमा ! अत्तकडं दुक्खं वेदेंति, नो परकडं दुक्खं वेदेंति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेंति। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६२. जीवाणं भंते ! किं अत्तकडा वेयणा ? परकडा वेयणा ? [3]°तदुभयकडा वेयणा° ?

१. मेथुणेण (ब)।
२. १७।५१-५४।
३. सं० पा०—पुच्छा।

गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, नो परकडा वेयणा, नो तदुभयकडा वेयणा । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६३. जीवा णं भंते ! किं अत्तकडं वेयणं वेदेंति ? परकडं वेयणं वेदेंति ? तदुभयकडं वेयणं वेदेंति ?
गोयमा ! जीवा अत्तकडं वेयणं वेदेंति, नो परकडं वेयणं वेदेंति, नो तदुभयकडं वेयणं वेदेंति । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

पंचमो उद्देसो

ईसाण-पदं

६५. कहि णं भंते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारा-रूवाणं जहा ठाणपदे जाव[2] मज्झे ईसाणवडेंसए । से णं ईसाणवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं—एवं जहा दसमसए सक्का[illegible] सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3] आयरक्ख त्ति । ठिती सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव जाव[4] ईसाणे देविंदे देवराया, ईसाणे देविंदे देवराया ॥

६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविक्काइयादीणं देस-सव्व-मारणंतियसमुग्धाय-पदं

६७. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्वि

---

१. भ० १।५१ ।
२. प० २ ।
३. भ० १०।९९ ।
४. भ० १०।१०० ।
५. भ० १।५१ ।

उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? पुव्विं संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्विं वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ।।

६८. से केणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुढविक्काइयाणं तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए । मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति, सव्वेण वा समोहण्णति, देसेण वा समोहण्णमाणे पुव्विं संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेणं समोहण्णमाणे पुव्विं उववज्जेत्ता पच्छा संपाउणेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव पच्छा उववज्जेज्जा ।।

६९. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एवं चेव ईसाणे वि । एवं जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एवं चेव ।।

७०. पुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एवं जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइओ उववाइओ एवं सक्करप्पभाए वि पुढविक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एवं जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एवं जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ।।

७१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

सत्तमो उद्देसो

७२. पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा ? सेसं तं चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एवं सोहम्मपुढविक्काइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एवं जहा सोहम्मपुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एवं जाव ईसिपब्भारापुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ।।

७३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ।।

१. पुढवीए जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० १।५१

अट्ठमो उद्देसो

७४. आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुढविक्काइओ तहा आउक्काइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए तहेव उववाएयव्वो। एवं जहा रयणप्पभआउक्काइओ उववाइओ तहा जाव अहेसत्तमआउक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए ।।

७५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

नवमो उद्देसो

७६. आउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेसं तं चेव, एवं जाव अहेसत्तमाए। जहा सोहम्मआउक्काइओ एवं जाव ईसिपब्भाराआउक्काइओ जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ।।

७७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

दसमो उद्देसो

७८. वाउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? जहा पुढविक्काइओ तहा वाउक्काइओ वि, नवरं—वाउक्काइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव[3] वेउव्वियसमुग्घाए। मारणंतियसमुग्घाए णं समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णइ, सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

७९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० २।७४ ।
४. भ० १।५१ ।

इक्कारसमो उद्देसो

८०. वाउक्काइए णं भंते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते० ? सेसं तं चेव। एवं जहा सोहम्मे वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एवं जाव ईसिपब्भारावाउक्काइओ अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ।।

८१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

बारसमो उद्देसो

एगिंदिय-पदं

८२. एगिंदिया णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा पढमसए बितियउद्देसए पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिंदियाणं इह भाणियव्वा जाव[2] समाउया, समोववन्नगा ।।

८३. एगिंदियाणं भंते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा[3] •नीललेस्सा काउलेस्सा° तेउलेस्सा ।।

८४. एएसि णं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं[4] •नीललेस्साणं काउलेस्साणं तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणंतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।।

८५. एएसि णं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेसाणं इड्ढी० ? जहेव[5] दीवकुमारा०[6] ।।

८६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ।।

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।७६-८१ ।
३. सं० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
४. सं० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ।
५. भ० १६।१२८ ।
६. भ० १।५१ ।

१३-१७ उद्देसा

नागकुमारादि-पदं

८७. नागकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] इड्ढी ॥

८८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[2] विहरइ ॥

८९. सुवण्णकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

९१. विज्जुकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

९३. वायुकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[5] ॥

९५. अग्गिकुमारा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं चेव ॥

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

---

१. भ० १६।१२५-१२८।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।५१।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।५१।

अट्ठारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पढमे[1] २. विसाह ३. मायंदिए य ४. पाणाइवाय ५. असुरे य।
६. गुल ७. केवलि ८. अणगारे, ९. भविए तह १०. सोमिलट्ठारसे[2] ॥१॥

पढम-अपढम-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—जीवे णं भंते! जीव-भावेणं किं पढमे? अपढमे?
गोयमा! नो पढमे, अपढमे। एवं नेरइए जाव वेमाणिए॥

२. सिद्धे णं भंते! सिद्धभावेणं किं पढमे? अपढमे?
गोयमा! पढमे, नो अपढमे॥

३. जीवा णं भंते! जीवभावेणं किं पढमा? अपढमा?
गोयमा! नो पढमा, अपढमा। एवं जाव वेमाणिया॥

४. सिद्धा णं—पुच्छा।
गोयमा! पढमा, नो अपढमा॥

५. आहारए णं भंते! जीवे आहारभावेणं किं पढमे? अपढमे?
गोयमा! नो पढमे, अपढमे। एवं जाव वेमाणिए। पोहत्तिए एवं चेव॥

६. अणाहारए णं भंते! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा।
गोयमा! सिय पढमे, सिय अपढमे॥

७. नेरइए णं भंते! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा। एवं नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे। सिद्धे पढमे, नो अपढमे॥

१. पढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२. उद्देशकद्वारसंग्रहणी चेयं गाथा क्वचिद्दृश्यते—
जीवाहारग भवसन्निलेसादिट्ठी य संजयकसाए।
णाणे जोगुवओगे, तेए य सरीरपज्जत्ती॥ (वृ); 'अ' प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते

३. भ० १।४-१०।

८. अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा वि, अपढमा वि । नेरइया जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा । सिद्धा पढमा, नो अपढमा—एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा ॥

९. भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! जीवे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! सिद्धे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेणं—पुच्छा । एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि ॥

१०. सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णीभावेणं किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण वि । असण्णी एवं चेव एगत्त-पुहत्तेणं, नवरं जाव वाणमंतरा । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुहत्तेण वि ।

११. सलेसे णं भंते !— पुच्छा ।
गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुहत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, नवरं—जस्स जा लेसा अत्थि । अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा नोसण्णी-नो असण्णी ॥

१२. सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीवे सम्मदिट्ठिभावेणं किं पढमे —पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि । एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारगा । सम्मामिच्छदिट्ठी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी, नवरं—जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ॥

१३. संजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । असंजए जहा आहारए । संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । नोसंजए नो अस्संजए नोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमे, नो अपढमे ॥

१४. सकसायी, कोहकसायी जाव लोभकसायी—एए एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए । अकसायी जीवे सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तेणं जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, नो अपढमा ॥

१५. नाणी एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जव-नाणी एगत्त-पुहत्तेणं एवं चेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा । अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी य एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए ॥

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं— जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेणं पढमा, नो अपढमा ॥

१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेणं जहा अणाहारए ॥

१८. सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं - जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्त-पुहत्तेणं तिसु वि पदेसु जहा अकसायी ॥

१९. ससरीरी जहा आहारए, एवं जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं— आहारगसरीरी[1] एगत्त-पुहत्तेणं जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो य एगत्त-पुहत्तेणं 'पढमो, नो अपढमो'[2] ॥

२०. पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं— जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। इमा लक्खणगाहा—

जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे णं भंते ! जीवभावेणं किं चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! नो चरिमे, अचरिमे ॥

२३. नेरइए णं भंते ! नेरइयभावेणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

२३. जीवा णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो चरिमा, अचरिमा। नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि। एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

२४. आहारए सव्वत्थ एगत्तेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे; पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि 'नो चरिमो, अचरिमो'[3]। सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारओ ॥

२५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेणं चरिमे, नो अचरिमे। सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेणं जहा अभवसिद्धीओ ॥

१. आहारासरीरी (क, ख, ता)।
२. पढमा नो अपढमा (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, ब, म)।

२६. सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगत्त-पुहत्तेणं ।।

२७. सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, नवरं—जस्स जा अत्थि । अलेस्सो जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

२८. सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ । मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ । सम्मामिच्छदिट्ठी एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । पुहत्तेणं चरिमा वि, अचरिमा वि ।।

२९. संजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ । अस्संजओ वि तहेव । संजयासंजए वि तहेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । नोसंजय-नोअसंजय-नोसंजयासंजओ जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३०. सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ । अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो चरिमे, अचरिमे । मणुस्सपदे सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

३१. नाणी जहा सम्मद्दिट्ठी सव्वत्थ । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा आहारओ ।।

३२. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि । अजोगी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

३३. सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ।।

३४. सवेदओ जाव नपुंसगवेदओ जहा आहारओ । अवेदओ जहा अकसायी ।।

३५. ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवरं—जस्स जं अत्थि । असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३६. पंचहिं पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेणं दंडगा भाणियव्वा । इमा लक्खणगाहा—

> जो जं पाविहिति पुणो, भावं सो तेण अचरिमो होइ ।
> अच्चंतविओगो जस्स, जेण भावेण सो चरिमो ।।१।।

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

१. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पदं

३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं विसाहा नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। बहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ[2]। सामी समोसढे जाव[3] पज्जुवासइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एवं जहा सोलसमसए बितियउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ, नवरं—एत्थं आभियोगा वि अत्थि जाव[4] बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगए॥

३९. भंतेति! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[5] °वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठंतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव[6] अभिसमन्नागए?

४०. गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[7]। सहसंबवणे[8] उज्जाणे—वण्णओ[9]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नामं सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुंबेसु य [11]°मंतेसु य रहस्सेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए° चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुंबस्स आहेवच्चं[12] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव[13] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव[14] परिसा पज्जुवासइ॥

४२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एवं जहा एक्कारसमसए सुदंसणे तहेव निग्गओ जाव[15] पज्जुवासति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० २२-५२।
४. भ० १६।३३; ३।२७।
५. सं० पा०—महावीरं जाव एवं।
६. भ० ३।२८-३०।
७. ओ० सू० १।
८. सहस्संबवणे (स)।
९. भ० ११।५७।
१०. भ० २।९४।
११. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए।
१२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव कारेमाणे।
१३. भ० २।९४।
१४. भ० १६।६७,६८।
१५. भ० ११।११६।

४३. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स[1] •तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४४. तए णं से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स[3] •अरहओ अंतियं धम्मं सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वयं[4] •अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—एवमेयं भंते! जाव[5]—से जहेयं तुब्भे वदह जं, नवरं—देवाणुप्पिया! नेगमट्ठसहस्सं आपुच्छामि, जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया[6]! मा पडिबंधं ॥

४५. तए णं से कत्तिए सेट्ठी जाव[7] पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्सं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तए णं अहं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गे जाव[8] पव्वयामि, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह, किं ववसह, किं[9] भे हियइच्छिए, किं[10] भे सामत्थे?

४६. तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि[11] कत्तियं सेट्ठिं एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा जाव पव्वयह[12], अम्हं देवाणुप्पिया! के अण्णे आलंबे वा, आहारे वा, पडिबंधे वा? अम्हे वि णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं[13] पव्वयामो[14] ॥

४७. तए णं से कत्तिए सेट्ठी तं नेगमट्ठसहस्सं एवं वयासी—जदि णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं मए सद्धिं मुणिसुव्वयस्स[15] •अरहओ अंतियं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएसु गिहेसु, विपुलं असणं[16] •पाणं खाइमं साइमं° उवक्खडावेह,

१. सं० पा०—धम्मकहा।
२. ओ० सू० ७१-७९।
३. सं० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव निसम्म।
४. सं० पा०—मुणिसुव्वयं जाव एवं।
५. भ० २।५२।
६. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. भ० १६।७१।
८. भ० १८।४६।
९. के (क, ख, ता, ब, म)।
१०. के (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
११. तं (ख)।
१२. पव्वाति (अ); पव्वादि (क, ख, ता, ब); पव्वादि (म); पव्वाहिति (स)। नायाधम्मकहाओ (५।९०) सूत्रानुसारेण एतत् क्रियापदं स्वीकृतम्।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१४. पव्वामो (अ, ख, ता, ब, म)।
१५. सं० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव पव्वयह।
१६. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेह।

मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स पुरओ° जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेह, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-संबंधि°-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[4] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरि-हीणं चेव मम अंतियं पाउब्भवह ॥

४८. तए णं तं नेगमट्ठसहस्सं पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं[5] •पाणं खाइमं साइमं° उवक्खडावेति, उवक्खडेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ°, तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुंबे ठावेति, ठावेत्ता तं मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्स-वाहिणीओ सीयाओ दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि° परिज-णेणं जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहि-निग्घोसनादिय-रवेणं अकालपरिहीणं चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अंतियं पाउब्भवति ॥

४९. तए णं से कत्तिए सेट्ठी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति जहा गंगदत्तो जाव[11] सीयं दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[12]-•नियग-सयण-संबंधि°-परिज-णेणं जेट्ठपुत्तेणं नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[13] दुंदुहि-निग्घोसनादियरवेणं हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जहा गंगदत्तो जाव[14] आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जाव[15] आणुगामियत्ताए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंते ! नेगमट्ठ-सहस्सेण सद्धिं सयमेव पव्वावियं जाव[16] धम्ममाइक्खियं ॥

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
४. भ० ९।१८२ ।
५. सं० पा०—असणं जाव उवक्खडावेति ।
६. सं० पा०—नाइ जाव तस्सेव ।
७. सं० पा०—नाइ जाव पुरओ ।
८. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
९. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
१०. भ० ९।१८२ ;
११. भ० १६।७१ ।
१२. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेणं ।
१३. भ० ९।१८२ ।
१४. भ० १६।७१; ९।२१४ ।
१५. भ० ९।२१४ ।
१६. भ० २।५२ ।

५०. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कत्तियं सेट्ठिं नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं सयमेव पव्वावेति जाव[1] धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं जाव[2] संजमियव्वं ।।

५१. तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धिं मुणिसुव्वयस्स अरहओ इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति जाव[3] संजमेति ।।

५२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेणं सद्धिं अणगारे जाए—ईरियासमिए जाव[4] गुत्तबंभयारी ।।

५३. तए णं से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाणं थेराणं अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेइ, झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय[6]-•पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे° कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि[7] •देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए° सक्के देविंदत्ताए उववन्ने ।।

५४. तए णं से सक्के देविंदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेसं जहा गंगदत्तस्स जाव[8] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति, नवरं – ठिती दो सागरोवमाइं, सेसं तं चेव ।।

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[9] ।।

तइओ उद्देसो

मागंदियपुत्त-पदं

५६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे होत्था—वण्णओ । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[10] परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ

१. भ० २।५३ ।
२. भ० २।५३ ।
३. भ० २।५४ ।
४. भ० २।५५ ।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं ।
६. सं० पा०—आलोइय जाव कालं ।
७. सं० पा०—देवसयणिज्जंसि जाव सक्के ।
८. भ० १६।७२-७५ ।
९. भ० १।५१ ।
१०. भ० १।२-५ ।

महावीरस्स[1] अंतेवासी मागंदियपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए—जहा मंडियपुत्ते जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

५७. से नूणं भंते ! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

५८. से नूणं भंते ! काउलेस्से[4] आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

५९. से नूणं भंते ! काउलेस्से वणस्सइकाइए [5]•काउलेसेहिंतो वणस्सइकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?
हंता मागंदियपुत्ता ! ° जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं[6] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता जेणेव समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

६१. तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोएंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते ! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउक्काइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ! एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

६२. से कहमेयं भंते ! एवं ?

१. महावीरस्स जाव (स) ।
२. भ० ३।१३४; १।२८८, २८९ ।
३. भ० १।४४ ।
४. काउलेसे (अ, स) ।
५. सं० पा०—एवं चेव जाव ।
६. सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणे निग्गंथे आमंतित्ता एवं वयासी—जण्णं अज्जो ! मागंदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । सच्चे णं एसमट्ठे । अहं पि णं अज्जो ! एवमाइक्खामि एवं भासेमि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि—एवं खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहिंतो पुढविकाइएहिंतो जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं खलु अज्जो ! नीललेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति । एवं काउलेस्से वि । जहा पुढविकाइए एवं आउकाइए वि, एवं वणस्सइकाइए वि । सच्चे णं एसमट्ठे ॥

६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति समणा निग्गंथा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव मागंदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मागंदियपुत्तं अणगारं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेंति ॥

६४. तए णं से मागंदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

६५. अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स सव्वं कम्मं निज्जरेमाणस्स सव्वं मारं मरमाणस्स सव्वं सरीरं विप्पजहमाणस्स, चरिमं कम्मं वेदेमाणस्स चरिमं कम्मं निज्जरेमाणस्स चरिमं मारं मरमाणस्स चरिमं सरीरं विप्पजहमाणस्स, मारणंतियं कम्मं वेदेमाणस्स मारणंतियं कम्मं निज्जरेमाणस्स मारणंतियं मारं मरमाणस्स मारणंतियं सरीरं विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोगं पि णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ?

हंता मागंदियपुत्ता ! अणगारस्स णं भावियप्पणो सव्वं कम्मं वेदेमाणस्स जाव जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वं लोगं पि णं ते ओगाहित्ता णं चिट्ठंति ॥

निज्जरापोग्गल-जाणणादि-पदं

६६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा [1]ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?
मागंदियपुत्ता ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया, जाव तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते जाणंति-पासंति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो ।

६७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ ?
मागंदियपुत्ता ! देवे वि य णं अत्थेगइए जे णं तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—छउमत्थे णं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणइ-पासइ, सुहुमा णं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगं पि य णं ते ओगाहित्ता चिट्ठंति ।।

६८. नेरइया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणंति न पासंति, न आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! नेरइया णं ते निज्जरापोग्गले न जाणंति न पासंति, आहारेंति। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

६९. मणुस्सा णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ? उदाहु न जाणंति न पासंति, न आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति । अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति ।।

७०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति ? अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति, आहारेंति। से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति। अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति । वाणमंतर-जोइसिया जहा नेरइया ।।

७१. वेमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणंति-पासंति ? आहारेंति ?
मागंदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवरं—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे ते मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरोववन्नगा य परंपरोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते अणंतरोववन्नगा ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते परंपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणंति

न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न जाणंति न पासंति, आहारेंति। तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति-पासंति, आहारेंति। से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासंति, आहारेंति। अत्थेगइया जाणंति-पासंति, आहारेंति° ॥

बंध-पदं

७२. कतिविहे णं भंते! बंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वबंधे य, भावबंधे य ॥

७३. दव्वबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता दुविहे! पण्णत्ते, तं जहा - पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

७४. वीससाबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

७५. पयोगबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिढिलबंधणबंधे य, धणियबंधणबंधे य ॥

७६. भावबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७७. नेरइयाणं भंते! कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

७८. नाणावरणिज्जस्स णं भंते! कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य ॥

७९. नेरइयाणं भंते! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबंधे पण्णत्ते?
मागंदियपुत्ता! दुविहे भावबंधे पण्णत्ते, तं जहा—मूलपगडिबंधे य, उत्तरपगडिबंधे य। एवं जाव वेमाणियाणं। जहा नाणावरणिज्जेणं दंडओ भणियो एवं जाव अंतराइएणं भाणियव्वो ॥ •

कम्म-नाणत्त-पदं

८०. जीवाणं भंते! पावे कम्मे जे य कडे[1], °जे य कज्जइ[2]°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स केइ नाणत्ते?
हंता अत्थि ॥

---

१. सं० पा०—कडे जाव जे। २. जे त कडमाणे (ता)।

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवाणं पावे कम्मे जे य कडे[1], •जे य कज्जइ°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स नाणत्ते ?
मागंदियपुत्ता ! से जहानामए—केइ पुरिसे धणुं परामुसइ, परामुसित्ता उसुं परामुसइ, परामुसित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णायतं उसुं करेति, करेत्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, से नूणं मागंदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढं वेहासं उव्वीढस्स समाणस्स एयति वि नाणत्तं[2], •वेयति वि नाणत्तं, चलति वि नाणत्तं, फंदइ वि नाणत्तं, घट्टइ वि नाणत्तं, खुब्भइ वि नाणत्तं, उदीरइ वि नाणत्तं° तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ?
हंता भगवं ! एयति वि नाणत्तं जाव तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ।
से तेणट्ठेणं मागंदियपुत्ता ! एवं वुच्चइ - एयति वि नाणत्तं जाव तं तं भावं परिणमति वि नाणत्तं ।।

८२. नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे° ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाणं ।।

८३. नेरइया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति, तेसि णं भंते ! पोग्गलाणं सेयकालंसि कतिभागं आहारेंति ? कतिभागं निज्जरेंति ?
मागंदियपुत्ता ! असंखेज्जइभागं आहारेंति, अणंतभागं निज्जरेंति ।।

८४. चक्किया णं भंते ! केइ तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव[3] तुयट्टित्तए वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । अणाहारणमेयं वुइयं समणाउसो ! एवं जाव वेमाणियाणं ।।

८५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ।।

चउत्थो उद्देसो

जीवाणं परिभोगापरिभोग-पदं

८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[5] भगवं गोयमे एवं वयासी—अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव[6] मिच्छादंसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव[7]

१. सं० पा०—कडे जाव जे ।
२. सं० पा०—नाणत्तं जाव तं ।
३. भ० ७।२१९ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-१० ।
६. भ० १।३८४ ।
७. भ० १।३८५ ।

मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिबद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य बादरबोंदिधरा कलेवरा—एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगइया जीवाणं परिभोगत्ताए[1] नो हव्वमागच्छंति ।।

८७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य बादरबोंदिधरा कलेवरा—एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति । पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे—एए णं दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाणं परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ।।

कसाय-पदं

८८. कति णं भंते ! कसाया पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कसायपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[2] निज्जरिस्संति लोभेणं ।।

जुम्म-पदं

८९. कति णं भंते ! जुम्मा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोगे[3], दावरजुम्मे[4], कलिओगे[5] ।।

९०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव कलिओगे ?

गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं कडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं तेयोगे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं दावरजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं कलिओगे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव कलिओगे ।।

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२. प० १४ ।

३. तेयोए (अ); तेजोए (क); तेयोते (ख, ब); तेयोदे (ता); तेजोगे (म); तियोगे (स) ।

४. बादरजुम्मे (अ, क); बादरजुण्णे (ता) ।

५. कलिओए (ख); कलिओदे (ता) ।

९१. नेरइया णं भंते ! किं कडजुम्मा ? तेयोगा ? दावरजुम्मा ? कलिओगा ?
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एवं जाव थणियकुमारा ।।

९२. वणस्सइकाइया णं––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ।।

९३. बेंदिया[1] णं––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एवं जाव चउरिंदिया । सेसा एगिंदिया जहा बेंदिया । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया । सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ।।

९४. इत्थीओ णं भंते ! किं कडजुम्मा––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलिओगाओ । एवं असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारित्थीओ । एवं तिरिक्खजोणित्थीओ, एवं मणुसित्थीओ, एवं वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ।।

अंधगवण्हिजीवाणं वर-पर-पदं

९५. जावतिया णं भंते ! वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ?
हंता गोयमा ! जावतिया वरा अंधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अंधगवण्हिणो जीवा ।।

९६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।।

पंचमो उद्देसो

[illegible] वेउव्विय-असुरकुमारादि-पदं

९७. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेयं भंते ! एवं ?

---

१. बेइंदिया (अ) ।   २. भ० १।५१ ।

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—वेउव्वियसरीरा य, अवेउव्वियसरीरा य। तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिरूवे ॥

९८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से वेउव्वियसरीरे तं चेव जाव नो पडिरूवे ?

गोयमा ! से जहानामए—इहं मणुयलोगंसि दुवे पुरिसा भवंति—एगे पुरिसे अलंकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलंकियविभूसिए। एएसि णं गोयमा ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। जे वा से पुरिसे अलंकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलंकियविभूसिए ?

भगवं ! तत्थ णं जे से पुरिसे अलंकियविभूसिए से णं पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ णं जे से पुरिसे अणलंकियविभूसिए से णं पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। से तेणट्ठेणं जाव नो पडिरूवे ॥

९९. दो भंते ! नागकुमारा देवा एगंसि नागकुमारावासंसि° ? एवं चेव जाव थणियकुमारा। वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

नेरइयादीणं महाकम्मादि-पदं

१००. दो भंते ! नेरइया एगंसि नेरइयावासंसि नेरइयत्ताए उववन्ना। तत्थ णं एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव[1], °महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव[2], °अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा[3] य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए नेरइए से णं अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव ॥

१०१. दो भंते ! असुरकुमारा° ? एवं चेव। एवं एगिंदिय-विगलिंदियवज्जं जाव वेमाणिया ॥

नेरइयादीणं आउय-पदं

१०२. नेरइए णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?

---

१. सं० पा०—चेव जाव महावेयण° ।

२. सं० पा०—चेव जाव अप्पवेयण° ।

३. मायिमि—° (ब) ।

गोयमा ! नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एवं मणुस्सेसु वि, नवरं—मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठति ॥

१०३. असुरकुमारे णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, [1]°से णं भंते ! कयरं आउयं पडिसंवेदेति ?°

गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसंवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एवं जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स तं पुरओ कडं चिट्ठति, जत्थ ठिओ तं पडिसंवेदेति जाव वेमाणिए, नवरं—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जति, पुढविकाइयाउयं पडिसंवेदेति, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठति । एवं जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएतव्वो, परट्ठाणे तहेव ॥

असुरकुमाराईणं विउव्वणा-पदं

१०४. दो भंते ! असुरकुमारा एगंसि असुरकुमारावासंसि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना । तत्थ णं एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, जं जहा इच्छइ तं तहा विउव्वइ । एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ, वंकं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ, जं जहा इच्छति नो तं तहा विउव्वइ, से कहमेयं भंते ! एवं ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ णं जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंकं विउव्वइ जाव नो तं तहा विउव्वइ । तत्थ णं जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुयं विउव्वइ जाव तं तहा विउव्वइ ॥

१०५. दो भंते ! नागकुमारा० ? एवं चेव । एवं जाव थणियकुमारा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया एवं चेव ॥

१०६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेच्छइय-ववहार-नय-पदं

१०७. फाणियगुले णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. सं० पा०—पुच्छा ।

२. भ० १।५१ ।

गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए[1] य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स गोड्डे[2] फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे दुगंधे पंचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ।।

१०८. भमरे णं भंते ! कतिवण्णे [3]•कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते° ?
गोयमा ! एत्थ णं दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ।।

१०९. सुयपिच्छे णं भंते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?
एवं चेव, नवरं वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णे [4]•जाव अट्ठफासे पण्णत्ते°। एवं एएणं अभिलावेणं लोहिया मंजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा[5], सुक्किलए संखे, सुब्भिगंधे कोट्ठे, दुब्भिगंधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कडुया सुंठी, कसाए[6] कविट्ठे, अंबा अंबिलिया, महुरे खंडे, कक्खडे वइरे, मउए नवणीए, गरुए[7] अए, लहुए उलुयपत्ते[8], सीए हिमे, उसिणे[9] अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले ।।

११०. छारिया णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! एत्थ दो नया भवंति, तं जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पंचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ।।

परमाणु-खंधाणं वण्णादि-पदं

१११. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ।।

११२. दुपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे [10]•जाव कतिफासे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।।

११३. [11]•तिपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

१. निच्छइय° (अ, क, ब, स)।
२. गोड्ड (अ); गोडे (स)।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. सं० पा०—सेसं तं चेव।
५. हलिद्दा (अ, क, ता, ब, म)।
६. कसाए तुयरए (अ, क, ख, ता, ब म)।
७. गुरुए (अ, ब)।
८. लउयपत्ते (ता)।
९. उसुणे (अ, क, ख, ता, ब)।
१०. सं० पा०—पुच्छा।
११. सं० पा०—एवं तिपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स। एवं चउपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११४. चउपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११५. पंचपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पंचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।° जहा पंचपएसिओ एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥

११६. सुहुमपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? जहा पंचपएसिए तहेव निरवसेसं ॥

११७. बादरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे [1]°जाव कतिफासे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे जाव सिय पंचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

११८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

केवलि-भासा-पदं

११९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ[3], एवं खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे[4] समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा, से कहमेयं भंते ! एवं ?

जाव सिय चउवण्णे । एवं रसेसु वि, सेसं तं चेव । एवं पंचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव ।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।५१ ।
३. आतिस्सति (स) ।
४. आदिट्ठे (ता); आतिढे (स) ।

गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया जाव[1] जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइस्सइ, नो खलु केवली जक्खाएसेणं आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा । केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—सच्चं वा, असच्चा-मोसं वा ।।

उवहि-पदं

१२०. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंड-मत्तोवगरणोवही ।।

१२१. नेरइया णं भंते ! — पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य । सेसाणं तिविहे उवही एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं । एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य ।।

१२२. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सच्चित्ते, अचित्ते, मीसए[2] । एवं नेरइयाण वि । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ।।

परिग्गह-पदं

१२३. कतिविहे णं भंते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे बाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे ।।

१२४. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे परिग्गहे पण्णत्ते ? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेण वि दो दंडगा भाणियव्वा ।।

पणिहाण-पदं

१२५. कतिविहे णं भंते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे ।।

१२६. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव थणियकुमाराणं ।।

१२७. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।

---

१. भ० १।४२१ ।   २. मीसे (ब) ।

गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं ।।

१२८. बेइंदियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णते तं जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एवं जाव चउरिंदियाणं । सेसाणं तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ।।

१२९. कतिविहे णं भंते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेणं दंडगो भणिओ तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ।।

१३०. कतिविहे णं भंते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ।।

१३१. मणुस्साणं भंते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव ।।

१३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

१३३. तए णं समणे भगवं महावीरे[2] °अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

कालोदाइ-पभितीणं पंचत्थिकाए संदेह-पदं

१३४. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति, तं जहा—कालोदाई, सेलोदाई,[3] °सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, संखवालए, सुहत्थी गाहावई ।।

१३५. तए णं तेसिं अण्णउत्थियाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णिविट्ठाणं सण्णिसण्णाणं अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, पोग्गलत्थिकायं । एगं च णं समणे नायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पण्णवेति ।
तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं । एगं च णं

१. भ० १।५१ ।
२. सं० पा०—महावीरे जाव बहिया ।
३. सं० पा०—एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थिय-उद्देसए जाव से ।

समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पण्णवेति।° से कहमेयं मन्ने एवं ?

१३६. तत्थ णं रायगिहे नगरे मद्दुए नामं समणोवासए परिवसति—अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए, अभिगयजीवाजीवे जाव[1] विहरइ ॥

१३७. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[2] °गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव° समोसढे परिसा जाव[3] पज्जुवासति ॥

१३८. तए णं मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ[4] °चित्तमाणंदिए णंदिए पीईमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए ण्हाए जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेणं रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं[6] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसिं अण्णउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयइ ॥

१३९. तए णं ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं अदूरसामंतेणं वीईवयमाणं पासंति, पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[7], इमं च णं मद्दुए समणोवासए अम्हं अदूरसामंतेणं वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं मद्दुयं समणोवासयं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मद्दुयं समणोवासयं एवं वदासी—एवं खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पण्णवेइ, °तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकायं। तं चेव जाव[8] रूविकायं अजीवकायं पण्णवेइ।° से कहमेयं मद्दुया ! एवं ?

मद्दुय-समणोवासएण समाहाण-पदं

१४०. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—जति कज्जं कज्जति जाणामो-पासामो, अहे कज्जं न कज्जति न जाणामो न पासामो ॥

१४१. तए णं ते अण्णउत्थिया मद्दुयं समणोवासयं एवं वयासी—केस णं तुमं मद्दुया ! समणोवासगाणं भवसि, जे णं तुमं एयमट्ठं न जाणसि न पाससि ?

---

१. भ० २।९४।
२. सं० पा०—चरमाणे जाव समोसढे।
३. ओ० सू० ५२-५२।
४. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
५. भ० २।९७।
६. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. अविउप्पकडा (क, ब, म, स); अविउप्पडा (ता)।
८. सं० पा०—जहा सत्तमे सए अण्णउत्थिउद्देसए जाव से।
९. भ० ७।२१३।

१४२. तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—
अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[1], पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव[2] पज्जुवासति ।।

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३. मद्दुयादी ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुतं अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पण्णवेति[3] •परूवेति

१. पडिहणति (अ, ख, म, स) ।
२. भ० २।६७ ।
३. सं० पा०—पण्णवेति जाव उवदंसेति ।

दंसेति निदंसेति° उवदंसेति, से णं अरहंताणं आसादणाए[1] वट्टति, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, केवलीणं आसादणाए वट्टति, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, तं सुट्ठु णं तुमं मद्दुया ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं मद्दुया[2] ! •ते अण्णउत्थिए° एवं वयासी ।।

१४४. तए णं मद्दुए समणोवासए समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे[3] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ।।

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[4] परिसा पडिगया ।।

१४६. तए णं मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स[5] •अंतिए धम्मं सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइं पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियति, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता[6] •नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ।।

१४७. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं[7] •मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एवं जहेव संखे तहेव अरुणाभे जाव[8] अंतं काहिति ।।

विकुव्वणाए एगजीव-संबंध-पदं

१४८. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेणं सद्धिं संगामं संगामित्तए ?

हंता पभू ।

ताओ णं भंते ! बोंदीओ किं एगजीवफुडाओ ? अणेगजीवफुडाओ ?

गोयमा ? एगजीवफुडाओ, नो अणेगजीवफुडाओ ।

'ते णं भंते ! तासिं'[10] बोंदीणं अंतरा किं एगजीवफुडा ? अणेगजीवफुडा ?

गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा ।।

१. आसायणाए (ख); आसातणाए (ता) ।
२. सं० पा०—मद्दुया जाव एवं ।
३. सं० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।
४. ओ० सू० ७१-७६ ।
५. सं० पा०—महावीरस्स जाव निसम्म ।
६. सं० पा०—वंदित्ता जाव पडिगए ।
७. सं० पा०—अंतियं जाव पव्वइत्तए ।
८. भ० १२।२७,२८ ।
९. भ० १।३३६ ।
१०. ते णं भंते ! तेसिं (अ, क, ख, ता, ब); तेसि णं भंते (म, स) ।

१४९. पुरिसे णं भंते ! अंतरे हत्थेण वा [1]•पादेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिंचेण वा आमुसमाणे वा संमुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे॰ । नो खलु तत्थ सत्थं कमति ।।

देवासुर-संगाम-पदं

१५०. अत्थि णं भंते ! देवासुराणं संगामे,देवासुराणं संगामे ?
हंता अत्थि ।।

१५१. देवासुरेसु णं भंते ! संगामेसु वट्टमाणेसु किण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्णं ते देवा तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा परामुसंति[2] तण्णं तेसिं देवाणं पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाणं तहेव असुरकुमाराणं ? नो इणट्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ।।

देवस्स दीवसमुद्द-अणुपरियट्टण-पदं

१५२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हंता पभू ।।

१५३. देवे णं भंते ! महिड्ढिए [3]•जाव महेसक्खे पभू धायइसंडं दीवं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?॰
हंता पभू । एवं जाव[4] रुयगवरं दीवं[5] •अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?॰
हंता पभू । तेण परं वीईवएज्जा, नो चेव णं अणुपरियट्टेज्जा ।।

देवाणं कम्मक्खवण-काल-पदं

१५४. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ।।

१. सं० पा०—एवं जहा अट्ठमसए तितिए उद्देसए जाव नो ।
२. परामसंति (ख, ता, ब) ।
३. सं० पा०—एवं धायइसंडं दीवं जाव हंता ।
४. जी० ३ ।
५. सं० पा०—दीवं जाव हंता ।

१५५. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५६. अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ॥

१५७. कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति । असुरिंद-वज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति । असुर-कुमारा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति । गह-नक्खत्त-तारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससएहिं[1] खवयंति । चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोतिसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति ।
सोहम्मीसाणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं खवयंति । सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ।
हिट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति । मज्झिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । उवरिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ।
एए णं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ॥

१५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

अट्ठमो उद्देसो

ईरियं पडुच्च गोयमस्स संवाद-पदं

१५९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स[1] अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए[2] वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो[3] •पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टपोते वा कुलिंगच्छाए वा परिया-वज्जेज्जा•, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ० ?
[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं रियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोहमाण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्प रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तं रीयती। से तेणट्ठेणं• ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[5] विहरइ ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे[6] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसि-लाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं• विहरइ ॥

अण्णउत्थियाणं आरोव-पदं

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया ॥

१६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

१. पातस्स (ता)।
२. °छाते (ख, ब, म, स)।
३. सं० पा०—भावियप्पणो जाव तस्स।
४. सं० पा०—अहा सत्तमसए संवुडुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो।
५. भ० १।५१।
६. सं० पा०—महावीरे बहिया जाव विहरइ।
७. भ० ८।२७१।

नामं अणगारे जाव[1] उड्ढं जाणू[2] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

१६५. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय[3]-•विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असंवुडा, एगंतदंडा °, एगंतबाला यावि भवह[4] ?

१६६. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१६७. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह जाव[5] उद्दवेह[6], तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा[7] तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।।

१६८. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उद्दवेमो, अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं च जोयं च रीयं च पडुच्च दिस्सा[8]-दिस्सा पदिस्सा[9]-पदिस्सा वयामो, तए णं अम्हे दिस्सा-दिस्सा वयमाणा पदिस्सा-पदिस्सा वयमाणा नो पाणे पेच्चेमो जाव नो उद्दवेमो, तए णं अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतपंडिया यावि भवामो । तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।।

१६९. तए णं ते अण्णउत्थिया भगवं गोयमं एवं वयासी—केणं कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१७०. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए णं तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।।

१७१. तए णं भगवं गोयमे ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[10], पडिभणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे जाव[11] पज्जुवासति ।।

१. भ० १।९ ।
२. सं० पा०—उड्ढंजाणू जाव विहरइ ।
३. सं० पा०—अस्संजय जाव एगंत° ।
४. तुलना—भ० ८।२८५-२९० ।
५. भ० ८।२८७ ।
६. उवद्दवेह (ख) ।
७. उवद्दवेमाणा (ख) ।
८. दिस्स (अ, ता, ब, म) ।
९. पदिस्स (अ, ख, ता, ब, म) ।
१०. पडिहणइ (अ, क, ख, ब, म, स)
११. भ० १।१० ।

१७२. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी। अत्थि णं गोयमा ! ममं बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा णं तुमं। तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥

१७३. तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

परमाणुपोग्गलादीणं जाणणा-पासणा-पदं

१७४. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से[1] परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७५. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से दुपएसियं खंधं किं जाणति-पासति ? [2]•उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति।° एवं जाव असंखेज्जपएसियं ॥

१७६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से अणंतपएसियं खंधं किं [3]•जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?•
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति-पासति, अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७७. आहोहिए[4] णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ॥

१७८. परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति तं समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं

१. मणूसे (अ, क, ता, ब, म)
२. सं० पा०—एवं चेव।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. अहोहिए (ख, स)।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।

जाणति नो तं समयं पासति, जं समयं पासति° नो तं समयं जाणति। एवं जाव अणंतपदेसियं ॥

१८०. केवली णं भंते! मणुस्से परमाणुपोग्गलं '°जं समयं जाणति तं समयं पासति? जं समयं पासति तं समयं जाणति?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८१. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—केवली णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति?
गोयमा! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—केवली णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति, जं समयं पासति नो तं समयं जाणति। एवं° जाव अणंतपएसियं ॥

१८२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

भाविय-दव्व-पदं

१८३. रायगिहे जाव एवं वयासी—अत्थि णं भंते! भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया?
हंता अत्थि ॥

१८४. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया?
गोयमा! जे भविए पंचिंदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेणं। एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

१८५. अत्थि णं भंते! भवियदव्वपुढविकाइया-भवियदव्वपुढविकाइया?
हंता अत्थि ॥

१८६. से केणट्ठेणं?
गोयमा! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेणं। आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं एवं चेव। तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा

२. सं० पा०—जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव।

तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु उववज्जित्तए। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए। एवं मणुस्सा वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया णं जहा नेरइया।।

१८७. भवियदव्वनेरइयस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी।।

१८८. भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं जाव थणियकुमारस्स।।

१८९. भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। एवं आउक्काइयस्स वि। तेउ-वाउकाइयस्स वि जहा नेरइयस्स। वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स। बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं मणुस्सस्स वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स।।

१९०. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।।

दसमो उद्देसो

भावियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पदं

१९१. रायगिहे जाव एवं वयासि—अणगारे णं भंते! भावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा?
हंता ओगाहेज्जा।।
से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा?
नो इणट्ठे समट्ठे। नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।।

१९२. [1]अणगारे णं भंते! भावियप्पा अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
हंता वीइवएज्जा।
से णं भंते! तत्थ झियाएज्जा?

१. सं० पा०—एवं जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेणं

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९३. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?

हंता वीइवएज्जा ।

से णं भंते ! तत्थ उल्ले सिया ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९४. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा गंगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?

हंता हव्वमागच्छेज्जा ।

से णं भंते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९५. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा उदगावत्तं वा उदगबिंदुं वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा ।

से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

परमाणुपोग्गलादीणं वाउकाय-फास-पदं

१९६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेणं फुडे ?

गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेणं फुडे ॥

१९७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा दुप्पएसिएणं खंधेणं फुडे ? एवं चेव । एवं जाव असंखेज्जपएसिए ॥

१९८. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे वाउयाएणं फुडे—पुच्छा ।

गोयमा ! अणंतपएसिए खंधे वाउयाएणं फुडे, वाउयाए अणंतपएसिएणं खंधेणं सिय फुडे, सिय नो फुडे ॥

१९९. वत्थी भंते ! वाउयाएणं फुडे ? वाउयाए वा वत्थिणा फुडे ?

गोयमा ! वत्थी वाउयाएणं फुडे, नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥

दव्वाणं वण्णादि-पदं

२००. अत्थि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइं वण्णओ 'काल-नील'[1]-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइं, गंधओ सुब्भिगंधाइं, दुब्भिगंधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अंबिल-महुराइं, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसिण-

१. काला नीला (अ, क, ख, ता, म) ।

निद्ध-लुक्खाइं, अण्णमण्णबद्धाइं, अण्णमण्णपुट्ठाइं, 'अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं", अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि। एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

२०१. अत्थि णं भंते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइं ? एवं चेव। एवं जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए ॥

२०२. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[2] विहरइ ॥

२०३. तए णं समणे भगवं महावीरे[3] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता• बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ। दूतिपलासए चेइए—वण्णओ। तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद[5] जाव[6] सुपरिनिट्ठिए, पंचण्हं खंडियसयाणं, 'सयस्स य[7]', कुडुंबस्स आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे• विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[9] परिसा पज्जुवासति ॥

२०५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[10] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे[11] इहमागए[12] •इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे• दूतिपलासए चेइए अहापडिरूवं[13] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे• विहरइ। तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं[14] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं• वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. भ० १।५१।
३. सं० पा०—महावीरे जाव बहिया।
४. भ० २।९४।
५. रुव्वेद (अ, म); रिउव्वेद (क, स)।
६. भ० २।२४।
७. सायस्स (अ, क, ख, ता, म)।
८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।
९. भ० १८।१३७।
१०. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१२. सं० पा०—इहमागए जाव दूतिपलासए।
१३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।
१४. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरणाइं।

वागरणाइं नो वागरेहिती तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामी ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साम्रो गिहाम्रो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवम्रो महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

२०६. जत्ता[2] ते भंते ? जवणिज्जं (ते भंते ?) ? अव्वाबाहं (ते भंते ?) ? फासुयविहारं (ते भंते ?) ?
सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, [फासुयविहारं] पि मे ।।

२०७. किं ते भंते ! जत्ता ?
सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्तं जत्ता ।।

२०८. किं ते भंते ! जवणिज्जं ?
सोमिला ! जवणिज्जे[3] दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—[इंदियजवणिज्जे] य, नोइंदियजवणिज्जे य ।।

२०९. से किं तं इंदियजवणिज्जे ?
इंदियजवणिज्जे—जं मे सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे ।।

२१०. से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?
नोइंदियजवणिज्जे—जं मे कोह-माण-माया[4]-लोभा [वोच्छिण्णा] नो उदीरेंति, सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे, सेत्तं जवणिज्जे ।।

२११. किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?
सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-संभिय-[सण्णिवाइय][5] विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति, सेत्तं अव्वाबाहं ।।

२१२. किं ते भंते ! फासुयविहारं ?
सोमिला ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेत्तं फासुयविहारं ।।

---

१. भ० २।६७ ।
२. तुलना—नायाधम्मकहाओ १।५।७०-७६ ।
३. जमणिज्जे (अ, ख, ता, म) ।
४. माय (क, ख, ता) ।
५. सन्निवाइय (अ, ख) ।

२१३. सरिसवा[1] ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! सरिसवा (मे ?) भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य।
तत्थ णं जेते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया'[2], ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जेते धन्नसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य, अजाइया य। तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ[3]—•सरिसवा मे भक्खेया वि॰ अभक्खेया वि ॥

२१५. मासा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि ॥

२१६. से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि॰ अभक्खेया वि ?
से नूणं भे[5] सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वमासा य, कालमासा य।
तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा—सावणे, भद्दवए, आसोए[6], कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थमासा य, धण्णमासा य।

१. सरिसवया (ना० १।५।७३)।
२. सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव अभक्खेया।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव अभक्खेया।
५. भंते (अ, ता, ब, म); × (ख)।
६. अस्सोए (अ, क, ता, ब, म)

तत्थ णं जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुवण्णमासा य, रुप्पमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य। एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि॥

२१७. कुलत्था ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया?

सोमिला! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि॥

२१८. से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि?

से नूणं भे सोमिला! बंभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य।

तत्थ णं जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया'[1] इ वा। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवा। से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि॥

२१९. एगे भवं? दुवे भवं? अक्खए भवं? अव्वए भवं? अवट्ठिए भवं? अणेगभूय-भाव-भविए भवं?

सोमिला! एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं॥

२२०. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ[2]—•एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव°-भविए वि अहं?

सोमिला! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं। से तेणट्ठेणं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं॥

२२१. एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा खंदओ जाव[3] से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ[4] •मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, नो खलु अहं तहा संचाएमि[5], अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालस-विहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि° जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति[6] •नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए॥

---

१. कुलकण्णया इ वा कुलमाउया इ वा कुल-वहुया (अ, क, ता, ब, स)।
२. सं० पा०—वुच्चइ जाव भविए।
३. भ० २।५०-५२।
४. पू०—राय० सू० ६९५।
५. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्तो।
६. पू०—राय० सू० ६९५।
७. सं० पा०—वंदति जाव पडिगए।

२२२. तए णं से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहा-परिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पभू णं भंते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । जहेव संखे तहेव निरवसेसं जाव[2] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

२२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

१. भ० २।६४ ।
२. भ० १२।२७,२८ ।
३. भ० १।५१ ।

एगूणवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेस्सा य २. गब्भ ३. पुढवी, ४. महासवा ५. चरम ६. दीव ७. भवणा य।
८. निव्वत्ति ९. करण १०. वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एवं जहा पण्णवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो[1] निरवसेसो ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३. कति णं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? एवं जहा पण्णवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो[2] ॥

४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. प० १७।४।
२. प० १७।६।

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. 'रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव[2] चत्तारि पंच पुढविक्काइया एगयओ साधारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे। पुढविक्काइयाणं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयं सरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ॥

६. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ॥

७. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी[3] ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥

८. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मतिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ॥

९. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ॥

१०. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

११. ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?
गोयमा ! दव्वओ णं अणंतपदेसियाइं दव्वाइं—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[4] सव्वप्पणयाए[5] आहारमाहारेंति ॥

१२. ते णं भंते ! जीवा जमाहारेंति तं चिज्जति, जं नो आहारेंति तं नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?
हंता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेंति तं चिज्जति, जं नो आहारेंति जाव पलिसप्पति वा ॥

१. इह चेयं द्वारगाथा क्वचिद् दृश्यते—
सिय लेसदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्टी (वृ)।

२. यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ)।

३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स)।

४. प० २८।१।

५. सव्वपयाए (ब)।

१३. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणोति वा वईति वा अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, आहारेंति पुण ते ।।

१४. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा[1] °पण्णाति वा मणोति वा° वईति वा अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते ।।

१५. ते णं भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, मुसावाए, अदिण्णादाणे जाव[2] मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति ?
गोयमा ! पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जंति। जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसिं पि णं जीवाणं नो विण्णाए नाणत्ते ।।

१६. ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति० ?
एवं जहा वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ तहा भाणियव्वो[3] ।।

१७. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं ।।

१८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ।।

१९. ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहया मरंति ? असमोहया मरंति ?
गोयमा ! समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति ।।

२०. ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ?
एवं उव्वट्टणा जहा वक्कंतीए[4] ।।

आउक्काइयादि-पदं

२१. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति० ?
एवं जो पुढविक्काइयाणं गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टंति, नवरं—ठिती सत्त वाससहस्साइं उक्कोसेणं, सेसं तं चेव ।।

२२. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच तेउक्काइया० ? एवं चेव, नवरं—उववाओ

---

१. सं० पा०—सण्णाति वा जाव वईति ।
२. भ० १।३८४ ।
३. प० ६ ।
४. प० ६ ।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेसं तं चेव। वाउकाइयाणं एवं चेव, नाणत्तं नवरं – चत्तारि समुग्घाया ॥

२३. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया— पुच्छा।
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे। अणंता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति। सेसं जहा तेउकाइयाणं जाव उव्वट्टंति, नवरं—आहारो नियमं छद्दिसिं, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पदं

२४. एएसि णं भंते ! पुढविक्काइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २. सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४. सुहुमआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५. सुहुमपुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६. बादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ७. बादरतेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८. बादरआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९. बादरपुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १०,११. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एएसि णं पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १२. सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १३. तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५. सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एवं सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एवं सुहुमआउक्काइयस्स वि २४-२६ एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एवं बादरवाउकाइयस्स वि ३०-३२. एवं बादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एवं बादरआउकाइयस्स वि ३६-३८ एवं बादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणियव्वं, ३९ बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा

---

१. प० ४,६।

२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

४०. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४२. पत्तेयसरीरबादरवणस्सइ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४३. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४४. तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ।।

थावरजीवाणं सव्वसुहुम-सव्वबादर-पदं

२५. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ।।

२६. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२७. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२८. एयस्स णं भंते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२९. एयस्स णं भंते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वबादरे ? कयरे काये सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वबादरे, वणस्सइकाए सव्वबादरतराए ।।

३०. एयस्स णं भंते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! पुढविक्काए सव्वबादरे, पुढविक्काए सव्वबादरतराए ।।

३१. एयस्स णं भंते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वबादरे, आउक्काए सव्वबादरतराए ।।

३२. एयस्स णं भंते ! तेउकाइयस्स वाउकाइस्स य कयरे काए सव्वबादरे ? कयरे काए सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वबादरे, तेउक्काए सव्वबादरतराए ।।

पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पदं

३३. केमहालए णं भंते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अणंताणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ-

सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमवाउसरीराणं[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमतेउकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असंखेज्जाणं सुहुमपुढविकाइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरवाउक्काइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असंखेज्जाणं बादरतेउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असंखेज्जाणं बादरआउकाइयाणं जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे। एमहालए णं गोयमा ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ।।

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स णं भंते ! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! से जहानामए रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलवं जुगवं जुवाणी अप्पायंका [2]•थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेणं वइरामएणं वट्टावर-एणं एगं महं पुढविकाइयं जतुगोलासमाणं गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसंखिविय-पडिसंखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ णं गोयमा ! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया संघट्टिया अत्थेगतिया नो संघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा ! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ।।

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए णं भंते ! अक्कंते समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलवं [3]•जुगवं जुवाणे अप्पातंके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठंतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-विचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लंघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

१. सुहुमवाउकाइयाणं ति क्वचित्पाठः (वृ)।
२. सं० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भण्णति, सेसं त चेव जाव निउण°।
३. सं० पा०—बलवं जाव निउण°।

निउणसिप्पोवगए एगं पुरिसं जुण्णं जरा-जज्जरिय-देहं[1] •आउरं झूसियं पिवासियं° दुब्बलं किलंतं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहणेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे तेणं पुरिसेणं जमलपाणिणा मुद्धाणंसि अभिहए समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?

अणिट्ठं समणाउसो !

तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढविकाइए अक्कंते समाणे एत्तो अणिट्ठतरियं चेव अकंततरियं[2] •अप्पियतरियं असुहतरियं अमणुण्णतरियं° अमणामतरियं चेव वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

आउकाइयादीणं वेदणा-पदं

३६. आउयाए णं भंते ! संघट्टिए समाणे केरिसियं वेदणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ? गोयमा ! जहा पुढविकाइए एवं चेव। एवं तेउयाए वि। एवं वाउयाए वि। एवं वणस्सइकाए वि जाव[3] विहरइ ।।

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

चउत्थो उद्देसो

महासवादि-पदं

४८. सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३६. सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ? हंता सिया ।।

४०. सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४१. सिय भंते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ? गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४२. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१. सं० पा०—देहं जाव दुब्बलं ।
२. स० पा०—अकंततरियं जाव अमणामतरियं ।
३. भ० १६।३५ ।

४३. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो[1] इणट्ठे समट्ठे ॥

४५. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४७. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४८. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४९. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५०. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५१. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५३. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ॥

५४. सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा । एवं जाव थणियकुमारा ॥

५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—

५६. सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

५७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. सदृशप्रकरणेपि पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति पदं लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च एतत् पदं न दृश्यते ।

पंचमो उद्देसो

चरम-परम-पदं

५८. अत्थि णं भंते ! चरमा[1] वि नेरइया ? परमा वि नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

५९. से नूणं भंते ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरइया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव; परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्सवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?
हंता गोयमा ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६१. अत्थि णं भंते ! चरमा वि असुरकुमारा ? परमा वि असुरकुमारा ? एवं चेव, नवरं—विवरीयं भाणियव्वं, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा[2]। सेसं तं चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव। पुढविकाइया जाव मणुस्सा एते जहा नेरइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

वेदणा-पदं

६२. कतिविहा णं भंते ! वेदणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, तं जहा—निदा य, अनिदा य ॥

६३. नेरइया णं भंते ! किं निदायं वेदणं वेदेंति ? अनिदायं वेदणं वेदेंति ?
गोयमा ! निदायं पि वेदणं वेदेंति, अनिदायं पि वेदणं वेदेंति । जहा पण्णवणाए जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. चरिमा (अ, ख, ब, म) ।
२. बहुकम्मा (अ, ब) ।
३. प० ३५ ।

छट्ठो उद्देसो

दीवसमुद्द-पदं

६५. कहि णं भंते ! दीवसमुद्दा ? केवतिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? किंसंठिया णं भंते ! दीवसमुद्दा ? एवं जहा जोवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इह वि जोइसमंडिउद्देसगवज्जो[1] भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ जाव[2] अणंतखुत्तो ।।

६६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

सत्तमो उद्देसो

असुरकुमारादीणं भवणादि-पदं

६७. केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठिं[3] असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

६८. ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव[4] पडिरूवा । तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति, विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति । सासया णं ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहिं जाव[5] फासपज्जवेहिं असासया । एवं जाव थणियकुमारावासा ।।

६९. केवतिया णं भंते ! वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा वाणमंतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७०. ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ? सेसं तं चेव ।।

७१. केवतिया णं भंते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७२. ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेसं तं चेव ।।

---

१. जोइसियमंडि० (क, स) ।
२. जी० ३ ।
३. चोवट्ठिं (क, ता); चउसट्ठिं (स) ।
४. भ० २।११८ ।
५. भ० २।४७ ।

७३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७४. ते णं भंते ! किंमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेसं तं चेव जाव अणुत्तरविमाणा, नवरं—जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ।।

७५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

अट्ठमो उद्देसो

जीवादि-निव्वत्ति-पदं

७६. कतिविहा णं भंते ! जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव पंचिंदियजीवनिव्वत्ती ।।

७७. एगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती ।।

७८. पुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य, बादरपुढविकाइयएगिंदियजीवनिव्वत्ती य । एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा वड्डगबंधो तेयगसरीरस्स जाव[1]—

७९. सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय[2]-•कप्पातीतवेमाणिय॰देवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियजीवनिव्वत्ती य ।।

८०. कतिविहा णं भंते ! कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती ।।

८१. नेरइयाणं भंते ! कतिविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१. भ० ८।४१३ ।
२. सं० पा०—॰अणुत्तरोववातिय जाव देव॰ ।

गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

८२. कतिविहा णं भंते ! सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ॥

८३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ? एवं चेव। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—नायव्वं जस्स जइ सरीराणि ॥

८४. कतिविहा णं भंते ! सव्विंदियनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सव्विंदियनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियनिव्वत्ती जाव फासिंदियनिव्वत्ती। एवं[1] नेरइयाणं जाव थणियकुमाराणं ॥

८५. पुढविकाइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! एगा फासिंदियनिव्वत्ती पण्णत्ता। एवं जस्स 'जति इंदियाणि'[2] जाव वेमाणियाणं ॥

८६. कतिविहा णं भंते ! भासानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सच्चभासानिव्वत्ती, मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासा निव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती। एवं एगिंदियवज्जं जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥

८७. कतिविहा णं भंते ! मणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पण्णत्ता तं जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणनिव्वत्ती। एवं एगिंदियविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥

८८. कतिविहा णं भंते ! कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसायनिव्वत्ती जाव लोभकसायनिव्वत्ती। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

८९. कतिविहा णं भंते ! वण्णनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा वण्णनिव्वत्ती तं जहा—कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किला-वण्णनिव्वत्ती। एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं। एवं गंधनिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाणं। रसनिव्वत्ती पंचविहा जाव वेमाणियाणं। फासनिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाणं ॥

९०. कतिविहा णं भंते ! संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंससंठाणनिव्वत्ती जाव हुंडसंठाणनिव्वत्ती ॥

१. एवं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)। २. जदिंदियाणि (ता)।

९१. नरयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा हुंडसंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ॥

९२. असुरकुमाराणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा समचउरंससंठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता । एवं जाव थणियकुमाराणं ॥

९३. पुढविकाइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा मसूरचंदसंठाणनिव्वत्ती[1] पण्णत्ता । एवं जस्स जं संठाणं जाव वेमाणियाणं ॥

९४. कतिविहा णं भंते ! सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—आहारसण्णानिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णानिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

९५. कतिविहा णं भंते ! लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति लेस्साओ ॥

९६. कतिविहा णं भंते ! दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहा दिट्ठी ॥

९७. कतिविहा णं भंते ! नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—आभिणिबोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति नाणा ॥

९८. कतिविहा णं भंते ! अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणनिव्वत्ती, सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभंगनाणनिव्वत्ती । एवं जस्स जति अण्णाणा जाव वेमाणियाणं ॥

९९. कतिविहा णं भंते ! जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जतिविहो जोगो ॥

१००. कतिविहा णं भंते ! उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

१. मसूरचंदा° (क); मसूराचंदा° (ता, ब) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा— सागारोवओगनिव्वत्ती, अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं[1] ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे ॥

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ॥

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुंसगवेदकरणे । एए सव्वे नेरइयादी दंडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ॥

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

---

१. अतोग्रे 'अ, क, ब, स' प्रतिषु सङ्ग्रहणीगाथे दृश्येते—
जीवाणं निव्वत्ती,
कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती ।
सव्विंदियनिव्वत्ती,
भासा य मणे कसाया य ॥१॥
वण्ण रस गंध फासे,
संठाणविही य होइ बोद्धव्वा ।
लेसा दिट्ठी नाणे,
उवओगे चेव जोगे य ॥२॥

गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियपाणाइवायकरणे जाव पंचिंदियपाणाइवायकरणे । एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं ॥

१०७. कतिविहे णं भंते ! पोग्गलकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पोग्गलकरणे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णकरणे, गंधकरणे, रसकरणे, फासकरणे, संठाणकरणे ॥

१०८. वण्णकरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालावण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे । एवं भेदो—गंधकरणे दुविहे, रसकरणे पंचविहे, फासकरणे अट्ठविहे ॥

१०९. संठाणकरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणकरणे जाव[1] आयतसंठाण-करणे ॥

११०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

१११. वाणमंतरा णं भंते ! सव्वे समाहारा० ? एवं जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसओ जाव[2] अप्पिड्ढिय त्ति ॥

११२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० ८।३६ । २. भ० १६।१२५-१२८ ।

वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. बेइंदिय २. मागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५. परमाणू ।
६. अंतर ७. बंधे ८. भूमी, ९. चारण १०. सोवक्कमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहरणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । बेंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ॥

२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा । एवं जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाणं जाव[1] उव्वट्टंति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छद्दिसिं ।

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, सेसं तं चेव । एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि, नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा[2] पण्णवणाए ॥

४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहरणसरीरं बंधंति ? एवं जहा बेंदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

१. भ० १९।२२ । २. प० ४ ।

५. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा— अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा— अम्हे णं आहारमाहारेमो। अत्थेगतियाणं नो एवं सण्णाति वा जाव वईति वा— अम्हे णं आहारमाहारेमो, आहारेंति पुण ते।

६. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गंधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो। अत्थेगतियाणं नो एवं सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो, पडिसंवेदेंति पुण ते।

७. ते णं भंते ! जीवा किं पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जंति जाव मिच्छादंसणसल्ले वि उवक्खाइज्जंति अत्थेगतिया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जंति, नो मुसावाए जाव नो मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जंति। जेसिं पि णं जीवाणं ते जीवा एवमाहिज्जंति तेसिं पि णं जीवाणं अत्थेगतियाणं विण्णाए नाणत्ते। अत्थेगतियाणं नो विण्णाए नाणत्ते। उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छंति जाव सव्वट्ठसिद्धं ति, सेसं जहा बेंदियाणं॥

८. एएसि णं भंते ! बेइंदियाणं जाव पंचिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया, चउरिंदिया विसेसाहिया, तेइंदिया विसेसाहिया, बेइंदिया विसेसाहिया॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ॥

बीओ उद्देसो

आगास-पदं

१०. कतिविहे णं भंते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे य, अलोयागासे य॥

११. लोयागासे णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा° ?—एवं जहा बितियसए

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। २. भ० १।५१।

अत्थिउद्देसे तहेव इह वि भाणियव्वं, नवरं—अभिलावो जाव[1] धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता णं चिट्ठति । एवं जाव पोग्गलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवतियं ओगाढे ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं ओगाढे । एवं एएणं अभिलावेणं जहा बितियसए जाव[2]—

१३. ईसिपब्भारा णं भंते ! पुढवी लोयागासस्स किं संखेज्जइभागं ओगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जइभागं ओगाढा, असंखेज्जइभागं ओगाढा, नो संखेज्जे भागे ओगाढा, नो असंखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं तं चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयण-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभंडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती[3] इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अधम्मत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा जाव मिच्छादंसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण[4]•खेलसिंघाणजल्ल॰पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स णं [5]•भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?॰
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

१. भ० २।१३९-१४५ ।
२. भ० २।१४७-१५३ ।
३. ॰लजल्लसिंघाण॰ (ख, म, स)
४. सं० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया॰ ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।

काए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अंबरे इ वा, अंबरसे इ वा, छिड्डे इ वा, झुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, 'अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा'[1], आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अंतलिक्खे[2] इ वा, सामे इ वा, ओवासंतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणंते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१७. जीवत्थिकायस्स णं भंते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—जीवे इ वा, जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, 'वेया इ वा'[3], चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रंगणे[4] इ वा, हिंदुए[5] इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जंतू इ वा, जोणी[6] इ वा, सयंभू इ वा, ससरीरी इ वा, नायए इ वा, अंतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स[7] अभिवयणा ॥

१८. पोग्गलत्थिकायस्स णं भंते ! °केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता° ?[8]
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, तं जहा—पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असंखेज्ज-पएसिए इ वा, अणंतपएसिए इ वा खंधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गल-त्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

पाणाइवायादीणं आयाए परिणति-पदं

२०. अह भंते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादंसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया[9] °वेणइया कम्मया° पारिणामिया,

---

१. अद्दे इ वा, वियद्दे (स, वृ); अट्टे इ वा, वियट्टे (वृपा)।
२. अंतरिक्खे (ख, स)।
३. × (अ, क, ख)।
४. रंगणा (अ, क, ख, ता, म)।
५. हिंडुए (क्व°)।
६. जोणियं (ख)।
७. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
८. सं० पा०—पुच्छा।
९. सं० पा०—उप्पत्तिया जाव पारिणामिया।

ओग्गहे[1] •ईहा अवाए° धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वइजोगे कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ।।

गब्भं वक्कममाणस्स वण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंधं'[2] [3]•कतिरसं कतिफासं परिणामं परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ।।

२२. कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?

हंता गोयमा ! कम्मओ णं जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ।।

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ।।

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवचय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं बितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा[5] पण्णवणाए ।।

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ।।

---

१. सं० पा०—ओग्गहे जाव धारणा ।
२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।
३. सं० पा०—एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ ।
४. भ० १।५१ ।
५. प० १५।२ ।
६. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं वण्णादिभंग-पदं

२६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगगंधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते[1]। जइ एगवण्णे ? सिय कालए, सिय नीलए, सिय लोहियए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किलए। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ एगरसे ? सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अंबिले, सिय महुरे। जइ दुफासे ? १. सिय सीए य निद्धे य, २. सिय सीए य लुक्खे य, ३. सिय उसिणे य निद्धे य, ४. सिय उसिणे य लुक्खे य ।।

२७. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[2]°गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगंधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे°, सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सिय सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य लोहितए य, ३. सिय कालए य हालिद्दए य, ४. सिय कालए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य, ६. सिय नीलए य हालिद्दए य, ७. सिय नीलए य सुक्किलए य, ८. सिय लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय लोहियए य सुक्किलए य, १०. सिय हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दुयासंजोगे दस भंगा। जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एवं जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ३. सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, ४. सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे। जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए नव भंगा फासेसु ।।

२८. तिपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव[3] चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सुक्किलए।
जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, १. सिय कालए य लोहियए य, २. सिय कालए य लोहियगा य, ३. सिय कालगा य लोहियए य, एवं हालिद्दएण वि समं ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि भंगा ३, एवं

---

१. पं तं (अ, म)।
२. सं० पा०—एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय।
३. भ० १८।११३।

हालिद्दएण वि समं भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं भंगा ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य भंगा ३, एवं सुक्किलेण वि समं ३, सिय हालिद्दए य सुक्किलए य भंगा ३, एवं सव्वे ते दस दुयासंजोगा भंगा तीसं भवंति।

जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, ३. सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य, ५. सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ७. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ८. सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ९. सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १०. सिय लोहियए स हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दस तियासंजोगा।

जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य भंगा ३। रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एवं जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भंगा। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भंगा तिण्णि।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ७. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ८. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा॥

२९. चउप्पएसिए णं भंते! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए य जाव सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, ४. सिय कालगा य नीलगा य, सिय कालए य लोहियए य एत्थ वि चत्तारि भंगा, सिय कालए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ४, सिए नीलए य हालिद्दए य ४, सिय नीलए य सुक्किलए य ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय लोहियए य सुक्किलए य ४,

१. भ० १८।११४।

सिय हालिद्दए य सुक्किलए य ४, एवं एए दस दुयसंजोगा भंगा पुण चत्तालीसं। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, एए भंगा ४, एवं कालानीलाहालिद्दएहिं भंगा ४, कालनीलसुक्किल ४, काललोहियहालिद्द ४, काललोहियसुक्किल ४, कालहालिद्दसुक्किल ४, नीललोहिसहालिद्दगाणं भंगा ४, नीललोहियसुक्किल ४, नीलहालिद्दसुक्किल ४, लोहियहालिद्दसुक्किलगाणं भंगा ४, एवं एए दसतियासंजोगा, एक्केक्के संजोए चत्तारि भंगा, 'सव्वे एते'[1] चत्तालीसं भंगा।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ३. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य लोहियए हालिद्दए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवमेते चउक्कगसंजोगे पंच भंगा। एए सव्वे नउइं भंगा।

जइ एगगंधे ? सिय सुब्भिगंधे, सिय दुब्भिगंधे। जइ दुगंधे ? सुब्भिगंधे य दुब्भिगंधे य रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं भंगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए तिफासे सोलस भंगा।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ७. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ८. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, ९. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं एए चउफासे सोलस भंगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीसं भंगा॥

३०. पंचपएसिए णं भंते ! खंधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहेव चउप्पएसिए। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए

१. सव्वेते (अ, क, ख, ब, म, स)। १. भ० १८।११५

य लोहियगा य, ३. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, ६ सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य, ७. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, एत्थ वि सत्त भंगा, एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भंगा, कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७, कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७, कालग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७, नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भंगा, नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि सत्त भंगा, एवमेते तियासंजोएणं सत्तरि भंगा।

जइ उचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियय य हालिद्दए २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, एए पंच भंगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य एत्थ वि पंच भंगा, एवं कालग-नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, कालग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलएसु वि पंच भंगा, नीलग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पंच भंगा, एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीसं भंगा।

जइ पंचवण्णे ? कालए ण नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, सव्वमेते एक्कग[1]-दुयग-तियग-चउक्क-पंचगसंजोएणं ईयालं भंगसयं भवति। गंधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३१. छप्पएसिए णं भंते! खंधे कतिववण्णे॰ ? एवं जहा पंचपए सिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहा पंचपएसियस्स।

जइ तिवण्णे ! सिय कालए य नीलए य लोहियए य, एवं जहेव पंचपएसियस्स सत्त भंगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य, एए अट्ठ भंगा, एवमेते दस तियासंजोगा, एक्केक्कए संजोगे अट्ठ भंगा, एवं सव्वे वि तियगसंजोगे असीति भंगा।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा त हालिद्दए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, ६. सिय कालए य नीलगा य लोहिए य हालिद्दगा य, ७. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, ८. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय

१. एक्केक्का (अ, म); एक्केक्क (क, ता, ब)।

कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, १०. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, ११. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, एए एक्कारस भंगा, एवमेते 'पंच चउक्कसंजोगा'[1] कायव्वा, एक्केक्कसंजोए एक्कारस भंगा, सव्वे एते चउक्कसंजोएणं पणपण्णं भंगा।

जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ५. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए छब्भंगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेसु छासीयं भंगसयं भवति। गंधा जहा पंचपएसियस्स। रसा जहा एयस्सेव वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३२. सत्तपएसिए णं भंते! खंधे कतिवण्णे० ? जहा पंचपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स। जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते चउक्कगसंजोगेणं पन्नरस भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते पंच चउक्का-संजोगा नेयव्वा, एक्केक्के संजोए पन्नरस भंगा, सव्वमेते पंचसत्तरि भंगा भवंति।

जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, ५. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, ७. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ८. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ९. सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १०. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ११. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, १२. सिय कालगा य नीलगे य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १३. सिय कालगा य नीलए

१. पंचचउक्का० (क, ख, ब); पंचगचउक्का (ता)।

य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १५. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए सोलस भंगा, एवं सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोगेणं दो सोला[1] भंगसया भवंति । गंधा जहा चउप्पएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ।।

३३. अट्ठपएसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते ।

जइ एगवण्णे ? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए ।

जइ चउवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव, १५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य, एए सोलस भंगा, एवमेते पंच चउक्क-संजोगा, एवमेते असीति भंगा ।

जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, एवं एएणं कमेणं भंगा चारेयव्वा जाव १५. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलगे य, एसो पन्नरसमो भंगो, १६. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य १७. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, १८. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १९. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, २०. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, २१. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २२. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २३. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य, २४. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए पंचसंजोएणं छव्वीसं भंगा भवंति, एवमेव सपुव्वावरेणं एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहिं दो एक्कतीसं भंगसया भवंति । गंधा जहा सत्तपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ।।

---

१. सोलस (स) ।

३४. नवपएसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स । जइ पंचवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, एवं परिवाडीए एक्कतीसं भंगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, एए एकत्तीसं भंगा, एवं एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएहिं दो छत्तीसा भंगसया भवंति । गंधा जहा अट्ठपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउपएसियस्स ॥

३५ दसपएसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स । पंचवण्णे वि तहेव, नवरं—बत्तीसतिमो भंगो भण्णति, एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसंजोएसु दोण्णि सत्ततीसा भंगसया भवंति । गंधा जहा नवपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपएसिओ एवं संखेज्जपएसिओ वि । एवं असंखेज्जपएसिओ वि । सुहुमपरिणओ अणंतपएसिओ वि एवं चेव ॥

३६. बायरपरिणए णं भंते ! अणंतपएसिए खंधे कतिवण्णे० ? एवं जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय अट्ठफासे पण्णत्ते । वण्ण-गंध-रसा जहा दसपएसियस्स ।
जइ चउफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ५. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, ६. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ७. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ८. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ९. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १०. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ११. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १२. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, १३. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १४. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, १५. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १६. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, एए सोलस भंगा ।
जइ पंचफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे,

१. भ० १८।११७ ।

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एवं एए कक्खडेणं सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि सोलस भंगा, एवं बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए बत्तीसं भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीसं भंगा, एवं सव्वे एते पंचफासे अट्ठावीसं भंगसयं भवति।

जइ छप्फासे? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एवं जाव १६. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भंगा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भंगा, १. सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठि भंगा, सव्वे एते छप्फासे तिण्णि चउरासीया भंगसया भवंति।

जइ सत्तफासे? १. सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे एते सोलस भंगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं गरुएणं एगत्तेणं, लहुएणं पुहत्तेणं, एते वि सोलस भंगा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा भाणियव्वा, एवमेते चउसट्ठि भंगा कक्खडेण समं। सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं मउएण वि समं चउसट्ठि भंगा भाणियव्वा[1]। सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं गरुएण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं लहुएण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं सीतेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं उसिणेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एवं निद्धेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा। सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एवं लुक्खेण वि समं चउसट्ठि भंगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एवं सत्तफासे पंच बारसुत्तरा भंगसया भवंति।

जइ अट्ठफासे? देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भंगा। देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एवं एते गरुएणं एगत्तएणं, लहुएणं पुहत्तएणं सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भंगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एते वि सोलस भंगा कायव्वा। सव्वेवेते चउसट्ठि भंगा कक्खड-मउएहिं

१. नेयव्वा (अ, क, ता, ब, म)।

एगत्तएहिं। ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएणं पुहत्तएणं, एते चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे कक्खडेणं पुहत्तएणं, मउएणं एगत्तएणं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा। ताहे एतेहिं चेव दोहि वि पुहत्तेहिं चउसट्ठिं भंगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भंगो। सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भंगसया भवंति। एवं एते बादरपरिणए अणंतपएसिए खंधे सव्वेसु संजोएसु बारस छन्नउया भंगसया भवंति॥

परमाणु-पदं

३७. कतिविहे णं भंते! परमाणू पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, तं जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू॥

३८. दव्वपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे॥

३९. खेत्तपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणड्ढे, अमज्झे, अपदेसे, अविभाइमे॥

४०. कालपरमाणू [1]°णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?°
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे॥

४१. भावपरमाणू णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते?
गोयमा! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते॥

४२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव[2] विहरइ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविआदीणं आहार-पदं

४३. पुढविक्काइए णं भंते! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा? पुव्विं आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा?
गोयमा! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एवं जहा सत्तरसमसए

१. सं० पा०—पुच्छा। २. भ० १।५१।

छट्ठुद्देसे जाव[1] से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पुव्विं वा जाव उववज्जेज्जा, नवरं—तेहिं संपाउणणा, इमेहिं आहारो भण्णति, सेसं तं चेव ॥

४४. पुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं चेव । एवं जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ॥

४५. पुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए, एवं एतेणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ॥

४६. पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्विं उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा० ? सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव निक्खेवओ ॥

४७. पुढविक्काइए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं चेव । एवं जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एवं सणंकुमार-माहिंदाणं बंभलोगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एवं बंभलोगस्स लंतगस्स य कप्पस्स अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं लंतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अंतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं सहस्सारस्स आणय-पाणय-कप्पाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं आणय-पाणयाणं आरणच्चु-याण य कप्पाणं अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं आरणच्चुयाणं गेवेज्ज-विमाणाण य अंतरा जाव अहेसत्तमाए । एवं गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमा-णाण य अंतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एवं अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भा-राए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥

४८. आउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेसं जहा पुढविक्काइयस्स जाव से तेणट्ठेणं । एवं पढम-दोच्चाणं अंतरा समोहए जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो । एवं एएणं कमेणं जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ॥

१. भ० १७।६७,६८ ।

४९. आउयाए णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं सणंकुमार-माहिंदाण य कप्पाणं अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेसं तं चेव। एवं एएहिं चेव अंतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। एवं जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥

५०. वाउक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवरं—अंतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेसं तं चेव जाव अणुत्तरविमाणाणं ईसीपब्भाराए य पुढवीए अंतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेसं तं चेव जाव से तेणट्ठेणं जाव[1] उववज्जेज्जा ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२. कतिविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥

५३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे बंधे पण्णत्ते ? एवं चेव। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

५४. नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥

५५. नेरइयाणं भंते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ? एवं चेव। एवं जाव वेमाणियाणं। एवं जाव अंतराइयस्स ॥

१. भ० १७।७८-८० ।
२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यब्वायु- विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टमः (वृ) ।

५६. नाणावरणिज्जोदयस्स णं भंते ! कम्मस कतिविहे बंधे पण्णत्त ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते एवं चेव । एवं नेरइयाण वि । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं जाव अंतराइओदयस्स ॥

५७. इत्थीवेदस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते एवं चेव ॥

५८. असुरकुमाराणं भंते ! इत्थीवेदस्स कम्मस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स इत्थिवेदो अत्थि । एवं पुरिसवेदस्स वि । एवं नपुंसगवेदस्स वि जाव वेमाणियाणं, नवरं—जस्स जो अत्थि वेदो ॥

५९. दंसणमोहणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ? एवं चेव । निरंतरं जाव वेमाणियाणं । एवं चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाणं । एवं एएणं कमेणं ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिबोहियनाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स विभंगनाणस्स, एवं आभिणिबोहियनाणविसयस्स भंते ! कतिविहे बंधे पण्णत्ते जाव केवलनाणविसयस्स, मइअण्णाणविसयस्स सुयअण्णाणविसयस्स विभंगनाणविसयस्स—एएसिं सव्वेसिं पदाणं तिविहे बंधे पण्णत्ते । सव्वेवेते चउव्वीसं दंडगा भाणियव्वा, नवरं—जाणियव्वं जस्स जं अत्थि । जाव—

६०. वेमाणियाणं भंते ! विभंगनाणविसयस्स कतिविहे बंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—जीवप्पयोगबंधे, अणंतरबंधे, परंपरबंधे ॥

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[1] विहरइ[2] ॥

१. भ० १।५१ ।
२. इह संग्रहगाथे—
जीवप्पओगबंधे, अणंतरपरंपरे य बोद्धव्वे ।
पगडी उदए वेए, दंसणमोहे चरित्ते य ॥१॥
ओरालियवेउव्विय-आहारगतेयकम्मए चेव ।
सण्णा लेस्सा दिट्ठी, नाणानाणेसु तव्विसए ।२।
(वृ) ।

अट्ठमो उद्देसो

सव्वखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२. कति णं भंते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं, पंच महाविदेहाइं ।।

६३. कति णं भंते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तीसं अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पंच हेमवयाइं, पंच हेरण्णवयाइं, पंच हरिवासाइं, पंच रम्मगवासाइं, पंच 'देवकुराओ, पंच उत्तरकुराओ'[1] ।।

६४. एयासु णं भंते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

६५. एएसु णं भंते ! पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
हंता अत्थि । एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए णं तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पंचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु णं भंते ! पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं[2] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एएसु णं पंचसु भरहेसु, पंचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहंता भगवंतो पंचमहव्वइयं[3] सपडिक्कमणं धम्मं पण्णवयंति, अवसेसा णं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति । एएसु णं पंचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति ।।

तित्थगर-पदं

६७. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीसं तित्थगरा पण्णत्ता, तं जहा—उसभ-अजिय-संभव-अभिनंदण-

१. देवकुरुओ पंच उत्तरकुरुओ (अ, क, ख, ब, म) ।
२. पंचमहव्वइयं पंचाणुव्वइयं (ता, स) ।
३. पंचमहव्वइयं पंचाणुव्वइयं (ता) ।

सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदंत-सीयल-सेज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वद्धमाणा ॥

६८. एएसि णं भंते ! चउवीसाए तित्थगराणं कति जिणंतरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेवीसं जिणंतरा पण्णत्ता ॥

जिणंतरेसु कालियसुय-पदं

६९. एएसि णं भंते ! तेवीसाए जिणंतरेसु कस्स कहिं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एएसु णं तेवीसाए जिणंतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु अट्ठसु-अट्ठसु जिणंतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स अव्वोच्छेदे पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणंतरेसु एत्थ णं कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते, सव्वत्थ वि णं वोच्छिण्णे दिट्ठिवाए ॥

पुव्वगय-पदं

७०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवतियं कालं पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसज्जिस्सति ॥

७१. जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एगं वाससहस्सं पुव्वगए अणुसज्जिस्सति, तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए अवसेसाणं तित्थगराणं केवतियं कालं पुव्वगए अणुसज्जित्था ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं संखेज्जं कालं, अत्थेगतियाणं असंखेज्जं कालं ॥

तित्थ-पदं

७२. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं केवतियं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए ममं एगवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७३. जहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे वासे ओसप्पिणीए देवाणुप्पियाणं एक्कवीसं वाससहस्साइं तित्थे अणुसज्जिस्सति, तहा णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साणं[1] चरिमतित्थगरस्स केवतियं कालं तित्थे अणुसज्जिस्सति ?

१. भविष्यतां महापद्मादीनां जिनानाम् (वृ)

गोयमा ! जावतिए णं उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइं संखेज्जाइं आगमेस्साणं चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ॥

७४. तित्थं भंते ! तित्थं ? तित्थगरे तित्थं ?
गोयमा ! अरहा ताव नियमं तित्थकरे, तित्थं पुण चाउवण्णे[1] समणसंघे, तं जहा— समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ॥

७५. पवयणं भंते ! पवयणं ? पावयणी पवयणं ?
गोयमा ! अरहा ताव नियमं पावयणी, पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे, तं जहा—आयारो[2] •सूयगडो ठाणं समवाओ विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवाग-सुयं° दिट्ठिवाओ ॥

उग्गादीणं निग्गंथधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भंते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया[3], कोरव्वा—एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, ओगाहित्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,[4] •राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा —एए णं अस्सिं धम्मे ओगाहंति, ओगाहित्ता अट्ठविहं कम्मरयमलं पवाहेंति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं करेंति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

७७. कतिविहा णं भंते ! देवलोया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोतिसिया, वेमाणिया ॥

७८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा णं भंते ! चारणा पण्णत्ता ?

१. चाउवण्णाइण्णे (ब, म, वृ); चाउवण्णे (वृपा)।
२. सं० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ।
३. नाता (अ, क, ब)।
४. सं० पा०—तं चेव जाव अंतं।

गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता, तं जहा—विज्जाचारणा य, जंघाचारणा य ॥

८०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—विज्जाचारणे[1]-विज्जाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं विज्जाए उत्तरगुणलद्धिं खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नामं लद्धी समुप्पज्जइ । से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ°—विज्जाचारणे-विज्जाचारणे ॥

८१. विज्जाचारणस्स णं भंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव[3] किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं । देवे णं महिड्ढीए जाव[4] महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु[5] केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ॥

८२. विज्जाचारणस्स णं भंते ! तिरियं केवतियं गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं माणुसुत्तरे पव्वए समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति । विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८३. विज्जाचारणस्स णं भंते ! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता बितिएणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति । विज्जाचारणस्स णं गोयमा ! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते । से णं तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते[6] कालं करेति नत्थि तस्स आराहणा । से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जंघाचारणे-जंघाचारणे ?
गोयमा ! तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमा-

१. विज्जाचारणा (अ, क, ख, म, स) ।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव विज्जाचारणे ।
३. भ० ६।७५ ।
४. भ० १।३३६ ।
५. तुलना—भ० ६।१७३
६. अणालोतिय° (स) ।

णस्स जंघाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जति। से तेणट्ठेणं[1] •गोयमा! एवं वुच्चइ°—जंघाचारणे-जंघाचारणे॥

८५. जंघाचारणस्स णं भंते! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे[2] •जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं° तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, जंघाचारणस्स णं गोयमा! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते[3]॥

८६. जंघाचारणस्स णं भंते! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते॥

८७. जंघाचारणस्स णं भंते! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कंते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा॥

८८. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[4] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भंते किं सोवक्कमाउया? निरुवक्कमाउया?
गोयमा! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि॥

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणे।
२. सं० पा०—एवं जहेव विज्जाचारणस्स नवरं तिसत्तखुत्तो।
३. पण्णत्ते, सेसं तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० १।५१।

९०. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया । एवं जाव थणिय-कुमारा । पुढविक्काइया जहा जीवा । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

उववज्जण-उव्वट्टण-पदं

९१. नेरइया णं भंते ! किं आतोवक्कमेणं[1] उववज्जंति ? परोवक्कमेणं उवव-ज्जंति ? निरुवक्कमेणं उववज्जंति ?
गोयमा ! आतोवक्कमेण वि उववज्जंति, परोवक्कमेण वि उववज्जंति, निरुव-क्कमेण वि उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया ॥

९२. नेरइया णं भंते ! किं आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति ? परोवक्कमेणं उव्वट्टंति ? निरुवक्कमेणं उव्वट्टंति ?
गोयमा ! नो आतोवक्कमेणं उव्वट्टंति, नो परोवक्कमेणं उव्वट्टंति, निरुवक्क-मेणं उव्वट्टंति । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टंति । सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयंति ॥

९३. नेरइया णं भंते ! किं आइड्ढीए उववज्जंति ? परिड्ढीए[2] उववज्जंति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जंति, नो परिड्ढीए उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया ॥

९४. नेरइया णं भंते ! किं आइड्ढीए उव्वट्टंति ? परिड्ढीए उव्वट्टंति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टंति, नो परिड्ढीए उव्वट्टंति । एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिया वेमाणिया य चयंतीति अभिलावो ॥

९५. नेरइया णं भंते ! किं आयकम्मुणा उववज्जंति ? परकम्मुणा उववज्जंति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जंति, नो परकम्मुणा उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्टणादंडओ वि ॥

९६. नेरइया णं भंते ! किं आयप्पओगेणं उववज्जंति ? परप्पओगेणं उववज्जंति ?
गोयमा ! आयप्पओगेणं उववज्जंति, नो परप्पओगेणं उववज्जंति । एवं जाव वेमाणिया । एवं उव्वट्टणादंडओ वि ॥

कतिसंचियादि-पदं

९७. नेरइयाणं भंते ! किं कतिसंचिया ? अकतिसंचिया ? अवत्तव्वगसंचिया ?

१. आत्मना—स्वयमेवायुष उपक्रम आत्मोपक्रम-स्तेन मृत्वेति शेषः (वृ) ।
२. परिड्ढीए (क) ।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ।।

९८. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया कतिसंचिया, जे णं नेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अकतिसंचिया, जे णं नेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अवत्तव्वगसंचिया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।।

९९. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसंचिया, नो अवत्तव्वगसंचिया ।।

१००. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ —जाव नो अवत्तव्वगसंचिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति । से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसंचिया । एवं जाव वणस्सइकाइया[1] । बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ।।

१०१. सिद्धाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा कतिसंचिया, नो अकतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि ।।

१०२. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कतिसंचिया, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिया । से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ।।

१०३. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कतिसंचियाणं अकतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कतिसंचिया संखेज्जगुणा, अकतिसंचिया असंखेज्जगुणा । एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं । एगिंदियाणं नत्थि अप्पाबहुगं ।।

१०४. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया संखेज्जगुणा ।।

---

१. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि प्रवेशनकं विजातीयेभ्य आगतानां यस्तत्रोत्पादस्तद्विवक्षितं, असङ्ख्याता एव विजातीयेभ्य उद्वृत्तास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे उक्तम् (वृ) ।

२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

छक्कसमज्जियादि-पदं

१०५. नेरइयाणं भंते ! किं छक्कसमज्जिया ? नोछक्कसमज्जिया ? छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ? छक्केहिं समज्जिया ? छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ?
गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहिं समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ —नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्क-समज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया । जे णं नेरइया एगेणं छक्काएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं पवेसणएहिं[1] पविसंति ते णं नेरइया छक्केहिं सम-ज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१०७. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविक्काइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०८. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?
गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहिं समज्जिया । जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं छक्कएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसण-एणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेण-ट्ठेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेंदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा नेरइया ।।

१०९. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जियाणं, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य

१. पवेसणएणं (अ, क, व, स); पवेसणगं (ख, म) ।

समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केहिं समज्जिया असंखेज्जगुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा। एवं जाव थणियकुमारा ।।

११०. एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं छक्केहिं समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं जाव वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।।

१११. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं छक्कसमज्जियाणं नोछक्कसमज्जियाणं जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहि समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया संखेज्जगुणा, छक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया संखेज्जगुणा ।।

बारससमज्जियादि-पद

११२. नेरइया णं भंते ! किं बारससमज्जिया ?, नोबारससमज्जिया ? बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया ? बारसएहिं समज्जिया ? बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया बारससमज्जिया वि जाव बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया वि ।।

११३. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे णं नेरइया बारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारससमज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोबारससमज्जिया । जे णं नेरइया बारसएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारसएण य नोबारसएण य

१. सं० पा० —कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सं० पा० — कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया

समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं बारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं नेरइया बारसएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। एवं जाव थणियकुमारा॥

११४. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! पुढविक्काइया नोबारससमज्जिया, नो नोबारससमज्जिया, नो बारसएण य नोबारसएण य समज्जिया, बारसएहिं समज्जिया, बारसेहि य नोबारसेण य समज्जिया वि॥

११५. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं बारसएहिं पवेसणएहिं पविसंति ते णं पुढविक्काइया बारसएहिं समज्जिया। जे णं पुढविक्काइया नेगेहिं बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं एक्कारसएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया॥

११६. एएसि णं भंते! नेरइयाणं बारससमज्जियाणं[1]—सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं, नवरं—बारसाभिलावो, सेसं तं चेव॥

चुलसीतिसमज्जियादि-पदं

११७. नेरइया णं भंते! किं चुलसीतिसमज्जिया? नोचुलसीतिसमज्जिया? चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया? चुलसीतीहिं समज्जिया? चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया?
गोयमा! नेरइया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि॥

११८. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि?
गोयमा! जे णं नेरइया चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतिपवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया। जे णं नेरइया चुलसीतीए णं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहिं पवेसणएहिं पविसंति

१. पू०—भ० २०।१०९।

ते णं नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा[1] •दोहिं वा तीहिं वा°, उक्कोसेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं[2] पविसंति ते णं नेरइया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया । से तेणट्ठेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहिं दोहिं, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ । एवं जाव वणस्सइ-काइया । बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ।।

११६. सिद्धाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया ।।

१२०. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया ?
गोयमा ! जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीति समज्जिया । जे णं सिद्धा जहण्णेणं एक्केणं वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया । जे णं सिद्धा चुलसीतीएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्को-सेणं तेसीतीएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया । तेणट्ठेणं जाव समज्जिया ।।

१२१. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं चुलसीतिसमज्जियाणं नोचुलसीतिसमज्जियाणं[3] । —सव्वेसिं अप्पाबहुगं जहा छक्कसमज्जियाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ ।।

१२२. एएसि णं भंते ! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाणं, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणंतगुणा ।।

१२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[5] विहरइ ।।

१. सं० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेणं ।
२. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. पू०—भ० २०।१०६ ।
४. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
५. भ० १।५१ ।

एगवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

पढमो उद्देसो

१. सालि २. कल ३. अयसि ४. वंसे, ५. इक्खू ६. दब्भे य ७. अब्भ ८. तुलसी य।
अट्ठेए दस वग्गा, असीतिं[1] पुण होंति उद्देसा ॥१॥

सालिआदिजीवाणं उववायादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—एएसि णं भंते! जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते! जीवा कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति? देवेहिंतो उववज्जंति? जहा[2] वक्कंतीए तहेव उववाओ, नवरं—देववज्जं॥

२. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति?
गोयमा! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। अवहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे॥

३. तेसि णं भंते! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं॥

४. ते णं भंते! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा? अबंधगा? जहा[4] उप्पलुद्देसे। एवं वेदे वि, उदए वि, उदीरणा[5] वि॥

५. ते णं भंते! जीवा किं कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा छव्वीसं भंगा, दिट्ठी जाव इंदिया जहा[6] उप्पलुद्देसे॥

१. असीति (क, ब, स)।
२. प० ६।
३. भ० ११।४।
४. भ० ११।६-११।
५. उदीरणाए (अ, क, ख, ता, म, स)।
६. भ० ११।१३-२८।

६. ते णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं[1] होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥
७. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? एवं जहा उप्पलुद्देसे। एएणं अभिलावेणं जाव[2] मणुस्स-जीवे, आहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, समुग्घाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा[4] उप्पलुद्देसे ॥
८. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥
९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१०. अह भंते ! साली-वीही[5]-°गोधूम-जव-°-जवजवाणं—एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कंदाहि-गारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥
११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
१२. एवं खंधे वि उद्देसओ नेयव्वो। एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो। साले वि उद्देसो भाणियव्वो। पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो। पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो। एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा। एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं—देवा उववज्जंति जहा[6] उप्पलुद्देसे। चत्तारि लेस्साओ, असीति भंगा। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अंगुलपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥
१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
१४. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो। एवं बीए वि उद्देसओ। एए दस उद्देसगा ॥

१. केवच्चिरं (अ, क, ख, ब)।
२. भ० ११।३०-३४।
३. भ० ११।३५।
४. भ० ११।३७-३९।
५. सं० पा०—वीही जाव जवजवाणं।
६. भ० ११।२।

बीओ वग्गो

१५. अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण[1]-पलिमंथगाणं[2]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव ॥

तइयो वग्गो

१६. अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलग-बीयाणं एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं निरवसेसं तहेव भाणियव्वा ॥

चउत्थो वग्गो

१७. अह भंते ! वंस-वेणु-कणक-कक्कावंस-चारुवंस[3]-दंडा[4]-कुडा[5]-विमा-कंडा-वेलुया-कल्लाणाणं[6]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीणं, नवरं—देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । सव्वत्थ वि छव्वीसं भंगा, सेसं तं चेव ॥

१. सढिए (अ); सव्विए (क); सद्दिए (ख); सढिण (ता, स); सतिए (ब); सदिण (म)
२. पलिमिंथगाणं (अ, ता); पमिलिथगाणं (क); पलिमित्थगाणं (ख, ब, म)।
३. यारुरवंस (अ); यारुवंस (ब); वगरवंस (म)।
४. उडा (ता); दंडगा (ब)।
५. कुंडा (अ, ता, स)।
६. कल्लाणीणं (अ, क, ता, ब, म)।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुंब[1]-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग[2]-नलाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति । चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ।।

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय[3]-भंतिय[4]-कोंतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल[5]-अज्जुण-आसाढग-रोहियंस-सुय[6]-वखीर[7]-भुस[8]-एरंड-कुरुकुंद[9]-करकर-सुंठ-विभंगु-महुरतण[10]-थुरग[11]-सिप्पिय-सुंकलितणाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ।।

सत्तमो वग्गो

२०. अह भंते ! अब्भरुह[12]-वोयाण[13]-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग[14]-मज्जार-पाइ[15]-विल्लि[16]-पालक्क-दगपिप्पलिय-दव्वि-सोत्थिक-सायमंडुक्क[17]-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ।।

१. मुंडे (अ); सुंठे (क, ख, ता) ।
२. सतबोरग (ख) ।
३. सेडिय (स) ।
४. भतिय (अ); भात्तिय (क); भंति (ता); भंतेय (ब) ।
५. पदेइल (अ); वोदइल (ता) ।
६. मुत (क, ख, ब, स) ।
७. पक्खीर (ता) ।
८. भूस (अ, क, ता, ब) ।
९. कुंडकुरुकुंद (ता) ।
१०. बहुरयए (क, ब); महुरयण (ख) ।
११. छुरग (ता) ।
१२. अज्झरुह (क, ख, ता, ब) ।
१३. वेताण (अ); वायाए (ख) ।
१४. वोरग (अ); चोरग (स) ।
१५. याइ (ख, म) ।
१६. विलि (ता); चिल्लि (ब) ।
१७. सायमंदुक्कि (ख, ता, म) ।

अट्ठमो वग्गो

२१. अह भंते ! कुलसी-कण्ह-दराल-फणेज्जा-अज्जा-भूयणा[1]-चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इंदीवर-सयपुप्फाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वंसाणं। एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवंति॥

१. चूयणा (स)।

बावीसमं सतं

पढमो वग्गो

१,२. तालेगट्ठिय ३. बहुबीयगा य ४. गुच्छा य ५. गुम्म ६. वल्ली य ।
छद्दस वग्गा एए, सट्ठिं पुण होंति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि[1]-साल-सरला-'सारकल्लाण-जावति-केयइ'[2]-कदलि-कंदलि-चम्मरुक्ख-भुयरुक्ख[3]-हिंगुरुक्ख-लवंगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीणं, नवरं—इमं नाणत्तं—मूले कंदे खंधे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति । चत्तारि लेसाओ । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं । ओगाहणा मूले कंदे धणुहपुहत्तं, खंधे तयाए साले य गाउयपुहत्तं, पवाले पत्ते धणुहपुहत्तं, पुप्फे हत्थपुहत्तं, फले बीए य अंगुलपुहत्तं । सव्वेसिं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । सेसं जहा सालीणं । एवं एए दस उद्देसगा ॥

१. तेवलि (अ, म) ।
२. सारकल्लाणं जाव केवइ (अ, क, ख, ता, ब, म, स); अत्र सर्वेष्वादर्शेषु 'सारकल्लाणं जाव केवइ' इति पाठो लभ्यते । भ० ८।२१७ तथा प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे यथा पाठोस्ति तदाधारेण ज्ञायते लिपिभ्रमोऽसौ जातः । वस्तुतः 'सारकल्लाण जावति केयइ' इति पाठः समीचीनोस्ति । अत्र जाव शब्दस्य किमपि प्रयोजनं नावगम्यते ।
३. गुंबरुक्ख (अ); गुयरुक्ख (क, ख); गुदरुख (ता) । × (ब); गुत्तरुक्ख (म): गुंतरुक्ख (स) ।

बीओ वग्गो

२. अह भंते ! निबंब जंबु-कोसंब-साल[1]-अंकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास--करंज- पुत्तंजीवग-अरिट्ठ-विहेलग[2] - हरितग - भल्लाय-उंबभरिय[3]-खीरणि-धायइ-पियाल-पूइयणिबारग-सेण्हय[4]-पासिय[5]-सीसव-असण[6]-पुण्णाग-नागरुक्ख-सीवण्णि[7]-असोगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेसं जहा तालवग्गो ।।

तइओ वग्गो

३. अह भंते ! अत्थिय-तिंदुय-बोर-कविट्ठ—अंबाडग-माउलिंग[8]-विल्ल[9]-आमलग-फणस- दाडिम[10]- आसोत्थ[11] -उंवर-वड- नग्गोह-नंदिरुक्ख - पिप्पलि - सतरि[12]-पिलक्खुरुक्ख- काउंवरिय-कुत्थुंभरिय[13]-देवदालि-तिलग- लउय-छत्तोह- सिरीस-सत्तिवण्ण[14]-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चंदण-अज्जुण-नीम[15]-कुडग-कलंबाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति, ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव बीयं ।।

१. ताल (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. वेहेलग (ता) ।
३. उंबरिभरीय (अ) ।
४. सेण्हण (ता); सिण्हण (ब); सण्हय (स) ।
५. पोसिय (अ); पसिय (म) ।
६. अयसि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); सर्वासु प्रतिषु 'अयसि' इति पाठो लिखितोस्ति, किन्तु प्रज्ञापनायाः (प० १) अनुसारेण 'असण' इति पदं गृहीतम् ।
७. सीवण्ण (अ, क, ख, ता, म, स) ।
८. मातुलुंग (अ, क, ख, व, म) ।
९. बेल्ल (ब) ।
१०. दालिम (ख, ता, स) ।
११. असोत्थ (अ, म); असोट्ठ (क, ख, ब); असोह (ता) ।
१२. सतरा (अ); सतर (क, ख, स); सेतर (ब)
१३. कोच्छुंभरिय (ख); कुच्छुंभरिय (स) ।
१४. सत्तवण्ण (स) ।
१५. नीव (ख) ।

चउत्थो वग्गो

४. अह भंते ! वाइंगणि-अल्लइ-पोंडइ, एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेणं नेयव्वं जाव[1] गंज-पाडला-दासि[2]-अंकोल्लाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयव्वा जाव बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गो ।।

पंचमो वग्गो

५. अह भंते ! सेरियक[3]-नवमालिय-कोरेंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा[4], जहा पण्णवणाए पढमपदे गाहाणुसारेणं जाव[5] नवणीतिय[6]-कुंद-महाजाईणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं ।।

छट्ठो वग्गो

६. अह भंते ! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एलावालुंकी, एवं पदाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव[7] दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि[8]-अक्कबोंदीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, नवरं—फलउद्देसे ओगाहणाए जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं । ठिती सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव । एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठि उद्देसगा भवंति ।।

---

१. प० १, गुच्छवग्गो ।
२. पालुलावासि (अ); पाडलावासि (ख, स); पायलायसि (ब); पातुलावासि (म) ।
३. सिरियका (क); सणियक (ता); सरियक (ब) ।
४. मणोजा (अ, म) ।
५. प० १, गुम्मवग्गो ।
६. नवणीय (ख, ब, म); नलणीय (स) ।
७. प० १, वल्लिवग्गो ।
८. मोक्कलि (ख, ब, स) ।

तेवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

१. आलुय २. लोही ३. अवए, ४. पाढा तह ५. मासवण्णि-वल्ली य।
पंचेते दसवग्गा, पन्नासं होंति उद्देसा ॥१॥

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते! आलुय-मूलग-सिंगबेर-हलिद्दा[1]-रुरु-कंडरिय-जारु-छीरबिरालि-किट्ठि-कुंदु[2]-कण्हाकडभु[3]-मधु-पुयलइ[4]-महुसिंगि-निरुहा[5]-सप्पसुगंधा[6]-छिण्णरुह-बीयरुहाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वंसवग्गसरिसा, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति। अवहारो—गोयमा! ते णं अणंता समये-समये अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं एवतिकालेणं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया[7] सिया। ठिती जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव॥

बीओ वग्गो

२. अह भंते! लोही-णीहू[8]-थीहू[9]-थिभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सिउंढी-मुसुंढीणं[10]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति०? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव॥

३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

---

१. हालिद्दा (अ, म); हलिद्द (ख, ता, स); हालिद्द (ब)।
२. कुंथु (अ, क, ब); कुंथुं (ता)।
३. कण्हकडउ (अ, स); कण्हकडलु (ब)।
४. धुपलइ (अ)।
५. नोरुहा (ख)।
६. सुपासगंधा (म)।
७. अवहरिया (स)।
८. णेहू (ब)।
९. बीहू (म, ब); बीहू (स)।
१०. मुसंठीण (ता)।

तइओ वग्गो

४. अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुंदुरुक्क-उव्वेहलिया[1]-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुराणं[2]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो वग्गो

६. अह भंते ! पाढा-मियवालुंकि-मधुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोढरि-दंति-चंडीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, नवरं ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं त चेव ॥

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो वग्गो

८. अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुय-काओलि-खीरकाकोलि-भंगि-णहि-किमिरासि-भद्दमुत्थ-णंगलइ-पयुय[3]-किण्हा[4]-पउल-हढ[5]-हरेणुया-लोहीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं आलुयवग्गसरिसा। एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियव्वा। सव्वत्थ देवा न उववज्जंति। तिण्णि लेसाओ ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. उव्वेहलिया निव्वेहलिया (ता)।
२. कुरवाणं (ता)।
३. पहुय (क); पेमुय (ख); पेयुय (ब, म)।
४. किण्णा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. पउयलघाढे (अ, क); पउयलपाढे (ख, म, स); पउयलबाढे (ब)।

चउवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. उववाय २. परीमाणं, ३,४. संघयणुच्चत्तमेव ५. संठाणं ।
६. लेस्सा ७. दिट्ठी ८. नाणे, अण्णाणे ९. जोग १०. उवओगे ॥१॥
११ सण्णा १२. कसाय १३. इंदिय, १४ समुग्घाया १५. वेदणा य १६. वेदे य ।
१७. आउं १८. अज्झवसाणा, १९. अणुबंधो २०. कायसंवेहो ॥२॥
जीवपदे[1] जीवपदे, जीवाणं दंडगम्मि उद्देसो ।
चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीसं होंति उद्देसा ॥३॥

नेरइयाईसु उववायादि-गमग-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति ॥

२. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो बेंदिय, नो तेइंदिय, नो चउरिंदिय, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ॥

३. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ॥

१. इयं च गाथा पूर्वोक्तद्वारगाथाद्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति (वृ) ।

४. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति —किं जलचरेहिंतो उववज्जंति ? थलचरेहिंतो उववज्जंति ? खहचरेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो वि उववज्जंति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति ।।

५. जइ जलचर-थलचर-खहचरेहिंतो उववज्जंति -किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।।

६. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ।।

७. पज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।।

९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[1] किंसंघयणी[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसंघयणी[3] पण्णत्ता ।।

१०. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।।

११. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुंडसंठिया[4] पण्णत्ता ।।

१२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ।।

१३. ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ।।

१४. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ।।

---

१. सरीरा (ता) ।
२. संघयणा (ख, ता, स) ।
३. छेवट्ठ° (ता) ।
४. हुंडसंठिया (स) ।

१५. ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि ॥

१६. ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

१७. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ॥

१८. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति कसाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा—कोहकसाए, माणकसाए, माया-कसाए, लोभकसाए ॥

१९. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचेंदिया पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥

२०. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥

२१. ते णं भंते ! जीवा किं सायावेयगा ? असायावेयगा ?
गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि ॥

२२. ते णं भंते ! जीवा किं इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुंसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ॥

२३. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

२४. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

२५. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि ॥

२६. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी ॥

२७. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडि-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

२८. पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठिती-एसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[1] अणुबंधो त्ति ।।

३०. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णि[2]°पंचिंदियतिरिक्खजोणिए त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं° गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २।।

३१. पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

३२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं तं चेव जाव[3] अणुबंधो ।।

३३. से णं भंते ! पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयण-प्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ता[4]°असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए त्ति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडिमब्भहियं,[5] एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३।।

३४. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।८-२६ ।
२. सं० पा—पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागतिं ।
३. भ० २४।८-२६ ।
४. सं० पा०—पज्जत्ता जाव करेज्जा ।
५. पुव्वकोडिमब्भहियं (अ, क, ख, ब, म, स) ।

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, नवरं[1]—इमाइं तिण्णि नाणत्ताइं—आउं, अज्झवसाणा, अणुबंधो य। जहण्णेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३६. तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

३७. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

३८. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयण-प्पभाए जाव[2] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं'[3] गतिरागतिं करेज्जा ४॥

३९. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥

४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं जाव[4]—

४१. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ता°असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख°जोणिए[5] जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा,[6] °एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ५॥

४२. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नवरिं (ब)।
२. भ० २४।२७।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।८-२६, ३५-३७।
५. सं० पा०—°पज्जत्ता जाव जोणिए।
६. सं० पा०—सेवेज्जा जाव करेज्जा।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं जाव[1]—

४४. से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[2] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, एवतियं कालं[3] °सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ६॥

४५. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु[4] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु[5] उववज्जेज्जा ॥

४६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव ओहियगमएणं तहेव अणुगंतव्वं, नवरं—इमाइं दोण्णि नाणत्ताइं—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि। अवसेसं तं चेव[6] ॥

४७. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[7] रयणप्पभाए जाव[8] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवतियं[9] °कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ७॥

४८. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु[10] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

---

१. भ० २४।८-२६, ३५-३७ ।
२. भ० २४।२७ ।
३. सं० पा० — कालं जाव करेज्जा ।
४. °काल जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. असंखेज्जइ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
६. भ० २४।८-२६ ।
७. °असण्णि जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. भ० २४।२७ ।
९. सं० पा०—एवतियं जाव करेज्जा ।
१०. केवति जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

४६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, जहा सत्तमगमए जाव[1]—

५०. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[2] जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[3] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, एवतियं[4] •कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ८॥

५१. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[5] णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु[7] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं जहा सत्तमगमए जाव[8]—

५३. से णं भंते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[9] उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[10] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्वकोडीए अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं'[11] गतिरागतिं करेज्जा ६। एवं एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, सव्वेते नव गमगा भवंति ॥

५४. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[12] उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

१. भ० २४।४६।
२. °ट्ठितीय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. भ० २४।२७।
४. सं० पा०—एवतियं जाव करेज्जा।
५. °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. रयण जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. °काल जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
८. भ० २४।४६।
९. °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१०. भ० २४।२७।
११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१२. °तिरिक्ख जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउय[1]°सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो° उववज्जंति ।।

५५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[2] उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जति - पुच्छा !

गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, जहा असण्णी जाव[3] पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।।

५६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ।।

५७. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

५८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? जहेव[4] असण्णी ।।

५९. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ?

गोयमा ! छव्विहसंघयणी पण्णत्ता, तं जहा—वइरोसभनारायसंघयणी, उसभनारायसंघयणी जाव[5] छेवट्टसंघयणी[6]। सरीरोगाहणा जहेव असण्णीणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।।

६०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! छव्विहसंठिया पण्णत्ता, तं जहा—समचउरंसा, निग्गोहा जाव[7] हुंडा ।।

६१. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। सेसं जहा असण्णीणं जाव[8] अणुबंधो, नवरं—पंच समुग्घाया आदिल्लगा। वेदो तिविहो वि, अवसेसं तं चेव जाव—

---

१. सं० पा०—असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।
२. °पंचिंदिय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. भ० २४।४,५ ।
४. भ० २४।८ ।
५. ठा० ६।३० ।
६. सेवट्ट° (अ, ख, ब, म); छेवट्ठ° (ता) ।
७. भ० १४।८१ ।
८. भ० २४।१६-२६ ।

६२. से णं भंते ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[1] रयणप्पभाए जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

६३. पज्जत्तसंखेज्ज[2]•वासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! ° जे भविए जहण्णकाल[3]•ट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए°, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

६५. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव[5] कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

६६. जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव गमओ, नवरं —इमाइं अट्ठ नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं २. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ ३. नो

१. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२. सं० पा०—पज्जत्तसंखेज्ज जाव जे।
३. सं० पा०—जहण्णकाल जाव से।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।५७-६२।
६. °पुढवि जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ४. नो नाणी, दो अण्णाणा नियमं ५. समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि ६. आउं ७. अज्झवसाणा ८. अणुबंधो य जहेव असण्णीणं। अवसेसं जहा पढमगमए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४।।

६८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

६९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[2] कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५।।

७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[3] कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६।।

७२. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[4] णं भंते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो[5] चेव पढमगमओ नेयव्वो,[6] नवरं—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि, सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७।।

१. भ० २४।५८-६२।
२. भ० २४।६७।
३. भ० २४।६७।
४. ०वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. एएसिं (अ, क, ख, ता ब, स)।
६. भ० २४।५८-६२।

७४. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८ ॥

७६. उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए[2] णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु[3] °रयणप्पभापुढविनेरइएसु° उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ । एवं एते नव गमका । उक्खेव-निक्खेवओ नवसु वि जहेव[5] असण्णीणं ॥

७८. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

७९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जंतगस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव[6] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं रयणप्पभपुढविगमसरिसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-संवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एवं जाव छट्ठपुढवि त्ति, नवरं—नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेणं

१. भ० २४।७३ ।
२. °पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. सं० पा०—उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए ।
४. भ० २४।७३ ।
५. असंज्ञि-प्रकरणं ४ सूत्रात् ५३ पर्यन्तं विद्यते ।
६. भ० २४।५८-६२ ।

चेव कमेणं चउगुणा कायव्वा। वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीसं सागरोवमाइं चउगुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठिं, तमाए अट्ठासीइं। संघयणाइं—वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी, तं जहा—वइरोसहनारायसंघयणी जाव[1] खीलियासंघयणी[2], पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी, धूमप्पभाए तिविहसंघयणी, तमाए दुविहसंघयणी, तं जहा—वइरोसभनारायसंघयणी य, उसभनारायसंघयणी य, सेसं तं चेव॥

८०. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[3] णं भंते! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

८१. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव रयणप्पभाए नव गमका, लद्धी वि सच्चेव, नवरं—वइरोसभनारायसंघयणी। इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[4] अणुबंधो त्ति। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

८२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं कालादेसो वि तहेव जाव चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

८३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[5] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

८४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढविजहण्णकालट्ठितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[6] भवादेसो त्ति, नवरं—पढमं संघयणं, नो इत्थिवेदगा। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गह-

१. ठा० ६।३०।
२. कीलिया° (अ)।
३. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।६३,६४।
६. भ० २४।६५।
७. भ० २४।६६,६७।

णाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४ ॥

८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एवं सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] कालादेसो त्ति ५ ॥

८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[2] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६ ॥

८७. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८८. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[3] भवादेसो त्ति, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७ ॥

८९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी संवेहो वि तहेव[4] सत्तमगमगसरिसो ८ ॥

९०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, 'एस चेव[5] लद्धी जाव[6] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ ॥

९१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति?

गोयमा! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥

९२. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो

---

१. भ० २४।८४।
२. भ० २४।८४।
३. भ० २४।८१।
४. भ० २४।८७,८८।
५. एवं सच्चेव (ब)।
६. भ० २४।८७,८८।

उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[1] उववज्जंति ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[2] उववज्जंति ॥

६३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[3] उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥

६४. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, तं जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥

६५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

६६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । संघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । एवं सेसं जहा सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जाव[4] भवादेसो त्ति, नवरं—चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा । ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं तं चेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

६७. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

१. असंखेज्ज जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. असंखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. संखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. भ० २४।५६-६२ ।

९८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

९९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—इमाइं पंच नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेण वि अंगुलपुहत्तं २. तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए ३. पंच समुग्घाया आदिल्ला ४, ५. ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेण वि मासपुहत्तं, सेसं तं चेव जाव[1] भवादेसोत्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४॥

१००. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा[2], नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तालीसं वाससहस्साइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥

१०१. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं मासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं मासपुहत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६॥

१०२. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो[3], नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

१०३. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया[4], नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

१०४. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवरं—

१. भ० २४।६५,६६।
२. भ० २४।९९।
३. भ० २४।६५,६६।
४. भ० २४।१०२।

कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं पुव्वकोडीए अब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६।।

१०५. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु[1] उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु[2] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१०६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । सेसं तं चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सागरोवमं वासपुहत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी, नाणत्तं नेरइयट्ठितिं[4] कालादेसेणं संवेहं च जाणेज्जा १-३।।

१०७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि । सेसं जहा[5] ओहियाणं । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६।।

१०८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ । तस्स वि तिसु वि गमएसु इमं नाणत्तं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । सेसं जहा[6] पढमगमए, नवरं—नेरइयठिइं कायसंवेहं च जाणेज्जा ७-९ । एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्कं संघयणं परिहायति जहेव तिरिक्खजोणियाणं । कालादेसो वि तहेव, नवरं—मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा[7] ।।

१०९. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

१. नेरइएसु जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. केवति जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. भ० २४।९६ ।
४. °ट्ठितीं (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. भ० २४।१०५,१०६ ।
६. भ० २४।१०५,१०६ ।
७. भाणियव्वा (क, म) ।

गोयमा ! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढविगमग्रो नेयव्वो, नवरं—पढमं संघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[1] अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं दोभवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१११. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २॥

११२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—संवेहं च जाणेज्जा ३॥

११३. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

११४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि जाव नवमगमए । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७-९॥

११५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

११६. रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. भ० २४।१०६ । २. भ० १।५१ ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति। एवं जहेव नेरइयउद्देसए जाव[1]—

११७. पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

११८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं रयणप्पभागमगसरिसा नव वि गमा भाणियव्वा[2], नवरं—जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था तिसु वि गमएसु। अवसेसं तं चेव १-६।।

११९. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[3] उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[4] उववज्जंति ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।।

१२०. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१२१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । वइरोसभनारायसंघयणी । ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं छ गाउयाइं । समचउरंससंठिया[5] पण्णत्ता । चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाओ । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, नियमं दुअण्णाणी—मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी य । जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । तिण्णि समुग्घाया आदिल्ला[6] । समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । वेदणा दुविहा वि—सायावेदगा, असायावेदगा । वेदो दुविहो वि—इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा

१. भ० २४।२-६ ।
२. भ० २४।८-५३ ।
३. °सण्णि जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
५. समचउरंससंठाणसंठिया (स) ।
६. आदिल्लगा (अ, क, ब, म, स) ।

वि, नो नपुंसगवेदगा। ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणुबंधो जहेव ठिती। कायसंवेहो भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१२२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो--एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २॥

१२३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा—एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा, सेसं तं चेव ३॥

१२४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा॥

१२५. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? अवसेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगं धणुसहस्सं। ठिती जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४॥

१२६. सो चेव[1] जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुरकुमारट्ठिइं संवेहं च जाणेज्जा ५॥

१२७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, सेसं तं चेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६॥

१२८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमगो भाणियव्वो,[2] नवरं—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छ पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

१. चेव अप्पणा (अ, क, स, ता, ब, म)। २. भ० २४।१२०,१२१।

१२९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—असुरकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ८ ॥

१३०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिपलिओवमाइं, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ ॥

१३१. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति ? एवं जाव[1]—

१३२. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१३३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं एतेसिं रयणप्पभपुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,[2] नवरं जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु, इमं नाणत्तं—चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था। सेसं तं चेव। संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो १-९ ॥

१३४. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥

१३५. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो[3] उववज्जंति, 'असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो वि'[4] उववज्जंति ॥

१३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं असंखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदिल्ला तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं, सेसं तं चेव। तइयगमे ओगा-

---

१. भ० २४।४,५।
२. भ० २४।५८-७७।
३. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

हणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाणं १-३ ॥

१३७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं। सेसं तं चेव ४-६ ॥

१३८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला[1] तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। अवसेसं तं चेव ७-९ ॥

१३९. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति?

गोयमा! पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥

१४०. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४१. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव एतेसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाणं नव गमगा तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—संवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो। सेसं तं चेव १-९ ॥

१४२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१४३. रायगिहे जाव एवं वयासी—नागकुमाराणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति?

गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति ॥

१. पच्छिल्लगा (क, ख, ता, स)। २. भ० २४।९६-१०४।

१४४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो०? एवं जहा असुरकुमाराणं वत्तव्वया तहा एतेसिं पि जाव[1] असण्णित्ति १-६ ॥

१४५. जइ सण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय०? असंखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ॥

१४६ असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदुपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव[2] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

१४८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २॥

१४९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । सेसं तं चेव जाव[2] भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं देसूणाइं चत्तारि पलिओवमाइं, उक्कोसेणं देसूणाइं पंच पलिओवमाइं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

१५०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठितियस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥

१५१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । सेसं तं चेव ७-९ ॥

१५२. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०? अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ॥

१५३. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।११६-११८ ।
२. भ० २४।१२१ ।
३. भ० २४।१२३ ।

गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिग्रोवमाइं। एवं जहेव ग्रसुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि नवसु वि गमएसु, नवरं —नागकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-६ ॥

१५४. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो०? असण्णिमणुस्सेहिंतो०?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो, नो ग्रसण्णिमणुस्सेहिंतो, जहा ग्रसुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव[1]—

१५५. ग्रसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिग्रोवमाइं। एवं जहेव[2] ग्रसंखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु ग्रादिल्ला तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि, नवरं—पढमबितिएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। तइयगमे ग्रोगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तं चेव १-३ ॥

१५६. सो चेव ग्रप्पणा जहण्णकालट्ठितीग्रो जाग्रो, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥

१५७. सो चेव ग्रप्पणा उक्कोसकालट्ठितीग्रो जाग्रो, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठितियस्स ग्रसुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव ७-६ ॥

१५८. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्ज० ? ग्रपज्जत्तसंखेज्ज० ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज, नो ग्रपज्जत्तसंखेज्ज ॥

१५६. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदोपलिग्रोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं जहेव ग्रसुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु, नवरं—नागकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा १-६ ॥

१६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० २४।१३५।   २. भ० २४।१४७-१४६।

४-११ उद्देसा

१६१. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा भाणियव्वा ।।

१६२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

दुवालसमो उद्देसो

१६३. पुढविक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो[1] उववज्जंति ।।

१६४. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो एवं जहा वक्कंतीए उववाओ जाव[2]—

१६५. जइ बायरपुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्ता-बादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढवि० ?
गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढवि, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जंति ।।

१६६. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१६७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति । छेवट्टसंघयणी[3] । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । मसूराचंदासंठिया । चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिंदिए पण्णत्ते । तिण्णि समुग्घाया । वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं

१. देवेहिंतो वि (अ) ।
२. प० ६ ।
३. सेवट्ट० (अ, म); सेवट्ठ० (क, ख); छेवट्ठ (ता) ।

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि', अपसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिती॥

१६८. से णं भंते! पुढविक्काइए पुणरवि पुढविकाइएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा?

गोयमा! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं. एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, एवं चेव वत्तव्वया निरवसेसा २॥

१७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति, नवरं—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जेज्जा। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं 'छावत्तरं वाससयसहस्सं'[2], एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

१७१. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो' नवरं—लेस्साओ तिण्णि। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव ४॥

१७२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वा' ५॥

१७३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं– जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा जाव भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६॥

१७४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एवं तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो', नवरं—अप्पणा से ठिई जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७॥

---

१. × (ता)।
२. छावत्तरिं वाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं (स)।
३. भ० २४।१६६,१६७।
४. भ० २४।१७१।
५. भ० २४।१७०।

१७५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। एवं जहा सत्तमगमगो जाव[1] भवादेसो। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

१७६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा[2] जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं चोयालीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं छावत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

१७७. जइ आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सुहुमआउ० ? बादरआउ० ? एवं चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाणं॥

१७८. आउक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—थिबुगाबिंदुसंठिए। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं। एवं अणुबंधो वि। एवं तिसु वि गमएसु। ठिती संवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। ततियगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। छट्ठे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। सत्तमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। अट्ठमे गमए कालादेसेणं जहण्णेणं सत्त वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। नवमे गमए भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं,

१. भ० २४।१७४। २. भ० २४।१७४।

कालादेसेणं जहण्णेणं एकूणतीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं नवसु वि गमएसु आउक्काइयठिई जाणियव्वा १-९॥

१७९. जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जंति० ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ। तेउक्काइया णं सूईकलावसंठिया। ठिई जाणियव्वा। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं बारसहिं राइंदिएहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८०. जइ वाउक्काइएहिंतो० ? वाउक्काइयाण वि एवं चेव नव गमगा जहेव तेउक्काइयाणं, नवरं—पडागासंठिया पण्णत्ता। संवेहो वाससहस्सेहिं कायव्वो। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं एगं वाससयसहस्सं। एवं संवेहो उवजुंजिऊण[1] भाणियव्वो १-९॥

१८१. जइ वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति० ? वणस्सइकाइयाणं आउकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवरं - नाणासंठिया। सरीरोगाहणा पढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाणं। संवेहो ठिती य जाणियव्वा। तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठावीसुत्तरं वाससयसहस्सं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८२. जइ बेंदिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्ताबेंदिएहिंतो उववज्जंति, अपज्जत्ताबेंदिएहिंतो वि उववज्जंति॥

१८३. बेंदिए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१८४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। छेवट्टसंघयणी। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। हुंडसंठिया। तिण्णि लेसाओ। सम्मदिट्ठी

१. उववज्जिऊण (अ, ता, म); उवजुंज्जित्तण (क); उवजुंजित्तण (ब)।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियमं। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, तं जहा—जिब्भिंदिए य फासिंदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेसं जहा पुढविक्काइयाणं, नवरं—ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव बेंदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवरं—इमाइं सत्त नाणत्ताइं—१. सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाणं २. नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३. दो अण्णाणा नियमं ४. नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५. ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं ६. अज्झवसाणा अपसत्था ७. अणुबंधो जहा ठिती। संवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवरं—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेणं बारस संवच्छराइं, उक्कोसेण वि बारस संवच्छराइं। एवं अणुबंधो वि। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं जाव नवमे गमए जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं बारसहिं संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं अडयालीसाए संवच्छरेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइंदिएहिंतो उववज्जंति० ? एवं चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं,

१. भ० २४।१८४-१८६।

उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं[1]। तिण्णि इंदियाइं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं। तइयगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं छण्णउयराइंदियसयमब्भहियाइं,[2] एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवरं—ठिती जहण्णेणं एगूणपन्नं राइंदियाइं, उक्कोसेण वि एगूणपन्नं राइंदियाइं। संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१९०. जइ चउरिंदिएहिंतो उववज्जंति० ? एवं चेव चउरिंदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—एतेसु चेव ठाणेसु नाणत्ता जाणियव्वा। सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण य छम्मासा। एवं अणुबंधो वि। चत्तारि इंदियाइं। सेसं तहेव जाव नवमगमए कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं छहिं मासेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीतिं वाससहस्साइं चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९॥

१९१. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय॥

१९२. जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति जाव[3] किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति, अपज्जत्तएहिंतो वि उववज्जंति॥

१९३. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१९४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव बेइंदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,[4] नवरं - सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। पंच इंदिया। ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ,

१. कोसा (ता)।
२. छण्णउइं° (स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।१८४।

एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । नवसु वि गमएसु कायसंवेहो—भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं उवजुंजिऊण भाणियव्वं, नवरं—मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव[1] बेइंदियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चेव पढमगमएसु, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तं चेव जाव नवमगमएसु—जहण्णेणं पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९ ।।

१९५. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय ।

१९६. जइ संखेज्जवासाउय० किं जलयरेहिंतो० ? सेसं जहा असण्णीणं जाव[2]—

१९७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा[3] रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं । सेसं तहेव जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं संवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीणं तहेव निरवसेसो[4] । लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, मज्झिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, नवरं—इमाइं नव नाणत्ताइं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं । तिण्णि लेसाओ । मिच्छादिट्ठी । दो अण्णाणा । कायजोगी । तिण्णि समुग्घाया । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं । अप्पसत्था अज्झवसाणा । अणुबंधो जहा ठिती । सेसं तं चेव । पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवरं—ठिती अणुबंधो य—जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तं चेव १-९।।

१९८. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति ।।

१९९. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणि-

१. भ० २४।१८७ ।
२. भ० २४।१९२,१९३ ।
३. भ० २४।५८-६२ ।
४. निरवसेसं (ख, ता, ब) ।

यस्स जहण्णकालट्ठितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेसं १-३। सेसा छ न भण्णंति ।।

२००. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय ।।

२०१. जइ संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! पज्जत्तासंखेज्जवासाउय, अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति ।।

२०२. सण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पंचधणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी। एवं अणुबंधो। संवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपंचिंदियस्स। मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपंचिंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु। सेसं तं चेव निरवसेसं। पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवरं— ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं। ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव[1] १-९।।

२०४. जइ देवेहिंतो उववज्जंति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ? वाणमंतरदेवेहिंतो, जोइसियदेवेहिंतो, वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति ।।

२०५. जइ भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति ।।

२०६. असुरकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. तहेव नवरं पच्छिल्लएसु गमएसु संखेज्जा उववज्जंति नो असंखेज्जा उववज्जंति (ब, (स, ता, ब, म)।

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०७. ते णं भंते ! जीवा [1]°एगसमएणं केवतिया उववज्जंति °?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।।

२०८. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्हं संघयणाणं असंघयणी जाव[2] परिणमंति ।।

२०९. तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा ?
गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा[3] पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त रयणीओ । तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं ।।

२१०. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरंससंठिया पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासंठिया[4] पण्णत्ता । लेस्साओ चत्तारि । दिट्ठी तिविहा वि । तिण्णि नाणा नियमं, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पंच इंदिया । पंच समुग्घाया । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो नपुंसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं । अज्झवसाणा असंखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबंधो जहा ठिती । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं नव वि गमा नेयव्वा, नवरं—मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराणं ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसंवेहं च जाणेज्जा । सव्वत्थ दो भवग्गहणाइं जाव नवमगमए कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, उक्कोसेण वि सातिरेगं सागरोवमं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९ ।।

१. सं० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।२४५, २२४ ।
३. × (क, ख, ता, म, स) ।
४. नाणासंठाणसंठिया (स) ।

२११. णागकुमारेणं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव[1] भवादेसो त्ति, नवरं— ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं। एवं नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवरं —ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९ । एवं जाव थणियकुमाराणं ।।

२१२. जइ वाणमंतरेहिंतो उववज्जंति—किं पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो ?
गोयमा ! पिसायवाणमंतरदेवेहिंतो जाव गंधव्ववाणमंतरदेवेहिंतो ।।

२१३. वाणमंतरदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? एतेसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा[2], नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं पलिओवमं। सेसं तहेव १-९ ।।

२१४. जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतो उववज्जंति जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतो[3]० ?
गोयमा ! चंदविमाण जाव ताराविमाण ।।

२१५. जोइसियदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? लद्धी जहा असुरकुमाराणं, नवरं— एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता। तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । एवं अणुबंधो वि । कालादेसेण जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्सेणं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९ ।।

२१६. जइ वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति – किं कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो ।।

२१७. जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ईसाणकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो, नो सणंकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ।।

---

१. भ० २४।२०६-२१० ।
२. भ० २४।२०६-२१० ।
३. तारविमाण० (अ, क, ख, ता, ब, म) ।

२१८. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं— ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा॥

२१९. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव १-९॥

२२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ॥

तेरसमो उद्देसो

२२१. आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव पुढविक्काइय-उद्देसए जाव[2]—

२२२. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो[3], नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव॥

२२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

१. भ० १।५१।
२. भ० २४।१६३-१६५।
३. भ० २४।१६७-२१९।

चोद्दसमो उद्देसो

२२४. तेउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं[1] पुढविक्काइयउद्देसग-सरिसो[2] उद्देसो भाणियव्वो, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । देवेहिंतो न उववज्जंति । सेसं तं चेव ।।

२२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ।।

पण्णरसमो उद्देसो

२२६. वाउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव तेउक्काइय-उद्देसओ तहेव, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ।।

२२७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

सोलसमो उद्देसो

२२८. वणस्सइकाइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो, नवरं—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जति ताहे पढम-बितिय-चउत्थ-पंचमेसु गमएसु परिमाणं अणुसमयं अविरहियं अणंता उववज्जंति । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । सेसा पंच गमा अट्ठभवग्ग-हणिया तहेव, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ।।

२२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

१. एवं जहेव (अ, म) ।

२. उद्देसासरिसो (ता, ब, स)

३. भ० १।५१ ।

सत्तरसमो उद्देसो

२३०. बेंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जाव[1]—

२३१. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेंदिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं—एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पंचसु तहेव अट्ठ भवा। एवं जाव चउरिंदिएणं समं चउसु संखेज्जा भवा, पंचसु अट्ठ भवा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु समं तहेव अट्ठ भवा। देवेसु न[2] उववज्जंति। ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

२३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठारसमो उद्देसो

२३३. तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं तेइंदियाणं जहेव बेइंदियाणं उद्देसो, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। तेउक्काइएसु समं ततियगमे उक्कोसेणं अट्ठुत्तराइं बेराइंदियसयाइं, बेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं अडयालीसं संवच्छराइं छन्नउयराइंदियसतमब्भहियाइं, तेइंदिएहिं समं ततियगमे उक्कोसेणं बाणउयाइं तिण्णि राइंदियसयाइं। एवं सव्वत्थ जाणेज्जा जाव सण्णिमणुस्स त्ति ॥

२३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

एगूणवीसइमो उद्देसो

२३५. चउरिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहेव चउरिंदियाणं वि, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ॥

२३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१६३-१६५।

२. न चेव (अ, क, म)।

वीसइमो उद्देसो

२३७. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो वि, देवेहिंतो वि उववज्जंति ॥

२३८. जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति—किं रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ॥

२३९. रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४०. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? एवं जहा[1] असुरकुमाराणं वत्तव्वया, नवरं—संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकंता जाव परिणमंति। ओगाहणा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं सत्त धणूइं तिण्णि रयणीओ छच्चंगुलाइं। तत्थ णं जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जइभागं, उक्कोसेणं पण्णरस धणूइं अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ॥

२४१. तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ णं जे ते भवधारणिज्जा ते हुंडसंठिया पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुंडसंठिया पण्णत्ता। एगा काउलेस्सा पण्णत्ता। समुग्घाया चत्तारि। नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा। ठिती जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं सागरोवमं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

१. भ० २४।२०७,२०८।

२४२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु। अवसेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तहेव, उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए सण्णिपंचिंदिएहिं समं। नेरइयाणं 'मज्झिम-एसु तिसु गमएसु'[1] पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्तं भवति। सेसं तं चेव। सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २-९॥

२४३. सक्करप्पभापुढविनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए०? एवं जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवरं—सरीरोगाहणा जहा[2] ओगाहणसंठाणे[3]। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियमं। ठिती अणुबंधा पुव्वभणिया। एवं नव वि गमगा उवजुंजिऊण भाणियव्वा १-९। एवं जाव छट्ठपुढवी, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा संवेहो य जाणियव्वा॥

२४४. अहेसत्तमपुढवीनेरइए णं भंते! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए०? एवं चेव नव गमगा, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबंधा जाणियव्वा। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छब्भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवरं—ठितीविसेसो कालादेसो य बितियगमएसु जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। तइयगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। चउत्थगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। पंचमगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। छट्ठगमए जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं।

---

१. मज्झिमएसु गमएसु (अ); मज्झिमएसु य तिसु गमएसु (क, ब); मज्झिमगमएसु (ख, ता); मज्झमएसु य तिसु वि गमएसु (स)।

२. प० २१।

३. ओगाहणासंठाणे (अ, म)।

उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। नवमगमए जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-६॥

२४५. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो० ? एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव[1]—

२४६. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२४७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं परिमाणादीया अणुबंधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं—नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। सेसं तं चेव। कालादेसेणं उभओ ठितीए करेज्जा १-६॥

२४८. जइ आउक्काइएहिंतो उववज्जंति० ? एवं आउक्काइयाण वि। एवं जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा, नवरं—सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। नवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-६॥

२४६. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?

गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय, भेओ जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स जाव[2]—

२५०. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१६४,१६५। २. भ० २४।१६२।

२५१. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहेव पुढविक्का-इएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव भवादेसो त्ति । काला-देसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पुव्व-कोडिपुहत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । बितियगमए एस चेव लद्धी, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १,२॥

२५२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ॥

२५३. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव[1] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । सेसं तं चेव ३॥

२५४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्को-सेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२५५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा एयस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव[2] अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ४॥

२५६. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अट्ठ अंतोमुहुत्ता, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ५॥

२५७. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा ६॥

२५८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तं चेव । काला-देसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असं-खेज्जइभागं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७॥

१. भ० २४।३२,३३ । २. भ० २४।१६४ ।

२५९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा[1] सत्तमगमे, नवरं—कालदेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ८॥

२६०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं। एवं जहा रयणप्पभाए उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स नवमगमए तहेव निरवसेसं जाव[2] कालादेसो त्ति, नवरं—परिमाणं जहा[3] एयस्सेव ततियगमे। सेसं तं चेव ९॥

२६१. जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय० ? असंखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय ॥

२६२. जइ संखेज्जवासाउय जाव किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तसंखेज्जवा-साउय० ? दोसु वि ॥

२६३. संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२६४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा[4] एयस्स चेव सण्णिस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। सेसं तं चेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

२६५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—काला-देसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ॥

२६६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उवव-ज्जंति। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं।

---

१. भ० २४।२५८।
२. भ० २४।५२,५३।
३. भ० २४।२५३।
४. भ० २४।५८-६२।

सेसं तं चेव जाव—अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ३ ॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जातो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से जहा[1] एयस्स चेव सण्णिपंचिंदियस्स पुढविक्काएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। संवेहो जहेव[2] एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ४-६ ॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइं ७ ॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं—जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८ ॥

२७०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं वि तिपलिओमट्ठितीएसु। अवसेसं तं चेव, नवरं—परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९ ॥

२७१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो॰ ? असण्णिमणुस्सेहिंतो॰ ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो वि, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति ॥

२७२. असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव[3] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३ ॥

१. भ० २४।१९७।
२. भ० २४।२५५-२५७।
३. भ० २४।१९९।

२७३. जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असंखेज्जवासाउय ।।

२७४. जइ संखेज्जवासाउय० किं पज्जत्त० ? अपज्जत्त० ?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्जवासाउय, अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ।।

२७५. सण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२७६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? लद्धी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव[1]—भवादेसो त्ति । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं १ ।।

२७७. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ २ ।।

२७८. सो चेव उक्कोसकालट्ठितिएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, सच्चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलपुहत्तं, उक्कोसेणं पंच धणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं मासपुहत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं मासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं,—एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ।।

२७९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, जहा[2] सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवरं—परिमाणं उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । सेसं तं चेव ४-६ ।।

२८०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंच धणुसयाइं । ठिती अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेसं तहेव

---

१. भ० २४।२०३ । २. भ० २४।२६७ ।

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७ ॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८॥

२८२. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

२८३. जइ देवेहिंतो उववज्जंति - किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि ॥

२८४. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो० ?
गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहिंतो ॥

२८५. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। असुरकुमाराणं लद्धी नवसु वि गमएसु जहा[1] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। एवं जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेणं सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं जहण्णेणं दोण्णि भवग्गहणाइं। ठितिं संवेहं च सव्वत्थ जाणेज्जा १-९॥

२८६. नागकुमारे णं भंते ! जे भविए ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव थणियकुमारे ॥

२८७. जइ वाणमंतरेहिंतो० किं पिसाय ०? तहेव जाव—

२८८. वाणमंतरे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एवं चेव, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२८९. जइ जोतिसिय ०? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए। भवग्गहणाइं नवसु वि गमएसु

---

१. भ० २४।२०७-२१०।

अट्ठ जाव कालादेसेणं जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवम अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं चउहि य वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं नवसु वि गमएसु, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९।।

२९१. जइ वेमाणियदेवेहिंतो ० किं कप्पोवावेमाणिय ०? कप्पातीतावेमाणिय ०?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय ।।

२९२. जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, नो आणय जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणिय ।।

२९३. सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु। सेसं जहेव[1] पुढविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवरं—नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा १-९। एवं ईसाणदेवे वि। एवं एएणं कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा, नवरं—ओगाहणा जहा[2] ओगाहणसंठाणे, लेस्सा सणंकुमार-माहिंद-बंभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाणं एगा सुक्कलेस्सा। वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुंसगवेदगा। आउ-अणुबंधा जहा[3] ठितिपदे। सेसं जहेव ईसाणगाणं कायसंवेहं च जाणेज्जा।।

२९४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

एगवीसतिमो उद्देसो

२९५. मणुस्सा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो वि उववज्जंति 'जाव देवेहिंतो वि उववज्जंति'[4]। एवं उववाओ जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणिउद्देसए जाव[5] तमापुढविनेरइएहिंतो वि उववज्जंति, नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ।।

१. भ० २४।२१८।
२. प० २१।
३. प० ४।
४. × (अ, क, ख, ता, ब, म)।
५. भ० २४।२३८।

२९६. रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु । अवसेसा वत्तव्वया जहा[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इहं मासपुहत्तेहिं संवेहं करेज्जा । सेसं तं चेव १-९।
जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'[2], नवरं—जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउएसु । ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबंध-संवेह-नाणत्तं च जाणेज्जा जहेव[3] तिरिक्खजोणियउद्देसए । एवं जाव तमापुढविनेरइए ॥

२९७. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो भेदो जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए, नवरं—तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा । सेसं तं चेव । जाव[4]—

२९८. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२९९. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इह वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा[5] नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवंति । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९॥

३००. जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एवं जाव चउरिंदियाण वि । असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पंचिंदियतिरिक्ख-

---

१. भ० २४।२४०-२४२ ।
२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, ब); वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स) ।
३. भ० २४।२४३ ।
४. भ० २४।२४५ ।
५. भ० २४।२४७ ।

जोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा[1], नवरं—एयाणि चेव परिमाण-अज्झवसाण-नाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि। सेसं तहेव निरवसेसं १-९॥

३०१. जइ देवेहिंतो उववज्जंति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति?
गोयमा! भवणवासिदेवेहिंतो वि जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जंति॥

३०२. जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमार जाव थणियकुमार०?
गोयमा! असुरकुमार जाव थणियकुमार॥

३०३. असुरकुमारे णं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उवव-ज्जेज्जा। एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा, नवरं—जहा तहिं जहण्णगं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु तहा इहं मास-पुहत्तट्ठितीएसु। परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति। सेसं तं चेव १-९। एवं जाव[2] ईसाणदेवो त्ति। एयाणि चेव नाणत्ताणि। सणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव[3] पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिउद्देसए, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं संखेज्जा उववज्जंति। उववाओ जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। सेसं तं चेव। संवेहं वासपुहत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा। सणंकुमारे ठिती चउगुणिया 'अट्ठावीससागरोवमा भवंति'[4] माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पन्नं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं। एसा उक्कोसा ठिती भणिया। जहण्णट्ठितिं पि चउगुणेज्जा॥

३०४. आणयदेवे णं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीठितीएसु उवव-ज्जेज्जा॥

३०५. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव सहस्सार-देवाणं वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं

१. भ० २४।२४८-२८२।
२. भ० २४।२८५-२९३।
३. भ० २४।२९३।
४. अट्ठावीसं सागरोवमा भवंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं नव वि गमा, नवरं—ठितिं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा १-९। एवं जाव अच्चुयदेवो, नवरं—ठितिं अणुबंधं संवेहं च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठिं सागरोवसाइं, आरणगस्स तेवट्ठिं सागरोवमाइं, अच्चुयदेवस्स छावट्ठिं सागरोवमाइं ॥

३०६. जइ कप्पातीत[illegible]देवेहिंतो उववज्जंति—किं गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?
गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७. जइ गेवेज्जा०—किं हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?
गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८. गेवेज्जगदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीट्ठितीएसु। अवसेसं जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा[1]—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं दो रयणीओ। संठाणं[2]—एगे भवधारणिज्जे सरीरे। से समचउरंससंठिए पण्णत्ते। पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव णं वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहिं समोहणिंसु वा, समोहणंति वा, समोहणिस्संति वा। ठिती अणुबंधो जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं। सेसं तं चेव। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेणउतिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९॥

३०९. जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति—किं विजयअणुत्तरोववाइय० ? [illegible]णुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?
गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१०. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहेव गेवेज्जगदेवाणं, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं एगा रयणी।

१. ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)। २. संठाणं गो (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी। नाणी, नो अण्णाणी, नियमं तिण्णाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। ठिती जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं चत्तारि भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं अणुबंधं संवेधं च जाणेज्जा। सेसं एवं चेव १-९॥

३११. सव्वट्ठसिद्धगदेवे णं भंते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए०? सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं—ठिती अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

३१२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

३१३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३। एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णंति॥

३१४. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बावीसइमो उद्देसो

३१५. वाणमंतरा णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति? तिरिक्ख०? एवं जहेव[1] नागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव निरवसेसं॥

३१६. जइ सण्णिपंचिंदिय[2]तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं संखेज्जवासाउय०? असंखेज्जवासाउय०?

---

१. भ० २४।१४३, १४४।

२. सं० पा०—सण्णिपंचिंदिय जाव असंखेज्जवासाउय।

गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति० ॥

३१७. सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए वाणमंतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३१८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव[2] नागकुमाराणं बितियगमे वत्तव्वया २ ॥

३१९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। संवेहो जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव[3] नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु तं चेव जहा[4] नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। संखेज्जवासाउय तहेव,[5] नवरं—ठिती अणुबंधो संवेहं च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९ ॥

३२०. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? असंखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] नागकुमाराणं उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवरं—तइयगमए ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तहेव। संवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियाणं। संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव[7] नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमंतरे ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

३२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० २४।१४७।
२. भ० २४।१४८।
३. भ० २४।१५०।
४. भ० २४।१५१।
५. भ० २४।१५२,१५३।
६. भ० २४।१५४-१५७।
७. भ० २४।१५८,१५९।

तेवीसइमो उद्देसो

३२२. जोइसिया णं भंते ! कग्रोहिंतो उववज्जंति — किं नेरइएहिंतो० ? भेदो जाव[1] सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख ।।

३२३. जइ सण्णि० किं संखेज्ज० ? असंखेज्ज० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय ।।

३२४. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमवाससयसहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, अवसेसं जहा[2] असुरकुमारुद्देसए, नवरं—ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि । सेसं तहेव, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ।।

३२५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु । एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जाणेज्जा २ ।।

३२६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । एवं अणुबंधो वि । कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं दोहिं वाससयसहस्सेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं वाससयसहस्समब्भहियाइं ३ ।।

३२७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

३२८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं अट्ठारसधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमं । एवं अणुबंधोवि । सेसं तहेव । कालादेसेणं जहण्णेणं दो अट्ठभागपलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । जहण्णकालट्ठितियस्स एस चेव एक्को गमो[3] ४ ।।

१. भ० २४।१-३ ।
२. भ० २४।१२१ ।
३. पञ्चमषष्ठगमयोरत्रैवान्तर्भावात् (वृ) ।

३२९. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तं चेव। एवं पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा[1], नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा ७-९। एते सत्त गमगा॥

३३०. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव निरवसेसं[3] १-९॥

३३१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? भेदो तहेव जाव[4]—

३३२. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवरं—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। मज्झिमगमए जहण्णेणं सातिरेगाइं नव धणुसयाइं, उक्कोसेणं वि सातिरेगाइं नव धणुसयाइं। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेणं वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं तहेव निरवसेसं जाव[5] संवेहो त्ति॥

३३३. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? संखेज्जवासाउयाणं जहेव[6] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—जोतिसियठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव निरवसेसं १-९॥

३३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५. सोहम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? भेदो जहा[7] जोइसियउद्देसए॥

३३६. असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेजा ?

१. भाणियव्वा (अ, क)।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३. निरवसेसं भाणियव्वं (स)।
४. भ० २४।१३४,१३५।
५. भ० २४।३२४-३२९।
६. भ० २४।१३९-१४२।
७. भ० २४।३२२,३२३।

गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु उक्कोसेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३३७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसं जहा[1] जोइसिएसु उववज्जमाणस्स, नवरं—सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं। ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं अणुबंधो वि। सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३३८. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं चत्तारि पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २ ॥

३३९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइं। सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं छप्पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३ ॥

३४०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं दो गाउयाइं। ठिती जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेण वि पलिओवमं। सेसं तहेव। कालादेसेणं जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेण वि दो पलिओवमाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ४-६ ॥

३४१. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा ७-९ ॥

३४२. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदिय० ? संखेज्जवासाउयस्स जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव[3] नव वि गमा, नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितिओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा दो अण्णाणा नियमं। 'सेसं तं चेव' १-९ ॥

३४३. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, जाव[4]—

१. भ० २४।३२४।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३. तहेव (ता)।
४. भ० २४।३३१

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव असंखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवरं—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। ततियगमे जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। चउत्थगमए जहण्णेणं गाउयं, उक्कोसेण वि गाउयं। पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं, सेसं तहेव निरवसेसं ॥

३४५. जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? एवं संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साणं जहेव[1] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवरं सोहम्मदेवट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-६ ॥

३४६. ईसाणदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? ईसाणदेवाणं एस चेव सोहम्मगदेवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेगं पलिओवमं कायव्वं। चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेणं धणुपुहत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो गाउयाइं। सेसं तहेव ॥

३४७. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा[2] पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स असंखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउयं तेसु ठाणेसु इहं सातिरेगं गाउयं। सेसं तहेव ॥

३४८. संखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्जमाणाणं तहेव निरवसेसं नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

३४९. सणंकुमारदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? उववाओ जहा[3] सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं, जाव—

३५०. पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए सणंकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा[4] सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवरं - सणंकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पंच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेसं तं चेव ॥

३५१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति० ? मणुस्साणं जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाणं तहेव नव वि गमा भाणियव्वा[5], नवरं—सणंकुमारट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१३६-१४१।
२. भ० २४।३३६-३४१।
३. भ० २४।७८,१०५।
४. भ० २४।३४२।
५. भ० २४।१०५-१०८।

३५२. माहिंदगदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति०? जहा सणंकुमारगदेवाणं वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा[1], नवरं—माहिंदगदेवाणं ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एवं बंभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवरं—बंभलोगट्ठिति संवेहं च जाणेज्जा। एवं जाव सहस्सारो, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। लंतगादीणं जहण्णकालट्ठितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साम्रो कायव्वाम्रो। संघयणाइं बंभलोग-लंतएसु पंच म्रादिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि। तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि। सेसं तं चेव ॥

३५३. म्राणयदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति०? उववाम्रो जहा सहस्सारदेवाणं, नवरं—तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा, जाव—

३५४. पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए म्राणयदेवेसु उववज्जित्तए०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाणं, नवरं—तिण्णि संघयणाणि, सेसं तहेव जाव म्रणुबंधो। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं म्रट्ठारस सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं म्रब्भहियाइं, उक्कोसेणं सत्तावन्नं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं म्रब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि म्रट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव। एवं जाव म्रच्चुयदेवा, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। चउसु वि संघयणा तिण्णि म्राणयादीसु ॥

३५५. गेवेज्जगदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—दो संघयणा। ठिति संवेहं च जाणेज्जा ॥

३५६. विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति०? एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव म्रणुबंधो त्ति, नवरं—पढमं संघयणं। सेसं तहेव। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं दोहिं वासपुहत्तेहिं म्रब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं म्रब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि म्रट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा। मणूसलद्धी[2] नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—पढमसंघयणं ॥

३५७. सव्वट्ठगसिद्धगदेवा णं भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जंति०? उववाम्रो जहेव विजयादीणं, जाव—

१. भ० २४।३४९-३५१। २. मणूसे लद्धी (स)।

३५८. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जंताणं, नवरं—भवादेसेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं [illegible]हिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

३५९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। संवेहं च जाणेज्जा २॥

३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं पंच धणुसयाइं, उक्कोस्सेण वि पंच धणुसयाइं। ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेसं तहेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३। एते तिण्णि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं ॥

३६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[1] विहरइ ॥

———

पंचवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. लेसा य २. दव्व ३. संठाण ४. जुम्म ५. पज्जव ६. नियंठ ७. समणा य।
८. ओहे ९,१०. भवियाभविए, ११. सम्मा १२. मिच्छे य उद्देसा ॥१॥

लेस्सा-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—कति णं भंते! लेस्साओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेसा जहा पढमसए बितिए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो। अप्पाबहुगं च जाव[2] चउव्विहाणं देवाणं चउव्विहाणं देवीणं मीसगं अप्पाबहुगंति॥

जोगस्स अप्पाबहुग-पदं

२. कतिविहा णं भंते! संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता?
गोयमा! चोद्दसविहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, तं जहा—१. सुहुमा अप्पज्जत्तगा २. सुहुमा पज्जत्तगा ३. बादरा अप्पज्जत्तगा ४. बादरा पज्जत्तगा ५. बेइंदिया अप्पज्जत्तगा ६. बेइंदिया पज्जत्तगा [3]°७. तेइंदिया अप्पज्जत्तगा ८. तेइंदिया पज्जत्तगा ९. चउरिंदिया अप्पज्जत्तगा १०. चउरिंदिया पज्जत्तगा° ११. असण्णिपंचिंदिया अप्पज्जत्तगा १२. असण्णिपंचिंदिया पज्जत्तगा १३. सण्णिपंचिंदिया अप्पज्जत्तगा १४. सण्णिपंचिंदिया पज्जत्तगा॥

३. एतेसि णं भंते! चोद्दसविहाणं संसारसमावण्णगाणं जीवाणं जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[4] °अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा?° विसेसाहिया वा?

१. भ० १।४-१०।
२. भ० १।२०२; प० १७।२।
३. सं० पा०—एवं तेइंदिया एवं चउरिंदिया।
४. सं० पा० कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा।

गोयमा ! १. सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २. बादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३. बेंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४. एवं तेइंदियस्स ५. एवं चउरिंदियस्स ६. असण्णिस्स पंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ७. सण्णिस्स पंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ८. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ९. बादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १०. सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ११. बादरस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १२. सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १३. बादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे १४. बेंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १५. एवं तेंदियस्स, एवं जाव १८. सण्णिपंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १९. बेंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २०. एवं तेंदियस्स वि, एवं जाव २३. सण्णिपंचिंदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २४. बेंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २५. एवं तेइंदियस्स वि, एवं जाव २८. सण्णिपंचिंदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ॥

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४. दो भंते ! नेरइया पढमसमयोववन्नगा किं समजोगी ? विसमजोगी[1] ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ॥

५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ[2] वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्ज-इभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असंखेज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा, संखेज्जइभागमब्भहिए वा, संखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जगुणमब्भहिए वा । से तेणट्ठेणं[3] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय समजोगी°, सिय विसमजोगी । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

जोग-पदं

६. कतिविहे णं भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—१. सच्चमणजोए २. मोसमण-

१. किं विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता) ।
२. आहारओ (अ,ख); आहाराओ (क,ब,म) ।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सिय ।

जोए[1] ३. सच्चामोसमणजोए ४. असच्चामोसमणजोए ५. सच्चवइजोए ६. मोसवइजोए ७. सच्चामोसवइजोए ८. असच्चामोसवइजोए ९. ओरालियसरीरकायजोए १०. ओरालियमीसासरीरकायजोए ११. वेउव्वियसरीरकायजोए १२. वेउव्वियमीसासरीरकायजोए १३. आहारगसरीरकायजोए १४. आहारगमीसासरीरकायजोए १५. कम्मासरीरकायजोए ॥

७. एयस्स[2] णं भंते ! पण्णरसविहस्स जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवे कम्मासरीरस्स[4] जहण्णए जोए २. ओरालियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३. वेउव्वियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४. ओरालियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ५. वेउव्वियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ६. कम्मासरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ७. आहारगमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ८. तस्स चेव उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ९,१०. ओरालियमीसगस्स, वेउव्वियमीसगस्स य—एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हवि तुल्ले असंखेज्जगुणे ११. असच्चामोसमणजोगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १२. आहारासरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १३-१९. तिविहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स—एएसि णं सत्तण्ह वि तुल्ले जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे २०. आहारासरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २१-३०. ओरालियसरीरस्स, वेउव्वियसरीरस्स, चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स—एएसि णं दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

दव्व-पदं

९. कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदव्वा य, अजीवदव्वा य ॥

१०. अजीवदव्वा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. असच्चमणजोए । (अ, क, ब, म) ।
२. तस्स (क) ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. कम्मग° (क, ख, ब, म); कम्मसरीरगस्स (ता) ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य ।।

११. [1]●अरूविअजीवदव्वा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ।।

१२. रूविजीवदव्वा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउविहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणु-पोग्गले ।।

१३. ते णं भंते ! किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

१४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ?
गोयमा ! अणंता परमाणुपोग्गला, अणंता दुपदेसिया खंधा जाव अणंता दसपदेसिया खंधा, अणंता संखेज्जपदेसिया खंधा, अणंता असंखेज्जपदेसिया खंधा, अणंता अणंतपदेसिया खंधा ।° से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—ते णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

१५. जीवदव्वा णं भंते ! किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ? नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।।

१६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवदव्वा णं नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ?
गोयमा ! असंखेज्जा नेरइया जाव असंखेज्जा वाउक्काइया, अणंता वणस्सइ-काइया, असंखेज्जा बेंदिया, एवं जाव वेमाणिया, अणंता सिद्धा । से तेणट्ठेणं जाव अणंता ।।

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७. जीवदव्वाणं भंते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, नो अजीव-दव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ।।

१८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—●जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

१. सं० पा०—एवं एएणं अभिलावेणं जहा अजीवपज्जवा जाव से । २. सं० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छंति ।

हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छंति ? गोयमा ! जीवदव्वा णं अजीवदव्वे परियादियंति परियादिइत्ता ओरालियं वेउव्वियं आहारगं तेयगं कम्मगं, सोइंदियं जाव फासिंदियं, मणजोगं वइजोगं कायजोगं, आणापाणुत्तं[1] च निव्वत्तयंति। से तेणट्ठेणं[2] °गोयमा ! एवं वुच्चइ —जीवदव्वाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छंति ॥

१९. नेरइयाणं भंते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ? अजीवदव्वाणं नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?
गोयमा ! नेरइयाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए[3] हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ॥

२०. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! नेरइया अजीवदव्वे परियादियंति, परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-कम्मगं, सोइंदियं जाव फासिंदियं, (मणजोगं वइजोगं कायजोगं ?)[4] आणापाणुत्तं च निव्वत्तयंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, नो अजीवदव्वाणं नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं—सरीरइंदियजोगा भाणियव्वा जस्स जे अत्थि।

अवगाह-पदं

२१. से नूणं भंते ! असंखेज्जे लोए अणंताइं दव्वाइं आगासे भइयव्वाइं ?
हंता गोयमा ! असंखेज्जे लोए[5] °अणंताइं दव्वाइं आगासे° भइयव्वाइं ॥

पोग्गलाणं चयादि-पदं

२२. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति ?
गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

२३. लोगस्स णं भंते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसिं पोग्गला छिज्जंति ? एवं चेव। एवं उवचिज्जंति, एवं अवचिज्जंति ॥

१. आणापाणत्तं (अ)।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव हव्वमागच्छंति।
३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. कोष्ठकवर्ती पाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु पूर्वसूत्रानुसारेण असौ युज्यते।
५. सं० पा०—लोए जाव भइयव्वाइं।

पोग्गलगहण-पदं

२४. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ?
गोयमा ! ठियाइं पि गेण्हइ, अट्ठियाइं पि गेण्हइ ।।

२५. ताइं भंते ! किं दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ । ताइं दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपदेसोगाढाइं—एवं जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[1] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ।।

२६. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ ? अट्ठियाइं गेण्हइ ? एवं चेव, नवरं—नियमं छद्दिसिं । एवं आहारगसरीरत्ताए वि ।।

२७. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियाइं गेण्हइ, नो अट्ठियाइं गेण्हइ । सेसं जहा ओरालियसरीरस्स । कम्मगसरीरे एवं चेव । एवं जाव भावओ वि गेण्हइ ।।

२८. जाइं दव्वाइं दव्वओ गेण्हइ ताइं किं एगपदेसियाइं गेण्हइ ? दुपदेसियाइं गेण्हइ ? एवं जहा भासापदे जाव[2] आणुपुव्विं गेण्हइ, नो अणाणुपुव्विं गेण्हइ ।।

२९. ताइं भंते ! कतिदिसिं गेण्हइ ?
गोयमा ! निव्वाघाएणं जहा ओरालियस्स ।।

३०. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सोइंदियत्ताए गेण्हइ ०? जहा वेउव्वियसरीरं । एवं जाव जिब्भिंदियत्ताए । फासिंदियत्ताए जहा ओरालियसरीरं । मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीरं, नवरं—नियमं छद्दिसिं । एवं वइजोगत्ताए वि । कायजोगत्ताए[3] जहा ओरालियसरीरस्स ।।

३१. जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ ०? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पंचदिसिं ।।

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।[4]

१. प० २८।१ ।
२. प० ११ ।
३. कायजोगत्ताए वि (क, स) ।
४. त्ति केइ चउवीसदंडएणं एताणि पदाणि भण्णंति जस्स जं अत्थि (अ, क, ख, ता, ब, म, स); असौ पाठः वाचनान्तराभिप्रायकोस्ति । उद्देशकपूर्तौ लिखितस्यास्य मूले प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते ।

तइओ उद्देसो

संठाण-पदं

३३. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले, वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयते, अणित्थंथे ॥

३४. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्ठयाए किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३५. वट्टा णं भंते ! संठाणा ०? एवं चेव । एवं जाव अणित्थंथा । एवं पएसट्ठयाए वि । 'एवं दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए वि'[1] ॥

३६. एएसि णं भंते ! परिमंडल-वट्ट-तंस-चउरंस-आयत-अणित्थंथाणं संठाणाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमंडलसंठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, चउरंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, तंसा संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, आयता संठाणा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । दव्वट्ठपएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमंडला संठाणा दव्वट्ठयाए, सो चेव दव्वट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणित्थंथेहिंतो संठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए परिमंडला संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, वट्टा संठाणा पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थंथा संठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥

रयणप्पभादिसंबद्ध संठाण-पदं

३७. कति णं भंते ! संठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच संठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमंडले जाव आयते ॥

३८. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

३९. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?

१. × (अ, क, ता, ब, म, स) । २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

४१. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४२. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए परिमंडला संठाणा ०? एवं चेव । एवं जाव आयता । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

४३. सोहम्मे णं भंते ! कप्पे परिमंडला संठाणा ०? एवं जाव अच्चुए ॥

४४. गेवेज्जविमाणे णं भंते ! परिमंडला संठाणा० ? एवं चेव । एवं अणुत्तरविमाणेसु वि । एवं ईसिपब्भाराए वि ॥

४५. जत्थ णं भंते ! एगे परिमंडले संठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ॥

४६. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा० ? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

४७. जत्थ णं भंते ! एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ परिमंडला संठाणा० ? एवं चेव । वट्टा संठाणा एवं चेव । एवं जाव आयता । एवं एक्केक्केणं संठाणेणं पंच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेणं'[1] ॥

४८. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमंडले संठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता ।

४९. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा० ? एवं चेव । एवं जाव आयता ॥

५०. जत्थ णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे संठाणे जवमज्झे तत्थ णं परिमंडला संठाणा किं संखेज्जा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता । वट्टा संठाणा एवं चेव । एवं जाव आयता । एवं पुणरवि एक्केक्केणं संठाणेणं पंच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेणं । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं कप्पेसु वि जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए ॥

पएसावगाहतो संठाणनिरूवण-पदं

५१. वट्टे णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! वट्टे संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणवट्टे य, पतरवट्टे य ।
तत्थ णं जे से पतरवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पंचपदेसिए पंचपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे ।

१. × (अ, क, ब, म, स) ।

तत्थ णं जे से घणवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं सत्तपदेसिए सत्तपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बत्तीसपदेसिए बत्तीसपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

५२. तंसे णं भंते! संठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते?
गोयमा! तंसे णं संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--घणतंसे य, पतरतंसे य।
तत्थ णं जे से पतरतंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते।
तत्थ णं जे से घणतंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणतीसपदेसिए पणतीसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[1]। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं चउप्पदेसिए चउप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[2] ॥

५३. चउरंसे णं भंते! संठाणे कतिपदेसिए--पुच्छा।
गोयमा! चउरंसे संठाणे दुविहे पण्णत्ते,[3] तं जहा--घणचउरंसे य, पतरचउरंसे य।
तत्थ णं जे से पतरचउरंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य°। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं नवपदेसिए नवपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं चउपदेसिए चउपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[4]।
तत्थ णं जे से घणचउरंसे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं सत्तावीसइपदेसिए सत्तावीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[5]। तत्थ णं जे से

१. तं चेव (अ, ख, ता, ब, म, स)।
२. तं चेव (अ, ख, ब, म, स); एवं चेव (ता)।
३. सं० पा०—भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ।
४. त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं अट्ठपदेसिए अट्ठपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[1] ॥

५४. आयते णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! आयते णं संठाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सेढिआयते, पतरायते, घणायते ।
तत्थ णं जे से सेढिआयते से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं तिपदेसिए तिपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[2] । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[3] ।
तत्थ णं जे से पतरायते से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पण्णरसपदेसिए पण्णरसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे'[4] । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे'[5] ।
तत्थ णं जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेणं पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे'[6] । तत्थ णं जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे'[7] ॥

५५. परिमंडले णं भंते ! संठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमंडले णं संठाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—घणपरिमंडले य, पतरपरिमंडले य ।
तत्थ णं जे से पतरपरिमंडले से जहण्णेणं वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे[8] ।
तत्थ णं जे से घणपरिमंडले से जहण्णेणं चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६. परिमंडले णं भंते ! संठाणे दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे[9] ? कलिओए ?

---

१. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
४,५. अणंत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
६,७. अणंत तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८. तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।
९. बादरजुम्मे (अ, क, ख, ता म) सर्वत्र ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए[1] ॥

५७. वट्टे णं भंते ! संठाणे दव्वट्टयाए० ? एवं चेव। एवं जाव आयते ॥

५८. परिमंडला णं भंते ! संठाणा दव्वट्टयाए किं कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एवं जाव आयता ॥

५९. परिमंडले णं भंते ! संठाणे पएसट्टयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे। एवं जाव आयते ॥

६०. परिमंडला णं भंते ! संठाणा पदेसट्टयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि। एवं जाव आयता ॥

६१. परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६२. वट्टे णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६३. तंसे णं भंते ! संठाणे—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ॥

६४. चउरंसे णं भंते ! संठाणे० ? जहा वट्टे तहा चउरंसे वि ॥

६५. आयते णं भंते ! पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

६६. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ॥

६७. वट्टा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१. कलिओगे (ता)।

६८. तंसा णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि । चउरंसा जहा वट्टा ।।

६९. आयता णं भंते ! संठाणा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

७०. परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं कडजुम्मसमयठितीए[1] ? तेयोगसमयठितीए ? दावरजुम्मसमयठितीए ? कलियोगसमयठितीए ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयठितीए जाव सिय कलियोगसमयठितीए । एवं जाव आयते ।।

७१. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं कडजुम्मसमयठितीया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयठितीया जाव सिय कलियोगसमयठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयठितीया वि जाव कलियोगसमयठितीया वि । एवं जाव आयता ।।

७२. परिमंडले णं भंते ! संठाणे कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मे । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ठितीए । एवं नीलवण्णपज्जवेहिं[2] । एवं पंचहिं वण्णेहिं, दोहिं गंधेहिं, पंचहिं रसेहिं, अट्ठहिं फासेहिं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं ।।

सेढि-पदं

७३. सेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ ।।

७४. पाईणपडीणायताओ[3] णं भंते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? एवं चेव । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

७५. लोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ।।

७६. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! लोगागाससेढीओ दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? एवं चेव । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

---

१. ०ट्ठितिए (अ, ब, म) ।
२. नीलावण्ण ०(क, ख, ब) ।
३. पादीण० (ख); पातीणपडिणताओ (ता) ।

७७. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?[1]
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ॥

७८. सेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव[2] उड्ढमहायताओ वि । सव्वाओ अणंताओ ॥

७९. लोगागाससेढीओ णं भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणंताओ । एवं पाईणपडीणायताओ वि । दाहिणुत्तरायताओ वि एवं चेव । उड्ढमहायताओ[3] नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ॥

८०. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! पदेसट्ठयाए —पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ॥

८१. पाईणपडीणायताओ णं भंते ! अलोगागाससेढीओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ । एवं दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८२. उड्ढमहायताओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ॥

८३. सेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ ? सादीयाओ अपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ सपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ?
गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव उड्ढमहायताओ ॥

८४. लोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । एवं जाव उड्ढमहायताओ ॥

८५. अलोगागाससेढीओ णं भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ —पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ । पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एवं चेव, नवरं—नो सादीयाओ

---

१. पुच्छा (क, ता, ब, म) ।
२. एवं जाव (क, ब) ।
३. ०ताओ वि (अ, स) ।

ऽपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ। सेसं तं चेव। उड्ढमहाय-ताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभंगो॥

८६. सेढीओ णं भंते! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ। लोगागाससेढीओ एवं चेव। एवं अलोगागास-सेढीओ वि॥

८७. सेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ०? एवं चेव। एवं जाव उड्ढमहायताओ॥

८८. लोगागाससेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा॥
गोयमा! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियो-गाओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि॥

८९. उड्ढमहायताओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ॥

९०. अलोगागाससेढीओ णं भंते! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ। एवं पाईणपडीणाय-ताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। उड्ढमहायताओ वि एवं चेव, नवरं—नो कलियोगाओ। सेसं तं चेव॥

९१. कति णं भंते! सेढीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पदं

९२. परमाणुपोग्गलाणं[1] भंते! किं अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
गोयमा! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति॥

९३. दुपएसियाणं भंते! खंधाणं अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति?
एवं चेव। एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं॥

९४. नेरइयाणं भंते! किं अणुसेढि गती पवत्तति? विसेढि गती पवत्तति? एवं चेव। एवं जाव वेमाणियाणं॥

निरयावास-पदं

९५. इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता?

---

१. ०पुग्गलाणं (अ)।

गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पदं

९६. कतिविहे णं भंते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, तं जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७. से किं तं आयारो ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति, एवं अंगपरूवणा भाणियव्वा जहा नंदीए जाव[4]—

मुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं जाव देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो [5]°अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?°
गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा[6] बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पाबहुगं[7] च ॥

९९. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं जाव अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एयं पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पयं भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं[10] °अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपदेसाणं° सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१. एएसि णं भंते ! जीवाणं, आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं ? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

१०२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० १।२१२-२१५ ।
२. एगा अणु° (अ) ।
३. भ० २०।७५ ।
४. नंदी सू० ८१-१२७ ।
५. सं० पा०—पुच्छा !
६. प० ३ ।
७. °समासप्पा° (ता, ब, म) ।
८. सकायअप्पा° (ब) ।
९. प० ३ ।
१०. सं० पा०—पोग्गलाणं जाव सव्वपज्जवाण । अस्य पूर्तिः प्रज्ञापनायाः तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्कर-णादिदं दृश्यं—'समयाणं दव्वाणं पएसाणं' ति ।
११. प० ३ ।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

१०३. कति णं भंते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव[1] कलियोगे ।।

१०४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एवं जहा अट्ठारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव[2] से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ।।

१०५. नेरइयाणं भंते ! कति जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

१०६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे ? अट्ठो तहेव । एवं जाव वाउकाइयाणं ।।

१०७. वणस्सइकाइयाणं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ।।

१०८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववायं पडुच्च । से तेणट्ठेणं तं चेव । बेंदियाणं जहा नेरइयाणं । एवं जाव वेमाणियाणं । सिद्धाणं जहा वणस्सइकाइयाणं ।।

१०९. कतिविहा णं भंते ! सव्वदव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ।।

११०. धम्मत्थिकाए णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एवं आगासत्थिकाए वि ।।

१११. जीवत्थिकाए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ।।

११२. पोग्गलत्थिकाए णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ।।

११३. धम्मत्थिकाए णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एवं जाव अद्धासमए ।।

---

१. भ० २५।५४ । २. भ० १८।९० ।

११४. एएसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए ०? एएसि णं अप्पाबहुगं जहा[1] बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेसं ॥

११५. धम्मत्थिकाए णं भंते ! किं ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ॥

११६. जइ ओगाढे किं संखेज्जपदेसोगाढे ? असंखेज्जपदेसोगाढे ? अणंतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो संखेज्जपदेसोगाढे, असंखेज्जपदेसोगाढे, नो अणंतपदेसोगाढे ॥

११७. जइ असंखेज्जपदेसोगाढे किं कडजुम्मपदेसोगाढे पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एवं आगासत्थिकाए वि । जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धासमए एवं चेव ॥

११८. इमा णं भंते ! रयणप्पभा पुढवी किं ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्मत्थिकाए । एवं जाव अहेसत्तमा । सोहम्मे एवं चेव । एवं जाव ईसिपब्भारा पुढवी ॥

११९. जीवे णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं नेरइए वि । एवं जाव सिद्धे ॥

१२०. जीवा णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१२१. नेरइया णं भंते ! दव्वट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एवं जाव सिद्धा ॥

१२२. जीवे णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एवं जाव वेमाणिए ॥

१२३. सिद्धे णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१२४. जीवा णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय

---

१. प० ३ ।

कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं नेरइया वि। एवं जाव वेमाणिया ॥

१२५. सिद्धा णं भंते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१२६. जीवे णं भंते! किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे। एवं जाव सिद्धे ॥

१२७. जीवा णं भंते! किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१२८. नेरइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि। एवं 'एगिंदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि'1। सिद्धा एगिंदिया य जहा जीवा ॥

१२९. जीवे णं भंते! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए, नो कलियोगसमयट्ठितीए ॥

१३०. नेरइए णं भते!—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

१३१. जीवा णं भंते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोगसमयट्ठितीया, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया ॥

१३२. नेरइयाणं—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया वि; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

१३३. जीवे णं भंते! कालावण्णपज्जवेहि किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे। सरीरपदेसे

१. एगिंदियवज्जा जाव (क, ता, ब)।

पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति ॥

१३४. जीवा णं भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं —पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा। सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं जाव वेमाणिया। एवं नीलावण्णपज्जवेहिं दंडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेणं। एवं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं' ॥

१३५. जीवे णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए ॥

१३६. जीवा णं भंते ! आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं - पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिया। एवं सुयनाणपज्जवेहिं वि। ओहिनाणपज्जवेहिं वि एवं चेव, नवरं —विगलिंदियाणं नत्थि ओहिनाणं। मणपज्जवनाणं पि एवं चेव, नवरं—जीवाणं मणुस्साण य, सेसाणं नत्थि ॥

१३७. जीवे णं भंते ! केवलनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे - पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। एवं मणुस्से वि। एवं सिद्धे वि ॥

१३८. जीवा णं भंते ! केवलनाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। एवं मणुस्सा वि। एवं सिद्धा वि ॥

१३९. जीवे णं भंते ! मइअण्णाणपज्जवेहिं किं कडजुम्मे० ? जहा आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तहेव दो दंडगा। एवं सुयअण्णाणपज्जवेहि वि। एवं विभंगनाणपज्जवेहि वि। चक्खुदंसण-अचक्खुदंसण-ओहिदंसणपज्जवेहि वि एवं चेव, नवरं —जस्स जं अत्थि तं भाणियव्वं। केवलदंसणपज्जवेहिं जहा केवलनाण-पज्जवेहिं ॥

सरीर-पदं

१४०. कति णं भंते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव कम्मए। एत्थ सरीरपदं निरवसेसं भाणियव्वं जहा' पण्णवणाए ॥

---

१. लुक्खफास० (ता)।
२. ०पज्जवेहि (ता, ब)।
३. प० १२।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा णं भंते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ।।

१४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—'संसारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा'[1] य । तत्थ णं जे ते असंसारसमावण्णगा ते णं सिद्धा । सिद्धा णं दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अणंतरसिद्धा य, परंपरसिद्धा य । तत्थ णं जे ते परंपरसिद्धा ते णं निरेया । तत्थ णं जे ते अणंतरसिद्धा ते णं सेया ।।

१४३. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया । तत्थ णं जे ते संसारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते णं निरेया, तत्थ णं जे ते असेलेसीपडिवण्णगा ते णं सेया ।।

१४४. ते णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा सेया वि,° निरेया वि ।।

१४५. नेरइया णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ।।

१४६. से केणट्ठेणं जाव सव्वेया वि ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य, अविग्गहगतिसमावण्णगा य । तत्थ णं जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते णं सव्वेया, तत्थ णं जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया । से तेणट्ठेणं जाव सव्वेया वि । एवं जाव वेमाणिया ।।

पोग्गल-पदं

१४७. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ?
गोयमा ! नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अणंता । एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा ।।

१४८. एगपदेसोगाढा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा ? असंखेज्जा ? अणंता ? एवं चेव । एवं जाव असंखेज्जपदेसोगाढा ।।

१. असंसारसमावण्णगा य संसार° (ता) । २. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव निरेया ।

१४६. एगसमयट्ठितीया णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा० ? एवं चेव। एवं जाव असंखेज्जसमयट्ठितीया ॥

१५०. एगगुणकालगा णं भंते ! पोग्गला किं संखेज्जा० ? एवं चेव। एवं जाव अणंतगुणकालगा। एवं अवसेसा वि वण्णगंधरसफासा नेयव्वा जाव अणंतगुणलुक्ख त्ति ॥

१५१. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं दुपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो बहुया[1] ?
गोयमा ! दुपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५२. एएसि णं भंते ! दुपदेसियाणं तिपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो बहुया ?
गोयमा ! तिपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो दुपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया। एवं एएणं गमएणं जाव दसपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो नवपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५३. एएसि णं भंते ! दसपदेसियाणं—पुच्छा।
गोयमा ! दसपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५४. एएसि णं भंते ! संखेज्जपदेसियाणं— पुच्छा।
गोयमा ! संखेज्जपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५५. एएसि णं भंते ! असंखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा।
गोयमा ! अणंतपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए बहुया ॥

१५६. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं दुपदेसियाण य खंधाणं पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो बहुया ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहिंतो दुपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। एवं एएणं गमएणं जाव नवपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो दसपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। एवं सव्वत्थ[2] पुच्छियव्वं। दसपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया। संखेज्जपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१५७. एएसि णं भंते ! असंखेज्जपदेसियाणं—पुच्छा।
गोयमा ! अणंतपदेसिएहिंतो खंधेहिंतो असंखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१. अप्पा वा बहुया वा (स)। २. सव्वत्थ वि (म)।

१५८. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] विसेसाहिया[2] ?
गोयमा ! दुपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एवं एएणं गमएणं तिपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। संखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ॥

१५९. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[3] ?
गोयमा ! एगपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। एवं जाव नवपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया। दसपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए बहुया। संखेज्जपदेसोगाढेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए बहुया ॥

१६०. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए० ?
जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एवं ठितीए वि ॥

१६१. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं दुगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए० ?
एएसि णं जहा परमाणुपोग्गलादीणं तहेव वत्तव्वया निरवसेसा[4]। एवं सव्वेसिं वण्ण-गंध-रसाणं ॥

१६२. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो विसेसाहिया[5] ?
गोयमा ! एगगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। एवं जाव नवगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया। दसगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। संखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। असंखेज्जगुणकक्खडेहिंतो पोग्गलेहिंतो अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए बहुया। एवं पदेसट्ठयाए वि[6]। सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा। जहा कक्खडा एवं मउय-गरुय-लहुया वि। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा।

---

१. कयरेहिंतो जाव (ता, स)।
२. विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स)।
४. निरवसेसं (अ, ता)।
५. जाव विसेसाहिया (ता)।
६. × (अ)।

१६३. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं, अणंतपदेसियाण य खंधाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए, 'ते चेव'[2] पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा॥

१६४. एएसि णं भंते ! एगपदेसोगाढाणं, संखेज्जपदेसोगाढाणं, असंखेज्जपदेसोगाढाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपदेसट्ठयाए, संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए, संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा॥

१६५. एएसि णं भंते ! एगसमयट्ठितीयाणं, संखेज्जसमयट्ठितीयाणं, असंखेज्जसमय-ट्ठितीयाण य पोग्गलाणं° ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्वं अप्पाबहुगं॥

१६६. एएसि णं भंते ! एगगुणकालगाणं, संखेज्जगुणकालगाणं, असंखेज्जगुणकालगाणं, अणंतगुणकालगाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एएसिं जहा परमाणुपोग्गलाणं अप्पाबहुगं तहा एएसिं पि अप्पाबहुगं। एवं सेसाण वि वण्ण-गंध-रसाणं॥

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। ३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. तेच्चेव (ता)।

१६७. एएसि णं भंते ! एगगुणकक्खडाणं, संखेज्जगुणकक्खडाणं, असंखेज्जगुणकक्खडाणं, अणंतगुणकक्खडाण य पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए, संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा। पदेसट्ठयाए एवं चेव, नवरं—संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। सेसं तं चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए। संखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा। असंखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा। अणंतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा। एवं मउय-गरुय-लहुयाण वि अप्पाबहुयं। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाणं तहा वण्णाणं तहेव॥

१६८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे ? तेयोए ? दावरजुम्मे ? कलियोगे ?

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे। एवं जाव अणंतपदेसिए खंधे॥

१६९. परमाणुपोग्गला णं भंते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मा पुच्छा।

गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एवं जाव अणंतपदेसिया खंधा॥

१७०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे॥

१७१. दुपदेसिय—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७२. तिपदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे॥

१७३. चउप्पदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। पंचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। छप्पदेसिए जहा दुप्पदेसिए। सत्तपदेसिए जहा

1. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

तिपदेसिए। अट्ठपदेसिए जहा चउप्पदेसिए। नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। दसपदेसिए जहा दुप्पदेसिए ॥

१७४. संखेज्जपदेसिए णं भंते ! पोग्गले—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एवं असंखेज्जपदेसिए वि, अणंतपदेसिए वि ॥

१७५. परमाणुपोग्गला णं भंते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१७६. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा, नो तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७७. तिपदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७८. चउप्पदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। पंचपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। छप्पदेसिया जहा दुप्पदेसिया। सत्तपदेसिया जहा तिपदेसिया। अट्ठपदेसिया जहा चउपदेसिया। नवपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥

१७९. संखेज्जपदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं असंखेज्जपदेसिया वि, अणंतपदेसिया वि ॥

१८०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८१. दुपदेसिए णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८२. तिपदेसिए णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८३. चउप्पदेसिए णं—पुच्छा।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणंतपदेसिए ।।

१८४. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ।।

१८५. दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

१८६. तिप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

१८७. चउप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ।।

१८८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव अणंतपदेसिए ।।

१८९. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कडजुम्म—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया; विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ।।

१९०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालावण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एवं वण्णेसु वि सव्वेसु । गंधेसु वि एवं चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ।।

१९१. अणंतपदेसिए णं भंते ! खंधे कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ।।

१९२. अणंतपदेसिया णं भंते ! खंधा कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ।।

१९३. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सड्ढे ? अणड्ढे ?
गोयमा नो सड्ढे, अणड्ढे ॥

१९४. दुपदेसिए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! सड्ढे, नो अणड्ढे । तिपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले । चउपदेसिए जहा दुपदेसिए । पंचपदेसिए जहा तिपदेसिए । छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए । सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए । अट्ठपदेसिए जहा दुपदेसिए । नवपदेसिए जहा तिपदेसिए । दसपदेसिए जहा दुपदेसिए ॥

१९५. संखेज्जपदेसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सड्ढे, सिय अणड्ढे । एवं असंखेज्जपदेसिए वि । एवं अणंतपदेसिए वि ॥

१९६. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं सड्ढा[1] ? अणड्ढा ?
गोयमा ! सड्ढा वा, अणड्ढा वा । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

१९७. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सेए ? निरेए ?
गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

१९८. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! सेया वि, निरेया वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

१९९. परमाणुपोग्गले णं भंते ! सेए कालओ केवच्चिरं[2] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२००. परमाणुपोग्गले णं भंते ! निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

२०१. परमाणुपोग्गला णं भंते ! सेया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२०२. परमाणुपोग्गला णं भंते ! निरेया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्धं । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

२०३. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

२०४. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

१. साद्धा (ख, ता) । २. केवचिरं (अ, क, ख, म) ।

२०५. दुपदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स सेयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं। परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं ।।

२०६. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । एवं जाव अणंतपदेसियस्स ।।

२०७. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! नत्थि अंतरं ।।

२०८. निरेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! नत्थि अंतरं । एवं जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं ।।

२०९. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असंखेज्जगुणा । एवं जाव असंखेज्जपदेसियाणं खंधाणं ।।

२१०. एएसि णं भंते ! अणंतपदेसियाणं खंधाणं सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया, सेया अणंतगुणा ।।

२११. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपदेसियाणं, असंखेज्जपदेसियाणं, अणंतपदेसियाण य खंधाणं सेयाणं निरेयाण य दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. अणंतपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३. परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. संखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ५. असंखेज्ज-पदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्ज-गुणा[4] ८. असंखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए एवं चेव, नवरं—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । सेसं तं चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए — १. सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए २. ते चेव पदेसट्ठयाए

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. असंखेज्जगुणा (ख, ता) ।

अणंतगुणा ३. अणंतपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ५. परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए अणंतगुणा ६. संखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८. असंखेज्जपदेसिया खंधा सेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ११. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३. असंखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥

२१२. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं देसेए ? सव्वेए ? निरेए ?
गोयमा ! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेए ॥

२१३. दुपदेसिए णं भंते ! खंधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिए निरेए । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

२१४. परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं देसेया ? सव्वेया ? निरेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि ॥

२१५. दुपदेसिया णं भंते ! खंधा —पुच्छा ।
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

२१६. परमाणुपोग्गले णं भंते ! सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२१७. निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

२१८. दुपदेसिए णं भंते ! खंधे देसेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२१९. सव्वेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं ॥

२२०. निरेए कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

२२१. परमाणुपोग्गला णं भंते ! सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्धं ॥

२२२. निरेया कालओ केवच्चिरं होंति ? सव्वद्धं ॥

२२३. दुप्पदेसिया णं भंते ! खंधा देसेया कालओ केवच्चिरं होंति ? सव्वद्धं ॥

२२४. सव्वेया कालओ केवच्चिरं होंति ? सव्वद्धं ॥

२२५. निरेया कालओ केवच्चिरं होंति ? सव्वद्धं । एवं जाव अणंतपदेसिया ।।

२२६. परमाणुपोग्गलस्स णं भंते ! सव्वेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं एवं चेव ।।

२२७. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ-भागं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।।

२२८. दुपदेसियस्स णं भंते ! खंधस्स देसेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं ।।

२२९. सव्वेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ? एवं चेव जहा देसेयस्स ।।

२३०. निरेयस्स केवतियं कालं अंतरं होइ ?
सट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइ-भागं । परट्ठाणंतरं पडुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं । एवं जाव अणंतपदेसियस्स ।।

२३१. परमाणुपोग्गलाणं भंते ! सव्वेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? 'नत्थि अंतरं'[1] ।।

२३२. निरेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ।।

२३३. दुपदेसियाणं भंते ! खंधाण देसेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ।।

२३४. सव्वेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं ।।

२३५. निरेयाणं केवतियं कालं अंतरं होइ ? नत्थि अंतरं । एवं जाव अणंतपदेसि-याणं ।।

२३६. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं सव्वेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असंखेज्जगुणा ।।

२३७. एएसि णं भंते ! दुपदेसियाणं खंधाणं देसेयाणं, सव्वेयाणं, निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खंधा सव्वेया, देसेया असंखेज्जगुणा, निरेया असंखेज्जगुणा । एवं जाव असंखेज्जपदेसियाणं खंधाणं ।।

२३८. एएसि णं भंते ! अणंतपदेसियाणं खंधाणं देसेयाणं, सव्वेयाणं, निरेयाण य

१. नत्थंतरं (अ, क, ख, ता, म) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया, निरेया अणंतगुणा, देसेया अणंतगुणा ।।

२३९. एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं, संखेज्जपदेसियाणं असंखेज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाण य खंधाणं देसेयाणं, सव्वेयाणं, निरेयाणं दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २. अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ३. अणंतपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. असंखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ५. संखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ७. संखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ८. असंखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा ११ असंखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया । एवं पदेसट्ठयाए वि, नवरं—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । सेसं तं चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए —१. सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ३. अणंतपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ४. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ५. अणंतपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ६. ते चेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा ७. असंखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ८. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ९. संखेज्जपदेसिया खंधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १०. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा[3] ११. परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १२. संखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १३. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १४. असंखेज्जपदेसिया खंधा देसेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा १५. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १७. संखेज्जपदेसिया खंधा निरेया दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. संखेज्जगुणा (ता) ।

१८. ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा १६. असंखेज्जपदेसिया निरेया दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा २०. ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥

मज्झपदेसा-पदं

२४०. कति णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४१. कति णं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एवं चेव ॥

२४२. कति णं भंते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एवं चेव ॥

२४३. कति णं भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४४. एए णं भंते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा कतिसु आगासपदेसेसु ओगाहंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कंसि वा दोहिं वा तीहिं वा चउहिं वा पंचहिं वा छहिं वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव णं सत्तसु ॥

२४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

पज्जव-पदं

२४६. कतिविहा णं भंते ! पज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य, अजीवपज्जवा य। पज्जवपदं[1] निरवसेसं भाणियव्वं जहा[2] पण्णवणाए ॥

काल-पदं

२४७. आवलिया णं भंते ! किं संखेज्जा समया ? असंखेज्जा समया ? अणंता समया ?
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, असंखेज्जा समया, नो अणंता समया ॥

२४८. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जा० ? एवं चेव ॥

---

१. जीवपयं (अ)।   २. प० ५।

२४९. थोवे णं भंते ! किं संखेज्जा० ? एवं चेव । एवं लवे वि, मुहुत्ते वि, एवं अहोरत्ते, एवं पक्खे, मासे, उऊ, अयणे, संवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वाससयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे, तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे, 'हूहूयंगे, हूहूए'[1], उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, 'अत्थनिपूरंगे, अत्थनिपूरे'[2], अउयंगे, अउए, नउयंगे, नउए, पउयंगे, पउए, चूलियंगे, चूलिए, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी । एवं उस्सप्पिणी वि ॥

२५०. पोग्गलपरियट्टे णं भंते ! किं संखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, नो असंखेज्जा समया, अणंता समया । एवं तीयद्धा, अणागयद्धा, सव्वद्धा ॥

२५१. आवलियाओ णं भंते ! किं संखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, सिय असंखेज्जा समया, सिय अणंता समया ॥

२५२. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जा समया० ? एवं चेव ॥

२५३. थोवा णं भंते ! किं संखेज्जा समया० ? एवं चेव । एवं जाव ओसप्पिणीओ त्ति ॥

२५४. पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जा समया, नो असंखेज्जा समया, अणंता समया ॥

२५५. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणंताओ आवलियाओ । एवं थोवे वि । एवं जाव सीसपहेलिय त्ति ॥

२५६. पलिओवमे णं भंते ! किं संखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, असंखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणंताओ आवलियाओ । एवं सागरोवमे वि । एवं ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२५७. पोग्गलपरियट्टे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ । एवं जाव सव्वद्धा ॥

२५८. आणापाणू णं भंते ! किं संखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ । एवं जाव सीसपहेलियाओ ॥

२५९. पलिओवमा णं—पुच्छा ।

१. हुहुयंगे हुहुए (अ); हूहुयंगे हूहुए (ता) । २. अत्थिनिकुरंगे अत्थिनिकुरे (अ)

गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असंखेज्जाओ आवलियाओ, सिय अणंताओ आवलियाओ। एवं जाव उस्सप्पिणीओ ॥

२६०. पोग्गलपरियट्टा णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ आवलियाओ, नो असंखेज्जाओ आवलियाओ, अणंताओ आवलियाओ ॥

२६१. थोवे णं भंते ! किं संखेज्जाओ आणापाणूओ ? असंखेज्जाओ० ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एवं आणापाणूओ वि निरवसेसा। एवं एतेणं गमएणं जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥

२६२. सागरोवमे णं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा ?—पुच्छा।
गोयमा ! संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, नो अणंता पलिओवमा। एवं ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६३. पोग्गलपरियट्टे णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणंता पलिओवमा। एवं जाव सव्वद्धा ॥

२६४. सागरोवमा णं भंते ! किं संखेज्जा पलिओवमा—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जा पलिओवमा, सिय असंखेज्जा पलिओवमा, सिय अणंता पलिओवमा। एवं जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६५. पोग्गलपरियट्टा णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जा पलिओवमा, नो असंखेज्जा पलिओवमा, अणंता पलिओवमा ॥

२६६. ओसप्पिणी णं भंते ! किं संखेज्जा सागरोवमा० ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि ॥

२६७. पोग्गलपरियट्टे णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ। एवं जाव सव्वद्धा ॥

२६८. पोग्गलपरियट्टा णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ ॥

२६९. तीतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अणंता पोग्गलपरियट्टा। एवं अणागयद्धा वि। एवं सव्वद्धा वि ॥

२७०. अणागयद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ ? असंखेज्जाओ० ? अणंताओ० ?

गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ। अणागयद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया, तीतद्धा णं अणागयद्धाओ समयूणा ॥

२७१. सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ। सव्वद्धा णं तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा णं सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ॥

२७२. सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ अणागयद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असंखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणंताओ अणागयद्धाओ। सव्वद्धा णं अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा। अणागयद्धा णं सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ॥

निगोद-पदं

२७३. कतिविहा णं भंते ! निओदा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा निओदा पण्णत्ता, तं जहा—निओयगा य, निओयगजीवा य ॥

२७४. निओदा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमनिगोदा[2] य, बायरनिओदा[3] य। एवं निओदा भाणियव्वा जहा[4] जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं ॥

नाम-पदं

२७५. कतिविहे णं भंते ! नामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे नामे पण्णत्ते, तं जहा—ओदइए जाव[5] सण्णिवाइए ॥

२७६. से किं तं ओदइए नामे ?
ओदइए नामे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—उदए य, उदयनिप्फण्णे य—एवं जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इह वि, नवरं—इमं नामनाणत्तं,[6] सेसं तहेव जाव[7] सण्णिवाइए ॥

२७७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. नियोया (अ, ता)।
२. सुहुमा नि० (ता)।
३. बातरनि० (क); बादरा नि० (ता)।
४. जी० ५।२।
५. भ. १७।१६।
६. नाणत्तं (अ, ख, ता, ब, म, स)।
७. भ० १७।१७।

छट्ठो उद्देसो

१. पण्णवण २. वेद ३. रागे, ४. कप्प ५. चरित्त ६. पडिसेवणा ७. नाणे।
८. तित्थे ९. लिंग १०. सरीरे, ११. खेत्ते १२. काल १३. गइ १४. संजम
१५. निकासे ॥१॥
१६,१७. जोगुवओग १८. कसाए, १९. लेसा २०. परिणाम २१. 'बंध
२२. वेदे य'[1]।
२३. कम्मोदीरण २४. उवसंपजहण्ण, २५. सण्णा य २६. आहारे ॥२॥
२७. भव २८. आगरिसे ,२९,३०. कालंतरे य ३१. समुग्घाय ३२. खेत्त
३३ फुसणा य।
३४. भावे ३५. परिमाणे[2] खलु[3], ३६, अप्पाबहुयं नियंठाणं ॥३॥

पण्णवण-पदं

२७८. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! नियंठा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच नियंठा पण्णत्ता, तं जहा—पुलाए, बउसे, कुसीले, नियंठे, सिणाए ॥

२७९. पुलाए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणपुलाए, दंसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नामं पंचमे ॥

२८०. बउसे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, संवुडबउसे, असंवुडबउसे, अहासुहुमबउसे नामं पंचमे ॥

२८१. कुसीले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य ॥

२८२. पडिसेवणाकुसीले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणपडिसेवणाकुसीले, दंसणपडिसेवणाकुसीले, चरित्तपडिसेवणाकुसीले, लिंगपडिसेवणाकुसीले, अहासुहुमपडिसेवणाकुसीले नामं पंचमे ॥

२८३. कसायकुसीले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणकसायकुसीले, दंसणकसायकुसीले, चरित्तकसायकुसीले, लिंगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले नामं पंचमे ॥

१. बंधणे वेदे (ता, ब)।
२. परिणामे (अ, स)।
३. या (ता)।

२८४. नियंठे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—पढमसमयनियंठे, अपढमसमयनियंठे, चरिमसमयनियंठे[1], अचरिमसमयनियंठे, अहासुहुमनियंठे नामं पंचमे ॥

२८५. सिणाए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—अच्छवी, असबले, अकम्मंसे, संसुद्धनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली[2], अपरिस्सावी[3] ॥

वेद-पदं

२८६. पुलाए णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८७. जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुंसगवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा ॥

२८८. बउसे णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८९. जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुंसगवेदए होज्जा ?
गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुंसगवेदए वा होज्जा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

२९०. कसायकुसीले णं भंते ! किं सवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ॥

२९१. जइ अवेदए किं उवसंतवेदए ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥

२९२. जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वि जहा बउसो ॥

१. चरम° (स) ।
२. उत्तराध्ययनेषु त्वर्हन् जिनः केवलीत्ययं पञ्चमो भेद उक्तः । अपरिश्रावीति तु नाधीतमेव, इह चावस्थाभेदेन भेदो न केनचिद् वृत्तिकृतेहान्यत्र च ग्रन्थे व्याख्यातस्तत्र चैवं संभावयामः—शब्दनयापेक्षयैतेषां भेदो भावनीयः शक्रपुरन्दरावदिति (वृ); स्थानाङ्गवृत्तौ भाष्योल्लेखपूर्वकमेतच्चर्चितमस्ति— निष्क्रियत्वात् सकलयोगनिरोधे अपरिश्रावीति पञ्चमः, क्वचित्पुनरर्हन् जिन इति पञ्चमः । अत्र भाष्यगाथा:— अच्छवि अस्सबले या, अकम्म संसुद्ध अरह-जिणा ।
३. अपरिसाती (ता) ।

२६३. नियंठे णं भंते ! किं सवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ।।
२६४. जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! उवसंतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ।।
२६५. सिणाए णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ०? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं —नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ।।

राग-पदं

२६६. पुलाए णं भंते ! किं सरागे होज्जा ? वीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीतरागे होज्जा । एवं जाव कसायकुसीले ।।
२६७. नियंठे णं भंते ! किं सरागे होज्जा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीतरागे होज्जा ।।
२६८. जइ वीतरागे होज्जा किं उवसंतकसायवीतरागे होज्जा ? खीणकसायवीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा । सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायवीतरागे होज्जा, खीणकसायवीतरागे होज्जा ।।

कप्प-पदं

२६९. पुलाए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा । एवं जाव सिणाए ।।
३००. पुलाए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ।।
३०१. बउसे णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।।
३०२. कसायकुसीले णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा ।।
३०३. नियंठे णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा । एवं सिणाए वि ।।

चरित्त-पदं

३०४. पुलाए णं भंते ! किं सामाइयसंजमे होज्जा ? छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा ? परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा ? सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा ? अहक्खायसंजमे होज्जा ?

गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होज्जा, छेग्रोवट्ठावणियसंजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा, नो सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा, नो ग्रहक्खाय-संजमे होज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३०५. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! सामाइयसंजमे वा होज्जा जाव सुहुमसंपरागसंजमे वा होज्जा, नो ग्रहक्खायसंजमे होज्जा ॥

३०६. नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो सामाइयसंजमे होज्जा जाव नो सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा, ग्रहक्खायसंजमे होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

पडिसेवणा-पदं

३०७. पुलाए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा ? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३०८. जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा। 'मूलगुणे पडिसेवमाणे'[1] पंचण्हं ग्रासवाणं ग्रण्णयरं पडिसेवेज्जा, 'उत्तरगुणे पडिसेवमाणे'[2] दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयरं पडिसेवेज्जा ॥

३०९. बउसे णं—पुच्छा।
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३१०. जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा। उत्तरगुणे पडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयरं पडिसेवेज्जा। पडिसेवणा-कुसीले जहा पुलाए ॥

३११. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, ग्रपडिसेवए होज्जा। एवं नियंठे[3] वि। एवं सिणाए वि ॥

नाण-पदं

३१२. पुलाए णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-

१. मूलगुणपडि° (क, म) ;
२. उत्तरगुणपडि° (अ, ख, ब, म)।
३. निग्गथे (स)।

सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१३. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। एवं नियंठे वि॥

३१४. सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा! एगम्मि केवलनाणे होज्जा॥

३१५. पुलाए णं भंते! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततियं आयारवत्थुं, उक्कोसेणं नव पुव्वाइं अहिज्जेज्जा॥

३१६. बउसे—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१७. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एवं नियंठे वि॥

३१८. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा॥

तित्थ-पद

३१९. पुलाए णं भंते! किं तित्थे होज्जा? अतित्थे होज्जा?
गोयमा! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३२०. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा॥

३२१. जइ अतित्थे होज्जा किं तित्थकरे होज्जा? पत्तेयबुद्धे होज्जा?
गोयमा! तित्थकरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा। एवं नियंठे वि। एवं सिणाए वि॥

लिंग-पदं

३२२. पुलाए णं भंते! किं सलिंगे होज्जा? अण्णलिंगे होज्जा? गिहिलिंगे होज्जा?

गोयमा ! दव्वलिंगं पडुच्च सलिंगे वा होज्जा, अण्णलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा । भावलिंगं पडुच्च नियमं सलिंगे होज्जा । एवं जाव सिणाए ।।

सरीर-पदं

३२३. पुलाए णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया[1]-कम्मएसु होज्जा ।।

३२४. बउसे णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३२५. कसायकुसीले —पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पंचसु होमाणे पंचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मएसु होज्जा । नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ ।।

खेत्त-पदं

३२६. पुलाए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा ।।

३२७. बउसे णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा । साहरणं पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा । एवं जाव सिणाए ।।

काल-पदं

३२८. पुलाए णं भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ।।

३२९. जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले[2] होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ?

१. तेय (अ) । २. °दुसमाकाले (अ, ता, म) ।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ॥

३३०. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमसुसमाकाले होज्जा ?

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। संतिभावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा ॥

३३१. जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले[1] होज्जा किं सुसमसुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा ? दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ॥

३३२. बउसे णं—पुच्छा।

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि—नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३३३. जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा—पुच्छा।

गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा। सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। साहरणं पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ॥

३३४. जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा—पुच्छा।

गोयमा ! जम्मणं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए। संति-

१. नुस्स° (अ, क, ख, ता, म)।

भावं पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा। एवं संतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। साहरणं पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा॥

३३५. जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा—पुच्छा।
गोयमा! जम्मण-संतिभावं पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। साहरणं पडुच्च अण्णयरे पलिभागे होज्जा। जहा बउसे। एवं पडिसेवणाकुसीले वि। एवं कसायकुसीले वि। नियंठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवरं—एतेसिं अब्भहियं साहरणं भाणियव्वं। सेसं तं चेव॥

गति-पदं

३३६. पुलाए णं भंते! कालगए समाणे कं[1] गतिं गच्छति?
गोयमा! देवगतिं गच्छति॥

३३७. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा? वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा? जोइसिएसु उववज्जेज्जा? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा?
गोयमा! नो भवणवासीसु, नो वाणमंतरेसु, नो जोइसिएसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा। वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा। बउसे णं एवं चेव, नवरं—उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे। पडिसेवणाकुसीले जहा बउसे। कसायकुसीले जहा पुलाए, नवरं—उक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा। नियंठे णं एवं चेव जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहण्णमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा॥

३३८. सिणाए णं भंते! कालगए समाणे कं गतिं गच्छइ?
गोयमा! सिद्धिगतिं गच्छइ॥

३३९. पुलाए णं भंते! देवेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जेज्जा? सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा? तावत्तीसाए[2] उववज्जेज्जा? लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा? अहमिंदत्ताए[3] उववज्जेज्जा?
गोयमा! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसाए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु[4] उववज्जेज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३४०. कसायकुसीले—पुच्छा।

१. किं (अ, स)।
२. तावत्तीसगत्ताए (ता)।
३. अहमिंदत्ताए वा (स)।
४. भवनपत्यादीनामन्यतरेषु देवेषु (वृ)।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिंदत्ताए वा उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४१. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४२. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ॥

३४३. बउसस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं। एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि ॥

३४४. कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

३४५. नियंठस्स—पुच्छा।
गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

संजमट्ठाण-पदं

३४६. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३४७. नियंठस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। एवं सिणायस्स वि ॥

३४८. एतेसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। पुलागस्स णं संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। बउसस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। कसायकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

३४९. पुलागस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव सिणायस्स ॥

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३५०. पुलाए णं भंते ! पुलागस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए।
जइ हीणे अणंतभागहीणे वा, असंखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जइभागहीणे वा, संखेज्जगुणहीणे वा, असंखेज्जगुणहीणे वा, अणंतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा, असंखेज्जइभागमब्भहिए वा, संखेज्जभागमब्भहिए वा, संखेज्जगुणमब्भहिए वा, असंखेज्जगुणमब्भहिए वा, अणंतगुणमब्भहिए वा[1] ॥

३५१. पुलाए णं भंते ! बउसस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे। एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि। कसायकुसीलेणं समं छट्ठाणवडिए जहेव सट्ठाणे। नियंठस्स जहा बउसस्स। एवं सिणायस्स वि ॥

३५२. बउसे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए--अणंतगुणमब्भहिए ॥

३५३. बउसे णं भंते ! बउसस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे छट्ठाणवडिए ॥

३५४. बउसे णं भंते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे० ? छट्ठाणवडिए। एवं कसायकुसीलस्स वि ॥

३५५. बउसे णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं--पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंत गुणहीणे। एवं सिणायस्स वि। पडिसेवणाकुसीलस्स एवं चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा। कसायकुसीलस्स एस चेव बउसवत्तव्वया, नवरं—पुलाएण वि समं छट्ठाणवडिए ॥

३५६. नियंठे णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।

१. वृत्तौ असद्भावस्थापनया षट्स्थानपतितमेतद् उदाहृतमस्ति—

हीन			अधिक		
१. अनन्तभागहीन	१००००	९९००	१. अनन्तभागअधिक	९९००	१००००
२. असंख्यातभागहीन	१००००	९८००	२. असंख्यातभागअधिक	९८००	१००००
३. संख्यातभागहीन	१००००	९०००	३. संख्यातभागअधिक	९०००	१००००
४. संख्यातगुणहीन	१००००	१०००	४. संख्यातगुणअधिक	१०००	१००००
५. असंख्यातगुणहीन	१००००	२००	५. असंख्यातगुणअधिक	२००	१००००
६. अनन्तगुणहीन	१००००	१००	६. अनन्तगुणअधिक	१००	१००००

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३५७. नियंठे णं भंते ! नियंठस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३५८. [1]•नियंठस्स णं भंते ! सिणायस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥°

३५९. सिणाए णं भंते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं [2]•चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३६०. सिणाए णं भंते ! नियंठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए° ॥

३६१. सिणाए णं भंते ! सिणायस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३६२. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं जहण्णुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा २. पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ३. बउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ४. बउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ५. पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ६. कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ७. नियंठस्स सिणायस्स य एतेसि णं अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

३६३. पुलाए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ॥

३६४. जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। एवं जाव नियंठे ॥

---

१. सं० पा०—एवं सिणायस्स वि। तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए।
२. सं० पा०—एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३६५. सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा ! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा। जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा—सेसं जहा पुलागस्स ॥

उवओग-पदं

३६६. पुलाए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥

कसाय-पदं

३६७. पुलाए णं भंते। सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३६८. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। एवं बउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३६९. कसायकुसीले णं - पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

३७०. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु संजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे संजलणलोभे होज्जा ॥

३७१. नियंठे णं – पुच्छा।
गोयमा ! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा ॥

३७२. जइ अकसायी होज्जा किं उवसंतकसायी होज्जा ? खीणकसायी होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा ॥

लेस्सा-पदं

३७३. पुलाए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्सो होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७४. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए। एवं बउसस्स वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३७५. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७६. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥

३७७. नियंठे णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७८. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एक्काए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

३७९. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा ॥

३८०. जइ सलेस्से होज्जा, से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

३८१. पुलाए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[1] होज्जा ? अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले ॥

३८२. नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

३८३. पुलाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८४. केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा !
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८५. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं सत्त समया। एवं जाव कसायकुसीले ॥

३८६. नियंठे णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३८७. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

३८८. सिणाए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! 'जहण्णेण वि'[2] अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

१. हीयमाण° (म, स)।
२. जहण्णेणं (अ. क. ख. ब, म, स)

३८६. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।।

बंध-पदं

३६०. पुलाए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति ।।

३६१. बउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधति । एवं पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३६२. कसायकुसीले पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, छव्विहबंधए वा । सत्त बंधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति, अट्ठ बंधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधति, छ बंधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छक्कम्मप्पगडीओ बंधति ।।

३६३. नियंठे णं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगं वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ।।

३६४. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहबंधए वा, अबंधए वा । एगं बंधमाणे एगं वेयणिज्जं कम्मं बंधइ ।।

वेदण-पदं

३६५. पुलाए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेइ ?
गोयमा ! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ । एवं जाव कसायकुसीले ।।

३६६. नियंठे णं—पुच्छा ।
गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ ।।

३६७. सिणाए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! वेयणिज्ज-आउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ ।।

उदीरणा-पदं

३६८. पुलाए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ।।

३६९. बउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-वज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति। पडिसेवणाकुसीले एवं चेव ॥

४००. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

४०१. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! पंचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा। पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

४०२. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। दो उदीरेमाणे नामं च गोयं च उदीरेति ॥

उवसंपज्जहण-पदं

४०३. पुलाए णं भंते ! पुलायत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! पुलायत्तं जहति। कसायकुसीलं[1] वा अस्संजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०४. बउसे णं भंते ! बउसत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! बउसत्तं जहति। पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०५. पडिसेवणाकुसीले णं[2]—पुच्छा।
गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति। बउसं वा कसायकुसीलं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

४०६. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! कसायकुसीलत्तं जहति। पुलायं वा बउसं वा पडिसेवणाकुसीलं वा नियंठं वा अस्संजमं वा संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

१. इह भावप्रत्ययलोपात् कषायकुशीलत्वमित्यादि दृश्यम् (वृ)। २. णं भंते ! पडि (अ, क, ख, ब, म, स)।

४०७. णियंठे—पुच्छा ।
गोयमा ! नियंठत्तं जहति । कसायकुसीलं वा सिणायं वा अस्संजमं वा उवसंप-ज्जति ।।

४०८. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिणायत्तं जहति । सिद्धिगतिं उवसंपज्जति ।।

सण्णा-पदं

४०९. पुलाए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! नोसण्णोवउत्ते होज्जा ।।

४१०. बउसे णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सण्णोवउत्ते वा होज्जा, नो सण्णोवउत्ते वा होज्जा । एवं पडिसेवणा-कुसीले वि । एवं कसायकुसीले वि । नियंठे सिणाए य जहा पुलाए ।।

आहार-पदं

४११. पुलाए णं भंते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ?
गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा । एवं जाव नियंठे ।।

४१२. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा ।।

भव-पदं

४१३. पुलाए णं भंते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं, उक्कोसेणं तिण्णि ।।

४१४. बउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं, उक्कोसेणं अट्ठ । एवं पडिसेवणाकुसीले वि । एवं कसायकुसीले वि । नियंठे जहा पुलाए ।।

४१५. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एक्कं ।।

आगरिस-पदं

४१६. पुलागस्स णं भंते ! एगभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि ।।

४१७. बउसस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं सतग्गसो । एवं पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले[1] वि ।।

१. एवं कसाय° (ब) ।

४१८. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं दोण्णि ।।

४१९. सिणायस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! एक्को[1] ।।

४२०. पुलागस्स णं भंते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त ।।

४२१. बउसस्स – पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं सहस्सग्गसो[2] । एवं जाव कसायकुसीलस्स ।।

४२२. नियंठस्स णं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं पंच ।।

४२३. सिणायस्स– पुच्छा ।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ।।

काल-पदं

४२४. पुलाए णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।।

४२५. बउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी । एवं पडिसेवणा-कुसीले वि, कसायकुसीले वि ।।

४२६. नियंठे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

४२७. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।।

४२८. पुलाया णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

४२९. बउसा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वद्धं । एवं जाव कसालकुसीला । नियंठा जहा पुलागा । सिणाया जहा बउसा ।।

अंतर-पदं

४३०. पुलागस्स णं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ?

१. एक्को वि नत्थि (म, स) ।
२. सहस्ससो (अ, क, ख, ता, म)

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं। एवं जाव नियंठस्स।

४३१. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! 'नत्थि अंतरं'[1] ॥

४३२. पुलायाणं भंते ! केवतियं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वासाइं ॥

४३३. बउसाणं भंते ! —पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अंतरं। एवं जाव कसायकुसीलाणं ॥

४३४. नियंठाणं—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। सिणायाणं जहा बउसाणं ॥

समुग्घाय-पदं

४३५. पुलागस्स णं भंते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, कसाय-समुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ॥

४३६. बउसस्स णं भंते ! —पुच्छा।
गोयमा ! पंच समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए जाव तेया-समुग्घाए। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥

४३७. कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए जाव आहार-समुग्घाए[2] ॥

४३८. नियंठस्स णं—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

४३९. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते ॥

खेत्त-पदं

४४०. पुलाए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा ? असंखेज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा ?
गोयमा ! नो संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जे-

१. नत्थंतरं (अ, क, ख, ता, ब, म)।
२. आहारगसमुग्घाए (ब, म)।

भागेसु होज्जा, नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। एवं जाव नियंठे॥

४४१. सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा! नो संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा॥

फुसणा-पदं

४४२. पुलाए णं भंते! लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ? असंखेज्जइभागं फुसइ? एवं जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाए॥

भाव-पदं

४४३. पुलाए णं भंते! कतरम्मि भावे होज्जा?
गोयमा! खओवसमिए भावे होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले॥

४४४. नियंठे—पुच्छा।
गोयमा! ओवसमिए वा[1] खइए वा भावे होज्जा॥

४४५. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा! खइए भावे होज्जा॥

परिमाण-पदं

४४६. पुलाया णं भंते! एगसमएणं केवतिया होज्जा?
गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं॥

४४७. बउसा णं भंते! एगसमएणं—पुच्छा।
गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसयपुहत्तं। एवं पडिसेवणा-कुसीले वि॥

४४८. कसायकुसीलाणं—पुच्छा।
गोयमा! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिसहस्सपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिसहस्सपुहत्तं॥

४४९. नियंठाणं—पुच्छा।

---

१. भावे वा (ता)।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं बावट्ठं सतं—अट्ठसयं खवगाणं, चउप्पन्नं उवसामगाणं[1] । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं ॥

४५०. सिणायाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं अट्ठसतं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्तं ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

४५१. एएसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाण कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नियंठा, पुलागा संखेज्जगुणा, सिणाया संखेज्जगुणा, बउसा संखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला संखेज्जगुणा, कसायकुसीला संखेज्ज-गुणा ॥

४५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

पण्णवण-पदं

४५३. कति णं भंते ! संजया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच संजया पण्णत्ता, तं जहा—सामाइयसंजए, छेदोवट्ठावणियसंजए[4], परिहारविसुद्धियसंजए[5], सुहुमसंपरायसंजए, अहक्खायसंजए ॥

४५४. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ॥

४५५. छेदोवट्ठावणियसंजए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सातियारे य, निरतियारे य ॥

४५६. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।

१. उवसमगाणं (स) ।
२. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. °ट्ठाणिय° (ता) ।
५. °विसुद्धिसंजए (ख) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विसमाणए य, निव्विट्ठकाइए य ॥

४५७. सुहुमसंपरायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—संकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए[1] य ॥

४५८. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—छउमत्थे य, केवली य ॥

संगहणी-गाहा

सामाइयम्मि उ कए, चाउज्जामं अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेणं फासयंतो, सामाइयसंजओ स खलु ॥१॥
छेत्तूण उ परियागं, पोराणं जो ठवेइ अप्पाणं ।
धम्मम्मि पंचजामे, छेदोवट्ठावणो स खलु ॥२॥
परिहरइ जो विसुद्धं, तु पंचयामं अणुत्तरं धम्मं ।
तिविहेणं फासयंतो, परिहारियसंजओ स खलु ॥३॥
लोभाणू[2] वेदंतो[3], जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
सो सुहुमसंपराओ, अहखाया[4] ऊणओ किंचि ॥४॥
उवसंते खीणम्मि व, जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि ।
छउमत्थो व जिणो वा, अहखाओ संजओ स खलु ॥५॥

वेद-पदं

४५९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा । जइ सवेदए—एवं जहा[5] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । एवं छेदोवट्ठावणियसंजए वि । परिहारविसुद्धिय-संजओ जहा[6] पुलाओ । सुहुमसंपरायसंजओ अहक्खायसंजओ य जहा[7] नियंठो ॥

राग-पदं

४६०. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सरागे होज्जा ? वीयरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा । एवं जाव सुहुमसंपरायसंजए । अहक्खायसंजए । जहा[8] नियंठे ॥

१. विसुद्धमाणए (ता) ।
२. लोभमणुं (अ, क); लोभाणु (ख, ता, म, स); लोभाणुं (ब) ।
३. वेदयतो (अ); वेयंतो (ता) ।
४. अहक्खाया (अ, क, ख, ब, म, स) ।
५. भ० २५।२६१, २६२ ।
६. भ० २५।२८६,२८७ ।
७. भ० २५।२६३,२६४ ।
८. भ० २५।२६७,२६८ ।

कप्प-पदं

४६१. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा ॥

४६२. छेदोवट्ठावणियसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अट्ठियकप्पे होज्जा । एवं परिहारविसुद्धियसंजए वि । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

४६३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, जहा[1] कसायकुसीले तहेव निरवसेसं । छेदोवट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा[2] बउसो । सेसा जहा[3] नियंठे ॥

नियंठ-पदं

४६४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पुलाए होज्जा ? बउसे जाव सिणाए होज्जा ?
गोयमा ! पुलाए वा होज्जा, बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६५. परिहारविसुद्धियसंजए णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाए, नो बउसे, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा; कसायकुसीले होज्जा, नो नियंठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा । एवं सुहुमसंपराए वि ॥

४६६. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पुलाए होज्जा जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियंठे वा होज्जा, सिणाए वा होज्जा ॥

पडिसेवणा-पदं

४६७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं पडिसेवए होज्जा? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा । जइ पडिसेवए होज्जा —किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, सेसं जहा[4] पुलागस्स । जहा सामाइयसंजए एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६८. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा । एवं जाव अहक्खायसंजए ॥

१. भ० २५।३०२ ।
२. भ० २५।३०१ ।
३. भ० २५।३०३ ।
४. भ० २५।३०८ ।

नाण-पदं

४६९. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा । एवं जहा[1] कसायकुसीलस्स तहेव चत्तारि नाणाइं भयणाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खायसंजयस्स पंच नाणाइं भयणाए जहा[2] नाणुद्देसए ॥

४७०. सामाइयसंजए णं भंते ! केवतियं सुयं अहिज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, जहा[3] कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७१. परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं नवमस्स पुव्वस्स ततियं आयारवत्थुं, उक्कोसेणं असंपुण्णाइं दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा । सुहुमसंपरायसंजए जहा सामाइयसंजए ॥

४७२. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा, सुयवतिरित्ते वा होज्जा ॥

तित्थ-पदं

४७३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?
गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा, जहा[4] कसायकुसीले । छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा[5] पुलाए । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

लिंग-पदं

४७४. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलिंगे होज्जा ? अण्णलिंगे होज्जा ? गिहिलिंगे होज्जा ? जहा[6] पुलाए । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४७५. परिहारविसुद्धियसंजए णं भंते ! किं—पुच्छा ।
गोयमा ! दव्वलिंगं पि भावलिंगं पि पडुच्च सलिंगे होज्जा, नो अण्णलिंगे होज्जा, नो गिहिलिंगे होज्जा । सेसा जहा सामाइयसंजए ॥

सरीर-पदं

४७६. सामाइयसंजए णं भंते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पंचसु वा जहा[7] कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । सेसा जहा[8] पुलाए ॥

---

१. भ० २५।३१३ ।
२. भ० ८।१०५ ।
३. भ० २५।३१७ ।
४. भ० २५।३२१ ।
५. भ० २५।३१९ ।
६. भ० २५।३२२ ।
७. भ० २५।३२५ ।
८. भ० २५।३२३ ।

खेत्त-पदं

४७७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-संतिभावं पडुच्च जहा[1] बउसे । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए य जहा[2] पुलाए । सेसा जहा सामाइयसंजए ।।

काल-पदं

४७८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले जहा[3] बउसे । एवं छेदोवट्ठावणिए वि, नवरं—जम्मण-संतिभावं पडुच्च चउसु वि पलिभागेसु नत्थि, साहरणं पडुच्च अण्णयरे पडिभागे होज्जा, सेसं तं चेव ।।

४७९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा । जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा—जहा[4] पुलाओ । उस्सप्पिणिकाले वि जहा[5] पुलाओ । सुहुमसंपराइओ जहा[6] नियंठो । एवं अहक्खाओ वि ।।

गति-पदं

४८०. सामाइयसंजए णं भंते ! कालगए समाणे कं[7] गतिं गच्छति ?
गोयमा ! देवगतिं गच्छति ।।

४८१. देवगतिं गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमंतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासीसु उववज्जेज्जा—जहा[8] कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा[9] पुलाए । सुहुमसंपराए जहा[10] नियंठे ।।

४८२. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं अहक्खायसंजए वि जाव अजहण्णमणुक्कोसेणं अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा; अत्थेगतिए सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

४८३. सामाइयसंजए णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे किं इंदत्ताए उववज्जति—पुच्छा ।

१. भ० २५।३२७ ।
२. भ० २५।३२६ ।
३. भ० २५।३३२-३३५ ।
४. भ० २५।३२९ ।
५. भ० २५।३३० ।
६. भ० २५।३३५ ।
७. किं (अ, स) ।
८. भ० २५।३३७ ।
९. भ० २५।३३६,३३७
१०. भ० २५।३३७ ।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा[1] कसायकुसीले । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहा[2] पुलाए । सेसा जहा[3] नियंठे ॥

४८४. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४८५. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा[4] नियंठस्स ॥

संजमट्ठाण-पदं

४८६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता । एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स ॥

४८७. सुहुमसंपरायसंजयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! असंखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ॥

४८८. अहक्खायसंजयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे पण्णत्ते ॥

४८९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराग-अहक्खायसंजयाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहिंतो[5] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे अहक्खायसंजमस्स एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे, सुहुमसंपरागसंजयस्स अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणियसंजयस्स य[6] एएसि णं संजमट्ठाणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

४९०. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता । एवं जाव अहक्खायसंजयस्स ॥

४९१. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए ॥

---

१. भ० २५।३४० ।
२. भ० २५।३३९ ।
३. भ० २५।३४१ ।
४. भ० २५।३४५ ।
५. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
६. × (म, क, ख, स) ।

४९२. सामाइयसंजए णं भंते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहिं—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय हीणे–छट्ठाणवडिए । एवं परिहारविसुद्धियस्स वि ॥

४९३. सामाइयसंजए णं भंते ! सुहुमसंपरागसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहिं पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणंतगुणहीणे । एवं अहक्खाय-संजयस्स वि । एवं छेदोवट्ठावणिए वि हेट्ठिल्लेसु तिसु वि समं छट्ठाणवडिए, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे । जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि ॥

४९४. सुहुमसंपरागसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स परट्ठाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए । एवं छेओवट्ठा-वणिय परिहारविसुद्धिएसु वि समं । सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भ-हिए । जइ हीणे अणंतगुणहीणे, अह अब्भहिए अणंतगुणमब्भहिए ॥

४९५. सुहुमसंपरायसंजयस्स अहक्खायसंजयस्स परट्ठाण–पुच्छा ।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए; अणंतगुणहीणे । अहक्खाए हेट्ठिल्लाणं चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणंतगुणमब्भहिए । सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

४९६. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसंजयाणं जहण्णुक्कोसगाणं चरित्तपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो[1] अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सामाइयसंजयस्स छेओवट्ठावणियसंजयस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, सामाइयसंजयस्स छेओवट्ठावणियसंजयस्स य एएसि णं उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणंतगुणा, सुहुमसंपरायसंजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा, अहक्खायसंजयस्स अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ॥

जोग-पदं

४९७. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी जहा[2] पुलाए । एवं जाव सुहुमसंपरायसंजए । अहक्खाए जहा[3] सिणाए ॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. भ० २५।३६३,३६४ ।
३. भ० २५।३६६ ।

उवओग-पदं

४९८. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागरोवउत्ते जहा[1] पुलाए। एवं जाव अहक्खाए, नवरं—सुहुमसंपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा ॥

कसाय-पदं

४९९. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा जहा[2] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[3] पुलाए ॥

५००. सुहुमसंपरागसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

५०१. जइ सकसायी होज्जा, से णं भंते ! कतिसु कसायेसु होज्जा ?
गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा। अहक्खायसंजए जहा[4] नियंठे ॥

लेस्सा-पदं

५०२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्से होज्जा जहा[5] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[6] पुलाए। सुहुमसंपराए जहा[7] नियंठे। अहक्खाए जहा[8] सिणाए, नवरं—जइ सलेस्से होज्जा, एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

५०३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[9] ? अवट्ठियपरिणामे ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे जहा[10] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५०४. सुहुमसंपराए—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा। अहक्खाए जहा[11] नियंठे ॥

५०५. सामाइयसंजए णं भंते ! केवइयं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं जहा[12] पुलाए। एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

१. भ० २५।३६६।
२. भ० २५।३७०।
३. भ० २५।३६७,३६८।
४. भ० २५।३७१,३७२।
५. भ० २५।३७५,३७६।
६. भ० २५।३७३,३७४।
७. भ० २५।३७७,३७८।
८. भ० २५।३७९,३८०।
९. हीय० (स)।
१०. भ० २५।३८१।
११. भ० २५।३८२;
१२. भ० २५।३८३।

५०६. सुहुमसंपरागसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥

५०७. केवतियं कालं हायमाणपरिणामे होज्जा ? एवं चेव ॥

५०८. अहक्खायसंजए णं भंते ! केवतियं कालं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

५०९. केवतियं कालं अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

५१०. सामाइयसंजए णं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा, एवं जहा[1] बउसे । एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५११. सुहुमसंपरागसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बंधति । अहक्खायसंजए जहा[2] सिणाए ॥

वेदण-पदं

५१२. सामाइयसंजए णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! नियमं अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति । एवं जाव सुहुमसंपराए ॥

५१३. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवेदए वा, चउव्विहवेदए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणिज्ज-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

उदीरणा-पदं

५१४. सामाइयसंजए णं भंते ! कति[3] कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा जहा[4] बउसो । एवं जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५१५. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! छव्विहउदीरए वा, पंचविहउदीरए वा । छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पंच उदीरमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पंच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ॥

५१६. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।

१. भ० २५।३६१ ।
२. भ० २५।३६४ ।
३. केवइ (ता) ।
४. भ० २५।३६६ ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा । पंच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ । सेसं जहा[1] नियंठस्स ॥

उवसंपज्जहण-पदं

५१७. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयत्तं जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! सामाइयसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजयं[2] वा, सुहुमसंपराग-संजयं वा, असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१८. छेओवट्ठावणिए—पुच्छा ।
गोयमा ! छेओवट्ठावणियसंजयत्तं जहति । सामाइयसंजयं वा, परिहारविसुद्धिय-संजयं वा, सुहुमसंपरागसंजयं वा असंजमं वा, संजमासंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५१९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिहारविसुद्धियसंजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसंजयं वा असंजमं वा उवसंपज्जति ॥

५२०. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! सुहुमसंपरायसंजयत्तं जहति । सामाइयसंजयं वा, छेओवट्ठावणियसंजयं वा, अहक्खायसंजयं वा, असंजमं वा उवसंपज्जइ ॥

५२१. अहक्खायसंजए—पुच्छा ।
गोयमा ! अहक्खायसंजयत्तं जहति । सुहुमसंपरागसंजयं वा, असंजमं वा, सिद्धिगतिं वा उवसंपज्जइ ॥

सण्णा-पदं

५२२. सामाइयसंजए णं भंते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नो सण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा[3] बउसो । एवं जाव परिहारविसुद्धिए । सुहुमसंपराए अहक्खाए य जहा[4] पुलाए ॥

आहार-पदं

५२३. सामाइयसंजए णं भंते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ? जहा[5] पुलाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खायसंजए जहा[6] सिणाए ॥

१. भ० २५।४०१ ।
२. उपसंपत्तिप्रसङ्गे सर्वत्रापि भावप्रत्ययलोपो दृश्यते ।
३. भ०।४१० ।
४. भ० २५।४०६ ।
५. भ० २५।४११ ।
६. भ० २५।४१२ ।

भव-पदं

५२४. सामाइयसंजए णं भंते ! कति भवग्गहणाइं होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं, उक्कोसेणं अट्ठ । एवं छेदोवट्ठावणिए वि ।।

५२५. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं, उक्कोसेणं तिण्णि । एवं जाव अहक्खाए ।।

आगरिस-पदं

५२६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं जहा[1] बउसस्स ।।

५२७. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को[2], उक्कोसेणं वीसपुहत्तं ।।

५२८. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं तिण्णि ।।

५२९. सुहुमसंपरायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं चत्तारि ।।

५३०. अहक्खायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को, उक्कोसेणं दोण्णि ।।

५३१. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहा[3] बउसे ।।

५३२. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं उवरिं नवण्हं सयाणं अंतो सहस्सस्स । परिहारविसुद्धियस्स जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं सत्त । सुहुमसंपरागस्स जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं नव । अहक्खायस्स जहण्णेणं दोण्णि, उक्कोसेणं पंच ।।

काल-पदं

५३३. सामाइयसंजए णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणएहिं नवहिं वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । एवं छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणएहिं एकूणतीसाए वासेहिं ऊणिया पुव्वकोडी । सुहुमसंपराए जहा[4] नियंठे । अहक्खाए जहा सामाइयसंजए ।।

५३४. सामाइयसंजया णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्धं ।।

१. भ० २५।४१७ ।
२. एक्कं (अ, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४२१ ।
४. भ० २५।४२६ ।

५३५. छेदोवट्ठावणियसंजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं, उक्कोसेणं पण्णासं सागरोवम-कोडिसयसहस्साइं ॥

५३६. परिहारविसुद्धीयसंजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं देसूणाइं दो वाससयाइं, उक्कोसेणं देसूणाओ दो पुव्व-कोडीओ ॥

५३७. सुहुमसंपरागसंजया—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अहक्खायसंजया जहा सामाइयसंजया ॥

अंतर-पदं

५३८. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं जहा[1] पुलागस्स । एवं जाव अहक्खायसंजयस्स ॥

५३९. सामाइयसंजयाणं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! 'नत्थि अंतरं'[2] ॥

५४०. छेदोवट्ठावणियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं तेवट्ठिं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ ॥

५४१. परिहारविसुद्धियाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं चउरासीइं वाससहस्साइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवम-कोडाकोडीओ । सुहुमसंपरायाणं जहा[3] नियंठाणं । अहक्खायाणं जहा सामाइय-संजयाणं ॥

समुग्घाय-पदं

५४२. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता जहा[4] कसायकुसीलस्स । एवं छेदोवट्ठावणियस्स वि । परिहारविसुद्धियस्स जहा[5] पुलागस्स । सुहुमसंपरागस्स जहा[6] नियंठस्स । अहक्खायस्स जहा[7] सिणायस्स ॥

खेत्त-पदं

५४३. सामाइयसंजए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे—पुच्छा ।

१. भ० २५।४३० ।
२. नत्थंतरं (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० २५।४३४ ।
४. भ० २५।४३७ ।
५. भ० २५।४३५ ।
६. भ० २५।४३८ ।
७. भ० २५।४३९ ।

गोयमा ! नो संखेज्जइभागे जहा[1] पुलाए । एवं जाव सुहुमसंपराए । अहक्खाय-संजए जहा[2] सिणाए ॥

फुसणा-पदं

५४४. सामाइयसंजए णं भंते ! लोगस्स किं संखेज्जइभागं फुसइ० ? जहेव होज्जा तहेव फुसइ ॥

भाव-पदं

५४५. सामाइयसंजए णं भंते ! कयरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा । एवं जाव सुहुमसंपराए ॥

५४६. अहक्खायसंजए पुच्छा ।
गोयमा ! उवसमिए वा खइए[3] वा भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

५४७. सामाइयसंजया णं भंते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए य पडुच्च जहा[4] कसायकुसीला तहेव निरवसेसं ॥

५४८. छेदोवट्ठावणिया—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सयपुहत्तं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं कोडिसयपुहत्तं, उक्कोसेण वि कोडि-सयपुहत्तं । परिहारविसुद्धिया जहा[5] पुलागा । सुहुमसंपराया जहा[6] नियंठा ॥

५४९. अहक्खायसंजया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं बावट्ठं सयं—अट्ठुत्तरसयं[7] खवगाणं, चउप्पण्णं उवसामगाणं । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेणं कोडिपुहत्तं, उक्को-सेण वि कोडिपुहत्तं ॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

५५०. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराय-अहक्खायसंजयाणं कयरे कयरेहिंतो[8] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?• विसेसाहिया वा ?

१. भ० २५।४४० ।
२. भ० २५।४४१ ।
३. खतिए (अ,क,ख,ब,म,स); खविए (ता) ।
४. भ० २५।४४८ ।
५. भ० २५।४४६ ।
६. भ० २५।४४९ ।
७. अट्ठसयं (क, ता, ब) ।
८. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसंपरायसंजया, परिहारविसुद्धियसंजया संखेज्जगुणा, अहक्खायसंजया संखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसंजया संखेज्जगुणा, सामाइय-संजया संखेज्जगुणा ।।

संगहणी-गाहा

पडिसेवण दोसालोयणा य, आलोयणारिहे चेव ।
तत्तो सामायारी, पायच्छित्ते तवे चेव ।। १ ।।

पडिसेवणा-पदं

५५१. कइविहा णं भंते ! पडिसेवणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, तं जहा—

दप्पप्पमादणाभोगे, आउरे आवतीति य ।
संकिण्णे[1] सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमंसा ।। १ ।।

आलोयणा-पदं

५५२. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, तं जहा -

आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, जं दिट्ठं बादरं व सुहुमं वा ।
छन्नं सद्दाउलयं, बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ।। १ ।।

५५३. दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोसं आलोइत्तए, तं जहा— जातिसंपण्णे, कुलसंपण्णे, विणयसंपण्णे, नाणसंपण्णे, दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे, खंते, दंते, अमायी, अपच्छाणुतावी ।।

५५४. अट्ठहिं ठाणेहिं संपन्ने अणगारे अरिहति आलोयणं पडिच्छित्तए, तं जहा— आयारवं, आहारवं[2], ववहारवं, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, निज्जवए, अवायदंसी ।।

सामायारी-पदं

५५५. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, तं जहा—

इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ।
उवसंपया य काले, सामायारी भवे दसहा ।। १ ।।

पायच्छित्त-पदं

५५६. दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउस्सग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ।।

१. संकिते (अ, क, ख, ता, ब, म, वृपा); २. आधारवं (अ, क, ब); अवधारवं (म) । निशीथपाठे तु 'तितिण' इत्यभिधीयते (वृ) ।

तव-पदं

५५७. दुविहे तवे पण्णत्ते, तं जहा—बाहिरए य, अब्भिंतरए य ।।

५५८. से किं तं बाहिरए तवे ? बाहिरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अणसणं, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, पडिसंलीणता ।।

५५९. से किं तं अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ।।

५६०. से किं तं इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते, अट्ठमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोद्दसमे भत्ते, अद्धमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते । सेत्तं इत्तरिए ।।

५६१. से किं तं आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाओवगमणे[1] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।।

५६२. से किं तं पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं अपडिकम्मे । सेत्तं पाओवगमणे ।।

५६३. से किं तं भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य । नियमं सपडिकम्मे । सेत्तं भत्तपच्चक्खाणे । सेत्तं आवकहिए । सेत्तं अणसणे ।।

५६४. से किं तं ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वोमोदरिया य, भावोमोदरिया य ।।

५६५. से किं तं दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्तपाणदव्वोमोदरिया य ।।

५६६. से किं तं उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए,[2] चियत्तोवगरणसातिज्जणया । सेत्तं उवगरणदव्वोमोदरिया ।।

५६७. से किं तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अट्ठ कुक्कुडिअंडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस [3]कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणमेत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेणं ऊणगं

१. पादोव° (ख) ।
२. पादे (अ, क, ब) ।
३. सं० पा०—जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो ।

आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे° नो पकामरसभोजीति वत्तव्वं सिया। सेत्तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया। सेत्तं दव्वोमोदरिया॥

५६८. से किं तं भावोमोदरिया? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—अप्पकोहे[1], °अप्पमाणे, अप्पमाए,° अप्पलोभे, अप्पसद्दे, अप्पझंझे, अप्पतुमंतुमे। सेत्तं भावोमोदरिया। सेत्तं ओमोदरिया॥

५६९. से किं तं भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वाभिग्गहचरए,[2] °खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए, उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, उक्खित्तणिक्खित्तचरए, णिक्खित्तउक्खित्तचरए, वट्टिज्जमाणचरए, साहरिज्जमाणचरए, उवणीयचरए, अवणीयचरए, उवणीयअवणीयचरए, अवणीयउवणीयचरए, संसट्ठचरए, असंसट्ठचरए, तज्जायसंसट्ठचरए, अण्णयचरए, मोणचरए°, सुद्धेसणिए, संखादत्तिए। सेत्तं भिक्खायरिया॥

५७०. से किं तं रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—निव्विगितिए, पणीयरसविवज्जए, [3]°आयंबिलए, आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे°, लूहाहारे। सेत्तं रसपरिच्चाए॥

५७१. से किं तं कायकिलेसे? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—ठाणादीए, उक्कुडुयासणिए, [4]°पडिमट्ठाई, वीरासणिए, नेसज्जिए, आयावए, अवाउडए, अपंडुयए, अणिट्ठुहए°, सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के। सेत्तं कायकिलेसे॥

५७२. से किं तं पडिसंलीणया? पडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—इंदियपडिसंलीणया, कसायपडिसंलीणया, जोगपडिसंलीणया, विवित्तसयणासणसेवणया॥

५७३. से किं तं इंदियपडिसंलीणया? इंदियपडिसंलीणया पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, सोइंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। चक्खिदियविसयप्पयारणिरोहो वा एवं जाव फासिंदियविसयप्पयारणिरोहो वा, फासिंदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। सेत्तं इंदियपडिसंलीणया॥

५७४. से किं तं कसायपडिसंलीणया? कसायपडिसंलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं। एवं

१. सं०पा०—अप्पकोहे जाव अप्पलोभे।
२. सं०पा०—जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए।
३. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव लूहाहारे।
४. सं० पा०—जहा ओववाइए जाव सव्वगाय°।

जाव लोभोदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरणं। सेत्तं कसायपडिसंलीणया ॥

५७५. से किं तं जोगपडिसंलीणया ? 'जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— मणजोगपडिसंलीणया, वइजोगपडिसंलीणया, कायजोगपडिसंलीणया ॥

५७६. से किं तं मणजोगपडिसंलीणया ? मणजोगपडिसंलीणया अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरणं वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरणं। सेत्तं मणजोगपडिसंलीणया ॥

५७७. से किं तं वइजोगपडिसंलीणया ? वइजोगपडिसंलीणया अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरणं वा, वईए वा एगत्तीभावकरणं। सेत्तं वइजोगपडिसंलीणया'[1] ॥

५७८. से किं तं कायजोगपडिसंलीणया ? कायजोगपडिसंलीणया जण्णं सुसमाहिय-पसंत-साहरियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए अल्लीण-पल्लीणे चिट्ठति। सेत्तं कायपडिसंलीणया। सेत्तं जोगपडिसंलीणया ॥

५७९. से किं तं विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया जण्णं आरामेसु वा उज्जाणेसु वा [2]°देवकुलेसु वा सभासु वा पवासु वा इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वा वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग°-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। सेत्तं विवित्तसयणासणसेवणया। सेत्तं पडिसंलीणया। सेत्तं बाहिरए तवे ॥

५८०. से किं तं अब्भिंतरए तवे ? अब्भिंतरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं, विउसग्गो ॥

५८१. से किं तं पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे जाव[3] पारंचियारिहे। सेत्तं पायच्छित्ते ॥

५८२. से किं तं विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— नाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

१. 'जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता' इति पाठे सूचिता योगप्रतिसंलीनतायास्त्रयः प्रकाराः प्रस्तुतप्रकरणे निर्दिष्टा न सन्ति तथा 'से किं तं कायपडिसंलीणया' इति पाठेनापि 'से किं तं मणपडिसंलीणया, से किं तं वइपडिसंलीणया' इति सूत्रयोरपि संकेतो लभ्यते। प्रतीयते लिपिकरणे संक्षेपो जातः। तस्य पूर्तिरोपपातिक (सू० ३७)—वर्ति-पाठानुसारेण कृता। प्रस्तुतपाठस्य संक्षेपः एवमस्ति—जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरणं वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरणं। अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरणं वा, वईए वा एगत्तीभावकरणं।

२. सं० पा०— जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा।

३. भ० २५।५५६।

५८३. से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहिय-नाणविणए,[1] °सुयनाणविणए ओहिनाणविणए, मणपज्जवनाणविणए°, केवलनाणविणए। सेत्तं नाणविणए॥

५८४. से किं तं दंसणविणए ? दंसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुस्सूसणाविणए य, अणच्चासादणाविणए य॥

५८५. से किं तं सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा—सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा [2]°किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अंजलिपग्गहे इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एंतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स° पडिसंसाहणया। सेत्तं सुस्सूसणाविणए॥

५८६. से किं तं अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयालीसइविहे पण्णत्ते, तं जहा—अरहंताणं अणच्चासादणया[3], अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासादणया, आयरियाणं अणच्चासादणया, उवज्झायाणं अणच्चासादणया, थेराणं अणच्चासादणया, कुलस्स अणच्चासादणया, गणस्स अणच्चासादणया, संघस्स अणच्चासादणया, किरियाए अणच्चासादणया, संभोगस्स अणच्चासादणया, आभिणिबोहियनाणस्स अणच्चासादणया, जाव केवलनाणस्स अणच्चासादणया, एएसिं चेव भत्ति-बहुमाणेणं, एएसिं चेव वण्णसंजलणया। सेत्तं अणच्चासादणयाविणए। सेत्तं दंसणविणए॥

५८७. से किं तं चरित्तविणए ? चरित्तविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सामाइय-चरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए। सेत्तं चरित्तविणए॥

५८८. से किं तं मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थमणविणए य, अप्पसत्थमणविणए य॥

५८९. से किं तं पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए[4] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे[5], अणण्हवकरे, अच्छविकरे, अभूयाभिसंकणे[6]। सेत्तं पसत्थमणविणए॥

१. सं० पा०—आभिणिबोहियनाणविणए जाव केवल°।

२. सं० पा०—जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिसंसाहणया।

३. अणच्चासायणया (अ, ख); अणच्चासात-णया (क, ता)।

४. पसत्थमणविणए—जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकक्कसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्दवणकरे अभूओवघाइए तहप्पगारं मणो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

५. निरुवक्कोसे (अ, क)।

६. °संकमणे (क, ता)।

५६०. से किं तं अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए[1] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे[2], अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसंकणे। सेत्तं अप्पसत्थमणविणए। सेत्तं मणविणए ॥

५६१. से किं तं वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थवइविणए य, अप्पसत्थवइविणए य ॥

५६२. से किं तं पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए[3] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसंकणे। सेत्तं पसत्थवइविणए ॥

५६३. से किं तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसंकणे। सेत्तं अप्पसत्थवइविणए। सेत्तं वइविणए ॥

५६४. से किं तं कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पसत्थकायविणए य, अप्पसत्थकायविणए य ॥

५६५. से किं तं पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— आउत्तं गमणं, आउत्तं ठाणं, आउत्तं निसीयणं, आउत्तं तुयट्टणं, आउत्तं उल्लंघणं, आउत्तं पल्लंघणं, आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। सेत्तं पसत्थकायविणए ॥

५६६. से किं तं अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणाउत्तं गमणं जाव अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया। सेत्तं अप्पसत्थकायविणए। सेत्तं कायविणए ॥

५६७. से किं तं लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा— अब्भासवत्तियं[4], परच्छंदाणुवत्तियं, कज्जहेउं[5], कयपडिकइया[6], अत्तगवेसणया, देसकालण्णया[7], सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। सेत्तं लोगोवयारविणए। सेत्तं विणए ॥

५६८. से किं तं वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, संघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे। सेत्तं वेयावच्चे ॥

१. अपसत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

२. सउवक्कोसे (क, ख)।

३. पूर्ववत् अत्रापि औपपातिकस्य पाठभेदो दृश्यः।

४. ०पत्तियं (ता)।

५. ज्ञानादिनिमित्तं भक्तादिदानमिति गम्यम् (वृ)।

६. कइपडिकइयाए (ता)।

७. देसकालण्णुया (ओ० सू० ४०)।

५९९. से किं तं सज्झाए ? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा । से त्तं सज्झाए ।।

६००. से किं तं झाणे ? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे ।।

६०१. अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा अमणुण्णसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोग-सतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुण्णसंपयोगसंपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, आयंकसंपयोगसंपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिझुसियकामभोगसंपयोगसंपउत्ते[1] तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ ।।

६०२. अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया ।।

६०३. रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—हिंसाणुबंधी, मोसाणुबंधी, तेयाणुबंधी, सारक्खणाणुबंधी ।।

६०४. रोद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—ओस्सन्नदोसे, बहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणंतदोसे ।।

६०५. धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—आणाविजए, अवाय-विजए, विवागविजए, संठाणविजए ।।

६०६. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—आणारुयी, निसग्ग-रुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी ।।

६०७. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, धम्मकहा ।।

६०८. धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा ।।

६०९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, तं जहा—पुहत्तवितक्के[2] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समोछिण्णकिरिए[3] अप्पडिवायी ।।

६१०. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे ।।

६११. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता, तं जहा—अव्वहे, असंमोहे, विवेगे, विउसग्गे ।।

१. परिज्जुसिय° (ख); परिज्झुसिय° (ता) ।
२. °वियक्के (ख) ।
३. समोच्छिण्ण° (ख, ता, म); समुच्छिण्ण° (क्व०) ।

६१२. सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा —'अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा'[1] । सेत्तं झाणे ॥

६१३. से किं तं विउसग्गे ? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वविउसग्गे य, भावविउसग्गे य ॥

६१४. से किं तं दव्वविउसग्गे ? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिविउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे । सेत्तं दव्वविउसग्गे ॥

६१५. से किं तं भावविउसग्गे ? भावविउसग्गे तिविहे पण्णत्ते' तं जहा—कसायविउसग्गे, संसारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥

६१६. से किं तं कसायविउसग्गे ? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे । सेत्तं कसायविउसग्गे ॥

६१७. से किं तं संसारविउसग्गे ? संसारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारविउसग्गे जाव देवसंसारविउसग्गे । सेत्तं संसारविउसग्गे ॥

६१८. से किं तं कम्मविउसग्गे ? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अंतराइयकम्मविउसग्गे । सेत्तं कम्मविउसग्गे । सेत्तं भावविउसग्गे । सेत्तं अब्भितरए तवे ॥

६१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

नेरइयावीणं-पुणब्भव-पदं

६२०. रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, एवामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विप्पजहित्ता पुरिमं भवं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

६२१. तेसि णं भंते ! जीवाणं कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं एवं जहा चोद्दसमसए पढमुद्देसए जाव[1] तिसमएण वा विग्गहेणं उववज्जंति । तेसि णं जीवाणं तहा सीहा गई, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ॥

६२२. ते णं भंते ! जीवा कहं परभवियाउयं पकरेंति ?
गोयमा ! अज्झवसाणजोगनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं, एवं खलु ते जीवा परभवियाउयं पकरेंति ॥

६२३. तेसि णं भंते ! जीवाणं कहं गती पवत्तइ ?
गोयमा ! आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं, एवं खलु तेसिं जीवाणं गती पवत्तति ॥

६२४. ते णं भंते ! जीवा किं आइड्ढीए[2] उववज्जंति ? परिड्ढीए उववज्जंति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जंति, नो परिड्ढीए उववज्जंति ॥

६२५. ते णं भंते ! जीवा किं आयकम्मुणा उववज्जंति ? परकम्मुणा उववज्जंति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जंति, नो परकम्मुणा उववज्जंति ॥

६२६. ते णं भंते ! जीवा किं आयप्पयोगेणं उववज्जंति ? परप्पयोगेणं उववज्जंति ?
गोयमा ! आयप्पयोगेणं उववज्जंति, नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

६२७. असुरकुमारा णं भंते ! कहं उववज्जंति ? जहा नेरइया तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति । एवं एगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया । एगिंदिया एवं चेव, नवरं—चउसमइओ विग्गहो । सेसं तं चेव ॥

६२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

९-१२ उद्देसा

६२९. भवसिद्धियनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिए ॥

६३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६३१. अभवसिद्धियनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेसं तं चेव । एवं जाव वेमाणिए ॥

६३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० १४।३ । २. आयड्ढीए (ता) ।

६३३. सम्मदिट्ठिनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेसं तं चेव । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए ॥

६३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६३५. मिच्छदिट्ठिनेरइया णं भंते ! कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेसं तं चेव । एवं जाव वेमाणिए ॥

६३६. सेवं भंते ! सेवं भंते । त्ति ॥

छव्वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४. दिट्ठि ५. अण्णाण ६. नाण ७. सण्णाओ ।
८. वेय ९. कसाए १०. उवओग ११. जोग एक्कारस वि ठाणा ।।१।।

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ ? बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

२. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ? बंधी बंधइ न बंधिस्सइ—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए एवं चउभंगो ।।

३. कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ । एवं जाव पम्हलेस्से । सव्वत्थ पढम-वितियभंगा । सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभंगो ।।

४. अलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

५. कण्हपक्खिए णं भंते ! जीवे पावं कम्मं—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-वितिया[2] भंगा ।।

१. भ० १।४-१० ।   २. बीया (ता)

६. सुक्कपक्खिए णं भंते ! जीवे—पुच्छा ।
गोयमा ! चउभंगो भाणियव्वो ।।

७. सम्मद्दिट्ठीणं चत्तारि भंगा, मिच्छादिट्ठीणं पढम-वितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीणं एवं चेव ।।

८. नाणीणं चत्तारि भंगा, आभिणिबोहियनाणीणं जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि भंगा, केवलनाणीणं चरिमो भंगो जहा अलेस्साणं ।।

९. अण्णाणीणं पढम-वितिया, एवं मइअण्णाणीणं, सुयअण्णाणीणं, विभंगनाणीण वि ।।

१०. आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं पढम-वितिया, नोसण्णोव-उत्ताणं चत्तारि ।।

११. सवेदगाणं पढम-वितिया । एवं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा वि । अवेदगाणं चत्तारि ।।

१२. सकसाईणं चत्तारि, कोहकसाईणं पढम-वितिया भंगा, एवं माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि । लोभकसायिस्स चत्तारि भंगा ।।

१३. अकसायी णं भंते ! जीवे पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।।

१४. सजोगिस्स चउभंगो, एवं मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि । अजोगिस्स चरिमो ।।

१५. सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भंगा ।।

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च बंधाबंध-पदं

१६. नेरइए णं भंते ! पावं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-वितिया ।।

१७. सलेस्से णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं० ? एवं चेव । एवं कण्हलेस्से वि, नील-लेस्से वि, काउलेस्से वि । एवं कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छा-दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुंसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु सव्वेसु पदेसु पढम-वितिया भंगा भाणियव्वा । एवं असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवरं—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अब्भहिया, नपुंसगवेदगा न भण्णंति, सेसं तं चेव, सव्वत्थ पढम-वितिया भंगा । एवं जाव थणियकुमारस्स ।

एवं पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स वि सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा, नवरं—जस्स जा लेस्सा। दिट्ठी, नाणं, अण्णाणं, वेदो, जोगो य अत्थि तं तस्स भाणियव्वं, सेसं तहेव। मणूसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा। वाणमंतरस्स जहा असुरकुमारस्स। जोइसियस्स वेमाणियस्स एवं चेव, नवरं—लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेसं तहेव भाणियव्वं ।।

जीवादीणं नाणावरणादिकम्मं पडुच्च बंधाबंध-पदं

१८. जीवे णं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ बंधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवरं - जीवपदे मणुस्सपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-बितिया भंगा, अवसेसं तं चेव जाव वेमाणिया। एवं दरिसणावरणिज्जेण वि दंडगो भाणियव्वो निरवसेसो ।।

१९. जीवे णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ। सलेस्से वि एवं चेव ततियविहूणा भंगा। कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-बितिया भंगा। सुक्कलेस्से ततियविहूणा भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो। कण्हपक्खिए पढम-बितिया। सुक्कपक्खिया ततियविहूणा। एवं सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-बितिया। नाणिस्स ततियविहूणा। आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-बितिया। केवलनाणी ततियविहूणा। एवं नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी। सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा। अजोगिम्मि य चरिमो। सेसेसु पढम-बितिया ।।

२०. नेरइए णं भंते ! वेयणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? एवं नेरइया जाव वेमाणिय त्ति। जस्स जं अत्थि सव्वत्थ वि पढम-बितिया, नवरं - मणुस्से जहा जीवे ।।

२१. जीवे णं भंते ! मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी बंधइ० ? जहेव पावं कम्मं तहेव मोहणिज्जं पि निरवसेसं जाव वेमाणिए ।।

२२. जीवे णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी बंधइ—पुच्छा।
गोयमा अत्थेगतिए बंधी चउभंगो। सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भंगा। अलेस्से चरिमो भंगो ।।

२३. कण्हपक्खिए णं—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ। सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भंगा ।।

२४. सम्मामिच्छादिट्ठी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भंगा ।।

२५. मणपज्जवनाणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । केवलनाणे चरिमो भंगो । एवं एएणं कमेणं नोसण्णोवउत्ते बितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भंगा जाव अणागारोवउत्ते ।।

२६. नेरइए णं भंते ! आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भंगा, एवं सव्वत्थ वि नेरइयाणं चत्तारि भंगा, नवरं—कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भंगा; सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था । असुरकुमारे एवं चेव, नवरं—कण्हलेस्से वि चत्तारि भंगा भाणियव्वा, सेसं जहा नेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविक्काइयाणं सव्वत्थ वि चत्तारि भंगा, नवरं—कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा ।।

२७. तेउलेस्से—पुच्छा ।
गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भंगा । एवं आउक्काइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेसं । तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भंगो । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं कण्हपक्खिए पढम-ततिया भंगा, सम्मामिच्छत्ते ततियचउत्थो भंगो । सम्मत्ते, नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु पंचसु वि पदेसु बितियविहूणा भंगा, सेसेसु चत्तारि भंगा । मणुस्साणं जहा जीवाणं, नवरं—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु बितियविहूणा भंगा, सेसं तं चेव । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । नामं गोयं अंतरायं च एयाणि जहा नाणावरणिज्जं ।।

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

बीओ उद्देसो

विसेसितनेरइयादीणं बंधाबंध-पदं

२९. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी, पढम-बितिया भंगा ।।

३०. सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! पढम-बितिया भंगा। एवं खलु सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा, नवरं—सम्मामिच्छत्तं मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ। एवं जाव थणियकुमाराणं। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं वइजोगो न भण्णइ। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पि सम्मामिच्छत्तं, ओहिनाणं, विभंगनाणं, मणजोगो, वइजोगो—एयाणि पंच न भण्णंति। मणुस्साणं अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभंग-नाण-नोसण्णोवउत्त-अवेदग-अकसाय-मणजोग-वइजोग-अजोगि—एयाणि एक्कारस पदाणि न भण्णंति। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं तहेव ते तिण्णि न भण्णंति। सव्वेसिं जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। एगिंदियाणं सव्वत्थ पढम-बितिया भंगा। जहा पावे एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ, एवं आउयवज्जेसु जाव अंतराइए दंडओ॥

३१. अणंतरोववन्नए णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! बंधी न बंधइ बंधिस्सइ॥

३२. सलेस्से णं भंते ! अणंतरोववन्नए नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी॰ ? एवं चेव ततिओ भंगो। एवं जाव अणागारोवउत्ते। सव्वत्थ वि ततिओ भंगो। एवं मणुस्सवज्जं जाव वेमाणियाणं। मणुस्साणं सव्वत्थ ततिय-चउत्था भंगा, नवरं—कण्हपक्खिएसु ततिओ भंगो। सव्वेसिं नाणत्ताइं ताइं चेव॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

३-१० उद्देसा

३४. परंपरोववन्नए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया। एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदंडगसंगहिओ। अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीणं जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता॥

३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

३६. अणंतरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं नवदंडगसंगहिओ[1] उद्देसो

---

१. ॰सहिओ (ता, ब)।

भणिओ तहेव अणंतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३८. परंपरोगाढए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी ? जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४०. अणंतराहारए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा । एवं जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२. परंपराहारए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. अणंतरपज्जत्तए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणंतरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसं ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. परंपरपज्जत्तए णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४८. चरिमे णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं जहेव परंपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव चरिमेहिं निरवसेसं ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

एक्कारसमो उद्देसो

५०. अचरिमे णं भंते ! नेरइए पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगइए एवं जहेव पढमोद्देसए, पढम-बितिया भंगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ॥

५१. अचरिमे णं भंते ! मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

५२. सलेस्से णं भंते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्मं किं बंधी ०? एवं चेव तिण्णि भंगा चरमविहूणा भाणियव्वा एवं जहेव पढमुद्देसे, नवरं—जेसु तत्थ वीससु[1] चत्तारि भंगा तेसु इह आदिल्ला तिण्णि भंगा भाणियव्वा चरिमभंगवज्जा। अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य—एए तिण्णि वि न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा नेरइए॥

५३. अचरिमे णं भंते ! नेरइए नाणावरणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! एवं जहेव पावं, नवरं—मणुस्सेसु सकसाईसु[2] लोभकसाईसु य पढम-बितिया भंगा, सेसा अट्ठारस चरमविहूणा, सेसं तहेव जाव वेमाणियाणं। दरिसणावरणिज्जं पि एवं चेव निरवसेसं। वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भंगा जाव वेमाणियाणं, नवरं—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि॥

५४. अचरिमे णं भंते ! नेरइए मोहणिज्जं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! जहेव पावं तहेव निरवसेसं जाव वेमाणिए॥

५५. अचरिमे णं भंते ! नेरइए आउयं कम्मं किं बंधी—पुच्छा।
गोयमा ! पढम-बितिया भंगा। एवं सव्वपदेसु वि। नेरइयाणं पढम-ततिया भंगा, नवरं—सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। एवं जाव थणियकुमाराणं। पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं तेउलेस्साए ततिओ भंगो। सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। तेउकाइय-वाउक्काइयाणं सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेसु ततिओ भंगो। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। सेसपदेसु[3] सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। मणुस्साणं सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य ततिओ भंगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जंति। सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। नामं गोयं अंतराइयं च जहेव नाणावरणिज्जं तहेव निरवसेसं॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ॥

१. वीसेसु (अ)।
२. कसायीसु (क, म, स)।
३. सेसेसु पदेसु (स)।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाणं पावकम्म-करणाकरण-पद

१. जीवे णं भंते ! पावं कम्मं किं करिंसु करेति करेस्सति ? करिंसु करेति न-करेस्सति ? करिंसु न करेति करेस्सति ? करिंसु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए करिंसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिंसु करेति न करेस्सति, अत्थेगतिए करिंसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिंसु न करेति न करेस्सति ॥

२. सलेस्से णं भंते ! जीवे पावं कम्मं ०? एवं एएणं अभिलावेणं जच्चेव बंधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदंडगसंगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

अट्ठावीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जण-समायरण-पदं

१. जीवा णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ? कहिं समायरिंसु ?
गोयमा ! १. सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ४. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य होज्जा ६. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ७. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ।।

२. सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ? कहिं समायरिंसु ?
एवं चेव । एवं कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एवं जाव अणागारोवउत्ता ।।

३. नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ? कहिं समायरिंसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं चेव अट्ठ भंगा भाणियव्वा । एवं सव्वत्थ अट्ठभंगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एवं जाव वेमाणियाणं । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ । एवं जाव अंतराइएणं । एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दंडगा भवंति ।।

४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

बीओ उद्देसो

५. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं कहिं समज्जिणिंसु ? कहिं समायरिंसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एवं एत्थ[1] वि अट्ठ भंगा। एवं अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाईणं जस्स जं अत्थि लेसादीयं अणागारोवओग-पज्जवसाणं तं सव्वं एयाए भयणाए भाणियव्वं जाव वेमाणियाणं, नवरं— अणंतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बंधिसए तहा इहं पि। एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ। एवं जाव अंतराइएणं निरवसेसं। एसो वि नवदंडगसंगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो ॥

६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

७ एवं एएणं कमेणं जहेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी तहेव इहं पि अट्ठसु भंगेसु नेयव्वा, नवरं— जाणियव्वं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं जाव अचरिमुद्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा ॥

८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

१. सव्वत्थ (ता)।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-पट्ठवण-निट्ठवण-पदं

१. जीवा णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ? समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ? विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु ? विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ?
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु जाव अत्थेगतिया विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ।।

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, तं चेव ?
गोयमा ! जीवा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं विसमायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु। से तेणट्ठेण गोयमा ! तं चेव ।।

३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा पावं कम्मं० ? एवं चेव, एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता। एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ।।

४. नेरइया णं भंते ! पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु, एवं जहेव जीवाणं तहेव भाणियव्वं जाव अणागारोवउत्ता। एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जं अत्थि तं एएणं चेव

कमेणं भाणियव्वं । जहा पावेण दंडओ । एएणं कमेणं अट्ठसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दंडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा । एसो नवदंडगसंगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

६. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया पावं कम्मं किं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु, अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु ॥

७. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगतिया समायं पट्ठविंसु, तं चेव ?
गोयमा ! अणंतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु समायं निट्ठविंसु । तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं पावं कम्मं समायं पट्ठविंसु विसमायं निट्ठविंसु । से तेणट्ठेणं तं चेव ॥

८. सलेस्सा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा नेरइया पावं० ? एवं चेव, एवं जाव अणागारोवउत्ता । एवं असुरकुमारा वि । एवं जाव वेमाणिया[1], नवरं जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं । एवं नाणावरणिज्जेण वि दंडओ । एवं निरवसेसं जाव अंतराइएणं ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३-११ उद्देसा

१०. एवं एएणं गमएणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति । अणंतरउद्देसगाणं चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया, सेसाणं सत्तण्हं एक्का ॥

१. वेमाणियाणं (ता) ।

तीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

समोसरण-पदं

१. कइ णं भंते ! समोसरणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता, तं जहा—किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ॥

२. जीवा णं भंते ! किं किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ? वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किं किरियावादी —पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥

४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइयवादी ॥

५. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।

६. सम्मामिच्छादिट्ठी णं —पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा॥

७. नेरइया णं भंते! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

८. सलेस्सा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी? एवं चेव। एवं जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एवं एएणं कमेणं जच्चेव जीवाणं वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं, सेसं न भण्णति। जहा नेरइया एवं जाव थणियकुमारा॥

९. पुढविकाइया णं भंते! किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एवं पुढविकाइयाणं जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइं दो मज्झिल्लाइं समोसरणाइं जाव अणागारोवउत्ता वि। एवं जाव चउरिंदियाणं। सव्वट्ठाणेसु एयाइं चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइं दो समोसरणाइं। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवरं—जं अत्थि तं भाणियव्वं। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेसं। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

१०. किरियावादी णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति? तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति? मणुस्साउयं पकरेंति? देवाउयं पकरेंति?
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति॥

११. जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासिदेवाउयं पकरेंति जाव वेमाणिय देवाउयं पकरेंति?
गोयमा! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति॥

१२. अकिरियावादी णं भंते! जीवा किं नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं—पुच्छा।
गोयमा! नेरइयाउयं पि पकरेंति जाव देवाउयं पि पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि॥

१३. सलेस्सा णं भंते! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं, एवं जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा॥

१४. कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति । अकिरियवादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति । एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि ।।

१५. तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । जइ देवाउयं पकरेंति तहेव[1] ।।

१६. तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । जहा तेउलेस्सा एवं पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा ।।

१७. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।।

१८. कण्हपक्खिया णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, एवं चउव्विहं पि । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा ।।

१९. सम्मदिट्ठी णं भंते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।।

२०. सम्मामिच्छादिट्ठी णं भंते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउयं० ? जहा अलेस्सा । एवं वेणइयवादी वि । नाणी आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी ।।

२१. मणपज्जवनाणी णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुस्साउयं पकरेंति, देवाउयं पकरेंति ।।

२२. जइ देवाउयं पकरेंति किं भवणवासि—पुच्छा ।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउयं पकरेंति, नो वाणमंतरदेवाउयं पकरेंति, नो जोइसियदेवाउयं पकरेंति, वेमाणियदेवाउयं पकरेंति । केवलनाणी जहा अलेस्सा । अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सण्णासु चउसु वि

---

१. भ० ३०।११ ।

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी। सवेदगा जाव नपुंसग-वेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी[1] जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा॥

२३. किरियावादी णं भंते! नेरइया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति॥

२४. अकिरियावादी णं भंते! नेरइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

२५. सलेस्सा णं भंते! नेरइया किरियावादी किं नेरइयाउयं०? एवं सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउयं एगं पकरेंति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति, नवरं—सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहिं वि समोसरणेहिं न किंचि वि पकरेंति जहेव जीवपदे। एवं जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया॥

२६. अकिरियावादी णं भंते! पुढविक्काइया—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। एवं अण्णाणियवादी वि॥

२७. सलेस्सा णं भंते! एवं जं जं पदं अत्थि पुढविकाइयाणं तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविहं आउयं पकरेंति, नवरं—तेउलेस्साए न किं पि पकरेंति। एवं आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि। तेउकाइआ वाउकाइआ सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पकरेंति, नो मणुस्साउयं पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं जहा पुढविकाइयाणं, नवरं—सम्मत्त-नाणेसु न एक्कं पि आउयं पकरेंति॥

२८. किरियावादी णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! जहा मणपज्जवनाणी। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विहं पि पकरेंति। जहा ओहिया[2] तहा सलेस्सा वि॥

१. सजोगी (ख)। २. ओधिता (ता)

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेंति। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी चउव्विहं पि पकरेंति। जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, देवाउयं पि पकरेंति। एवं पम्हलेस्सा वि। एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेंति। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेंति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कं पि पकरेंति जहेव नेरइया। नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मद्दिट्ठी। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा। जहा पंचिदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवरं - मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मद्दिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एगं पि आउयं पकरेंति। जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३१. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

३२. सलेस्सा ण भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा। एवं जाव सुक्कलेस्सा॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी। सवेदगा जाव नपुंसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा सम्मदिट्ठी। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा सम्मदिट्ठी। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एवं नेरइया वि भाणियव्वा, नवरं—नायव्वं[1] जं अत्थि। एवं असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं जाव वणस्सइकाइया। बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया एवं चेव, नवरं—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेसं तं चेव। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं—नायव्वं जं अत्थि। मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

३६. अणंतरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

३७. सलेस्सा णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावादी०? एवं चेव। एवं जहेव पढमुद्देसे नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं—जं जं[2] अत्थि अणंतरोववन्नगाणं नेरइयाणं तं तं[3] भाणियव्वं। एवं सव्वजीवाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं—अणंतरोववन्नगाणं जं जहिं अत्थि तं तहिं भाणियव्वं॥

३८. किरियावादी णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं,

---

१. नेयव्वं (अ, क)।
२. जस्स (अ, स)।
३. तस्स (अ, स)।

नो देवाउयं पकरेंति। एवं अकिरियावादी वि अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

३९. सलेस्सा णं भंते! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति जाव नो देवाउयं पकरेंति। एवं जाव वेमाणिया। एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणंतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउयं पकरेंति जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं ॥

४०. किरियावादी णं भंते! अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धीया? अभवसिद्धीया?
गोयमा! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ॥

४१. अकिरियावादी णं—पुच्छा।
गोयमा! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ॥

४२. सलेस्सा णं भंते! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया किं भवसिद्धीया? अभवसिद्धीया?
गोयमा! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्तत्ति। एवं जाव वेमाणियाणं, नवरं—जं जस्स अत्थि तं तस्स भाणियव्वं। इमं से लक्खणं—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि ॥

४३. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

४४. परंपरोववन्नगा णं भंते! नेरइया किरियावादी०? एवं जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परंपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, तहेव तियदंडगसंगहिओ ॥

४५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति जाव विहरइ ॥

४-११ उद्देसा

४६. एवं एएणं कमेणं जच्चेव बंधिसए उद्देसगाणं परिवाडी सच्चेव इहं पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवरं—अणंतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परंपरा चत्तारि वि एक्कगमएणं। एवं चरिमा वि, अचरिमा वि एवं चेव, नवरं—अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णंति, सेसं तहेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति। एए एक्कारस वि उद्देसगा ॥

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावर-जुम्मे[1], कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकडजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागतेयोगे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकलियोगे से तेणट्ठेणं जाव कलियोगे ॥

३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति। एवं नेरइयाणं उववाओ जहा[2] वक्कंतीए तहा भाणियव्वो ॥

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवा॰णं,

१. बातर॰ (क); बादर॰ (ता); बायर॰ २. प॰ ६। (म)।

एवं जहा पंचविसतिमे सए अट्ठमुद्देसए नेरइयाणं वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव[1] आयप्पओगेणं उववज्जंति नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

६. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं जहा ओहियनेरइयाणं वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं उववाओ जहा[2] वक्कंतीए ।

> अस्सण्णी खलु पढमं, दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी ।
> [3]सीहा जंति चउत्थिं, उरगा पुण पंचमिं पुढविं ॥१॥
> छट्ठिं च इत्थियाओ, मच्छा मणुमा य सत्तमिं पुढविं ।
> एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीणं ॥२॥°

सेसं तहेव ॥

७. खुड्डागतेयोगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो ०? उववाओ जहा वक्कंतीए ॥

८. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । सेसं जहा कडजुम्मस्स । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

९. खुड्डागदावरजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवरं—परिमाणं दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव जाव अहेसत्तमाए ॥

१०. खुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवरं—परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, सेसं तं चेव । एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

१२. कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति, नवरं—उववाओ जहा वक्कंतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाणं, सेसं तं चेव ॥

१. भ० २५।६२०-६२६ ।
२. प० ६ ।
३. सं० पा०—गाहा एवं उववाएयव्वा ।

१३. धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति ? एवं चेव निरवसेसं। एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवरं—उववाम्रो सव्वत्थ जहा वक्कंतीए ।।

१४. कण्हलेस्सखुड्डागतेम्रोगनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति०? एवं चेव, नवरं—तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव। एवं जाव अहेसत्तमाए वि ।।

१५. कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति०? एवं चेव, नवरं— दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा, सेसं तं चेव। एवं धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए ।।

१६. कण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति०? एवं चेव, नवरं— एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा, सेसं तं चेव। एवं धूमप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि ।।

१७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

तइम्रो उद्देसो

१८. नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति ०? एवं जहेव कण्हलेस्साखुड्डागकडजुम्मा, नवरं—उववाम्रो जो वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव। वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एवं चेव। एवं पंकप्पभाए वि, एवं धूमप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं। परिमाणं जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेसं तहेव ।।

१९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

चउत्थो उद्देसो

२०. काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति ०? एवं जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाम्रो जो रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ।।

२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति ०?

एवं चेव। एवं सक्करप्पभाए वि, एवं वालुयप्पभाए वि। एवं चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेसं तं चेव ॥

२२. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

२३. भवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो ०? एवं जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेसं जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! ०? एवं चेव निरवसेसं। एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं भवसिद्धीयखुड्डागतेयोगनेरइया वि। एवं जाव कलियोगत्ति, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं, परिमाणं पुव्वभणियं जहा पढमुद्देसए ॥

२५. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

छट्ठो उद्देसो

२६. कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ०? एवं जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेसं चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव—

२७. अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया णं भंते! कओ उववज्जंति ०? तहेव ॥

२८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

७-२८ उद्देसा

२९. नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नीललेस्सउद्देसए ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३१. काउलेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए ।।

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३३. जहा भवसिद्धीएहिं चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति ।।

३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

३५. एवं सम्मदिट्ठीहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—सम्मदिट्ठी पढमबितिएसु दोसु वि उद्देसगेसु अहेसत्तसपुढवीए न उववाएयव्वो, सेसं तं चेव ।।

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

३७. मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाणं ।।

३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

३९. एवं कण्हपक्खिएहि वि लेस्सासंजुत्तेहिं चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहिं ।।

४०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

४१. सुक्कपक्खिएहिं एवं चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-काउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति ? तहेव जाव नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ।।

४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीसं उद्देसगा ।।

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयाणं उववट्टण-पदं

१. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति—किं नेरइएसु उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? उव्वट्टणा जहा[1] वक्कंतीए ॥

२. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उव्वट्टंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वट्टंति ॥

६. ते णं भंते ! जीवा कहं उव्वट्टंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एवं तहेव । एवं सो चेव गमओ जाव[2] आयप्पयोगेणं उव्वट्टंति, नो परप्पयोगेणं उव्वट्टंति ॥

४. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एवं रयणप्पभाए वि । एवं जाव अहेसत्तमाए । एवं खुड्डागतेयोग-खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवरं—परिमाणं जाणियव्वं, सेसं तं चेव ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६. कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएणं कमेणं जहेव उववायसए अट्ठावीसं उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—उव्वट्टंति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेसं तं चेव ॥

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

१. प० ६ ।

२. भ० २५।६२०-६२६ ।

तेत्तीसइमं सतं

पढमं एगिंदियं सतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

१. कतिविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

२. पुढविक्कइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३. सुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तासुहुमपढविक्काइया य, अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य ॥

४. वादरपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? एवं चेव । एवं आउक्काइया वि चउक्कएणं भेदेणं भाणियव्वा, एवं जाव वणस्सइकाइया ॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

७. अपज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं चेव ॥

८. पज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं

चेव । एवं एएणं कमेणं जाव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ति[1] ॥

९. अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ?
गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि । सत्त बंधमाणा आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति, अट्ठ बंधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधंति ॥

१०. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव, एवं सव्वे जाव—

११. पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? एवं चेव ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं[2] सोइंदियवज्झं, चक्खिंदियवज्झं, घाणिंदियवज्झं, जिब्भिंदियवज्झं, इत्थिवेदवज्झं, पुरिसवेदवज्झं । एवं चउक्कएणं भेदेणं जाव—

१३. पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! एवं चेव चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति ॥

१४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

१५. कतिविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

१६. अणंतरोववन्नगा णं भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य । एवं दुपएणं भेदेणं जाव वणस्सइकाइया ॥

१७. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥

१८. अणंतरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

---

१. × (अ, क, ख, ता) । २. °वज्जं (अ, ख, ता, ब, स) ।

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयाणं[1] ति ॥

१९. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधंति। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइय त्ति ॥

२०. अणंतरोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, तहेव जाव पुरिसवेदवज्झं। एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयत्ति ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

२२. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥

२३. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेंति ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥

३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥

३१. चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा तहेव ॥

३२. एवं अचरिमा वि। एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥

३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. °गाणं (अ, ख, ब, म, स)।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

३४. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

३५. कण्हलेस्सा णं भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ॥

३६. कण्हलेस्सा णं भंते ! सुहुमपुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए[1] ॥

३७. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेंति ॥

३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३९. कतिविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एवं एएणं अभिलावेणं तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

१. °उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (स) ।

४०. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिओ अणंतरोववन्नगाणं उद्देसओ तहेव जाव वेदेंति ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

४२. कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया, एवं एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइ-काइयत्ति ॥

४३. परंपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कइ कम्मप्प-गडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ परंपरोववन्नगउद्दे-सओ तहेव जाव वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिएगिंदियसए एक्का-रस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिम-कण्हलेस्सा एगिंदिया ॥

३,४ सताइं

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं भणियं एवं नीललेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. एवं काउलेस्सेहि वि सयं भाणियव्वं, नवरं--काउलेस्से ति अभिलावो भाणि-यव्वो ॥

पंचमं सतं

भवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

४७. कतिविहा णं भंते ! भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४८. भवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसयं तहेव भवसिद्धीयसयं पि भाणियव्वं । उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमो[1] त्ति ।
४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

छट्ठं सतं

५०. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ।।
५१. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ।।
५२. कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । एवं बादरा वि । एएणं अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो ।।
५३. कण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेंति ।।
५४. कतिविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया ।।
५५. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुहुमपुढविक्काइया, एवं दुयओ भेदो ।।
५६. अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ अणंतरोववन्नउद्देसओ तहेव जाव वेदेंति । एवं एएणं अभिलावेणं एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति ।।

१. अचरिम (ख, ता, ब) ।

७,८ सताइं

५७. जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं भाणियव्वं ।।

५८. एवं काउलेस्सभवसिद्धीएहि वि सतं ।।

९-१२ सताइं

अभवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

५९. कइविहा णं भंते ! अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा– पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया । एवं जहेव भवसिद्धीयसतं भणियं, नवरं—नव उद्देसगा चरिमअचरिमउद्देसगवज्जं, सेसं तहेव ।।

६०. एवं कण्हलेस्सअभवसिद्धीयएगिंदियसतं पि ।।

६१. नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिंदिएहि वि सतं ।।

६२. काउलेस्सअभवसिद्धीयसतं । एवं चत्तारि वि अभवसिद्धीयसताणि, नव-नव उद्देसगा भवंति । एवं एयाणि बारस एगिंदियसताणि भवंति ।।

———

चोतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियसतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं विग्गहगइ-पदं

१. कइविहा णं भंते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइ-काइया । एवमेते चउक्कएणं भेदेणं भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया ॥

२. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ॥
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता सेढी, एगओवंका, दुहओवंका, एगओखहा[1], दुहओखहा[2], चक्कवाला, अद्धचक्कवाला । उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा ॥

४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-

१. °खुहा (अ) ।   २. °खुहा (अ) ।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव[1] से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—एगसमइएणं वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा ° विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते बादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु । एवं आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्तएहिं, ताहे पज्जत्तएहिं, बादरेहिं अपज्जत्तएहिं, ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो । एवं चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो ॥

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तं चेव । एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । वाउक्काइएसु सुहुमबादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो । एवं वणस्सइकाइएसु वि ॥

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेणं एएसु चेव वीसमु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि । एवं अपज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि । एवं पज्जत्ताबादरपुढविकाइओ वि । एवं आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो । सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो ।

७. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं । एवं पुढविक्काइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एवं आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एवं चेव उववाएयव्वो ॥

८. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते !

कतिसमइएणं० ? सेसं तं चेव । एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए वि उववाएयव्वो । वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वो । एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयो वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो । जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एवं सव्वत्थ वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्वा वि । वाउक्काइया वणस्सकाइया य जहा पुढविक्काइया तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वा जाव—

९. पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसमइएणं० ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेणं ।।

१०. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं० ? सेसं तहेव निरवसेसं । एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया, जे य समयखेत्ते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाइया, एवं एएणं चेव कमेणं पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं । एवं एएणं गमएणं दाहिणिल्ले चरिमंते समोहयाणं उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाओ । एवं चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ।।

११. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेणं । एवं एएणं कमेणं जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु ।।

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसमइएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।।

१३. से केणट्ठेणं ?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।

से तेणट्ठेणं। एवं पज्जत्तएसु वि बादरतेउक्काइएसु। सेसं जहा रयणप्पभाए। जे वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउक्काइएसु चउव्विहेसु, तेउक्काइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जंति, ते वि एवं चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववाएयव्वा। बादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जंति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेसं जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेसं। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एवं जाव अहेसत्तमाए[1] भाणियव्वा ॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा?

गोयमा! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

१५. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा?

गोयमा! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरंसि अणुसेढिं[2] उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढिं[3] उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए वि, एवं जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए ॥

१६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते! अहेलोग[4] °खेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,° समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा?

गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

१७. से केणट्ठेणं?

एवं खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा।

---

१. अहेसत्तमाए वि (स)।

२. अणुसेढीए (अ, क, ख, ब, म, स)।

३. विसेढीए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

४. सं० पा—अहेलोग जाव समोहणित्ता।

से तेणट्ठेणं । एवं पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएणं भेदेणं जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाएयव्वो । एवं जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयस्स गमओ भणिओ एवं पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ॥

१८. [अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइए णं भंते ?] अहेलोयखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए०? एवं बादरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्वं । एवं आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्वं । सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्स वि एवं चेव ॥

१९. अपज्जत्तावादरतेउक्काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२०. से केणट्ठेणं ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं जाव—

२१. अपज्जत्ताबादरतेउकाइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ०? सेसं तं चेव ॥

२२. अपज्जत्ताबादरतेउक्काइए णं भंते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेजा ॥

२३. से केणट्ठेणं ?
अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविक्काइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वो । एवं पज्जत्ताबादरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाणं जहेव पुढविकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ॥

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं ०? एवं उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाणं अहेलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जंताणं सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव बादरवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ ॥

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, सेणं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।।

२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला । उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढिं उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा । एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमतेउक्काइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु बादरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवणस्सइकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो । सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो । एवं एएणं गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ।।

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।।

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ०?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला । एगओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवंकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढिं उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा । जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जे० । । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसिं दुसमइओ तिसमइओ चउसमइओ विग्गहो भाणियव्वो ।।

२९. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ।।

३०. से केणट्ठेणं ?
एवं जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वा सव्वे ।।

३१. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते? ० एवं जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयओ[1] दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो ।।

३२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयओ पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइओ तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेसं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमंते उववाइओ, एवं दाहिणिल्ले समोहयओ पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो, नवरं—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेसं तहेव। एवं दाहिणिल्ले समोहयओ उत्तरिल्ले चरिमंते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तं चेव। उत्तरिल्ले समोहयाणं उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाणं पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एवं चेव, नवरं—एगसमइओ विग्गहो नत्थि।

---

१. समोहताओ (अ, क, ब) समोहतो (स)।

उत्तरिल्ले समोहयाणं दाहिणिल्ले उववज्जमाणाणं जहा सट्ठाणे, उत्तरिल्ले समोहयाणं पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाणं एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेसं तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ।।

एगिंदियाणं ठाण-पदं

३३. कहि णं भंते ! बादरपुढविक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु जहा[1] ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोग-परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो !

एगिंदियाणं कम्म-पदं

३४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं । एवं चउक्कएणं भेदेणं जहेव एगिंदियसएसु जाव[2] बादरवणस्सइ-काइयाणं पज्जत्तगाणं ।।

३५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ?
गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि, जहा एगिंदियसएसु जाव[3] पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया ।।

३६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेंति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जहा एगिं-दियसएसु जाव पुरिसवेदवज्झं । एवं जाव[4] बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्त-गाणं ।।

एगिंदियाणं उववत्ति-पदं

३७. एगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति० ? जहा[5] वक्कंतीए पुढविक्काइयाणं उववाओ ।।

एगिंदियाणं समुग्घाय-पदं

३८. एगिंदियाणं भंते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्विय-समुग्घाए ।।

१. प० २
२. भ० ३३।६-८ ।
३. भ० ३३।९-११ ।
४. भ० ३३।१२,१३ ।
५. प० ६ ।

एगिंदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३९. एगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ? वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! एगिंदिया चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा— अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते णं वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते णं वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥

बीओ उद्देसो

विसेसित-एगिंदियाणं ठाणादि-पदं

४२. कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया, दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बादरवणस्सइकाइया य ॥

४३. कहि णं भंते ! अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु, तं जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव[1]

---
१. प० २।

दीवेसु समुद्देसु, एत्थ णं अणंतरोववन्नगाणं बादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए, समुग्घाएणं सव्वलोए, सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे। अणंतोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो ! एवं एएणं कमेणं सव्वे एगिंदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइं सव्वेसिं जहा ठाणपदे। तेसिं पज्जत्तगाणं बादराणं उववाय-समुग्घाय-सट्ठाणाणि जहा तेसिं चेव अपज्जत्तगाणं बादराणं। सुहुमाणं सव्वेसिं जहा पुढविकाइयाणं भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४४. अणंतरोववन्नगाणं सुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ। एवं जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव बंधंति, तहेव वेदेंति जाव[1] अणंतरोववन्नगा बादरवणस्सइकाइया ॥

४५. अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव ॥

४६. अणंतरोववन्नगएगिंदियाणं भंते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?

गोयमा ! दोन्नि[2] समुग्घाया पण्णत्ता तं जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य ॥

४७. अणंतरोववन्नगएगिंदिया णं भंते ! किं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति—पुच्छा तहेव ॥

गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति।

४८. से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ?

गोयमा ! अणंतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ णं जे ते समाउया समोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। तत्थ णं जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते णं तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति। से तेणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहियं कम्मं पकरेंति ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. भ० ३३।१७-२०। २. दो (ब, म)।

तइयो उद्देसो

५०. कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, तं जहा—पुढविक्काइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

५१. परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] पच्चत्थिमिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमो उद्देसओ जाव[2] लोगचरिमंतो त्ति ।।

५२. कहि णं भंते ! परंपरोववन्नगबादरपुढविक्काइयाणं[3] ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु । एवं एएणं अभिलावेणं जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ।।

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

४-११ उद्देसा

५४. एवं सेसा वि अट्ठ उद्देसगा जाव अचरिमो त्ति, नवरं—अणंतरा अणंतरसरिसा, परंपरा परंपरसरिसा, चरिमा य अचरिमा य एवं चेव । एवं एते एक्कारस उद्देसगा ।।

१. जाव (अ, ता, ब); पुढवीए जाव (स) ।
२. भ० ३४।२-३२ ।
३. ०बादर० (क, ब)

बिइयं सतं

१-११ उद्देसा

५५. कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५६. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सु चेव उववाएयव्वो ॥

५७. कहि णं भंते ! कण्हलेस्सअपज्जत्ताबादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइय त्ति ॥

५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५९. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

३-५ सताइं

६०. एवं नीललेस्सेहि वि सतं । काउलेस्सेहि वि सतं एवं चेव । भवसिद्धिय-एगिंदिएहिं[1] सतं ॥

१. °एहिं वि (म, स) ।

छट्ठं सतं

६१. कइविहा णं भंते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव[1] ओहिउद्देसओ ।।

६२. कइविहा णं भंते ! अणंतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? जहेव अणंतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ।।

६३. कइविहा णं भंते ! परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा परंपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ।।

६४. परंपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमंते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ।।

६५. कहि णं भंते ! परंपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्ताबादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एवं एएणं अभिलावेणं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं छट्ठं सतं ।।

७-१२ सताइं

६६. नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदिएसु सतं । एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं । जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सयाणि एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवरं —चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेसं तं चेव । एवं एयाइं बारस एगिंदियसेढीसताइं ।।

६७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ।।

१. एवं जहेव (स) ।

पणतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-एगिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कइ णं भंते ! महाजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—१ कडजुम्मकडजुम्मे, २ कडजुम्मतेओगे, ३ कडजुम्मदावरजुम्मे[1], ४ कडजुम्मकलियोगे, ५ तेओगकडजुम्मे, ६ तेओगतेओगे, ७ तेओगदावरजुम्मे, ८ तेओगकलिओगे, ९ दावरजुम्मकडजुम्मे, १० दावरजुम्मतेओगे, ११ दावरजुम्मदावरजुम्मे, १२ दावरजुम्मकलियोगे, १३ कलिओगकडजुम्मे, १४ कलियोगतेओगे, १५ कलियोगदावरजुम्मे, १६. कलियोगकलिओगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे[2] चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकडजुम्मे १। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मतेयोए २। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मदावरजुम्मे ३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकलियोगे ४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेत्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए,

१. °वादरजुम्मे (अ, स, ता, म); °वातरजुम्मे (क)। २. अवहारमाणा (अ); अवहारमाणे (म)।

जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगतेओगे ६। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दोपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया तेयोगा, सेत्तं तेओगदावरजुम्मे ७। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगकलियोगे ८। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्ज-वसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकड-जुम्मे ९। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्तं दावरजुम्मतेयोए १०। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मदावरजुम्मे ११। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहार-समया दावरजुम्मा, सेत्तं दावरजुम्मकलियोए १२। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलिओगकडजुम्मे १३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगतेयोए १४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोग-दावरजुम्मे १५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्तं कलियोगकलिओगे १६। से तेणट्ठेणं जाव कलिओगकलिओगे ॥

३. कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो० ? जहा[1] उप्पलुद्देसए तहा उववाओ ॥

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा समए समए—पुच्छा। गोयमा ! ते णं अणंता समए समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणंताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, णो चेव णं अवहिया[2] सिया। उच्चत्तं जहा[3] उप्पलुद्देसए ॥

६. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबंधगा ? गोयमा ! बंधगा, नो अबंधगा। एवं सव्वेसिं आउयवज्जाणं। आउयस्स बंधगा वा अबंधगा वा ॥

---

१. भ० ११।२। ३. भ० ११।५।

२. अवहरिया (स)।

७. ते णं भंते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा । एवं सव्वेसिं ।।

८. ते णं भंते ! जीवा किं सातावेदगा ? असातावेदगा[1] ?
गोयमा ! सातावेदगा वा असातावेदगा वा । एवं उप्पलुद्देसगपरिवाडी[2] । सव्वेसिं कम्माणं उदई, नो अणुदई । छण्हं कम्माणं उदीरगा, नो अणुदीरगा । वेदणिज्जाउयाणं उदीरगा वा अणुदीरगा वा ।।

९. ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेस्सा—पुच्छा ।
गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी—नियमं[3] दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा ।।

१०. तेसि णं भंते! जीवाणं सरीरगा[4] कतिवण्णा? जहा[5] उप्पलुद्देसए सव्वत्थ—पुच्छा ।
गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा वा । आहारगा वा अणाहारगा वा । नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । सकिरिया, नो अकिरिया । सत्तविहबंधगा वा अट्ठविहबंधगा वा । आहारसण्णो-वउत्ता वा जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वा । कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा । नो सण्णी, असण्णी । सइंदिया, नो अणिंदिया ।।

११. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिरं[6] होंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, वणस्सइकाइयकालो । संवेहो न भण्णइ, आहारो जहा[7] उप्पलु-द्देसए नवरं—निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउ-दिसिं, सिय पंचदिसिं, सेसं तहेव । ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि । मारणंतियसमुग्घातेणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । उव्वट्टणा जहा[8] उप्पलुद्देसए ।।

१२. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्न-पुव्वा ?
हंता गोयमा ! असइं अदुवा अणंतखुत्तो ।।

१. पुच्छा (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२. भ० ११।६-११ ।
३. नियमा (अ, ब) ।
४. सरीरा (ख, स) ।
५. भ० ११।१७-२८ ।
६. केवचिरं (अ, क, ख, ब, म) ।
७. भ० ११।३५ ।
८. भ० ११।३६ ।

१३. कडजुम्मतेओयएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ तहेव[1] ॥

१४. ते णं भंते ! जीवा एगसमए—पुच्छा ।
गोयमा ! एकूणवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं जहा कडजुम्मकडजुम्माणं जाव अणंतखुत्तो ॥

१५. कडजुम्मदावरजुम्मएगिंदिया णं भंते! कओहिंतो उववज्जंति०?उववाओ तहेव ॥

१६. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अट्ठारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१७. कडजुम्मकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? उववाओ तहेव परिमाणं सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१८. तेयोगकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० उववाओ तहेव, परिमाणं बारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

१९. तेयोयतेयोयएगिंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? उववाओ तहेव । परिमाणं पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो । एवं एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ, नवरं—परिमाणे नाणत्तं—तेयोयदावरजुम्मेसु परिमाणं चोद्दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उवज्जंति । तेयोगकलियोगेसु तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । कलियोगकडजुम्मे चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । कलियोगतेयोगेसु सत्त वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति । कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति ॥

२०. कलियोगकलियोगएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ तहेव । परिमाणं पंच वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ॥

२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

[1] भ० ३५।३ ।

बीओ उद्देसो

२२. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? गोयमा ! तहेव, एवं जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो बितिओ[1] भाणियव्वो, तहेव सव्वं, नवरं—इमाणि दस नाणत्ताणि—१. ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं। २. आउयकम्मस्स नो बंधगा, अबंधगा। ३. आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा। ४. नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा। ५. सत्तविहबंधगा, नो अट्ठविहबंधगा ॥

२३. ते णं भंते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ? गोयमा ! ६. एक्कं समयं। ७. एवं ठिती वि। ८. समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि। ९. समोहया न पुच्छिज्जंति। १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेसं तहेव सव्वं निरवसेसं सोलससु वि गमएसु जाव अणंतखुत्तो ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

२५. अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु[2] तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अणंतखुत्तो ॥

२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२७. चरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवरं—देवा न उववज्जंति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जंति, सेसं तहेव ॥

२८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९. अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा अपढमसमयउद्देसो[3] तहेव निरवसेसो भाणितव्वो ॥

३०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. बितिओ वि (अ, क, ख, ब, म)।
२. जुम्मेहिंसु (ता)।
३. पढम° (अ, क, ख, ता, ब)।

३१. पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कप्रो उववज्जंति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥
३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३३. पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो ॥
३४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३५. पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥
३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
३७. पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा 'बीओ उद्देसओ'[1] तहेव निरवसेसं ॥
३८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥
३९. चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ[2] तहेव निरवसेसं ॥
४०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
४१. चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेसं ॥
४२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ॥
४३. एवं एए एक्कारस उद्देसगा। पढमो ततिओ पंचमो[3] य सरिसगमा, सेसा अट्ठ सरिसगमा, नवरं—चउत्थे[4] अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जंति। तेउलेस्सा नत्थि ॥

बितियं एगिंदियमहाजुम्मसतं

४४. कण्णलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ?
गोयमा ! उववाओ तहेव, एवं जहा ओहिउद्देसए, नवरं इमं नाणत्तं ॥
४५. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा ॥

१. पढमउ° (अ, क, ख)।
२. चउत्थुद्देसओ (ता)।
३. पंचमगो (अ, क, ब, म); पंचमओ (ख, ता)।
४. चउत्थे छट्ठे (अ, ब)।

४६. ते णं भंते ! कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालग्रो केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं ठिती वि । सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ।।

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

४८. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कग्रो उववज्जंति० ?
जहा पढमसमयउद्देसग्रो, नवरं—

४९. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तहेव[1] ।।

५०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

५१. एवं जहा ग्रोहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइग्रो पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवरं—चउत्थ-ग्रट्ठम-दसमेसु उववाग्रो नत्थि देवस्स ।।

५२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एवं नीललेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं, एक्कारस उद्देसगा तहेव ।।

५४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

५५. एवं काउलेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं ।।

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

५७. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कग्रो उववज्जंति० ? जहा ग्रोहियसतं तहेव, नवरं—एक्कारससु वि उद्देसएसु ।।

५८. ग्रह भंते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेसं तहेव ।।

५९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

६०. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि सतं बितियसतकण्हलेस्ससरिसं भाणियव्वं ।।

६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

---

१. तं चेव (ख) ।

६२. एवं नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियएहि वि सतं ॥

६३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६४. एवं काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं सतं। एवं एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि। चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६६. जहा भवसिद्धिएहिं चत्तारि सताइं भणियाइं एवं अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासंजुत्ताणि भाणियव्वाणि। सव्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे। एवं एयाइं बारस एगिंदियमहाजुम्मसताइं भवंति ॥

६७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

छत्तीसइमं सतं

पढमं बेंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा[1] वक्कंतीए। परिमाणं सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। अवहारो[2] जहा[3] उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं। एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमुद्देसए तहेव, नवरं—तिण्णि लेस्साओ, देवा न उववज्जंति। सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अण्णाणी वा। नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा॥

२. ते णं भंते ! कडजुम्मकडजुम्मबेंदिया कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं। आहारो नियमं छद्दिसिं। तिण्णि समुग्घाया, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु॥

३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति॥

२-११ उद्देसा

४. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं जहा एगिंदियमहाजुम्माणं पढमसमयउद्देसए। दस नाणत्ताइं ताइं चेव दस इह वि।

१. प० ६।
३. भ० ११।४
२. आहारो (अ, क, ता, ब)।

एक्कारसमं इमं नाणत्तं—नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेसं जहा बेंदियाणं चेव पढमुद्देसए ॥

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

६. एवं एए वि जहा एगिंदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवरं—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णंति। जहेव एगिंदिएसु पढमो तइओ पंचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा।

२-१२ बेंदियमहाजुम्मसताइं

७. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसंजुत्तं सतं, नवरं—लेस्सा, संचिट्ठणा[1] जहा एगिंदियकण्हलेस्साणं ॥

८. एवं नीललेस्सेहि वि सतं ॥

९. एवं काउलेस्सेहि वि ॥

१०. भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मबेंदिया णं भंते० ? एवं भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएणं नेयव्वा, नवरं—सव्वे पाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे। सेसं तहेव ओहियसताणि चत्तारि ॥

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२. जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एवं अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवरं—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहिं नत्थि, सेसं तं चेव। एवं एयाणि बारस बेंदियमहाजुम्मसताणि भवंति ॥

१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१. संचिट्ठणा ठिती (अ, ब, स)

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मतेंदिया णं भंते ! कप्रो उववज्जंति० ? एवं तेंदिएसु वि बारस सता कायव्वा बेंदियसतसरिसा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं एकूणवण्णं राइंदियाइं, सेसं तहेव ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१. चउरिंदिएहि वि एवं चेव बारस सता कायव्वा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं। ठिति जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा। सेसं जहा बेंदियाणं ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा बेंदियाणं तहेव असण्णिसु वि बारस सता कातव्वा, नवरं—ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडीपुहत्तं। ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सेसं जहा बेंदियाणं ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसतिमं सत

पढमं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१. कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? उववाओ चउसु वि गईसु । संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति । परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचिंदियाणं । वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा । मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा । सायावेदगा वा असायावेदगा वा । मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई । नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सम्मदिट्ठी वा मिच्छादिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा । नाणी वा अण्णाणी वा । मणजोगी वइजोगी कायजोगी । उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं । विरया य अविरया य विरयाविरया य । सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२. ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ? अट्ठविहबंधगा ? छव्विहबंधगा ? एगविहबंधगा वा ?

गोयमा ! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा ॥

३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? नोसण्णोवउत्ता ?

गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा । सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा - कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा । इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा । इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेदबंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा । सण्णी, नो असण्णी । सइंदिया,

नो अणिंदिया । संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहत्तं सातिरेगं । आहारो तहेव जाव नियमं छद्दिसिं । ठिती जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । छ समुग्घाया आदिल्लगा । मारणंतियसमुग्घाएणं समोहया वि मरंति, असमोहया वि मरंति । उव्वट्टणा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति ।

४. अह भंते ! 'सव्वेपाणा'[1] जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्वं जाव अणंतखुत्तो, नवरं—परिमाणं जहा बेइंदियाणं, सेसं तहेव ।।

५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

२-११ उद्देसा

६. पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? उववाओ, परिमाणं आहारो जहा एएसिं चेव पढमोद्देसए । ओगाहणा बंधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सेसं जहा बेंदियाणं पढमसमइयाणं जाव अणंतखुत्तो, नवरं—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेसं तहेव । एवं सोलससु वि जुम्मेसु परिमाणं तहेव सव्वं ।

७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

८. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा । चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो ।।

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

बितियं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

१०. कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? तहेव पढमुद्देसओ सण्णीणं, नवरं—बंध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-बंधग-सण्ण[2]-कसाय-वेदबंधगा य एयाणि जहा बेंदियाणं । कण्हलेस्साणं वेदो तिविहो, अवेदगा नत्थि । संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । एवं ठिती वि, नवरं—ठितीए अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, ब, स) । २. सण्णि (ता); सण्णा (म, स) ।

भण्णंति। सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२. पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? जहा सण्णिपंचिंदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तं चेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१५. एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए। पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७. एवं नीललेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठिती वि। एवं तिसु उद्देसएसु[1], सेसं तं चेव ॥

१८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१९. एवं काउलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि। एवं तिसु वि उद्देसएसु, सेसं तं चेव ॥

२०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२१. एवं तेउलेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि, नवरं—नोसण्णोवउत्ता वा। एवं तिसु वि उद्देसएसु[2], सेसं तं चेव ॥

२२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२३. जहा तेउलेस्ससतं तहा पम्हलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं, समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठितीवि नवरं – अंतोमुहुत्तं न भण्णति, सेसं तं चेव। एवं एएसु पंचसु सतेसु जहा कण्हलेस्ससते गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो ॥

१. प्रथम-तृतीय-पञ्चमेषु (वृ)। २. गमएसु (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।
२५. सुक्कलेस्ससतं जहा ओहियसतं, नवरं—संचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससते, सेसं तहेव जाव अणंतखुत्तो ।।
२६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।
२७. भवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? जहा पढमं सण्णिसत्तं तहा नेयव्वं भवसिद्धीयाभिलावेणं, नवरं—
२८. सव्वे पाणा[1]०?
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं तं चेव ।
२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।
३०. कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहियकण्हलेस्ससतं ।।
३१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।
३२. एवं नीललेस्सभवसिद्धीए वि सतं ।।
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।
३४. एवं जहा ओहियाणि सण्णिपंचिंदियाणं सत्त सताणि भणियाणि, एवं भवसिद्धीएहि वि सत्त सताणि कायव्वाणि, नवरं—सत्तसु वि सतेसु सव्वे पाणा जाव नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं तं चेव ।।
३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो । परिमाणं अवहारो उच्चत्तं बंधो वेदो वेदणं उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससते । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, एवं जहा कण्हलेस्ससते, नवरं—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । संचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउद्देसए । समुग्घाया आदिल्लगा पंच । उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्जं । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेसं जहा कण्हलेस्ससते जाव अणंतखुत्तो । एवं सोलससु वि जुम्मेसु ।
३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

---

१. भ० ४०।४ ।

३८. पढमसमयअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा सण्णीणं पढमसमयउद्देसए तहेव, नवरं—सम्मत्तं सम्मामिच्छत्तं नाणं च सव्वत्थ नत्थि, सेसं तहेव ॥

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४०. एवं एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पंचमा एक्कगमा, सेसा अट्ठ वि एक्कगमा ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा एएसिं चेव ओहियसतं तहा कण्हलेस्ससयं पि, नवरं—

४३. ते णं भंते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हंता कण्हलेस्सा । ठिती, संचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेसं तं चेव ॥

४४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४५. एवं छहि वि लेस्साहिं छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससतं, नवरं—संचिट्ठणा ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवरं—सुक्कलेस्साए उक्कोसेणं इक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं । ठिती एवं चेव, नवरं—अंतोमुहुत्तं नत्थि जहण्णगं. तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि । विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि । सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४७. एवं एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइं भवंति ।

४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४९. एवं एयाणि एक्कवीसं सण्णिमहाजुम्मसताणि ; सव्वाणि वि एक्कासीतिमहाजुम्मसताइं ॥

एगचत्तालीसतिमं सतं

पढमो उद्देसो

रासीजुम्म-नेरइयादीणं उववायादि-पदं

१. कति णं भंते ! रासीजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकडजुम्मे । एवं जाव जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं एगपज्जवसिए, सेत्तं रासीजुम्मकलियोगे । से तेणट्ठेणं जाव कलियोगे ।।

३. रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा[1] वक्कंतीए ।।

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।।

५. ते णं भंते ! जीवा किं संतरं[2] उववज्जंति ? निरंतरं उववज्जंति ?
गोयमा ! संतरं पि उववज्जंति, निरंतरं पि उववज्जंति । संतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जे समए अंतरं कट्टु उववज्जंति । निरंतरं उववज्जमाणा जहण्णेणं दो समया, उक्कोसेणं असंखेज्जा समया अणुसमयं अविरहियं निरंतरं उववज्जंति ।।

६. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ? जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

१. प० ६ ।
२. सांतरं (ब, म) ।

७. जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
८. जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ? जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
९. ते णं भंते ! जीवा कहिं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, एवं जहा उववायसते जाव[1] नो परप्पयोगेणं उववज्जंति ॥
१०. ते णं भंते ! जीवा किं आयजसेणं उववज्जंति ? आयअजसेणं उववज्जंति ?
गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति ॥
११. जइ आयअजसेणं उववज्जंति—किं आयजसं उवजीवंति ? आयअजसं उवजीवंति ?
गोयमा ! नो आयजसं उवजीवंति, आयअजसं उवजीवंति ॥
१२. जइ आयअजसं उवजीवंति—किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥
१३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥
१४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥
१५. रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहेव नेरतिया तहेव निरवसेसं । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, नवरं—वणस्सइकाइया जाव असंखेज्जा वा अणंता वा उववज्जंति, सेसं एवं चेव । मणुस्सा वि एवं चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जंति, आयअजसेणं उववज्जंति ॥
१६. जइ आयअजसेणं उववज्जंति—किं आयजसं उवजीवंति ? आयअजसं उवजीवंति ?
गोयमा ! आयजसं पि उवजीवंति, आयअजसं पि उवजीवंति ॥
१७. जइ आयजसं उवजीवंति किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ॥
१८. जइ अलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा नो सकिरिया, अकिरिया ॥
१९. जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
हंता सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ॥

---

१. भ० ३१।५।

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ।।

२१. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ।।

२२. जइ [illegible]यअजसं उवजीवंति किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ।।

२३. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ।।

२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । [illegible]णिया जहा नेरइया ।।

२५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवरं—परिमाणं तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति । संतरं तहेव ।।

२७. ते णं भंते ! जीवा जं समयं तेयोगा तं समयं कडजुम्म ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२८. जं समयं तेयोया तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं तेयोया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि समं, सेसं तं चेव जाव वेमाणिया नवरं—उववाओ सव्वेसिं जहा[1] वक्कंतीए ।।

२९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

१. प० ६ ।

तइओ उद्देसो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव उद्देसओ, नवरं—परिमाणं दो वा छ वा दस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, संवेहो ॥

३१. ते णं भंते ! जीवा जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं कलियोगेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

३३. रासीजुम्मकलिओगनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—परिमाणं एक्को वा पंच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति, संवेहो ॥

३४. ते णं भंते ! जीवा जं समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ? जं समयं कडजुम्मा तं समयं कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं तेयोएण वि समं, एवं दावरजुम्मेण वि समं, सेसं जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देसा

३६. कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? उववाओ जहा धूमप्पभाए, सेसं जहा पढमुद्देसए । असुरकुमाराणं तहेव, एवं जाव वाणमंतराणं । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाणं आयअजसं उवजीवंति । अलेस्सा, अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति एवं न भाणियव्वं, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥

३७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

३८. कण्हलेस्सतेयोएहि वि एवं चेव उद्देसओ ॥

३९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४०. कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ ॥

४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिम्रोएहि वि एवं चेव उद्देसओ। परिमाणं संवेहो य जहा म्रोहिएसु उद्देसएसु ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—नेरइयाणं उववाम्रो जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं –नेरइयाणं उववाम्रो जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मम्रसुरकुमारा णं भंते ! कम्रो उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—जेसु तेउलेस्सा म्रत्थि तेसु भाणियव्वा[1]। एवं एए वि कण्हलेस्सा-सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५०. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—मणुस्साणं गमम्रो जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव। एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, म्रोहिया चत्तारि, सव्वे ते म्रट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९–५६ उद्देसा

५४. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५६. कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा।

५७. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

१. भाणियव्वं (ख, ता)।

५८. एवं काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ॥
६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा । एवं एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥
६२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५७-८४ उद्देसा

६३. अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा पढमो उद्देसगो, नवरं—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेसं तहेव ॥
६४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
६५. एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ॥
६६. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ॥
६७. एवं नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं चत्तारि उद्देसगा ।
६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
६९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ॥
७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा । एवं एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेणं नेयव्वा ॥
७२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

८५-११२ उद्देसा

७३. सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववजंति० ? एवं जहा पढमो उद्देसओ । एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा ॥
७४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥
७५. कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा । एवं सम्मदिट्ठीसु वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥
७६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

११३-१४० उद्देसा

७७. मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेणं अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ।

७८. सेवं भंते । सेवं भंते ! त्ति ॥

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाणं भंते ! कम्रो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥

८०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१६९-१९६ उद्देसा

८१. सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कम्रो उववज्जंति० ? एवं एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति । एवं एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसयं भवति रासीजुम्मसयं जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव—

८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

८४. भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! सच्चे णं एसमट्ठे, जे णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु अपुव्ववयणा[1] खलु अरहंता भगवंतो, समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

॥ इति भगवई समत्ता ॥

ग्रंथाग्र

मूलगाथा १६३१६ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

१. अपूतिवयणा (अ, क, ता, ब, म) ।

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीसं सतं सयाणं (१३८), उद्देसगाणं एगूणविसतिसताणो पंचविसइअहियाणी (१९२५)।

संगहणी-गाहा

चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदंसीहिं।
भावाभावमणंता, पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ॥ १ ॥
तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो।
हेतुसतविपुलवेगो, संघसमुद्दो गुणविसालो ॥ २ ॥

पोत्थयलेहगकया नमोक्कारा

णमो गोयमाईणं गणहराणं, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसंगस्स गणिपिडगस्स ॥

कुम्मसुसंठियचलणा, अमलियकोरेंटबेंटसंकासा।
सुयदेवया भगवई, मम मतितिमिरं पणासेउ ॥१॥

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आइमाणं अट्ठण्हं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति, नवरं—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जंति। नवमाओ सताओ आरद्धं जावइयं-जावइयं ठवेति तावतियं-तावतियं[1] उद्दिसिज्जंति, उक्कोसेणं सतं पि एगदिवसेणं, मज्झिमेणं दोहिं दिवसेहिं सतं, जहण्णेणं तिहिं दिवसेहिं सतं। एवं जाव वीसतिमं सतं, नवरं—गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति, जदि ठियो एगेण चेव आयंबिलेणं अणुण्णवति[2]। अहण्णं ठितो आयंबिलेणं छट्ठेणं अणुण्णवति। एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइं सताइं एक्केक्कदिवसेणं उद्दिसिज्जंति। चउवीसतिमं सतं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। पंचवीसतिमं दोहिं दिवसेहिं छ-छ उद्देसगा। बंधिसयाइं अट्ठसयाइं एगेणं दिवसेणं, सेढिसयाइं बारस एगेणं, एगिंदियमहाजुम्मसयाइं बारस एगेणं, एवं बेंदियाणं बारस, तेंदियाणं बारस, चउरिंदियाणं बारस एगेण, असण्णि-

१. °तियं एगदिवसेणं (ख, स)। २. अणुणव्वति (ता, स); अणुणज्जति (अ, ब)

पंचिंदियाणं बारस, सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवीसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति, रासीजुम्मसतं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति ।।

गाहातिगं

केषुचिदादर्शेषु पुस्तकलेखककृता अन्यापि गाथात्रयी लभ्यते—

विपसियअरविंदकरा, नासियतिमिरा सुयाहिया देवी ।
मज्झं पि देउ मेहं, बुहविबुहणमंसिया णिच्चं ।।१।।
सुयदेवयाए पणमिमो, जीए पसाएण सिक्खियं नाणं ।
अण्णं पवयणदेविं, संतिकरिं तं नमंसामि ।।२।।
सुयदेवया य जक्खो, कुंभधरो बंभसंतिवेरोट्टा ।
विज्जा य अंतहुंडी, देउ अविग्घं लिहंतस्स ।।३।।

परिशिष्ट :

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतियं जाव पव्वइत्तए	१८।१४७	६।१६७
अंबकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्म	१५।१२६	१५।१२०
अकंततरिय जाव अमणामतरियं	१६।३५	१।२२४
अकंता जाव अमणामा	७।११६	१।३५७
अकिट्ठे जाव विहरामि	३।१२६	३।१२६
अगामियाए जाव अडवीए	१५।८७	१५।८६
अगामियाए जाव सव्वओ	१५।८८	१५।८६
अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे	६।१७६	६।१७६
अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।४४२	१।११
अच्चासाइए जाव तं	३।१२६	३।१२६
अच्छे जाव पडिरूवे	२।११८	वृत्ति
अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे	११।१०८	११।१०८
अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स	११।१०८	२।१४
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ	३।१३१	२।३१
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	२।६७; ३।३३, ३६, ११२, ११५, ११६, ५।८५; ६।१५८, २२८; ११।५६, ७२, ८५, १८८; १२।६; १३।१०३; १०६, ११६; १५।५३, ७५; १२८, १२६, १४१, १४८	२।३१
अज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं	१३।१०४	२।३१
अट्ठं जाव जाणाओ	१।४२४	१।४२३
अट्ठं वा जाव वागरण	५।१०४	५।१०४
अट्ठं वा जाव वागरेइ	५।१०५	५।१०४

अट्ठाइं जाव वागरणाइं	१८।२०५	५।१०४
अट्ठे जाव विउसग्गस्स	१।४२६	१।४२३
अणंतपएसियं जाव पासइ	१४।१५४	१४।१५४
अणंताओ जाव आवलियाए	८।३९६	८।३८४
अणवदग्गं जाव संसार०	१५।१८७	१५।१८७
अणवदग्गे जाव संसार०	१६।९१	१।४५
अणालोइय जाव नत्थि	१०।२०	१०।१९
अणिदा जाव ठिति०	३।४०	३।३८
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणस्स	१६।४९	३।३३
अणिक्खित्तेणं जाव आयावेमाणे	१५।१७७	३।३३
अणिट्ठं जाव अमणामं	३।११३; १४।४०	१।३५७
अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा	७।११९	१।३५७
अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार०	१४।१४४	१।१४९
अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे	१३।१२	वृत्ति
अणुत्तरे जाव केवल०	१६।९१	९।४६
०अणुत्तरोववाइय जाव उव०	१२।१८८	१२।१८८
०अणुत्तरोववातिय जाव देव०	१९।७७	१९।७७
अणेगगणणायग जाव संपरिवुडे	१३।११४	७।१९६
अणेगगणनायग जाव दूय	७।१९६	ओ० सू० ६३
अणेग जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसय जाव पच्चायाहिति	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसहस्स जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अणेगसयसहस्स जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
अण्णमण्णपुट्ठाइं जाव घडत्ताए	११।७८,७९	वृत्ति
अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण०	११।१११	११।७८
अतुरिय जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०८
अतुरिय जाव सोहेमाणे	२।११०	२।१०८
अतुरियमचवल जाव गईए	११।१३५, १४४	११।१३३
अत्थमण जाव दीसंति	८।३३१	८।३२९
अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं	८।३३१	८।३३०
अत्थामे जाव अधारणिज्ज०	७।२०४	७।२०३

अत्थेगतिए जाव नो	६।३१	६।३१
अत्थेगतिए जाव नो	६।३१	६।३१
अत्थेगतियाणं जाव साहू	१२।५४	१२।५३
अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए	१२।५४	१०।११४
अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए	३।१४८	३।१४५
अधम्मत्थिकाए एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे	२।१२६	२।१२५
अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए	१३।५५	२।१२४
अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°	३।११३	३।१०६
अप्पकोहे जाव अप्पलोभे	२५।५६८	ओ० सू० ३३
अप्पणो जाव पासइ	१४।१२३	१४।१२३
अब्भुगयाओ जाव पडिरूवाओ	१५।८८	१५।८७
अभिक्खणं जाव [illegible]	१५।१२१	१५।१२०
अभिमुहा जाव पज्जुवासंति	५।८४	१।१०
अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा	८।२८७	८।२८७
अमाणत्तं जाव पसत्थं	१।४१८	१।४१८
अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने	१५।१६२	७।२३
अमुच्छिए जाव आहारे	१४।८३	१४।८२
अमुच्छिए जाव आहारेइ	७।२३	७।२२
अम्मताओ जाव पव्वइत्तए	६।१७४	६।१६७
अम्मेहिं जाव पव्वइहिसि	६।१७७	६।१६६
अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ	१६।७	१६।७
अयमेयारूवे जाव पहण्णे	१५।१५२	१५।१४८
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१२।१५; १६।५५; १८।२०५	२।३१
अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे	६।२४३	६।२४०
अवण्णे जाव अरूवी	२।१२८	२।१२५
अवसेसं जहा सिवस्स जाव सव्व-दुक्खप्पहीणे नवरं—तिदंड-कुंडियं जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परि-वडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्क-मति, अवक्कमित्ता तिदंडकुंडियं च जहा खंदओ जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स जाव	११।१९३-१९७	११।८३-८८

[illegible]

उक्कोसकालट्ठिइयंसि जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए	२४।७६	२४।३१
उक्खित्ते जाव रत्ते	८।२५५	८।२५५
उग्गमण जाव उव्वत्तेणं	८।३३०	८।३३०
उच्चारपासवण जाव परिट्ठावणिया०	२०।१५	२०।१४
उज्जले जाव दुरहियासे	१५।१४६	९।२२४
उट्ठाणे जाव परक्कमे	१।३७८; १७।३०	१।१४६
उड्ढंजाणू जाव विहरइ	५।८५; १०।४३; १८।१६४	१।९
उत्तर जाव राई	५।७	५।६
उत्तरिल्लं जाव गच्छति	१६।११६	१६।११६
उदएणं जाव पयोग०	८।४२१	८।४२०
उदगबिंदु जाव हंता	६।४	६।४
उदगरयणे जाव तच्चाए	१५।९२	१५।९१
उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे	९।२२८	१।११
उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए	१७।३०	१२।१०९
उप्पत्तिया जाव पारिणामिया	२०।२०	१२।१०९
उप्पन्ननाणदंसणधरा जाव सव्व०	१२।१६७	२।३८
उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव समोसरणं	२।२२	वृत्ति
उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव सव्वण्णू	१५।१२९	वृत्ति
उप्पाडेज्जा जाव केवलं	९।३१	९।२३,२५
उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ	१६।१०६	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावे जाव रज्जवई	११।१४२	११।१३४
उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणंति	१२।३५,३६	९।१६०,१६१
उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति	११।१३७	११।१३६
उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता	१५।१८६	१५।१८६
उववज्जिहिति जाव किच्चा	१५।१८६	१५।१८६
उवागच्छइ जाव नमंसित्ता जाव एवं	१४।१३२	१।१०
उवागच्छित्ता जाव एगंतमंते	१५।७३	१५।५९
उवागच्छित्ता जाव दुरूढा	१२।३७	९।१४४
उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता	१६।५४	२।५७
उवागच्छित्ता जाव विहरइ	१३।१०१	१।७
उसम जाव भत्तिचित्तं	११।१३८	ओ० सू० १३

उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए
वि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणया

वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहि	१।३६७	१।३६५
एक्केण वा जाव उक्कोसेणं	२०।११८	२०।११८
एगरूवं जाव हंता	७।१६८	७।१६७
एगवण्णाइं आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पंचदिसिं	२।४,५	प० २८।१
°एगिंदिय जाव परिणए	८।५१	८।५१
एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा	२।१३६	२।१३६
एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा	२।१३६	२।१३६
एगिंदियपओगपरिणया जाव पंचिंदिय०	८।२	२।१३६
एतेणं अभिलावेणं चत्तारि भंगा	३।१५६	३।१५४
एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से	६।१५६-१५६	वृति; जी. ३
एत्थ वि तह चेव भाणियव्वं, नवरं अणुदिण्णं उवसामेइ सेसापडिसेहेयव्वा तिण्णि। जं तं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ तं किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा। से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवरं उदिण्णं वेदेइ नो अणुदिण्णं वेदेइ एवं जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा। से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प० एत्थ वि, सच्चेव परिवाडी, नवरं उदयअणंतरपच्छाकडं कम्मं निज्जरेइ एवं जाव परक्कमेइ वा	१।१५१-१६२	१।१४७-१५०
एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे	३।४	३।४
एयति जाव अंते	३।१४८	३।१४४
एयति जाव तं	३।१४३	३।१४३
एयति जाव नो	३।१४६-१४८	३।१४३
एयति जाव परिणमइ	३।१४५	३।१४३
एयाणि वि तहेव नवरं सत्त संवच्छराइं सेसं त चेव	६।१३१	६।१२६
एवं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं तहिं नवरं झियाएज्ज भाणियव्वं। एवं पुक्खलसंवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेणं तहिं उल्ले सिया।		

एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो	१८।१४६	८।२२१
एवं जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय	२०।२७	१८।११२
एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल०	६।६६-६८	६।४४-४६
एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा नवरं—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वा । एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं—ओहिनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वो	६।२३-२८	६।२१,२२
एवं जहा इंदादिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए	११।१००	१०।५
एवं जहा इंदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थ य जे ते उवउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेंति । से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो	१८।६६-७१	प० ४
एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पंचहि पुरिससएहि सद्धि तहेव जाव	६।२१४,२१५	६।१५०,१५१
एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव	१४।११०-११२	ओ० सू० ११८-१२०
एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निगच्छइ	६।२०६	ओ० सू० ६६
एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा	१४।१०७-१०६	ओ० सू० ११५-११७
एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्वं जाव आलोयं	६।२०४	ओ० सू० ६४
एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्वं जाव सव्व०	६।१३३-१३५	१।४३१-४३३
एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ	१२।५६	१२।२२
एवं जहा खंदए जाव जओ	१५।१५७	२।३८
एवं जहा खंदए जाव से तेणट्ठेणं जाव नो असरीरी	१६।३,४	२।११,१२
एवं जहा खंदओ जाव एयं	७।२०३	२।६८
एवं जहा छट्ठसए जाव नो	१६।५२	६।४
एवं जहा छट्ठसए तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा	१६।५२	६।४
एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया	१२।१६८	जी० ३; भ० वृत्ति
एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए	१३।४५	जी० ३; भ० वृत्ति

एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि	१३।१६६	३।१६२
एवं जहा तइयसए पंचमुद्देसए जाव नो	१३।१५०	३।१६६
एवं जहा तामली जाव सक्कारेइ	११।६३	३।३३
एवं जहा तित्थगरमायरो जाव	१६।८७	१६।८६
एवं जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासंति	११।१७८	२।१८७; ओ० सू० ५२
एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव	८।४३६	८।४१७
एवं जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव	८।४३५	८।४१६
एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया		
तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा	१२।२०२	१२।२०१
एवं जहा दसमसए जाव नामधेज्जेत्ति	१३।५०,५१	१०।३,४
एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ	१२।३३	६।१३६
एवं जहा नाणावरणिज्जं नवरं दंसणनामं		
घेतव्वं जाव दंसण०	८।४२१	८।४२०
एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स		
वि भाणियव्वा जाव सिणाए	२५।३५६,३६०	२५।३५६,३५७
एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव	१३।४६	जी० ३; भ० वृत्ति
एवं जहा पंचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया		
जाव अणगारेणं	१८।१६२-१६५	५।१५७
एवं जहा पढमं पारणगं नवरं	११।६६	११।६४
एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स		
जाव अणुपरियट्टइ	१२।२२	१।४५
एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा		
भाणियव्वं जाव अलमत्थु	७।१५६,१५७	१।२००,२०६
एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो	१७।५१-५४	१।२७७-२८०
एवं जहा पढमसए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं	७।१६५	१।४३६
एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ	२०।२१,२२	१२।११६,१२०
एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए		
जाव उवओगं	१३।५६	२।१३७
एवं जहा बित्तियसए जाव तिविहाए	६।१४६	२।६७
एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे	१५।६-१२	२।१०६,१०७
एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए	१८।४०	राय०सू०६७५
एवं जहा रायपसेणइज्जो चित्तो	१८।२२१	राय०सू०६४५
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएणं	६।१८२	राय०सू०२७६
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डियं	७।१५७,१५८	राय०सू०७७२

एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणिया तहा आउएण वि समं भाणियव्वं	८।४८८	८।४८६
एवं जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से	१८।१३४,१३५	७।२१२,२१३
एवं जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया०	८।४२२	७।११४
एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से	१०।१४	७।२१
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स	९।१२४	५।६७
एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्ब[illegible]या भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं जाव संजोएत्तारो	१२।५६	१२।५४
एवं जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं	९।१९०	राय०सू०२७५
एवं जहा सूरियाभो	१६।६०-६३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाणं नवरं देवे	१४।१९,२०	१४।१७,१८
एवं जहेव भासा	१३।१२६	१३।१२४
एवं जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेइ सेसं तं चेव जाव चउत्थं	१५।३९-४४	१५।२५-३०
एवं जहेव विजयस्स नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेसं तं चेव जाव तच्चं	१५।३२-३७	१५।२५-३०
एवं जहेव विज्जाचारस्स नवरं तिसत्तखुत्तो	२०।८५	२०।८१
एवं जहेव सक्कस्स जाव तए	१४।२५	१४।२२
एवं जाव अलोए	११।१०८	११।१०८
एवं जाव उत्तर०	११।११०	११।११०
एवं जाव भावओ	८।१८८	८।१८८
एवं जाव भावओ	८।१९१	८।१९१
एवं जाव मणपज्जवनाण	९।३१	९।३१
एवं जाव लोए	११।१०८	११।१०८
एवं जाव से	१३।१५९	ओ०सू०१५०
एवं जाव हुंडे	१४।८१	ठा०६।३१
एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	९।५८-६३	९।३६-४१

एवं तं चेव नवरं	११।७०	११।६४
एवं तं चेव नवरं नियमं सपडिक्कमे	१३।१४५	१३।१४४
एवं तवे संजमे	१।४२,४३	१।४१
एवं तिण्णि वि भाणियव्वा	६।३६	६।३६
एवं तिपएसिय वि, नवरं सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि, सेसं जहा दुपएसियस्स। एवं चउपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे। एवं रसेसु वि, सेसं तं चेव। एवं पंचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पंचवण्णे, एवं रसेसु वि, गंधफासा तहेव।	१८।११३-११५	१८।११२
एवं तेइंदिया एवं चउरिंदिया	२५।२	२५।२
एवं दंसणाराहणं पि एव चरित्ताराहणं पि	८।४६५,४६६	८।४६४
एवं दरिसणावरणिज्जं पि	६।३४	६।३४
एवं धायइसंडं दीवं जाव हंता	१८।१५३	१८।१५२
एवं नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी एएसिं दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] संचिट्ठणा जहा कायट्ठितीए अंतर सव्वं जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए	८।१६३-२०७	प०१८;जी०१०;प०३;भ०वृत्ति।
एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेणं। उसिओदयं वा गच्छइ, पयोदयं वा गच्छइ	३।१७५-१७७	३।१७४
एवं पडिउच्चारेतव्वं	१।३४	१।३३
एवं परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेदं	२।७६	१।४२०
एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२१०	३।२०६
एवं बितिओ वि आलावगो नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२४१	३।२४०
एवं वीरियायाए वि समं	१२।२०३	१२।२०३
एवं वेदणापरिणामं	१४।४१	१४।४०
एवं संपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहा असंपत्तेणं	८।२५१	८।२५१
एवं संवरेण वि	६।३१	६।३१

परिशिष्ट—२

पूरकपाठ

('नेरइया जाव वेमाणिया' तथा 'नेरइया जाव सिद्धा' का पूरक पाठ)

१. नेरइय
२. असुरकुमार
३. नागकुमार
४. सुवण्णकुमार
५. विज्जुकुमार
६. अग्गिकुमार
७. दीवकुमार
८. उदहिकुमार
९. दिसाकुमार
१०. वायुकुमार
११. थणियकुमार
१२. पुढविकाइय
१३. आउकाइय
१४. तेउकाइय
१५. वाउकाइय
१६. वणस्सइकाइय
१७. बेइंदिय
१८. तेइंदिय
१९. चउरिंदिय
२०. पंचिंदिय
२१. मणुस्स
२२. वाणमंतर
२३. जोइसिय
२४. वेमाणिय
२५. सिद्ध

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	०भय०	०भया०
२०	१७	परिणामेति	परिणामेंति
२१	१७	मस्साणु	मणुस्सा
२३	६	नेरइइ	नेरइए
४०	५	०वउत्ताय	०वउत्ते य
४०	६	वट्टमाण	वट्टमाण
४६	२८	पुट्टं	पुट्ठं
३१	१७	वेदेंति	वेदेंति
४८	२१	उड्डंजाणू	उड्ढंजाणू
५१	१०	०ट्ठिति	०ट्ठितो
७७	७	दुक्तवा	दुक्खा
८६	२८	बलय०	वलय०
९३	५	तोरेइ	तीरेइ
१०३	११	०सुद्दिट्ठ०	०मुद्दिट्ठ०
१०३	१४	०बासेंहि	०वासेंहि
१०४	२४	विउलस्य	विउलस्स
११७	६	घण्मत्थि०	धम्मत्थि०
१२८	५	जारिसिया	तारिसिया
१३७	२१	ढिच्चा	ठिच्चा
१४४	२३	जंदूदीवे	जंबूदीवे
१४७	११	जाव	जाव ४
१४७	१३	नं० ४,५, ६	नं० ५, ६, ७
१४७	१५	जाव ७	जाव
१५१	४	असुरण्णो	असुररण्णो
१५७	५	सहृत्ण०	सहत्थ०
१६३	१८	गतित्तए	गमित्तए
१७४	२०	उड्ढाबाया	उड्ढवाया
१७७	१	पलिअ	पलिओवमं
१८४	३	०जोयसणसय-हस्साइं	०जोयणसय-सहस्साइं
१८५	८	—वग्गणायण०	-वग्गणाठाण०
१९१	६	वि; तया	तया
१९१	९	०समुहस्स	०समुद्दस्स
२०९	२२,२४,२५	नं० ६,७,८	नं० ७,८,९
२९१	५	दीणस्सरा' अणिट्ठस्सरा	दीणस्सरा अणिट्ठस्सरा'
३४०	१४	तस्स० भयणाए	यह पक्ति १६३ सूत्र के अत में है
३४७	१८	प्रणादिय०	अणादीय०
४३७	१०	माइणे	माहणे
५०३	३	अज्झस्थिए	अज्झत्थिए
५२३	१७	अणुद्धय०	अणुद्धुय०
५२८	१९	सया—	राया—
५७९	१८	उवज्ज्जंति	उववज्जंति
७६०	७	०गम्ममण-मागगा	०गम्ममाण-मग्गा
७७९	२५	सव्ठुव	सव्वट्ठ
७८७	१३	संजय	संजम
८२१	१४	महिंदाण	—माहिंदाण
९२०	१२	सेलोसि०	सेलेसि०

पाठान्तर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	परित्थणो०	परित्थणे०
२६	५	प्रणू०	अणु
३६	१०	भंते	भंतं
८६	११	०भोति	०भोती
९३	२	(७१३)	(७।१३)
९८	६	मणूस्सा	मणुस्सा
१००	४	अहियंजिय	अहियुंजिय
१०३	१२	नैर्युक्ता	तैर्युक्ता
११२	१	०द्वयोवर्नायो०	द्वयोर्वाचनयो०
११२	९	चउच्चीसाए	चउव्वीसाए
१४४	१२	एतदवर्णन···सन्निभि	एतद्वर्णनं···सन्निभ
१६०	३	टितिय	तितिय
१८६	१	व्मायु	०मायु
२००	४ पं०१	हरिणगमेसि	णेगमेसि
२००	४	वाचनायो:	वाचनयो:
२१०	९, १-९	१-१०	९, १-९
४८५	२	प्रमो०	प्रथमो०
५१६	११	पडिबुद्ध	पडिबुद्धा
८९५	३	०षठ	षष्ठ०